11

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली

डा. योगानन्दझा

★ मैथिली भाषाक शब्द-सम्पदा अत्यन्त समृद्ध अछि से तखन बोध होइछ जखन लोक मिथिलाक सामान्य जनजीवनक विभिन्न क्षेत्र, समय एवं अवसर पर होइत क्रिया-कलापकेँ देखैत अछि, चर्चा करैत अछि ओ ताहिमे कोनो ने कोनो रूपेँ सहभागी, सहभोगी ओ सहयोगी बनैत अछि।

★ मिथिलाक प्राकृतिक ओ भौगोलिक परिवेश, वनस्पति, जीव-जन्तु, कृषि कर्म, पशुपालन, पारम्परिक व्यवसाय, लोक-व्यवहार इत्यादि सम्बन्धी लोकभाषिक शब्दावलीक संकलन एवं ओकर अर्थ निर्वचन मूल स्रोत धरि जाय प्रत्यक्ष रूपेँ देखि, सुनि एवं अनुभव प्राप्त कैए कऽ सम्यक् रूपेँ सम्भव अछि।

★ क्षयिष्णु गुणवत्ता ओ अवमूल्यनक प्रवाहमे कतोक एहनो शोध-प्रबन्ध सब प्रस्तुत होइत रहल अछि जे शोधक उद्देश्यक अनुरूप अछि, अभिनव तथ्य ओ विचारसँ सम्पन्न अछि। एहन-एहन शोधग्रन्थक प्रकाशनसँ भाषा ओ साहित्यक श्रीवृद्धि भऽ सकत, साहित्य भण्डार समृद्ध भऽ सकत, ज्ञानक सीमाक विस्तार भऽ सकत।

★ एहि शोध-प्रबन्धक गुणवत्ता, प्रामाणिकता ओ महत्ता निःसन्दिग्ध अछि। एहन कृतिक प्रकाशन कतेक आवश्यक से कहबाक प्रयोजन नहि।

(अथातो शब्द जिज्ञासायँ)

CMYK

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली

डा. योगानन्दझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा – 846 001

Maithilika Paramparika Jatiya Vyavasayaka Shabdavali by Dr. Yoganand Jha, Mithila Research Society, Darbhanga. Rs. 500.00

© लेखकाधीन

- प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
  कबिलपुर, लहेरियासराय
  दरभंगा - 846001
- प्रथम संस्करण : 2009
- पुस्तक प्राप्ति स्थान : डा. योगानन्दझा
  भगवती स्थान मार्ग
  कबिलपुर, लहेरियासराय
  दरभंगा – 846001
  दूरभाष : 06272-244161
  मोबाइल : 09334493330
- मूल्य : 500.00 (पाँच सय टाका) मात्र
- आवरण शिल्प : सोनाली
- टाइपसेटिंग : अभय कुमार झा
  मोबाइल : 9304429215
- मुद्रक : सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स
  पटना – 800016
  दूरभाष : 0612-2687897

Dr. Subhadra Jha

NAGDAH
Madhubani

1. Name of the Ph.D. examinee : Yoganand Jha
2. Title of thesis : Maithilika Pramukha Paramparika Jatiya Vyavasaya Sambhandhee Shabdavalika Vyakhyatmaka Adhyayana
3. Faculty : Humanities
4. Subject : Maithili
5. Brief Observation of the thesis : It is an excellent piece of sincere sustained study
6. The thesis is approved
7. The thesis is recommended for award of Ph.D. Degree subject to his satisfactory performance at the Vivavoce

Detailed report on the thesis is given below :-

The thesis written in the Maithili language is based upon a diligent study of the Maithili technical terms used by members of the castes having different family professions like those of carpenters, weavers, basket makers etc.

The thesis embodies results of independent investigation envolving prolonged study in interviews with the members of different castes and communities. The writer has examined critically each and every word about which he mentions in his learned thesis, that is a brilliant original contribution to Maithili lexicography.

I would have unhesitatingly recommended the acceptance of this thesis for the D.litt. Degree in case the University regulations and rules provide for it.

I take thus opportunity to congratulate both the supervisor and the candidate for the fruitful learned contribution that I have most happily to recommend subject to the note made in the next above paragraph for the Ph.D. Degree.

Sd/ - **Subhadra Jha**
20.11.85

डा. प्रबोध नारायण सिंह, *साहित्यरत्न, साहित्यालंकार*
एम.ए. (पालि, हिन्दी, फारसी, भाषा–विज्ञान) — ए–132, लेकगार्डेन्स
डी.लिट् (मगध), डी.लिट् (कलकत्ता) — कलकत्ता–45
अध्यक्ष :
हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

Report on the adjudication of Ph.D. Thesis

I have carefully examined the thesis entitled 'Maithilika Pramukha Paramparika Jatiya Vyavasaya Sambandhi Shabdavalika Vyakhyatmaka Adhyayana' submitted by Shri Yoganand Jha for the degree of Ph.D.

The thesis contains 552 pages. It contains seven chapters preceded by a preface and followed by an exhaustive bibliography.

The choice of the subject and the planning of the present treatise is really good and some-what novel in the realm of Maithili research. The scholar has taken a lot of pains in collecting, analysing and arranging of colloquial words scattered over a wide range of geographically vast area. The tracing of the derivatives and semantic changes of the vocables in question makes it more difficult. The entire effort needs a great deal of patience and perseverence. The work betrays the capacity of the critical judgement of the author.

The thesis speaks well of the candidate's diligence, critical outlook and aptitude for research in the domain of Maithili. It is a valuable contribution to Maithili literature. From the view-points of both matter and style, the scholar deserved commendation.

I, therefore, recommend that the degree of Ph.D. of L. N. Mithila University be conferred upon Shri Yoganand Jha, M.A. on the above-mentioned thesis. No written examination is necesary in this respect. The thesis is worthy of publication.

Sd/- **Prabodhnarayan Singh**
8.1.1986

अथातो शब्द जिज्ञासा

मैथिली भाषाक शब्द–सम्पदा अत्यन्त समृद्ध अछि, से तखन बोध होइछ जखन लोक मिथिलाक सामान्य जन–जीवनक विभिन्न क्षेत्र, समय एवं अवसरपर होइत क्रिया–कलापकेँ देखैत अछि, चर्चा सुनैत अछि ओ ताहिमे कोनो ने कोनो रूपमे सहभागी, सहभोगी वा सहयोगी बनैत अछि। मानव जीवनक अनुभूत सूक्ष्मसँ सूक्ष्म भाव, अनुभूति, स्थिति ओ अत्यन्त लघु–लघुतर–लघुतमो वस्तुक अभिव्यंजनाक हेतु अजस्र शब्दावली मैथिली भाषामे विद्यमान अछि जे प्रयत्नत: मोन पाड़लापर ध्यानमे नहि आबि पबैछ परन्तु प्रसंग ओ प्रयोगक अवसर उपस्थित भेलापर सहज रूपसँ मुखसँ उच्चरित भऽ जाइछ।

मैथिलीक एहि शब्द–सम्पदाक संकलन एवं ओकर अर्थक निर्वचन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य अछि। अतीत कालमे मिथिलाक विद्वान्‌लोकनि अपन–अपन विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थ सभमे दुर्बोध संस्कृत शब्दक सहज रूपमे अर्थबोध करयबाक लेल मिथिलादेशीय अवहट्ठ वा देशी शब्दकेँ पर्यायक रूपमे प्रयोग करैत रहलाह अछि, जे वास्तवमे प्राचीन मैथिली भाषाहिक शब्द सभ थीक। परन्तु मैथिली भाषाक शब्दकेँ व्यवस्थित रूपमे संकलित करबाक प्रयत्न पूर्वमे नहि भेल। मैथिली भाषाक शब्द सभकेँ पाश्चात्य रीतिसँ अर्थात् आधुनिक रीतिसँ कोषबद्ध करबाक प्रयत्न यूरोपीय विद्वानलोकनि द्वारा प्रारम्भ भेल।

अठारहम शताब्दीक अन्तिम दशकमे सिरामपुर मिशनक एकटा पादरी विलियम कैरी मैथिली शब्दावलीकेँ कोषबद्ध करबाक पहिल प्रयास कयने छलाह। एकटा नमहर अन्तरालक पश्चात् उनैसम शताब्दीक आठम दशकमे **एस्. डब्लू. फैलोन** एहि दिशामे अपन रुचि देखौने छलाह। ओ 1879 इ.मे एकटा शब्दकोष प्रकाशित करौने छलाह जकर नाम छल **ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरी: विथ इलस्ट्रेशन्स, हिन्दुस्तानी लिटरेचर एण्ड फॉकलोर।** ओहि कोषमे तिरहुती शब्द कहि कऽ मैथिली शब्दावलीकेँ सेहो प्रचुर संख्यामे स्थान देल गेल। एहि महत्त्वपूर्ण तथ्यकेँ सर्वप्रथम प्रकाशमे अनबाक श्रेय पं.श्रीगोविन्दझाकेँ छनि (द्रष्टव्य: कल्याणी कोष)। **अटकन-मटकन** सन मिथिलाक बाल मनोविनोदक क्रीड़ाक नामवाची शब्द सेहो एहिमे सम्मिलित कयल गेल छल।

एहि डिक्शनरी-निर्माणक की प्रयोजन छल से जानल नहि होइछ। किन्तु उनैसम शताब्दीक तेसर चरणमे अयोध्याप्रसाद 'बहार' द्वारा उर्दूमे लिखित **रियाज-ए-तिरहुत** **नामक ग्रन्थक पहिल** अध्यायक तैसम खण्डमे एकटा महत्त्वपूर्ण घटनाक विवरण देल **गेल अछि ताहिसँ फैलोन** कृत **ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरीक** प्रयोजनीयतापर प्रकाश पड़ि सकैत अछि। **रियाज-ए-तिरहुतक** विवरणानुसार मुजफ्फरपुरक समस्त रईस, अधिकारी, महाजन ओ जमीन्दार सभक एक सभा 27 फवरी 1868कें सरकारी स्कूलमे भेल छल जाहिमे निश्चय भेल छल जे गवर्नर जनरलक कौन्सिलक ओतऽ साइंटीफिक सोसायटी दिससँ निवेदन कयल जाय जे जाहि रूपमे कलकत्ताक महाविद्यालय सबमे उच्च शिक्षा अंगरेजी भाषामे देल जाइछ, लोक अंगरेजी भाषामे परीक्षा देल करैछ (**तलबाए उलूम कलकत्ताके मदरसा ए आजन यूनिवर्सीटीमे बजुबान अंगरेजीमे इम्तहान देते हैं**) तथा अंगरेजीमे प्रमाण-पत्र देल जाइछ, ताही रूपमे देशी भाषामे (मुल्की जुबानमे) शिक्षा देबाक व्यवस्था हो, देशी भाषामे परीक्षा हो तथा देशीभाषाक एक विश्वविद्यालय स्थापित हो (**देशी जुबानमे इम्तहान हो, एक यूनिवर्सीटी देसी जुबानमे कायम की जाय**)। एक सय पचीस गोट प्रमुख व्यक्तिक हस्ताक्षरसँ युक्त आवेदन 10 अप्रैलकें गवर्नर जनरलक कौन्सिलमे पेश भेल। कौन्सिल द्वारा आवेदनक स्वीकृति-सम्बन्धी पत्र ब्रिटिश सरकारक सेक्रेटरी द्वारा ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन, बिहारक सेक्रेटरीकें पठाओल गेल। एहिसँ खुशीक लहरि दौड़ि गेल। लोक आशान्वित भेल जे 'ज्ञान ओ कलाक शीघ्र उन्नति होयत। ओहन विद्वान् ओ ज्ञानी लोक जे अंगरेजी नहि जनबाक कारणे निरक्षरोसँ अधलाह हालतमे छथि से ज्ञानीमे गनल जयताह।' एकर फलस्वरूप छापाखाना स्थापित भेल। पैघ-पैघ ग्रन्थ सभक अनुवाद होबऽ लागल। एकबार निकलऽ लागल।

आगाँ की भेलैक तकर कोनो अभिलेख नहि भेटैत अछि परन्तु मुजफ्फरपुरक सरकारी स्कूलमे जे महत्त्वपूर्ण सभा भेल छल तथा सवा सय महत्त्वपूर्ण व्यक्तिक हस्ताक्षरसँ ब्रिटिश सरकारकें उपर्युक्त निवेदन पठाओल गेल छल; ओहि सभाक सभापति छलाह डाक्टर विलियम स्टुअर्ट फैलोन साहेब बहादुर जे ओहि समयमे सूबा बिहारक स्कूल इन्सपेक्टर छलाह। ओहि समयमे शिक्षा विभागमे ई बड़ पैघ पद मानल जाइत छल। ओ अनुभव कयने होयताह जे उच्चस्तरक जे शिक्षा-परीक्षा देशी भाषामे होयत तकर शिक्षक-परीक्षक तँ अंगरेजे होइतथि जनिका देशी भाषाक ज्ञान होयब आवश्यक छलनि। प्राय: ओही प्रयोजनकें ध्यानमे राखि फैलोन साहेब अपन उपर्युक्त कोषक निर्माण कयलनि जे दस वर्षमे पूर्ण भऽ 1879मे प्रकाशित भेल। फैलोन साहेब स्कूल इन्सपेक्टरक पदपर छलाह तें सरकारी स्कूलक शिक्षक सभक शब्द-संग्रहमे सहयोग स्वाभाविके। एहिमे ओ दरभंगा स्कूलक हेडमास्टर मिस्टर वाटलिंगक सहयोगक लेल आभार व्यक्त कयने छथि। अत: पं.गोविन्दझाक अनुमान समुचिते जे

वैह मि. वाटलिंग 'फैलोन साहेबकें तिरहुती' (मैथिली) भाषाक शब्दक संग्रह कऽ कऽ उपलब्ध करौने होयथिन। (द्रष्टव्य: कल्याणी कोष, इंट्रोडक्शन, पृ. IX)।

किन्तु मैथिली भाषाक शब्दावली अर्थ सहित कोषबद्ध स्वतन्त्र रूपें करबाक महत्त्वपूर्ण कार्यक आद्य अधिष्ठाता जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भेलाह जे विभिन्न ग्रन्थक अंगभूत रूपमे मैथिली शब्दावलीक संग्रह कयलनि। **मैथिली क्रेस्टोमैथी** (1882) तथा मनबोधकृत **कृष्णजन्मक** अंगरेजी अनुवादक (1884) परिशिष्टक रूपमे ई मैथिली शब्दावली देल गेल अछि। पश्चात् ओ ए. एफ. आर. हार्नलेक संग **ए कम्पैरेटिव डिक्शनरी ऑफ दि बिहारी लैंग्वेज, पार्ट-1** (1885) एवं **पार्ट-2** (1889) प्रकाशित करौलनि जाहिमे भोजपुरी-मगहीक शब्द सम्मिलित रहितो मैथिली शब्दावलीकें प्रचुर संख्यामे स्थान देल गेल छल।

ग्रियर्सनक पश्चात् बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि विभिन्न विद्वान्‌लोकनि पूर्ण वा आंशिक रूपमे मैथिली कोष निर्माणक कार्य वैयक्तिक स्तरपर करैत रहलाह अछि जकर महत्त्वकें कतोक त्रुटि अथवा कमीक अछैतो, स्वीकार करहि पड़त।

सम्प्रति उपलब्ध मैथिलीक प्रमुख शब्दकोष सब अछि-डॉ. जयकान्तमिश्रक **वृहत् मैथिली शब्दकोष भाग-1** (1973) एवं **भाग-2** (1995), एलाइस आइ. डेविसक **बेसिक कॉलोकियल मैथिली: ए मैथिली-इंगलिश-नेपाली वोकैबलरी** (1984); मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित तथा पं. गोविन्दझा द्वारा सम्पादित **मैथिली शब्दकोष** (1992) एवं पं.मतिनाथमिश्र कृत **मैथिली शब्द कल्पद्रुम** (1997)।

मैथिली शब्दकोषक परम्परामे सबसँ नवीन योगदान थीक पण्डित गोविन्दझाक कयल **कल्याणी कोष** (1999) जकरा व्याख्याक रूपमे **मैथिली-अंगरेजी कोष** कहल गेल अछि। ई मानऽ पड़त जे मैथिली शब्दकोष-परम्परामे कल्याणी कोष (क. को.) नवीनतम कृति होयबाक कारणे विद्वान् कोपकार पूर्ववर्ती समस्त मैथिली शब्दकोष तथा अन्यान्य आनुषंगिक स्रोतसँ शब्द-सामग्री ग्रहण कऽ एकरा समृद्ध कयने होयताहे। परन्तु विश्वासपूर्वक ई नहि कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक सामान्य प्रचलित शब्दावली समग्र रूपमे कल्याणी कोष (क.को.)मे आबिए गेल अछि। एहन बहुतो, शब्द, शब्दरूप अथवा शब्दार्थ देखबामे आयल अछि जे कल्याणी कोषमे अनुपलब्ध अछि। उदाहरणार्थ 'अ' सँ 'क' धरिक वर्णसँ आरब्ध ओहन शब्दक सूची देल जा रहल अछि, यद्यपि एहूमे शब्द सभ छूटि जयबाक सम्भावना अछिहे-

(एहि ठाम क.को. कल्याणी कोषक संकेत थीक। कोनो शब्दक जे अर्थ कल्याणी कोषमे नहि देल गेल अछि, तकर संकेत *also* **अछि।)**

[अ]

अकरकण्ड (काज)–निरुद्देश्य कयल गेल क्षति होबऽवला (काज)

अकिद्दा–साहस, बल

अकुआयब–चकुआयब, चकित होयब, आश्चर्यित होयब

अकौ (बाजब)–मिथ्या लांछन (देब)

अक्कत–तीतक प्रविशेषण, तिक्त<तीत ...क शब्दनिकता (क.को. अकत)

आँखिदेखार–आँखिक सोझाँ, प्रत्यक्ष, दिनादिनिस

अखीन–अमनियाँ, पावनि-पूजादिक निमित्त पवित्रतापूर्वक राखल खाद्य, नैवेद्य-सामग्री; (छठिक लेल अखीन गहूम-चाउर राखल अछि।)

अखोर
बखोर } –अनुपयोगी वस्तु सब

अख्यास
अख्यासब } स्मरण, मोनपाड़ब, अभ्यास (क.को. अखियास-अखियासब)

अगघायब–*also* अति सन्तुष्टि होयब (महीस चरि कऽ अगघायल अछि।), अधिक प्राप्तिक अनिच्छा होयब

अगब–अमिश्रित, छेहा (क.को. अगबा)

अगबे(अगब+ए)–अत्यधिक (चाउरमे अगबे सूड़ा; चूड़ामे अगबे धान)

अगड़धत्त–*also* विशालकाय, धताल

अगरजीत–*also* बतकट्ट, स्वैच्छिक स्वभावक

अगरैल
अगरैलही }– *also* विशेष आकारक धारी-लोटा

अगहड़ी(री)–केराक भालरिक उपरका भाग

अगाड़ी–*also* बाँसक छिपाठी

अगात–क.को. अगता

अगिआस
अगिआसब }– आगिसँ सेदब, आगि तापब

अगिलका
अगिलकी }– आगाँवला, सामनेवाला (क. को.) अगिलुका

अगिलेस–अगुआ, कोनो उत्तेजक घटनामे आगाँ रहनिहार

अगिलेसना(नी)
अगिलेसुआ }– उत्तेजक बात पसारनिहार, चुगली कयनिहार (क.को. अगिलेसू)

अगिलै (ल्इ)
अगिलोइ }– सूपसँ अन्न फटकबामे तथा निछड़बामे सूपक अग्रभागमे जमा भेल अवाँछित अंश

अगुऐ(अइ)–मटकैती, बरतुहारी

अग्गह(सँ)बिग्गह–विस्तृत, दूर धरि पसरल

अघनुआ–अगहनुआ, अगहनमे भेनिहार फसील

अघनू–अगहनमे जनमल व्यक्तिक नाम

अङोछ–*also* शरीरक प्रकृति (घाओ-घोसक सन्दर्भमे)

अँचओना–हाथ-मुँह अँचयबाक स्थान, ऍंठार

अचक–*also* अकस्मात्

अचानचक–सहसा (क.को. अचान्चक)

अचारी–रामानुज वैष्णव सम्प्रदायक अनुयायी

अँचित–अनुचित

अचीन–सिन्दूर

अच्छर–अक्षर, आखर

अछरकटट्टू–अखरकट्टू

अछेट–लांछन, कलंक

अछेट जोड़ब–कलंक लगायब

अछेप–1. छोट लांछन (आक्षेप) 2. किंचित् आघात

अछोर–हल्लुक चोँछ, छोट नछोड़, आक्षेप

अजस्तर–अजस्र, प्रचुर, यत्र-तत्र प्राप्य

अजाद–स्वतन्त्र

अजादी–स्वतन्त्रता

अजूबा–विचित्र, अद्भुत, आश्चर्यजनक

अझाइ–ओझाइनक पुरान रूप

अझुका–आजुक

अञ्जनी–हनुमानक माय

अञ्जल–न्यूनतम आहार (अन्न-जल > अन्जल > अञ्जल)

अँटकाओ–ठहराओ, यात्रामे विश्राम

अँटेड़ब–एकपर दोसरकेँ राखि ढेरी लगायब

अँटावेस- समावेश

अटोरब
अँटोरब } –अन्दाज करब, विचारब

अट्ठे–कोनो अंकक आठ गुणा, आठसँ गुना, गुने आठ

अठदरब–आठ धातुक मिश्रण, अष्टद्रव्य

अठमस्सू–गर्भक आठम मासमे जनमल

अठमा–आठम

अठरहा–अठारह नहवला कुकुरक प्रजाति

अठरहिया–आठ दिनपर नियमित

अड़कस–अड़ारि, कोनो बहाने झगड़ा ठनैत रहब

अड़का-बड़का चेपा, बोल्डर (*Bolder*)

अड़गड़िया (मारब)-स्वार्थवश ककरो ओहि ठाम बेसी काल धरि बैसब

अँड़पेड़ा-क.को.-अँड़पेना

अड़सट्ठा-पचीसी खेलमे अड़सठिम घरमे आबि पक्की गोटीक अटकि जायब भेल करैछ अड़सट्ठा लागब–बाधासँ विलम्ब होयब (क.कोमे एकर व्याख्या असंगत)

अड़ाँच–*also* खाटक अदवाइन ओ गोड़वारीक पासिकेँ जोड़ि कऽ तनबाक रस्सी

अड़ेर-एक प्रकारक खढ़

अड़्वाल-बहुत अधिक, बड़का ढेरी, अम्बार, आडम्बर (क.को. आड्वाल)

अड्डेबाज-अड्डापर गेनिहार (निन्दात्मक)

अढरनढरन-अत्यन्त दयालु, आशुतोष, महादेवक विशेषण

अढ़ैकुड़बा-अढ़ाइ कुड़ीक हिस्सावला अचल सम्पत्ति (खेत, गाछी, पोखरि आदि)

अढ़ौनी-अढ़यबाक काज, अढ़ौलापर कयल गेल काज

अण्टाह-कनेकोटा त्रुटि भेलापर क्रुद्ध भऽ गेनिहार (देवी-देवता)

अतरबाती
अँतरबाती } -क.को. अँतरबात

अतल-अथाह

अतिरेक-अतिशय

अतिसी-तीसी (अतिसी कुसुम गात समतूल-मनबोध)

अतू-कूकुरकेँ सोर करबाक शब्द

अतेव कऽ-खास कऽ (अतएव)

अथउथ-क.को. अथउत, दुविधा

अथरबन-क.को. अथरबोन

अदक-अदंक, आतंक, आकस्मिक भय

अदखोइ-बदखोइ-निन्दा, चुगली (क.को. अदगोइ बदगोइ)

अदबऽ-तारतम्य, इतस्ततः, अनिर्णय

अदबा(मा)इन-खाटक गोड़धारी (पौवान) दिसक पासिसँ लगभग गोटेक हाथ छोड़ि पँजरबाहिवला दुनू पासिकेँ जौरक अनेक धत्ता दऽ कऽ बनाओल गेल मोट रस्सा जाहिमे एक दिससँ खाट घोरबाक जौर फैलाओल जाइछ औ दोसर दिसक छूटल पासिसँ अड़ौंच कसल जाइछ

अदरस-काठक तकथाक बिनु रन्दा कयल पृष्ठ भाग

अदरायब-अगराएब

अदाप
अदाब } -मुसलमानी अभिवादन, नमस्कार

अदु(धु)रजो-(स्त्रीभाषा)- घृणा ओ अग्राह्यता सूचक शब्द, शब्दार्थ-दूर हो

अधखिन्नू-*also* आधा अजोह, आधा खिन्ना

अधगेँड़-कोनो नाम वस्तुक मध्य बिन्दु, गाछ वा काठक आधा भाग

अधजरुआ
अधजरू } -आधा जरल

अधमउधोरनि-अधमक उद्धार कयनिहारि गंगाक विशेषण

अधमोनी-आधा मनक बटखारा

अधापन-कष्टसाध्य निम्नकोटिक काज

अधओखा
अधोखा
अधौखा } - *also* अधवयसू, अधेड़

अनगनित मास-गर्भक आठम मास

अनचोका-क.को. अनचोक

अनजनुआँ-आन पुरुषसँ जनमल (क.को. अनजनमा)

अनजल-अन-जल, भोजन, उपवासोत्तर ग्रास

अनठीया-क.को. अनठिआ

अनथिताह-अस्थिर चित्तक लोक, अव्यवस्थित व्यक्ति

अनबिसबासू-जकरापर विश्वास नहि हो, अविश्वसनीय

अनमठ(काटब)-कृत्रिम निद्रा, कृत्रिय निश्चेष्टता, सूतल रहबाक बहाना करब, अचेत होयबाक बहाना करब, दम साधि कऽ पड़ल रहब

अनमाना-मन बहटारबाक साधन (क.को. अनमना)

अनमुन्ह-क.को. अन्हमुन्ह

अनरनेबा-पपीता

अनसखरि-*also* अनुपयुक्त स्थान

अनसर्ध-असर्थ

अनामति-सुरक्षित

अनायब-मङबायब

अनुष्ठा-अत्युत्तम, अतिविशिष्ट, दुर्लभ खाद्य पदार्थ

अनेस(सा)-अन्देशा, आशंका, कोनो अनहोनीक भय

अन्तहिया-आन स्थानक (लोक), अनठीया

अन्ती-कानक गहना विशेष

अन्दाजी-अन्दाजसँ, अनुमानसँ

अन्दाजीफिकेसन-(फारसी+अंगरेजी-संकर) बिना सोचने-विचारने

अन्नय-दूरक कौलिक सम्बन्ध-अनुबन्ध

अन्हरमारि-आन्हर द्वारा कयल गेल मारि अथवा अन्हारमे मारि जाहिमे मारनिहारकेँ बोध नहि होइछ जे ककरा मारि रहल छी। (लाक्षणिक)-बिनु बुझनहि-सुझनहि अनकापर आरोप लगायब

अन्हागाहिस
अन्हागाही } - बिना विचार कयने, बिना अन्दाज कयने

अन्हेरबाँट-एकटा पशुरक्षक लोकदेवता

अपकर्मी-कुकर्मी

अपखैत-अल्पाहारी (व्यंग्यार्थ तकर विपरीत)

अपजल-अपरोजक, अपचेष्ट, निर्धिन आचरणवला व्यक्ति

अपनुक-(प्राचीन रूप) अपन, निज

अपसव्य-वामक विपरीत, दहिन कान्हपर ओ वाम हाथक नीचाँ जनउक स्थिति

अपसोआरथी-अपनहि स्वार्थ सिद्ध कयनिहार

अपहित-क.को. अपहत/उपहत

अपामार्ग-एक वनस्पति, चिरचीरी

अपाहिज-अपङ्ग, विकलाङ्ग

अप्पा-आजी, बाबी, मैयो, मैयाँ

अफीम-इफीम

अफिमची-अफीम सेवन कयनिहार

अबडेरब-1. महत्त्व देब, मोजर देब, मान्य करब 2. उपेक्षाकरब, असम्मान करब

अबारा-*also* चरित्रहीन, अनुशासनहीन

अबरपनी-अबाराक आचरण

अबाह-*also* भूत-प्रेतक सन्दिग्ध वास-स्थल

अबैया-अयबाक सम्भावना

अभाँत (लागब)-अप्रिय, अनसोहाँत, अरुचिकर

अभिरोख-अभिरोष, तामस

अमोगिया-अभोग होयबाक शाप, स्त्री-प्रयुक्त पुरुषक हेतु गारि

अमझोर(रा)-काँच आमकेँ उसीनि कऽ बनाओल गेल नोनगर शर्बत

अमधुर-लताम

अमरित-अमृत

अमलो पीब-नान्हिटा बात लय क्रोधेँ बजैत रहब

अम्मा-अम्बा, माता

अर(ड़)कस-बलसँ झगड़ा करब, अकारण राड़ि करब

अरजा-नाप-तौल इत्यादिक सारणी, क्षेत्रफल निकालबाक लेल पुरान पद्धतिक गुणन-सूत्र

अरधना
अरधाना } -आराधना

अरबद्धल-हठी, जिद्दी, अभागल

अरबैठल-ऐँठल स्वभावक, घमंडी (क.को. अड़बेडल)

अरफज-झंझटि, बाधा, अवरोध

अरमेठब-कोनो काजमे अकारण बाधा उत्पन्न करब, झंझटि सोझराय नहि देब

अरसल-अपूर्ण, रुकल, बाधित

अरिआनँघान-अतिशय वर्षा जाहिमे पानि खेतक आरि टपि कऽ बहय

अरिका पर-हालमे, हेबनिमे, (अरिका परक जोगी)

अरुआ-कन्द विशेष

अरुऐनी-अरुअयबाक स्थिति

अरांहटि-1. मृत्युशोक जन्य चीत्कार 2. असह्य कष्ट जन्य चीत्कार

अलगट-अकस्मात् स्वार्थक काज कऽ लेबाक स्थिति

अलगटेंटी-अलगटेंट, बिनु सोचने आगाँ भऽ कऽ बाजि देनिहार

अलगनी-कपड़ा रखबाक लेल टाङल बाँस अथवा डोरी

अलग-बलग-*also* काट-करओट, उत्तरदायित्वसँ छिटकल (अलग-बलग खाँओ, बेरी लग नै जाँओ)

अलना-कपड़ा सब गैंति कऽ राखऽवला काठक वा लोहक उपकरण

अलपजिवाह-अत्यन्त दुर्बल, कनेको दैवसात लगलापर लद्दुआ गेनिहार (क.को. अलपजीवा)

अलबत्त-वाह, खूब (क.को. अलबत्)

अलबौक-बकलेल, बुड़बक (ई किसान अलबौकक टारी, पम्पिंग सेटक करथि पुछारी-श्रीअमर), (क.को. अलबोक)

अलहकरनी-खूब गहना पहिरनाहरि, विन्याससँ रहनिहारि

अलापी
अलापी मैयो } - नेप चुऔनिहारि, देखौआ रुदन कयनिहारि, बढ़ा-चढ़ा कऽ बजनिहारि (अलापी मौगीकेँ नौ मोनक बुलाकी)

अलारि(री)-अत्यन्त दुलारू बेटी, दुलारी (लोकगीतमे प्रयुक्त)

अलोक-मूर्ख, अपटु

अलोधन(नि)-अत्यन्त दुलारू बेटा/बेटी, दुलारेँ बहसल

अलोप
अलोपित } -लुप्त, गायब भऽ जायब

अल्ल-बल्ल-निरर्थक गप्प

अल्लू-आलू

अल्लो-मल्लो करब-अत्यन्त प्रेम, सौहार्द वा दुलारक व्यवहार, आत्मीयताक प्रदर्शन

अल्हा-1. एकटा लोकगाथाक नायक अल्हा, अल्हा-रूदलक लोकगाथा 2. चुच्चो-पिलीअलि खेलमे निशानापर मारबाक लेल खेलाड़ीक विशेष गोटी

असकतियाह-आलसी, आसकती

असघनी-*also* बाँसक सीढ़ी (सिड़ही)

असज्जाति-दुष्ट, बदमाश

असपताल-चिकित्सालय, ओ सार्वजनिक स्थान जतऽ रोगी सभक उपचारक व्यवस्था रहैछ

असभगनी-आशा भग्न कयनिहारि

असमाहि-खूब नमहर, अत्यन्त विस्तृत

असम्मय-असम्भव

असरा-*also* असार, काठक सारिलसँ इतर दुर्बल अंश

असरेसा-आश्लेषा नक्षत्र

असलका
असली } -शुद्ध, अकृत्रिम

असहज-असह्य,नहि सहबाक योग्य

असहनि-असहिष्णु, ईर्ष्यालु, दुष्ट

असीहति-ताकछेम

असीआसय-एक सय अस्सी.

असीस-आशीष

असुरारि-एकटा कीट विशेष, झिंगुर

असूल
असूली } - खदुका वा देनदारसँ प्राप्य राशि माङि कऽ प्राप्त करब

असेध-ताकछेम

असेधब-ताकछेम करब

असेआस
अस्वास } - रुग्णतामे श्रमजन्य थाकनि क.को. *असिआस*

असौजन-क.को. असोजन, अस्वजन

असौजनियाँ-क.को. असोजनिआ

अस्थीर-स्थिर

अहमाद-अहंकार

अहरी-*also* ऊँच स्थानक किनार

अहलायल-अनिच्छुक, उदासीन, उपेक्षाभाव

अहिना-एहिना

अहिपन-अरिपन, ऐपन

अहियासब-थाहब, भारक अन्दाज करब, अपन क्षमताक अन्दाज करब

अहिला-ऐला, एक प्रकारक मांसविर्ध 2. गौतम ऋषिक पत्नी अहल्या

अहुना-एहुना

अहू-एहू, इहो

अहूनाती-एहू प्रकारेँ

[आ]

आँइ-बाँइ–असम्बद्ध गप्प, अण्ट-सण्ट

आइस-(आंचलिक प्रयोग) अहाँ, अपने

आउन-कठही गाड़ीक पहिआक मध्य भागमे पैसाओल लोहाक गोल फाँफी जाहिमे धूरी पैसाओल जाइछ (क.को. आओन)

आँउस– एक प्रकारक भदैया धान (क.को. आँसु)

आँखु–क.को. अँखुआ

आगु
आगू } –आगाँ

आजाद-स्वतन्त्र

आजादी-स्वतन्त्रता

आड़ाहिस्सी– अरारि, हिस्सा-बखरा लय बलहुँ झगड़ा (क.को. अढ़ाहिस्सी)

आँती(उतब)–*also* माल-जालक एक प्रकारक घातक बिमारी जाहिमे ओ टाङ छिड़िआय मूड़ी पटकऽ लगैछ

आदीगुदी(दी)–दुर्बल व्यक्ति, साधारण सामर्थ्यक व्यक्ति

आनेमाने (बाजब)–बिनु नाम लेने आक्षेप

आपड-हठ, भभटपन (क.को.-आपट)

आपरूपी-*also* स्वतः उद्भूत, अनायास, बिना कारणहि

आफदि–विपत्ति (क.को. आफद)

आबाकाबा–आडम्बरपूर्ण पोशाक

आमामाइ–छठि व्रतकथाक एक पात्री (आमामाइक खिस्सा, आमामाइक पहिले जाग)

आरबल–आयुर्बल, औरदा, आयु

आरिज–अकच्छ, आजिज

आला–श्रेष्ठ, उदार, विलासी

आसकोट-बिनु बाँहिवाला कोट, जवाहरकट, बण्डी

आसखास–आवश्यक आवासीय उपकरण

आसठि–ओ ऊँच स्थान जाहिपर पैर राखि ओसारापर चढ़ल जाइछ, लतमारा

आह–*also* किंचित् ताप (रौदक आह)

आहर–*also* आहार (चिड़ैचुनमुनीक आहर)

आँहाँ–अहाँ, मध्यम पुरुष आदरार्थक सर्वनाम

आहाहा–संवेदना सूचक अव्यय

आहिआलम(अलम)–कमो पीड़ाकेँ बढ़ा कऽ व्यक्त करब

आँहिऊँहि–पीड़ा व्यंजक शब्द

आहिन
आँहिन } – 1. गीजल-गाजल थाल-कादो 2. पीत देबाक लेल भुस्सा आदि दऽ कऽ गील कऽ सानल माटि

आहुल-हाथक औंठा ओ शेष आङुर मध्य अँटऽवला तृण-शस्यादि, (क.को. –आहल)

[इ]

इकड़ी–*also* पानक लतीक साङहमे प्रयुक्त खढ़हीक डाँट

इच्चा–इचना माछ, झिंगा माछ

इटहर–ईंटक घर (अप्रचलित पुरान प्रयोग)

इटेबा–ईंट, पजेबा

इण्डा–इनार,

इतौनी–इतायब

इत्तर–*also* निष्ठुर, अदत्त

इदगाह–मुसलमानक प्रार्थना स्थल

इनरा–इनार

इमन्दार–इमानदार

इम्हऽ–एमहर

इमलिया–इलमलिया, बाकस आदिमे ताला लगयबाक हेतु लोहक साधन

इमली–तेतरि

इरदप–*also* बलजोरी दाबा करब

इरिङ्ग–भिरिङ्ग–अनटोटल, असम्बद्ध

इलबाइस–अतिशय फैशन, विलासिताक विविध साधन

इलाइची
इलैंची } –अइँची

इलोह–लालटेम आदिक इजोतसँ आँखिपर पड़ऽवला चमक

इसकुलिया-इसकुलक छात्र, इसकुलसँ सम्बद्ध

इसतिहार–विज्ञापन

इसर–ईश्वर, महादेव, एकटा उपाधि

[ई]

ईसू (शू)–ईसामसीह

[उ]

उकदट्ठ–उकठ, उपद्रव

उकट्ठी–उकठ कयनिहार, उपद्रवी

उकबत्ती–दाह संस्कारक ऊक

उकबा–झूठ अपवाद, अफवाह

उकरीन–उऋण, ऋणमुक्त

उकस-पुकस–कछमछायब, उकस-पाकस

उकसोबास-विवश भऽ एक स्थानसँ दोसर स्थानपर बसब, कष्टकर स्थिति, उछन्नर

उकाठी–*also* ऊकक अवशिष्ट भाग

उक्का–ऊक

उक्खी-बिक्खी–तीव्र उत्सुकता, उत्कट इच्छा, व्यग्रता

उखेड़ब–उखाही करब, निन्दा करब, गारि पढ़ब

उगरास–*also* मुक्ति, समाप्ति, बदरीक बाद उबेर होयब

उघनि–उगहनि, इनारसँ पानि भरबाक हेतु डोलमे लगाओल डोरी

उघब–उगहब

उचन्त–अनियत

उचन्ती–अनियत आय

उचित-विहित–उपयुक्त ओ विधिक अनुरूप व्यवहार

उचरिङ
उचरिन } – 1. एकटा कीट 2. अस्थिर स्वभावक माउगि

उचेड़ब–उचड़ब, लपकि लेब

उछन्नार–उपद्रव, उकठ (क.को.मे अर्थ-'अनुशासन हीन' अशुद्ध)

उछाहब–1. चार परक पुरना खढ़कें उकटि कऽ हटायब 2. धानक दाउनिमे खोहकें उकटि कऽ निचला भागकें ऊपर आनब

उछेहब–उछाहब

उजड़ब–उपटब, ध्वस्त होयब

उजड़ी-उपटी–उजड़ल-उपटल स्थान

उजबुज–अनिर्णयक मनःस्थिति

उजबुजायब–अनिर्णयक मनःस्थिति होयब

उजमाहल–अगुतायल, उताहुल, आतुर

उजाड़–उजड़ल स्थान, ध्वस्त स्थान

उजाड़नि–उजाड़निहारि (लंकउजाड़नि)

उजोर–अनियन्त्रित, निर्बन्ध

उज्झट–असंगत, अनुचित

उड़न्तबाज–1. खूब उड़निहार चिड़ै 2. (लाक्षणिक) खूब चतुर-चलाक, धूर्त

उड़ (उढ़) बड़ेरा–अव्यवस्थापूर्ण हलचल

उद्भब–मनमे कोनो विचार उत्पन्न होयब

उढ़ार–उढ़रबाक कार्य, परपुरुषक संग स्त्रीक पलायन

उढ़ार नाच–प्रेमकथापर आधृत एक प्रकारक लोकनाट्य

उतार–*also* अति साम्य, प्रतिकृति, अनुकृति

उतारन–परित्यक्त, पहिरल पुरान वस्त्र

उदगार-प्रसन्नता (मन उदगार तँ गाबी गीत)

उदबेग–मानसिक व्यग्रता, चिन्ता (बनियँकें घेघ गैंहकीकें उदबेग)

उदस्त–उदासीन, निरपेक्ष

उद्वेग–मानसिक व्यग्रता, चिन्ता

उध
उधबिलाड़ } बिलाड़क आकारक मत्स्यजीवी जलजन्तु, उद/ऊद/ऊध

उधम मचायब–कूद-फान करब, तोड़फोड़ करब

उनटन–भूकम्प

उनटा-पुनटा–उनट-पुनट

उनटी-पुनटी-हेराफेरी

उनमुनी–उत्सुकता जन्य संचार

उनहब–बेर बीतब

उनैस–*also* सापेक्ष रूपमे किछु न्यून

उपछिया–उपछबाक काज

उपर-झापर–बहुत थोड़, यत्किंचित्, अलग-बलग

उपरबाड़ली–नियत वेतनसँ इतर आय

उपरला–उपरवला, निचलाक उनटा

उपाड़–उपड़बाक वा उपाड़बाक कृत्य, सामासिक पदमे उत्तरपदमे विशेषतः प्रयुक्त, (यथा-केशउपाड़ धाओ, खुट्टाउपाड़)

उप्पा–नोनियाह भीतपर रहनिहार अत्यन्त सूक्ष्म कीट जे मच्छड़ जकाँ कटैत छैक

उफाँटू–समूहसँ फराक, विजातीय, बाहरी

उफान–उधिआन

उबारा–मुक्ति, निवृत्ति

उभनि–उबहनि

उभब–उबहब

उरीन–उरिन, उऋण

उरेहब–*also* समतल आधार-वस्तुपर रंगसँ आकृति बनायब, चित्रण करब

उलटी–वमन, ओक

उलाउ–चुलाउ करब-नँगो-चँगो करब, दुःख देब

उलू-पुतू (बु) करब–बुडबक बनायब, मुँह दूसब,

उलेँच–उलीँच, ओछाओनक चद्दरि

उलेन–ऊनसँ बनल

उसरठ–रुच्छ, नीरस, उसठ

उसरन–निर्वंश

उसरनमाडीह–ओ डीह जाहि ठामक निवासी निर्वंश भऽ गेल होइक

उसरागा–उत्सर्ग कयल, उसरगल

उसिझब–आधा सीझब, कम सीझब

उसिझल–कम सीझल, कुसिझल, अधसिज्झू

उसिनिआ–उसिनबाक काज

उहे–कूकुरकेँ हुलकयबाक शब्द

[ऊ]

ऊखा-उषा

ऊघनि–उगहनि, उबहनि

ऊघब–उगहब

ऊठब–उठब

ऊड़ब–उड़ब

ऊढ़बड़ेरा–उढ़बड़ेरा

ऊपर-झापर–अलग-बलग, उपरे-ऊपर, बहुत थोड़, यत्किञ्चित

ऊभड़-खाभड़–ले-ऊँच, असमतल सतह

ऊल-ऊन

ऊलेन-ऊनी, ऊनसँ बनल

ऊहे–ओएह, अन्यपुरुष सर्वनाम

[ए]

एकगच्छा–एकटा गाछवला स्थान, एगच्छा

एकघारा–अन्य स्ववर्गीय परिवारसँ हीन परिवार

एकछेहा–एकछाहा, शुद्ध, अमिश्रित

एकजुटिआ–एकजुट्टीवला (केश)

एकजुनिआ (आ)–एक जुनासँ बान्हल बोझ

एकटकही–एक टकाक मूल्यवला धातुक सिक्का, एक टकाक मूल्यवला कागतक नोट, एक टकाक मूल्यक कोनो वस्तु

एकटकिया–एकटकही

एकनिआँ(आ)–एक आना मूल्यक

एकपनिआँ(आ)– एक पन्नावला (एकपनिआँ एकबार)

एकपलिआ–*also* एक पल्लावला केबाड़

एकबएग–एकाएक, अकस्मात् (एक-ब-एक)

एकबद्धू–दुइ गामक खेत एकहि बाधमे होयबाक सम्बन्ध

एकभिण्डा–एक भीड़वला पोखरि

एकमण्ट–एकाउण्टेण्ट, लेखापाल

एकमुहड़ी–अधिक लोकक एकहि मतक भऽ जायब,

एकसलिआ / एकसल्ला –एकसाला, एक वर्षक

एकहत्थी–एक हाथक नापवला

एकहन्त–टल-गुल्ली खेलमे कओ संख्या-जे फेलापर दहिना हाथक लुल्हुआपर गुल्ली राखि ऊपर फेकि टालसँ आघात कऽ गुल्लीकेँ उड़াओल जाइछ

एकहारा–*also* एक पत्तीवला फूल, एक पत्तीक धारीवला फूल (तीरा, तग्गर, गेना, ओड़हुल आदि)

एकाएक–एकाँएक, अकस्मात्

एकात–एक कात, किनारमे, सभसँ फराक

एकान्त–*also* एकभुक्त करब

एखन्ते / एखुन्ते –एखनहि

एगोटा(टे)/एगोड़ा(ड़े)–एक व्यक्ति, एकटा लोक

एँड़ी-दोड़ी लागब–एक पैरक एँड़ी आ दोसर पैरक औंठाक स्पर्श, अगिला व्यक्तिक एँड़ीमे पछिला व्यक्तिक औंठाक स्पर्श होयब (श्मशानसँ आपसी बेरमे ई अशुभ मानल जाइछ।)

ए बकचैआ / ए बक्का –घृणासूचक शब्द, अव्यय

एबरी / एमरी –एहि बरख, एहि साल, एहि बेर

एसगरुआ–दोसराइतसँ हीन

[ऐ]

ऐ–*also* 'एहि' सर्वनामक चलित रूप

ऐकार–वर्ण 'ऐ'; तकरमात्रा ' ै ' अर्थात् दोलेँ

ऐजग(ऽ)–एहि ठाम, एहि जगह

ऐँठचट्टा / ऐँठचट्टी –ऐँठ चटनिहार, परोपजीवी

ऐँठ-जूठि–ऐँठ एवं तत्सदृश उच्छिष्ट

ऐठाँ–एहि ठाम, एहि स्थानपर

ऐनि(आइन)– कयदा-कानून

ऐनि बघारब–आडम्बरपूर्वक कयदा-कानून देखायब

ऐन्द्रजालिक–इन्द्रजाल कयनिहार, जादूगर

ऐबाह–ऐबयुक्त, आंशिक दोषयुक्त

ऐरिङ–कानक गहना विशेष, (अं. ईयररिंग)

ऐरिन–बैरिन-शत्रुता रखनिहारि, डाइनि-जोगिन

ऐश–विलासिता

ऐश-तैश / ऐसी-तैसी रोआब

ऐहब-सुहब–सधवा महिला वर्ग

[ओ]

ओइजग(ऽ)–ओहि स्थानपर, ओहि ठाम

ओइठम (-ठाँ,- ठिआ,- ठिन,-ठिना,- ठिनी,-ठाँ,- ठुन,-ठुना)– ओहि ठाम

ओकादि–ओकाति (औकात)

ओकिल–ओकील, ओकिलक काज, ओकिलक सन स्वभाव (निन्दामे)

ओगरबाहि / ओगरबाही –1. ओगरबाक काज 2. ओगरबाक काजक निमित्त देय पारिश्रमिक, रखबारी

ओँघड़ान–ओँघड़िया

ओछाहि–ओछ स्वभावक स्त्री

ओजनगर–भरिगर

ओजनदार–भरिगर

ओझाइ–तन्त्र-मन्त्र ओ झाड़-फूकसँ रोगक उपचार, तन्त्र-मन्त्र ओ झाड़-फूकसँ उपचार करबाक वृत्ति

ओझाइन(नि)–ओझा उपाधिक स्त्रीलिंग

ओझाइ-वैदाइ–झाड़-फूक ओ औषधि सम्बन्धी

ओँटब–*also* एकहि बातकेँ बेर-बेर कहब

ओटिआयब–प्रयोजनार्थ इन्तजाम करब, ठिकिआयब, ठेकना कऽ राखब

ओठगन(घन) / ओठँगन (घन) ओठङन, भोरमे गृहीत भोजन, व्रतपूर्व भोरुक ग्रास विशेषत: जितियामे, सरगही, सेहरी (मुसलमानमे)

ओठङ्गर–अठोङर

ओत्तऽ–ओहि ठाम, ओतए

ओदाउद(दि)–ओदाउझि, स्पर्द्धा

ओनहुना–साधारणत:, साधारण रीतिएँ, ओहुना

ओनाहिते–1. ओहिना, ताही नकाँ 2. अकारणहि

ओनाऽ / ओनी –ओमहर

ओफा–1. कार्यव्यस्तताक बीचमे पलखतिक किछु क्षण 2. सावकाश (क. को.- ओखा)

ओम्–ॐ, प्रणव

ओर–*also* शुरू

ओर-पाहि–आरम्भ एवं क्रमिकता

ओरे–सम्बोधन-शब्द, गीतक भासपूरक स्तोभ

ओरिआनी–*also* ओरिऔनिहार, ओरिअयबामे पटु

ओलड़ब–*also* 1. जगातिक दरहा कऽ खसि पड़ब 2. थाकनिसँ निश्चेष्ट भऽ पड़ि रहब 3. अत्यन्त दुलारेँ छिड़िआयब (क.को.मे 'पलड़ब' अर्थ देल अछि जे अनुपयुक्त)

ओल-बोल, **ओली-बोली**–व्यंग्यवचन, कटु बोली

ओसूली–ओसूल, ओसुलबाक कार्य

ओस्ताद–ओस्ताज, गुरु, शिक्षक, आचार्य, मर्मज्ञ; चलाक, धूर्त

ओस्तादी–चलाकी, धूर्तता

ओहर-ठोहर–तामस मिश्रित बोली

ओहसब–मौलायब, लटब, दुर्बल होयब

ओही नाती–ओही प्रकारेँ, ओही जकाँ, तत्सदृश

ओहुना–ताहू प्रकारेँ, बिना कारणहु

ओहू–ओ सर्वनामक तिर्यक् रूपमे 'अपि' बोधक प्रत्ययक योग

ओहे–वैह

ओहो–ओ सेहो

[औ]

औक-बौक–चकलेल, बलेल, अकान

औँठा छाप–निरक्षर, मूर्ख

औँढ़ि मारब–औँड़ि मारब

औनी-पथारी–औनापथारी, औन्हापथारी

औला-बौला–आउल-बाउल, औल-बौल

औरत, **औरति**, **औरतिया**–सामान्य स्त्री, घरवाली, पत्नी

औरदा–आयु (क. को. अरूदा)

[क]

कऽ–कए, करब धातुक पूर्वकालिक असमापिका रूप

कएथा–*also* काएथक दीर्घ रूप

कओरा–कओर बराबरि खाद्य, विशेषत: कुकुरकेँ देय खाद्य पदार्थ

कंस, **कंसा**–*also* दुष्ट, क्रूर, निर्दय

कँकड़ोड़–काँकोड़ द्वारा अपन बोलपर जमा कयल गेल माँटिक जाल

कँकुड़िया केश–औँठिआ केश

कँकुड़ी–काँकोड़ सन आकृति, लत्ती-फत्तीक एकटा रोग

कँकुड़ी लागब–कँकुड़िआयब

कखनी–कखन

कखारा–ककहरा

कगजिआ, **कगतिआ**–1. कागत(ज)पर लिखबा लेल पिन्सिल 2. कागत-व्यवसायसँ सम्बद्ध मुसलमानक एकटा जाति

कक्का–काका, पितृव्य, पिताक भाइक हेतु सम्बोधन

कच–*also* 1. कचरी सदृश छानल ओझोरायल व्यंजन 2. कन्द-व्यंजनादिक छोट-छोट काटल (कचल) खण्ड

कचकोँढ़ा–कचकारा

कचबाबध–कचुआबध, एहन मारि जाहिमे अंग-भंग भऽ जाय, कचिकचि कऽ कयल गेल हत्या

कचुरी–कचरी

कचौड़ी–फुलकी, घीमे छानल छोट आकारक सोहारी (क.को.- अर्थ ग्राह्य नहि)

कच्चौ–व्यंजनादिक विन्याससँ काटल गेल छोट खण्ड

कछबी–पेटक एकटा रोग

कच्छी–*also* कच्छ प्रदेशक निवासी

कच्छी–किनार, एकदम कोर

कच्छी काटब–छौह काटब, काजसँ छिटकब, लाजसँ कोनो व्यक्तिक नजरिसँ सप्रयास बचैत रहब

कजरौटा–कजरौटी

कटबी–*also* समानान्तर चतुर्भुज आकारक काटि कऽ बनाओल गेल एकटा मिठाइ, बर्फी

कट्टिस–मैत्रीक समाप्ति, छुट्टा-छुट्टी, विशेषत: बच्चा सभ द्वारा प्रयुक्त

कट्टिस-कुट्टिस–आरम्भिक कक्षाक छात्रक द्वारा कापीपर खेलायल जायवला एकटा खेल

कट्दुक, **कट्दुक मसल्ला**– टुकड़ी कयल नारियर-छोहाड़ा एवं अन्य मेवाक मिश्रण

कट्ठमोन, **कट्ठेमोन**–एक कट्ठा जमीनमे एक मनक उपजा

कठकी–छोट काठी

कठकीड़ा(ड़ी)–थेल्हर

कठघारा–कठघरा

कठपाज–कुतर्क कयनिहार, दुष्ट, लंगट

कठपिंगल–अनसोहाँत बातकेँ रचि-रचि कऽ कहनिहार

कठबोगना–इनार-पोखरिक यज्ञमे स्थापित काठक मानवाकृति

कठमस्त–खूब स्वस्थ, सुडौल देहवला

कठसार–*also* सारक सार

कठ(ट)हिआ–1. गाछ कटबाक काज कयनिहार 2. काठक व्यवसाय कयनिहार

कठिआरी–*also* मृतकक दाहक्रियाक स्थल

कठौता–काठसँ बनाओल पैघ अढ़िआ, कठौत

कठौतिया–कठौत आकारक गहीँर (थारी), कठौतिया थारी

कठौती–छोट कठौत, कतुली

कड़कड़ौआ–खूब कड़गर, तीक्ष्ण, चरम स्थिति (कड़कड़ौआ रौद, कड़कड़ौआ जाड़, कड़कड़ौआ नोट)

कड़करेज–एक प्रकारक औषधीय गाछ ओ फल

कड़री–कड़रि, कदली वृक्ष, केराक थम्ह

कइहर–एक प्रकारक जलकन्द

कण्टिर–कण्टीर, *also* बेटा

कण्टिरबी–बेटी

कण्डल–झगड़ा, झंझटि (प्राचीन रूप-कन्दल-कन्दल खव्वरीट अइसन लोचन- वर्णरत्नाकर)

कतबो–बहुतो

कतला–कातवला, कतका

कतिआयब–कातमे राखब, उपेक्षा करब

कतहु–कोनो ठाम

कत्ता–*also* कतेको, बहुतो

कत्ते–कतबा, बहुतो

कथब–बात बथारब, अनसोहाँत बात गाजब

कदै–पोखरि-डबरा इत्यादिमे पनिक सतहपर छाल्ही जकाँ जमल पदार्थ (क.कोक अर्थ-पानिमे बहिकेँ आबि जमल कादो- भ्रान्त, वास्तवमे ओ पदार्थ 'गादि' कहल जाइछ।)

कनखा–फूटल घैल-तौलाक मुँहवला भाग (क.को. फूटल भाँड़क टुकड़ी असंगत)

कनचट्टक–*also* पुरान आमक गाछमे कानक आकारक उत्पन्न गोबरछत्ता जकर औषधीय उपयोग कनचट्टक भालमे होइछ

कनछी–कंछी, ऊँच सतहक एकदम किनार

कनटोप–कनतोप, टोप, अंगरेज सभक शिरस्त्राण

कनबोज(झ)–कानक जड़ि, कनपट्टी

कनसतर(कनस्तर)–कण्टर, टीनक चदराक बनल घनाकार डिब्बा

कनहा–*also* 1. कान्ह, स्कन्ध; 2. उत्तरा नक्षत्र

कनिआइन–कनिआँ

कनिआँ-मनिआँ–कनिआँ एवं तत्सदृश स्त्री

कनी–*also* अल्प, थोड़, कनेक, कम

कनीमनी–अत्यल्प

कन्दा–कन्द कोटिक एकटा व्यंजन

कपटी–1. छली, छल कयनिहार 2. माटिक छोट पेआली

कपड़कोट–कपड़ाक घेरावा, कनात

कपरफोड़ा–कपार फोड़ऽवला, सक्कत, कठोर माँटि

कवाबचीनी–एक प्रकारक मसाला

कबिलताइ / **कबिलती** / **कबिलपनी** –चतुरता, बुधिआरी, (सामान्यत: व्यंग्यात्मक प्रयोग

कबीला–*also* पत्नी, घरवाली

कमखर्ची–1. कम खर्च कयनिहार, मितव्ययी 2. जाहिमे कम खर्च लागय (कमखर्ची हो, खुबसुरती हो, मजगूती हो)

कमाइल–कमोट, पैनी-पसारीकेँ अन्न रूपमे देय वर्ष भरिक बोनि

कअर–मूज, सरपत-एड़ी आदिक बीर जाहिमे फुलकी रहैछ

करकट–*also* घरक चारक रूपमे प्रयुक्त टीन वा सीमेंटक चदरा

करछुल्ली–छोट करछु

करताइ–कर्त्ता, कयनिहार, कयल गेल काज (व्यंग्यमे)

करतापूत–करतौत, पुत्रहीन व्यक्ति द्वारा नियोजित श्राद्ध कयनिहार

करपरदाज–कारपरदाज,

करमकीट–हीन स्वभावक लोक

करमाति–करामति, चमत्कार

करमाती पोटरी–चमत्कारक स्रोत

करसमा–डाइन द्वारा कयल गेल रोग (करिश्मा)

करह-बाती–कोँढ़ी-बतिआ

करिऔटी / **करिऔती** –लसिगर कारी माँटिक प्रकार

करिखा–कारी रंग

कर्रा–1. गाय, बड़द आ महींसक सुखायल गोबर 2. कर्रा-पड़ब-शोकजन्य चीत्कार

कल पड़ब–बड़ देरीसँ हल्लुक निन्न होयब

कलपाना–कलपना, अकारण देल गेल प्रताड़ना जन्य व्यथा

कलपाना पड़ब–शाप पड़ब

कलमच–स्थिर, अचंचल, संचमंच, बिनु हाथ-पैर डोलौने

कलस–आमक नव पल्लव

कलसगर–*also* कलसयुक्त, नवपल्लव युक्त गाछ

कलसायब–गाछमे नव नव पल्लव होयब

कलहन्त–अत्यन्त अभावग्रस्त, विकल (क.को.–झगड़ा अर्थ असंगत)

कलानोन–बीट नोन

कलायल–ललचायल, अतृप्त, कोनो वस्तु विशेषक नितान्त अभाव

कलौआ पोखरि–ओ पोखरि जतऽ तीर्थ यात्री आ बनिजार कलौ खाय

कल्लर–*also* भिखमंगा, महनथन कयनिहार

कल्लादराध / **कल्लादराधनी** – मुँहक जोरगर, अत्यन्त मुखर

कविकाठी–1. कवि बनबाक लौल कयनिहार, 2. रचि-रचि कऽ बात बजनिहार

कसबिन–कसबामे रहनिहारि वेश्या

कसमकस–खूब गसल

कसिनिआँ–1. कसाइक स्त्री 2. निष्ठुर स्त्री

कसिनिआँ–निष्ठुर स्त्री, क्रूर स्वभाववाली

कसुरवार–दोषी, अपराधी

कसौंझी–कसोंझी, काँच आमसँ बनल अँचारक एक प्रकार

कसौन्ही–कसौनी

कहकह–अत्यन्त गाढ़ पीअर रंग

कहबित–लोकोक्ति, कहबी

कहबैका–नामी लोक, प्रतिष्ठित

कहूँ–कतहु, किनसाइत, प्राय:

काचर-पिचर–आकाशमे छिटकल-छिटकल मेघ

काज–*also* कुर्ता-कमीज आदिमे बटम पैसयबाक हेतु बनाओल भूर

काँटा–*also* काँट, कण्टक

काँटा करब–तौलब

काटि–तैलक गादि (पेनीमे जमल मलक अतिव्याप्ति)

कान्ह छीपब–सहयोगसँ पाछाँ हटब

कान्हु लागब–असमर्थताक बोध होयब, अशक्य लागब

काबू–*also* बल, तागति

काम–*also* काज

कालानोन–बीट नोन

काहत–कहत, कहात, अकाल, दुर्भिक्ष (काहत दूर करू भारतसँ, कोटि कोटिजन करथि विनतिया-चन्दाझा)

किकिहारि (काटब)–पीड़ाक कारणे चीत्कार करब, कष्ट भोगब

किचकाहिन–पैरसँ मथायल थाल-कादो, खिचकाहिन

किच्चिन–किचोन, स्त्री प्रेत

किता–किता, जमीन ओ मकान आदिक एकाइ

किमखाप–किमखाव

किरतिम कऽ–कृत्रिम, जानि-बूझि कऽ

किरपिनी–कृपण, किरपिन

किलहोरि } – कन्हेली, साँढ़ ओ बड़दक
किल्होरि } कान्हपर उठल मांस-पिण्ड (क.को. क अर्थ चिलहोरि वा किलोल अशुद्ध)

किशोरी–तरुणी

किशोरीजी–जनकक पुत्री जानकी, सीता

किसनौत–यादव जातिक एकटा उपवर्ग

कीचक–महाभारतक एकटा खल पात्र, राजा विराटक सार जे द्रौपदीपर कुदृष्टि देबाक कारणे भीमक द्वारा मारल गेल

कीड़ी–छोट कीड़ा

कीत-कीत–बालवर्गक कबड्डी सदृश एकटा खेल

कीनब–किनब, क्रय करब

कीन-बेसाह–कीनब ओ तत्सदृश कार्य

कुकड़ाहा–अगिलग्गीमे उड़ैनिहार आगिक लुक्का

कुकरम–कुकर्म, अपकर्म, निन्दनीय काज

कुकरमी–कुकर्म कयनिहार

कुकरौंछ–घास कोटिक एकटा वनस्पति जकर पातक रसक प्रयोग कटि-कुटि गेलापर शोणित-स्रावकेँ बन्द करबा लेल कयल जाइछ

कुञ्जर–अर्द्धसिद्ध व्यंजनादि

कुटकुटा कऽ लागब } – आँखि ओ
कुटकुटायब } श्वासनलीमे धुआँ आ कटु गन्धक कड़ुऐनीक अनुभव होयब

कुटनी–*also* जाँत सिलौट आदिक छेनीसँ बनाओल गेल खरखर सतह

कुटमारब }
कुटमैता } – कुटुमारब, कुटुमैतीक
कुटमैती } वैकल्पिक रूप

कुटान-पिसान–कुटबाक ओ पिसिआक व्यवसाय

कुटि(टी)चालि–कूट आचरण करबाक स्वभाव

कुटि(टी)चाली–कूट आचरण कयनिहार

कुतकुत–कुकुरक बच्चाकेँ सोर करबाक शब्द

कुतरुम–*also* सन/पटुआक गाछ

कुत्थब–कुथब

कुत्था–कुथनी

कुथौनी–कुथनी

कुदकान–कुदान, कुदकब

कुदीन–कुदिन, अधलाह समय, शुभलग्न विरहित समय

कुनह–द्वेष (क.को. कुनह)

कुबड़ी–कुबड़ाक स्त्रीलिंग

कुबिआयब–कुब्बी (केहुनी)सँ धक्का देब-ठेलब-मारब

कुबेर–*also* धनक देव, रावणक वैमात्रेय भाइ

कुब्बड़–टेढ़ रीढ़, पीठपर उठल रीढ़ वा मांसपिण्ड

कुब्बति–बल, शक्ति, सामर्थ्य, (कूवत)

कुब्बी–*also* केहुनी, मोड़ल हाथ ओ बाँहिक कोणाग्र भाग

कुमरठिल्ला(ल्ली)– बेसी वयस भेलहुपर अविवाहित (निन्दामे)

कुरकुट–*also* पुरान खढ़क चुकनी

कुरसी–*also* देबालक चौड़गर आधार, नेँओ (plinth)

कुलकुलायब–पेटमे तीव्र भूखक संवेदना होयब

कुल्हिआ–माँटिक चुकड़ी

कुशक कलेप–कुशक काप, लघुतम नछोड़

कुसंयोग–अधलाह संयोग

कुसिझल–कम सीझल

कुहब–भितरिआ कष्ट देब, अप्रकट रूपमे सतायब

कुहरायब–कुहरबाक लेल विवश करब, अप्रत्यक्ष रूपमे पीड़ित करब

कुहरैनी–कुहरबाक स्थिति

कूहब–कुहब

कूही–अव्यक्त व्यथा, नि:शब्द कष्ट (क.को.क चीत्कार वा क्रन्दन नहि)

कें चुआयब–सापक त्वचा-त्यागक अवस्था होयब

केटली / **केतली** – केटली, चाह बनयबाक टोंटी लागल बासन

केथड़ी(री)–केथराक लघु रूप

केन्हऽ–कोमहर

केप्फा–रोआबक गप्प, कैफा (फा.)

कोढ़िआठ–आलसी

को ँती–बर्छी

कोरबाहि–बच्चाकें सदिखन कोरामे रखने रहब

कौ ँआँ–बाड़ी-झाड़ीमे जनमनिहार एक गोट वनस्पति जकर पातक तरुआ होइछ

कौड़(र)–कपर्दक, सिक्काक अर्थमे कौड़ीक प्राचीन रूप

कौड़िआ–*also* गिलटी

कौलति–कोनो वस्तु बेर-बेर दीनतापूर्वक माङब

कौल्हा–चूल्हा

इत्यलम्

मैथिली शब्दकोषमे सामान्यत: ओहने शब्द सभ ग्रहण कयल जाइत रहल अछि जे सामाजिक जीवनमे नित्य रूपसँ प्रयुक्त होइत रहैत अछि अथवा साहित्यमे प्रयुक्त होइत रहल अछि । लोकवृत्त (फोकलोर)क चारि गोट स्तम्भ अछि-लोकमानस, लोकचर्या, लोककला ओ लोकवाङ्मय । एहिमे लोकवाङ्मयक स्थान सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि । एहि लोकवाङ्मयक तीन गोट सोपान अछि जाहिमे सबसँ पहिल अछि लोकभाषिक शब्दावली । लोकवृत्तक विभिन्न वस्तु, स्थिति, भाव, गुण, दोष, उपयोग आदिक अभिधान; विविध अनुष्ठान ओ कार्य-व्यापारक विशिष्ट धातु सभ पारिभाषिक प्रकृतिक होइत अछि जे साहित्यमे भनहि अपरिचित रहओ परन्तु लौकिक जीवन-शैलीक अनिवार्य अंग रहैत अछि । मिथिलाक पारम्परिक विभिन्न व्यवसाय, अजस्र उपभोग्य वस्तु, ओकर निर्माणक आधार-सामग्री, निर्माण-प्रक्रिया, नगरसँ हटि सुदूर ग्रामांचलक भौगोलिक-प्राकृतिक परिवेश, समाजक आभ्यन्तरीण आचार ओ लोकव्यवहार; निम्नतम स्तरपर जीबैत समाजक जीवनमे पारम्परिक रूपसँ स्थान बनौने मूर्त्त-अमूर्त्त उपादान सभक व्यंजक शब्दावली मैथिली कोष सभमे समाविष्ट भैए गेल होयत से विश्वासपूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि ।

एहि स्थितिकें अस्वाभाविको नहि कहल जा सकैत अछि । एकर कारण अछि जे सामान्य जीवनमे जे घटना आ कार्य-व्यापार होइत रहैत अछि, जे अनुभूति होइत रहैत अछि, जाहि भावक बोध होइत रहैत अछि एवं जाहि-जाहि भौतिक वस्तुक उपयोग-उपभोग कयल जाइत अछि तकर सभक अर्थ-व्यंजक शब्दावली सामान्य प्रचलनमे विशेष रहैत अछि । ओ शब्दावली शब्दकोषमे सहज रूपमे चल अबैत अछि ।

परन्तु उपभोग्य वस्तुक उत्पादन प्रक्रियामे प्रयुक्त आधार सामग्री, उपकरण, कार्य-व्यापार, उत्पादन-प्रक्रियामे भेनिहार गुण-दोष, व्यवधान, सतर्कता इत्यादिक व्यंजक शब्दावली सामान्य प्रयोगमे नहि रहैत अछि । ओकर प्रयोक्ता, प्रयोगक बोद्धा तथा प्रयोगक अवसर बड़ सीमित रहैत अछि । अत: ओहन शब्दावलीक संकलन विशेष प्रयत्न कयलोपर दीर्घकालेमे सम्भव अछि ।

मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीकें सप्रयत्न संकलित कऽ ओकरा व्यवस्थित रूपमे लिपिबद्ध करबाक प्रयास तँ नहि परन्तु अव्यवस्थित एवं आनुषंगिक प्रयास सर्वप्रथम फ्रांसिस बुकनन द्वारा कयल गेल छल । ओ 1809-10 मे प्रस्तुत अपन प्रसिद्ध विवरणात्मक ग्रन्थ **एन एकाउण्ट ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ पुर्नियामे** मिथिला क्षेत्रक भौगोलिक परिवेश, गाछ-वृक्ष, जीव-जन्तु, उपजा-बाड़ी, मिथिलाक सामाजिक जीवन, खान-पान, वस्त्राभूषण, व्यवसाय, मनोरंजन इत्यादिक विवरणक क्रममे **मिथिला डायलेक्ट** अथवा **देशभाषाक** बहुश: मूल शब्दकें समाविष्ट कयने छलाह ।

उनैसम शताब्दीक तेसर ओ चारिम चरणक मध्यमे मिथिलाक लोकभाषिक शब्दावलीक प्रति उन्मुखताक कतोक प्रमाण देखल जाइत अछि । कवीश्वर चन्दाझा ओ भानुनाथझा **वाताह्वान** काव्यक रचना ओही अवधिमे कयने छलाह । वाताह्वानमे क सँ क्ष धरिक व्यंजन वर्णपर पद्य-रचना कयल गेल अछि । प्रत्येक वर्णपर रचित प्रत्येक पद्यमे तत्तत् वर्णसँ आरब्ध एकटा गामक नाम, एकटा व्यक्तिक नाम, एकटा नदीक नाम, एकटा गाछक नाम, एकटा माछक नाम ओ एकटा लोकोक्तिक सन्निवेश कयल गेल अछि ।

एक-दूटा पद्य उदाहरणार्थ चन्दाझाक वाताह्वानसँ देखल जा सकैत अछि ।

'**झ**' वर्णपर पद्य अछि–

झट दय जाय झमटिआ गाम ।
झौआ उपर कयल विसराम ॥
अविस्थान कर झोटी नाम ।
बकर्को झिंगा थेटल तहि ठाम ॥
उपलच्छन संसारहि फैल ।
झिटकीसौं फुटि जाइछ धैल ॥

'ड' वर्णपर पद्य अछि–

डुमरी गाँमे डुमरिक गाछ ।
बैसक(ल) बक गिड़ि डेढ़वा माँछ ॥

डोमन अविस्थान कर धीर।
बक पिउलनि गय डाडसि नीर॥
उपलच्छन अछि कतय न घोल।
डोकाकाँ मुह फूजल बोल॥

चन्दाझाक वाताह्वानमे तीस गोट पद्य अछि। अतः तीस गोट माछ ओ तीस गोट गाछक नाम तेँ सहजहि लेखबद्ध भऽ गेल अछि। यैह रीति भानुनाथोक वाताह्वानमे भेटैत अछि।

कवीश्वर चन्दाझा मिथिलाभाषाक शब्दकोषपर सेहो कार्य करैत छलाह। हुनक परिवारक एक गोट उत्तराधिकारी पिंडारुछ निवासी गोनरझाक लगमे कवीश्वरक हस्तलिखित पोथा-पत्र सभ मोटा बान्हल छलनि। हमरा ओ पोथा-पत्र सभ देखबाक ओ पढ़बाक अवसर भेटल छल। ओहिमे किछु पन्ना एहन देखबामे आयल छल जाहिमे शब्दक संग्रह छल। किछु पन्नामे अनेकार्थक शब्द सभ छल जकर भिन्न-भिन्न अर्थ संस्कृतक विभिन्न कोषक उल्लेखपूर्वक अंकित छल। पुनः किछु पन्ना एहन छल जकर आरम्भमे लिखल छल **मिथिलाभाषा नाम संग्रह**। एहिमे मैथिलीक ठेठ शब्दावली अर्थात् देशज ओ तत्सम संज्ञा एवं विशेषण शब्द सभक अपूर्ण संग्रह बूझि पड़ल। एहि संग्रहमे ने अक्षरक्रमक अनुसरण छल, ने विषय-विभागक। लगैत अछि जे कवीश्वर चन्दाझा जतऽ जे विशिष्ट शब्द सुनैत छलाह अथवा मोन पड़ैत छलनि तकरा टिपने जाइत छलाह। पश्चात् ओकरा क्रमबद्ध करबाक तथा ओकरा शब्दकोषक रूप देबाक योजना छल होयतनि। सम्भव अछि जे शब्दकोष बनौनहुँ होथि जे कतहु रक्षित नहि रहि कोनो पोथाक संग बिरहा गेल होनि। ओही शब्द संग्रहक किछु सामग्रीक समावेश हुनक **वाताह्वान**मे भेल सन प्रतीत होइत अछि।

1867 इसवीमे मुन्शी अयोध्याप्रसाद'बहार' द्वारा उर्दूमे लिखित ग्रन्थ **रियाज-ए-तिरहुत** प्रकाशित भेल छल (**महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह-कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगा द्वारा हिन्दी अनुवाद सहित 1997मे पुनः प्रकाशित**)। ओहि ग्रन्थमे मिथिलाक संक्षिप्त इतिहासक संगहि समकालीन परिस्थिति ओ सामाजिक परिवेशक सेहो वर्णन भेल अछि। वर्णन उर्दूमे रहबाक कारणे मिथिला भाषाक लोकभाषिक शब्दावली बहुत अधिक तँ नहि अछि, तथापि कतहु-कतहु कतिपय शब्द अवश्य देखल जाइछ। **रियाज-ए-तिरहुत**मे मिथिलाक आम सभक कतोक प्रभेदक मूल नाम कहि कऽ उल्लेख भेल अछि, जेना-**बम्बइआ, मालदह, दड़मा (दरिभा), लड़ुआ, किशुनभोग, गोपालभोग, लाटकम्पी, हलुआदलदल, सिन्दुरिया, ककड़िया, खरभुजवा, महबूब केल(र)वा, भदैया, महाराज पसन्द, सफेदा, अनमोलवा**। **कोकटी** कपड़ाक प्रशंसा करैत एकर दुइ गोट प्रकार-**नैनसुख** ओ **कमरुखक** उल्लेख भेल अछि। किन्तु अधिक ठाम मूल वस्तुक उर्दू अभिधान प्रयुक्त अछि।

उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे दरभंगाक एकटा वकील बिहारीलाल 'फितरत' पुरना तिरहुत जिलाक इतिहास उर्दूमे **तवारिखुल फितरत प्रसिद्ध आईना-ए-तिरहुत** लिखने छलाह जे एक तरहेँ मिथिलाक इतिहास छल। एकर रचना मार्च 1880मे सम्पन्न भेल तथा महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक इच्छानुसार 1883मे प्रकाशित भेल छल (**महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह-कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगा द्वारा 2007मे हिन्दी अनुवाद सहित पुनर्मुद्रित**)। एहि ग्रन्थमे फ्रान्सिस बुकननेक पद्धतिपर तिरहुत जिला सहित मिथिलाक इतिहास, भौगोलिक परिवेश, स्थानीय वनस्पति, फल-फूल, उपजा-बाड़ी, पशु-पक्षी, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, खान-पान, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार इत्यादिक वर्णन कयल गेल अछि। विविध विषयक परिचयक क्रममे मैथिलीक बहुतो लोकभाषिक शब्दावली मूल रूपमे समाविष्ट भेल अछि। यद्यपि कतहु-कतहु उर्दू शब्द अथवा उर्दू प्रभावित शब्द सेहो प्रयुक्त भेल अछि, तथापि मूल मैथिली लोकभाषिक शब्दो सुरक्षित अछि। **'फितरत'** द्वारा परिगणित बहुतो शब्द सभक अर्थ निर्धारित करब आब कठिन अछि। उदाहरणक लेल कुसियारक प्रभेद-***छनियाँ, लरकोरी, पौंडा, कतारा, भौंदले***; मिठाइक प्रकारमे ***खजला, ताजखानी, पोनार, तूत, लड़ोइ*** आदि।

एही कोटिक एकटा और ग्रन्थ हिन्दी भाषामे रचित भेल छल रासबिहारीलालदास द्वारा। ओकर नाम छल **मिथिला दर्पण**। ओकर प्रकाशन 1915मे भेल छल। ओहू ग्रन्थमे मिथिलाक परिचय विस्तारसँ देल गेल। **मिथिला दर्पण**मे पूर्वापेक्षा मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावली प्रचुर संख्यामे समाविष्ट भेल अछि। ओहू ग्रन्थमे मैथिली शब्दावली कतोक ठाम हिन्दी उच्चारणसँ प्रभावित अछि अथवा मैथिली शब्दक स्थानमे ओकर हिन्दी पर्याय कतोक ठाम दऽ देल गेल अछि। **मिथिला दर्पण**मे शीर्षकबद्ध कऽ शब्दावली देल गेल अछि, यथा–धानक विभिन्न प्रभेद सहित, वनस्पति, पुष्प, तृण, थलचर, जलचर माछक प्रभेद सहित, नभचर, गहना, वस्त्रादि आच्छादन, सवारी, वाद्ययन्त्र, खेल-धूप, पूजोपकरण, मादक पदार्थ, भोज्य सामग्री, अस्त्रशस्त्रादि, कृषि-उपकरण, द्रव्यपात्र, गृहोपकरण भवनादि, मिथिलावासी विभिन्न जाति तथा मिथिलाक पैंतिस गोट व्यवसायी जातिक व्यवसाय-साधक सामान-उपकरणक नामावली। **मिथिला दर्पण**मे लगभग दू हजार लोकभाषिक शब्दक संग्रह कयल गेल अछि। एकरा मैथिली लोकभाषिक शब्दावलीकेँ लेखबद्ध करबाक दिशामे महत्त्वपूर्ण योगदान मानल जा सकैत अछि।

लोकवृत्त ओ लोकभाषिक शब्दावलीक दृष्टिसँ सबसँ महत्त्वपूर्ण कृति थीक जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सनक **बिहार पीजैण्ट लाइफ**। ई ग्रन्थ सर्वप्रथम 1885 इ. मे सेक्रेटेरिएट प्रेस, कलकत्तामे मुद्रित भेल छल। दोसर संस्करण 1926मे पटनाक सेक्रेटेरिएट प्रेससँ बहरायल छल। तेसर संस्करण 1975मे कॉस्मो पब्लिकेशन,

दरियागंज, नई दिल्लीसँ बहरायल। एकर मैथिली रूपान्तर **बिहारक ग्राम जीवन** मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित कयल गेल अछि। एहि ग्रन्थक भौगोलिक सीमा-क्षेत्र अछि समग्र पुरना बिहार प्रान्त तथा वर्ण्य विषय बिहारक ग्राम्य जीवनक समग्र क्षेत्र। ग्रन्थमे मुख्यतः चौदह वर्ग अछि। कतोक वर्गकेँ उपवर्गमे विभक्त कयल गेल अछि। पुनः वर्ग अथवा उपवर्गकेँ अध्यायमे विभक्त कयल गेल अछि। अध्यायक संख्या अछि 264। अध्यायो सबमे अनुच्छेद सब अछि। समस्त ग्रन्थमे 1500 अनुच्छेद अछि।

एहि ग्रन्थमे बिहारक कृषि एवं कृषक जीवनसँ सम्बद्ध उपादान सभक विवरण, अर्थ ओ परिभाषा सहित अभिधान सभक संग्रह कयल गेल अछि। लेखक आरम्भेमे कहलनि अछि जे–

'.......this work professes to be a catalogue of the names used by the Bihar peasant for the things surrounding him in his daily life.....'

अतः कोनो वर्ण्य वस्तुक बिहारक कोन क्षेत्र वा जिलामे कोन अभिधान, अभिधानक वैकल्पिक रूप अथवा भिन्न पर्याय चलैत अछि, तकरा देवनागरी एवं रोमनमे अंकित कयल गेल अछि। एहि ग्रन्थक सीमामे समग्र बिहार अबैत अछि तेँ एहिमे मैथिली, मगही ओ भोजपुरी-तीनू भाषाक शब्दावली समाविष्ट अछि। एहिमे ग्रियर्सनहिक भाषा सर्वेक्षणमे जाहि जिला सबकेँ मैथिली भाषी क्षेत्र मानल गेल अछि, ओहि जिला सभमे प्रयुक्त शब्दावली मैथिली भाषाक शब्दावली थिक से निस्सन्देह।

ग्रन्थक आरम्भमे ग्रियर्सनक जे संकल्प-सूत्र छनि जे एहि ग्रन्थमे बिहारक कृषक लोकनिक दैनन्दिन जीवनमे जाहि वस्तु सभक नाम प्रयुक्त होइछ तकर संग्रह थिक– तकर समग्रतामे निर्वहण नहि भऽ सकल अछि। बिहारक कृषकलोकनिक जीवनमे हितकर-अहितकर, साधक-बाधक, ग्राह्य-वर्ज्य, उपयोगी-अनुपयोगी वनस्पति, जलचर, थलचर, नभचर, गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, धानक प्रभेद, आमक प्रभेद, माछक प्रभेद, सापक प्रभेद, पक्षी सभक प्रजाति इत्यादिक विस्तृत, व्यवस्थित परिचय सेहो अपेक्षित छल। तथापि **बिहार पीजेंट लाइफ** बिहारक आ संगहि मिथिलाक लोकवृत्त ओ लोकभाषिक शब्दावलीक एकटा वृहत् भण्डारे अछि। वास्तवमे ई ग्रन्थ एहि प्रकाश्य ग्रन्थहिक नहि अपितु अन्य भाषा-क्षेत्रमे एहि सदृश लोकभाषिक शब्दावलीपर भेल अनुसन्धानक हेतु महत्वपूर्ण आधार ओ मार्गदर्शकक काज करैत रहल अछि आ भविष्यहुमे एकर महत्व आ उपयोगिता अक्षुण्ण रहत ताहिमे सन्देह नहि।

पूर्ववर्ती एवं साम्प्रतिको मैथिली शब्दकोषक निर्मातालोकनि जे किछु लोकभाषिक शब्दावलीक संग्रह कऽ सकलाह, से वैयक्तिके प्रयत्नसँ। हुनका

लोकनिकेँ कोनो संस्थागत अथवा सामूहिक सहयोग भेटल होइन, से नहि बूझि पड़ैत अछि।

मिथिलाक प्राकृतिक ओ भौगोलिक परिवेश, वनस्पति, जीव-जन्तु, कृषिकर्म, पशुपालन, पारम्परिक व्यवसाय, लोकव्यवहार इत्यादि सम्बन्धी लोकभाषिक शब्दावलीक संकलन एवं ओकर अर्थनिर्वचन मूल स्रोत धरि जाय प्रत्यक्ष रूपमे देखि, सूनि एवं अनुभव प्राप्त कैए कऽ सम्यक् रूपमे सम्भव अछि जे एक व्यक्ति बुतेँ नहि, अनेक व्यक्तिक सामूहिक प्रयत्नसँ सम्भव भऽ सकैत अछि।

समयक परिवर्त्तनसँ लोकक रुचि, आचार, व्यवहार एवं परिस्थितिमे निरन्तर परिवर्त्तन होइत जा रहल अछि। नित्य नव-नव वैज्ञानिक आविष्कारसँ जीवन-पद्धतिमे परिवर्त्तन होइत जा रहल अछि। नित्य नव-नव जीवनोपयोगी सामग्री सभ नव आकार-प्रकार धारण कऽ कऽ अबैत जा रहल अछि। ओकर सभक स्थानीय आधार सामग्रीसँ लऽ कऽ उत्पादनक प्रक्रिया धरि सेहो समाप्ति दिस बड़ तेजीसँ अग्रसर भऽ रहल अछि।

नव-नव रासायनिक खाद ओ कीटनाशक औषधि सभक कृषिकर्ममे निरन्तर वर्द्धिष्णु प्रयोग, नव-नव यातायात साधनक विस्तार, छोट-पैघ कल-कारखानाक विस्तार, सुदूर ग्रामांचल धरि शहरी मानसिकता ओ शहरीकरणक निरन्तर पसारसँ पर्यावरण ओ परिस्थितिमे प्रदूषण-परिवर्त्तन तीव्र गतिसँ होइत जा रहल अछि। एकर सभक कारणे प्राकृतिक सन्तुलन बदलि रहल अछि। एकर प्रभाव वनस्पति, घास-पात, जीव-जन्तु, चिड़ै-चुनमुनी, माछ-काछु, उपजा-बाड़ी इत्यादिपर गम्भीर रूपेँ पड़ैत जा रहल अछि।

एहि सभक कारणे मिथिलाक लोकवृत्तक बहुतो उपादान सभ लुप्त होइत जा रहल अछि। स्वभावतः ओकरा संगहि ओहिसँ सम्बद्ध ओकर लोकभाषिक शब्दावली सेहो उपयोगिताहीन भऽ कऽ प्रयोगसँ बहिर्भूत होइत लुप्त होइत जा रहल अछि। एकर ज्वलन्त उदाहरण सभ तँ अनेक अछि जाहिमे एक गोट अछि मिथिलाक चिड़ै-चुनमुनीक अजस्र प्रजातिक ह्रास ओ लोपक संगहि ओकर अभिधान सभक लोप।

एकटा यूरोपीय पर्यावरणविद् चार्ल्स एम. इंगलिस 1897सँ 1948 धरिक अवधिमे चालिस वर्ष धरि दरभंगा (पुरना) जिलामे रहि चिड़ै-चुनमुनी सभक गम्भीर सर्वेक्षण कयने छलाह। दरभंगा जिलाक मधुबनी सबडिवीजनक पक्षीपर हुनक एकटा वृहत् लेख बम्बइक **नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी जर्नल**, 1901क पन्द्रहम ओ सोलहम भागमे प्रकाशित भेल छलनि जे अत्यन्त प्रामाणिक मानल जाइत अछि। पुनः 1936मे कलकत्ताक थैकर स्पिंक एण्ड कम्पनी द्वारा प्रकाशित **बर्ड्स ऑफ एन इंडियन गार्डेन** (Birds of an Indian Garden) नामक ग्रन्थक सेहो ओ सहयोगी छलाह।

ओहि ग्रन्थमे चार्ल्स एम. इंगलिस दरभंगा जिला ओ एकर लगपासक क्षेत्रमे दृष्टिगोचर भेल आवासी-प्रवासी 358 गोट चिड़ैक अवस्थिति अभिलिखित कयने छथि जाहिमे 41 गोट पक्षी-प्रजाति तँ केवल दरभंगहिमे देखल गेल छल। चार्ल्स एम. इंगलिसक कथन छनि जे–

'My observations reveal that 41 birds have been recorded by me from the district of Darbhanga which had not been recorded anywhere in the State of Bihar previously. These birds have neither been recorded subsequently from the State and constitute the rarer birds that have been recorded from Darbhanga but from nowhere else in Bihar.

(बिहार डिस्ट्रिक्ट् गजेटियर्स: दरभंगा, 1964मे उद्धृत)

इंगलिस महोदय चिड़ै सभक नाम अंगरेजीमे देने छथि। दरभंगहि जिलामे दृष्टिगोचर भेल 41 गोट चिड़ैक अंगरेजी नामक संग लैटिन नाम सेहो देने छथि। ओहि चिड़ै सभक स्थानीय नाम सेहो छले होयतैक। ओ अंगरेजी नामक समानान्तर स्थानीयो नाम दऽ देने रहितथि तँ ओहि चिड़ै सभक नामावली आइ सुरक्षित ओ सर्वसुलभ रहैत। मिथिला क्षेत्रक सैकड़ो चिड़ै सभक मैथिली अभिधान सर्वथा लुप्त भऽ गेल। ओकर सभक मैथिली नाम की छलैक से जानब आब असम्भव अछि। एकरा विपरीत बिहारीलाल 'फितरत' कृत **आईना-ए-तिरहुत**मे मिथिलाक लगभग चौरानवे गोट चिड़ैक नाम गनाओल गेल अछि। अवश्ये एहि सूचीमे कतिपय चिड़ैक उर्दू-हिन्दी पर्याय देल गेल अछि, यथा **फाकता** (फाक्ता), **सुरखाब**, **तीतर**, **कबूतर**, **मुर्ग** इत्यादि। किछु नाम उर्दू लिपिक कारणे विकृत भेल बूझि पड़ैछ जेना **दिघौंच** चिड़ैक नाम **दिघबंच** देल गेल अछि। **आईना-ए-तिरहुत**मे तीन कोटिक चिड़ैक नाम सब गनाओल गेल अछि–1. पोसुआ पक्षी वर्ग 2. शिकारी पक्षी वर्ग तथा 3. ओहन पक्षी वर्ग जकर मांस खायल जाइत अछि। ई अपूर्ण वर्गीकरण ओ विवरण अछि। कारण, ओहन पक्षी जे ने पोसल जाइछ आ ने खायल जाइत अछि तकर सभक नाम **आईना-ए-तिरहुत**मे नहि देल गेल, जेना-**कौआ**, **कागा**, **कचबचिया**, **बगड़ा**, **गिद्ध**, **टिटही** इत्यादि। दोसर दिस **चाहा** चिड़ैक बारह गोट प्रभेदक स्थानीय नाम देल गेल अछि जे अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि।

सम्प्रति मिथिला क्षेत्रक पोसुआ-बनैया पक्षी सभक लिखित ओ मौखिक स्रोतसँ प्राप्त निम्नलिखित अभिधान मात्र आब जानल जाइत अछि। सम्भव अछि स्थानीय स्तरपर जिज्ञासा कयलापर किछु और अभिधानक बढ़ोतरी भऽ जाय। सूची प्रस्तुत अछि–

1. अगिन 2. अघनी/अधड़ा/अधड़ी/अधनी/अधिड़ी/उदड़ा/उदड़ी 3. अन्धरी 4. अरधंग 5. अरून 6. आड़ी 7. कचबचिया 8. कचकरा 9. कठखोधी 10. कड़रा 11. कनकारी 12. कनरण्ड 13. कबार 14. करमान 15. करांकुल 16. करान/कारन 17. कसवा 18. कागा/कारकौआ 19. काला तीतर 20. काबूद 21. कारम 22. किरकिरा 23. कुड़ेर 24. कुमरी 25. कुररी 26. कलंग/कोलंग 27. कैम 28. कोइली 29. कोदच्चा 30. कोदी 31. कोरियर 32. कोही 33. कौअलि 34. कौआ (मिथकीय प्रभेद-बाझिल कौआ) 35. खंजन/खंजनि/खदन- चिड़ैआ 36. खुटेर 37. खेबस 38. खोखरि 39. गगन 40. गन्धल 41. गरूड़ 42. गिड़रा 43. गिद्ध, प्रभेद-उजरा गिद्ध वा गोबरा गिद्ध 44. गीरी/गैरी 45. गैघेर 46. घोंघल 47. चकवा/चकवी/चकेवा 48. चरसलग्गू 49. चार्रज 50. चाहा 51. चाहा अघरी 52. चाहा केसरिया 53. चाहा गोम्बार 54. चाहा चठेरी 55. चाहा चोलका.56. चाहा टटवारी 57. चाहा निकमी 58. चाहा बटसरी 59. चाहा भरवा 60. चाहा रूनी 61. चाहा संचैल 62. चाहा सुगड़ 63. चिल्होरि/ चिल्ह/जगदम्बा 64. चिहोर 65. चीनीरू 66. चुचुहिया/चुहिचुहिया 67. चुनमुन्नी 68. चुसरी बच्चा 69. चोँचा/दर्जी चिड़ै/बया 70. जालव 71. जुरां 72. झलकेल 73. झला/कसया 74. टनकी 75. टिटही 76. डफरा 77. डभेर 78. डमर/डुम्मर/डूमर 79. ढोकहर 80. ढोबर 81. तित्तिर/तीतिर 82. तिरमोहानी 83. तोता (कंठमे लालधारी वला सुग्गा) 84. तोता दहिगन 85. थकचूर 86. दरिमा 87. दरिअल/दहील 88. दाबल 89. दिघौंच/दिघबंच/दिघोंस 90. दिलसेरा 61. धनेस 62. धनछूहा/भुजुंगा 93. धवली 94. धोबिया/धोबिन/ धोबिनियाँ चिड़ै 95. धौल 96. नकटा 97. निद्दम 98. पड़बा/कबुत्तर (प्रभेद-गिरहबाज, लक्का, लकबा, लोटन, मुखीकदैया, सूर्यमुखी) 99. पतरंगी 100. पद्दा/फिद्दा 101. पनहरी 102. पनिकौर 103. पनिडुब्बी 104. पवै 105. पल्लव/हरबी 106. पहाड़ी मैना 107. पासिन 108. पिजला 109. पिपहिया/पपिहरा/ पपीहा 110. पिहुआ 111. पेरू 112. पोली 113. पौड़की 114. फुद्दी/फुद्दी 115. फैंओँ/फ्योँ 116. बगड़ा/बगड़ी 117. बगुला/बक 118. बगेड़ी 119. बटेर 120. बत्तक 121. बदर 122. बनखोखर 123. बनचट 124. बनतीतिर 125. बनमुरगी 126. बाक 127. बाज/बाझ 128. बानबी 129. बासा 130. भंगराज 131. भरवा 132. भोजंगा 133. मजीटा 134. मजूर/मोर 135. मधुकुप्पी 136. मयना/मैना/मैनी 137. महोखा 138. मुरगा/मुरगी 139. मुँहदुस्सा/उल्लू/ पेच/हुल्लुक 140 मैठा 141. मैल/मेल 142. रतबा 143. लबा/लावा 144. ललबोड़ी/बुलबुल 145. ललमुनियाँ/मुनियाँ/ ललमुड़िया/लाल 146. लाउन 147. लालसर 148. लिलकंठ/नीलकंठ 149. लुगड़-झुगड़ 150. लोहासारंग 151. लौकरी 152. सकचोर 153. सकरखोड़ा

154. सरहच 155. सरार/सरारि 156. सामन 157. सामा 158. सारस 159. साहीन 160. सिकरा 161. सिरोली/सरौली 162. सिल्ली 163. सुग्गा/सूगा (प्रभेद-अमृतभेला/कठसुग्गी/कड़रा/ कागभेला/टेटिया/हिरामनि) 164. सुपावेनी 165. सोङ्कास 166. हरहद 167. हरड़ा 168. हरियल 169. हाँस 170. हुदहुद/हुदहुदिया/खोपावाली/काकातूआ

एहिमे आब अनेक नाम अनचिन्हारे प्रतीत होइत अछि। पूर्ण सम्भव अछि जे भविष्यमे एखनुका अनचिन्हार नाम सर्वथा विलुप्त भऽ जाय।

एखनो समय अछि जे मैथिली-मिथिलाक लोकवृत्तक अंगभूत लोकभाषिक शब्दावलीक समृद्ध सम्पदाकेँ व्यापक स्तरपर ताकि-हेरि कऽ ओकरा लिपिबद्ध कऽ देल जाय। एहिलेल चाही समर्पित गवेषकक दल जे गाम-गाम जाय, सम्बद्ध लोकसँ घनिष्ठता बढ़ाय धैर्यपूर्वक विभिन्न कोटिक शब्दावलीक संकलन कऽ सकय। मैथिली क्षेत्रमे एहन कोनो संस्था नहि अछि जे अपना स्तरसँ ई शब्द-संग्रह-कार्यक्रम चला सकय। एहना स्थितिमे विभिन्न विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभाग सभ मेधावी छात्र सभकेँ एहि दिशामे प्रेरित कऽ सकैत अछि। यू.जी.सी.सँ एहि कार्यक्रमक हेतु राशियो उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि।

विश्वविद्यालयमे अध्यापकक चारि गोट कर्त्तव्यक पालन आवश्यक-अध्ययन, अध्यापन, स्वयं अनुसन्धान करब आ अनुसन्धान करायब। हम पूर्वहिसँ लोकसाहित्यसँ अभिरुचि रखैत छलहुँ आ ओही क्रममे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीक सेहो किछु-किछु संकलन करैत रहैत छलहुँ। पहिने सी. एम्. कालेजमे, तदुत्तर ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे अध्यापनक अवधिमे जखन पी-एच्.डी. उपाधिक हेतु निर्देशन करबाक अर्हता प्राप्त भेल, तँ मोनमे भेल जे किएक ने पी-एच्.डी. उपाधि हेतु इच्छुक शोधप्रज्ञकेँ मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीपर अनुसन्धान कार्य करबाक हेतु प्रेरित कयल जाय। किन्तु कोनो एकटा शोधप्रज्ञसँ मैथिलीक समस्त लोकभाषिक शब्दावलीकेँ समेटब-सम्हारब सम्भव नहि होइत। अतः मैथिली भाषा ओ मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त लोकभाषिक शब्दावलीक विभिन्न कोटिक व्याख्यात्मक अध्ययनक उद्देश्यसँ मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीक आठ गोट वर्ग बनाय प्रत्येकक शोध-प्रारूप तैयार कयलहुँ। ओ आठो वर्ग निम्नलिखित छल–

1. **पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली**
2. **जात्याश्रित एवं निर्जातीय श्रमव्ययी व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली**
3. **रोग, औषधि ओ वैद्यक व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली**
4. **कृषिकर्म, पशुपालन एवं गृहनिर्माण सम्बन्धी शब्दावली**
5. **वनस्पति ओ जीव-जन्तु सम्बन्धी शब्दावली**
6. **वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली**

7. **भोजन सम्बन्धी शब्दावली**
8. **लोकव्यवहार ओ संस्कार सम्बन्धी शब्दावली**

ई विषय सब मैथिलीमे पी-एच्.डी. उपाधिक हेतु ग्राह्य शोध-विषय-परम्परासँ हटि कऽ छल। सहजहि अरघऽवला नहि। लोककेँ चाही सोझ-साझ हल्लुक विषय जे दसटा पोथी जमा कऽ उतारि-पुतारि कऽ जल्दी सम्पन्न कयल जा सकय। उपर्युक्त विषय सब छल कठिन। समय, श्रम आ किछु-किछु अर्थव्ययक सहित जमीनपर जाय अनुसन्धान कार्य करबाक छलैक। से धैर्य सबकेँ कहाँ? सहकर्मी वर्गमे सेहो बेसी हतोत्साहिते कयनिहार। उपयुक्त उत्साही शोधार्थीक अनुसन्धानमे लागल रहलहुँ। अनेक व्यक्तिकेँ मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीक क्षेत्रमे कार्य करबाक लेल प्रेरित करैत रहलियनि। क्रमशः शोधार्थी सभ भेटैत गेलाह। उपर्युक्त आठो विषयपर क्रमशः शोधकार्य कयल जाय लागल। ओहिमे केवल तीन विषयपर शोधकार्य सम्पन्न भेल तथा शोध-प्रबन्ध पी-एच्.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत कयल जा सकल। शेष विषय अनधीते रहि गेल। ओही संग अति श्रमसँ तैयार कयल गेल शोध-प्रारूप तथा स्वसंकलित कतोक आधार सामग्री सेहो बोहा गेल। यदि उपर्युक्त आठो विषयपर अनुसन्धान कार्य सम्यक् रूपसँ सम्पन्न भऽ गेल रहैत तँ मैथिलीक समृद्ध शब्द भंडार लिपिबद्ध-व्याख्यात भऽ गेलेँ मैथिलीक शब्दकोषकेँ सेहो समृद्ध कऽ सकितय।

जाहि तीन गोट विषयपर शोध-प्रबन्ध सम्पन्न भऽ सकल से अछि-**पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली, वेष-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली** तथा **भोजन सम्बन्धी शब्दावली**। एतबहु सम्पादित कार्यसँ सन्तोष अछि जे ई अनुसन्धानक क्षेत्रमे एकटा नव दिशाक प्रदर्शक भऽ सकैत अछि आ भविष्यमे जँ कोनो उत्साही व्यक्ति एहि प्रकारक अनुसन्धान कार्य करबाक हेतु अग्रसर होथि तँ ओ लोकनि एहि शोध-प्रबन्धसँ प्रेरणा लऽ सकैत छथि।

मैथिली साहित्यक अन्यान्य पक्ष ओ विधापर तँ अनेक शोधप्रज्ञ काज करैत छलाह। कतोककेँ पी-एच्.डी. उपाधि सेहो भेटि गेल छलनि। किन्तु मैथिली लोकभाषिक शब्दावलीक विधिवत् संकलन-व्याख्या सम्बन्धी हमर अनुसन्धान-योजनामे सोत्साह अग्रसर भेनिहार पहिल शोधप्रज्ञ भेलाह श्रीयोगानन्दझा। ई पी-एच्.डी. उपाधि हेतु अपन शोध विषय रखलनि **पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली** आ ओहिपर अत्यन्त गम्भीरतासँ कार्य कयलनि। हिनक अत्यन्त श्रमसँ कयल गेल गहन अनुसन्धानक परिणामस्वरूप तैयार भेल वृहत्काय शोध-प्रबन्ध जे आइ ग्रन्थाकार प्रकाशित होयबाक अवसर पाबि रहल अछि।

अपन अध्यापन कालमे सामान्य छात्र समुदायसँ इतर बहुतो एहन मित्र, बन्धु अपेक्षित आ परिचित जनकेँ मैथिली पढ़बाक, अथवा मैथिली विषय सहित आइ. ए.

बी. ए./बी. ए. (ऑनर्स) अथवा एम. ए. करबाक हेतु प्रेरित करैत रहलियनि जे कोने ने कोनो जीविकामे स्थायी रूपसँ कार्यरत छलाह। ओहि सबमेसँ कतोक तँ मैथिलीयो क्षेत्रमे पश्चात् लेखक-अध्यापक रूपमे सक्रिय भेलाह, आदृत भेलाह। श्रीयोगानन्दझा ओही कोटिमे अबैत छथि। योगानन्द विज्ञानक मेधावी छात्र छलाह। हायर सेकण्ड्री परीक्षामे मातृभाषा पत्रमे मैथिली विषय रखने छलाह जाहिमे हिनका प्राय: हमरहि हाथेँ अस्सी प्रतिशतसँ अधिके अंक प्राप्त भेल छलनि। बी.एस-सी. कयलाक पश्चात् बिहार राज्य विद्युत् बोर्डमे लेखा विभागमे जीविकापन्न भऽ गेलाह।

जीविकापन्न भैयो गेलापर उच्च शिक्षाक प्रति एकटा ललक छलनि। किन्तु विज्ञान विषयमे आगाँ बढ़ब सम्भव नहि छलनि। ओहिलेल कला-विषयमे अग्रसर होबऽ पड़लनि जाहिमे नोकरीक संग स्वतन्त्र छात्रक रूपमे पढ़ाइ आ परीक्षा ओहि समयमे सम्भव छल। अत: ओहि समयक विश्वविद्यालयक नियमक अनुसार पुन: स्वतन्त्र छात्रक रूपमे मैथिली विषय सहित बी.ए. परीक्षा पास कयलनि। ओहि समयमे हिनक पोस्टिंग दरभंगेमे छलनि आ मैथिलीक एम. ए. क्लास सब दिनसँ प्रात:कालेमे होइत रहलैक अछि। अत: विभागीय अनुमति प्राप्त कऽ स्नातकोत्तर मैथिली वर्गक नियमित छात्रक रूपमे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगासँ एम. ए. परीक्षा पास कयलनि जाहिमे हिनका प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान भेटल छलनि।

मैथिली स्नातकोत्तर वर्गक छात्र लोकनिमे अनुसन्धानक प्रवृत्ति जगयबाक ओ ओहि क्षेत्रमे प्रशिक्षित करबाक उद्देश्यसँ ओहि समयमे भारतक कतोक विश्वविद्यालयमे प्रचलित पद्धतिक अनुसरण करैत मैथिली विषयक स्नातकोत्तर छात्रकेँ एम. ए. परीक्षामे विशेष पत्रक रूपमे दुइ सय अंकक मतबन्ध (डिसर्टेशन) लीखि समर्पित करबाक विकल्पक नवीन प्रावधान कयल गेल छल जाहिमे दुइ गोट बाह्य परीक्षक द्वारा मतबन्ध-परीक्षण सहित मौखिकी परीक्षा अनिवार्य छल। ई प्रावधान ओही सत्रसँ आरम्भ भेल छल जाहि सत्रमे योगानन्द नियमित छात्र छलाह। मतबन्धक विकल्प केवल नियमित छात्रक हेतु छल, स्वतन्त्र छात्रक हेतु नहि। अवश्ये, आरम्भिक एक-दू सत्रमे अनेक नीक कोटिक मतबन्ध सब लिखल गेल। कतोक तँ एखनुक पी-एच्. डी.क थीसिससँ बेसी गम्भीर छल। कतोक मतबन्ध-प्रस्तोता अपन मतबन्धकेँ पल्लवित कऽ ओहिपर पी-एच्.डी.क डिग्री सेहो प्राप्त कयलनि। पाछाँ ओहि प्रावधानक घोर दुरुपयोग होबऽ लागल। भ्रष्टाचारक प्रवृत्ति प्रबल होइत देखि ओहि प्रावधानकेँ समाप्त कऽ देल गेल। अस्तु।

योगानन्दझाकेँ अपन मानसिक संकल्पक पहिल पद-निक्षेपक रूपमे **मिथिलाक कमार जातिक व्यावसायिक शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन** विषयक मतबन्ध-लेखन हेतु विचार दैत तदर्थ कार्यपद्धति तथा ओहिमे भेनिहार बाधा-कठिनता सभसँ सेहो अवगत करौलियनि। नोकरी आ नियमित वर्ग-उपस्थितिक दोहरी

व्यस्तताक संग खास व्यवसायक शब्द-संचयक भौमिक कार्यमे व्यावहारिक कठिनतासँ पूर्णत: अवगत भेलोपर ई एहि कार्यमे सोत्साह अग्रसर भेलाह आ जहिना निर्देश देलियनि तहिना ओकरा नीक जकाँ सम्पन्नो कयलनि। मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीपर पहिल ओ आरम्भिक शोधकार्य होइतो ई मतबन्ध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद-निक्षेप सिद्ध भेल। परीक्षको लोकनि विषयक नवीनतासँ पूर्ण प्रभावित ओ चमत्कृत छलाह।

एहि ठाम उल्लेख करऽ चाहब जे डॉ.सुभद्रझा ओहि समयमे मैथिली शब्दकोषपर कार्य करैत छलाह। हुनका कोनो सूत्रसँ ज्ञात भेलनि जे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे मिथिलाक कमार जातिक व्यावसायिक शब्दावली विषयक कोनो मतबन्ध छैक। ओ स्वयं मैथिली विभागमे आबि ओ मतबन्ध विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र मोहनझाक अनुमतिसँ हमरे नामपर इसू करा कऽ लऽ गेलाह। गोटेक सप्ताहक बाद ओकरा आपस करऽ अयलाह तँ ओहि मतबन्धक प्रशंसा करैत ओहन-ओहन आओरो विषयपर भौमिक स्तरीय गवेषणा-कार्य कयल जयबाक विचार व्यक्त कयने छलाह।

योगानन्दझा मैथिली विषयमे एम. ए. कयलाक पश्चात् पी-एच्.डी. उपाधि हेतु ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे हमरहि निर्देशन एवं पर्यवेक्षणमे **मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन** विषयपर अनुसन्धान करबाक हेतु प्रवृत्त भेलाह। अनुसन्धानक परिधिमे आबऽवला जातिक कार्यस्थलपर जाय स्वयं व्यवसायक आधार सामग्री, उपकरण, कार्य-व्यापार, उत्पादन एवं उपयोगिता आदिक अवलोकन-पर्यवेक्षण-अन्तर्वीक्षण कऽ शब्द-संग्रहक कठिन कार्य सम्पादित कयलनि। अनुसन्धानक क्रममे ओ बहुतो अवान्तर सामग्रीक सेहो संचय करैत गेलाह जे उपर्युक्त शोध परिधिक व्यवसायक आनुषंगिक तँ छल किन्तु प्रासंगिक नहि, तेँ महत्त्वपूर्ण होइतो ओकरा सभकेँ शोधप्रबन्धसँ अपवारिते राखल गेल। ओही अपवारित सामग्री सभक कतोक अंश पाछाँ हुनक **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य** नामसँ पुस्तकक रूपमे प्रकाशित भेल जे बेश चर्चित भेल।

योगानन्दझाक शोध-प्रबन्धक बाह्य परीक्षक बनाओल गेल छलाह प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. सुभद्रझा तथा डा. प्रबोधनारायणसिंह। विशेषज्ञ ओ परीक्षकक रूपमे डा. सुभद्रझाक नाम सहज भयोत्पादक मानल जाइत छल। हमरहु मन शंकित छल। एक दिन सुभद्रबाबू अकस्मात् हमरा ओहि ठाम अयलाह आ अबिते बजलाह–'अओ! व्यवसायक शब्दावलीपर जे थीसिस जमा कयने अछि ओकरा बजाउ तँ।'

हम आशंकासँ हुनक मुँह ताकऽ लगलियनि जे किछु अवांछित तँ ने कऽ देलथिन।

ओ आगाँ बजलाह जे–'छौंड़ा बड्ड बढ़ियाँ काज कयलक अछि। ओकरा बजाउ तँ हम ओकर पीठ ठोकबै। हम तँ एखने विश्वविद्यालयमे रिपोर्ट दऽ अयलिऐक अछि जाहिमे लीखि देलिऐक अछि जे एहि थीसिसपर डी. लिट्. डिग्री देल जा सकैत अछि।'

हम कहलियनि–ई तँ अन्हेर भऽ गेलै! छात्र परीक्षा देतै बी. ए. केर आ ओकर रिजल्ट भेटतै एम.ए.क, से कोना? आब तँ ओहिमे फेंदराति भऽ जेतै।

सुभद्रबाबू निश्चिन्त भावसँ बजलाह– हम ततेक बुड़िबक नहि ने छी। लीखि देलिऐक अछि जे 'इन केस दि यूनिवर्सीटी रेगुलेशन्स एण्ड रूल्स प्रोवाइड फॉर इट'।

हम योगानन्दजीकेँ तखने एक गोटेकेँ पठबाय बजौलियनि। ओ अयलाह तँ सुभद्रबाबू हुनका पीठ ठोकि वाह-वाही देबासँ पहिने जेना पूरा मौखिकी परीक्षा (Vivavoce) लेबाक हेतु तत्पर भऽ गेल होथि। अनेक प्रश्न, अनेक जिज्ञासा एवं कतोक अपरिचित शब्द एवं ओकर अर्थक प्रसंग अबैत रहल। अन्तमे एकटा विकट प्रश्न पूछि देने छलथिन जे वेश्या-व्यवसायक शब्दावली शोध-प्रबन्धमे किएक ने देल गेल? तकर उत्तर हमरहि देबऽ पड़ल जे वेश्या-व्यवसायक कोनो परम्परागत जातीय आधार नहि अछि। ई व्यवसाय जाति निरपेक्ष अछि आ कोनो जातिक लोक एहि व्यवसायमे जा सकैत अछि। दोसर, ई व्यवसाय श्रमव्ययी होइत अछि। अनुत्पादक व्यवसाय होयबाक कारणे योगानन्दझाक शोध-संकल्पक सीमामे नहि अबैत छनि।

अत्यन्त सौभाग्यशाली छथि योगानन्दजी जे हुनक महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य दुइ गोट महारथी-पारखी द्वारा परीक्षित, प्रशंसित एवं अनुशंसित भेलनि। परन्तु कोनो शोध-प्रबन्ध कतबो अभिनव तथ्यसँ सम्पन्न, भाषा-साहित्यक ज्ञान-क्षेत्रक परिधि-विस्तारक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण होअओ परन्तु ओ सार्थक एवं लोकोपयोगी तखने सिद्ध भऽ सकैत अछि यदि ओ मुद्रित-प्रकाशित भऽ जाय।

सम्प्रति विभिन्न विश्वविद्यालयमे विभिन्न शोधवृत्तिक बलपर अथवा स्वतन्त्र रूपमे मैथिलीमे लिखल गेल अथवा अन्य भाषामे मैथिली विषयपर लिखल गेल शोध-प्रबन्ध सब पी-एच्.डी. वा डी. लिट् उपाधिक लेल सैकड़क संख्यामे स्वीकृत अथवा प्रस्तुत-संस्तुत होइत रहल अछि। परन्तु एहि सब शोध-प्रबन्धक गुणवत्तामे अवमूल्यन, पुनरावृत्ति, अनुकृति, मौलिक तथ्य ओ चिन्तनक अभाव इत्यादिक आक्षेप कयल जाइत रहल अछि। एहि प्रकारक आक्षेपकेँ नकारलो नहि जा सकैत अछि आ एहन शोध-प्रबन्ध समक प्रकाशन नहि भेलासँ मैथिली साहित्यक कोनो क्षति नहि होयतैक, प्रत्युत झरकल मुँह झँपनहि नीक। परन्तु एकहि दाबिसँ सबकेँ लाड़ि देब

सेहो सर्वथा उचित नहि कहल जा सकैत अछि। अवश्ये एहि क्षयिष्णु गुणवत्ता ओ अवमूल्यनक प्रवाहमे कतोक एहनो शोध-प्रबन्ध सब प्रस्तुत होइत रहल अछि, जे शोधक उद्देश्यक अनुरूप अछि, अभिनव तथ्य ओ विचारसँ सम्पन्न अछि। एहन-एहन शोध ग्रन्थक प्रकाशनसँ भाषा ओ साहित्यक श्रीवृद्धि भऽ सकत, साहित्य भण्डार समृद्ध भऽ सकत, ज्ञानक सीमा-विस्तार भऽ सकत।

एहि कोटिमे अबैत छनि डॉ.योगानन्दझाक पी-एच्.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध **मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन** जकर आधार सामग्रीक संचय समाजक निम्नतम स्तरपर व्यक्तिगत रूपसँ जाय कयल गेल। प्रत्येक व्यवसायक आधार सामग्री, उपकरण, कार्य-व्यापार, उत्पादन, उपयोगिता तथा सकल गुण-दोषक पर्यवेक्षण कऽ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक संग्रह अत्यन्त निष्ठा, श्रम ओ धैर्यपूर्वक कयल गेलाक कारणे एहि शोध प्रबन्धक गुणवत्ता, प्रामाणिकता ओ महत्ता निःसन्दिग्ध अछि। एहन कृतिक प्रकाशन कतेक आवश्यक से कहबाक प्रयोजन नहि।

ई अत्यन्त प्रसन्नताक बात अछि जे श्रीयोगानन्दजी अपन वृहत्काय शोध-प्रबन्धकेँ संशोधित-परिवर्द्धित कऽ ग्रन्थक रूपमे स्वयं प्रकाशित करयबाक लेल सन्नद्ध भेल छथि। ओ आब **मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली** अभिधानसँ प्रकाशित भऽ रहल अछि।

अनुसन्धान कालमे विषयक परिधिकेँ सीमित करबाक दृष्टिएँ ओहने व्यवसायकेँ राखल गेल जकर आधार परम्परासँ जातीय होइक तथा ओहिमे उपभोग्य वस्तुक उत्पादन होइत होइक अथवा ओहिमे सहायक होइक। अतः ओहन व्यवसाय जे पूर्वमे जाति विशेषक छलैक किन्तु पश्चात् जातिनिरपेक्ष भऽ गेल, यथा-पशुपालन, वैदगीरी; जातिनिरपेक्ष व्यवसाय, यथा-कृषि-कर्म तथा जाति आधारित श्रमव्ययी व्यवसाय आदि, से प्रबन्धसँ बहिर्भूत रहल तेँ, नौआ, पमरिया, बक्खो, भाट इत्यादिक शब्दावली सेहो एहि ग्रन्थक सीमासँ बाहर रहल अछि।

ग्रियर्सनक **बिहार पीजैण्ट लाइफकेँ** प्रेरक आदर्शक रूपमे ग्रहण करितो प्रस्तुत ग्रन्थ अपन उद्देश्यक सीमाक कारणे एकांगी अछि-से सत्य। किन्तु अनेक अंशमे ई ग्रन्थ अभिनवत्व प्रदर्शित करैत अछि। बहुशः एहन शब्दावली अछि जे **बिहार पीजैण्ट लाइफ**मे गृहीत नहि अछि। तूर-सूत-व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीमे ग्रियर्सन जोलहा जाति मात्रक शब्दावलीकेँ संकलित कऽ सकलाह। तूर-सूत व्यवसायमे लागल हिन्दू जाति पटवा इत्यादिक द्वारा प्रयुक्त शब्दावली सर्वप्रथम एही ग्रन्थमे संकलित भऽ सकल अछि। ग्रियर्सन अपन ग्रन्थकेँ बिहारक कृषि सम्बन्धी नाम वा अभिधान सभक संग्रह कहने छथि। परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थमे केवल नामेक संग्रह नहि अपितु क्रिया, विशेषण ओ क्रियाविशेषणहुक संग्रह भेल अछि जकर प्रयोग

विवेचित व्यवसाय सबमे होइछ। ग्रन्थक अन्तिम भागमे मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक भाषा तात्त्विक विवेचन-विश्लेषण अत्यन्त विचक्षणताक संग कयल गेल अछि जे एहि ग्रन्थक महत्त्वकेँ बहुत बढ़ा देलक अछि। अनुसन्धान कहियो पूर्ण नहि होइत छैक, ने ओहिमे कखनो पूर्ण विराम होइत छैक। कोनो अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ कतबो पूर्ण होअओ तथापि बहुत किछु एहन रहि जा सकैछ जकरा देखल नहि जा सकल। ओहि दिशामे अन्यो विद्वान उत्साहित भऽ अग्रसर भऽ सकैत छथि।

ग्रन्थ ओना अपनामे पूर्ण अछि, तथापि एकटा अभाव अवश्ये अनुसन्धानी पाठककेँ कचोटि सकैत छनि। ग्रन्थमे संकलित-विवेचित शब्दावलीक पृष्ठ-निर्देश ओ अर्थ सहित वर्णानुक्रमसँ सूची दऽ देब अत्यन्त उपयोगी होइत। ओहिसँ स्वयं लेखककेँ एवं अन्य अनुसन्धाताकेँ नवोपलब्ध शब्दसभकेँ सुनिश्चित करबामे सौविध्य होइतनि। आशा अछि लेखक भविष्यमे एहि अभावक निराकरणक दिशामे अवश्य सचेष्ट होयताह।

अवश्ये एहन विशिष्ट ग्रन्थक प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य-भण्डार समृद्ध भेल अछि। लोकवृत्त, समाजशास्त्र, शब्दशास्त्र ओ भाषाविज्ञानमे अभिरुचि रखनिहार पाठककेँ ई कृति रुचबे नहि करतनि अपितु बहुतो अनुसन्धित्सुक हेतु पथ-प्रदर्शक ओ प्रेरको बनि सकैत छनि। मैथिली शब्दकोषकर्त्तालोकनिकेँ एहिसँ प्रभूत शब्दावली प्राप्त होयतनि। मैथिलीये नहि अपितु भारतीय लोकवृत्तानुसंधानक क्षेत्रमे सेहो ई ग्रन्थकारक अनुपम अवदान सिद्ध होयतनि, से विश्वास कयल जा सकैछ। आशा अछि जे बौद्धिक जगतमे एहि ग्रन्थक अवश्ये हार्दिक स्वागत होयत। शुभास्ते सन्तु पन्थान:।

(डा. रामदेवझा)
पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य (मैथिली),
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा;
पूर्व संयोजक, मैथिली परामर्शदातृ समिति एवं सदस्य
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

01 जनवरी, 2009
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

भूमिका

अर्थवान शब्दे कोनहु भाषाक भित्ति होइत छैक। शब्दहिक माध्यमसँ साहित्यक सागर प्रपूरित होइत रहैत छैक। मुदा शब्दक परिसीमा अत्यन्त व्यापक अछि। अनन्त शब्दराशि भाषा-उपभाषाक सीमा-खीमामे बान्हल अछि।

मैथिली एकटा जीवन्त भाषा थिक। ई मिथिला क्षेत्रक मातृभाषा थिक। मिथिलामे परम्परासँ एहन व्यवसाय सभ प्रचलित रहल अछि जकर सम्पादन खास-खास जाति अपन वंश-परम्परासँ करैत आबि रहल अछि। खास-खास व्यवसायपर खास-खास जातिक एकाधिकार छैक, जकरा सामाजिक स्वीकृति छैक। एक जातिक जे जातीय-व्यवसाय अछि तकरा दोसर जाति नहि कऽ सकैत अछि।

एहन पारम्परिक जातीय व्यवसायमे अपन-अपन विशिष्ट शब्दावलीक विकास होइत रहलैक अछि जकर प्रयोग तत्तत् व्यवसाये धरि सीमित रहैत छैक। एहन शब्दावलीकेँ जनसामान्यक साधारण प्रयोगमे नहि रहबाक कारणेँ भाषा-साहित्यक शब्दकोषमे स्थान नहि भेटि पबैत छैक, यद्यपि व्यावसायिक शब्दावली भाषाक महत्त्वपूर्ण सम्पदा थिक, ताहिमे सन्देह नहि कयल जा सकैछ। सूक्ष्म ओ विशिष्ट अर्थक द्योतक मैथिलीक ई अजस्र विशिष्ट शब्दावली भाषाक अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक परिचायक थिक।

निरन्तर सामाजिक परिवर्त्तन ओ वैज्ञानिक अनुसन्धानक उपलब्धि रूपमे प्राप्त बहुविध उपयोगी वस्तु ओ सामग्रीक कारणेँ बहुतो व्यवसायक शब्दराशिमे निरन्तर परिवर्तन होइत जा रहल अछि। शब्दक अर्थ ओ ध्वनि दूहूमे परिवर्त्तनक संगहि बहुतो शब्द नवीन शब्द द्वारा स्थानापन्न भेल जा रहल अछि अथवा प्रयोग बहिष्कृत भेला पर लुप्त भेल जा रहल अछि। शब्दक जन्म आ मृत्यु दूनू भऽ रहल अछि। जे वस्तु, जे अर्थ, जे भाव अप्रचलित भऽ जाइत छैक, तकर द्योतक शब्दो अप्रचलित भऽ जाइत छैक। प्रयोग बहिष्कृत भेलाक बाद ओहन शब्द कखनो अन्य अर्थमे प्रयुक्त होअऽ लगैछ आ कखनो विलुप्त भऽ जाइछ। दोसर दिस नव भाव, नव वस्तु, नव अर्थकेँ व्यञ्जित कयनिहार नवीन शब्द गढ़ा जाइत अछि आ सेहो प्रचलित भऽ जाइत अछि। वस्तुक आयात-निर्यात जकाँ शब्दहुक आयात-निर्यात एक भाषासँ दोसर भाषामे होइत रहैत छैक– चाहे मूल तत्सम रूपमे अथवा तद्भव रूपमे; मूल अर्थक संग अथवा

अर्थ-परिवर्त्तनक संग। अतीतो कालमे शब्दक आगम ओ लोपक ई निरन्तरगामी प्रक्रिया चलैत रहल अछि आ सहस्रो शब्द एहि प्रक्रियामे लुप्तो होइत रहल अछि।

अतः पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीक संकलन, व्याख्या ओ भाषातात्त्विक स्वरूपक विवेचन नहि केवल मैथिली भाषाक शब्दकोषक श्रीवृद्धि करैत अपितु भाषाक प्रकृतिक विश्लेषणमे सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान दैत। दोसर दिस मैथिलीक प्राचीन, मध्यकालीन ओ आधुनिक साहित्यमे प्रयुक्त एहन पारिभाषिक शब्दावलीक अर्थबोधमे सेहो सहायक सिद्ध होइत।

व्यावसायिक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्याक दिशामे आन-आन भाषा-क्षेत्रमे एहन कार्य भेल अछि मुदा मैथिली ओ मिथिला क्षेत्रमे एहि दिशामे कोनो व्यवस्थित अनुसन्धान कार्य सम्भव नहि भऽ सकल छल। एही तथ्यकें ध्यानमे राखि हम पी-एच.डी. उपाधिक हेतु **मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन** विषयपर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कयने छलहुँ। ई प्रबन्ध एहन विषयपर सर्वथा प्राथमिक प्रयत्न छल। तथापि, एहिसँ मैथिली भाषा एवं ओकर कोष सम्बन्धी ज्ञानक अभिवृद्धि ओ क्षेत्र विस्तारमे गुणात्मक ओ परिमाणात्मक योगदान सिद्ध भेल छल। प्रबन्धपर हमरा 1986 मे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा द्वारा पी-एच्.डी.क उपाधि प्रदान कयल गेल छल। ओही प्रबन्धकें संशोधित-परिवर्द्धित कऽ ई ग्रन्थ प्रणीत भेल अछि।

पारम्परिक व्यवसायसँ सम्बद्ध शब्दावलीक क्षेत्र ततबा विशाल अछि जकर व्याख्या ओ अनुशीलन एक व्यक्ति द्वारा निश्चित अवधिमे सम्पन्न करब सम्भव नहि छल। तें प्रबन्धक विषय-सीमामे ओहने पारम्परिक व्यवसायक शब्दावलीकें राखल गेल जाहिमे स्थानीय उपभोगक हेतु, स्थानीय श्रम ओ यथासम्भव स्थानीय आधार सामग्रीक योगसँ हस्तान्तरणीय सामग्रीक उत्पादन जातीय परम्परासँ होइत रहल अछि।

एहि सीमारेखामे मिथिलाक पच्चीस गोट जातीय व्यवसायक शब्दावलीकें समेटल जा सकल। एही सीमाक कारणें मिथिलाक जाति-निरपेक्ष सामान्य पारम्परिक व्यवसायकें नहि लेल गेल। एहिना मिथिलाक श्रमाश्रयी जातीय व्यवसाय नौआ, पमरिया, भाट, बक्खो, महापात्र, पंडा इत्यादिमे कोनो हस्तान्तरणीय वस्तुक उत्पादन जें नहि होइत अछि तें इहो सब प्रस्तुत अध्ययन सीमामे नहि आयल। यद्यपि गोआर, कोइरी, कुर्मी, कुजड़ा, खट्टिक, शिकलगर आदिक व्यवसायमे पूर्वमे जातीय आधार छलैक, परन्तु साम्प्रतिक कालमे ओ सीमा शिथिल भऽ गेल छैक। एक दिस अन्य जाति एहिमे सम्मिलित भऽ गेल अछि तँ दोसर दिस ई जाति सभ स्वयं अन्यो

व्यवसायकें अंगीकार कऽ लेलक अछि। परिणामत: उपर्युक्त जातीय व्यवसाय सभकें पारम्परिक जातीय आधार समाप्त भऽ गेलैक। अत: एहन व्यवसायकें पारम्परिक जातीय व्यवसाय मध्य परिगणित नहि कयल गेल, यद्यपि इहो सभ अनुसन्धानक विशिष्ट क्षेत्र थिक।

एहि ग्रन्थक आरम्भमे विषय-प्रवेशमे व्यावसायिक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्याक महत्त्वपर विचार करैत अध्ययनक सीमाक निर्धारण कऽ विषयक अवतारणा कयल गेल अछि।

मुख्य ग्रन्थ सात अध्यायमे विभक्त अछि।

प्रथम अध्यायमे पारम्परिक जातीय व्यवसायकें परिभाषित कऽ मिथिलामे एहन व्यवसायक ऐतिहासिक ओ सामाजिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान स्वरूपपर विचार कयल गेल अछि। एही क्रममे शिष्ट तथा लोक साहित्यहुमे प्रयुक्त जातीय व्यवसायक निदर्शन भेल अछि। एही अध्यायमे मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीक आधार स्रोत, स्वरूप ओ वर्ग-विभाजनपर विचार कयल गेल अछि।

अग्रिम द्वितीयसँ छठम अध्यायक परिसीमामे विभिन्न पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली विवेच्य अछि। प्रत्येक व्यवसायक शब्दावलीक मुख्यत: तीन गोट आधारस्रोत मानल गेल अछि- आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली। एहि पाँच अध्यायमे वर्गीकृत जातीय व्यवसायक भिन्न-भिन्न व्यवसाय-वर्गक एहि तीनू आधार स्रोतसँ सम्बद्ध शब्दावलीपर विचार कयल गेल अछि।

दोसर अध्यायमे काठ ओ बाँसक व्यवसायसँ सम्बद्ध क्रमश: बरही ओ डोम जातिक व्यवसायक शब्दावलीपर विचार कयल गेल अछि।

तेसर अध्यायमे माटि ओ पानिक व्यवसायसँ सम्बद्ध क्रमश: कुम्हार ओ मलाह जातिक व्यवसायक शब्दावलीपर विचार कयल गेल अछि।

चारिम अध्यायमे विवेच्य विषय अछि तूर-सूत व्यवसायक शब्दावली। एहिमे बाङसँ सूत बनयबा धरिक क्रिया जाति-निरपेक्ष अछि तथा एहिसँ आगाँक प्रक्रियामे जातीय आधारपर श्रमविभाजन भऽ गेल अछि। एहि अध्यायमे जातिनिरपेक्ष तूर-सूत विषयक व्यवसायक शब्दावलीकें सेहो अध्ययन-सीमामे रखैत जोलहा, पटवा, दरजी, धुनिआ, धोबि, रङरेज ओ गरेड़ी एहि सात जातिक व्यवसायक शब्दावलीपर विचार कयल गेल अछि।

पाँचम अध्यायमे धातु-व्यवसायसँ सम्बद्ध लोहार, कसेरा ओ सोनार; एहि तीन जातिक व्यावसायक शब्दावलीपर विचार कयल गेल अछि।

छठम अध्यायमे खाद्य, पेय ओ प्रसाधन एहि तीन गोट वर्गक जातीय व्यवसायकें राखल गेल अछि। खाद्य सामग्रीसँ सम्बद्ध छओ गोट जाति कानू, हलुआइ, तेली, नोनिआ, कुरेड़ी ओ बरइ; पेय सामग्रीसँ सम्बद्ध तीन गोट जाति पासी, सूड़ी ओ कलवार तथा प्रसाधन सामग्रीसँ सम्बद्ध तीन गोट जाति लहेरी, चमार ओ मालिकेर व्यवसायक शब्दावलीपर एहि अध्यायमे विचार कयल गेल अछि।

सातम अध्यायमे मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीपर व्याकरण ओ भाषावैज्ञानिक आधारपर संक्षेपत: विचार कयल गेल अछि।

अन्तमे उपसंहार दऽ कऽ निष्कर्षक संग ग्रन्थक समापन कयल गेल अछि।

एतद्तिरिक्त तीन गोट परिशिष्ट सेहो अछि जाहिमे क्रमश: (क) मिथिलाक पारम्परिक व्यावसायिक जाति सम्बन्धी शब्द सूची (ख) व्यावसायिक जाति सम्बन्धी कतिपय लोकोक्ति ओ (ग) अधीत ग्रन्थक सूची अछि। ग्रन्थक आरम्भेमे ग्रन्थमे प्रयुक्त संक्षिप्त संकेतक सूची दऽ देल गेल अछि।

एहि ग्रन्थमे अनभिज्ञात तथ्यक अन्वेषण ओ ज्ञात तथ्यक व्यवस्था ओ व्याख्याक प्रयास कयल गेल अछि। शब्दक स्वरूप ओ अर्थक व्याख्यामे कोष ओ साहित्य विशेष ठाम असमर्थ भऽ जाइत अछि । एहन ठाम लोक मात्र प्रमाण मानल गेल अछि, अन्यथा जे किछु कहल गेल अछि से सप्रमाण। तथ्यानुशीलनक हेतु तुलनात्मक परीक्षण विधिक अनुसरण कयल गेल अछि। प्रत्येक व्यवसायक प्रत्येक शब्दकें एक क्षेत्रमे नमूनाक रूपमे प्राप्त कऽ विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न लिंग ओ आयु वर्गक माध्यमसँ प्राप्त सूचना, कार्यस्थलपर कार्य-व्यापार ओ उपकरणादिक प्रत्यक्ष पर्यवेक्षणक आधारपर संकलित ओ व्याख्यात कयल गेल अछि। तथापि ई कहब सम्भव नहि जे समस्त सम्बद्ध शब्दावली संकलित ओ व्याख्यात भऽ गेल अछि। क्षेत्रक व्यापकताक कारणें ई सम्भव छलो नहि। ग्रन्थ पूर्ण भेलाक बादो शब्द-संकलन होइत रहल । वास्तवमे ई कार्य निरन्तर चलैत रहब अपेक्षित अछि।

व्यवसायक शब्दावलीक प्रकृति पारिभाषिक होयबाक कारणें अधिकांश शब्दक व्याख्या अल्प शब्दक माध्यमे कथमपि सम्भव नहि। एहन स्थितिमे आकार, कार्य, स्थिति, गुण, प्रयोग इत्यादिक विवरण द्वारा अनेक पारिभाषिक शब्दक यथासम्भव व्याख्याक प्रयास भेल अछि। मुदा बहुतो स्थलपर ई पद्धति सेहो सर्वथा अक्षम सिद्ध भेल। विभिन्न प्रकारक संश्लिष्ट औजार जेना **हर, गाड़ी, करघा, कोल्हु, चरखा** आदि तथा विभिन्न संश्लिष्ट आकृति-प्रकृतिक उत्पादन सामग्रीक अंगोपांगक यथार्थ अवधारणा तँ पर्यवेक्षणहिसँ सम्भव भऽ सकैत छल, तदभावे ओकर रेखाचित्र आवश्यक। परन्तु से सहायक रंगकर्मी, समय, श्रम ओ सम्पत्तिसाध्य जे समवायिक रूपमे हमर शक्ति-सीमासँ बाहरक वस्तु। वर्णक्रमसँ निर्मित शब्द-सूची अपेक्षित छल, बनाओलो गेल, मुदा तखन ग्रन्थक आकार अत्यन्त वृहत् भऽ जाइत, तें ओकरा तत्काल छोड़ि देबऽ पड़ल।

एतेक अभाव रहितो ई मानल जा सकैत अछि जे एहि क्षेत्रमे प्रस्तुत ग्रन्थ प्रथम ओ अभिनव चरण थिक तथा एहिसँ मैथिली शब्दभंडारक ज्ञानक सीमाक यत्किञ्चितो विस्तार होयत, किछु नव योगदान होयत।

प्रस्तुत ग्रन्थक आधारभूत शोधप्रबन्धक अन्त:परीक्षक छलाह मैथिली जगतमे **सव्यसाची** रचनाकारक रूपमे प्रख्यात, विश्रुत प्राध्यापक ओ मनीषी, साहित्य अकादेमीक मौलिक ओ अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित प्रज्ञापुरुष **डा. श्रीरामदेवझा** । विषय-निर्धारणसँ लऽ कऽ सामग्री संकलन, प्रतिपादन, विवेचन-विश्लेषण, निर्देशन-पर्यवेक्षण धरि तँ सहजहिँ, सम्पादन-प्रकाशनो धरि हिनक कृपापूर्ण मार्ग-प्रदर्शन ग्रन्थकारकें ऊर्जस्वित कयने रहलनि अछि। हिनक सहज उदारता एवं अनौपचारिक ममत्व ग्रन्थकारक आत्मबलक संजीवनी रहलनि अछि। ग्रन्थकें वृहदाकार भूमिका ओ आशीर्वचनसँ संवलित कऽ श्रद्धेय गुरुवर एकर उपादेयता ओ गरिमाकें व्यापकता प्रदान कयलनि अछि। ग्रन्थकार एतदर्थ कृतज्ञता प्रकाश करबामे शब्द-सामर्थ्यक अभावक अनुभव कऽ रहल अछि।

हमर शोध प्रबन्धक बाह्यपरीक्षकलोकनि छलाह क्रमश: विश्वविख्यात भाषाशास्त्री **डा. सुभद्रझा** ओ प्रसिद्ध विद्वान **डा. प्रबोधनारायण सिंह**। हिनकालोकनिक अनुशंसा ग्रन्थक आरम्भेमे प्रदत्त अछि। हिनकालोकनिक आशीर्वचनसँ संवलित प्रबन्ध प्रकाशनक हेतु अनुशंसित तँ भेल छल मुदा अनेक कारणें विगत दुइ दशकक अवधिमे प्रकाशित नहि भऽ सकल। एहि बीच श्रद्धेय **डा. श्रीइन्द्रकान्तझा** एवं अन्यान्य विद्वानलोकनिक तगेदा बर्दाश्त करैत रहलहुँ।

चिरंजीवी **श्रीशंकरदेवझाकें** एहि ग्रन्थक प्रेस कापीक प्रारूपणक श्रेय जाइत छनि। एहि यशस्वी पत्रकार, सुधी आलोचक, बहुआयामी रचनाकार एवं इतिहासविद्कें तँ अशेष आशीराशियेटा दैत रहलियनि अछि आ पुनश्च तकर आवृत्ति करैत छियनि।

कवयित्री अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती **मोनालिसाक** योगदान सर्वाधिक उत्साहवर्द्धक एवं प्रेरणाक स्रोत रहल। साशीराशि हिनक सम्वर्द्धना करैत छियनि।

डा. श्रीमतीकमलाचौधरी व्याख्याता, एम. डी. डी. एम. कालेज, मुजफ्फरपुर, डा. श्रीमतीललिताझा, सहायक शिक्षिका, बेलवागंज, दरभंगा; डा. श्रीमुरलीधरझा, व्याख्याता, एम.एल.एस.एम.कालेज, दरभंगा एवं डा. श्रीशंकरझा, व्याख्याता, उदयनाचार्य रोसड़ा कालेज, समस्तीपुर आदिक स्पृहणीय पृष्ठपोषण ओ प्रोत्साहनक संबल पाबि एकर प्रकाशन-पथ विस्तीर्ण होइत गेल आ अन्तत: ई ग्रन्थाकार मुद्रित भऽ प्रस्तुत भऽ सकल अछि। हिनकालोकनिक प्रति कृतज्ञतापूर्वक आभार व्यक्त करैत छियनि। ग्रन्थक निष्पादनमे सहायक ओ उत्प्रेरक गुरुजन ओ सुधीजनक सम्वर्द्धनाकेँ अंगीकार करैत अभिभूत ग्रन्थकार हुनकालोकनिक निरन्तर सहयोगक प्रति आश्वस्त छथि।

अन्तमे, भिन्न-भिन्न जातीय व्यवसायसँ सम्बद्ध ओहि सहस्रो कारीगर महानुभावलोकनिक प्रति कृतज्ञ छियनि जे अपन मूल्यदेय क्षणसँ समय बहार कऽ विविध शब्दक ज्ञान करबैत रहलाह आ शब्दार्थसँ साक्षात् परिचय करबैत रहलनि। चि. श्रीनयकान्तठाकुरजीकेँ धन्यवाद ज्ञापित करैत छियनि जे अपन अमूल्य समय प्रदान कऽ ग्रन्थक आवरणकेँ अन्तिम स्वरूप प्रदान करयबामे हमर संग देने रहलाह। श्रीअभयकुमारझाकेँ धैर्यपूर्वक सुललित टंकणक हेतु धन्यवाद ज्ञापन करैत छियनि।

31 जनवरी, 2009
वसन्त पञ्चमी

योगानन्द झा
(डा. योगानन्दझा)

विषय-सूची



संकेत-सूची

अ.	–	अरबी
अं.	–	अंगरेजी
ग्रि.	–	बिहार पीजैन्ट लाइफ-ग्रियर्सन
चटर्जी	–	द ओरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट ऑफ द बंगाली लैंग्वेज - सुनीतिकुमारचटर्जी
दे.	–	देशी
पृ.	–	पृष्ठ
प्रा.	–	प्राकृत
फा.	–	फारसी
फा. मै. लै.	–	द फार्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज- डा. सुभद्रझा
बुक.	–	एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पुर्नियाँ इन 1809-10-फ्रांसिस बुकनन
मि. भा. को.	–	मिथिला भाषा कोष-दीनबन्धु झा
मै.	–	मैथिली
व्या. श.	–	मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (अध्याय 2 सँ 6 धरि व्याख्यात)
वर्ण	–	वर्णरत्नाकर-ज्योतिरीश्वर
विदे.	–	विदेशज
सं.	–	संस्कृत, संपादक

विषय-प्रवेश

भाषाक आधार होइत छैक शब्द। कोनो भाषाक शब्द दुइ प्रकारक होइत छैक। एक प्रकारक शब्दावली सामान्य कोटिक होइत छैक जकर प्रयोग नित्यक सामाजिक जीवनमे निरन्तर होइत रहैत छैक। दोसर प्रकारक शब्दावली विशिष्ट आ पारिभाषिक होइत छैक जकर प्रयोग विभिन्न व्यवसाय सभमे विशिष्ट वस्तु ओ अर्थक द्योतनक हेतु विशिष्ट प्रयोजनसँ होइत छैक। एहन शब्दावलीक क्षेत्र विशिष्ट व्यवसावे धरि सीमित रहैत छैक। पारिभाषिक रूपमे एहन शब्दावलीकेँ व्यावसायिक अथवा तकनीकी शब्दावली कहल जा सकैत छैक। प्रत्येक व्यवसावमे ओकर आधार सामग्री, औजार, उत्पादित वस्तु, उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादित वस्तुक गुण-दोष आदिसँ सम्बद्ध तकनीकी शब्दावलीक प्रयोग होइत रहैत छैक जे भाषा साहित्यक महत्वपूर्ण सम्पदा थिक।

कृषि कोषमे वैद्यनाथपाण्डेय उचिते कहलनि अछि जे ' *भारतमे सभ लोकभाषामे ग्रामीण, कृषि ओ उद्योगधंधासँ सम्बन्धित हजार-लाखक संख्यामे सामान्य ओ पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त भऽ रहल अछि आ ई शब्दावली हजारो वर्षक परम्परासँ आबि रहल अछि। ई एतेक टकसाली भऽ गेल अछि जे एकर प्रचलनमे कतहु कनेको कृच्छता अथवा असुविधा नहि होइत छैक। कतहु तँ ई अपन पूर्व वेशमे मूले रूपमे विद्यमान अछि तँ कतहु ततेक खिया गेल अथवा परिवर्त्तित भऽ गेल अछि जे एकर मूल व्युत्पत्तियोकेँ ताकब कठिन भऽ जाइत अछि। प्रयोगमे अबैत-अबैत ई शब्दावली जतबे सुघड़ ओ टकसाली भऽ गेल अछि ततबे उपयोगी सेहो। एकर प्रयोग शिष्ट साहित्यिक भाषामे तँ होयबाके चाही मुदा ताहूसँ बेसी ई आजुक वैज्ञानिक ओ पारिभाषिक शब्दावलीकेँ समृद्ध करबामे उपयोगी होयत।*[1]

प्रत्येक जीवन्त भाषामे एहि तरहक व्यावसायिक शब्दावली छैक जे अत्यन्त वृहत् छैक आ अत्यन्त सूक्ष्म अर्थक द्योतन करैत छैक। मुदा संयोगसँ प्राचीनता, क्षेत्रक विशालता, साहित्यिक प्राचुर्य, कोटि कोटि भाषा-भाषीक मातृभाषा होयबाक गौरवप्राप्ति एवं भाषावैज्ञानिक आधारक अछैतो मैथिली शब्द-संग्रहोपर एखन धरि कोनो तेहन

मानक काज नहि भऽ सकल अछि, तखन विशिष्ट व्यावसायिक शब्दावलीक अध्ययन-अनुशीलनक कोन कथा। यदि एकर समक संकलन, व्याख्या एवं अध्ययन-अनुशीलन सम्प्रति नहि कयल जाय तँ आशंका अछि जे मैथिली भाषाक ई विशाल सम्पदा विलुप्त भऽ जायत। डा. अम्बाप्रसादसुमन एहि समस्यापर विचार करैत **ब्रजभाषाक कृषक जीवन सम्बन्धी शब्दावलीक** प्रसंगमे कहने छथि जे '*वर्तमान युगक भारतवर्षमे नागरिक संस्कृति ओ सभ्यता दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि। विज्ञानक नव आविष्कार प्रत्येक दिन गामक दिस बढ़ल जा रहल अछि। एहन स्थितिमे हमर कृषक ओ शिल्पकारकेँ औजार ओ कार्य पद्धति बदलबामे अधिक समय नहि लगतनि। जखन कृषकक सभ खेत ट्रैक्टरसँ जोतल जाय लागत आ पटौनी बिजलीसँ होमऽ लागत तँ देशी हर आ ढेकुलसँ सम्बद्ध जनपदीय शब्दावली गामक लोकक जीहपरसँ सर्वदाक हेतु उठि जायत।*[6] मैथिलीक व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक सेहो सैह हाल अछि। कालक प्रवाहमे नोनिवाक व्यवसाय समाप्त भऽ गेल आ ओकर शब्दावली सेहो लुप्त भऽ गेल। सूँड़ी ओ कलवारक व्यवसायक मशीनीकरणक कारणेँ मदिराक व्यवसायक शब्दावली संक्रमित भऽ लुप्त होमऽपर अछि। तेलीक कोल्हुक स्थान विद्युतचालित यंत्र लऽ रहल अछि। काठक चिराइ ओ खरादक उद्योग मशीनपर आधारित भऽ गेल अछि। कसेराक व्यवसाय मशीन-सापेक्ष भऽ गेल अछि। चमार आयातित आधार सामग्रीपर आश्रित भऽ गेल अछि। एतावता एहि समस्त व्यवसायमे शब्दलोप, अर्थलोप ओ विदेशज शब्द-ग्रहणक प्रक्रिया बड़ तीव्र अछि। कम-बेस प्रभावित तँ समस्त व्यावसायिक शब्दावली अछिए।

एहि वस्तुकेँ ध्यानमे रखैत मैथिलीक मनीषीलोकनि व्यावसायिक शब्दावलीक समुचित रूपेँ संकलन ओ अध्ययन-अनुशीलन करे आवश्यकतापर जोर दैत रहलाह अछि। डा. **अमरनाथझा** कहने छलाह जे- *बहुतो शब्द एहन अछि जे बनिआँ, लोहार, सोनार, कुम्हार, चमार, डोम, कमार, खेतिहर, पजियार, पुरोहित, नटुआ, बजनिआँ, धोबि, नापित इत्यादि अपन-अपन व्यवसाय विशेषमे व्यवहार करइत छथि ,तकर संग्रह आवश्यक।*[3] **आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनजी** मैथिली शब्दकोष-निर्माणमे पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक महत्त्वकेँ स्वीकार करैत एकर संग्रह करबाक सम्बन्धमे कहने छलाह जे '*प्रत्येक जाति ओ व्यवसायीलोकनिमे जे पारिभाषिक शब्द प्रचलित अछि तकर संग्रह हेतु यत्नक आवश्यकता।*[4]

महावैयाकरण दीनबन्धुझा **मिथिला भाषा कोषक** निर्माण कयलनि परन्तु ओहिमे विशिष्ट व्यावसायिक शब्दावलीक समग्रतामे संकलन नहि भऽ सकल। एहि त्रुटिकेँ स्वयं स्वीकार करैत कोषक भूमिकामे ओ कहने छथि जे *एहिमे मिथिला देशक शिल्पीक नाम कमार, लोहार, सोनार, मल्लाह इत्यादि उल्लिखित अछि किन्तु*

ओहि-सबहिक कार्यवाही सामग्रीमे कम्मे वस्तुक नाम पड़ल अछि। आशा जे उत्साही निविष्ट एक विद्वान किंवा अनेक विद्वान मीलि अन्वेषणपूर्वक ओहि शब्द सबहिक संग्रह कय प्रकाशित करताह।' साम्प्रतिक **कल्याणी कोष**, **मैथिली अकादमी कोषक** अनुशीलनसँ सेहो ई तथ्य विज्ञापित होइत अछि जे एखनो व्यावसायिक शब्दावलीकेँ मैथिलीक भाषाकोष सभ सर्वथा समेटि सकबामे समर्थ नहि भेल अछि।

पूर्वकृत कार्य : एहि क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण कार्यक श्रेय ओहि यूरोपीय विद्वानलोकनिकेँ छनि जे भारतमे प्रवासक क्रममे एहि ठामक भाषा ओ संस्कृतिसँ परिचय करबाक हेतु बहुतो शब्द-संग्रह तैयार कयलनि। पेट्रिक कारनेगी ओ विलियम क्रुकक शब्द सूची एहि दिशामे आरंभिक प्रयास छल।

एहि दिशामे सर्वप्रथम सुसम्बद्ध ओ वैज्ञानिक अनुशीलन सर जी.ए. ग्रियर्सनक **बिहार पीजैन्ट लाइफ** नामक ग्रन्थ अछि। विषयक व्यापकता आ शब्दावली-संकलनक सूक्ष्म दृष्टिक कारणेँ हिनक ई ग्रन्थ बादमे एहि क्षेत्रमे कयल गेल कोनो कार्यक हेतु मानदण्ड बनि गेल। एहिमे बिहारक जनजीवनसँ सम्बद्ध पारम्परिक व्यवसाय, भू-लगान, सामाजिक व्यवस्था ओ अंधविश्वाससँ सम्बद्ध शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्या कयल गेल अछि। शब्दावलीक क्षेत्र सम्पूर्ण बिहार राज्य अछि।

ग्रियर्सनक बहुत बाद हिन्दीक क्षेत्रमे डा. हरिहरप्रसादगुप्त आजमगढ़ जिलाक फूलपुर तहसीलक अहिरौला परगनाक आधार पर **ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली** नामक ग्रन्थमे अनेक ग्रामोद्योगक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्याक प्रयास कयलनि। हिन्दीयेक क्षेत्रमे दोसर प्रमुख काज डा. अम्बाप्रसादसुमनक अलीगढ़ क्षेत्रक बोलीक आधारपर **कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली** अछि। एहिमे कृषक जीवनक अत्यन्त व्यापक परिधिमे अनेक व्यवसायसँ सम्बद्ध शब्दावलीक संकलन ओ अध्ययन-अनुशीलन कयल गेल अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा एक गोट **कृषि कोष** ओ डा. विद्यानिवासमिश्रक **हिन्दी की शब्द सम्पदा** एहि दिशामे अन्य प्रयास छल।

मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक संग्रहमे **बिहार पीजैन्ट लाइफ** महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। एहिमे तत्कालीन तिरहुत जिला, पूर्णियाँ, भागलपुर, मुङ्गेर इत्यादि मैथिलीभाषी क्षेत्रक लौकिक व्यवहारक शब्दावलीकेँ संचित कयल गेल अछि। अनेक अप्रकाशित शब्द संग्रहोक चर्चा भेटैत अछि।[5] मुकुन्दझाक सटीक **अमरकोष** ओ भवनाथमिश्रक **मैथिली शब्द प्रकाश**, खण्ड-1क उल्लेख भेल अछि। मुदा ई सभ अनुपलब्ध अछि।[6] सन् 1944सँ 1946 धरि पं. बदरीनाथझाक एक गोट '**मैथिली संस्कृत कोष**' मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित भेल छल। एहिमे मैथिली शब्दकेँ संस्कृतसम शब्दक आलोकमे देखल गेल जाहि क्रममे विभिन्न व्यवसायसँ सम्बद्ध शब्दावली सेहो संकलित ओ व्याख्यात भेल।

मैथिली शब्दावलीपर सर्वप्रथम पुस्तकाकार संग्रह पं. दीनबन्धुझाक '**धातु पाठ**' ओ '**मिथिला भाषा कोष**' अछि। डा. जयकान्तमिश्र '**वृहत् मैथिली शब्दकोष**'क निर्माण कयलनि जकर 'अ' अक्षरवला मात्र एकेटा खंड प्रकाशित भेल। डा. सुभद्रझाक '**द फार्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज**' मैथिली शब्दावली क्षेत्रमे महत्वपूर्ण काज अछि। उद्देश्य भिन्न रहितो एहिमे उदाहरणक रूपमे विपुल शब्द-सम्पदाक संकलन अछि।

ग्रियर्सन एहि क्षेत्रमे मूल अन्वेषणक काज कयलनि मुदा हुनक शब्दावलीक क्षेत्र विस्तृत छल आ सूचनाक क्षेत्र सीमित। मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक अध्ययनक दृष्टिऍं अवश्ये हुनक कृति प्रथम पथनिर्देशक अछि। परन्तु मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक दृष्टिऍं हिनक कार्यकेँ व्यापक ओ पूर्ण नहि मानल जा सकैत अछि, जेना ओ तूर-सूत व्यवसायसँ सम्बद्ध पटवा जातिक वस्त्र बुनबाक प्रक्रिया ओ औजारक शब्दावलीकेँ नहि लऽ सकलाह। मलाहक विभिन्न उपकरण ओ जल व्यवसायक अनेक उत्पादन सामग्री, कुरेड़ी ओ मालिक शब्दावली सेहो हुनक कृतिमे छुटि गेल छनि। एहिना आनो आनो व्यवसायमे अनेक शब्द, अनेक शब्दक अर्थ एवं शब्दक वैकल्पिक रूप छूटल छनि।

तेँ व्यवसायक शब्दावलीकेँ रूप ओ अर्थ दूनू दृष्टिऍं समग्रतामे देखबाक-परेखबाक आवश्यकता छल।

प्रस्तुत ग्रन्थमे विषयक व्यापकताकेँ ध्यानमे रखैत ओहने जातिक व्यवसायक शब्दावली धरि सीमित रहल गेल अछि जे परम्परासँ कोनो विशेष व्यवसायकेँ करैत आबि रहल अछि आओर ओहि व्यवसायमे उपभोग्य सामग्रीक प्रत्यक्ष उत्पादन करैत अछि अथवा उत्पादनमे सहायक होइत अछि।

संदर्भ-निर्देश

1. कृषि कोष, द्वितीय खंड, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1966, पृ.-3
2. कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली, भाग-1, ग्रन्थक सम्बन्धमे, पृ.- 3-4
3. भाषपत्रयी, सं. देवेन्द्रझा, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 13
4. मिथिला मिहिर, 27 मई 1944, पृ.-7
5. मिथिला मिहिर, 27 मई, 1944, पृ.-7
6. मिथिला मिहिर, 19 अप्रील, 1947



प्रथम अध्याय

मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसायक पृष्ठभूमि

परम्परा : परं परं पिपर्ति-पूरयति, इति परम्परा। अर्थात् आगाँ-आगाँ जे पुरा करय से थिक परम्परा। परम्परासँ तात्पर्य एहन मान्यतासँ अछि जे पीढ़ी-दर-पीढ़ीमे इच्छा अथवा अनिच्छासँ गृहीत होइत छैक। तेँ परम्पराक उद्भव पूर्वापर सम्बन्धपर आधारित होइत छैक।

परम्पराक हेतु अंग्रेजीमे Tradition शब्द भेटैत अछि। वेब्स्टर डिक्शनरीमे एकरा परिभाषित करैत कहल गेल अछि जे ई मान्यता, विश्वास, व्यवसाय, आचार अथवा प्रथाकेँ मौखिक रूपसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक सन्देश द्वारा प्रतिपादन, कोनो कथन, मान्यता अथवा विश्वासकेँ मौखिक रूपसँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण अथवा कोनो पैघ मान्यताप्राप्त अथवा व्यवसायकेँ जकरा पर कोनो अलिखित नियमक प्रभाव होइक; खास कऽ कला अथवा साहित्यक कोनो रीति जकरा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि हस्तान्तरण कयल जाइक तथा सामान्य रूपेँ मान्य हो, थिक।

व्यवसाय : मानवक उपयोगिताक हेतु प्रयासकेँ व्यवसाय कहल जाइत अछि। व्यवसायक हेतु अंग्रेजी मे Trade शब्द भेटैत अछि। चैम्बर्स डिक्शनरीमे ट्रेड शब्दक अर्थ जीविकाक उपाय खास कऽ दक्ष मुदा अप्रशिक्षित कहल गेल अछि। वेब्स्टर डिक्शनरीमे एकरा खास प्रकारक क्रिया अथवा प्रयास, काज करबाक नियमित रीति, वृत्ति प्राप्त करबाक साधन, पेशा, एहन कुशल श्रम जकरा अकुशल श्रमसँ पृथक् कयल जा सकय अथवा कलात्मक व्यवसाय, व्यापार, शिल्प कहल गेल अछि।

एतावता मानवक आवश्यकताक पूर्त्यर्थ कोनो प्रकारक कार्य अथवा वृत्ति जे उत्पादक हो अथवा अनुत्पादक, व्यवसाय कहल जाइत अछि जाहिमे बिनु प्रशिक्षणहु पटुता प्राप्त रहैक मुदा जकरा अप्रशिक्षित श्रमिकक काजसँ पृथक् बूझल जा सकैक।

तेँ यूरोपीय औद्योगिक क्रान्ति ओ अधुनातन वैज्ञानिक अनुसंधानसँ विकसित व्यवसायसँ पूर्वक अथवा सम्प्रतियो ओहिसँ भिन्न जे कोनो व्यवसाय परम्पराक अस्तित्वकेँ स्वीकृत कयने अछि, पारम्परिक व्यवसाय थिक, कारण ओकर अस्तित्व परम्परामे निहित छैक, अकुशल श्रमिकक काजसँ ओकरा पृथक् परखल जा सकैत

छैक आ ओकर ज्ञान मौखिक परम्परा द्वारा स्वत: एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि प्रवाहित होइत छैक। एकरे कतोक अर्थशास्त्री कुटीर उद्योगक रूपमे परिभाषित करैत छथि। यद्यपि कुटीर उद्योगक अन्तर्गत सम्प्रति एहनो लघु उद्योग सम्मिलित कऽ लेल जाइत अछि जकर प्रयोग परम्परासँ प्राप्त नहि छैक जेना दियासलाइ, मोमबत्ती, अगरबत्ती आदिक उत्पादन।

पारम्परिक जातीय व्यवसाय : पारम्परिक व्यवसायक उद्भव ओ विकासमे स्थानीय उपयोगिता ओ स्थानीय श्रम मुख्य आधार होइत छैक। जखन कोनो स्थानीय उपयोगिताक सृष्टिक हेतु समाजक कोनो वर्गविशेष कोनो विशिष्ट व्यवसायमे लागि जाइत अछि तँ कालक्रमे ओ व्यवसाय पारम्परिक भऽ जाइत छैक। एहि पारम्परिक व्यवसायमे किछु व्यवसाय समाजक एकटा विशिष्ट वर्ग द्वारा एकाधिकृत कऽ लेल जाइत छैक आ पछाति ओहि वर्गविशेषकेँ ओहि व्यवसाय विशेष द्वारा चीन्हल जाय लगैत छैक। एहि तरहेँ बनल व्यावसायिक समूहक व्यावसायिक निकटता ओ रक्त सम्बन्ध जातिक निर्माणक आधारभूमि होइत छैक आ ओहि जातिविशेष द्वारा गृहीत व्यवसायकेँ पारम्परिक जातीय व्यवसाय कहल जा सकैत छैक।

मिथिलामे जातीय व्यवसायक परम्परा : मिथिलामे जातीय व्यवसायक अविच्छिन्न परम्परा रहल अछि। जँ शुक्ल यजुर्वेदक रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्यकेँ मानल जाय आ ओ विदेह जनपदक निवासी मानल जाथि तँ अवश्ये ओ जाहि तक्षा, रथकार, कौलाल, कर्मारक वर्णन कयने छथि[1] से मिथिले जनपदक व्यावसायिक जाति होयत।

वास्तवमे मिथिलामे अनेक व्यावसायिक जाति बहुत पूर्वहिसँ वास करैत रहल छथि। वर्णरत्नाकरमे तेली, तांति, धुनिआ, धलिकार, डोंव, चमार, शुण्डि, पटनिआ (पटवा) आदि मन्द जातिक उल्लेख अछि जे व्यावसायिक जातिक रूपमे एखनो वर्तमान अछि। वर्णरत्नाकरक पोखरा, नौका, वोहित ओ वहित्र वर्णना मिथिलाक जल व्यवसायक उत्कर्षक सूचक थिक। तीस प्रकारक पट्टम्बर वस्त्रक बाद ज्योतिरीश्वर अनेक देशीय ओ निर्धूषण वस्त्रक उल्लेख कयने छथि जे मिथिलाक वस्त्रोद्योगक विकसित रूपक परिचायक थिक।[2] सूचीक्रिया मिथिलाक प्राचीन शिल्प थिक।[3]

उद्योगक दृष्टिऐ मिथिला अति प्राचीन कालहिसँ आत्मनिर्भर अछि। एतुक्का लोकक आर्थिक जीवनमे कुटीर उद्योगक प्रमुख स्थान रहलैक। समाजक विभिन्न वर्ग विभिन्न कुटीर उद्योगमे लागल रहल अछि।[4] बाळक खेती, चरखा काटब, मोटिआ वस्त्रक निर्माण ओ जोलही वस्त्रक आदर मिथिलामे सुदूर प्राचीनकालहिसँ भेल अबैत अछि।[5] कपास निर्मित वस्तुक बुनाइ तिरहुतक प्रमुख उत्पादक उद्योग रहल अछि। स्थानीय आवश्यकता पूर्तिक अतिरिक्त ई किछु हद धरि निर्यातित सेहो होइत छल।[6] आन उद्योगमे माटिक बासन, चटाइ, छिट्टा ओ लहठीक उत्पादन होइत रहल अछि।[7]

पानक व्यवसायक हेतु सेहो मिथिला प्रसिद्ध रहल अछि। पान उद्योगक विशिष्टताक कारणेँ एतऽ तमुरिया ओ पतैली सन गाम अछि जे उत्पादित वस्तुक आधार पर अभिहित अछि।

एतावता मिथिलामे समस्त पारम्परिक जातीय व्यवसाय बहुत पूर्वहिसँ फलैत-फूलैत रहल अछि।

शिष्ट साहित्य ओ पारम्परिक व्यवसाय : मैथिली साहित्यमे पारम्परिक जातीय व्यवसाय सबहिक उल्लेख वर्णनक क्रममे जतऽ-ततऽ दृष्टिगोचर होइत अछि मुदा एहि व्यवसाय अथवा व्यवसायीलोकनिक औजार, आधार सामग्री, उत्पादित वस्तु, उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादित वस्तुक गुण-दोष आदिकेँ केन्द्रित कऽ रचना करबाक दिस बड़ कम कवि-लेखकक ध्यान गेलनि अछि।

चर्यागीतमे डोम जातिक उल्लेख अनेक ठाम भेल अछि।[8] वर्णरत्नाकरमे विभिन्न व्यावसायिक जाति एवं विभिन्न व्यवसायक शब्दावलीक उल्लेख अछि।[9] विद्यापतिक कीर्तिलतामे कसेरीक पसरा, सोनहटा, मछहटा, पनहटा आदिक उल्लेख अछि।[10] हिनक पदावलीमे जोलहा ओ पटवा जातिक एवं तत्सम्बन्धी शब्दावलीक उल्लेख भेटैत अछि।[11] फतूरीलालक **अकाली कविता**मे फसली वर्ष 1281 (सन् 1873-74) क अकालक वर्णन अछि। एहिमे कवि लोकक बन्हकी पड़ल गहना ओ दरबजातक सूची उपस्थित कयने छथि जे सोनार ओ कसेराक व्यावसायिक सामग्री थिक।[12]

आधुनिक मैथिली साहित्यमे विभिन्न व्यावसायिक जाति ओ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक उल्लेख होइत रहल अछि। यात्रीजीक कवितामे केओट, मलाह, ततमा, पासी, चमार, बरही, सोनार,धोबी, कमार, जोलहा, धुनिआँ, डोम आदि व्यावसायिक जातिक उल्लेख अछि।[13] **राधा विरह** महाकाव्यमे भगवतीकेँ कुम्हैनि, गोढ़नी, कानूनि, लोहारिनि, मालिनि, मोदिआनि, सोनारिनि, छोलकढ़नी, रजकी, तेलिनि, कलालिनि, रङरेजिनि, डोमिनि, चमैनि, जोलहिनि आदिक रूपमे चित्रित कयल गेलनि अछि।[14] **महेश शतक** मे महादेवक चमार, कुम्हार, धोबि रूपक वर्णन अछि।[15] **एकावली परिणय** महाकाव्यमे विभिन्न पसारी ओ ओकर निर्मित वस्तुक उल्लेख अछि।[16] कुम्हारक उत्पादन प्रक्रिया ओ सम्बन्धित शब्दावलीक दृष्टिऐ लघुकलश[17] छुतहर[18] पनिभरक ढाबा[19] कुम्हारक चाक[20] आदि रचना उल्लेखनीय अछि। मलाहक व्यावसायिक शब्दावलीमे ओकर औजार ओ विभिन्न प्रकारक माछक उल्लेख यत्र तत्र भेटैत अछि।[21] एहि दृष्टिऐ सीतारामझा,[22] श्रीअमरजी[23] बबुआजीझा 'अज्ञात'[24] ओ श्रीहीरानाथठाकुरक[25] रचना उल्लेखनीय अछि। 'बुलाकी' शीर्षक कवितामे सोनारक उत्पादन प्रक्रिया ओ औजारक उल्लेख भेल अछि।[26] श्रीअमरजी जेठ मासक दुपहरक तुलना कनसारसँ कयने छथि।[27] दीपकजी 'कनसार' शीर्षक

कवितामे कानूक उत्पादन प्रक्रियाकेँ आधार बनौने छथि।[28] चरखा चौमासा[29] शीर्षक कवितामे वस्त्र व्यवसायक अविच्छिन्न अङ्गकेँ सरस रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। अन्योक्तिकामे तमोलीक व्यावसायिक विशिष्टताक उल्लेख अछि।[30] मालिक व्यावसायिक जीवनसँ सम्बद्ध लता-पुष्पक वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि।[31] उक्ति-प्रत्युक्ति शीर्षक कवितामे सुमनजी कृष्णक महत्ताक संगहि मालिक महत्ताक अभिव्यक्ति कयने छथि।[32] एही तरहेँ विभिन्न व्यावसायिक जाति, ओकर औजार ओ उत्पादन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग शिष्ट साहित्यमे होइत रहल अछि।

लोकसाहित्य ओ पारम्परिक व्यवसाय : शिष्ट साहित्य जकाँ मैथिली लोक साहित्यमे सेहो पारम्परिक जातीय व्यवसाय सबहिक प्रासंगिक वर्णन भेटैत अछि। एकटा लोकगीतमे तेली, पटिहार ओ कुम्हारकेँ दीप जरयबाक हेतु तेल, बाती ओ दीपक उत्पादकक रूपमे उल्लेख अछि। सामा-चकेबाक गीतमे द्विरागमनक अवसर पर सोनार, डोम ओ लोहारसँ ओकर उत्पादित वस्तु प्राप्त करबाक उल्लेख अछि। एकटा अन्य लोकगीतमे दरजीकेँ मेही टीप दऽ कऽ साड़ी सीबाक अनुरोध कयल गेलैक अछि।[33] एकटा झूमरमे सोनार द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकारक गहनाक उल्लेख भेल अछि।[34] मोहन कमार शीर्षक लोककथामे जुआ बनयबाक विधिक उल्लेख एकटा फकड़ा द्वारा व्यक्त कयल गेल अछि।[35] एकटा प्रसिद्ध नचारीमे शंकर भगवानकेँ विभिन्न सर्पक गहना पहिरयबाक बिम्ब लेल गेल अछि आ ताहि क्रममे सोनारक विविध उत्पादनक वर्णन अछि। विषहरिक एकटा गीतमे मालि, पटवा ओ कुम्हार जातीय व्यवसायीक उल्लेख अछि। एही तरहेँ विभिन्न गीतमे कमार, मलाह, दर्जी, जोलहा, चमार आदि जातीय व्यवसायी एवं ओकर व्यवसायसँ सम्बद्ध वस्तुक उल्लेख होइत देखि पड़ैत अछि।[36] **कोसी गीत**मे मालि, डोम, कपड़िया, सोनार, तेली आदि अनेक जातीय व्यवसायी ओ ओकर सभक उत्पादनक उल्लेख अछि।[37] उपनयनक एकटा गीतमे बाड़ उपजायब, सूत काटब ओ यज्ञोपवीतकेँ कुसुम-फूलसँ रङल जयबाक उल्लेख अछि। एकटा अन्य गीतमे सोनार ओ पटवाक सहायतासँ थ्रिमहार गढ़यबाक उल्लेख अछि। एकटा गीतमे कुम्हारसँ सामा गढ़ि देबाक अनुरोध कयल गेल अछि।[38] गाङ्गो देवीक गाथामे मलाहक व्यावसायिक जीवनक झाँकी भेटैत अछि।[39] विभिन्न लोककथा, व्रतकथा ओ फकड़ामे मलाह, कुम्हार, तेली, धोबि, लोहार इत्यादि जातिक क्रियाकलापक वर्णन-प्रसंग रहैत अछि।

एतावता लोकसाहित्यमे पारम्परिक जाति ओ ओकर शब्दावलीक उल्लेख विविध रूपमे होइत रहल अछि।

मिथिलाक व्यवसायक वर्गीकरण : मिथिलामे प्रचलित समस्त व्यवसायकेँ दू वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि।

(क) परम्पराहीन व्यवसाय और (ख) पारम्परिक व्यवसाय

परम्पराहीन व्यवसाय ओहन व्यवसाय थिक जकर उद्‌भव ओ विकासमे परम्पराक अस्तित्व नहि छैक अर्थात् जे युगक आवश्यकता ओ प्राप्त आधार सामग्रीक आधार पर उद्‌भूत अछि जेना ठोंगा निर्माण, छपाइ, छत्ताक मरम्मति आदि।

पारम्परिक व्यवसायसँ तात्पर्य एहन व्यवसायसँ अछि जकर उद्‌भव ओ विकासमे युग-युगसँ अबैत मानवक सभ्यता ओ संस्कृतिक महत्वपूर्ण भूमिका रहलैक अछि आ परम्परा द्वारा ई व्यवसाय सभ विकासक क्रमिक पथकेँ टपैत आजुक स्थितिमे अछि, जेना कृषि व्यवसाय, पौरोहित्य, सोनारी, कहारी आदि।

मिथिलाक पारम्परिक व्यवसाय : मिथिलाक पारम्परिक व्यवसायकेँ दू वर्ग मे बाँटल जा सकैत अछि– (क) जाति निरपेक्ष व्यवसाय (ख) जातीय व्यवसाय।

जाति निरपेक्ष पारम्परिक व्यवसायसँ तात्पर्य एहन व्यवसाय सभसँ अछि जाहिमे विभिन्न जातिक लोक लागल छथि आ कोनो खास जाति विशेषक ओहि व्यवसाय विशेष पर एकाधिकार नहि छैक, जेना कृषि व्यवसाय, रेशम उद्योग, पशुपालन, घरामी आदि।

पारम्परिक जातीय व्यवसायसँ तात्पर्य एहन व्यवसाय सभसँ अछि जाहि व्यवसाय विशेष सभ पर कोनो खास जाति विशेषक एकाधिकार छैक आ ओ जातिविशेष ओहि व्यवसाये विशेष द्वारा चीन्हल जाइत अछि, जेना नौआ, बरही, आदिक व्यवसाय।

मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय : पारम्परिक जातीय व्यवसायकेँ उत्पादनक आधार पर दू वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत छैक।

(क) श्रमाश्रयी ओ (ख) निर्माणाश्रयी

श्रमाश्रयी व्यवसायसँ तात्पर्य एहन व्यवसायसँ अछि जाहिमे व्यवसायी अपन श्रम तँ बेचैत अछि मुदा ओकर परिणामस्वरूप कोनो हस्तान्तरणीय उपयोगिताक सृष्टि नहि होइत छैक, जेना नौआ, पमरिया, टिकुलहारा, पुरोहित आदिक व्यवसाय।

निर्माणाश्रयी व्यवसायसँ तात्पर्य्य एहन व्यवसायसँ अछि जाहिमे श्रमिक अपन दक्षताक उपयोग कऽ हस्तान्तरणीय उपयोगिताक सृष्टि करैत अछि। जेना डोम, लहेरी, बरही आदिक व्यवसाय।

सामाजिक जीवन ओ व्यावसायिक जाति : मिथिलाक सामाजिक ओ आर्थिक संरचनामे व्यावसायिक जाति सभक स्थान महत्वपूर्ण छैक। उत्पादक जाति होयबाक कारणेँ एहि जाति सभक सहयोगक बिना समाजक काज सुचारु रूपेँ नहि चलि सकैत छैक। वस्तुतः समाजक सांस्कृतिक ओ आर्थिक ढाँचामे एहि जाति सभक महत्वपूर्ण भूमिका छैक।

प्राचीन मिथिलामे सामाजिक संगठन केहन छल ताहि पर विचार करैत गंगापति सिंह कहने छथि जे '*ग्राम संगठन एहन अपूर्व ओ आदर्श छल जे प्रत्येक प्रान्त वा अवान्तरक कोन कथा प्रत्येक गाम स्वयं पूर्ण छल। गामहिक तेली अपन कोल्हुमे पेड़ि कऽ तेल तैयार करैत छल जाहिसँ देहमे तेल लगेबाक हेतुक, मनसामे तीमन तरकारीक हेतुक वा दीप-डिबिया जरैबाक हेतुक अनायास भेटैत छलैक। गामहिक नोनिआ सभ माटिसँ नोन तैयार करैत छल। वस्त्रक हेतु बाड़क गाछसँ तूर सेर दू सेर नोक बहराइत छल जाहिसँ कुलाङनालोकनि टकुरी ओ चरखा काटि जनउ तथा धोती-साड़ी, सलगा-दोहरि आदि जोकर सूत तैयार करैत छलीह। गामहिक जोलहाकेँ तान दय कपड़ा बुनाओल जाइत छल। गामहिमे कमार एक दू घर बसौल गेल जाइत छल जे प्रतिदिन हर-फारक मरम्मति, केबाड़-फड़की आदि तैयार करैत छल। एक दू घर चमार जुत्ता बनएबा लय ओ मुइल माल-जाल फेकबा लय रहैत छल। कुम्हार माटिक बासन तौला, कराही, दीप, डिबिया आदि जावतो वस्तु बनबैत छल। डोम आदि सभ बाँस लय छिट्टा, डाला, फुलडाली आदि बनबैत छल।*'[40]

परम्परासँ अथवा साम्प्रतिको मिथिलामे बरही, डोम, कुम्हार, चमार, धोबि, मालि आदि जाति विभिन्न संस्कारमे अनिवार्य रूपेँ भाग लैत छथि तेँ ई सभ समाजक अभिन्न अंग भऽ गेल छथि। सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अङ्गक रूपमे स्वीकृत एहि जातिसभक लोककेँ **पसारी/पौनी पसारी** कहल जाइत छैक। एहि जाति सभसँ निरन्तर आवश्यकता रहबाक कारणेँ एकरा सभकेँ वर्ष भरिक काज हेतु धानक उपजा भेला पर गृहस्थलोकनि धान दऽ दैत छथिन्ह। वर्ष भरिक काजक हेतु देल अन्नकेँ **कमालि/कमाइल/कमोट** कहल जाइत छैक। विशेष काजक हेतु उचित पारिश्रमिक तँ देले जाइत छैक। खेत कटबाक समय पसारीकेँ खेत पाछू आहुल भरि फसिल काटि लेबाक अनुमति रहैत छैक। एकरा **मुट्ठी** कहल जाइत छैक। कटनीमे गेल पसारी अथवा ओकर परिवारक लोककेँ **आँटी** सेहो देल जाइत छैक। पावनि-तिहारमे पसारीकेँ पावनिक प्रसादस्वरूप **पवनौटा** देल जाइत छैक। विविध संस्कारमे एकरा सभकेँ **निछाउर, पुरौत** आदि सेहो देल जयबाक विधान छैक। भोज ओ दक्षिणा तँ देले जाइत छैक, भोजनक बदला एक व्यक्तिक खयबा योग्य अन्न सेहो दऽ देल जाइत छैक जकरा **सीधा/सिदहा** कहल जाइत छैक।

खास परिवारसँ खास पसारी-परिवार सम्बद्ध रहैत छैक। ई खास परिवार पसारीक **यजमान/जजिमान/पोशिन्दा** कहल जाइत छैक। डोम आदि अनेक पसारी तँ अपन यजमानकेँ बन्हकी, बिक्री सेहो करैत अछि।

एही तरहेँ आनो-आन व्यवसायी जातिक व्यवसायक अनुरूपहिं सामाजिक जीवनमे स्थान छैक। मलाह, जोलहा, धुनिआ आदि समस्त व्यावसायिक जाति अपन उत्पादन द्वारा समाजक आर्थिक सम्पन्नताक अभिवृद्धिमे योगदान दैत अछि आ लोकक

विभिन्न आवश्यकताक पूर्तिमे लागल अछि। मुदा एहि व्यावसायिक जाति सभक संगे नगदक व्यवहार रहबाक कारणेँ ई सभ आने पसारी जाति जकाँ सामाजिक समन्वय नहि प्राप्त कऽ पबैत अछि। तथापि समाजमे सभकेँ सम्मानक यथोचित स्थान छैक।

प्रत्येक उत्सवमे, सत्यनारायण पूजामे, भोजभातमे समाजक आनो आन वर्णकेँ नोत-हकार देल जाइत छैक आ सबहक संगहि ओकरो सभकेँ प्रसाद, पान, सुपारी देल जाइत छैक। एहि कार्यमे तथाकथित अछोपो सभक संगे समाने व्यवहार राखल जाइत छैक। बरहबरना भोजक परिपाटी एखनहु अछिए। सबहक संगे समान व्यवहार-रखबामे लोकक सौजन्येटा कारण नहि अछि, अपितु सामाजिक, लौकिक, वैधानिक तथा धार्मिको आवश्यकता छैक।

एहिसँ मिथिलाक सामाजिक जीवनमे व्यावसायिक जातिक स्थानक महत्ता उद्घाटित होइत अछि जे किञ्चित परिवर्तनक संग एखनहु वर्तमान अछि।

मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक दिशा : व्यावसायिक शब्दावलीमे प्रत्येक व्यवसायक शब्दावलीक आधार स्रोत तीन गोट होइत अछि।

(क) आधार सामग्री (ख) औजार ओ (ग) उत्पादन

आधार सामग्री ओहि वस्तु सभकेँ कहल जाइत छैक जकरा आधार रूपमे प्रकृति अथवा आन स्रोतसँ प्राप्त कऽ रूप परिवर्तन द्वारा उत्पादन संभव होइत छैक। ई दू प्रकारक होइत अछि।

(क) मुख्य ओ (ख) आनुषंगिक

मुख्य आधार सामग्रीसँ तात्पर्य्य एहन वस्तुसँ अछि जकर अभावमे उत्पादन सर्वथा सम्भवे नहि अछि। आनुषंगिक आधार सामग्री ओ थिक जे मुख्य आधार सामग्रीकेँ रूप-परिवर्तनक क्रममे सहायकक काज करैत छैक।

औजार एहन वस्तु सभकेँ कहल जाइत अछि जे आधार सामग्रीक रूप परिवर्तन द्वारा ओहिमे उपयोगिताक सृष्टिमे सहायक होइत छैक तथा आधार सामग्रीमे रूप परिवर्तन भेलाक बादो ओकर अपन रूपमे कोनो असामान्य परिवर्तन नहि भेल रहैत छैक।

उपयोगक प्रक्रियाक आधार पर औजार दू प्रकारक होइत अछि–

(क) उपकरण (ख) हथियार

उपकरण एहन औजार थिक जे आधार सामग्रीक रूप-परिवर्तनमे सहायक होइत अछि मुदा जकर उपयोगक हेतु हस्तश्रमक उपयोग नहिजेक बराबर होइत छैक। हस्तश्रम द्वारा संचालन-योग्य औजारकेँ हथियार कहल जाइत छैक।

उत्पादन अर्थशास्त्रीय शब्द थिक जकर परिभाषा करैत कहल गेल अछि जे ई वस्तुमे उपयोगिता ओ मूल्यक सृष्टि अथवा योग करब थिक।

व्यावसायिक शब्दावलीक स्वरूप : निर्माणाश्रयी पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीमे प्रयोगक आधार पर तीन प्रकारक शब्द पाओल जाइत अछि–

1. सामान्य व्यावसायिक 2. विशिष्ट व्यावसायिक ओ 3. सुच्चा व्यावसायिक

सामान्य व्यावसायिक शब्दावली एहन शब्द समूह थिक जे विभिन्न व्यवसायमे आधार सामग्री, औजार अथवा उत्पादनक हेतु प्रयुक्त होयबाक संगहि जनसामान्यक सामान्य उपयोगमे सेहो व्यवहृत अछि । उदाहरणक हेतु हर शब्दकेँ लेल जा सकैत छैक । ई बरहीक उत्पादन सामग्री होयबाक संगहि जनसामान्यक प्रचलित शब्द थिक।

विशिष्ट व्यावसायिक शब्दावली एहन शब्द समूह थिक जे जनसामान्यमे सामान्यतया प्रयुक्त नहि होइत अछि, मुदा अनेक भिन्न-भिन्न व्यवसायमे प्रचलित रहैत अछि । उदाहरणक हेतु बसुला शब्दकेँ लेल जा सकैत छैक । ई बरहीक औजार थिक आ लोहारक उत्पादन-सामग्री।

सुच्चा व्यावसायिक शब्दावलीसँ तात्पर्य एहन शब्द समूहसँ अछि जे व्यवसाय विशेषक विशिष्ट शब्दावली होइत अछि आ ने तँ जनसामान्येमे प्रचलित रहैत अछि ने आने व्यवसायमे। उदाहरणक हेतु सोनारक नेयार, लोहारक घन, बरहीक कच्चक, कुम्हारक डउल, कसेरीक पन्ना, मलाहक बाड़ी, जोलहाक खरकौटी, डोमक अंधेरी, बरइक सोपरा आदि।

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली : प्रस्तुत ग्रन्थमे पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीमे निर्माणाश्रयी व्यवसायमे निम्नलिखित जातिक व्यवसायसँ सम्बद्ध शब्दावलीकेँ राखल गेल अछि–बरही, डोम, कुम्हार, मलाह, ततमा, जोलहा, पटवा, रङरेज, धोबि, धुनिआ, गरेड़ी, लोहार, कसेरा, सोनार,कानू, हलुआइ, तेली, नोनिआ, कुरेड़ी, बरइ, पासी, सूड़ी, कलवार,लहेरी, चमार ओ मालि।

बरही काठक वस्तु बनयबाक, डोम बाँसक बासन बिनबाक, कुम्हार माटिक बासन गढ़बाक; मलाह जलसँ माछ, मखान, सिङ्हारा प्राप्त करबाक; ततमा, पटवा ओ जोलहा वस्त्र बिनबाक; रङरेज वस्त्रकेँ रङबाक, धोबि मैल वस्त्रकेँ साफ करबाक, दर्जी कपड़ा सीबाक, धुनिआ तूर धुनबाक, गरेड़ी भेँड़ी पोसबाक ओ कम्बलादि बनयबाक; लोहार लौहधातुसँ विभिन्न सामग्री बनयबाक, कसेरा काँससँ थारी-बाटी आदि बनयबाक; सोनार सोन ओ चानीसँ आभूषण बनयबाक; कानू भूजा भुजबाक; हलुआइ मधुर बनयबाक; तेली तेल पेड़बाक; कुरेड़ी मधु छोड़यबाक; बरइ पान उपजयबाक; पासी तारी चुअयबाक; सूड़ी ओ कलवार दारू चुअयबाक; लहेरी लहठी बनयबाक ओ मालि फूलक माला आदि बनयबाक व्यवसाय करैत अछि।

नोनिआ शोरा ओ नून बनयबाक व्यवसाय करैत छल मुदा सम्प्रति ओकर जातियेटा बचल छैक, व्यवसाय नहि।

शब्दावलीक वर्गीकरण : व्यावसायिक जातिसँ सम्बद्ध शब्दावलीकेँ व्यवसायक रूपभेदक आधारपर पाँच गोट वर्गमे बाँटल जा सकैत छैक–

1. काठ-बाँस व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली 2. माटि-पानि व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली 3. तूर-सूत व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली 4. धातु व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली 5. अन्य व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

प्रस्तुत ग्रन्थमे यथासाध्य संकलित एहि समस्त शब्दावलीकेँ जाति विशेषक व्यवसायसँ सम्बद्ध आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादनक क्रममे रूप ओ अर्थ दूनू दृष्टिये व्याख्या करबाक चेष्टा कयल गेल अछि ।

सन्दर्भ-निर्देश

1. यजुर्वेद, 30/6-7, 16/27
2. वर्णरत्नाकर, स. चटर्जी एवं मिश्र, पृ॰-1, 41, 67, 68, 62, 21, 22
3. मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति, राधाकृष्ण चौधरी, पृ॰-372
4. जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाल्यूम-48, पार्ट 1-4, पृ॰-82
5. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, द्वितीय भाग, म॰ म॰ डा॰ उमेशमिश्र, दरभंगा, पृ॰-31
6. जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाल्यूम-39, पार्ट-4, पृ॰-372
7. हिस्ट्री ऑफ बिहार, राधाकृष्ण चौधरी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी 1976, पृ॰-372
8. बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त, डा॰ जयधारी सिंह, मधुबनी, 1969, पृ॰-135
9. वर्णरत्नाकर, सं. सुनीतिकुमार चटर्जी एवं बबुआ मिश्र, 1940
10. कीर्तिलता, स. बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं॰ 2032, पृ॰-28-30
11. विद्यापति, मित्र-मजुमदार, पद सं॰ 120, 204
12. एन इन्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज आफ नौर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर, क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1881
13. चित्रा, वैद्यनाथमिश्र 'यात्री', मैथिली साहित्य समिति, प्रयाग, 1390 साल, पृ॰-65-66
14. राधाविरह, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', सर्ग 4, पृ॰-83-90
15. रसनिर्झरिणी, न्यायाचार्य पं॰ आनन्दझा, दीक्षित बुक डिपो, सं॰ 2006, पृ॰-52-53
16. एकावली परिणय, बदरीनाथझा, दहिभद्दा, सन् 1383 साल, पृ॰-40-41
17. झाङ्कार, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', मैथिली प्रकाशन, कलकत्ता 1960, पृ॰-41
18. प्रेरणा पुञ्ज, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ॰-104
19. गुदगुदी, श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 1364 साल पृ॰-48-51

20. मिथिला मिहिर, 24 सितम्बर, 1961, लेखक मधुसूदनचौधरीमाथुर
21. चन्द्र रचनावली, मैथिली अकादमी, पटना, बालाह्वान
22. सीतारामझा-साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली-1, पृ--59, 65, 78
23. मिथिला मिहिर, 6 नवम्बर, 1960, पृ० 22
24. रुक्मिणी परिणय, बबुआजीझा'अज्ञात', मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ--119, 123
25. मिथिला मिहिर, 10 जून 1962, पृ--20
26. प्रेरणा पुन्ज, 'मधुप', पृ--87
27. ऋतुप्रिया, चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, लहेरियासराय, 1963, पृ--79
28. आरती, जगदीश नारायण 'दीपक', भदहर, बिरौल, दरभंगा, 1959, पृ--54-55
29. मिथिला, वर्ष 1 अंक 11, फाल्गुन 1337 साल, मार्च 1930, पृ--452
30. अन्योक्तिका, सुरेन्द्रझा'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1969, पृ--95
31. कृष्ण चरित, तन्त्रनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ--2-4 । चाणक्य, दीनानाथपाठक'बन्धु', मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1985, पृ--26
32. प्रतिपदा, सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1970, पृ--72
33. मैथिली लोकगीत, रामइकबालसिंह'राकेश', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, संवत 2012, पृ--347, 380, 378
34. मैथिली लोकगीतों का अध्ययन, डा० तेजनारायणलाल, आगरा, 1962, पृ--316
35. अष्टदल, डा० अमरनाथझा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता, पृ--58
36. मैथिली लोकगीत, डा० अणिमा सिंह, कलकत्ता, 1969 गीत सं० 151, 81, 621, 546
37. कोसी गीत, व्रजेश्वर मल्लिक, मल्लिक सदन, बड़गाँव, मधेपुरा, पृ० 34-36
38. मिथिला संस्कार गीत, कामेश्वरीदेवी, मैथिली अकादमी, पटना, गीत सं० 120, 337
39. स्वदेश, 8 एवं 11 अप्रैल 1983
40. मिथिला मिहिर, 26 मइ 1939

□

द्वितीय अध्याय

काठ-बाँस व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय मध्य काठ ओ बाँसक व्यवसाय प्रमुख अछि । एकर मूल कारण अछि एहिठाम काठ ओ बाँसक स्थानीय आधार सामग्रीक रूपमे प्रचुरतया उपलब्धि। प्राकृतिक वन तँ मिथिलामे प्राचीनो कालमे प्रचुर छल मुदा आबादीक बाढ़िक संगहि वन कटैत गेल, गाम-नगर बसैत गेल । तथापि एहिठामक निवासी काठ ओ बाँसक महत्वक उपेक्षा नहि कऽ सकल। एखनहु प्रत्येक मैथिल परिवारकेँ अपन आमक गाछी रहितहि छैक, बँसबाड़ि रहितहि छैक। वृक्ष लगायब एहिठाम पुण्य कार्य बूझल जाइत छैक। पुस्त दर पुस्त गाछी-बिरछीक उपभोग कयल जाइत छैक । प्रत्येक पिता अपन सन्तानक हेतु आने अचल सम्पत्ति जकाँ इहो सम्पत्ति छोड़ि जाइत छथि।

मिथिला जनपदक सटले हिमालयक तराइ वन्य काष्ठक हेतु प्रसिद्ध क्षेत्र अछि। ओहिठामक विभिन्न प्रकारक दृढ काष्ठ ओ बाँस मिथिलाक हेतु सुलभ रहल अछि।

काठ-बाँसक महत्वक खास कारण अछि मिथिलाक समतल भूभागमे कठोर वस्तुक विकल्पक अभाव। ने तँ एहिठाम प्रस्तरे उपलब्ध अछि आ ने धात्वादिक खनन क्षेत्रे एहिठाम अछि।

तेँ स्थानीय उपयोगिता ओ आधार सामग्रीक उपलब्धिक कारणेँ मिथिलामे काठ ओ बाँसक व्यवसाय प्रमुख शिल्पक रूपमे विकसित रहल अछि । परम्परासँ ई जाति विशेषक विशिष्ट व्यवसायक रूप धारण कऽ लेने अछि।

काठक व्यवसायमे **बढ़ही/कमार** तथा बाँसक व्यवसायमे डोम जाति लागल अछि । बाँसक विभिन्न वस्तु बनयबाक व्यवसायकेँ **बँसकरम** (वंशकर्म)/**बसकम** कहल जाइत छैक। काठक व्यवसाय **कठकम** होइत अछि।

आधार-सामग्री सम्बन्धी शब्दावली : काष्ठकर्मक आधार सामग्रीसँ तात्पर्य ओहि सभ पदार्थसँ अछि जकरा कच्चा मालक रूपमे प्राप्त कऽ काष्ठक विभिन्न उपयोगी वस्तुक निर्माण कयल जाइत छैक आ जे निर्मित वस्तुकेँ सुन्दर ओ मजगूत बनयबामे उपयोगी होइत अछि ।

काष्ठकर्मक मूल आधार सामग्री **लकड़ी** थिक ओ आनुषंगिक सामग्री मध्य धातुक वस्तु ओ **मसाला** अबैत अछि।

काष्ठ : काष्ठकेँ **काठ/कठरा/कठला/दारु/लकड़ी** कहल जाइत छैक । काठक छोट ओ पातर टुकड़ी **काठी** कहल जाइत अछि । अत्यन्त लघु आकृतिक काठीकेँ **कटकी/कठकी** कहल जाइत छैक।

सर्वप्रथम काठकेँ परिभाषित कऽ देब उचित अछि ।

काठ शब्द संस्कृतक काष्ठ शब्दक तद्भव रूप काष्ठ > कट्ठ > काठ थिक । संस्कृतमे ई 'काश्' धातुसँ निष्पन्न भेल अछि जकर अर्थ होइत अछि– दीप्त करब । तेँ काष्ठक व्याख्या कयल गेल अछि जे जाहिसँ दीप्त कयल जाय वा प्रकाशित कयल जाय--काशते दीप्यते काशत्यनेन वा (शब्दकल्पद्रुम द्वितीयो भागः, चौखम्बा संस्कृत सिरीज आफिस, वाराणसी-1, 1967, पृ० 120) ।

काष्ठकेँ परिभाषित करबामे कहल गेल अछि जे सार सहित अत्यन्त सुखायल (सर्वथा नीरस) ओ मुट्ठीमे अँटबा योग्य खदिर इत्यादि वृक्षसँ उद्भूत वस्तु काष्ठ थिक (तत्रैव, 'संसारयतिशुष्कं यत् मुष्टिमध्ये समेष्यति । तत्काष्ठं काष्ठमित्याहुः खदिरादिसमुद्भवम् ॥')।

एहिसँ काष्ठक उपयोग ओ अर्थक विकासक इतिहास भेटि जाइत अछि । सभ्यताक आरम्भमे एकर उपयोग प्रकाश उत्पन्न करबामे होइत छल । तत्पश्चात् जारनिमे उपयोग होमऽ लागल। काष्ठ पहिने गाछक सुखायल ठहुरीमात्रकेँ कहल जाइत छलैक । पश्चात् सुखायल सँसे वृक्षक द्योतक भऽ गेलैक।

अतः शाखा ओ उपशाखासँ युक्त सदाबहार गाछक बल्कलक भीतर जे ठोस भाग रहैत छैक आ जकर उपयोग गृहनिर्माण एवं कमार निर्मित विविध उपयोग योग्य वस्तुक हेतु होइत छैक, से **काष्ठ/काठ** कहल जाइत अछि।

गाछक अङ्ग : काठ गाछसँ प्राप्त होइत अछि । गाछकेँ **पेड़/पेँड़/पेण/पेंण** कहल जाइत अछि। गाछ लगयबाक स्थानकेँ **गाछी/बाग/बगइचा/बगीचा** कहल जाइत छैक। गृहस्थलोकनि खास कऽ आमक गाछी लगबैत छथि । आम दुइ प्रकारक होइत अछि। **कलमी** ओ **बिज्जू** । मूल गाछक ठाढ़िकेँ दोसर गाछक जड़िमे जोड़बाक प्रक्रिया द्वारा लगाओल गाछकेँ कलमी ओ आमक बीयासँ उत्पन्न गाछकेँ बिज्जू कहल जाइत छैक । कलमी आमक गाछी **कलमबाग** कहल जाइत अछि। बिज्जू खास

कऽ लकड़ीक उत्पादनक हेतु रोपल जाइत अछि । एहन गाछ अन्यान्य गाछक संग कलमबागक चारू भागक **हत्ता/हाता/आरि** पर लगाओल जाइत अछि आ समष्टि रूपेँ **बेख** कहल जाइत अछि । स्वतः उत्पन्न गाछक समूह **जंगल/जङ्गल/जङ्गल** कहल जाइत अछि । अधिक गाछवला स्थान **गछगर** होइछ। गाछक माटितरवला भाग ओकर आधार होइत छैक । एकरा **मूल/जड़/जड़ि/ जड़िआठ/जड़िओठा/जड़िआठी** कहल जाइत छैक । जड़िसँ गाछक अन्य भागकेँ पृथक् कयला उत्तर धड़क शेष भाग सहित जड़िकेँ **ओधि/ओइध/खूट/खूँट/बूट** कहल जाइत छैक । छोट खूटकेँ **खुट्टी/बुट्टी** कहल जाइत छैक ।

पातर-पातर जड़िकेँ **सीर/सोर** कहल जाइत छैक । सीर सहित सम्पूर्ण गाछ **सोर-पोर** कहल जाइत अछि । मध्यवर्ती जड़ि **मुसरा (ड़ा)** कहल जाइत अछि ।

गाछक मुख्य भाग **धऽड़/धड़ि/धड़र** कहल जाइत छैक । धड़क सभसँ उपरका भाग केँ **छजनी/छीप/फुनगी/फुलडी/फुलंगी** कहल जाइत छैक । पातर छीपकेँ **छिपाठी/छिप्पी** कहल जाइत छैक । सबसँ उपरका छोर **टुनी** होइत अछि।

धड़सँ अनेक शखा निकलैत छैक । एकरा **ठारि/ठाढ़ि/ठाढ़ि/डारि/डाढ़ि/डाढ़ि** कहल जाइत छैक। डाढ़िसँ पुनश्च पातर-पातर डाढ़ि निकलैत छैक। एकरा **ठहुरी/ठउढ़ी/डहुरी/डउढ़ी/पङरी** कहल जाइत छैक । जाहि ठामसँ दुइ गोट मोट डारि निकलल रहैत छैक से **दुफेरा/दोकन्धा/दोकन्हा/दोकन्हरा** कहल जाइत छैक। दू डारिवला गाछ **दुफेरा** कहल जाइत अछि।

गाछमे जाहि स्थानसँ शाखा निकलैत छैक, ओहि स्थानपर लकड़ीक अन्तःवर्ती भाग बेस गस्सल रहैत छैक । एहन स्थान **गीरह/गाँठ/गेँठ/गेँठी/गेँठि** (सं. ग्रंथि) कहल जाइत अछि । लग-लग गीरहवला लकड़ी **घनगीरह/घनपोर** आ दूर-दूर गीरहवला **नमपोर/लमपोर/पोरगर/बहपोर** कहल जाइत छैक ।

शाखा निकलबाक स्थानपर बनल कोनकेँ **गऽह/गह/दोग** कहल जाइत छैक । दू शाखाक बीचवला कोनकेँ **दोकन/दोक्कन/दोकन्ना/दोकन्नी** कहल जाइत छैक।

गाछक शाखा चलबाक अंकुरकेँ **पनका/पनकी/पुनका/पुनकी/पनुका/पनुकी/ पनगा/पनगी/पुनगा/पुनगी/पनुगी/पनघा/पनघी/पुनघा/पुनघी/पनुघा/पनुघी/कनोजर / कनोजरि/कनगोजरि** कहल जाइत छैक । अंकुर निकलबाक क्रिया **पनकब/ पनुकब/ पुनकब/ पनगब/पनुगब/पुनगब/पनघब/पनुघब/पुनघब** होइत अछि ।

पातक समूहकेँ **पल्लव/पल्लो** कहल जाइत छैक । पल्लवक प्रारंभिक रूप **टुसा/टुस्सा** होइत अछि । छीप काटि देला उत्तर जे टुस्सा निकलैत छैक ओकरा **कोँखी** कहल जाइत छैक। गाछमे नव-नव पात बहरयबाक क्रिया **कलसायब** होइछ ।

गाछक चारू कातक आवरण **छिलका/छाल/खाल/बाकल** (सं. वल्कल) कहल जाइत छैक। वल्कल प्राचीनकालमे वस्त्रक रूपमे प्रयुक्त होइत छल। अकार्यक व्यक्तिकेँ बाकल कहल जाइत छैक। ई लाक्षणिक प्रयोग थिक।

छालक ओ भाग जे सालमे स्वत: झरि जाइत छैक से **पपड़ा/ छिलकोइया/ बखोड़ैया/ बखरोइया/बकलोइया/बखलोइया/खलरोइया/लोखड़ैया** कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन एकरा **बखोरा** कहने छथि (**मै. क्रेस्टोमैथी, पृ. 212**)।

नव गाछकेँ **नवगछुली/लवगछुली** कहल जाइत छैक। अतिवृद्ध गाछ **झङ्खार (ड़)** कहल जाइत अछि। गाछक सघन डारि-पातकेँ **झाँखुर(ड़)/झँखुरी (ड़ी)** कहल जाइत अछि। गाछसँ झाँखुर पाङि देला पर प्राप्त काष्ठ **झाँखी/झाड़ी** कहल जाइत छैक। झाँखुरक मध्यवर्ती भाग **झोँझ/झोझन/झोंझरि** होइत अछि, तेँ झोँझक **बेल तोड़ब** कठिन होइत छैक।

अधिक शाखायुक्त घनगर गाछकेँ **झमटगर/झमठगर** कहल जाइत छैक। शाखा रहित गाछकेँ **ठूँठ/ठुट्ठ/ठुट्ठा/ठुट्ठी/झण्ठी** कहल जाइत छैक। अत्यधिक नाम गाछ **सुरंगा/सुरूंगा/ सरगपताली/सरङपताली** कहल जाइत अछि। एक दिस झुकल गाछकेँ **एकोँछ/एकोँस/एकोन/ एकटङ/एकभगाह/एकभग्गू** कहल जाइत छैक।

आम आदि गाछमे परोपजीवी गाछ भऽ जाइत छैक। एकरा **बाँझी** कहल जाइत छैक। वर्णरत्नाकरमे एकरा **बँझि** कहल गेल अछि। एहिसँ गाछ **बझिया** जाइत छैक।

जीवित गाछसँ जे रस बहि कऽ जमि जाइत छैक से **लस्सा/लासा** कहल जाइत छैक। रसयुक्त लकड़ी **काँच** कहबैत अछि। रसक अल्पता भेने अथवा सुखि गेने लकड़ी **सुक्खल** कहबैत अछि। वर्द्धमान गाछकेँ **अजोह** कहल जाइत छैक। सारिलयुक्त गाछकेँ **जुआयल** कहल जाइत छैक। वर्द्धिष्णुता समाप्त भऽ गेने गाछकेँ **पाकल** कहल जाइत छैक।

गाछकेँ खण्डश: करबाक क्रिया **काटब** होइत अछि। डाढ़ि मात्रकेँ कटबाक क्रिया **पाँगब/पाङब/पाङ्गब** होइत अछि। पाङल डाढ़िसँ **झँखुरी** आदिकेँ काटि कऽ पृथक् करबाक क्रिया **छकड़ब** होइत अछि। पाङल ओ छकड़ल डाढ़िक मध्यवर्ती मोट खण्डकेँ **डगरना/डङरना/डेङरना/डङाइ/डङइ/डेङइ/ डङार/डेङार/डेङइया** कहल जाइत छैक।

कटला उत्तर नम्हर ओ विशाल काष्ठखण्डकेँ **मोढ़ा/गोटना/गोटिना/गोठना/ लट्ठा/ गेंड़ी/सील/सिल्ला** कहल जाइत छैक। विशाल मुदा छोट काष्ठखंडकेँ **ढेंग/ढेङ/ढेङ्ग/ढोङ/ढोङ्ग** कहल जाइत छैक। पातर ओ छोट ढेङकेँ **ढेङरी/ढेंगरी/ढेङ्गरी/सिल्ली** कहल जाइत छैक।

लकड़ीक मोट बेलनाकार खण्डकेँ **गोलिया/गोल** कहल जाइत छैक। अवनत खाधिसँ युक्त काष्ठखंडकेँ **पोलखाह** कहल जाइत छैक।

चतुष्कोणिक काष्ठखंडकेँ **चौपहल/चौपति/खल्टा/फण्टा** कहल जाइत छैक। त्रिकोण काष्ठखंडकेँ **तेपहल** कहल जाइत छैक। नाम प्रभेदक लकड़ी **नमका/लमका** कहल जाइत छैक। बेसी नाम लकड़ी **नमगर/लमगर** होइत अछि। चाकर प्रभेदक लकड़ीकेँ **चकरका/चप्पस/चप्पत/चौरस/चपता** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत अधिक चाकर लकड़ीकेँ **चकरगर** कहल जाइत छैक। मोट प्रभेदक हेतु **मोटका** ओ पातर प्रभेदक हेतु **पतरका** विशेषणक व्यवहार होइत अछि। नाम, चाकर ओ मोट प्रभेदक अल्पतासूचक विशेषण क्रमश: **नमकी/लमकी, चकरकी, मोटकी** होइत अछि। अत्यन्त पातर प्रभेद **पतरकी** कहल जाइत अछि।

लकड़ी सीधा ओ वक्र होइत अछि। सरल लकड़ीकेँ **सोझ/सोझका** आ वक्र लकड़ीकेँ **टेढ़/टेढ़का** कहल जाइत छैक। किञ्चित टेढ़ लकड़ीकेँ **टाल** कहल जाइत छैक। बेसी टेढ़ लकड़ीकेँ **बाँक/बकुला** कहल जाइत छैक। अत्यधिक टेढ़ लकड़ीकेँ **टेढ़बकुला/टेढ़बकुली** कहल जाइत छैक।

पैघ लकड़ीकेँ छोट-छोट टुकड़ामे कटबाक क्रिया **टोनब/टोंगब/टोङब/ टोङ्गब** होइत अछि। टोनला पर बनल छोट खण्डकेँ **टोन/टोना** कहल जाइत छैक। छोट टोनाकेँ **टोनी** कहल जाइत छैक।

लकड़ीक अपेक्षाकृत पातर अग्रभागकेँ **अगाड़/अगाड़ी** कहल जाइत छैक। पृष्ठभागकेँ **पिछाड़/पिछाड़ी** कहल जाइत छैक। काटल लकड़ीक अगाड़ अथवा पिछाड़क उत्तल सतहकेँ **बड़ल** कहल जाइत छैक। अग्रभागक तीक्ष्ण अंशकेँ **खोंथ/खोङह/खोभ/खुभी/खुब्भी** कहल जाइत छैक। लकड़ीमे जाहि ठाम दोकन्ना रहैत छैक, ओहिठामक मध्यवर्ती भागकेँ **दोकठ/दोकठी** कहल जाइत छैक। संश्लिष्ट तीन गोट काठकेँ **तेकठ/तेकठी** कहल जाइत छैक। स्वत: टूटल लकड़ीक छोर पर खोँच सन निकलल विषम भागकेँ **चोँच** कहल जाइत छैक।

गाछ कटबाक स्थानकेँ **कठाल** कहल जाइत छैक। काठक व्यापारी **कटहिया/ कठहिया** होइत अछि। काठसँ **कटही/कठही** विशेषण बनैत छैक। ई काठसँ सम्बन्धित वस्तुक हेतु प्रयुक्त होइत अछि। काठेसँ **कठम/कट्ठम/कठगर** आदि विशेषण सेहो बनैत अछि। ई सभ फलादिक कठोरताक हेतु व्यवहृत होइत अछि। काठक गन्धकेँ **कठाइन** कहल जाइत छैक।

कठालमे अव्यवस्थित ढङे राखल काठक ढेरी **लटखुट** कहल जाइत अछि। नीचा ऊपर एक लकड़ी पर दोसर लकड़ी रखबाक व्यवस्था **तराउपर/तराउपरी** कहल जाइत छैक। तराउपरी लकड़ी रखबाक क्रिया **चउकब/चउँकब/थाकब/**

थकिआयब/गेटब/गेँटिआयब होइत अछि। थकिअओला उत्तर बनल ढेरीकेँ **थाक/गेँट** कहल जाइत छैक। अत्यधिक पैघ थाक बनयबाक क्रिया **जकब** होइत अछि।

काष्ठकर्मक हेतु उपयोगी लकड़ीकेँ **सुकाठ** कहल जाइत छैक। जे लकड़ी काष्ठकर्मक हेतु नीक नहि मानल जाइत अछि से **कुकाठ** कहल जाइत अछि। काष्ठकर्मक हेतु सर्वथा अनुपयोगी लकड़ीकेँ **अकठ/औकठ/अक्कठ** कहल जाइत छैक। डा॰ जयकान्त मिश्र एकरा **अपकठ** कहने छथि (**बृहत् मैथिली शब्दकोष, पृ. 116**)।

लकड़ीक खण्डकेँ काटि ओकर अवयव सभकेँ पृथक् करबाक क्रिया **चीरब** होइत अछि। लकड़ी दू तरहेँ चीरल जाइत छैक। **नामानामी** चिराइकेँ **आराकाट/सोझकटाइ** कहल जाइत छैक। **चौड़ाचौड़ी** चिराइकेँ **खड़ाकाट/फेँटकटाइ/रगकट्टू** कहल जाइत छैक।

फेँटकटाइ कयला उत्तर लकड़ीमे जे वृत्ताकार एककेन्द्रीय घेरा सभ देखि पड़ैत छैक से **घेरा/फेरा/फेँड़ा/फेण/फेँड़** कहल जाइत छैक । लकड़ीक गोलाइ एक दिस अधिक ओ दोसर दिस कम रहने ओहिमे फेरा सभ आगू दिस क्रमहि संश्लिष्ट भेल देखि पड़ैत छैक। एहन लकड़ीकेँ **साँपिन** कहल जाइत छैक।

लकड़ीक मध्यवर्ती फेरावला भाग अधिक दृढ, रंगीन ओ रसहीन होइत अछि। एकरा **सार/सारिल** कहल जाइत छैक । सारिलवला भाग एककेन्द्रीय रहने ओकरा **एकपोरा सारिल** कहल जाइत छैक । सारिलवला भाग **निस्सन/निट्ठाह** होइत अछि। तेँ ई काष्ठकर्मक हेतु बेसी प्रशस्त बूझल जाइत अछि । एकरा **कामिल/कामी** सेहो कहल जाइत छैक।

सारिल भागक चारूकात कमजोर लकड़ीक आवरण रहैत छैक । एकरा **असार/असरा** कहल जाइत छैक । असरावला भाग **अकामिल/अकाजक/बेकार** होइत अछि । असरा ओ छालकेँ छेबि अथवा काट-छाँट कऽ अथवा चीरि कऽ पृथक् कऽ लेल जाइत छैक । ई छाल ओ असरावला भागक फेंट **बाकल/बकला** कहल जाइत छैक । बाकल काष्ठकर्मक हेतु बेकार होइत अछि । लकड़ीक जाहि भागमे खाप बनल रहैत छैक, ओकरा **होरुआ/होलुआ** कहल जाइत छैक ।

सोझकटाइ कयला उत्तर लकड़ीमे पाँती सदृश आकृतिक समूह देखि पड़ैत छैक। एकरा सभकेँ **रेघा/रेसा/आँस/लाथि/लाथी/नाथि/नाभी** कहल जाइत छैक। जाहि लकड़ीक रेसा लग-लग रहैत छैक ओ **ठोस/कठोर/निट्ठाह** बूझल जाइत अछि आ अपेक्षाकृत अधिक भारी होइत अछि । जाहि लकड़ीमे रेसा दूर-दूर रहैत छैक ओ लकड़ी **मोलायम** आ कम भारी होइत अछि।

लकड़ीमे कतहु-कतहु टुटा रेघाक बीच बेस फँकगर चिरक्का रहैत छैक। एहिठाम लकड़ी कमजोर भेल रहैत छैक आ नहोसँ खोधल जा सकैत छैक। लकड़ीक एहि दोषाह भागकेँ **साँस** कहल जाइत छैक।

लकड़ीमे कोनो-कोनो ठाम पाथर जकाँ सक्कत रहैत छैक । एहन भागपर आरी, बसुला आदिक धार मुरुछि जाइत छैक । एहि भागकेँ **पथरौटी** कहल जाइछ।

काठक दोष : लकड़ीक ओ शून्य भाग जे कोनो जानवर अथवा चिड़ैक खोँताक रूपमे व्यवहृत होइत अछि से **धोधर (ड़)/धोधरि (ड़ि)** कहल जाइत छैक। काठ खोधि कऽ गाछमे पर बनबयवला पक्षीकेँ **कठखोधी** कहल जाइत छैक । काठक भीतर रहऽवला साप, बेङ आदि **कठोहि** कहल जाइत अछि।

लकड़ीक कोनो भाग सड़ि गेने सड़लाहा भाग पृथक् भऽ गेला पर जे खाधि बनि जाइत छैक ओकरा **खोधर (ड़)/खोधरि(ड़ि)/खधोरि (ड़ि)** कहल जाइत छैक। किञ्चित सड़ल लकड़ीकेँ **कोकनल** कहल जाइत छैक । कोकनि कऽ लकड़ीक कमजोर होयबाक क्रिया **कोकनब/उकहब** होइत अछि । सड़ल-कोकनल ओ कमजोर लकड़ीकेँ **अदद्दी** कहल जाइत छैक । ऊपरसँ चिक्कन आ भीतरसँ खाली लकड़ीकेँ फोंक कहल जाइत छैक। अल्प भारसँ सहजतापूर्वक टूटऽवला लकड़ी **टोनाह/टुनकाह/तन्नुक** कहल जाइत अछि।

लकड़ीमे अनेक प्रकारक कीड़ा लगैत छैक । ई सभ लकड़ीकेँ भीतरे-भीतर काटि कऽ नष्ट कऽ दैत छैक । एहन कीड़ामे **दिवाड़/दीमक, घून, गराड़/गराड़ि** आदि प्रमुख अछि। दिवाड़ लागल लकड़ीकेँ **दिवड़लग्गू/दिवड़ाह** कहल जाइत छैक। दिवाड़ द्वारा खा कऽ नष्ट भेल लकड़ीकेँ **दिवड़खौक/दिवड़खौक्कू** कहल जाइत छैक । लकड़ीमे घुन लगबाक क्रिया **घुनायब** होइत अछि। घून लागल लकड़ीकेँ **घुनायल/घुनाह/घुनलग्गू** कहल जाइत छैक। घून द्वारा खा कऽ नष्ट भेल लकड़ीकेँ **घुनखौक/घुनखौक्कू** कहल जाइत छैक।

रौद ओ पानिमे पड़ल रहने लकड़ी स्थान-स्थानपर अनेकशः फाटि जाइछ। फाटल लकड़ीक दू भागक मध्यवर्ती स्थानकेँ **फाट/फाँक/फाँड़ि/दड़क/दराड़ि/चनक** कहल जाइछ। फाट बनबाक क्रिया **दरकब/चनकब/चहकब** होइछ।

काँच लकड़ीक सूखिकऽ वक्र भऽ जयबाक क्रिया **ऐँठब** होइत अछि । एहिसँ उत्पन्न वक्रताकेँ **ऐँठ/ऐँठी** कहल जाइत छैक। अत्यधिक वक्रता उत्पन्न भऽ जयबाक क्रिया **ऐँचब/गैँचब** होइत अछि । किञ्चित वक्रतायुक्त लकड़ी गैँचाह कहल जाइछ।

भार पड़ला पर लकड़ीक झुकि जयबाक क्रिया **लहब/लचब** होइत अछि। भार हटने सोझ होयबाक ओ भार पड़ने पुनः लहि जयबाक क्रिया **लचकब** होइत

अछि। लचकऽवला लकड़ीकें **लचलच** कहल जाइत छैक । सुखला उत्तर लकड़ीक संकुचित होयबाक क्रिया **घोंकचब/घोंकचब** होइत अछि।

लकड़ीक उपरका सतह परसँ किछु भागक स्वतः पृथक् भऽ जयबाक क्रिया **चट ओदरब** होइत अछि। चट ओदरला पर जे अवनत तल लकड़ीक सतह पर देखि पड़ैत छैक से **चट** कहल जाइत छैक ।

घून, दिवाड़, सौंस, पथरौटी, घोघर, आदि लकड़ीक खराबी होइत अछि। एकरा सभकें **पथ/ऐब/कारण** कहल जाइत छैक। पयसँ युक्त लकड़ीकें **पयदार/पयलग्गू/ऐबाह** कहल जाइत छैक ।

काष्ठक प्रभेद : कमार द्वारा निर्मित विभिन्न चल सामग्रीकें **फर्नीचर** कहल जाइत छैक। फर्नीचरक हेतु कठोर ओ मोलायम दूनू प्रकारक काष्ठक उपयोग होइत अछि । गृहनिर्माण सामग्रीक हेतु कठोर लकड़ीकें उपयुक्त बूझल जाइत छैक।

लकड़ी जाहि गाछसँ प्राप्त होइत अछि ताही गाछक नामे ओहि लकड़ीकें सेहो जानल जाइत छैक। काष्ठकर्ममे अनेक गाछक लकड़ीक उपयोग होइत अछि आ एहन गाछ सभक नामसँ सम्बद्ध अनेक शब्द काष्ठकर्ममे प्रयुक्त होइत अछि।

वर्णरत्नाकरमे अनेक प्रकारक काष्ठक उल्लेख भेल अछि मुदा एहिमे अधिकांश शब्द संस्कृतसम अछि (**द्रष्टव्य, पृ. 37**)।

लकड़ीमे **सीसो/सीसमकें** राजा कहल जाइत छैक। ई लकड़ी कठोर होइत अछि। फर्नीचरक हेतु ई सर्वथा उपयुक्त होइत अछि मुदा भार पड़ने लहि जाइत अछि। तें ई **धरनि, कड़ी** आदिक हेतु उपयोगी नहि होइत अछि।

सीसोक दू गोट मुख्य प्रभेद अछि (क) **दूधिया** ओ (ख) **तेलिया**

ललौन-पिरछौन रंगक सारिलवला सीसो दुधिया कहल जाइत अछि ओ कारी रंगक सारिलवला सीसो तेलिया। तेलिया सीसो बेसी दृढ़ होइत अछि। सीसोक वन **सिसबाड़ि/सिसवनी/सिसवन्नी/सिसौना/सिसौनी** कहल जाइत अछि। सीसोक सीरसँ उत्पन्न गाछकें **बऽह** कहल जाइत छैक।

आमक लकड़ीकें **अमठा** कहल जाइत छैक। आमक छोट डठ्ठी **अमाठी** होइत अछि। आमक लकड़ी वातावरणसँ अत्यधिक प्रभावित होइछ, तें साधारणे काजमे एकर उपयोग होइत छैक।

गम्हारिक लकड़ी कोमल होइत छैक । एकर रेसा चिक्कन होइत छैक आ एहि पर पालिस नीक जकाँ धरैत छैक । पल्ला आदि बनयबाक हेतु ई नीक मानल जाइत अछि। धार्मिक संस्कारमे सेहो एहिसँ निर्मित वस्तु प्रशस्त मानल जाइत छैक।

चह दृढ़ लकड़ी थिक । एकर धरनि, कड़ी आदि नीक होइत अछि।

जामु/जामुन, गुलजामु/गुलजामुन, कठजामु/कठजामुनक लकड़ी ओना बेसी मजगूत नहि होइत अछि । मुदा एकर विशिष्ट गुण छैक जे ई पानियोमे रहला पर सड़ैत नहि छैक। एकर लकड़ी **जमुआ** कहल जाइत छैक । छोट फऽड़वला जामुनक गाछ **जमुनी/जमुनिआँ** होइत अछि। एकर काष्ठ बेसी दृढ़ होइत छैक।

जीया/जिमड़/जिम्मर(ड़)/जिमड़ा/जीहुल हल्लुक लकड़ी होइत अछि । ई अकाठ होइत अछि। एकर एकटा प्रभेद **बनजिम्मरि** होइत छैक।

नीमक लकड़ी मजगूत होइत अछि। एकर बनाओल बाकसमे घून नहि लगैत छैक आ अन्यो प्रकारक कीड़ाक उपद्रव नहि होइत छैक।

कटहर/कठहरक लकड़ी मजगूत होइत छैक । मुदा एकर रेसा कतबो रंदा कयने मेटाइत नहि छैक। एकर लकड़ी मुख्यतः नाव बनयबामे उपयोगी होइत अछि।

बेलक काठकें **बेलकठ** कहल जाइत छैक । एकर उपयोग कृषि यंत्र, **कोल्हू** ओ **नक्कासीक** काजमे होइत अछि।

तेतरि (सं. तिन्तड़ी)/**इमली** बहुत दृढ़ लकड़ी अछि । **मुंगरी, समाठ** आदि बनयबामे एकर उपयोग होइत छैक।

महु/मोहु/महुवा/महुआ सेहो मजगूत लकड़ी होइत अछि । गृह निर्माणक विविध सामग्रीमे एकर उपयोग होइत छैक ।

बबूर दृढ़ लकड़ी थिक। औजार सभक बेंट बनयबामे एकर उपयोग होइत छैक। प्राचीन साहित्यमे एकरा हेतु **बब्बुल** शब्द भेटैत अछि। एकर जंगल **बबुरबन्ना/बबुरबन्नी** कहल जाइत छैक।

तार घरक कोरो, तरख आदि बनयबामे उपयोगी अछि। माटि ओ पानिसँ बचने ई लोह जकाँ उपयोगी होइत छैक।

तून/तुइन/तूनिक लकड़ी तन्नुक होइत छैक । ई फर्नीचरक हेतु उपयोगी अछि । एहि पर पालिस नीक जकाँ होइत छैक । एकरासँ वाद्य यंत्रक **कठरा** बनाओल जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त अनेक प्रकारक काष्ठक व्यवहार होइत अछि, जेना **सिम्मर, जिलेबी, गुल्लड़ि / गुलड़ि, पीठा / पिट्ठा/पिठवा / पिट्ठो, सिरिष्ठ / सिरिसि / सिरीस / सिरीठ, बड़, पाकड़ि, लताम / सजियाम / अमरूद / अमधुर/ सदियाम, पितौड़िया, अशोक, खोक(ख)स, भालसरी, तिलइ, खैर, अमलतास, कदम, कदम्ब, डिठबरन/डिठबरना** आदि। ई सभ अकाठ वा कुकाठक श्रेणीमे अबैत अछि। पीपर, खजूर, **सोहिजन** आदि सर्वथा अकाठक होइत अछि।

दक्षिणी बिहारक मैथिली भाषी क्षेत्रमे अनेक प्रकारक जंगली लकड़ी पाओल जाइत अछि। नेपालसँ आयातित लकड़ीक उपयोग सेहो एहिठामक कमारलोकनि करैत छथि। वनसँ प्राप्त लकड़ी **जंगली/जङली/जङ्गली/जङलिआ/जङ्गलिआ/जंगलिया/बनैया** कहल जाइत छैक। भीषण दुर्भेद्य जंगल **अकायबोन** कहल जाइत अछि । डा० जयकान्तमिश्र एहि हेतु **अकाबोन** शब्दक व्यवहार कएने छथि (बृ. मै. शब्दकोष, पृ. १०)।

आयातित लकड़ीमे **साखु/सँखु/सखुआ/साल** सर्वाधिक उपयोगी होइत अछि। ई भारी आ अत्यन्त दृढ होइत अछि। एकर उपयोग मकान एवं विभिन्न सामानमे **भरसाहा** भागक रूपमे होइत छैक।

जङ्गली लकड़ीमे **सागवान/सागमान/सागौन, सालबल्ला, असना, करमा, बकाइन, इन्जर, चीर, देवदार/देवदारु, बरमाटिक, सेगु, चाँप, छत्तीसाल, विजयशाल, मुर्गा, कट्टुस, बीजा** आदि सेहो विभिन्न उपयोगमे आनल जाइत अछि। उच्चवर्गीयलोकनिक विविध सामग्री **धूप** ओ **चाननक** लकड़ीक सेहो बनैत छनि।

महोगनी/महोमनी जङली लकड़ीमे फर्नीचरक हेतु सर्वोत्तम मानल जाइत अछि। एकर रेसा अत्यन्त चिक्कन होइत छैक, तेँ एकर फर्नीचर **छल-छल** करैत रहैत छैक।

गृह-निर्माणसँ सम्बन्धित लकड़ीकेँ आब **टिम्बर** कहल जाइत छैक।

काठक अतिरिक्त कमारक आधार सामग्री मध्य बाँसक सेहो मुख्य स्थान छैक। कमार बाँससँ काँटी जकाँ वस्तु बनबैत अछि । एकरा **गुज्जा/गुजिया/गुझिया/गुज्झा/गुज्झा** कहल जाइत छैक । बाँससँ बेँट, **सीढ़ी/सिढ़ही, जाफरी, फड़की, फट्टक, कोढ़ो, पाढ़ि, झाँझ/झाँझन, चाली/खरचाल, ऊभी/उब्भी** आदि विविध सामग्री सभ बनाओल जाइत अछि।

धातुक वस्तु : काष्ठकर्ममे किछु एहन धातु निर्मित वस्तुक उपयोग होइत अछि जकर सहायतासँ लकड़ीक एक भागकेँ दोसर भागसँ संलग्न कयल जाइत छैक। एहि धातुक वस्तु सभकेँ संयोजक कहल जा सकैत अछि।

संयोजक धातुक वस्तुमे लोहाक **कील/काँटी/खील/खिल्ला** प्रमुख अछि। पैघ काँटीकेँ **काँटा** कहल जाइत छैक । पातर ओ छोट आकृतिक काँटी **तारकाँटी** कहल जाइत अछि । तारकाँटी आकृतिक अनुसार विभिन्न नामसँ अभिहित होइत अछि जेना– **जलइ काँटी, कोकइ काँटी**, आदि। जैनकेँ सटयबाक हेतु दुनू कोरक बीच प्रयुक्त अदृश्य काँटी **गरभकील/गरभकिल्ला/गरभखील/गरभखिल्ला** कहल जाइत छैक।

काँटीक उपरका भागकेँ **माथ/माथी** ओ निचला भागकेँ **नोंक/ नोंकी/ नोंख/नोंखी** कहल जाइत छैक । लोहक कने पैघ काँटीकेँ **बलेसरी/बालेसरी** कहल जाइत छैक। चौपहलकेँ **चौकोर काँटी** कहल जाइत छैक। चौपहल ओ विशेष नम्हर काँटी **परेग/परयाग** कहल जाइत अछि । दुनू कात मोड़ल काँटी **जोंक/जोंकी/जोंकाँ** कहल जाइत अछि । गोले आकृतिक नमहर माथवला काँटीकेँ **गुलमेंक/गुलमेंख** कहल जाइत छैक ।

धातुक संयोजक वस्तुमे **पेंच** सेहो अबैत अछि। ई काँटीए जकाँ होइत अछि। मुदा एकर माथ पर बीचमे एकटा खाधि रहैत छैक । निचला भागमे चूड़ीक आकारक **गूना/गूनट** बनल रहैत छैक। एहिसँ ई लकड़ीकेँ कसि कऽ पकड़ने रहैत छैक।

नमहर संयोजनक हेतु **नट-बोल्टक** (Nut-Bolt) व्यवहार सेहो होइत अछि । लकड़ी पर नट कसलासँ चाँछ नहि पड़ैक, तेँ नट ओ लकड़ीक मध्य एकटा लोहक गोल टुकड़ा राखि देल जाइत छैक। एकरा **वाशर** (Washer) कहल जाइत छैक। नटकेँ **ढिबरी** सेहो कहल जाइत छैक।

जखन काष्ठनिर्मित दूटा वस्तुकेँ परस्पर एहि तरहेँ सम्बद्ध करबाक रहैत छैक जे एकटा वस्तु अपन स्थानसँ एम्हर-ओम्हर घूमि सकय, तँ **कब्जा/कबजा** नामक लौह संयोजकक व्यवहार होइत छैक ।

चौकठि ओ केवाड़केँ परस्पर सम्बद्ध करबाक विशेष प्रकारक लौह संयोजकमे एकटा केवाड़मे ठोकल रहैत छैक। ई दु तीन आङुर चाकर रहैत छैक आ एकरा छोर पर वलयाकार मोड़ल रहैत छैक । एहि संयोजककेँ **हथकल/हँसकल** कहल जाइत छैक। संयोजकक जे भाग चौकठिमे ठोकल रहैछ ओहिमे लोहाक एकटा छड़क अग्रभाग करीब दु आङुर ठाढ़ मोड़ल रहैत छैक। एहि संयोजक अवयवकेँ **आँकुस/अङ्कुस/अंङ्कुसा/अङ्कुसा/ डोमनी/हुक** (Hook) कहल जाइत छैक । छोट आँकुसकेँ **आँकुसी** कहल जाइत छैक।

विशेष प्रकारक कब्जा जकरा द्वारा केबाड़ छोड़ि देला पर स्वतः बन्द भऽ जाइत छैक, से **फेंककब्जा** कहल जाइत अछि।

दूटा केवाड़केँ परस्पर सम्बद्ध करबाक हेतु आँकुसक विशेष प्रकारकेँ **अंकुर/अँकुड़ा** कहल जाइत छैक।

देवाल ओ चौकठिकेँ परस्पर सम्बद्ध करबाक हेतु **कलम्पू** (Clamp) नामक लौह संयोजकक व्यवहार होइत छैक।

बकसा, आलमारी ओ केबाड़ बन्द करबाक हेतु एवं ओहिमे ताला लगयबाक हेतु **इमलियाक** व्यवहार होइत अछि । मिथिला भाषा कोषमे एकरा हेतु

इजमलिया/इलमलिया शब्द कहल गेल अछि। इमलियाक दोसर भागमे ताला पैसाओल जाइत छैक। एकरा **कुण्डा/ कोढ़ा/कोँढ़ा/कोइहा** कहल जाइत छैक ।

केवाड़ भीतरसँ बन्द करबाक हेतु लोहक **छिटकी/छिटकिली/छिटकिल्ली/ छिटकिनी/छिटकनी/सिटकनीक/सिटकनी** व्यवहृत होइत अछि । बाहरसँ बन्द करबाक हेतु **जञ्जीर/ जिजिर/जिञ्जिर/जिंजिर/जंजीर/जिञ्जिरक** उपयोग होइत अछि । ई लोहक शृंखला थिक । जञ्जीर जाहि लौहशंकुमे लगाओल जाइत छैक ओकरा **सुरसा** कहल जाइछ । आइकाल्हि केवाड़क मध्य भागमे अनेक प्रकारक हैंडिल (Handle) सम जञ्जीरक बदलामे प्रयुक्त होइत छैक । ई **पुलहैंडिल** (Pull Handle)/**हैंडिल** कहल जाइत छैक ।

केवाड़ पकड़िकऽ खिचबाक हेतु **बलया/बाला/बाली/बलिया/ मठिया/माठाक** उपयोग होइत छैक। एहिमे एकटा वृत्ताकार वलय रहैत छैक । अर्द्धवृत्ताकार बलियाकेँ **हत्था/हैंडिल** कहल जाइत छैक। समाठमे लोहक वलय लगाओल जाइत अछि। ई **साम/सामी** कहल जाइत अछि। धातुक वस्तु मुख्यत: **लोह, पित्तर** ओ **अल्मुनियम/अलमुनिआ/हड़मुनिआक** होइत अछि ।

काष्ठकर्मने आवस्यकतानुसार अन्य अनेक वस्तुक सेहो उपयोग होइत अछि। **मीटकेस** ओ बालु चालऽवला चालनिक हेतु लोहक **जालीक** आवश्यकता होइत छैक। आलमारी आदिमे **सीसा** लगाओल जाइत छैक। चलानी मालमे **प्लाइवुड, हार्डबोर्ड, सनमाइका, थ्रीपीस, एलिवेस्टर** (एस्बेस्टस) आदिक उपयोग होइत छैक ।

एकर अतिरिक्त गाड़ीमे **हाल, आओन**; टमटममे **बओन**, ट्रक आदिमे **पत्तर, कड़ी** आदिक सेहो उपयोग कयल जाइत छैक ।

मसाला : काष्ठनिर्मित वस्तुक निर्माणक पश्चात् ओकरा सुन्दर बनयबाक हेतु ओहिपर जाहि सामग्री सभक अवलेपन कयल जाइत छैक, तकरा काष्ठकर्ममे **मसाला/मसल्ला** कहल जाइत छैक। सुन्दर बनयबाक क्रियाकेँ **पालिस करब** आ ताहि हेतु तैयार वस्तुकेँ **पालिस** कहल जाइत छैक ।

पालिस करबाक हेतु **चपड़ा, स्पिरिट, रंग, महोगनी/महोमनी, किऔरी/पियौरी, चनरस, रंजन, रुन्नीमस्तक/रुन्नीमस्तकी, चकपाउडर** आदिक व्यवहार होइत अछि । एकरा सभकेँ **रोगन/रंगरोगन** कहल जाइत छैक ।

लकड़ीक फाट, खापि आदिकेँ भरब **पक्का पोटिङ्ग** कहल जाइत छैक। पोटिंगमे **पथलखड़ी, धूमन, मोम, गेरू, रामरस** आदि मसालाक प्रयोजन होइत छैक।

लकड़ीकेँ मजगूत करबाक हेतु ओहि पर तीसी तेलक लेप लगाकऽ सुखाओल जाइत छैक। प्राचीन कालमे जखन आधुनिक पालिसक व्यवस्था नहि छल, गेरूकेँ तीसी तेलमे मिला पालिस कयल जाइत छलैक । एकरा **अस्तर** कहल जाइत छैक ।

रंगबाक हेतु विभिन्न रंग ओ **पेंटक** व्यवहार कमारलोकनि करैत छथि । रंगबाक हेतु जे लत्ता व्यवहारमे आनल जाइत अछि से **पोतन/पोतना** कहल जाइत अछि। आइकाल्हि चलानी कुच्चीक सेहो व्यवहार होइत अछि । एकरा **बुरूस** कहल जाइत छैक। अपनेसँ तैयार रंग **देसी** आ कम्पनीक तैयार रंग **चलानी** कहबैत अछि ।

औजार सम्बन्धी शब्दावली : काष्ठकर्ममे मुख्य व्यापार थिक ओकरा विभिन्न विधिसँ काटब । तेँ काष्ठकर्मक औजारक दुइ श्रेणी मुख्य अछि । काटऽवला ओ सहायक । काठकेँ कटबाक क्रिया चारि प्रकारेँ होइत अछि–औजारक आघातसँ, रगड़िकऽ, घसिकऽ ओ औजार पर दोसर औजारसँ ठोकिकऽ। परन्तु काष्ठ-कर्ममे प्रयुक्त औजारकेँ **काष्ठ कर्म शिक्षण ग्रन्थ** (**काष्ठकला परिचय, एम.के.रब, किताब महल, पटना, पृ. 1**) मे एगारह वर्गमे विभक्त कयल गेल अछि–

1. खरखरकाटऽवला 2. रन्दाकरऽवला 3. छीलऽवला 4. खखोरऽवला 5. जाँच करबाक 6. चेन्ह लगयबाक, 7. छेदक 8. ठोकबाक ओ निकालबाक 9. कसिकऽ पकड़ऽवला 10. सफाइ करऽनला ओ 11. सहायक ।

1. खरखर काटऽवला औजार : एहि श्रेणी मध्य विभिन्न प्रकारक **आरी** अबैत अछि । एहि औजारक सहायतासँ लकड़ीकेँ खण्डमे काटल जाइत छैक। ई रगड़िकऽ काटऽवला औजार थिक ।

आरीमे लोहक एकटा चाकर **पत्तर** रहैत छैक । एकर एक भाग लकड़ीक एकटा टुकड़ीमे पैसल रहैत छैक। लकड़ीक एही टुकड़ीकेँ पकड़ि आरी चलाओल जाइत अछि । एकरा **हथेली** कहल जाइत छैक । लोहक पत्तर **पत्ती** कहल जाइत छैक। पत्तरक अग्रभाग आरीक **मुँह** कहल जाइत अछि । मुँह पर पत्तर करीब चारि **आङ्गुर** चाकर रहैत छैक । एकर चौड़ाइ हथेली दिस क्रमश: बढ़ल रहैत छैक। पत्तीक आधारमे खतल रहैत छैक। खतलाहा भाग आरीक **दाँत** (सं. दात्र) कहल जाइत छैक । दाँतवला भाग लकड़ी पर आगू-पाछू रगड़ने लकड़ी कटैत छैक । आरी द्वारा लकड़ीकेँ खण्ड करबाक क्रिया **चीरब** होइत अछि। नम्हर आरीकेँ **आरा** ओ छोट आरीकेँ **हाथआरी** कहल जाइत छैक ।

मोट लकड़ीकेँ टेनबाक हेतु विशेष प्रकारक आरीक व्यवहार होइत अछि। एकरा **छओकट्टी/पिंचाआरा** कहल जाइत छैक । छओकट्टीक दूनू कात दू गोट हथेली लागल रहैत छैक । एकरे पकड़ि दू गोटे ओकरा लकड़ी पर आगाँ-पाछाँ घिचैत अछि । एकर पत्तीक चौड़ाइ मध्यमे अधिकतम रहैत छैक आ हथेली दिश क्रमश: घटल रहैत छैक।

लकड़ीक गोलिआकेँ चिरबासँ पूर्व ओकर चारू फलककेँ समतल करबाक क्रिया **चौपहल करब/सीमा करब** होइत अछि। आरा द्वारा **सीमा कयल** लकड़ीकेँ नामानामी चिड़लासँ पातर ओ चाकर फलक पृथक् होइत छैक । बेस चाकर

काष्ठफलकके **तकथा/पटरा** कहल जाइत छैक । छोट ओ पातर तकथाकें **तकथी/पटरी** कहल जाइत छैक। दू तकथाक कोर मिलबाक क्रिया **पटरी बैसब** होइत अछि। पटरी बैसब उपलक्षणक अर्थ तें मेल होयब लेल जाइत अछि ।

तकथा चिरबाक हेतु नम्हर आरीक प्रयोग होइत छैक । एकरा **आरा/शाही आरा** कहल जाइत छैक । एकर पत्तीक चौड़ाइ तीन आँगुर रहैत छैक आ सम्पूर्ण भाग एके चौड़ाइक रहैत छैक । पत्ती लकड़ीक एकटा फ्रेमक मध्य स्थिर रहैत छैक । एहि फ्रेममे पत्तीक समानान्तर दूटा लकड़ीक खंडके **डंटा** कहल जाइत छैक । पत्तीक उदग्र लकड़ीक दूनू टुकड़ी **हथेली** कहल जाइत अछि। एकरा पकड़ि दुइ गोटे आराकें आगू-पाछू खिचैत ओ ठेलैत अछि । हथेलीक मध्य भागमे पत्तीकें स्थिर करबाक हेतु लकड़ीक पातर-पातर टुकड़ी ठोकल रहैत छैक । एकरा **पच्चर** कहल जाइत छैक।

आरा चलौनिहार मिस्त्रीलोकनि **आराकस/अरकसिया** कहल जाइत छथि ।

तकथा चिरबाक हेतु लकड़ीकें बाँस अथवा लकड़ीक खुट्टा पर ठाढ़ कयल जाइत छैक। ई खुट्टा **पेटिया/सोङर/सोंगर/सोङ्गर/ठोक** कहल जाइत अछि । गुण (x) चिन्हक लकड़ीक आधार **कैंच/चैनल** (Channel) कहल जाइत अछि ।

चिरबाक क्रममे जँ आरा **एकभगाह** भऽ जाइत छैक तँ तकथाक एक भाग पातर ओ दोसर भाग मोट भऽ जाइत छैक । पतरका भाग **छेनाह/छिनाह** कहल जाइत छैक।

विभिन्न प्रकारक आयातित आरी सभकें **चलानी आरी** कहल जाइत छैक। चलानी आरीक दाँत विशेष रूपें काटल रहैत छैक । एकरा आगू-पाछू दूनू दिस ठेलने ओ घिचने लकड़ी कटैत छैक, जखन कि **देशी आरी**कें खाली आगू दिस घिचले उत्तर लकड़ी कटैत छैक।

आरा द्वारा लकड़ी चिरला उत्तर लकड़ीक पातर-पातर बुकनी खसैत छैक। एकरा **कुन्नी/भुस्सी** कहल जाइत छैक । निश्चित आकृतिक लकड़ीक खंडसँ आरी द्वारा काटि कऽ जे छोट-छोट अतिरिक्त टुकड़ी हटा देल जाइत छैक, ओकरा **छेँट/छाँट/कुटका** कहल जाइत छैक । एहिमे लकड़ीक नियमित ओ अनियमित दूनू प्रकारक आकृति फेँटल रहैत छैक, तें एकरा **फेँट/फेँटी** सेहो कहल जाइत छैक।

चिरला उत्तर कुन्नी निकललाक बाद तकथाक जे मोटाइ रहैत छैक, ओकरा **तैयार/तैयारी** कहल जाइत छैक । कुन्नीक कारणें मोटाइमे भेल घट्टीकें **खर्चा** कहल जाइत छैक ।

आरा-मशीनक आराक दाँतकें टेढ़ करबाक हेतु लोहाक एकटा पत्तरक उपयोग होइत छैक। एकरा **बेयार** कहल जाइत छैक । दाँतकें टेढ़ करबाक क्रिया **बेयारब** होइत अछि । आरा बेयारल रहलासँ कुन्नी बेसी कटैत छैक।

निरन्तर घर्षणक कारणें आराक पत्ती क्षीण होइत जाइत छैक । एहि तरहें क्षीण होयबाक क्रिया **खिआयब** होइत अछि । खिआयल आराकें **खिऔटी** कहल जाइत छैक ।

2. रन्दा करऽवला औजार : लकड़ीक धरातलकें खखोरि समतल ओ चिक्कन करबाक औजार **रन्दा** (फा.रंदेह)/**रन्ना** कहल जाइत अछि ।

कार्यक अनुसार रन्दाकें तीन श्रेणीमे बाँटल जा सकैत अछि– (क) एहन रन्दा जकरा द्वारा लकड़ीक समतल भाग चिकनाओल जाइत अछि से प्रथम श्रेणी मध्य राखल जा सकैत अछि । एहिमे **बड़ा रन्दा** ओ **छोटा रन्दा**कें राखल जा सकैत छैक। बड़ा रन्दा दुइ गोट बढ़ही द्वारा चलाओल जाइत अछि । एकरा **पलेन/जक पलेन/दुकसी** सेहो कहल जाइत छैक । एकर शरीर लकड़ीक चौकोर ओ मोट टुकड़ाक रहैत अछि । एहि टुकड़ाकें **कुटका/कुन्दा** कहल जाइत छैक । कुटकाक मध्य भागमे छेद रहैत छैक, जाहिमे लोहक चाकर टुकड़ी देल रहैत छैक । ई टुकड़ी **फल्ली** कहल जाइत छैक । फल्लीक नीचावला भागक धार पिजाओल रहैत छैक । एकरा **फऽल** कहल जाइत छैक । फल्लीकें कुटकाक छेदमे स्थिर रखबाक हेतु लकड़ीक एकटा टुकड़ा ओकरा ऊपरसँ दबने रहैत छैक। लकड़ीक ई टुकड़ा **चापा** कहल जाइत छैक । चापा ओ फल्लीकें हिलबासँ बचयबाक हेतु अधिक स्थिर करबाक हेतु दूनूक मध्य लकड़ीक पातर-पातर टुकड़ी ठोकल रहैत छैक। एकरा सभकें **पचड़ी/पच्चर/पच्ची/खुट्टी** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **ठेकी/चेली** कहने छथि (बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ. 84)।

कुटकाकें पकड़बाक व्यवस्था **हथेली** कहल जाइत छैक । हथेलीक सामने दोसर दिस एकटा सोझ लकड़ीक टुकड़ा कुटका पर क्षैतिज ठोकल रहैत छैक । एकरा पकड़ि दोसर बढ़ही कुटका अपना दिस घिचैत छैक । लकड़ीक ई टुकड़ी **घिचानी** कहल जाइत छैक। बड़ा रन्दासँ लकड़ीक पैघ टुकड़ाकें चिकनाओल जाइत छैक। कुन्दाक आधार लकड़ीक सम्पर्कमे रहैत छैक आ काज कयलासँ घसाइत छैक। एकरा **तल्ला/तल्ली** कहल जाइत छैक ।

बड़ा रन्दाक छोट आकृतिकें **छोटा रन्दा** कहल जाइत छैक । एहिमे घिचानी नहि रहैत छैक आ ई एके गोट बढ़ही द्वारा लकड़ीक छोट टुकड़ीकें चिकनयबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि।

रन्दा चलौने लकड़ीक उपरका सतह छिलाइत छैक आ पातर-पातर छीलन निकलैत छैक। एकरा **छीलनि/छिल्ला/छिल्लन/छोला/छोलन/कुच्चा** कहल जाइत छैक।

रन्दा द्वारा लकड़ीक सतहकें चिक्कन करबाक क्रिया **शुद्ध करब/सोझ करब/साधब** कहल जाइत अछि ।

(ख) दोसर श्रेणीक रन्दासँ टेढ़, घूमल ओ गोल लकड़ीकेँ छीलि चिकनाओल जाइत अछि। कुर्सीक पछिला टेढ़का पौआ पर रन्दा करबाक हेतु विशेष प्रकारक रन्दाकेँ **स्कोप रन्दा/ब्रुश रन्दा** कहल जाइत छैक । चौरस समतल भाग **चप्पत/चप्पस** कहल जाइत छैक । केवाड़ आदिक कोरमे चप्पसकेँ गोल करबाक हेतु **पतामी/गोलक रन्दाक** व्यवहार होइत अछि । पातर लकड़ीक कोरकेँ समतल करबाक हेतु तीक्ष्ण फल्लीवला छोट सन रन्दाक व्यवहार होइत अछि । एकरा **दराजी रन्दा** कहल जाइत छैक । तीक्ष्ण धारवला फल्लीसँ युक्त रन्दाक विशेष प्रकार **साफी रन्दा** कहल जाइत अछि । ई लकड़ीक सतहकेँ बेस चिक्कन करबामे उपयोगी होइत अछि ।

(ग) तेसर श्रेणीक रन्दा व्यवहार **गड्हा/डिजाइन** आदि उखारबाक हेतु होइत छैक। तकथा आदिक कोरसँ निश्चित दूरी पर खाधि करबाक हेतु विशेष प्रकारक रन्दाक व्यवहार होइत अछि। एकरा **झरियाँव/झरीकस/पलाँव/पलाँऊ/झरना रन्दा** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **झारी के रन्दा** कहने छथि। केवाड़क कोर पर करीब एक-डेढ़ इंचक चाकर खाधि बनाओल जाइत छैक । ई एकटा पल्लामे बाहरसँ आ दोसरमे भीतरसँ बनाओल जाइत छैक । एकरा **पतामी/ पलस/पुताम/पताम/खाँच** कहल जाइत छैक । पतामी बनयबाक हेतु विशेष प्रकारक रन्दा **बुर्जखाब/गुर्जखाब/बुरुजखाब/ गुरुजखाब/गुरुजखाप/बुरुजखाप** कहल जाइत अछि । बुरुजखाब तीन प्रकारक होइत अछि–(क) **गोला बुरुजखाब (ख) चौरस बुरुजखाब** ओ **(ग) कानी बुरुजखाब ।**

गोला बुरुजखाबसँ गोल, चौरससँ चप्पत ओ कानी बुरुजखाबसँ दून् कात गँहीर ओ बीचमे उत्थर पलस बनैत छैक । गोला बुरुजखाबकेँ **कानीबीट** सेहो कहल जाइत छैक।

विशेष प्रकारक छोट बुरुजखाबकेँ **सूतीबीट** कहल जाइत छैक ।

3. छीलऽवला औजार : ओ औजार सभ जकर सहायतासँ लकड़ी काटल, छीलल ओ कतरल जाइत अछि, छीलऽवला अथवा कर्त्तक औजार कहल जाइत अछि। कर्त्तक औजारमे **बसिला** प्रमुख अछि । एकरा **बासुल/बसुला** सेहो कहल जाइत छैक। ई लोहक औजार थिक । एहिमे लकड़ी अथवा बाँसक **बेँट/डाँट** लागल रहैत छैक, जकरा पकड़ि एहि औजारक उपयोग कयल जाइत छैक । जाहि छेदमे बेँट पैसल रहैत छैक, ओकरा **पास** कहल जाइत छैक। बसुलाक तेज अग्रभाग **धार/फऽल/फल्ली** कहल जाइत छैक। पृष्ठभाग **पसाठ** कहल जाइत छैक । धार ओ पसाठक बिचला भाग **कंठा/कण्ठा/कंठी/कण्ठी** कहल जाइत छैक । धार ओ पसाठक बीचवला मोट भाग **धड़र** कहल जाइत अछि ।

बसिला द्वारा लकड़ीकेँ छीलिकऽ कार्य योग्य बनयबाक क्रिया **कमायब** होइत अछि। पसाठसँ ठोकबाक काज लेल जाइत अछि । काँटी आदिकेँ सोझ करबाक हेतु बसिलाकेँ ठेहाक रूपमे सेहो व्यवहार कयल जाइत अछि ।

बसिला बढ़ईक प्रमुख औजार थिक। कहबीयो अछि 'ई बुड़ि बढ़ही गाम कमयताह, जनिका ने बसिला ने रुखान'। बसिलासँ लकड़ी पर आघात करबाक क्रिया **छौ मारब** होइत अछि । एके स्थान पर बेर-बेर छौ मारबाक क्रिया **दकचब** होइत अछि । बसुला लकड़ीकेँ काटि अपने दिस खसबैत अछि। लोकोक्ति प्रसिद्ध अछि **बसुलबा धार अपने दिस**। स्वार्थी लोकनिक प्रयास तेँ **बसुलबाधार** कहल जाइत अछि ।

बसुलाक धारक सभसँ अगिला तीक्ष्ण, चमकैत ओ ढालू भागकेँ **पसाहनि** कहल जाइत छैक । तेज बसिला **खप-खप** कटैत अछि । शीघ्रताक हेतु **हबर-हबर/झप झप** शब्दक व्यवहार होइत अछि । स्थिरताक संग काजकेँ **नहु-नहु** कहल जाइत छैक।

धारक तीक्ष्णता समाप्त होयबाक क्रिया **मुरुछब/भोथरब/थोथरब** कहल जाइत अछि। मुरुछल धारवला बसिलाकेँ **भोथ/भोथर/भोथरा/थोथर** कहल जाइत छैक। तीक्ष्ण धारवला बसिलाकेँ **चोख** कहल जाइत छैक । अत्यन्त तीक्ष्ण धारवला प्रभेद **चोखगर/धरगर** होइत अछि ।

बसुला द्वारा लकड़ीक अनुपयुक्त भागकेँ छीलि कऽ पृथक् करबाक क्रिया **छेबब** होइत अछि। लकड़ीकेँ छेबि उपयुक्त बनयबाक क्रिया **गढ़ब** होइत अछि। काठ गढ़ला पर चिक्कन आ बात गढ़ला पर रुक्ख होइत छैक । गढ़ला उत्तर बनल आकृतिकेँ **गढ़नि/गढ़ाइ** कहल जाइत छैक।

उक्खरि, कठौत आदि बनयबाक हेतु विशेष गँहीर गढ़निक आवश्यकता होइत छैक। एहि हेतु विशेष प्रकारक टेढ़ बसुलाक उपयोग होइत छैक । एकरा **खरबसुली** कहल जाइत छैक।

काष्ठ-व्यवसायसँ सम्बद्ध एक वर्ग **लकड़िहारा** कहबैत अछि । ई जंगलसँ लकड़ी काटि ओकरा कार्यस्थल धरि पहुँचबैत अछि। गाछ कटबाक हेतु ओ मोट लकड़ीक खण्डकेँ चीरि जारन बनयबाक हेतु ई वर्ग लोहक एकटा भारी ओ सोझ औजारक उपयोग करैत अछि। एकरा **कुलहड़ि/कुड़हरि/कुल्हाड़ी** कहल जाइत छैक। कुलहड़िसँ काज करबा कारणेँ एहि वर्गकेँ **कुल्हड़बा** सेहो कहल जाइत छैक।

बढ़ईलोकनि कुलहड़िक उपयोग लकड़ीक कामिल भागकेँ असरासँ पृथक् करबाक हेतु करैत छथि । एकर क्रिया **पहटब** होइत अछि । पहटबाक हेतु लकड़ीक किछु भागकेँ कटबाक क्रिया **ढाहब** होइत अछि । मोट लकड़ीकेँ ढाहिकऽ पातर

करबाक क्रिया **पतरायब** होइत अछि। गोल लकड़ीकेँ पहटिकऽ चाकर करबाक क्रिया **चकरायब/चौरायब** होइत अछि।

कुलहड़बा गाछ कटबाक हेतु कुलहड़ि चलयबाक विशेष पद्धतिक उपयोग करैत अछि। एकरा **दोछब्बी/दुछब्बी** कटाइ कहल जाइत छैक । दुछब्बी कटाइमे दू विपरीत दिशासँ टेढ़ छौ मारिकऽ लकड़ी काटल जाइत छैक । एहन स्थितिमे लकड़ीमे कुलहड़िकेँ फसबाक डर नहि रहैत छैक। तेँ एकरा **गछकट** सेहो कहल जाइत छैक। टेढ़ छओकेँ **बेओरछ** कहल जाइत छैक।

गाछ कटबाक हेतु लकड़ी पर कुलहड़िक सोझ आघात कयने कुलहड़ि फँसबाक डर रहैत छैक । सीधा छओकेँ **ठाँइ** कहल जाइत छैक । सीधा छओ मारिकऽ लकड़ी कटबाक पद्धति **एकछब्बी/लोहकट** कहल जाइत छैक ।

कुलहड़ि द्वारा जारनक हेतु सेहो लकड़ी चीरल जाइत अछि । चीरल लकड़ीकेँ **चिरुआ/चिरान** कहल जाइत छैक । कुलहड़िक आघातसँ लकड़ीक भागक विदीर्ण होयबाक क्रियाकेँ **फटब/ओदरब** कहल जाइत छैक । लकड़ीक भागकेँ पृथक् करबाक क्रिया **फाड़ब/ओदारब** होइत अछि । चिरायल भाग **ओदार** कहल जाइत अछि ।

चीरल छोट-छोट टुकड़ीकेँ **चेला/चैला/चेरा/जारनि/जारन** कहल जाइत छैक। पैघ चेराकेँ **चेलखा/जरना** कहल जाइत छैक । मोट चेराकेँ **मोढ़ी** कहल जाइत छैक। मोट ओ पैघ चेरा **मोढ़** होइत अछि । छोट चेराकेँ **चेरी/चेली/चैली/चेलखी** कहल जाइत छैक । लकड़ी चिरला पर जे छोट-छोट टुकड़ी स्वत: कटि जाइत छैक, ओकरा **खुहड़ी/खुभरी** कहल जाइत छैक ।

गाछक डारि-पात कटबाक हेतु काष्ठ-व्यवसायीक जे वर्ग काज करैत अछि से **गछपंगा/गाछपंगा / गछपङ्गा** कहल जाइत अछि । गाछ पडबा ओ छकरबाक हेतु कुलहड़िएक आकृतिक छोट औजारक उपयोग होइत छैक । एकरा **टङ्गा/टाँगा/टाँगी/टेङरी/टेगारी/टेङारी** कहल जाइत छैक । झाँखी छकड़बाक हेतु खाँड़क आकारक औजार सर्वाधिक प्रयोग होइत अछि । ई सभ **कत्ता/काता, कत्ती, काती/ दाब/दाबि/दबिला/पघरिया** होइत अछि ।

छीलऽवाला औजारमे दोसर प्रमुख औजार **रुखानी/चौरसी** थिक । एहिसँ लकड़ीमे निश्चित गहराइ ओ चौड़ाइ धरि छेद कयल जाइत छैक ओ छेदकेँ शुद्ध कयल जाइत छैक । एहिमे लोहक एकटा दू आँगुर चाकर आ तीन सूत मोट फल्ली रहैत छैक। फल्लीक उपरका भाग लकड़ीक बेंटमे लागल रहैत छैक । बेंटसँ फल्लीकेँ कसने रहबाक हेतु बेंटक निचला भागमे लोहक चूड़ी पहिराओल रहैत छैक। फल्लीकेँ लकड़ी पर राखि बेंटपर चोट कयने फल्ली लकड़ीकेँ काटि ओहिमे पैसि जाइत छैक।

पैघ रुखानीकेँ **रुखान** कहल जाइत छैक। बेस गँहीर छेद बनयबाक हेतु रुखानीक पैघ ओ टेढ़ फल्लीवला प्रभेद **बाँक रुखानी** कहल जाइत अछि । पौआ इत्यादिमे चूल पहिरयबाक हेतु छेद करबाक लेल विशेष प्रकारक रुखानी **रम्बा** कहल जाइत अछि।

कम चाकर फल्लीवला रुखानीकेँ **कच्चक** कहल जाइत छैक। कच्चकक फल्ली बेस मोट रहैत छैक । एहिसँ लग-लग छओ मारि पहिने लकड़ीकेँ कचि देल जाइत छैक। पुन: उनटा छओ मारि कचल लकड़ी निकालि छेद बनाओल जाइत छैक।

चाकर फल्लीवला रुखानीकेँ **बटारी/बटाली/पटासी/बेंटसाम** कहल जाइत छैक । खरादक काजमे छोट-छोट रुखानीक व्यवहार होइत छैक। ई सभ **कच्चक रुखानी/खरादी रुखानी/खोला/ खोली/खोलिया/गोलक रुखानी/गोलख रुखानी** कहल जाइत अछि । खरादक रुखानी मुख्यत: चारि प्रकारक होइत अछि– (क) **खोलिया** (ख) **साफी** (ग) **कानी** ओ (घ) **चौरसी**। ई सभ छोट-छोट कच्चक होइत अछि, जाहिसँ मेहीसँ मेही खराद कयल जाइत छैक । खराद कयनिहार कमार **खरादी** कहल जाइत अछि ।

लोहक पत्तर आदिकेँ कटबाक हेतु **छेनी/छैनी/टाँकी** नामक लौह औजारक व्यवहार होइत छैक ।

4. खखोरऽवला औजार : खखोरबाक औजार मध्य **रेती** नामक औजारकेँ राखल जा सकैत छैक। एहि औजारक प्रयोग मुख्यत: बढ़ईक समस्त लौह औजारक फल्लीकेँ रगड़ि तीक्ष्ण करबाक हेतु होइत छैक। एहिसँ रगड़ि देने लकड़ीक खुरदुरह सतह सेहो समतल भऽ जाइत छैक। एहिमे लोहाक एकटा नाम खुरदुरह छड़ रहैत छैक । आकृतिक अनुसार रेती चारि प्रकारक होइत अछि– (क) **चपटा रेती** (ख) **अर्द्धवृत्ताकर रेती** (ग) **गोल रेती** (घ) **तिकोनी रेती**

आयताकार फलकवला रेती **चपटा रेती/चोरसा/चौरसा/चौरस रेती** कहल जाइत छैक। एकर दुनू पृष्ठ आयताकार होइत छैक। लकड़ीक समतल धरातलकेँ घसि कऽ चिक्कन करबाक हेतु एकर उपयोग होइत छैक।

अर्द्धवृत्ताकार रेतीक एक भाग गोल ओ दोसर भाग आयताकार होइत छैक। एकर उपयोग काठक रेशा झाड़बामे होइत छैक । एकरा **कठरेती** सेहो कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **निमगिरिद** कहने छथि (बि. पी. लाइफ, पृ. 85) ।

गोल रेतीक फल गोल होइत छैक। गोल छिद्रकेँ चिकनयबाक हेतु एकर उपयोग होइत छैक।

तिकोनी रेतीक फल त्रिभुजाकार होइत छैक । विभिन्न औजारक फल्लीक धार तेज करबाक हेतु एकर उपयोग होइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **कतरा/ कतरोही** कहने छथि (तत्रैव)।

पैच रेती **फाइल** कहल जाइत अछि । वर्गाकार फलकवाला रेती **चौपहल रेती** होइत अछि।

5. जाँच करबाक औजार :

एहि कोटिक यन्त्र सभक सहायतासँ लकड़ीक धरातल ओ कोणक जाँच कयल जाइत छैक।

धरातल समतल अछि वा नहि से जँचबाक हेतु विशेष प्रकारक चलानी औजार **स्पिरिट लेबलक** (Spirit Level) व्यवहार होइत अछि । एहिमे निर्देशक मध्यमे रहने ओकर आधारसँ सटल तलकेँ समतल बूझल जाइत छैक ।

कोण शुद्ध करबाक हेतु एकटा विशेष प्रकारक लौहयन्त्रक उपयोग होइत छैक । एकरा **गुनिञा बटाम** कहल जाइत छैक। एहिमे 90°क कोण बनबैत लोहक दूटा पत्तर रहैत छैक। 90°क कोण बनबैत आकृति **गुनिञा**मे ओ से नहि भेने आकृति **बदगुनिञा** कहल जाइत छैक ।

90°सँ अधिक अथवा कम कोनकेँ जँचबाक हेतु बटामक दोसर प्रकारक उपयोग होइत छैक। एकरा **चालबटाम/चलता बटाम/कोनिञा बटाम/टालबटाम** कहल जाइत छैक । इहो गुनिञे जकाँ रहैत छैक मुदा एकर दूनू पत्तर एकटा नट-बोल्ट पर कसल रहैत छैक, जाहिसँ आवश्यताक अनुरूप कोण पर मोड़ल जा सकैत छैक ।

6. चेन्ह लगयबाक औजार

ओ औजार सभ जकर सहायतासँ लकड़ी पर चेन्ह लगाओल जाइत छैक, एहि श्रेणी मध्य राखल जा सकैत अछि ।

लकड़ीक कोरसँ निश्चित दूरी पर कोरक समानान्तर रेखामे चेन्ह लगयबाक हेतु **खतकस/ हथकस/कोरसूत** नामक औजारक व्यवहार होइत छैक। एहिमे लकड़ीक एकटा टुकड़ाक मध्य भागमे दू आँगुर चाकर लकड़ीक उदग्र दंड लागल रहैत छैक, जकर छोर पर एकटा काँटी ठोकल रहैत छैक । उदग्र टुकड़ाकेँ नियत दूरी पर समंजित करबाक व्यवस्था रहैत छैक । पहिल टुकड़ाकेँ कोरमे सटा कोरक अनुरूप घुसकौने दोसर टुकड़ाक काँटी कोरक समानान्तर चेन्ह बना दैत छैक । एहि औजारसँ बनल चेन्ह **खत** कहल जाइत छैक आ चेन्ह बनयबाक क्रिया **खतब** होइछ। खतकसक अभावमे काठक कोनो टुकड़ीक दूनू छोर पर दूटा काँटी ठोकि कऽ ओहीसँ खतकसक काज लेल जाइत छैक । एकरा **बिट्ठा** कहल जाइत छैक ।

लकड़ीक लम्बाइ नपबाक हेतु एवं ओहि पर सोझ रेखा खिचबाक हेतु **दोफुटा/दोफुट्टा** नामक औजारक उपयोग होइत छैक । दोफुटा दू फुट लम्बाइक लकड़ीक पातर पटरी होइत अछि। एहिमे फुट ओ इंचक चेन्ह खतल रहैत छैक ।

आधुनिक कमारक चलानी दुफुट्टा इंच ओ सूतमे विभाजित रहैत छैक। कोनो-कोनो कमार तीन फुट लम्बाइवला लकड़ीक चलानी औजारक उपयोग करैत छथि। एकरा **गऽज** कहल जाइत छैक । गऽजमे सेहो फुट, इंच ओ सूतक विभाजन रहैत छैक।

लकड़ीक पैच ढेरीकेँ **चट्टा** कहल जाइत छैक। चट्टासँ आवश्यक लम्बाइक लकड़ी निकालबाक हेतु दण्डाकार पैमानाक व्यवहार होइत छैक । एकरा **निस्तर** कहल जाइत छैक ।

नापल लकड़ीकेँ नियत स्थानसँ कटबाक हेतु चेन्ह लगयबाक औजारकेँ **खिसनी** कहल जाइत छैक । खिसनीमे काठक गोल बेंटमे लोहक एकटा **टाकु** लागल रहैत छैक। खिसनीक बदला आइकालिह **पेन्सिल/कठपेन्सिल/कठपिलसिन** तथा **चक्कू**क व्यवहार सेहो देखल जाइत अछि। एहि औजार सभसँ लकड़ी पर बनल चेन्ह केँ **खीच** कहल जाइत छैक।

तकथा चिरबाक हेतु लकड़ीक सील पर चेन्ह करबाक हेतु **सूत/सूताक** व्यवहार होइत छैक। ई साधारण ताग होइत अछि जकरा कारी रंगसँ राङि देल जाइत छैक। लकड़ी पर एकरा तानि कऽ रखने ओहि पर रंगक दाग पड़ि जाइत छैक । दागे पर आराक फल्लीकेँ रखैत आरा चलाओल जाइत छैक जाहिसँ छेनाह चिरानक डर नहि रहैत छैक । सूतासँ उखड़ल चेन्हकेँ **दाग/दागी/दागपट्टी** कहल जाइत छैक।

गोल आकृतिक लकड़ी कटबाक हेतु **परकाल** नामक चेन्ह करबाक औजारक उपयोग होइत छैक । गाड़ी आदिक पहियाक हेतु लकड़ी कटबाक लेल परकालक पैच प्रभेदक उपयोग होइत छैक। एकरा **कंकड़ा** कहल जाइत छैक । कंकड़ाक दूनू बाहु लकड़ीएक होइत छैक। एकर भुजामे डोरी बान्हि बाहुकेँ आवश्यकतानुसार नाम कयल जा सकैत छैक ।

लकड़ीक मोटाइ नपबाक हेतु **कम्पास** नामक लोहक चलानी औजारक उपयोग होइत छैक ।

लकड़ीक लम्बाइ, चौड़ाइ ओ मोटाइ नापल जाइत अछि। लम्बाइकेँ **नमाइ/नमती**, चौड़ाइकेँ **चकराइ** आ मोटाइ अथवा गहराइकेँ **खड़इ/खड़ाइ/गहिड़ाइ** कहल जाइत छैक। गोल लकड़ीक परिधिकेँ **गोलाइ** कहल जाइत अछि ।

नपबाक परम्परा बड़ पुरान अछि । लम्बाइकेँ नपबाक हेतु **जौ, आङ्गुर, पोर, दुट्ठी, बीत, निमुट्ठ हाथ, हाथ, मर्द** आदि एकाइक व्यवहार होइत रहलैक अछि। दू हाथकेँ एक गज मानल जाइत छैक । आइकाल्हि विभिन्न प्रकारक यन्त्र उपलब्ध रहबाक कारणे एवं नापक प्रति सतर्कताक कारणेँ औजारेसँ नापी कयल जाइत छैक।

लम्बाइक आधुनिक एकाइ **फुट** होइत छैक । बारह इंचक एक फुट आ तीन फुटक एक **गज** होइत छैक । इंचक आठम हिस्सा **सूत/सूता** कहल जाइत छैक ।

अन्दाजी नापमे **बराबरि/बरोबरि/समतूल/सम** शब्दक सेहो व्यवहार होइत अछि। कोनो नापक समान नापक हेतु एकर प्रयोग होइत अछि । तहिना **पौआ, आध /आधा, पौन/पौना/पौने, दू तिहाइ, सवा/सवैया, डेढ़/डेओढ़ा/ डेवढ़िया, दून/दुना/दुगुना, अढ़ाइ/अढ़ैया** आदिक सेहो प्रयोग होइत अछि । पौआ कोनो नापक परिमाण नहि थिक मुदा कोनो लम्बाइ, चकराइ, गोलाइ, मोटाइ, गहराइक चारिम भागकेँ **पौआ/चौठाइ** कहल जाइत छैक । तहिना सवैया, डेओढ़ा/ डेवढ़िया, दुना, पौना, अढ़ैया आदिसँ सेहो आकृतिक सवागुन, डेढ़गुण, दुगुण, पौन भाग, अढ़ाइ गुणक बोध होइत अछि। **डेवढ़ियासँ** एकक बाद दोसरकेँ नमाइमे कने-कने घटल रहबाक क्रम सेहो बुझल जाइछ आ **डेओढ़बाढ़/डेढ़बाढ़** सँ एकटा छोट एकटा पैघ अथवा एकटा आगू एकटा पाछू बुझल जाइत छैक ।

आवृत्ति व्यक्त करबाक हेतु कमारोलोकनि अंकमे **गुन/बर** प्रत्ययक प्रयोग करैत छथि। **दोबर, तेबर, चौबर, पचबर, दोगुन/दुगुना, तेगुन/तीनगुण, चौगुन/चारिगुना, पचगुन/पचगुनासँ** कोनो नापक तद्नुसार आवृत्तिक बोध होइत अछि ।

एकमर्द/मर्द/भरिमर्दसँ साढ़े तीन हाथ नाम बूझल जाइत अछि। एहिना **डेढमर्द, दूमर्द, तीनमर्द** आदिक सेहो प्रयोग होइत अछि ।

भागक हेतु **हींस/हिस्सा** शब्दक व्यवहार होइत अछि ।

लकड़ी घनफलमे बिकाइत अछि । एकर एकाइ घनफुट छैक । एक फुट नाम, एक फुट चाकर ओ एक फुट मोट लकड़ी एक **घनफुट** बूझल जाइत अछि । एकरा **सी-एफ-टी** अथवा सोझे **फुट** सेहो कहल जाइत छैक ।

7. छेदक औजार : छेद करबाक औजारमे **बर्मा/बरमाँ/बरमा** प्रमुख अछि। कोषमे एकरा **बेरमा** कहल गेल अछि (मि. भा. कोष, पृ. 297)।

बेरमाकेँ पकड़बाक हेतु लकड़ीक एकटा हथेली रहैत अछि, जाहि पर दबाव दऽ ओकरा लकड़ीक सतह पर उदग्र ठाढ़ कयल जाइत छैक। एकरा **टोपी/पैला/ दबनी/दबौट/दाब** कहल जाइत छैक । हथेली बॉल-बेयरिंग द्वारा लकड़ीक एकटा दोसर टुकड़ासँ जुड़ल रहैत छैक । ई बर्माक मध्यभागक काज करैत अछि आ आकृतिमे गोल रहैत अछि । एकरा **कुल्फी/कुलफी/गुल्ली/गुलफी कहल** जाइत छैक । एकर निचला भागमे लोहक एकटा टाकुक आकृति **नटबाल्टू/नटबल्टू** द्वारा जुड़ल रहैत छैक । एकरा **फल्ली** कहल जाइत छैक । फल्लीक अग्रभाग नोंखगर ओ कनेक ऊपर जाकऽ चाकर रहैत छैक । शेष भाग ऊपर दिस क्रमश: मोट रहैत छैक। बर्माकेँ लकड़ीक सतह पर उदग्र राखि ओकरा आगू-पाछू नचयबाक व्यवस्था **दोआली/द्वाली/जुआली/दुआली /जोआली** कहल जाइत छैक। ई धनुषक आकृतिक होइत अछि आ एहिमे चाम अथवा सूतक डोरी लागल रहैत छैक। डोरीकेँ **जोती** कहल जाइत छैक । धनुषक शरीरक हेतु लकड़ीक दंड **कमानी** कहल जाइत अछि। ई दूटा लकड़ीक टुकड़ाकेँ परस्पर जोड़ि बनल रहैत अछि । दूनू टुकड़ामे क्रमश: **चूल** ओ **छेद** बनल रहैत छैक। छेद करबाक स्थान पर बर्माकेँ उदग्र ठाढ़ कऽ ओकर मध्य भागमे जोती फँसाय दोआलीकेँ आगू-पाछू कयल जाइत छैक आ हथेली पर दबाव देल जाइत छैक। लकड़ी पर फल्ली दबाबक संग नचैत ओकरा कटैत छेद करैत अछि ।

आइकाल्हि एकटा चलानी बर्माक सेहो व्यवहार देखल जाइत अछि । ई **कचला-बर्मा** कहल जाइत छैक। एहिमे फल्लीकेँ नचयबाक हेतु दोआलीक बदला लोहक चक्रकेँ घुमयबाक व्यवस्था रहैत छैक । ई अपेक्षाकृत सुकर होइत अछि ।

मोट छेद करबाक औजार **गिरमिट** (Gimlet)/ **आगर** (Auger) होइत अछि । एहिमे लोहाक एकटा चूड़ीदार छड़ रहैत छैक जकर मोटाइ क्रमश: ऊपर दिश बढ़ल रहैत छैक । अग्रभाग नोंखगर रहैत छैक आ ऊपरमे एकटा क्षैतिज दण्ड पेसल रहैत छैक । दंडकेँ **हथेली/बेंट** कहल जाइत छैक । यंत्रकेँ लकड़ी पर उदग्र राखि दबाबक संग नचौने लकड़ीमे छेद होइत जाइत छैक।

एकटा विशेष प्रकारक चलानी औजार एकहि संग गिरमिट, बर्मा ओ पेंचकसक काज करैत अछि। एकरा **बरदू** कहल जाइत छैक ।

गिरमिट चलौला उत्तर लकड़ीक जे कम चाकर छिल्लन निकलैत छैक ओकरा **गुण्डी** कहल जाइत छैक ।

8. ठोकबाक ओ निकालबाक औजार : ऊपरसँ आघात करबाक क्रिया **ठोकब** होइत अछि। काठक दू भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु पेंच, काँटी आदिकेँ ठोकबाक ओ सम्बद्ध काठकेँ पृथक् करबाक हेतु ओकरा निकालबाक आवश्यकता होइत छैक।

यद्यपि ठोकबाक काज कमार बेसीकाल बसुलाक पसाठेसँ कऽ लैत अछि, मुदा एहि हेतु प्रयुक्त विशिष्ट औजारकेँ **हथौड़ी** कहल जाइत छैक । ई लोहाक ठोस टुकड़ाक बनल रहैत अछि आ एकर मध्य भागमे पास बनल रहैत छैक, जाहिमे लकड़ीक बेंट लागल रहैत छैक । छोट हथौड़ी **मड़िया/मरिया/मड़ेआ/मर्तुल** कहल जाइत अछि । मध्यम आकृतिक हथौड़ी **मरतौल/हथौड़ा** कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन एकरा **मारतौल** कहने छथि (बि. पी. लाइफ, पृ. 83)।

हथौड़ीक दूनू पृष्ठ क्रमश: **मुँह** ओ **माथ** कहल जाइत अछि । किछु हथौड़ीमे दूनू पृष्ठ गोल रहैत छैक, जाहि दूनूसँ आघात कयल जाइत छैक आ दूनू मुँहेक काज करैत छैक। मुदा अधिकांश हथौड़ीमे मुँहवला भाग चाकर ओ माथवला भाग नोंखगर होइत छैक । मुँहवला भागसँ आघात **चौरस डांग** कहल जाइत छैक आ नोंखवला भागसँ आघात **बाइलसँ मारब** कहल जाइत छैक।

किछु हथौड़ीक माथवला भागमे गायक खुर जकाँ चीरल रहैत छैक । एहन हथौड़ी **लोलचीरा** हथौड़ी कहल जाइत अछि । एकर माथवला भाग **साँवलक** काज करैत छैक।

ठोकबाक क्रममे काँटी टेढ़ भऽ गेने अथवा मरम्मतिक काजमे काँटीकेँ उखारबाक प्रयोजन होइत छैक । छोट-छोट काँटीकेँ लकड़ीसँ पृथक् करबाक हेतु **जमूड़ा/जमौड़ा/जम्बूर** नामक औजारक सहायता लेल जाइत अछि। ग्रियर्सन एकरा **जल्हूड़ा** कहने छथि (तत्रैव, पृ. 404)। ई चाकर मुँहवला सड़सी थिक । एहिसँ काँटीक माथकेँ पकड़ि ओकरा बाहर करबाक क्रिया **उनारब/उड़ारब** होइत अछि।

पैघ काँटीकेँ लकड़ीसँ पृथक् करबाक हेतु **साँबल** नामक औजारक उपयोग होइत अछि। ई लोहक मोट दंड थिक जकर अग्रभाग चाकर ओ गाइक खुर जकाँ फाटल रहैत छैक। ओहीमे काँटीक माथकेँ फँसाय दबाब देने काँटी बाहर निकालि जाइत छैक।

काँटीकेँ काठक सतहसँ बेसी गँहीर धरि धँसयबाक हेतु **सुम्हा/टोपन/पंचू** नामक औजारक उपयोग होइत अछि । ई लोहक छोट छड़ थिक, जकर अग्रभाग पेन्सिलक नोख जकाँ पातर रहैत छैक । अग्रभागकेँ काँटीक माथ पर राखि ऊपरसँ आघात कयने काँटी तर धरि धँसि जाइत छैक ।

लोहक पत्तर आदिमे छेद करबाक हेतु कमार **ढिबरीक** उपयोग करैत अछि। ई साधारण नट थिक जे पत्तरक आधारमे राखि ऊपरसँ सुम्हा दऽ आघात कयने सुम्हा पत्तरमे छेद कऽ दैत छैक।

विभिन्न प्रकारक पेंचकेँ लकड़ीमे फसयबाक हेतु **पेंचकस** नामक औजारक उपयोग होइत अछि । एहिमे लोहक एकटा पातर छड़ लकड़ीक हथैलीमे ठोकल रहैत छैक । छड़क अग्रभाग चाकर कयल रहैत छैक । एकरा पेंचक माथक बिचला खाधिमे बैसाय नचौने पेंच ससरैत छैक।

पलङ, केबाड़ आदिमे नट-बोल्टक सेहो व्यवहार होइत अछि । नट-बोल्टकेँ कसबाक हेतु **सड़सी** नाम औजारक उपयोग होइत अछि । सड़सीक पकड़ बेसी मजगूत नहि होयबाक कारणेँ दाँतदार सड़सीक व्यवहार होइत अछि । एकरा **पिलास** कहल जाइत छैक। पिलाससँ बोल्टकेँ दाबब श्रमसाध्य होइत छैक, तेँ एकटा विशेष चलानी औजारक उपयोग होइत छैक। ई **सलाइरिंच** (Slide Rinch) कहल जाइत अछि।

9. कसिकऽ पकड़ऽवला औजार : लकड़ीकेँ विभिन्न विधिसँ कटबाक क्रममे ओकरा स्थिर रहबाक हेतु कसिकऽ पकड़ऽवला औजारक उपयोग होइत अछि ।

जाहि आधार पर राखि कमार लकड़ीक काज करैत अछि से **ठेहा/ठेय्या/परिकठ** कहल जाइत छैक । चाकर ठेहाक एक दिस लकड़ी ठोकि ओहिमे काजवला लकड़ी

सटा दोसर दिस ठेहामे फँसाय लकड़ीकेँ स्थिर करबाक व्यवस्था **सकिंजा/शिकंजा/शिकञ्जा** कहल जाइत अछि । आइकालिह लोहक एकटा चलानी औजार सेहो शिकंजाक रूपमे व्यवहृत होइत अछि।

चाकर आधारक एक भागमे लकड़ी ठोकि कामिल लकड़ीकेँ आगू ससरबासँ रोकबाक व्यवस्था **बेठनि/बैठ/बैठन** कहल जाइत अछि। बेठनि लागब उपलक्षणक अर्थ तेँ बाधा होयब होइत अछि ।

मोट मुदा कम नाम लकड़ीकेँ कसबाक हेतु एकटा चलानी औजारक व्यवहार होइत छैक। एकरा **बैस** (Vice) कहल जाइत छैक ।

10. सफाइ करऽवला औजार : लकड़ीक सामग्री तैयार भऽ गेलाक बाद ओकर सतहकेँ चिक्कन करबाक आवश्यकता होइत छैक ।

लकड़ीक सतहकेँ चिक्कन करबाक हेतु एकटा विशेष प्रकारक कागतक व्यवहार होइत अछि। ई **सरेस कागत** कहल जाइत अछि । एहिमे मोट कागत पर बालुक दाना साटल रहैत छैक। बालुक दानाक आधार पर ई दू प्रकारक होइत अछि। **छोट दाना** ओ **बड़ा दाना**। एकरा लकड़ीक सतह पर रगड़ि ओकर रेसा झाड़ल जाइत छैक।

11. सहायक औजार : काष्ठ-कर्ममे प्रयुक्त जाहि औजार सभकेँ उपर्युक्त वर्गीकरणक अन्तर्गत नहि राखल जा सकल अछि, से सहायक औजार कहल जा सकैत अछि ।

घर्षण द्वारा औजारकेँ तीक्ष्ण करबाक क्रिया **पिजायब** होइत अछि। काष्ठ कर्ममे लोहक विभिन्न औजारक फल्लीकेँ पिजयबाक हेतु **पथल/पत्थल/सिल** (सं. शिला)क उपयोग होइत छैक। फल्लीक तीक्ष्णता लोहाक पानि पर निर्भर रहैत छैक। जाहि फल पर पानि नहि चढ़ाओल रहैत छैक, से लकड़ी पर आघातसँ मुरुछि जाइत छैक। मुदा **पनिगर** लोह पत्थल पर रगड़ने चोख भऽ जाइत छैक । पत्थल पर रगड़बाक क्रिया **पथरायब** होइत अछि।

पत्थल दू प्रकारक होइत अछि– (क) **गोल** ओ (ख) **साफी**

गोल पत्थल सान चढ़ाबऽवला यंत्रमे रहैत अछि । ओकरा नचाय थोथरल धारवला फल्लीकेँ रगड़ि कऽ तेज कयल जाइत छैक । साफी पत्थल दू प्रकारक होइत अछि–(क) **चौरस** ओ (ख) **खर्रा**

चौरस पर सान अथवा पानि चढ़ाओल धारकेँ रगड़ल जाइत छैक । खर्रा पर फल्लीक अग्रभागमे ढालू परत बनाओल जाइत छैक । ढालू परत बनयबाक क्रिया **पलहासब** होइत छैक।

लकड़ीकेँ खोधि नक्कासी करबाक क्रिया **काम करब/फूल खोधब/खोधब/गढ़ब/खरादब/खराजब** कहल जाइत अछि । उत्पन्न फूल-पत्तीक काज **काम/गढ़नि/गढ़ाइ/खराज/खराद** कहल जाइत अछि।

खरादक काजमे **चरक** ओ **मुर्रा** नामक औजारक उपयोग होइत अछि । चरक लकड़ीक खुट्टा थिक । एकर मध्य भागमे लोहक कील रहैत छैक। मुर्रा सेहो लकड़ीक खुट्टा थिक, मुदा ई चरकसँ छोट होइत अछि । मुर्रामे सेहो लोहक कील लागल रहैत छैक। दूनू खुट्टाक कीलक बीच लकड़ीकेँ फँसाय खरादक काज कयल जाइत छैक । खराद विभिन्न प्रकारक रुखाणीसँ कयल जाइत अछि । रुखाणी चलयबाक स्थान पर एकटा लकड़ीक टुकड़ासँ खराद करउवला लकड़ीकेँ दाबल जाइत छैक । ई **परगाहिन/परघानि** कहल जाइत छैक। खरादक काजमे लकड़ीकेँ नचयबाक हेतु जाहि रस्सीक उपयोग होइत छैक से **बड़ा कमानी** कहल जाइत छैक। खुट्टी आदि छोट वस्तुमे खरादक हेतु एकटा विशेष प्रकारक यंत्रक व्यवहार होइत अछि। ई **बीड़ी** कहल जाइत अछि ।

भारी लकड़ीकेँ गुड़कयबाक हेतु व्यवहृत गोल लकड़ीकेँ **गुलिया/गोलिया** कहल जाइत छैक।

जाहि बक्सामे कमार अपन औजार सभ रखैत अछि से **कठरा/औजारबक्स** कहल जाइत छैक।

कमारक कार्यस्थलकेँ **कमरसारि/पसरा/कमरपसरा/करखाना/कारखाना/उपस्करालय** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **कमरसावर** (मैथिली क्रेस्टोमैथी, पृ. 143)/**बड़ही खाना** कहने छथि। कृषि कोष (पृ. 58) मे एकरा **कर्मशाल/कमरिशाल/कमरसारी** कहल गेल अछि।

उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली : काष्ठकर्म द्वारा अग्रिम उत्पादन ओ साक्षात् उपभोग दूनूक हेतु उत्पादन कयल जाइत अछि। अग्रिम उत्पादनक हेतु उत्पादन सामग्री मध्य कृषि, परिवहन ओ अन्य व्यवसाय सभसँ सम्बद्ध औजार सभ अबैत अछि ।

कृषि व्यवसाय : कृषि व्यवसायमे जमीन कोड़बाक हेतु अनेक प्रकारक यंत्रक प्रयोग होइत अछि । एहि यंत्र सभमे सर्वप्रमुख ओ पारम्परिक थिक हर (सं. हल) । हरक प्रमुख भाग सभ काठेक होइत अछि। अपन समस्त भाग सहित हरकेँ **हरखंडा/हरखउड़ा/हरखाड़ा** कहल जाइत छैक। नव हरकेँ **नओठा/नौठा/लेवठा/लवठा/ल्यौठा/लओठा/लेओठा/लौठा** कहल जाइत छैक। खिआयल ओ पुरान हरकेँ **खिनौरी/खियौटी/ठेंठा/ठेंठी/ठेंठही/ठेंठिया** कहल जाइत छैक।

परम्परागत हरसँ कनेक भिन्न, नवीन ओ विशेष प्रकारक हरक कोड़उवला भाग लोहक चाकर फलक रहैत छैक। एकरा **कल्टी** कहल जाइत छैक । कृषि कोष (पृ. 58) मे एकरा **बिहार प्लाउ** कहल गेल अछि।

खेतकेँ जोतबाक संगहि नालीमे बीआ बाओग करबाक हेतु हरक विशेष प्रभेदकेँ **टार/टाँड़ी** कहल जाइत छैक । एहिमे बीआ रखबाक काठ ओ बाँसक पोर सँ बनल पात्रकेँ **चोंगा/चोंङा/पइला/पएला/पैला/माली** कहल जाइत छैक ।

हरक मध्यवर्ती नाम काष्ठखंडकेँ **हरीस/हरसी** (सं. हलीषा) कहल जाइत छैक । हरीसक उपरका भागमे खाँच बनल रहैत छैक जाहिसँ हरकठ ओ पालोक बीचक दूरीकेँ घटाओल-बढ़ाओल जा सकैछ । एहि खाँचक समूहकेँ **खत/खत्ता/खत्ती/खात/खाता/खाढ़ी/खाड़ी/खड़हा/खेढ़ा** कहल जाइत छैक ।

हरीसक निचला भाग एकटा त्रिभुजाकार काष्ठखंडमे पैसल रहैत छैक । एकरा **हरकठ** कहल जाइत छैक । हरकठक जाहि भागमे छेद रहैत छैक ओकरा **माथ/माथा/माथी** कहल जाइत छैक। निचला भागमे कोन बनल रहैत छैक । एहि भागकेँ **नास/नासा** कहल जाइत छैक। माथमे बनल छेदकेँ **पास** कहल जाइत छैक।

हरकेँ जमीन पर उदग्र रखबाक हेतु एवं हरवाह द्वारा ओकरा पकड़बाक हेतु डंटाकेँ **लागन/लागनि/परिहथ/हरौठ** कहल जाइत छैक । लागनिक उपरका भागमे बनल गोल आकृतिकेँ **मूठ/मुठिया** कहल जाइत छैक । लागनिक निचला भागमे पास बनल रहैत छैक । ई हरीसमे हरकठक विपरीत दिशामे पैसल रहैत छैक।

हरकठ ओ हरीसकेँ स्थिर करबाक हेतु हरकठक पासमे ठोकल लकड़ीक टुकड़ीकेँ **पाट/पाटा/पाटो** कहल जाइत छैक । पाट ठोकलो उत्तर हरकठ ओ हरीस सुसम्बद्ध नहि भेला पर लकड़ीक अन्य अनेक पातर-पातर टुकड़ी सभकेँ ठोकल जाइत छैक। ई सभ **पच्चड़/पाचड़/पचड़ी /चेरी/चैरी/चेलखी/उपरपाटो** कहल जाइत छैक।

हरीस ओ लागनिकेँ सुसम्बद्ध करबाक हेतु लागनिक पासमे ठोकल पच्चर सभकेँ **तरैल/तरैला/बरनि/बराइन/बरेन/बरैन/बरैनि/बलाइन** कहल जाइत छैक।

माटि कोड़बाक हेतु हरकठक नासमे ठोकल लोहाक टुकड़ीकेँ **फार/ फारा / फारो / फउल /फाल/फाला** कहल जाइत छैक । कतोक क्षेत्रमे एकरा **लोहामा** (बि. पी. लाइफ पृ. 2) कहल जाइत छैक ।

फार ओ हरकठकेँ सम्बद्ध करउवला पातर ओ टेढ़ काँटीकेँ **करुआर/करुआरी/गाँसी/जोंकी/चोभी** कहल जाइत छैक ।

बड़द द्वारा हरकेँ घिचबाक हेतु ओकर कान्ह पर देल काष्ठखंडकेँ **पालऽ/पालो** कहल जाइत छैक । ई हरीसक खात लग बान्हल रहैत छैक । पालोक दूनू कातक चाकर भाग जे बड़दक कान्ह पर पलटल रहैत अछि, से **पात/पत्ता/पाता/पंखी** कहल जाइत छैक। एकर मध्य भागक उगल आकृतिकेँ **महादेओ/महादेव/महदेवा/महादेया/मँझबार** कहल जाइत छैक ।

पालोक पाताक अग्रभागक कम चाकर भागकेँ **खाढ़ी/खात** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **नकटी/सिमल** (तत्रैव, पृ. 4) सेहो कहल जाइत अछि।

पालोक दूटू कातमे छेद रहैत छैक । एहि छेदमे बाँस अथवा लकड़ीक करीब एक बीत नाम टुकड़ी पैसल रहैत छैक । ई बड़दकेँ पालोसँ बाहर नहि निकलऽ देबऽमे सहायक होइत छैक । एकरा **खुटरी/कनइल/कनइली/कनकिल्ली** कहल जाइत छैक।

गँहीर जोताइक हेतु पालोकेँ सभसँ उपरका खातमे बान्हल जाइत छैक। एहि स्थितिमे हरकेँ **तरक/तरख/लगार** कहल जाइत छैक । उत्थर जोताइक हेतु पालोकेँ सबसँ निचला खातमे बान्हल जाइत छैक । एहि स्थितिमे हरकेँ **सेप/सेब** कहल जाइत छैक।

बढ़ही द्वारा हरक समस्त भाग बनाकऽ सम्बद्ध करबाक क्रिया **हर बान्हब** होइत अछि।

खेतकेँ जोतलाक बाद ओकरा समतल करबाक हेतु लकड़ीक एकटा भारी दंडकेँ सतह पर गुड़काओल जाइत छैक । एहि दंडकेँ **चौकी/चौंकी/हेंगा/हेङा/हेङ्गा** कहल जाइत छैक। छोट चौकीकेँ **हेंगी/हेङी/हेङ्गी** कहल जाइत छैक। एकर उपरका भाग समतल रहैत छैक आ निचला भागमे नाली जकाँ खोधल रहैत छैक। एहि खोधल गँहीर भागकेँ **खाधि/खद्धा/खड्हा/ घघरी/घाइ** कहल जाइत छैक। हेङामे एकेटा काष्ठखंड होयबाक कारणेँ एकरा **एकठा** सेहो कहल जाइत छैक।

एक जोड़ बड़दसँ खीचल जायवला चौकीकेँ **एकहरा (ड़ा)/एकगोर (ड़) बा/दुगोरी** आ दू जोड़ बड़दसँ खीचल जायवला चौकीकेँ **दुगोर(ड़)बा/दुगोरा/ चौगोरा(ड़ा)/चरगोरी (ड़ी)** कहल जाइत छैक। एकगोरबाकेँ **दुबरदा** आ दुगोरबाकेँ **चरिगोरबा/चौबरदा** सेहो कहल जाइत छैक।

वर्षा अथवा सिचाइक पश्चात् रौद लगला पर खेतक माटि कड़ा भऽ जाइत छैक। माटिक पपड़ीकेँ तोड़बाक हेतु लोहाक अनेक कीलसँ युक्त पालोकेँ खेतक सतह पर चलाओल जाइत छैक। एहि उपकरणकेँ **कटही हर/कठही हर/खखोरना/ खखोरनी/खोखरना/खोखरनी** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **कण्टा** कहने छथि (तत्रैव, पृ. 8)।

खेतक ढेला फोड़बाक हेतु लकड़ीक पैघ हथौड़ीकेँ **ढेलफोड़ा** कहल जाइत छैक। पानि पटयबाक हेतु नाओक सदृश एकटा पैघ उपकरणक व्यवहार होइत अछि, जकर एकटा माढ़ो खुलल रहैत छैक । एकरा **करीङ/करीन** कहल जाइत छैक। एकर निचला भाग **पेन/पैनि** कहल जाइत छैक।

एहि समस्त उपकरणक अतिरिक्त काष्ठकर्म द्वारा कृषि व्यवसायमे प्रयुक्त **हाँसू, खुरपी, कोदारि** आदि उपकरणक बेंट सेहो बनाओल जाइत रहल अछि।

परिवहन व्यवसाय : काष्ठकर्म द्वारा परिवहन-व्यवसायक विभिन्न साधनक निर्माण कयल जाइत अछि । एहि साधन सभकेँ दू वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत अछि-(क) स्थल परिवहन साधन ओ (ख) जल परिवहन साधन।

(क) स्थल परिवहन साधन : स्थल परिवहन साधनकेँ सामान्यत: सवारी कहल जाइत छैक । एहि मध्य विभिन्न प्रकारक गाड़ी सभ अबैत अछि । गति उत्पन्न करबाक साधनक आधार पर एकर तीन प्रभेद भेटैत अछि- (1) जन्तु चालित (2) मानव चालित (3) मशीन चालित

जन्तु चालित स्थल परिवहन : बड़द, भैंसा, घोड़ा आदि जन्तुसँ खीचल जायवला स्थल परिवहन साधन सभक अधिकांश भाग काठ ओ बाँसक बनल रहैत छैक । ई समस्त भाग काष्ठकर्महिसँ उत्पादित होइत अछि। एहन स्थल परिवहन साधनक अन्तर्गत कठही गाड़ी, टायर गाड़ी ओ घोड़ा गाड़ी अबैत अछि।

कठही गाड़ी : बड़द, भैंसा आदि जन्तुसँ खीचल जायवला गाड़ीकेँ **कटही/कठही गाड़ी** कहल जाइत छैक । एकरा **गऽड़ी/गाड़ा/गाड़ी/बैलगड़ी/बैलगाड़ी** सेहो कहल जाइछ । गियर्सन पैघ गाड़ीकेँ **छकड़ा/चघूसी** गाड़ी ओ छोट गाड़ीकेँ **सग्गड़/सागड़** कहने छथि (बि. पी. लाइफ, पृ. 27-28)। लोककेँ उघऽवला कठही गाड़ीक विशेष प्रभेदकेँ **मझोली** कहल जाइत छैक।

जाहि चक्र पर ई गाड़ी घुमैत अछि तकरा **चक्का/पहिया** कहल जाइत छैक। चक्काक परित: वृत्तक चापखण्ड सदृश लकड़ीक चाकर टुकड़ी सभ जे परस्पर जुड़ि कऽ वृत्ताकार चक्रक निर्माण करैत अछि, से **पुट्ठी** कहल जाइत अछि । एकर संख्या छओ गोट होइत छैक । प्रत्येक पुट्ठीमे एक दिस **छेद/भूर** बनल रहैत छैक आ दोसर दिस थोड़ेक पतरायल भाग रहैत छैक । दोसर दिसुक भाग पूर्ववर्ती पुट्ठीक छेदमे पैसल रहैत छैक । एहि भागकेँ **चूड़/चूल/चोन्ही** कहल जाइत छैक । छओ पुट्ठीकेँ परस्पर सम्बद्ध कयलासँ जे वृत्ताकार वलय बनैत छैक, ओकरा **मङर/मङ्गर/मँगरा/मँगर/मेघरा** कहल जाइत छैक। मङर पूर्णत: वृत्ताकार नहि रहने **टलहा/टलाह/टलुआ/टाल** कहल जाइत अछि ।

पहियाक मध्य भागक ढोल सन बेलनाकार भागकेँ **नाव/नाओ/नाओह/ नाह/नह** कहल जाइत छैक । नाओ ओ पुट्ठीक मध्य जे छओ जोड़ काष्ठदंड सम्बद्ध रहैत छैक, ओकरा **डड़िआ/डँड़िआ** कहल जाइत छैक। डँड़िआक एहि छओ जोड़मे दू जोड़ सबसँ मोट ओ मजगूत होइत अछि आ प्रत्येक जोड़ सम्मुख कऽ लगाओल जाइत छैक। एहि जोड़केँ **आरा** कहल जाइत छैक । मध्यम मोटाइवला डड़िआक दू

जोड़कें **बेलि/बेली/नीमधूरी/ नेबारा/निमारा** कहल जाइत छैक (तत्रैव, पृ. 29)। सबसँ पातर ओ कमजोर डड़िआक दू जोड़कें **गज** कहल जाइत छैक।

डड़िआकें जाम करबाक हेतु पुट्ठीक वृत्तक भीतरी भागक छेदमे ठोकल लकड़ीक पातर-पातर टुकड़ी सभकें **पच्चड़/पाचड़/पच्ची/पचड़ी** कहल कहल जाइत छैक ।

नाओक बाहरी भागमे मजगूतीक हेतु दूनू कातमे लोहक पत्तर ठोकल रहैत छैक। एकरा **बन/बन्द/बओन/बाओन/बान** कहल जाइत छैक । भीतरी भागक बेलनाकार छेदमे एकटा लोहाक बेलनाकार नली पैसल रहैत छैक । एकरा **मोहरी/मोहनरी** कहल जाइत छैक। मोहरीक ऊपर चदराक एकटा मोट बेलन रहैत छैक । एकरा **आओन/औन/आउन/आवन** कहल जाइत छैक।

पुट्ठीक बाहरी भाग पर लोहाक एकटा वृत्ताकार वलय लागल रहैत छैक। एकरा **हाल** कहल जाइत छैक । ई पहियाकें जमीनक साक्षात् घर्षणसँ बचबैत छैक। पहियाक संख्या दुइ होइत छैक। दूनू पहियाक आओनक छेद एकटा लोहाक पैघ मोट ओ ठोस बेलनाकार छड़क दूनू कात लागल रहैत छैक । एहि छड़कें **धूरा/धूरी** (सं. धुर) कहल जाइत छैक। धूराक किछु भाग नाओक बाहर रहैत छैक । एहि भागमे एकटा छेद रहैत छैक। पहियाकें धूरासँ बाहर भऽ निकलबासँ रोकबाक हेतु एहि छेदमे एकटा लोहाक छड़ घुसाओल रहैत छैक । एकरा **धुरकिल्ली/रनकिल्ली** कहल जाइत छैक । धुरकिल्ली ओ नाओक बीच काष्ठक एकटा चौखूट टुकड़ा लागल रहैत छैक। एकरा **खरजा/खरेज** कहल जाइत छैक। खरजा ओ नाओक बीच **कसमीरा सन/सोन** ओ तेल घर्षणसँ बचाओक हेतु देल जाइत छैक । एकरा **खानन/खनहन/चेनी/चेन्दी** कहल जाइत छैक। सन ओ तेल देबाक व्यापार **सोनहन्नी** कहल जाइत अछि।

कठही गाड़ीक सम्पूर्ण शरीर धूरा पर अवलम्बित रहैत छैक । धूरा पर अवलम्बनक हेतु गुदरी, सन आदिक ऊपर एकटा उनटा पोलखाह लकड़ीक टुकड़ा सम्पूर्ण धूराक लम्बाइक ऊपर लागल रहैत छैक । एकरा **कठधूरा/कठधूरी/धुरकट/धुरकठ/धुरकट्ठा/धुरकठा** कहल जाइत छैक ।

कठधूरा पर गाड़ीक शरीरक आधार रूप लकड़ीक दूटा पैघ ओ मोट खंड राखल रहैत छैक। एकरा दूनूकें **तितलिया/तेतलिया** कहल जाइत छैक। तेतलिया पर देल नाम बाँस अथवा लकड़ीकें **फर (ड़)/फरि(ड़ि)/फर/फैर (ड़)** कहल जाइत छैक। दूनू फरि गाड़ीक अग्रभागमे जा कऽ सटि जाइत छैक । एहि स्थानकें **मुहरा/मोहरा/सगून** कहल जाइत छैक।

पहियाक आगाँ ओ पाछाँ दूनू फरिसँ दूटा काष्ठखंड सम्बद्ध रहैत छैक । एकरा **टिकानी/टेकानी** कहल जाइत छैक । फड़ि आ तेतलियासँ होइत एकटा लोहाक छड़

अथवा लकड़ीक दंड धुरकट्ठामे ठोकल रहैत छैक । एकरा **गजारा (ड़ा)/धुरकिल्ला** कहल जाइत छैक ।

टेकानीक दूनू कात लकड़ीक छिद्रयुक्त उदग्र दंड सभ ठोकल रहैत छैक । एकरा सभकें **खूटा/खूँटा/खुट्टा/खुटरा/खुटरी** कहल जाइत छैक । एकरा सभक छिद्रमे बाँस पैसल रहैत छैक। ई बाँस सभ गाड़ीक घेराबाक काज करैत छैक । ई सभ **बल्ला** कहल जाइत छैक। बल्लाक पछिला छोरकें **एड्डा** कहल जाइत छैक ।

फड़िक उपरका भाग काठक तकथा अथवा बाँसक फट्ठीसँ छारल रहैत छैक। एहि छारल भागक अग्रभागमे बहलमानक बैसबाक जगहकें **पीढ़ा/पिढ़िया/सीट** कहल जाइत छैक ।

मुहरा पर बान्हल लकड़ीक गोल दंडकें **जूआ/जुआठ** कहल जाइत छैक। एहिमे पालो जकाँ कनैल लागल रहैत छैक । एकरे दूनू कात बड़द जोतल जाइत अछि।

गाड़ीकें बड़दक बिना ठाढ़ करबाक हेतु मोहरा पर लगयबाक हेतु दूइ गोट वंशदंडसँ बनल कैंचकें **सिपहा/सिपाहा (फा. सेहपाव)/सिरपाहि** कहल जाइत अछि।

गाड़ीमे आगूमे बेसी बोझ रहैत छैक तँ ओकरा **चप** आ पाछू दिस अधिक बोझ रहैत छैक तँ ओकरा **उलार(ड़)** कहल जाइत छैक ।

टायरगाड़ी : ई पारम्परिक कठही गाड़ीसँ भिन्न आधुनिक गाड़ी थिक । एकर पहियाक पुट्ठीवला भाग रबरक ओ बिचला भाग लोहक रहैत छैक । धूरा ओ चक्का बॉल-बेरिंग पर सम्बद्ध रहैत छैक। कमार एहि गाड़ीक बडी अर्थात शरीरक निर्माण करैत अछि। बडीक आधारक नामानामी लकड़ीकें **तलिया** आ चौड़ाचौड़ी लकड़ीकें **पोस्तमान** कहल जाइत छैक । पोस्तमान सभमे अनेक खुट्टा ठोकल रहैत छैक। आधार ओ दूनू कातक भाग तकथा द्वारा पाटल रहैत छैक। बडीक मध्य भागसँ लकड़ीक एकटा मोट खंड निकलल रहैत छैक। ई फड़िक काज करैत छैक। एकरा **बम** कहल जाइत छैक । बमक अग्रभागमे जुआ कठहीए गाड़ी जकाँ रहैत छैक ।

ओहार लागल टायरगाड़ीकें **सम्पनी** कहल जाइत छैक। ओहार काठ अथवा बाँसक बत्तासँ बनाओल रहैत छैक। एकरा **टप्पर** कहल जाइत छैक ।

एकटा बड़दसँ खीचल जायवला टायरगाड़ीकें **एकबरदा** कहल जाइत छैक। एकर बम बडीसँ सम्बद्ध दूटा नाम काष्ठदंड होइत छैक । दूनूक अग्रभाग एकटा उदग्र काष्ठखंड द्वारा जोड़ल रहैत छैक । एही तीनू काष्ठक बीच बड़द रहैत छैक। आ अग्रभागक काष्ठखंड जुआक काज करैत छैक।

घोड़ा गाड़ी : घोड़ा द्वारा खीचल जायवला गाड़ी कें **घोड़ागाड़ी** कहल जाइत छैक।

चारि पहियासँ युक्त ओ अनेक घोड़ासँ खींचल जायवला घोड़ागाड़ीक प्रभेद **रथ/रन्थ** कहल जाइत अछि। मुदा आब एकर ऐतिहासिके महत्वटा रहि गेलैक अछि।

दूय घोड़ाक सहायतासँ खींचल जायवला चारिटा पहियावला घोड़ागाड़ीकेँ **बग्गी/बग्घी /जोड़ी** कहल जाइत छैक। एकरो चलनिसारि आब समाप्तप्राये अछि ।

एके गोटाक बैसबाक स्थानसँ युक्त दूटा पहियावला घोड़ागाड़ीक प्रभेद **एका/एक्का** कहल जाइत छैक । एकर मुख्य भाग बाँससँ बनल रहैत छलैक । एकरो आब प्रचलन नहि छैक। कन्यादानक सकरीक एक्का नामी अछि ।

आइकालिह घोड़ागाड़ीक आधुनिक प्रभेद प्रचलित अछि । एकरा **तंगा/ तङ्गा/ ताँगा/ताङा/ तङ्गा/ताङ्गा** कहल जाइत छैक। लोककेँ स्थानान्तरित करबाक हेतु **ताङ्गाक** विशेष प्रभेदकेँ **टमटम** कहल जाइत छैक।

टमटमक शरीर अवतल आकृतिक ओ गँहीर होइत छैक । काठसँ बनल एहिभागकेँ **डोंगा** कहल जाइत छैक। डोंगाक दूनू कातसँ काठक दूटा समानान्तर फड़ड् निकलल रहैत छैक । एकरा दूनूकेँ **बम** कहल जाइत छैक । दूनू बमक बीच घोड़ा रहैत अछि ।

डोंगाक ऊपर लोकक बैसबाक स्थान **सीट** कहल जाइत छैक। सीटक संख्या दुइ रहैत छैक। दूनू सीटक मध्यमे एकटा लकड़ीक विभाजक रहैत छैक, जाहि पर विपरीत मुँहे बैसल लोक ओठङैत अछि। एहि लकड़ीकेँ **अरामी/अड़ानी** कहल जाइत छैक। अरामीक दूनू पाञ्जरमे खिड़की सदृश आकृतिक निर्माण करऽवला खरादल छोट-छोट दंड सभ **करौना/बौला** कहल जाइत छैक।

टमटमक पहिया कठहीए गाड़ी जकाँ होइत छैक मुदा एहिमे डड़िआक संख्या अपेक्षाकृत अधिक होइत छैक आ सभटा डड़िआ समाने आकृतिक रहैत छैक। संगहि एहिमे धूरा ओ पहियाक बीच बॉलबेरिंग लागल रहैत छैक आ पहियाक हाल रबरक होइत छैक।

मानव चालित स्थल परिवहन : सामानकेँ स्थानान्तरित करबाक हेतु ठेलिकऽ अथवा घीचिकऽ चलाबऽवला गाड़ीकेँ **ठेला/ ठेलगाड़ी/ठेलागाड़ी** कहल जाइत छैक । एकर चक्का लोहक रहैत छैक आ ओहि पर रबरक हाल चढ़ाओल रहैत छैक। एकर शरीर टायरगाड़ीक सदृशे होइत छैक । एकरा ठेलबाक हेतु शरीरसँ दूटा समानान्तर काष्ठदंड पर उदग्र ठोकल काष्ठखंडकेँ **हत्था** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो ठेलागाड़ीक पहिया टायरगाड़ीक सदृश होइत छैक आ उपरका सतह तकथासँ समतल कऽ पाटल रहैत छैक ।

कमार मानवचालित आधुनिक स्थल परिवहन रिक्शाक काछुक उनटल खपरोइयाक सदृश बडीक निर्माण करैत अछि । रिक्शामे बत्तीक बनल ओ कपड़ासँ

छारल ओहारकेँ **हुड** कहल जाइत छैक। एकर धूराक बॉलबेरिंग आ बडीक बीच एकटा लकड़ीक टुकड़ा लागल रहैत छैक । एकरा **कुटका/गुटका** कहल जाइत छैक। एकर **पैडल** सेहो काठक होइत छैक।

कमार लकड़ी गुड़काबऽवला छोट सन गाड़ीक सेहो निर्माण करैत अछि । एकरा **गुल** जाइत छैक।

मानवचालित स्थल परिवहन साधन मध्य स्कन्धवाह्य परिवहन साधनक विशेष महत्व रहल अछि। मुदा एकर व्यवहार आधुनिक युगमे समाप्त भेल जा रहल अछि। मात्र परम्परा निर्वाहक हेतु बिआह, द्विरागमन आदिमे एकर प्रचलन देखल जाइत अछि ।

स्कन्धवाह्य परिवहन साधन सभ आकृतिक अनुसार अनेक नामे अभिहित होइत रहल अछि। एहिमे सभसँ सामान्य प्रभेद **खटुली/खटोला/खटोली/खोटली** होइत अछि। एकर आधार खाट रहैत छैक जाहि पर मर्द बैसिकऽ आवागमन करैत छथि। खाटक चौड़ाइवला दूनू पौआसँ दूनू दिस दूय बत्ती त्रिभुजाकार संयोजित रहैत छैक । पौआमे बान्हल रस्सी बत्तीक कोन पर जोड़ल रहैत छैक आ दूनू कातक बत्तीसँ बनल कैंच पर अबलम्बित बाँसमे बान्हल रहैत छैक। एहि बाँसकेँ उठौलासँ खटोली ऊपर उठि जाइत छैक । बाँसक ऊपर बत्तीक छत बनाओल रहैत छैक। एकरा **छतरी** कहल जाइत छैक । शोभाक हेतु अथवा पर्दाक हेतु खटोलीक चारू कातक कपड़ाक आवरणकेँ **ओहार/परदा/झाँप** कहल जाइत छैक ।

ओहार लागल खटोलाक उपयोग खासकऽ स्त्रीगणक यात्राक हेतु होइत छैक। एकरा **डाँड़ी/डोली/दोली** कहल जाइत छैक। कहबी प्रसिद्ध अछि-'राँड़ीक बेटी डाँड़ी चढ़ली, सागक मूड़ी हेरिते गेली'। गियर्सन (बि.पी. लाइफ, पृ. 45) एकरा **चनडोल/तड़तड़वाँ** कहने छथि।

डोलीक एकटा प्रभेद **लालकी/पालकी** होइत अछि । बिआहमे खासकऽ उपयोग होयबाक कारणेँ एकरा **बियहुती पालकी** कहल जाइत छैक । एकरा उठयबाक काष्ठदंड मध्यमे उत्तल रहैत छैक । एहि दंडकेँ **दासा/डंटा** कहल जाइत छैक । काठ अथवा बाँसक जाफरी सदृश एकर छतकेँ **चीप/चोप** कहल जाइत छैक।

छतविहीन लालकीकेँ **मुंडा** कहल जाइत छैक । ओहार लागल रहला पर एकरा **महफा/महफ्फा/महाफा/महापफा** कहल जाइत छैक ।

धनीक लोकक उपयोगमे आबऽवला काठक घनाकार स्कन्धवाह्य परिवहन सभ **चउपाला/चौपाला/चहुपाला/चौपहला** कहल जाइत छैक । दूनू कात खिड़की सदृश पल्ला लागल चौपालाकेँ **खड़खड़िया** कहल जाइत छैक । दूनूकातसँ खुलल

पुरुषमात्रक हेतु उपयोगी चौपहलाकें तामदान कहल जाइत छैक । चलानी पल्ला (sliding) सँ युक्त चौपालाकें **करचोभी/ कारचोभी** कहल जाइत छैक। कलात्मक छत ओ खुट्टासँ युक्त चौपालाक एकटा प्रभेद **बरहदरी** होइत छैक। एकर दूनू अग्र भागमे लोहाक छड़सँ शंकुक आकृति बनल रहैत छैक जाहिमे दूनू दिस एक-एकटा काष्ठखंड लगा कऽ ओकरा उठाओल जाइत छैक।

लोकगाथा सभमे उड़यवला डोलीक एकटा प्रभेदक चर्चा भेटैत अछि । एकरा **उड़नखटोला** कहल जाइत रहलैक अछि।

मशीन चालित स्थल परिवहन : कमार मशीन चालित स्थल परिवहनमे ट्रक ओ बसक ठठ्रक निर्माण करैत अछि । ठठ्रकें **बॉडी** कहल जाइत छैक । बॉडीक हेतु आधारमे देल नामानामी काष्ठखंड सभकें **बीम** ओ चौड़ाचौड़ी काष्ठखंड सभकें **सथरा/सतरा** कहल जाइत छैक । ट्रकक पेरावला भागकें **डाला** कहल जाइत छैक। ढालू स्थान पर ठाढ़ कयल ट्रककें स्वतः गुड़कबासँ बचयबाक हेतु ओकर पहिया लग रखबाक लेल एक एकटा पैप ओ चौखूट सीलक उपयोग कयल जाइत छैक। एकरा **ओठ/रोक** कहल जाइत छैक।

अन्य व्यवसाय : कृषि ओ परिवहन व्यवसायक अतिरिक्त आनो अनेक व्यवसायक हेतु कमार औजारक उत्पादन करैत अछि । एहन औजार सभमे तेलीक कोल्हु, मलाहक नाओ, धुनिआक धुनेठ, जोलहाक करघा, धोबिक पाट, लहेरीक कून ओ हत्था, हलुआइक पाटा ओ दाबि आदि प्रमुख अछि । ई समस्त औजार विभिन्न जातीय व्यवसाय सभसँ सम्बद्ध अछि । जातीय व्यवसायसँ भिन्न जाहि व्यवसाय ओ तकर व्यवसायीक हेतु काष्ठकर्म द्वारा औजारक उत्पादन कयल जाइत अछि से सभ थिक–1. धनकुट्टी 2. गुड़ व्यवसाय 3. प्रेस व्यवसाय 4. विद्युत उपकरण 5. राजमिस्त्री 6. बनिजा 7. वाद्य व्यवसाय 8. नौआ 9. ईंट व्यवसाय

धनकुट्टी : मिथिलाक मुख्य उपजा थिक धान। धानसँ चाउर बनयबाक क्रिया होइछ **धान कूटब**। धान कुटबाक व्यवसाय **धनकुट्टी** कहल जाइत छैक।

धनकुट्टीक हेतु परम्परागत यंत्र **ढेकी/ढेंकी/ढेकुल** कहल जाइत अछि। एहिमे एकटा नाम लकड़ीक सील रहैत छैक । एकरो **ढेकी/ढेंकी/ढेकुल** कहल जाइत छैक। सीलक मध्यवर्त्ती भागक काष्ठ दंडक धूरीकें **अखौत / अखौता / किल्ला/डंडा/ बेलनी/बोलनी/मांझा/मज्झा** कहल जाइत छैक। माटिमे गाड़ल जाहि दू गोट काष्ठदंड पर ई धूरी अवलम्बित रहैत अछि, ओकरा **खूटा/खूँटा/ खुट्टा/खम्हा/खम्हिया/ जड्घा/जँघिया** कहल जाइत छैक। ढेकीक सीलक पछिला भाग अपेक्षाकृत पातर होइत अछि । एहि भागमे खत बनल रहैत छैक आ नीचा

दिस माटिमे खाधि कोड़ल रहैत छैक। ढेकी चलौनिहार सीलक पछिला भागकें लातिसँ दबा कऽ ओकर अगिला भागकें ऊपर उठबैत अछि । दबाब देब छोड़ि देने अगिला भाग अपन स्थान धऽ लैत छैक । पछिलाभागकें **पुछड़ा / पुछिया / लतमरी/लतमारा** कहल जाइत छैक । ढेकीक अग्रभागमे नीचा दिस एकटा बेलनाकार काष्ठखंड लागल रहैत छैक । एकरा **मूसर/मुसरा/मूसल/समाठ** कहल जाइत छैक। समाठक सभसँ निचला भागमे चढ़ाओल लोहक वलयकें **समउ/सभी/साम/ सामी/समौआ** कहल जाइत छैक । समाठक निचला भागमे गँहीर खाधि खुनल रहैत छैक आ एहिमे काठक एकटा गँहीर पात्र गाड़ल रहैत छैक। एही पात्रमे कुटबाक हेतु धानकें राखल जाइछ । पात्रकें **उक्खरि/उखरी/कोथ** कहल जाइत छैक । ढेकी चलौनिहार दूटा खुट्टा पर अवलम्बित वंशदंडकें पकड़ि सहारा लैत अछि । एहि दंडकें **अड़गनी/अड़ानी/अलगनी/अस्थम/थमनी** कहल जाइत छैक ।

धान कुटबाक हेतु डमरूक आकृतिक अन्य काष्ठनिर्मित उपकरणकें **उक्खरि/उखर/ उखरा/उखरि/उखरी/उखेर/उखली/ओखर/ओखरी/ओखली** कहल जाइत छैक । एकर निचला समतल भागकें पेनी ओ मध्यवर्ती भागकें **डाँड़** कहल जाइत छैक । एकर ऊपरवला गँहीर भाग **खाधि** कहल जाइत छैक । खाधिक मध्यवर्ती भागकें **कोथ** कहल जाइत छैक।

एहिमे देल वस्तु पर आघात करबाक हेतु काठक करीब पाँच फुट नाम बेलनाकार उपकरणक उपयोग होइत छैक । एकरा **मुसर/मूसर/मुसरा/मूसल/ समाठ** कहल जाइत छैक। एकर मध्यभाग किञ्चित छीलल रहैत छैक । एही भागसँ एकरा पकड़ल जाइत छैक। एहि भागकें **मुट्ठी/मुठिया/मूठ/मूठी** कहल जाइत छैक । समाठक एक छोर पर लोहाक वलय लागल रहैत छैक । एहि भागकें **समउ** कहल जाइत छैक । समउमे लागल लोहाक वलयकें **साम/सामी/सभी** कहल जाइत छैक। समाठक जाहि छोर पर साम नहि रहैत छैक ओहि भागकें छीलिकऽ उतल कयल रहैत छैक। एहि भागकें **भइउ** कहल जाइत छैक।

समाठक नढ़उ चूड़ा कुटबाक हेतु उपयोगी होइत अछि । चूड़ा कुटबाकाल धानकें लारबाक हेतु बाँसक पातर ओ तीक्ष्ण अग्रभागसँ युक्त दंडकें **ठकुरा/ठेकरा/ठोकरा** कहल जाइत छैक।

सुखबाक हेतु पसारल धानकें समेटबाक हेतु बाँसक बेंट लागल काठक कोदारिक आकृतिक उपकरणकें **फड़ुआ** कहल जाइत छैक। धान लारबाक हेतु एही आकृतिक एकटा अन्य उपकरणक उपयोग होइत छैक । एकर अग्रभागमे दंताकृति खाँच बनल रहैत छैक । एकरा **खखोरना/खखोरनी/ खोखरना/खोखरनी** कहल जाइत छैक।

गुड़-व्यवसाय : कुसिआरकेँ पेड़ि कऽ ओकर रससँ गुड़ बनयबाक व्यवसायकेँ गुड़-व्यवसाय कहल जाइत छैक। एहि व्यवसायमे कुसिआर पेड़बाक यन्त्रकेँ **कोल्ह/कोल्हु/कोल्हू/कऽल** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन प्राचीन कालक कोल्हुक वर्णन कयने छथि (बि.पी.लाइफ पृ. 50-56)। एहिमे प्रयुक्त शब्द सभ तेलीक कोल्हुक शब्दावलीसँ मिलैत अछि । आब एहि यंत्रक आधुनिकीकरण भऽ गेल अछि।

आधुनिक कोल्हुक कुसिआर पेड़ऽवला भाग लोहक दूटा खाँचदार यंत्र होइत अछि। दूनूक मध्य कुसिआर राखि यंत्रकेँ नचौलासँ रस बाहर भऽ जाइत छैक । ई यंत्र दूटा खुट्टाक बीच स्थित रहैत अछि । यंत्रक ऊपरी भागमे काठक एकटा पैघ सील रहैत छैक जकरा नचौलासँ यंत्र नचैत छैक । एहि सीलकेँ **उलबा/मस्तक** कहल जाइत छैक । उलबासँ एकटा बाँस अथवा काठक पैघ दंड लागल रहैत छैक। एहि दंडकेँ **कातर/कातरि/कातरी/कतरी/कतली** कहल जाइत छैक। कतरीकेँ बड़दक सहायतासँ वृत्ताकार परिपथमे नचाओल जाइत छैक।

लौहयंत्रमे कुसिआर पैसयबाक हेतु एकटा छिद्रमय चौखूट काष्ठखंडक व्यवहार होइत अछि। एकरा **पौआ** कहल जाइत छैक ।

कुसिआरक रसकेँ कड़ाहमे लारबाक हेतु काठक छोलनीकेँ **गुड़दम / गुरदन /दबकन** कहल जाइत छैक । खुर्पीक आकृतिक एकटा काठक उपकरणसँ गाढ़ रसकेँ कड़ाहसँ काछि कऽ निकालल जाइत छैक। एकरा **कठही/कठखुर्पी** कहल जाइत छैक ।

प्रेस व्यवसाय : प्रेसमे अनेक काष्ठनिर्मित उपकरण सबहिक उपयोग होइत अछि। अक्षरक गुटका रखबाक अनेक खोधलीसँ युक्त उपकरणकेँ **केस** कहल जाइत छैक। केसकेँ रखबाक हेतु काठक खुट्टासँ निर्मित उपकरणकेँ **केस रैक** कहल जाइत छैक । चारू कात अल्प घेरासँ युक्त काठक समतल बासनकेँ **गेली** कहल जाइत छैक। एहिमे कम्पोज कयल मैटर राखल जाइत छैक । गेलीकेँ रखबाक हेतु उपकरणकेँ **गेली रैक** कहल जाइत अछि । मैटरकेँ एक तलमे करबाक काष्ठ दंडकेँ **पलेना** कहल जाइत छैक। मैटरकेँ दृढ़ करबाक हेतु काठक ठोकबाक उपकरणकेँ **मुँगड़ा** कहल जाइत छैक। मैटरकेँ फर्मामे कसबाक हेतु काठक पातर-पातर टुकड़ीकेँ **फर्नीचर** कहल जाइत छैके। अत्यन्त छोट-छोट फर्नीचरकेँ **गुल्ली** कहल जाइत छैक। कागतकेँ मोड़बाक हेतु काठक पातर दंडकेँ **सलेस/तिल्ली** कहल जाइत छैक।

विद्युत उपकरण : घरमे विद्युत परिपथक विस्तारकेँ वायरिंग कहल जाइत छैक । वायरिंगमे अनेक प्रकारक काष्ठक संसाधन सभ लगैत छैक । करीब दू सँ तीन आङुर चाकर काठक पैघ-पैघ दंड सभ जाहि पर होइत तार दौड़ाओल जाइत छैक, से **बटन** कहल जाइत अछि । बटनकेँ देवालसँ सम्बद्ध करबाक हेतु देवालमे ठोकल

लकड़ीक छोट-छोट टुकड़ी सभ **गुल्ली** कहल जाइत छैक । कोना पर बटनकेँ दोसर दिशामे मोड़बाक हेतु काठक कोण सदृश टुकड़ी सभक उपयोग होइत अछि । एकरा **कोनिआ/बेन्ड/कॉर्नर** कहल जाइत छैक । जाहि काठक बक्सा पर स्विच आदि लगाओल जाइत छैक ओकरा **बोर्ड** कहल जाइत छैक । छोट-छोट गोल बक्सा सभ जाहिमे होल्डर आदि लगाओल जाइत अछि, से **राउन्ड ब्लॉक** कहल जाइत अछि। दूटा बिन्दुकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु छोट-छोट चौकोर बक्साक व्यवहार होइछ । एकरा **जक्सन बॉक्स** कहल जाइत छैक ।

राजमिस्त्री : राजमिस्त्री ईंटक घर बनयबाक व्यवसाय करैत अछि । अधिक मसालाकेँ छँटबाक हेतु एवं सतहकेँ समतल करबाक हेतु ई काठक पट्फलक नाम उपकरणक व्यवहार करैत अछि। एकरा **पाटा/पहटा** कहल जाइत छैक । मशालाकेँ सरि कऽ सतहकेँ समतल करबाक आयताकार फलकसँ युक्त एक हाथसँ पकड़बाक काठक उपकरणकेँ **रुस्सा** कहल जाइत छैक।

बनिञा : छोट-मोट बनिञाक काठक घरकेँ **कठघरा/कठघारा** कहल जाइत छैक । कठघराकेँ आगू दिससँ बन्द करबाक व्यवस्थाकेँ **झाँप/झाँपा/झप्पा** कहल जाइत छैक । एकर पछिला भाग **पिछाड** ओ दूनू कातक भाग **पजरा (ड़ा)** कहल जाइत अछि । कठघराक भीतर वस्तु रखबाक हेतु पाटल तकथा सभकेँ **पटानी तकथा** कहल जाइत छैक । पटानी तकथाक नीचासँ स्थान-स्थान पर तिनकोनमा काष्ठखंड ओकरा आधार प्रदान करबाक हेतु ठोकल रहैत छैक, । एकरा सभकेँ **कोनिआ/ब्रैकिट)** कहल जाइत छैक ।

पानक दुकानदारक पान रखबाक समतल आधारकेँ **डेस्क/पिढ़िया/स्टॉल** कहल जाइत छैक।

बनिञाक जोखबाक उपकरण **तरजुइ/तरजू/तराजू** होइत अछि । एहिमे लागल काष्ठदंडकेँ **डण्टी/डंटी/डंडी/डण्डी** कहल जाइत छैक ।

बनिञाक पाइ रखबाक अनेक खोधलीसँ युक्त बक्साकेँ **गल्ला** कहल जाइत छैक ।

वाद्य व्यवसाय : वाद्य यंत्र अनेक प्रकारक होइत अछि। किछु वाद्य यंत्रमे काठक आधार पर चामसँ छाड़ल रहैत छैक। एहि काठक आधारकेँ **कठरा** कहल जाइत छैक।

तबला, मृदङ आदिमे बाहरसँ काठक बेलनाकार टुकड़ी सभ सेहो देल रहैत छैक । एकरा सभकेँ **गुल्ली** कहल जाइत छैक । हाथसँ बजयबाक काठक एकटा

वाद्य यंत्रमे धातुक झालि लागल रहैत छैक । एकरा **करताल/कठताल** कहल जाइत छैक ।

नौआ : नौआ काठक छोट सन पेटीमे अपन समस्त औजार रखैत अछि । एहि पेटीकेँ **लोखड़/लोहखड़** कहल जाइत छैक ।

ईंट व्यवसाय : कमार ईंट पथबाक हेतु काठक ठट्ठरक निर्माण करैत अछि। एकरा **डाँचा/फरमा/फर्मा/ फार्म/फारम/साँच/साँचा** कहल जाइत छैक ।

उपभोग्य उत्पादन : काष्ठकर्म द्वारा साक्षात् उपभोगक हेतु उत्पादनकेँ निम्नलिखित वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत अछि– 1. गृह निर्माण सम्बन्धी 2. भोजनक उपादान सम्बन्धी 3. आरामक उपादान सम्बन्धी 4. शृंगारक पात्र सम्बन्धी 5. सामानक सुरक्षा सम्बन्धी एवं 6. अन्य

गृह निर्माण सम्बन्धी सामग्री : गृह निर्माण सम्बन्धी सामग्री सभकेँ **साङ्ह/सरञ्जाम/सरंजाम/सरमजाम** कहल जाइत छैक। मिथिलामे पारम्परिक घर टाट, भीत तथा चारसँ बनैत अछि । एहिमे काठ ओ बाँससँ सम्बद्ध साङ्ह सबहिक उत्पादन काष्ठकर्म द्वारा होइत अछि ।

घरक आधारभूत काठ अथवा बाँसक स्तम्भकेँ **खंभा/खम्भा/खम्भी/खम्भिआ (या)/ खम्हा/खम्हाँ/खमहा/खम्हाँ/खाम्ह/खाम्ही/खम्हिआ (या)** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **थुन्ही/थुन्हीं/उचबड़** सेहो कहल जाइत छैक (**तत्रैव, पृ. 38**)। बाँसक खाम्हीकेँ **बसैला** सेहो कहल जाइत छैक।

खाम्हक उपरका भागमे अंग्रेजीक भी अक्षरक आकृतिक खाँच बनाओल जाइत छैक जाहि पर काठ अथवा बाँसक दंडकेँ टिकाओल जाइत छैक। एहि भागकेँ **कान/कान्ह/कनहा** कहल जाइत छैक। खाम्ह सामान्यत: माटिमे गाड़ल रहैत छैक। जे खम्हा माटिमे गाड़ल नहि रहैत छैक ओकरा **खम्हेली** कहल जाइत छैक । खम्हेली माटिमे गाड़ल एकटा समतल काष्ठखंड पर अवलम्बित रहैत छैक । एकरा **पिढ़िया** कहल जाइत छैक । झुकल खाम्हकेँ अड़कयबाक हेतु लगाओल कोणिक सोंगरकेँ **पेलता** कहल जाइत छैक।

खम्हा आदि बनयबाक हेतु बाँसक गीरह आदिकेँ छिलबाक क्रिया **मढ़ब** होइत अछि। बाँसकेँ चिरला पर मोट-मोट खंड सभ **फट्ठा/बत्ता/बाता/बाँता** ओ पातर-पातर खंड सभ **फट्ठी/बत्ती/बाती** कहल जाइत अछि ।

घेरल स्थानमे आवागमनक हेतु समानान्तर गाड़ल दूटा सुकाठक स्तम्भमे ऊपर सँ नीचा दिस थोड़े-थोड़े दूर पर छेद बना कऽ ओहिमे बाँस पैसाओल जाइत छैक । एहि व्यवस्थाकेँ **भुरचुक्का** कहल जाइत छैक ।

खऽढ़ आदिकेँ ठाढ़ स्थितिमे थोड़ेक-थोड़ेक दूरी पर दुनू कातसँ देल बत्तीक बीच बन्हलासँ **टाट/फड़क** बनैत अछि। छोट टाटकेँ **टाटी/फड़की** कहल जाइत छैक। टाटसँ घेरल घरकेँ **टटौघर/टटघर** कहल जाइत छैक । मजगूतीक हेतु टाटमे खऽढ़क बदला बाँसकेँ एहि तरहेँ चीरि कऽ लगाओल जाइत छैक जाहिसँ ओकर समस्त भाग सम्बद्ध रहैत उनरल रहैत छैक। एहि वस्तुकेँ **झँझि/झाझन/झँझन** कहल जाइत छैक ।,झँझनक टाटमे स्थान-स्थान पर बन्हबाक बत्तीमे आधा फाड़ल ओ छेद कयल बाँस पैसाओल रहैत छैक। एकरा **उभी/उभ्भी** कहल जाइत छैक। टटौघरमे झँझनक केवाड़केँ **फट्टक/फाटक** कहल जाइत छैक। क्रमश: नामानामी आ चौड़ाचौड़ी समानान्तर ठाढ़ कयल बत्तीक वर्गाकार घरवला घेराकेँ **जाफरी** कहल जाइछ। जाफरीमे ठाढ़ बत्तीकेँ **ठढ़बत्ता/ठढ़बत्ती/ठढ़बाती** कहल जाइत छैक। बरहीक अभावमे लोक ई सभ सामग्री अपनो तैयार कऽ लैत अछि।

माटि अथवा ईंटसँ बनल घरक घेरावला भागकेँ **भीत/भित्ता/भित्ती/देबाल** कहल जाइत छैक। खऽढ़ अथवा खपड़ासँ छारल जायवला घरक उपरका आवरणकेँ **चार/छप्पर/छपड़ी** कहल जाइत छैक। चारक संख्याक आधार पर घर **एकचारा/एकचारी, दुचारा/दोचारा/दुचारी/दोचारी** आ **चौचारा/चौचारी** कहल जाइत अछि । चार ओ ओकर भरसाहाक हेतु बरही अनेक सामग्रीक निर्माण करैत अछि।

दुचारा घरक चारकेँ आधार देबाक हेतु मध्यवर्ती काष्ठखंडकेँ **बरी / बरेड़ / बरेड़ी/बरैंड़ी** कहल जाइत छैक । कतहु-कतहु एकरा **नर(ड़)ही** सेहो कहल जाइत छैक (**तत्रैव, पृ. 339**)।

बरेड़ीकेँ आधार प्रदान करबाक हेतु कखनो-कखनो ओकर समानान्तर काठक मोट सील दूटा देवालक बीच लागल रहैत छैक। एकरा **थरन/थरनि** कहल जाइत छैक। गोल आकृतिक थरनिकेँ **गोल/गोला** आ चाकर थरनिकेँ **चौकोर/चौपहल** कहल जाइत छैक। थरनि पर एकाधिक लम्बरूप मोट काष्ठखंड सभ बरेड़ी धरि लागल रहैत छैक। एहि स्तम्भ सभकेँ **मनिकथम्भ/मानिथम्भ/ मनिकथम्ह/ मानिकथम्ह/मलिकथम्ह/मरीथम** कहल जाइत छैक। एकर उपरका भागमे एकटा अवतल काष्ठखंड पर बरेड़ी आधारित रहैत छैक। एहि अवतल काष्ठखंडकेँ **माला/मलिया/मलवा** कहल जाइत छैक।

घर छाड़बाक हेतु ठट्ठरकेँ **ठाठ** कहल जाइत अछि । ठट्ठर तैयार करबाक क्रिया **ठाठब** होइत अछि । चारक निचला भागमे देल बाँसक नाम-नाम खंडकेँ **कोरा (ड़ा)/कोरो (ड़ो)** कहल जाइत छैक । कोरोक उपरका भागमे छेद कयल रहैत छैक। एहि छेदकेँ **नाथ/नास** कहल जाइत छैक । कोरो सभकेँ सम्बद्ध करऽवला ओकर नासमे पैसल बातीकेँ **बरोत** कहल जाइत छैक ।

काठक कोरोकेँ **बल्ला/बाला** कहल जाइत छैक । छोट ओ पातर बल्लाकेँ **बल्ली** कहल जाइत छैक। दूय चारक कोना पर देल मोट ओ चाकर बल्लाकेँ **तर(ड़)क/तर(ड़)ख** कहल जाइत छैक। बान्हल चारक बीचमे घुसाओल कोरोकेँ **चोरकोड़ो/चोरकोड़बा** कहल जाइत छैक।

एकचारीक उपरका भाग जाहि काष्ठखंड अथवा वंशदंड पर टिकल रहैत छैक ओकरा **सरदर** कहल जाइत छैक । सरदर देवालमे पैसल अनेक खुट्टी पर अवलम्बित रहैछ। एहि खुट्टी सभमे अवतल खाधि बनल रहैत छैक। खुट्टी सभकेँ **टेकुआ/मरुअनि/मडुआ/मँडुआ/मलवा/माला** कहल जाइत छैक।

एकचारीक निचला भाग जाहि काष्ठखंड अथवा वंशदंड पर टिकल रहैत छैक ओकरा **कमरबल्ला/पाड़/पाढ़ि/पाड़** कहल जाइत छैक । चारकेँ नीचा ससरबासँ रोकबाक हेतु कोरो ओ पाढ़िक बीच ठोकल काष्ठक टुकड़ा सभकेँ **अड़ानी/टेक/ ठेक/ठेकना/बचबा** कहल जाइत छैक ।

चौचारा घरक चारू चार त्रिभुजाकार आकृतिक होइत अछि । चारू चारक कोना जाहि शीर्ष विन्दु पर मिलैत छैक, ओहिठाम एकटा छिद्रमय काष्ठखंड चारू चारकेँ सम्बद्ध कयने रहैत छैक । एकरा **गुमुज/कुम्हनी** कहल जाइत छैक ।

चारकेँ छारबाक हेतु जाहि बातीक उपयोग होइत अछि ओकरा **छरनौती** कहल जाइत छैक। खड़क घरकेँ छारबाक हेतु बाँसक छठम अंशवला बातीक व्यवहार कयल जाइछ। एकरा **खरबत्ती/खरयाती** कहल जाइत छैक । त्रिभुजाकार टाट अथवा ठाठमे टेढ़ कऽ लगाओल बातीकेँ **सिङरबात** कहल जाइत छैक । चारक हेतु ई सभ साङह सेहो बरहीएक उत्पादन थिक ।

पक्का घरक हेतु सेहो बरही अनेक सामग्रीक निर्माण करैत अछि । पक्का घरक उपरका आवरणकेँ **छत/छात** कहल जाइत छैक। छतकेँ आधार प्रदान करऽवला नाम ओ चौपहल काष्ठखंडकेँ **धरन/धरनि** कहल जाइत छैक । छोट, पातर ओ चौकोर काष्ठखंड जे एक धरनिसँ दोसर धरनि पर आ देवाल तथा एक धरनि पर पाटल जाइत अछि से **कड़ी/बड़गाहिन** कहल जाइत अछि। कोठाक छत पिटबाक काष्ठक उपकरणकेँ **थापी/ मुंगरी** कहल जाइत छैक । जमीन सरि करबाक थापी **पिटना** कहल जाइत अछि ।

देवाल जोड़बाक हेतु मचान पर देल आधार जे बत्ती सभकेँ तरउपरी सम्बद्ध कऽ बनाओल जाइछ से **चाली/खरचाल** कहल जाइत छैक ।

घरमे बाहर-भीतर आवागमनक हेतु व्यवस्थाकेँ **द्वार/दुआरि/दरवन्जा/दरवाजा/ देहरि** कहल जाइत छैक। दरवन्जामे चारूकातसँ लागल काष्ठव्यवस्थाकेँ **चौकठ/चौकठि/चौखटि** कहल जाइत छैक । घरक मुँह परक चौकठिकेँ **मोख/मोखा**

कहल जाइत छैक । बाहरी दरवन्जा परक चौकठिकेँ **दुरुक्खा** कहल जाइत छैक । दरवन्जाकेँ बन्द करबाक काष्ठ-व्यवस्था **फाटक** कहल जाइत अछि।

चौकठि आयताकार होइत अछि । एकर चौड़ाइवला दूनू काष्ठखंडमे ऊपरवलाकेँ **छात/उपरौटा** कहल जाइत छैक। नीचावला काष्ठखंडकेँ **लतमरवा/लतमारा/ लतमर्रा/लतखोरा** कहल जाइत छैक। चौकठिक ऊपरी भागमे चाकर काष्ठखंडक ऊपर देवाल जोड़ल रहैत छैक। एहि काष्ठखंडकेँ **पटदेहरि** कहल जाइत छैक ।

चौकठिक छात ओ लतमाराक किछु भाग देवालमे पैसल रहैत छैक। लम्बाइवला भागक बाहरवला ओहि भाग सभकेँ **कोपला/चूड़/चूल** कहल जाइत छैक। कोपलासँ युक्त चौकठिकेँ **चूड़ चौकठि** कहल जाइत छैक । जाहि चौकठिमे कोपला निकलल नहि रहैत छैक, ओकरा देवालसँ कलम्पू द्वारा सम्बद्ध कयल जाइत छैक। एहन चौकठिकेँ **गुझियावला चौकठि** कहल जाइत छैक ।

कोनो-कोनो चौकठिक वाह्य भागमे छौलि कऽ एकटा आर चौकठिक आकृति बना देल जाइत छैक । एकरा **साह/दसौढ़ी** कहल जाइत छैक । ई शोभाक हेतु कयल जाइत छैक। दसौढ़ीसँ युक्त चौकठिकेँ **साह चौकठि/दसौढ़ी चौकठि/दोहरा चौकठि** कहल जाइत छैक ।

घरमे वायु ओ प्रकाशक आवागमनक व्यवस्थाकेँ **खिड़की** कहल जाइत छैक। एकर बनाबटि चौकठिये जकाँ होइत छैक मुदा ई अपेक्षाकृत छोट होइत अछि । संगहि एकर चौड़ाइवला दूनू भागक बीच काठ अथवा लोहक दंडाकृति लागल रहैत छैक। खिड़कीक मध्यभागमे लम्बाइवला दूनू भागकेँ एकटा काष्ठखंड सम्बद्ध कयने रहैत छैक। एकरा **डड़कस/डँड़कस** कहल जाइत छैक । डड़कसविहीन खिड़कीकेँ **जंगला/जङला/जङ्गला** कहल जाइत छैक।

खिड़की अथवा केबाड़क हेतु देवालमे छोड़ल गेल स्थानकेँ **लगान** कहल जाइत छैक।

खिड़की ओ चौकठिक खाली भागकेँ काठक चाकर तकथासँ बन्द करबाक व्यवस्था रहैत छैक। एहि तकथा व्यवस्थाकेँ **कपाट/केबाड़/केबाड़ी** कहल जाइत छैक।

केबाड़क विभागकेँ **पाट/पट्टा/पल्ला** कहल जाइत छैक। सामान्यतः केबाड़ एक अथवा दू पल्लाक होइत अछि । एक पल्लावला केबाड़केँ **एकपलिया** आ दू पल्लावला केबाड़केँ **दुपलिया** कहल जाइत छैक । पल्लाक सामनेवला भागकेँ **दरस/रूख/रूखि** आ पाछूवला भागकेँ **अदरस** कहल जाइत छैक ।

दरस ओ अदरस भागमे बनाबटिक आधार पर पल्लाक अनेक प्रभेद होइत अछि–(क) **सादा** (ख) **बटनडोर** (ग) **पाइनर** (घ) **डिलेवाज** (ङ) **झिलमिली** (च) **खरखरी** (छ) **सामी**

साधारण केवाड़क पल्लाकेँ **सादापाट** कहल जाइत छैक । सादा पाटमे नामानामी तकथा पर अदरस भागमे नीचा, ऊपर ओ बीचमे चौड़ा-चौड़ी चाकर काष्ठदंड ठोकि तकथा सभ सम्बद्ध कयल रहैत छैक। एहि काष्ठदंड सभकेँ **बीट/बत्ता/बाँता** कहल जाइत छैक। एहिमे एक पल्ला पर दोसर पल्ला बैसेबाक हेतु एकय पल्लाक कोर पर नामानामी एकटा चाकर तकथा ठोकल रहैत छैक । एकरा **बेनी/बीट** कहल जाइत छैक। तेँ एहन केवाड़केँ **बेनीवला केवाड़** सेहो कहल जाइत छैक।

बटनडोर पल्ला सादे पाट जकाँ अछि। मुदा एकर पृष्ठ भागमे अंग्रेजीक (z) जेड अक्षरक आकारमे बाँता ठोकल जाइत छैक । एहि बाँतामे टेढ़ कऽ ठोकल भागकेँ **बटन** कहल जाइत छैक।

पाइनर पल्लाकेँ डारि-खुर्जीवला पल्ला कहल जाइत छैक । एहिमे वर्गाकार अथवा आयताकार फ्रेम बनाओल जाइत छैक । एहि फ्रेमक नामा-नामी लकड़ीकेँ **डारि(ड़ि)** आ चौड़ा-चौड़ी लकड़ीकेँ **खुर्जी/खुर्चीं** कहल जाइत छैक । डारिक अग्रभाग पतरायल रहैत छैक। एहि भागकेँ **चूड़/चूल/चूड़ि** कहल जाइत छैक । खुर्जीक अग्रभागमे गँहीर खाधि बनाओल रहैत छैक । एकरा **छेद/खील/भूड़/पेस/खाँच** कहल जाइत छैक । चूल ओ छेदकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ देलासँ पल्लाक फ्रेम बनैत छैक। डारि ओ खुर्जीकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु कयल छिद्रकेँ **पडुआरि** कहल जाइत छैक।

चूलकेँ छेदमे पैसयबाक क्रिया **सालब** होइत अछि । सालला उत्तर छेदमे चूलक सुगमतापूर्वक प्रवेशक क्रिया **अँटब** होइत अछि । अँटबाक भाव **अँटाबेस/अंटाबेस** होइत अछि। छेद पैघ भऽ गेने चूलक अस्थिरताकेँ **ढकर-ढकर** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पैघ छेदकेँ **ढकढोल** कहल जाइत अछि। पैघ छेदमे चूड़केँ स्थिर करबाक हेतु देल पातर पच्चड़केँ **खिप/खीप** कहल जाइत छैक।

चूड़ि आयताकार अथवा गोलाकार होइत अछि । आयताकार चूड़िकेँ साललासँ उत्पन्न बनाबटकेँ **ठोकर साल** आ गोल चूड़िकेँ साललासँ उत्पन्न बनाबटकेँ **मोरद्दी साल** कहल जाइत छैक।

डारि ओ खुर्जीक मध्य भागमे कलाकृति खीचल तकथा पैसाओल रहैत छैक। एकरा **डिल्ला/डीप/पाइनर/पाइनल/पैनल** कहल जाइत छैक। पैनल पर चौखूट काटकेँ **सिक्का** ओ गोल आकारक काटकेँ **नीमगोल** कहल जाइत छैक।

डिलेबाज पल्ला वस्तुतः बटनडोरे पल्ला जकाँ होइत अछि। मुदा एकर दरस भाग पर एहि तरहेँ कलाकृति बनाओल रहैत छैक जे ई दूरसँ देखला पर पर पाइनर पल्ला जकाँ लगैत अछि।

झिलमिली पल्लामे पाइनरवला भागमे लकड़ीक कम चाकर अनेक छोट-छोट पटरी सभ क्षैतिज अवस्थामे एकटा मध्यवर्ती दंडसँ सम्बद्ध रहैत छैक । मध्यवर्ती

दण्डकेँ ऊपर उठा देने काठक टुकड़ी सभ एक दोसरा पर बैसि जाइत छैक आ नीचा खसा देने सभक बीच फाँक बनि जाइत छैक । ई पल्ला केवाड़ीकेँ हवादार बनयबाक हेतु प्रयुक्त होइत अछि।

खरखरी पल्लामे झिलमिली पल्लाक विपरीत दिशामे पटरी सभ लागल रहैत छैक।

जाहि पल्लामे पाइनरक स्थान पर सीसा लगाओल जाइत छैक, ओकरा **सामी पल्ला** कहल जाइत छैक।

केवाड़क दूनू पल्लाकेँ एक-दोसरा पर बैसयबाक हेतु दूनू पल्लाक कोर पर नामा-नामी क्रमशः भीतर ओ बाहरसँ किछु भाग कतरि देल जाइत छैक । एहि गँहीर भागकेँ **झरनी/पताम/पुतांम/पतामी/पलस** कहल जाइत छैक । समतल पलसकेँ **चप्पस** आ किञ्चित वक्र पलसकेँ **गोला** कहल जाइत छैक ।

केवाड़केँ आवश्यकतानुसार बन्द अथवा खुलल रखबाक हेतु अनेक प्रकारक उपादान सबहिक निर्माण कयल जाइत अछि । केवाड़केँ देवालमे सटबासँ बचयबाक हेतु ओकर चौकठिक उदग्र दंडक मध्यभागमे काठक एकटा चौकोर टुकड़ी ठोकि देल जाइत छैक। एकरा **भीतर गुटका** कहल जाइत छैक ।

चौकठिक उदग्र दण्डमे बाहरसँ कब्जा पर लगाओल काष्ठक त्रिकोण टुकड़ा खाँचमे बैसि केवाड़केँ स्वतः बन्द होयबासँ रोकैत छैक । एकरा **खाँच गुटका/खाँचा गुटका** कहल जाइत छैक।

केवाड़क लतमाराक कोन पर ठोकल लकड़ीक नाम भ्रमणशील टुकड़ाकेँ पल्लासँ अड़ा देने पल्ला स्वतः बन्द नहि भऽ सकैछ । एकरा **अड़ानी/छिटकी** कहल जाइत छैक।

चौकठिक छातक मध्यमे ठोकल परोड़क आकृतिक लकड़ीक टुकड़ी बन्द केवाड़केँ खुलबासँ रोकैत छैक। ई **कुटका बिलट/कुलावा/परोड़िया** कहल जाइत छैक ।

केवाड़केँ भीतरसँ बन्द करबाक एकटा व्यवस्था **बिलैया** होइत अछि । एहिमे एकटा काष्ठदंडक एकटा छोरक मध्यभाग एकटा पल्लामे ठोकल गुलमेँख पर नचैत अछि आ ओकर दोसर मुँह पर बनल खाँच दोसर पल्लामे ठोकल गुलमेँख पर खसैत अछि । दोसर पल्लामे ठोकल गुलमेँखकेँ **मकरी** कहल जाइत छैक ।

चौकठिक ठढ़का भागक मध्यमे गुलमेँख पर नाचऽवला लकड़ीक दंडकेँ दोसर दिसुक ठढ़का भागक मध्यमे अवस्थित लोहक आधार पर टिका देने केवाड़ भीतरसँ बन्द भऽ जाइत छैक। एहिमे प्रयुक्त काष्ठदंडकेँ **बराठी/बेराठी/बेड़ौंठी/बेनाठी** कहल जाइत छैक। सभक घरमे बन्न भऽ जयबाक अर्थमे टाटी-बेनाठी लागब मोहावराक प्रयोग होइछ ।

केवाड़कें भीतरहिसँ बन्द करबाक अन्य व्यवस्थामे दूनू पल्लामे एक-एकटा अर्द्धवृत्ताकार छिद्रमय काष्ठखंड ठोकल रहैत छैक आ एकटा लकड़ी एक पल्लाक छेदसँ होइत दोसर पल्लाक छेदमे पैसाओल रहैत छैक। एकरा **अर्गल/किल्ली/छिटकी/ छिटकिनी/छिटकिल्ली/ सिटकनी/सिटकिनी/ धुरकिल्ली/हुड़का** कहल जाइत छैक। केवाड़मे काठक भीतरमे लगाओल तालाकें **तरताला** कहल जाइत छैक।

भोजनक उपादान सम्बन्धी सामग्री : भोजन सम्बन्धी अनेको काष्ठ उपकरणक निर्माण बरहीये करैत अछि । चिक्कस पिसबाक उपकरणकें **जाँत/जाँता/जँतबा** कहल जाइत छैक । जाँत जाहि लकड़ीक धूरी पर नचैत अछि ओकरा **कील/किल्ला** कहल जाइत छैक । जाँतक उपरका पाथरकें नचयबाक हेतु ओहिमे एकटा काष्ठखंड ठोकल रहैत छैक। एकरा **हाथर/हाँथर/हथड़ा/हँथड़ा** कहल जाइत छैक।

दालि दरड़बाक छोट जाँतकें **चकरी** कहल जाइत छैक । चकरीक मध्यवर्ती काष्ठक धुरीकें **किल्ली** कहल जाइत छैक । जाँत ओ चकरीक कील ओ हाँथर कमार द्वारा उत्पादित होइत अछि।

चिक्कस सनबाक हेतु काठक गोल ओ गँहीर पात्रकें **अथरा / तगार / कठौत / कठौता /कठवत/कठुला/कठोला** कहल जाइत अछि। छोट कठौत **अथरी/तगाड़ी/कठौती**(प्रसिद्ध कहबी : मन चंगा तऽ कठौतीमे गंगा)/**कठुली** कहल जाइत अछि । नोन आदि रखबाक अत्यन्त छोट आकृतिक कठौतकें **कठोला** कहल जाइत छैक।

रोटी बेलबाक हेतु लकड़ीक गोल ओ समतल आधारकें **चक/चकती/ चकला/चकुला/चकोला/चाक/चौकी** कहल जाइत छैक । एकर आधारमे लागल लकड़ीक गुल्ली सभकें **गोरा (ड़ा)/गोरी (ड़ी)** कहल जाइत छैक। जाहि नाम ओ गोल काष्ठदंडसँ रोटी बेलल जाइत अछि ओकरा **बेलना/बेलनी** कहल जाइत छैक ।

पकमान बनयबाक काठक पानक पातक आकारक उपकरण **सचबा / सँचबा/साँच/ साँचऽ/साँचा/साँचो** कहल जाइत अछि । एकर अग्रभागकें **नौख/नौखी** आ नीचा दिस निकलल भागकें **मुंडी/मूँड़ी** कहल जाइत छैक। एहि पर खोधल आकृतिकें **नक्कासी/खोधामा** कहल जाइत छैक। जालक आकृतिक खोधामाकें **जाली**, फूल-पात आदिक आकृतिक खोधामाकें **फूल-पत्ती** आ वृक्षक शाखा-प्रशाखा जकाँ खोधामाकें **झार** कहल जाइत छैक ।

भात आदि लारबाक हेतु छोलनीक आकृतिक काष्ठक उपकरणकें **दाबि/दबिला** कहल जाइत छैक। दालि घँटबाक हेतु काठक दंडक निचला भागमे गोल आकृतिक काष्ठखंड लागल उपकरणक व्यवहार होइत अछि। एकरा **दलघटना/घोटना/दलघोटना/**

दलिघोटना/रऽही कहल जाइत छैक । मक्खन महबाक रऽहीकें **मथनी/महन/महनी** कहल जाइत छैक।

दालि आदि परसबाक हेतु लकड़ीक करछुकें **सरबा/करछु/कड़छुल** कहल जाइत छैक। काष्ठदंडक अग्रभागमे नारिकेरक फल्ली लागल सड़बाकें **ओड़िका** कहल जाइत छैक। एहिसँ दूधो परसल जाइत अछि ।

भानसक पात्रकें झँपबाक हेतु काठक उत्थर बासनकें **झपना/ढाकन/ ढक्कन/ढकना/ ढपना** कहल जाइत छैक । छोट ढाकनकें **ढकनी** कहल जाइत छैक। लत्तीवला गाछक फौलबाक क्रिया **ढकनायब** होइत अछि ।

चाउर आदि नपबाक काठक छोट मुँहवला गोलपात्रकें **ताम/तामा/ताम्बा** कहल जाइत छैक।

आरामक उपादान सम्बन्धी सामग्री : आरामक सबसँ प्राचीन सामग्री थिक **खटिआ(या)/खाट/चरपइ/चारपाइ/ सेज/सजेआ (या)/सेजिआ (या)**। एकर छोट प्रभेदकें **खटुला/खटुली/खटुल्ली/ खटोला/खटोली** कहल जाइत अछि । ई आयताकार होइत अछि।

खाटक चारू कोन परक ठाढ़ लकड़ीक स्तम्भकें **पौआ/पावा/पाया** कहल जाइत छैक। सामान्यत: एकर लम्बाइ एक हाथ होइत छैक । चारू पौआकें सम्बद्ध करऽवला चारि गोट काष्ठखंडमे नामा-नामीवला दुइ गोट पैघ होइत अछि । एकरा दुनूकें **पासि/पासी** कहल जाइत छैक। चौड़ाइवला दूटा काष्ठखंडकें **पट्टी/पाटी** कहल जाइत छैक। दूनू पासि अथवा दूनू पट्टीक लम्बाइ समान नहि रहने खाटकें **छोटबड़ाह** कहल जाइत छैक। एहन स्थितिमे चारू पासि-पट्टी समकोण पर नहि रहैत अछि तें एहन खाटकें **कोनाह/बदगुनिआ** सेहो कहल जाइत छैक। पासि ओ पट्टीक छोर पर चूल बनल रहैत छैक जे पौआ सभमे बनल छेदमे पैसल रहैत छैक। बीचवला खाली भाग जौड़ आदिसँ घोरल रहैत छैक, जाहि पर लोक सुतैत-बैसैत अछि ।

खाटक पौआ, पासि, पट्टी आदि अवयवकें बनाय एवं सम्बद्ध कऽ ओकरा तैयार करबाक क्रिया **खाट सालब** होइत अछि । टेढ़मेढ़ काठकें छेबिकऽ सोझ करबाक क्रिया सेहो **सालब** होइत अछि। चूलवला भागकें छेदमे लऽ जयबाक क्रिया **घोसिआयब/घोंसिआयब/पेसब/पैसायब** होइत अछि । छेद छोट रहने बलात् अन्त:प्रवेशक क्रिया **ठूसब/ठाँसब** होइत अछि ।

चारू कातसँ कसल खाटकें **चौकस** कहल जाइत छैक । छेद पैघ रहने ओहिमे पासि एम्हर-ओम्हर डोलैत रहैत छैक । एहन स्थितिमे पौआ ओ पासिक सम्बद्धताकें **ढिलढिल** कहल जाइत छैक । किञ्चित ढिलढिलक हेतु **ढिलढिलाह**

शब्दक प्रयोग होइत अछि। ढिलढिल सम्बद्धतावलाक एम्हर-ओम्हर डोलबाक भाव **हिलडुल** होइत अछि आ एहन वस्तुकें **हिलडुलाह** कहल जाइत छैक।

पट्टीविहीन खाटक एकटा प्रभेदमे सम्मुखीन पौआक प्रत्येक जोड़ मध्यभाग मे नटबोल्ट पर कसल रहैत छैक आ कैंचीक आकृतिक निर्माण करैत छैक। ई सहजतापूर्वक मोड़ल जा सकैत अछि। एकर दुनू पासिक ऊपर बोरा ठोकल रहैत छैक। स्थान परिवर्तनमे उपयोगी एहि खाटकें **सफारी** कहल जाइत छैक। कम लम्बाइवला खाट जाहि पर सुतलासँ पैर बाहर निकलि जाइत छैक, ओकरा **गोड़कट** कहल जाइत छैक।

एक गोटाक सुतबा योग्य कम चाकर खाटकें **एकजानिआ (आँ/वाँ)** आ दू गोटाक सुतबा योग्य बेस चाकर खाटकें **दुजनिआ (आँ/वाँ)** कहल जाइत अछि ।

खाट आदि सुतबाक साधनक जाहि भागमे माथ देल जाइत छैक, ओहि भागकें **सीरम/सिरमा/सिरहन्ना/सिरहान/सिरहाना/सिढ़न्ना/ सिढ़ान / सिढ़ाना / सिढ़ानी/ सिरहानी/सिरहौना/मुरथाड़ी** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **सिरवाँसी** कहने छथि (बि० पी० लाइफ, पृ. 122)। सिरमाक विपरीत भाग जेम्हर पैर राखल जाइत अछि, से **गोड़थरि/गोड़थरिया/गोड़थारी/ पोतन्ना /पौतान / पौथन्ना / पौथान /पौथाना/ पौदान** कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन एकरा **पथाना** सेहो कहने छथि (तत्रैव, पृ० 122)।

सुतबाक हेतु उपयोगी दोसर साधन **चौकी/चउकी/चउँकी** होइत अछि । एकर चारू पौआक उपरका भाग ओ पासि-पट्टीक उपरका सतह एक तलमे होइत छैक। पासि, पट्टी ओ पौआक ऊपर तकथा ठोकल रहैत छैक। तकथा ठोकबाक क्रिया **पाटब** होइत अछि।

चौकीक तकथा सभ नामा-नामी अथवा चौड़ा-चौड़ी पाटल जाइत छैक । आद्यन्त एकेटा तकथा रहने **सल्लग/एकसल्लग** आ बीच-बीचमे दोसर तकथा जुटल रहने **जोड़** कहल जाइत छैक।

मजगूतीक हेतु चौकीक पासिमे पट्टीक समानान्तर अनेक पट्टी सभ बीच-बीचमे ठोकल रहैत छैक । एहि मध्यवर्ती पट्टी सभकें **डासा/दासा/पुस्तमान/पोस्तमान** कहल जाइत छैक।

पौआकें हिलडुल होयबासँ बचयबाक हेतु पौआ तथा पासि ओ पट्टीक बीच त्रिकोण आकृतिक काष्ठखंड दुनूकें सम्बद्ध करैत ठोकल जाइत छैक । एकरा **कोनिआँ/ब्रैकिट/ब्रैकेट** कहल जाइत छैक।

चौकीक दूटा तकथाक बीचक अन्तरकें **जैन/फाँक/फाट/फाड़ि** कहल जाइत छैक। एकर तकथाक अन्तिम छोरकें **कोर/किनार/किनारा/किनारी** कहल जाइत छैक। ऊपरसँ अन्तिम छोरकें **कंछी/कनछी** कहल जाइत छैक। पौआ ओ पट्टीक बीचवला भागकें **कोन** कहल जाइत छैक। तकथाक जे भाग पौआ, पासि

ओ पट्टीक बाहर रहैत छैक ओकरा **काँख/काँखी** कहल जाइत छैक। तकथा डेओढ़्याढ़ रहने ओकर अतिरिक्त भागकें काटि देल जाइत छैक। एहि काटल भागकें **छिकार** कहल जाइत छैक।

काष्ठकर्ममे कोनो वस्तुक टूटल अवयवकें पुनः संयुक्त कऽ कार्ययोग्य बनायब **भङठी/मरम्मति** कहल जाइत छैक । अवयव असम्बद्ध होयबाक क्रिया **भङठब** होइत अछि। काज करैत काल भेल तकनीकी बाधाक कारणें काजक प्रगति बाधित होयबाक स्थिति **भाङठ/बेट्ठनि/बेठनि/मेठनि लागब** होइत अछि ।

भङठीक हेतु उपयोगमे आनल तकथाकें **बट्टम/बटम/बटन/बत्ता** कहल जाइत छैक। मोट काष्ठखंडवला भाग टूटल रहला पर ओकर दुनू कात पत्तर दऽ सम्बद्ध करबाक क्रिया **चौसाल करब** होइत अछि । दूटा तकथाकें जोड़बाक हेतु तऽरसँ देल पटरीकें **साफट** कहल जाइत छैक।

स्नानादि करबाक हेतु छोट आकृतिक वर्गाकार चौकीकें **असनानी/असलानी** कहल जाइत छैक । अत्यन्त लघु आकृतिक चौकीकें **पटरा** कहल जाइत छैक। धियापुताकें सुतयबाक हेतु चारूकातसँ घेरल चौकीकें **पलना/पालना/झुलबा** कहल जाइत छैक।

चाकर एक तकथा अथवा कम चाकर एकाधिक तकथासँ पाटल चौकीक लघु प्रभेदकें **बेंच/बिरिंच** कहल जाइत छैक । साधारण बेंचकें **मुंडाबेंच** कहल जाइत छैक। ओठङबाक व्यवस्थासँ युक्त बेंचकें **अरामी बेंच** कहल जाइत छैक। विद्यालयमे नेनालोकनिक पोथी राखिकऽ लिखबाक हेतु ढाल कऽ पाटल तकथासँ बनल बेंचक एकटा ऊँचगर प्रभेदकें **डेस्क** कहल जाइत छैक ।

पैघ आकृतिक चौकीकें **तखतपोस/तखतपोस/तकथपोस्त/तकथपोस** कहल जाइत छैक। एकर आधुनिक ओ अलंकृत प्रभेद सभमे दुनू पासि पृथक्-पृथक् रहैत छैक मुदा दूटा कऽ पौआ, पट्टी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक । पौआ ओ पट्टीक सम्बद्ध भाग वास्तविकसँ ऊपर धरि रहैत छैक आ घेरा बनबैत छैक। खाटक एहि पैघ प्रभेदकें **पलंग/पलङ** कहल जाइत छैक। छोट पलङकें **पलङिया/पलङरी** कहल जाइत छैक। पलङक अपेक्षाकृत अधिक ऊँच प्रभेदकें **कोच** कहल जाइत छैक। नीचा दिस चारूकातसँ तकथा द्वारा घेरल पलङक प्रभेदकें **दीवान** कहल जाइत छैक ।

सीरम ओ गोड़थारीक घेरा तथा पौआक काटक आधार पर सामान्य आकृतिवला पलङकें **सादा** ओ नक्काशीक काजसँ युक्त पलङकें **छपुआ** कहल जाइत छैक।

चौखूट काष्ठखण्डक घेरासँ युक्त पलङक एक कातक दुनू पौआक उपरका भागकें जोड़ऽवला काठकें **रेली/रेलिङ** कहल जाइत छैक । रेलिङ ओ पौआ सँ घेरल भाग **खड़िया/खढ़िया** कहल जाइत छैक।

कोनो-कोनो पलङक खड़ियामे लकड़ीक छोट-छोट खरादल टुकड़ी लम्ब रूपमे लगाओल रहैत छैक। एहि खरादल काष्ठकें **करौना** कहल जाइत छैक । जाहि पलङक खड़ियामे लकड़ीक बेलनाकार दण्ड लागल रहैत छैक, ओकरा **रूलदार पलङ** कहल जाइत छैक।

खड़ियामे सरदर काष्ठखंड रहला पर ओहिमे अनेक प्रकारक नक्काशी कयल जाइत छैक। नक्काशीक काज कमार अपना बुद्धिसँ, **फरमाइसक** अनुसार अथवा छपल **केटलक** (catalogue) देखि कऽ करैत अछि ।

नक्काशीक फूल दुइ प्रकारक होइत अछि। **छिलुआ** आ **ऑरलामेन्टल** (Ornamental)/**खोधामावला**। छिलुआ फूल काढ़बाक हेतु लकड़ीकें उपरे-उपर छीलिकऽ आकृति निकालल जाइत छैक । खोधामाक हेतु लकड़ीक सतहकें खूब गँहीर कऽ विभिन्न प्रकारक आकृति निकालल जाइत छैक। नक्काशी द्वारा उत्पन्न उत्तल तलकें **गोला**, अवतल तलकें **गलता**, उत्तल आ अवतल फेंटल तलकें **कानी** आ चाकर तलकें **चप्पस/चप्पत/फाँस** कहल जाइत छैक । उत्पन्न गढ़निकें **लत्ती/झार/फुलपत्ती** कहल जाइत छैक ।

सामान्यत: किछु प्रचलित नक्काशी सभमे नागक फनक आकृतिकें **नागफेनी**, कमलक पातक आकृतिकें **कमलपत्ता**, कमलक आधा पातक आकृतिकें **हाफकमलपत्ता**, सूर्यक आकृतिकें **सुरूज** कहल जाइत छैक ।

पलङक पेरावला भागमे **प्लाइवुड, हार्डबोर्ड, सनमाइका, थ्रीपीस** आदि आयातित सामग्री सौन्दर्यक हेतु लगाओल जाइत अछि ।

खरादल ओ नक्काशी कयल पौआकें **खरादी/बम्बइया** पौआ कहल जाइत छैक। खरादी पौआमे बाघक पञ्जाक आकृतिकें **बघपञ्जा**, गिलासक आकृतिकें **गिलासी**, चूड़ी जकाँ गढ़निकें **कगना/चूड़ी/चुड़िया**, गोलाक आकृतिकें **गोलम्मा/गोला/गोलाम/गोलामा/गोलामी/बॉल**, कलशक आकृतिकें **कलशी** ओ वृत्ताकार मोट काटकें **जुड्डा** कहल जाइत छैक ।

चारिटा पौआ ओ समान आकृतिक छोट-छोट पासि-पट्टी पर तकथा ठोकि कऽ शंकुक आकृतिक एक गोटाक बैसबाक साधन बनैत अछि । एकरा टूल (Stool) कहल जाइत छैक । तीन पौआवला टूलकें **तिपाइ/तेपइ/तेपाइ** कहल जाइत छैक। रस्सीसँ घोरल टूलकें **बैसक/बैसकी/बैठकी/मचकी/मचिआ/मचोला/मचोलवा/मँची/मछकी** कहल जाइत छैक। टूलक अत्यधिक ऊँच प्रभेदकें **घोरञ्वी** कहल जाइत छैक । एकर दूटा पौआक बीच स्थान-स्थान पर बत्ता ठोकल रहैत छैक जकर सहायतासँ एहिपर चढ़िकऽ ऊँचाइकें पाओल जा सकैत छैक ।

चौकोक आकृतिक एकटा अन्य उपादान जकर ऊँचाइ सामान्यत: अढ़ाइसँ तीन फुट होइत छैक, **टेबुल/टेगुल** कहल जाइत छैक। ई पठन-पाठन, कुर्सी पर बैसि कऽ भोजन आदि विविध उपयोगमे अबैत अछि । एकर पासिमे बनल बाकस जकाँ व्यवस्था **दराज** कहल जाइत छैक। दराजयुक्त टेबुलकें **दराजी टेबुल** कहल जाइत छैक । पौआ, पासि ओ तकथावला भागकें मोड़ि कऽ समेटल जयबा योग्य टेबुलकें **मोड़ुआ/फोल्डिंग टेबुल** कहल जाइत छैक ।

आकार-प्रकार ओ उपयोगक आधार पर आइकाल्हि टेबुल विभिन्न नामे अभिहित होइत अछि। मुदा ई नाम सभ गृहीत शब्द थिक जे संक्रमणक प्रक्रियामे अछि। गोल आकृतिक टेबुलकें **गोल टेबुल,** चाह पीबाक हेतु कम ऊँच टेबुलकें **टी टेबुल,** भोजनक हेतु पैघ ओ अंडाकार टेबुलकें **डाइनिंग टेबुल** कहल जाइत छैक।

एक व्यक्तिक बैसबाक हेतु आधुनिक उपस्कर **कुर्सी** होइत अछि । कुर्सीमे सेहो चारिटा पौआ रहैत छैक । एकर अग्रभागक दूटा पौआ सोझ ओ छोट होइत छैक आ पछिला भागक दूनू पौआ टेढ़ ओ पैघ रहैत छैक । अगिला पौआक उपरका भागसँ करीब एक बीत नीचाँ चारू पौआ, पट्टी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। एहि पट्टीपर तकथा पाटल रहैत छैक जाहिपर लोक बैसैत अछि । पाटल तकथासँ बनल ई भाग **आसन/सीट** कहल जाइत छैक। पछिला पौआक उपरका भागक मध्य ओ अगिला पौआक उपरका भागपर होइत एकटा चाकर काष्ठखंड ठोकल रहैत छैक । एकरा **बहुआँ/बाँहि/बाहु/बाँही/हाथ/हत्था** कहल जाइत छैक। ई दूनू पाञ्जर दिसुक घेराक काज करैत छैक । पछिला दूनू पौआक उपरका भागकें सम्बद्ध करऽवला तकथाकें **तकिया** कहल जाइत छैक। एहिपर माथ अड़काकऽ लोक बैसैत अछि। आसनसँ कनेक ऊपर सेहो एकटा तकियेक आकृतिक लकड़ी पछिला दूनू पौआकें सम्बद्ध कयने रहैत छैक । एकरा **कमरतकिया** कहल जाइत छैक । तकिया ओ कमरतकियाक बीच अनेक उदग्र काष्ठखंड सभ ठोकल रहैत छैक। ई सभ सीक कहल जाइत छैक । कुर्सीक चारू पौआकें स्थिरता प्रदान करबाक हेतु पट्टीसँ चारि आङुर नीचाँ करीब दू आङुर चाकर चारिटा पटरी चारू पट्टीक समानान्तर चारू पौआकें सम्बद्ध करैत ठोकल रहैत छैक। एकरा सभकें **गाँज** कहल जाइत छैक। चारू पौआक निचला भागसँ करीब चारि आङुर ऊपर ठोकल गाँज सभकें **छान** कहल जाइत छैक ।

नट-बल्टूक सहायतासँ कुर्सीक मोड़बा योग्य प्रभेदकें **मोड़ुआ कुर्सी** कहल जाइत छैक। पैघ बाँही, खूब चाकर सीट ओ ढालू तकियावला आरामदेह कुर्सीक प्रभेदकें **आरामकुर्सी** कहल जाइत छैक । गद्दीदार सीटवला कुर्सीक अत्याधुनिक प्रभेदकें **सोफा** कहल जाइत छैक । दूटा एकजनिआ आ एकटा दुजनिआ सोफा मिलिकऽ **सोफासेट** कहबैत अछि।

जमीन पर बैसिकऽ भोजन करबाक हेतु काष्ठक करीब चारि-पाँच आङुर ऊँच समतल आधारक व्यवहार होइत अछि । एकरा **पीढ़ी/पिर(ड़)ही/बैसकी/बैठकी** कहल जाइत छैक । **विद्यापति पदावलीमे** एहि हेतु **पिढ़ि** शब्द आयल अछि (मि. म., पद-596)। पैघ आकृतिक पीढ़ीकेँ **पीढ़ा/पिर(ड़)हा** कहल जाइत छैक । एकर छोट आकृतिकेँ **पिढ़िया** कहल जाइत छैक। एकर आधारमे दूनू कात लकड़ीक नाम-नाम दंड ठोकल रहैत छैक । ई दूनू एकर उपरका तकथाकेँ जमीनसँ ऊपर उठौने रहैत छैक। एहि दंडद्वयकेँ **गोड़ा/गोड़ानी/ गोड़िया/गोड़ी/डंटी** कहल जाइत छैक। लघु आकृतिक गोड़ाविहीन पिढ़हीकेँ **चटुआ** कहल जाइत छैक । ओना पीढ़ी शब्द काष्ठक समस्त चौखूट आसनक हेतु प्रयुक्त अछि ।

पैरमे एकटा काठक वस्तु पहिरल जाइत अछि । एकरा **खरा(ड़ा)म/खणाम/ खरा(ड़) ओं/खणाओं/पदुक्का** कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन एकरा **खड़ाओनि** सेहो कहने छथि (मै० क्रैस्टोमैथी पृ० 154)। लोकगीतमे एहि हेतु **खड़म** शब्दक प्रयोग भेटैत अछि (कोशी गीत पृ० 25)।

खड़ामकेँ पैरक अंगुठसँ पकड़बाक हेतु ओकर अग्रभागमे एकटा छोट सन खरादल काष्ठक दंड लागल रहैत छैक । एकरा **खुट्टी/खूटी/खूँटी/खुटरी** कहल जाइत छैक। खुट्टीक उपरका भाग अपेक्षाकृत बेस चाकर ओ गोल रहैत छैक । एकरा **फुलिया/छत्ता** कहल जाइत छैक। खुट्टीक निचला भागक छेदमे पैसल बाँसक पातर टुकड़ीकेँ **मेखी** कहल जाइत छैक।

खड़ामक जाहि समतल भागपर तरबा रहैत छैक ओकरा **पिढ़िया** कहल जाइत छैक। पिढ़ियाकेँ जमीनसँ ऊपर उठल रखबाक हेतु एँड़ी आ चाङुर लग खड़ाममे खतिकऽ **गोड़ा(रा)/गोड़ि(रिया)** बनाओल रहैत छैक । जाहि खरामक गोड़ा खिया जाइत छैक, ओकरा **खियोटी/खिनौरी** कहल जाइत छैक।

बिना खुट्टीक खड़ामकेँ **बदहा/बधहा/बधा/बाधा** कहल जाइत छैक। एहिमे पैरकेँ रस्सीक फानी घेरने रहैत छैक ।

गोड़ाविहीन खड़ामक एकटा प्रभेद **खर(ड़)पा** कहल जाइत अछि। एकर अग्र भागमे रबरक अथवा चामक अर्द्धचन्द्राकार फीता लागल रहैत छैक, जकर बीचमे पैर फँसाओल जाइत छैक। छोट खड़पाकेँ **खड़पी** कहल जाइत छैक । दूनू पैरक खड़ाम जोड़ा ओ जोड़ाक प्रत्येककेँ **पल्ला/पवाइ** कहल जाइत छैक।

शृंगारक पात्र सम्बन्धी सामग्री : कमार काष्ठक किछु सामग्री बनबैत अछि जकर उपयोग शृंगार-प्रसाधन ओ तकरा रखबाक हेतु होइत छैक।

केस थकड़बाक दाँतक धारी जकाँ उपकरणकेँ **ककहिया/ककही/कंघी/ कङ्ही** कहल जाइत छैक। नम्हर ककहीकेँ **ककहा** कहल जाइत छैक । जाहि

ककहामे दूनू कात क्रमश: कम अन्तर ओ अधिक अन्तर पर दाँत बनल रहैत छैक ओकरा **दुमुहाँ कंघी/ककवा** कहल जाइत छैक। केस थकड़बाक ई उपकरण सभ आब प्लास्टिकक उपकरण द्वारा स्थानापन्न कऽ देल गेल अछि। मुदा पूजा-पाठ, विविध संस्कारक हेतु काठक कंघीकेँ शुद्ध बूझल जाइत छैक ।

गुम्बदक आकारक सिन्दूर रखबाक पैघ पात्रकेँ **सिनुरदानी/सोहगैली/सिंगौरी/ कीआ (या)/हिंगौरी** कहल जाइत छैक । एकर छोट प्रभेद **सिंगरौटी/कियौरी/ हिंगरौटी/ इंगरौटी/सपरी** कहल जाइछ । सिन्दूर घोड़बाक पैघ पात्रकेँ **सिनुरघोरा/सिंघोरा** आ छोट पात्रकेँ **सिंघोरी** कहल जाइत छैक । एहि बासन सभक उपरका ढक्कनवला भागकेँ **खप्पा/खपिया/खप्पी/खिप्पी/खीप** कहल जाइत छैक।

देहमे तेल लगयबाक हेतु तेल रखबाक चौखूट अथवा गोल, गहींर पात्र **मलबा/माला/माली/मलिया/मलसी** कहल जाइत अछि । तेल, उबटन आदि रखबाक त्रिभुजाकार बन्द पात्रकेँ **सचबा** कहल जाइछ ।

सामानक सुरक्षा सम्बन्धी सामग्री : वस्त्र ओ अन्य बहुमूल्य वस्तुकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु काठक अनेक पात्र सभ बनैत अछि। काठक पैघ घनाकार पात्रकेँ **बक्कस/बक्सा/बकस/बकसा/बाकस** कहल जाइत छैक। एकर अत्यन्त पैघ प्रभेदकेँ **सन्दुक/सन्दूक** (अ. सन्दूक)/**सनुक/सनूक/सनुख/सनुख/सिनधुक** कहल जाइत छैक । मध्यम आकृतिक सन्दूककेँ **सिन्धुकचा/सनुकचा/ सनुखचा/डिगिस/ डिग्गिस** कहल जाइत छैक । एकर छोट प्रभेद **सन्दुकची/सन्नुकची/ सनुकची/सिन्धुकची** होइत अछि ।

एक व्यक्ति द्वारा उठयबा योग्य छोट-छोट बक्साकेँ **पेटी** कहल जाइत छैक। पैघ पेटीकेँ **पेटाढ़ा/पेटाड़ा** ओ छोटकेँ **पेटाढ़ी/पेटारी** कहल जाइत छैक। शंकुक आकृतिक ढक्कनसँ युक्त पैघ बक्साकेँ **झप्पा/झाँप/झाँपा/झापा** कहल जाइत छैक। अत्यल्प गहराइवला छोट सन चौखूट पेटीक उपयोग सफरक हेतु कयल जाइछ। एकरा **सूटकेस/सफरी** कहल जाइत छैक।

शृंगार सामग्री रखबाक अत्यन्त छोट-छोट बक्साकेँ **मजूखा/मजुक्खा/मञ्जूखा** कहल जाइत छैक । पाइ रखबाक छोट सन मजुक्खाकेँ **कन्तोर(ड़)/केसी** कहल जाइत छैक। एकर लघु प्रभेद **कन्तोरि(ड़ी)** होइछ । कन्तोरक भीतर छोट-छोट विभाग सभकेँ **खाना/खोला/खोली/खोधली** कहल जाइत छैक । बनिञाक अनेक खोधलीसँ युक्त पाइ रखबाक बक्साकेँ **गल्ला** कहल जाइत छैक । खोधली ओ दराजयुक्त गल्लाकेँ **कैशबॉक्स** कहल जाइत छैक ।

बक्साक आधारवला भागकेँ **पेन/पेनी/पेनाठ** कहल जाइत छैक । पैघ बक्सा मे पेनमे लकड़ीक टुकड़ा ठोकि ओकर पेनीकेँ जमीनसँ ऊपर उठाकऽ राखल जाइत

छैक। एहि काष्ठखंड सभकेँ **गोड़ा/गोड़ानी** कहल जाइत छैक । छोट बक्साक अपेक्षाकृत छोट गोड़ाकेँ **गोड़ी/गोरि(ड़ि)या** कहल जाइत छैक । बक्साक भीतरवला खाली भागकेँ **पेट** कहल जाइत छैक। पेटमे नामानामी ठोकल तकथा सभकेँ **बड़ानी** आ चौड़ाचौड़ी ठोकल तकथा सभकेँ **एड़ुआ** कहल जाइत छैक । बकसाकेँ झँपबाक हेतु उपरका ढक्कनवला भागकेँ **छत्ता/छात/झपना/झाँप** कहल जाइत छैक । सुन्दरताक हेतु छातक कोर पर चारूकात ठोकल खतल पटरीकेँ **मगजी** कहल जाइत छैक । मजगूतीक हेतु मगजीक नीचा ठोकल पटरीकेँ **पाड़ि** कहल जाइत छैक ।

सामानकेँ जमीनक सम्पर्कसँ ऊपर रखबाक हेतु जाहि उपस्कर विशेषक व्यवहार होइत अछि से **रैक** कहल जाइत अछि। रैकमे दूटा ठाढ़ तकथाक बीच एक-डेढ़ फुटक अन्तर पर क्षैतिज अवस्थामे अनेक तकथा ठोकल रहैत छैक । क्षैतिज तकथा सभकेँ **तिसियल** कहल जाइछ। तिसियलेपर सामान राखल जाइत छैक। दूनू ठाढ़ तकथाकेँ एम्हर-ओम्हर डोलबासँ रक्षाक हेतु रैकक पृष्ठभागमे ओहि दूनू तकथाकेँ सम्बद्ध करैत दूटा बत्ता कैँचीक आकृतिमे ठोकल जाइत छैक। एहि कैँचीक आकारक आकृतिकेँ **कैँचबतिया** कहल जाइत छैक।

चारिटा पौआसँ युक्त एवं प्रत्येक खाना लग पासि-पट्टी द्वारा सम्बद्ध रैकक अपेक्षाकृत कम ऊँच प्रभेदकेँ **ह्वाट नॉट** कहल जाइत छैक ।

तकथासँ सभ दिससँ बन्द एवं आगूमे केबाड़सँ युक्त रैकक प्रभेदकेँ **अनबारी/अनमारी/ अलमारी/आलमारी/आलमीरा/अलेमारी** कहल जाइत छैक।

आलमारीक निचला भागमे गोड़ा लागल रहैत छैक । उपरका भागमे सौन्दर्यक हेतु बनाओल घेराकेँ **मुड़ेर/मुड़ेरा** कहल जाइत छैक। एहिमे केबाड़क पल्लाकेँ अग्रभागक चारू कात ठोकल चारि-पाँच आङुर चाकर काठक फ्रेममे कब्जा द्वारा सम्बद्ध कयल जाइत छैक। फ्रेमकेँ **अलीन** कहल जाइत छैक ।

कोनो-कोनो आलमारीमे आगू-पाछू घुसकऽवला पल्ला लगाओल जाइत छैक। एहि पल्लाकेँ **चलानी पल्ला** कहल जाइत छैक। एहिठाम चलानीक अर्थ आयातित नहि भऽ आगू-पाछू घुसकऽवला होइत छैक।

जाहि आलमारीक उपरका भागमे कोट आदि टङबाक हेतु लोहाक अनेक छड़ लागल रहैत छैक ओकरा **बाडरो/हैंगरटैप** कहल जाइत छैक। भोज्य पदार्थकेँ माछी आदिसँ सुरक्षित रखबाक हेतु लोहक जालीसँ घेरल आलमारीकेँ **मीटकेस/मीकचाँप** कहल जाइत छैक। ईंटाक देवालमे बनाओल आलमारीकेँ **खिलान/देबालगीर** कहल जाइछ।

कपड़ाकेँ रखबाक अनेक दंडसँ युक्त एकटा उपस्कर **अलना** होइत अछि । अयना लागल काठक ताखा सेहो **अलना** कहल जाइत अछि । आमदकद अयना

लागल अनेक दराजसँ युक्त स्त्रीगणक शृंगार प्रसाधन रखबाक ओ शृंगार करबाक हेतु प्रयुक्त उपस्करकेँ **शोकेस/सिंगारदान** टेबुल कहल जाइत छैक ।

काष्ठकर्म द्वारा ई समस्त उपस्कर सामानक सुरक्षाक हेतु बनाओल जाइत अछि।

अन्य विविध सामग्री : पूर्वोक्त वर्गीकृत उत्पादन सबहिक अतिरिक्त काठक विभिन्न सामग्री सभ काष्ठकर्म द्वारा आवश्यकता भेला पर उत्पादित होइत अछि।

मिथिलामे पूर्वमे बच्चा सभकेँ लेखन शिक्षाक हेतु काठक पातर तकथीक प्रयोग होइत छल। कारी रंगसँ पोति, कचरासँ रगड़ि, चमकाकऽ ओहि पर गाबिसक मोसि आ करचीक कलमसँ लिखल जाइत छल। ई लेखाधार **पाटी** कहल जाइत छल मुदा आब ई सिलेट द्वारा स्थानापन्न भऽ गेल अछि।

कागत पर पाँती खिचबाक हेतु लकड़ीक बेलनाकार दंडकेँ **डंड़िपन्ना / डँड़िपड़ना/डँड़िपाड़ा** कहल जाइत छैक। दोआत रखबाक काष्ठाधारकेँ **दस्ती/कलमदान** कहल जाइत छैक। ग्रन्थकेँ जमीनक सतहसँ ऊपर राखिकऽ पढ़बाक हेतु प्रयुक्त एकटा उपस्करकेँ **रेहल** कहल जाइत छैक। एहिमे एकेटा तकथा दू समान भागमे बीचोबीच चीड़ल आ परस्पर सम्बद्ध रहैछ। खोलला पर दूनू कैँचीक आकृतिमे खुलि जाइत छैक। टाङिकऽ पुस्तकादि रखबाक पटराकेँ **ठठरी** कहल जाइत छैक।

देवमन्दिरक केबाड़केँ **पट/पट्ट** कहल जाइत छैक । भगवानक पूजास्थलक पटराकेँ **फल्ली** कहल जाइत छैक। भगवानकेँ बैसयबाक हेतु काठक घरकेँ **सिंहासन** कहल जाइत छैक। साओनक झूलामे भगवानकेँ झुलयबाक आसनकेँ **झूला/विमान/सिंहासन** कहल जाइत छैक। ओना हाथीक हौदा परक काष्ठ निर्मित आसन सेहो **सिंहासन** कहल जाइछ।

अगरबत्ती खोंसबाक उपस्करकेँ **धुपदानी** कहल जाइत छैक। देवमन्दिरमे घड़ीघंट बजयबाक मुङरीकेँ **ठोकना** कहल जाइत छैक। भगवतीक मन्दिरक समक्षक बलिप्रदानक खुट्टाकेँ **महिषा/बलिकट्टा** कहल जाइत छैक। हनुमत्मूर्तिक हेतु हुनक प्राचीन अस्त्र **गदा** सेहो काठक बनाओल जाइत अछि।

यज्ञमे आहुति देबाक लकड़ीक नाम अग्रभागसँ युक्त करछुकेँ **स्रुव/स्रुरुव** कहल जाइत छैक। स्रुवक एकटा प्रभेद **स्रुचि** कहल जाइत अछि। उपनयनमे पाँचो आङुरक आकृति उखरल छोट छोलनीक व्यवहार होइत छैक। एकरा **पञ्चाङ्ग** कहल जाइत छैक । कुमरमक खीर लारबाक हेतु छोट सन दाबिकेँ **दुद्धी दाबि** कहल जाइत छैक।

बरुआकेँ बैसबाक हेतु छोट सन पीढ़ीकेँ **चटबा** कहल जाइत छैक। साधु-सन्यासी काठक गहीँर ओ अर्द्धवृत्ताकार मूठसँ युक्त काठक जलपात्रक उपयोग करैत छथि। एकरा **कमण्डल/कमण्डलु/कवण्डल** कहल जाइत छैक।

माटिक पैघ देवमूर्ति बनयबाक हेतु काठक आधारकेँ **चाल** कहल जाइत छैक। चालक आधार आयताकार काष्ठखंड रहैत छैक आ पृष्ठभागमे ई अर्द्धचन्द्राकार उत्तल पेरासँ युक्त रहैत छैक।

दीपकेँ उँच स्थान पर रखबाक व्यवस्थाकेँ **दीअठ/ दीअठि/ दीयठ/दीयठि/ दीपदान/दीपदानी/लावन/लावनि** कहल जाइत छैक । ई काठक अतिरिक्त माटि ओ धातुक सेहो बनैत अछि।

कसरत करबाक भारी ओजनक काठक एकटा उपकरण **मुगदर/मुँगदरन/ मुङरदन/ मुगनदर/मुगदल/मुदगर/मुदगल** कहल जाइत अछि । एकरा हाथसँ उठाकऽ भँजला पर बाँहिक मांसपेशी मजगूत होइत छैक ।

मूसकेँ फँसयबाक हेतु काठक परकेँ **मुसकल/मुसकाँड़ी/मुसकाणी** कहल जाइछ।

सनकल मनुष्यकेँ बन्हबाक काठक उपस्करकेँ **हड़ि/हड़ी** कहल जाइत छैक। मैथिलीक ई अत्यन्त प्राचीन शब्द थिक । वृद्ध वाचस्पतिक भामती टीकामे अर्गल शब्दक व्याख्याक हेतु एहि देशी शब्दक प्रयोग भेल अछि।

ऊँच स्थान पर चढ़बाक उपकरण **असघनी/सीढ़ी/सिर(ड़)ही** कहल जाइत छैक। एहिमे काठ अथवा बाँसक दूटा समानान्तर ठाढ़ दंडमे थोड़े-थोड़े दूर पर क्षैतिज रूपमे नीचासँ ऊपर धरि अनेक दण्ड सभ लागल रहैत छैक ।

भार उठयबाक हेतु नोंखगर अग्रभागसँ युक्त बाँसक बातीक उपयोग होइत छैक। एकरा **पटइ** कहल जाइत छैक। पटइकेँ **बहिँगा/बहिंङा** सेहो कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **बहिँगी/बहिङी** होइत अछि।

धूम्रपानक एकटा साधन **हुक्का** होइत अछि । हुक्काक मध्य भागमे एकटा काठक नली लागल रहैत छैक । एकरा **डंटी** कहल जाइत छैक ।

हड़ाहि मालक गरदनिमे बान्हल काष्ठखंड जाहिसँ ठोकर लगबाक कारणेँ ओ तेज नहि दौड़ि सकैत अछि, से **घरचेङा/ठेकर/ठोकर/ठोकरा/ढोकन/ ढोकना/ढोलना/होलना** कहल जाइत छैक।

नाङर व्यक्तिकेँ आस देबाक हेतु काठक त्रिकोण उपकरणकेँ **बैसाखी/बरसाती** कहल जाइत छैक ।

देबालमे कपड़ा आदिकेँ टङबाक खूटींकेँ **खुट्टी/खुटरी/देवालखूटी** कहल जाइत छैक। जनउ खेहबाक हेतु लकड़ीक खरादल दंड सेहो **खुट्टी/खेहना/जनउखेहना** कहल जाइत अछि।

पोखरिमे यज्ञ भेलाक बाद एकटा खूब मोट ओ पैघ काष्ठदंडकेँ पोखरिक बीचमे गाड़ल जाइत छैक । एकरा **जाट/जाठ/जाइठ/जाठि** कहल जाइत छैक।

यज्ञकालमे पोखरिक कोन पर एकटा भुट्ट मनुष्याकृति सेहो गाड़ल जाइत छैक। एकरा **कठबोगना** कहल जाइत छैक।

घाट रहित पोखरिमे कपड़ा आदि रखबाक हेतु देल पैघ काष्ठखंडकेँ **काठ/दारु/पाट** कहल जाइत छैक।

इनारक तल पर जामुनक काठक एकटा पहियाक आकृति बैसाओल जाइत छैक। एकरा **जम्मठि/जमकाठ/जमवट/जमुअठि/जमोट/जमौट** कहल जाइत छैक।

इनारक ऊपरमे देल लकड़ीक जाफरी सन ढाँचा जे लोककेँ ओहिमे खसबासँ बचबैत छैक, से **जंगला/जङला/जङ्गला** कहल जाइत छैक । इनारक बीचोबीच देल लकड़ीक धरनि जाहिपर पैर राखि पानि खींचल जाइत छैक, से **गोड़पौठा/पाओठ/ पओठा/पौठा/पावठ/लतमारा** कहल जाइत छैक।

धियापुताक हेतु काठक अनेक प्रकारक खेलौना बनैत अछि । खेलयबाक हेतु गोल आकारक ठोस वस्तुकेँ **गेन/गेन्द** कहल जाइत छैक। सूतक सहायतासँ नचयबाक हेतु काठक एकटा गोल खेलौना **लट्टू** होइत अछि। एहिमे एकटा नोंखगर काँटी लागल रहैत छैक। एकरा **गुन्वा/गुन्झा/गुञ्झा/गुझिया** कहल जाइत छैक ।

काठक एकटा करीब एक-डेढ़ हाथक पातर दंडमे दू दिससँ दूटा काठेक पहिया पेसल रहैत छैक। दुनू पहियाक कोरवला भागमे चारूकात छेद रहैत छैक। एहि छेद सभमे बाँसक अनेक कमची दुनू पहियाकेँ सम्बद्ध करैत लागल रहैत छैक । कमची पर सूत लपेटि कऽ एहि खेलओनाक द्वारा गुड्डी उड़ाओल जाइत छैक। गुड्डी उड़यबाक ई उपकरण **लटवा/लटाइ/लटेर** कहल जाइत अछि।

गणेश चतुर्थीमे धियापुता काठक दूटा समान आकृतिक खराजल दंडकेँ परस्पर टकराकऽ आवाज निकालैत अछि। एहि दंड युगलकेँ **गुल्ली-डंटा/पुल्लीडंटा** कहल जाइछ।

लकड़ीक पहियामे एकटा डंटा लगाकऽ गुड़कयबाक खेलओनाकेँ **गुड़कन्ना/गुड़कुन्ना** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो गुड़कन्नामे एकटा पंछीक आकृति लागल रहैत छैक जे पहिया नचौला पर बेर-बेर अपन अग्रभागसँ ओहि पर आघात करैत छैक । एहि खेलओनाकेँ **कठफोड़ा** कहल जाइत छैक । खेलयबाक हेतु काठसँ निर्मित घोड़ाक आकृतिकेँ **कठघोड़ा/कठघोड़वा** कहल जाइत छैक।

जनमौटी बच्चाकेँ चुप रखबाक हेतु एकटा छोट सन पातर काष्ठखंडक दुनू कात गोल आकृति बनाओल रहैछ आ एहि गोल भागकेँ रङि देल जाइत छैक। नेना एकरा चटैत रहैत अछि आ खेलाइत रहैत अछि। एहि खेलओनाकेँ **चटनी** कहल जाइत छैक।

धियापुताकेँ चलब सिखयबाक हेतु तीनटा पहिया पर आधारित गाड़ीकेँ **गड़गड़ा/गड़गाड़ा/लरोना** कहल जाइत अछि ।

काष्ठ व्यवसाय द्वारा काठ ओ बाँसक विभिन्न प्रकारक दंड सेहो बनैत अछि। पातर दंडकेँ **ठेंगा/ठेङा** कहल जाइत छैक । छोट ठेंठाकेँ **ठेङनि** (**कोसी गीत**, पृ. 29)/**ठेङी** कहल जाइत छैक। एकर नाम ओ पातर प्रभेदकेँ **छड़ी** कहल जाइत छैक । बाँसक करची सन पातर छड़ीकेँ **छौंकी** कहल जाइत छैक।

छड़ी आदिक उपरका मोट भाग जतऽसँ ओकरा पकड़ल जाइत छैक से **मूठ** कहल जाइत अछि । एकर तीक्ष्ण अग्रभागकेँ **खूभी** कहल जाइत छैक । अर्द्धवृत्ताकार मूठकेँ **मकुआ** कहल जाइछ। मकुआसँ युक्त छड़ीकेँ **मकुआवला** छड़ी कहल जाइत छैक ।

पैघ दण्डकेँ **लाठी** कहल जाइछ । मोट लाठीकेँ **लट्ठ** कहल जाइछ। ऊपर दिस मोट लाठीकेँ **चोप** कहल जाइछ। चानीसँ मढ़ल लाठीकेँ **बलम/बल्लम** कहल जाइछ। वृद्ध लोककेँ आस देबाक लाठीकेँ **फराठी** कहल जाइछ। लाठीक अग्रभागकेँ **हूर(ड़)/हूरा(ड़ा)** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत मोट हूराकेँ **हूरा(ड़ा)ठ** कहल जाइछ।

सामान्यतः एक हाथक दंडकेँ **एकहत्थी**, डेढ़ हाथक दंडकेँ **डेढ़हत्थी**, दू हाथक दंडकेँ **दुहत्थी** ओ अढ़ाइ हाथक दंडकेँ **अढ़ैहत्थी** कहल जाइत छैक । बड़द आदिकेँ हँकबाक हेतु एक-डेढ़ हाथक पातर दंडकेँ **पेना/पैना/पौना** कहल जाइत अछि । चाकर पेनाकेँ **सटका** कहल जाइछ। अपेक्षाकृत मोट पेनाकेँ **डंटा/डण्टा/डंडा** कहल जाइत अछि। छोट मुदा मोट डंटाकेँ **सोटा/सोंटा** कहल जाइत अछि। खूब मोट सोंटाकेँ **डाँग/डाङ** कहल जाइछ। फेकि कऽ आम आदि तोड़बाक डंटाकेँ **झटहा/झठहा** कहल जाइत अछि। डेढ़हत्थीक मोट प्रभेदकेँ **डरोखा/डरौखा/डटौका** कहल जाइत छैक।

फलककेँ छेविकऽ गोल बनाओल बेलनाकार ओ चिक्कन दंडकेँ **रोल** कहल जाइत छैक। गोल मूठसँ युक्त रंगीन ओ खराजल रोलकेँ **फुलहत्था** कहल जाइछ । बैसलमे बाँहिकेँ आस देबाक हेतु व्यवहृत साधुलोकनिक काष्ठदंड जकर उपरका भागमे अँग्रेजीक 'यू' अक्षरक आकृति बनल रहैत छैक, **आसा सोंटा** कहल जाइत छैक।

बँसकरम

आधार सामग्री सम्बन्धी शब्दावली : बँसकरमक मूल आधार सामग्री प्रसिद्ध वनस्पति **बाँस** अछि । एकर आनुषंगिक सामग्री थिक विभिन्न प्रकारक रंग।

बाँसक समूहकेँ **घानि** कहल जाइत छैक । बाँसक घानिसँ युक्त प्रदेशकेँ **बँसबिट्टी/ बँसबाड़ि/बसाड़ि/बाँसक कोठि/बाँसक कोठी** कहल जाइत छैक। बँसबाड़िक प्रत्येक ओहन भाग जतऽ एकहि बाँससँ अनेक बाँस उगल रहैत छैक से **बीट/बीठ** कहल जाइत अछि।

बीटसँ बाँसक जे अंकुर निकलैत छैक से **कोपर/कोपल** कहल जाइत छैक। एक साल धरिक बाँसक गाछकेँ सेहो **कोपर/कोपल** कहल जाइत छैक । एकरा **एकसल्ला** सेहो कहल जाइछ। दोसर सालक बाँसकेँ **दुसल्ला/भाउर** कहल जाइत छैक। तेसर सालक बाँस **तिनसल्ला** होइत अछि। एहन बाँसक भीतरी भाग ललौन भऽ जाइत छैक आ एकर वृद्धि अवरुद्ध भऽ जाइत छैक। एहि अवस्थामे एकरा **पाकल** कहल जाइछ। पकबासँ पूर्व बाँसक भीतरी भाग उज्जर ओ अपेक्षाकृत मोलायम रहैत अछि। एहन स्थितिमे एकरा **काँच** कहल जाइत छैक।

बाँसक माटिक तरमे रहऽवला भागकेँ **ओध/ओइध/ओधि** कहल जाइत छैक। बाँसक खेतीक हेतु भाउरक ओधि रोपल जाइत छैक । काँच बाँसकेँ काटि देला पर सुखलाक बाद ओकर ऊपरी सतह पर संकुचन उत्पन्न होयबाक क्रिया **चोकटब** होइत अछि।

कोनो-कोनो बाँसक बीचहिमे कोनो अंश असमये सुखा जाइत छैक । एहन स्थलमे चुट्टी नामक कीट अपन **बिल/बीहरि** बना देने रहैत छैक । एहि ऐबसँ युक्त बाँसकेँ **चुट्टीमार** कहल जाइत छैक । मुट्ठीमे अँटबा योग्य मोटाइवला बाँसकेँ **मुठबाँसी** कहल जाइत छैक। सामान्यसँ अधिक मोट बाँसकेँ **चहरि** कहल जाइत छैक। दृढ़ताहीन एवं लचकबाक प्रवृत्तिवला बाँसकेँ **लप्पच/लिबलिबाह** कहल जाइत छैक। किञ्चितो भार पड़ला पर अति नम्रताक भाव **लिबलिब** होइत अछि।

बाँसक आकृति बेलनाकार होइत छैक । एहि बेलनक भीतरी भाग फोंक होइत छैक आ थोड़े-थोड़े दूर पर बेलनाकार भागक मुँह बन्द रहैत छैक । दूटा बन्द मुँहवला भागक दूरी **पोर** कहल जाइत छैक । लग-लग पोरवला बाँसकेँ **घनपोर** आ दूर दूर पोरवला बाँसकेँ **पोरगर** कहल जाइत छैक । अत्यन्त दूर-दूर पोरवला बाँसकेँ **नमपोर/लमपोर** कहल जाइत छैक। जाहि-जाहि ठाम मुँह बन्द रहैत छैक ओहि स्थल सभकेँ **गीरह/गिड्डह/गिट्ठह** कहल जाइत छैक। एही गीरहपरसँ बाँसक शाखा-प्रशाखा निकलैत छैक । गीरहक जाहि भागसँ प्रशाखा फुटैत छैक ओकरा **अखुआ/अँखुआ/आँखि** कहल जाइत छैक । अँखुआ पर आरम्भमे एकटा पातर त्रिभुजाकार आवरण रहैत छैक। एकरा **कनसुपती/बनसुपती/सुपती** कहल जाइत छैक। अँखुआपरसँ निकलल पातर-पातर वंशाकृति प्रशाखाकेँ **करची/कोइन** कहल जाइत छैक।

मिथिलामे बाँसक अनेक प्रभेद उगाओल जाइत अछि । **हरो(ड़ो)त/हरौ(ड़ौ)ता/हरौ(ड़ौ)ती/हड्डथ/हरूथी** (**बुक०**) बाँस लम्बाइमे छोट मुदा अत्यन्त कठोर किस्मक होइत अछि। ई पातर चीरिकऽ मोड़ला पर गीरहपरसँ टूटि जाइत छैक। तेँ बँसकरममे हारने हरौतक उपयोग होइत अछि। ई गृहनिर्माणक भारवह सामग्रीक रूपमे अधिक उपयोगी अछि।

चाब/चाभ/चाभा/चाभी/जाब (बुक) अपेक्षाकृत अधिक नाम, चिरयबामे सहज ओ पोरगर होइत अछि। अत्यधिक लम्बाइसँ युक्त बाँसकेँ **नमछर** कहल जाइत छैक। बाँसक **मकोर (ड़)/मकला/मोकला** प्रभेद नमछर, लिबलिबाह ओ नमपोर होइत अछि। ई दुनू प्रभेद बेंसकरमक हेतु प्रशस्त बूझल जाइत अछि।

बाँसक अन्य प्रभेद **बिलैंती** अछि। ई अत्यन्त पातर, छोट आ मजगूत होइत अछि। तेँ एकर व्यवहार खासकऽ लाठी बनयबामे होइत छैक। अत्यन्त मोट बाँसक प्रभेद **बनबाँस** कहल जाइत अछि।

बुकनन महोदय पूर्णियाँ जिलाक तीन गोट बाँसक प्रभेदक उल्लेख कयने छथि- **भलूक, रतन ओ घुरघुटिया** (पूर्णियाँ रिपोर्ट, पृ. 309)।

आइकाल्हि नेपालक वन्य क्षेत्रसँ आयातित बाँसक सेहो उपयोग होइत अछि। एकरा **नेपाली/पहाड़ी/पहड़िया** बाँस कहल जाइत छैक।

बाँसक गीरहपरसँ करचीकेँ काटि कऽ पृथक् करबाक क्रिया **पाड़ब** होइत अछि। पाड़ला उत्तर करचीक जे मूलस्थानीय भाग बाँसमे बचि जाइत छैक ओकरा **खुट्टी/खोंच** कहल जाइत छैक। खोंचयुक्त बाँसकेँ **खोंचाह/खरखोंच** कहल जाइत छैक। खोंचकेँ छीलि कऽ बाँसकेँ चिक्कन करबाक क्रिया **सजायब/रोलब** (सं. लोलयति) होइत अछि।

बाँसक अन्तिम छोरपरक पातरवला भागकेँ **छिप्पी/छिपाठ/छिपाठी/छीप** कहल जाइत छैक। छिपाठीक बादवला अपेक्षाकृत मोट भागकेँ **अगार(ड़)/अगारी(ड़ी)** कहल जाइत छैक। अगारीक बादवला बाँसक मध्यवर्ती भागकेँ **अँधेरा/अँधेरी/मँझगेर** कहल जाइत छैक। अँधेरीक बादवला अपेक्षाकृत मोट भाग **पोर** कहल जाइत अछि। जड़ि दिसुक भागकेँ **जड़ियाठ/जड़ियाठी/जड़ियौठ/जड़ियौठा** कहल जाइत अछि। जड़ियाठ ओ पोरक बीचवला बेस मोटगर भागकेँ **फेरी** कहल जाइत छैक।

जड़ियाठक अन्तिम एक-दूटा पोर **घनगीरह** होइत अछि। एकरा काटि कऽ पृथक् कऽ देल जाइत छैक आ ठेहा तथा मुड़राक रूपमे व्यवहार कयल जाइत छैक। एहि भागकेँ **मोँहछ** कहल जाइत छैक।

जड़िसँ छीप धरि सम्पूर्ण बाँसकेँ **सरदर/सल्लग/एकसल्लग** कहल जाइत छैक। अकाजक होयबाक कारणेँ छीपकेँ काटि कऽ पृथक् कऽ देबाक क्रिया **छीपब/छिपाठब** होइत अछि। छीप काटल बाँसकेँ **छिपाठल/छिपकट्टा** कहल जाइत छैक।

बाँसकेँ खण्डशः कटबाक क्रिया **टोनब** होइत अछि। टोनला पर बाँसक छोट-छोट खण्डकेँ **टोटा/टोंटा/टोना** कहल जाइत छैक। बाँसकेँ चिरबाक क्रिया **फारब/ओदारब** होइत अछि। बाँसक ओदारकेँ **चिहुट** कहल जाइत छैक। काँच

बाँसक सुगमतापूर्वक ओदरबाक क्रिया **फर फर ओदरब** अछि। सुक्खल बाँसक ओदरबामे कठिन होयबाक क्रियाकेँ बाँसक **बैसि जायब** कहल जाइछ।

बाँसकेँ बीचोबीच चीरिकऽ दू भागमे बँटला पर प्रत्येक खण्ड **फड़ुआ/फाँक** कहल जाइत छैक। फड़ुआकेँ चिड़लासँ **फट्ठा/बत्ता** बनैत छैक। पातर फट्ठाकेँ **फट्ठी/बत्ती/बाती** कहल जाइत छैक। चीरल फट्ठा-फट्ठी आदिकेँ **चीर** सेहो कहल जाइत छैक। अँधेरीक चीरकेँ **सिम्मा** कहल जाइत छैक। जाहि चीरमे बाँसक आँखिवला भाग नहि अबैत छैक ओकरा **सझिला/सिधला/सुधला/ सोझिला** कहल जाइत छैक। जाहि चीरमे आँखिवला भाग सेहो रहैत छैक ओकरा **गेठिला** कहल जाइत छैक। बाँसक क्रमिक पोरक आँखि विपरीत दिशामे रहबाक कारणेँ गेठिलावला चीरकेँ दू-दू पोर पर गीरह लगसँ काटि देला उत्तर ओ सिधलामे बदलि जाइत छैक। एहि दू-दू पोरक टुकड़ीकेँ **ओरा/दुपोरा/देपुरा/दोपरा** कहल जाइत छैक।

फाड़ला उत्तर कोनो-कोनो बाँसमे उज्जर रंगक एकटा औषधि भेटैत छैक। एकरा **वंशलोचन** कहल जाइत छैक।

बत्तीक बाह्य त्वचावला भाग **पीठ/पिठिया** कहल जाइत छैक। भीतरी भाग **पेट** कहल जाइत छैक। पेटक उपरका भागकेँ छिलबाक क्रिया **पेट मारब** होइछ। पेट ओ पीठक बीचवला अपेक्षाकृत मोलायम अंशकेँ **गाद/गादि/गादी/गुद्दा/गुद्दी/ गुड्डी/छाहा** कहल जाइत छैक। गुद्दाक मोट परतसँ युक्त बाँसकेँ **गदिगर/गुदगर** कहल जाइत छैक। बत्तीक पिठियावला भाग चीरि कऽ पृथक् कऽ लेलाक बाद गुद्दावला अंशकेँ **गभिया** कहल जाइत छैक।

उपरका भागक अतिरिक्त अंशकेँ छिलबाक क्रिया **छोलब** होइत अछि। छोललापर बेकार भाग पृथक् कऽ देल जाइत छैक। ओकरा **छिल्लन/छीलन/छोलन/ झिल्ली/कचरी/कोचरी/ खढ़-पतार** कहल जाइत छैक। भीतरी भागक ऊपरी अंशकेँ छोलबाक क्रिया **गदिआयब** होइत अछि। सतहकेँ छोलिकऽ चिक्कन ओ समतल करबाक क्रिया **चिकनायब** होइत अछि। उपरे-ऊपर किञ्चित छिलबाक क्रिया **चाँछब** होइत अछि।

एक पोर नाम बाँसकेँ चीरि कऽ करीब-करीब एक इंच चाकर टुकड़ी सभ बहार कयल जाइत अछि। एहि टुकड़ी सभकेँ **बोइन/बोनि/बोनी** कहल जाइत छैक। बोइनक निचला ओ उपरका भागक मोटाइ एक रंग करबाक हेतु जे अतिरिक्त अंश छीलि कऽ फेंकि देल जाइछ, ओकरा **कच्चर** कहल जाइत छैक। बोइनकेँ चौड़ा-चौड़ी चीरि कऽ निकालल पातर-पातर खंडकेँ **बेंट/बेंत** कहल जाइत छैक। पात सन पातर बेंत सभ **पाट/पाटा/पात/पाता/पाती** कहल जाइत अछि। बन्हनक हेतु उपयुक्त अत्यन्त पातर पाटकेँ **बन्हन/बसौंती** कहल जाइत छैक। पाटक छोट-छोट टुकड़ीकेँ **गबहट/गभौट/छीटक** कहल जाइत छैक। काजक क्रममे

जाहि अनुपयुक्त पातकेँ काटि कऽ फेकि देल जाइत छैक, ओकरा कटुआ कहल जाइत छैक।

जाहि बत्तीक पेटवला भाग छीलि कऽ चिक्कन कऽ देल गेल रहैत छैक, ओकरा **दल/दलिया/दाल/दाइल/दालि** कहल जाइत छैक । मोट दालिवला बत्तीकेँ **दलगर** कहल जाइछ। दालिकेँ नामा-नामी चिरलासँ **दलकी/दिलकी** बनैत छैक। चाकर दलकीकेँ **कनरी** ओ गोल दलकीकेँ **काइम/केचुआ** कहल जाइत छैक। काइम ओ कनरीक हेतु सामान्य शब्द **कमची** अछि । पैघ ओ चाकर कमचीकेँ **कमचा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर दलकीकेँ **बक्खी/तेरौन/सीट** कहल जाइत छैक । बासनक पेनमे प्रयुक्त तेरौनकेँ **भरनी** कहल जाइत छैक।

दलक चौड़ाइवला भागकेँ ओदारिकऽ निकालल पातर-पातर टुकड़ी सभ **कारा/कौँरा** कहल जाइत छैक । पिठियावला काराकेँ **गोइट/गोटि** आ गभियावला काराकेँ **मेण्डा/मण्डी/मेण्डी** कहल जाइत छैक । गोटि, मण्डी आदिक अग्रभागकेँ छीलिकऽ नोँखगर करबाक क्रिया **खपब** होइत अछि ।

काइम, कनरी, पाट आदिक रौदमे सूखिकऽ कठोर भऽ जयबाक क्रिया **खरायब/खरा जायब** होइत अछि। बाँसकेँ छिलबाक क्रममे घर्षणसँ त्वचाछेदनकेँ **चँछायब** कहल जाइत अछि आ एहिसँ उत्पन्न विकृतिकेँ **चाँछ** कहल जाइत छैक। कखनो-कखनो बाँसक सूक्ष्म शल्याकृति चाममे घुसि जाइत छैक । एकरा **खैंक** कहल जाइत छैक।

डोम द्वारा निर्मित बासन सभमे पाटेसँ बन्हन देल जाइत छैक। मुदा बन्हनक हेतु तारक पात, ओकर डंटीवलाभाग, **बेंत** एवं **बकरी** नाम घासक उपयोग सेहो देखल जाइत अछि । तारक पातकेँ **छन्जा/छाजा** कहल जाइत छैक। पातक डंटीवला भागकेँ **डल्ली/डमखोरा** कहल जाइत छैक । डल्लीकेँ छीलि कऽ निकालल पातर टुकड़ी सभकेँ **चोप** कहल जाइत छैक ।

बँसकरममे सौन्दर्यक हेतु अनेको बासन रङलो जाइत अछि । एहि हेतु **सिकिया, गुलाबी, गन्हकी** ओ **हरियर** रंगक उपयोग होइत अछि । अत्यन्त लालीयुक्त गाढ़ रंगकेँ सिकिया, हल्का लाल रंगकेँ गुलाबी, पीयर रंगकेँ गन्हकी ओ हरित वर्णकेँ हरियर कहल जाइत छैक ।

औजार सम्बन्धी शब्दावली : बँसकरममे बाँसकेँ कटबाक हेतु, चिरबाक हेतु एवं ओहिसँ पातर-पातर ओदार बहार करबाक हेतु विभिन्न आकृतिक लौह औजारक उपयोग होइत छैक । करीब एक फुट नाम, चारि आङ्गुर चाकर ओ आधा आङ्गुर मोट लौह औजारकेँ **कत्ता/काता/कतिआ/बाँके** कहल जाइत छैक। पैघ ओ टेढ़ आकृतिक कत्ताकेँ **दाब/दाबि/दबिया/दबिला** कहल जाइत छैक। कत्ताक छोट प्रभेदकेँ **करदा/कत्ती/काती** कहल जाइत छैक । करीब बीत भरि नाम एवं दू आङ्गुर

चाकर कत्ताक प्रभेदकेँ **कोतरा** कहल जाइत छैक । कोतराक अत्यन्त लघु आकृतिकेँ **कोतरी/चूड़ी/बन्हकरिया** कहल जाइत छैक ।

बाँस फारबाकाल काती पर आघात करबाक लेल बाँसक जड़ि दिसुक एक-दू पोरक खंडक व्यवहार कयल जाइत छैक। एकरा **मुँगरा/मुङरा/मुङ्गरा/मुङरि/मुङरी** कहल जाइत छैक । फारबामे सुविधाक हेतु दूटा अलगल फाँकक बीच देल वंशखण्ड अथवा रोड़ा आदिकेँ **बँसफारा/खुभिया** कहल जाइत छैक ।

बसौतीकेँ चिक्कन करबाक हेतु ओकरा एकटा बाँसक पातर टोन पर राखि ओहिपर कोतरी धऽ हल्लुकेसँ दबाव दैत बाम हाथेँ घीचि रंदा कयल जाइत छैक। बाँसक एहि टोनकेँ **बन्हनचच्छा/धीरा** कहल जाइत छैक ।

सिरकी बनयबाक हेतु दुइ गोट **खुट्टा, सुतरी** ओ लकड़ीक **गुटका**क उपयोग होइत छैक।

माटिक जाहि बासनमे रँग राखल जाइत छैक ओकरा **रँगहा** कहल जाइत छैक। तैयार बासनकेँ रङबाक हेतु खजूरक डल्लीक निचला भागकेँ चूड़ि कऽ बनाओल औजारक उपयोग होइत छैक। एकरा **कूच/कुची/कुच्ची** कहल जाइत छैक ।

बासन छनबाक हेतु एकटा तौला अथवा ओकर कनखावला भागक उपयोग होइत छैक। एकरा **लधना** कहल जाइत छैक।

उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली : बँसकरम द्वारा बाँसक विभिन्न प्रकारक गृहस्थोपयोगी उपकरण सबहिक निर्माण कयल जाइत छैक। बाँसक एहि उपकरण सभकेँ **बसही/बँसही** कहल जाइत छैक ।

बाँसक बत्तीसँ अन्न रखबाक अत्यन्त पैघ आ गोल आकृतिक भंडारगृहक निर्माण कयल जाइत अछि । एकरा **ढाक/ढाढ़/बखारी/बथारी/बदारी** कहल जाइत अछि। अत्यन्त पैघ आकृतिक बखारीकेँ **ढाढ़ा/बखार** कहल जाइत छैक । बखारीकेँ **कोठि/कोठी/ठेक/ढक/ढाढ़ी/बेढ़ी/मड़क** सेहो कहल जाइत छैक । ढककेँ कतहु-कतहु **मुनहर** सेहो कहल जाइत छैक । **ढक-मुनहर** युग्म शब्दक रूपमे प्रचलित अछि ।

बखारीक आधारकेँ **पेन/पेना/पेनी/पेंदी/पेंदो** कहल जाइत छैक । एकर मध्यवर्ती खाली भागकेँ **पेट/पेटी** कहल जाइत छैक । बखारीक ढक्कन खउढ़, बत्ती आदिसँ बनाओल चार रहैत छैक। ठेक आदिकेँ झँपबाक ढक्कनकेँ **पिहना/पिहान/पिहानी/ पेहना/पेहान/पेहानी** कहल जाइत छैक । बखारीसँ अन्न निकालबाक हेतु खुलल भागकेँ **मुँह/छेद** कहल जाइत छैक।

अन्नादिकेँ रखबाक ओ स्थानान्तरित करबाक हेतु अनेक आकृतिक बासन सभ बनैत अछि। एहि बासन सभमे कारा, काइम ओ कनरीक उपयोग होइत छैक । एकरा सभकेँ **अखरा** कहल जाइत छैक ।

अखरा बासनक सभसँ पैघ प्रभेद **ओड़ा/ओड़िया** होइत अछि । एहिमे दू मनसँ अधिक अन्न अँटैत छैक। छोट ओड़ाकेँ **ओड़ी** कहल जाइत छैक ।

छिट्टा-पथिया आदिमे काइम अथवा कनरीसँ बनल प्रत्येक घेराकेँ **मेढ़** कहल जाइत छैक। पाट सभकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु छिट्टाक जड़िमे अपेक्षाकृत चाकर पाटक उपयोग होइत छैक। एहि पाटकेँ **साटन** कहल जाइत छैक। छिट्टाक ऊपरी भागमे मेढ़ सभकेँ नीचा दिस घिचने रहबाक हेतु काइमसँ बनल लहरिक आकारक बन्हनकेँ **नथनी** कहल जाइत छैक।

ठाढ़ घेरावला ओड़ीक छोट प्रभेदकेँ **ढाक/ढाका** कहल जाइत छैक । छोट ढाककेँ **ढाकी** ओ एकर लघु प्रभेदकेँ **ढकिया** कहल जाइत छैक ।

आध मन धरि अन्न अँटयवला ढाकीकेँ **छिटा/छिट्टा/छीटा/छैंटा** कहल जाइत छैक। एकर लघु प्रभेद **छिटी/छिट्टी/छैंटी** कहल जाइत अछि ।

ढालू कोरवला छिट्टाकेँ **पथिया/दउरा** कहल जाइत छैक। छोट पथिया **पथनी/पथुली/दउरी** कहल जाइत अछि । पान रखबाक छोट पथनीकेँ **पनपथिया/पनबसना** कहल जाइत छैक । सीधा रखबाक छोट पथिया **सिधौंकी** ओ कुटान-पिसानमे व्यवहृत छोट पथिया **कुटपिसिया** कहल जाइत अछि ।

कम ठाढ़ घेरावला बासन **टोकरी/टोपरी** कहल जाइत अछि । एकर पैघ प्रभेद **टोपा/टोकरा/टोपरा** होइत छैक।

जाहि छिट्टा आदिमे जतेक अन्न अँटैत छैक ताहि आधार पर ओकरा **पँचसेरी/दससेरी, अधमोनी/अधमनी, एकमनी/मोनही, दोमोनी/दुमनी/दुमोनी** आदि कहल जाइत छैक।

फलादिकेँ एक स्थानसँ दोसर स्थानपर स्थानान्तरित करबाक हेतु अत्यन्त पातर ओ विरल काइमसँ बनल ढक्कनयुक्त टोकरीक व्यवहार होइत छैक । एकरा **खाँची/खोंझी/खैंझी/खोंची/खोइन्ची/झब्बा** कहल जाइत छैक । एकर पैघप्रभेद **खाँच/खाँचा/खंझा/खैंचा/खैंझा** कहल जाइत अछि आ छोट प्रभेद **खचिया/खचोली** होइत अछि।

मुसहर माटि उघबाक हेतु एकटा उत्थर बासनक उपयोग करैत अछि । एकरा **मटिकट्टा/टाला** कहल जाइत छैक।

ऊपरसँ पाटक बिनाइसँ युक्त दोहरा छिट्टाकेँ **धम्मा** कहल जाइत छैक । एकर छोट आकृति सभ **धाइम/धामि/धामी/धमिया** होइत अछि।

चाउर आदि फटकबाक हेतु पाटसँ बीनल वृत्ताकार बासनकेँ **सूप** (प्रसिद्ध उपलक्षण: सूपक भाँटा; प्रसिद्ध लोकोक्ति: खाइ-पिबै लय सुखराती, डेङबै लय सूप)/**सूपा** कहल जाइत छैक। किछु क्षेत्र ओ वर्गमे एकरा **डगरा** कहल जाइत छैक (प्रसिद्ध उपलक्षण: डगराक बैगन) । एकर छोट प्रभेद **डगरी** होइत छैक।

डगराक आधारवला भागकेँ **चटवा** कहल जाइत छैक । दूटा चटवासँ युक्त डगराकेँ **दोहरा डगरा** कहल जाइत छैक । चटवाक नीचा दिसुक पाटकेँ **छान** आ ऊपर दिसुक पाटकेँ **बहरौट** कहल जाइत छैक । एकर चारू कातक मण्डलीकृत घेराकेँ **मर्रा/मरड़ा/मर्री/मरड़ी** कहल जाइत छैक। मरड़ाक हेतु गोटि ओ मण्डीक व्यवहार होइत अछि । एकरा वृत्ताकार परिपथमे मोड़बाक क्रिया **असनायब** होइत अछि । मोड़ल मरड़ामे देल तात्कालिक बन्हनकेँ **बसौती** कहल जाइत छैक।

मर्राक परित: अपेक्षाकृत कम चाकर दोसर मर्राकेँ **केतला** कहल जाइत छैक। मरड़ा ओ केतलाक बीच चटवाक कोरवला भाग फँसल रहैत छैक । एहि मध्यवर्ती भागकेँ **गहबन** कहल जाइत छैक । बन्हन देबामे सुविधाक हेतु केतलाक चारू कात अत्यन्त पातर पाटसँ बनल घेराकेँ **बहरी/बेहरी/बेढ़ी/टोपिया** कहल जाइत छैक ।

बन्हनक अन्तिम छोर पर ओहिसँ बनल वृत्ताकार परिपथ जकर सहायतासँ डगराकेँ काँटी आदिमे टाङल जा सकैत छैक, से **टंगना/टंगनी** कहल जाइत छैक।

अन्नादिकेँ उठयबाक ओ फटकबाक हेतु पाछू ओ दुनू पाँजर दिस घेरायुक्त बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **कोनिआ (यॉं, आँ)/कोनसूप/कोलसूप** कहल जाइत छैक। जाहि समाजमे सूपक हेतु डगरा शब्दक व्यवहार होइत अछि ताही समाजमे कोनिओकेँ **सूप** कहल जाइत छैक। एहि बासनक घेरा आगूसँ पाछू दिस क्रमशः बढ़ल रहैत छैक आ पछिला दूनू छोर पर कोन बनबैत छैक। एकर दूनू कातवला भागकेँ **बाँही** ओ पाछूवला भागकेँ **कोना** कहल जाइछ। छोट कोनिआकेँ **सुपती** कहल जाइत छैक।

चिक्कस आदिकेँ चालबाक हेतु एकटा छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **चलनिआ/चलनी/चालनि** (प्रसिद्ध कहबी: चालनि दुसलनि सूपकेँ जनिका सहस्सर गोट छेद, कोन पुरुषके भेलई गाय, चालनि लऽ दुहाबऽ जाय) कहल जाइत छै। एहि बासनक चारू कात करीब चारि-पाँच आङुर ऊँच वृत्ताकार घेरा रहैत छैक। घेरावला भागकेँ **खखरी** कहल जाइत छैक। एकर छिद्रमय आधारकेँ **तरी** कहल जाइत छैक । तरीक छेद सभकेँ **बे/आखरि** कहल जाइत छैक। तरीमे दू प्रकारक पाट लगैत छैक । तरवला अपेक्षाकृत कम चाकर पाटकेँ **झनकी** ओ ऊपरवला अपेक्षाकृत बेसी चाकर पाटकेँ **पत्ता** कहल जाइत छैक।

धानक गूड़ाकेँ भुस्सासँ पृथक् करबाक हेतु डगराक आकृतिक छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **चलना/गुरचल्ला/गुरचलना/गुरचाला** कहल जाइत छैक।

हवा करबाक चौखूट साधन **बीअ (य) नि/बेना/बेनियाँ(आँ,आ)** होइत अछि। एकर छोट प्रभेदकेँ **बीनी** कहल जाइत छैक । एकर लम्बाइवला भागक एक

दिस दुनू कातसँ दुइ गोट चाकर मण्डी चौकोर भागकेँ चपने बान्हल रहैत छैक । एकरा **पटकम्ही/परॉंच** कहल जाइत छैक । बीयनिकेँ नचयबाक हेतु दुनू परॉंचक कातमे एकटा गीरहयुक्त बेंत लागल रहैत छैक। एकरा **डॉंट** कहल जाइत छैक । डॉंटक निचला भागमे एकटा पातर वंशाग्रक फोंक बेलन घुसाओल रहैत छैक । एकरा **छुच्छी/फौंफी/लारी** कहल जाइत छैक।

कोइलाक चूल्हि पजारबाक हेतु डॉंट ओ लारीविहीन दोहरा बीयनिकेँ **पंखा/पंखी** कहल जाइत छैक।

अन्न आदिकेँ जोखबाक उपकरण **तरजू/तराजू/तरजुइ** होइत अछि । तराजूक पलड़ा बाँसोसँ बनाओल जाइत छैक। पलड़ाक आधारवला भाग कारा ओ काइमसँ बीनल जाइत छैक। एकरा **अखरा** कहल जाइत छैक। ऊपरवला भाग पाटसँ बीनल रहैत छैक। एहि भागकेँ **गिलेफी/छौंछी** कहल जाइत छैक । अखरा ओ छौंछीक जोड़ पर देल मण्डीकेँ **जीही** ओ गोइटकेँ **मथामि/मथनी** कहल जाइत छैक । जीही ओ मथनीक बीच देल पातर मंडीकेँ **कंठी** कहल जाइत छैक।

पानक बीड़ा रखबाक दुटा परस्पर सम्बद्ध होमऽवला खोलसँ बनल बन्द पात्रकेँ **बिर(ड़)हरा/बिर(ड़)हारा** कहल जाइत छैक । एकर पैघ आकृतिमे टकुरी, सूत आदि सेहो राखल जाइत अछि। कृषि कोष (पृ० 233) मे एकरा **बेलहरा/बेलहारा** कहल गेलैक अछि।

पावनि-तिहार, यज्ञ ओ संस्कारक हेतु सेहो अनेक प्रकारक बासन बँसकरम द्वारा उत्पादित होइत अछि । एहि सभ काजक हेतु डोमेक बनाओल बासनकेँ प्रशस्त बूझल जाइत छैक। एहन बासन सभ **डोमऽ** कहल जाइत अछि ।

विआहमे धार्मिक आकृतिक एकटा पैघ बासनक प्रयोजन होइत छैक । एकरा **गैंहिरका डाला** कहल जाइत छैक । एकर उपरका भागमे मेहराबक आकृति बनाओल रहैत छैक। एहि आकृतिकेँ **पालकी** कहल जाइत छैक। डालाक आधारकेँ जमीनसँ ऊपर रखबाक व्यवस्थाकेँ **गोरा** कहल जाइत छैक । डालाक पालकी ओ बाह्य भागमे अनेक प्रकारक बीनल आकृति सभ खोंसल रहैत छैक। फूलक आकृतिक सजावटकेँ **फुलपत्ती**, जिलेबीक आकृतिक सजावटकेँ **लुल्ही**, गोल आकृतिक बनावटकेँ **गेंद/बॉल** ओ पंछीक आकृतिक बनावटकेँ **सुगा/पौड़की** कहल जाइत छैक । कोनो-कोनो डालामे एकटा चौखूट केन्द्रक परितः पाट सभक दोसर छोर छिड़िआयल रहैत छैक। एहि बनावटकेँ **घिरनी** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु अनेक रंगीन पाटक एकटा छोरकेँ संश्लिष्ट कऽ आ दोसर छोर सभकेँ छिड़िआकऽ सौन्दर्य उत्पन्न कयल जाइत छैक। एहि सजावटकेँ **झार/झुनझुना** कहल जाइत छैक।

डालाक मध्यवर्ती भागमे चारू कातसँ मजगूतीक हेतु देल मण्डीकेँ **हड़िआ/हड़िला/हिड़ड़ा/हिड़ला** कहल जाइत छैक।

कोजगरा, द्विरागमन आदिमे गोरा लागल उत्थर बासनक व्यवहार अछि । एकरा **डाला** कहल जाइत छैक ।

कन्याक द्विरागमनक साँठमे गोल आकृतिक गँहीर ढक्कनयुक्त बासन देल जाइत छैक। एकरा **पेटाढ़/पेटार/झाँप/झाँपा** कहल जाइत छैक । एकर पैघ प्रभेद **पेटारा** कहल जाइत छैक। छोट आकृतिक पेटारकेँ **पेटाढ़ी/पेटारी/पौती** कहल जाइत छैक। शृंगारक वस्तु रखबाक छोट पौतीकेँ **मुँहमोछनी** कहल जाइत छैक । वस्तुजात रखबाक पैघ समतल पौतीकेँ **सखारी** कहल जाइत छैक।

पौतीक नीचावला भागकेँ **तरोटा/तरौटा/तलौटा/सरिखा** कहल जाइत छैक। एकर उपरका भाग गुम्बदाकार होइत अछि । एकरा **झाँप/झपना/झाँपन** कहल जाइत छैक।

पौतीक बिनओट दोहरा होइत छैक । बाहरी भाग कारा ओ काइमसँ बीनल जाइत छैक आ भीतरी भाग पाटसँ। पाटसँ बीनल भाग **पेन्हौटा** कहल जाइत छैक ।

भारमे मिठाइ आदि सैंठबाक हेतु पौतीक आकृतिक गँहीर बासनकेँ **दलबा/कोठी** कहल जाइत छैक। एहिमे पाटक बिनाइ नहि रहैत छैक।

केरा आदिक भार सैंठबाक हेतु काइम ओ कारासँ बीनल अत्यन्त कम घेरायुक्त गोल ओ उत्थर पात्रकेँ **अखरा/दौरा/दउरा** कहल जाइत छैक। अखरापर पाटक बिनाइसँ युक्त दोहरा दौराकेँ **चँगेरा/चडेरा** कहल जाइत छैक। विआहमे प्रथम परिछन कालमे जाहि चँगेरामे ठक-वक आदि राखि वरसँ प्रश्न सभ पूछल जाइत छैक, ओहि चडेराकेँ **चानडाला/जानडाला** (सं. ज्ञानडाला) कहल जाइत छैक । छोट चडेराकेँ **चँगेरी/चडेरी/चँगेली/दउरी/फुलुकी/फुलौकी** कहल जाइत छैक। साँठक हेतु दही पौड़बाक छोट चँगेरीकेँ **ताइ** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट आकृतिक चँगेरीकेँ **डाली/डलिया** कहल जाइत छैक। गँहीर डालीकेँ **मौनी/मौनिया/मौनी** कहल जाइत छैक। पैघ ओ अधिक गँहीर मौनीकेँ **मौना** कहल जाइत छैक। धियापुताक जलखइ करबाक छोट मौनीकेँ **चाँग/चाङ** कहल जाइत छैक।

भारक हेतु छोट-छोट पथियाकेँ **हकरा पथिया** कहल जाइत छैक। मधुश्रावणी ओ बरिसातिमे पूजनक हेतु बाँसक एकटा गोल आकृतिक समतल बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **छितनी** कहल जाइत छैक । एकर पैघ प्रभेदकेँ **छितना** कहल जाइत छैक। मधुश्रावणीमे टेमी दगबाक विधिक हेतु जाहि डालीमे **पोंचा**, **लहेरनी** आदि पठाओल जाइत छैक, ओकरा **लीलीडाली/लीलीमौनी** कहल जाइत छैक । विआहमे वर-कन्या द्वारा लाबा छिड़िअयबाक हेतु व्यवहृत छोट सन सुपतीकेँ **कोनीयेनी/पनडाली** कहल जाइत छैक।

रौद-वर्षासँ बचबाक हेतु पाटसँ बीनल एकटा डंटी लागल गोल उपादानक व्यवहार होइत अछि। एकरा **छत्ता/छाता/मेघडम्बर/मेघडम्मर** कहल जाइत छैक।

फूल तोड़बाक हेतु व्यवहृत चारू कातसँ घेरायुक्त गँहीर ओ गोल पात्रकेँ फुलडाली/फुलतोरा कहल जाइत छैक । एहिमे ऊपर दिस अर्द्धवृत्ताकार डंटो लागल रहैत छैक । पैप आकृतिक एवं झपनायुक्त फुलतोराकेँ **साजी** कहल जाइत छैक। चँगेरीक आकृतिक फुलतोराकेँ **डाली/दओना/जाफरी** कहल जाइत छैक।

एहि सभक अतिरिक्त डोम विभिन्न उपयोगक वंशनिर्मित सामान सभ बनबैत अछि। भूजा भुजबाक हेतु फट्ठीक अग्रभागकेँ चीरिकऽ अन्न लाड़बाक उपकरण बनैत अछि। कखनो-कखनो बाँसक गोल-गोल पातर दंडक समूह सेहो एही काजक हेतु प्रयुक्त होइत अछि। एकरा **भुजनाठी/लरना/ लरनी/लारनि** कहल जाइत छैक। गाछ आदिकेँ माल-जालसँ रखाक हेतु बत्तीसँ बनल घेराबाकेँ **बेढ़/बेढ़ा/बेढ़ी** कहल जाइत छैक । सूगरकेँ रखबाक हेतु पैप बेढ़केँ **खोभार/खोभरा** कहल जाइत छैक। खोभारक चारु कातक खुट्टा सभकेँ **गच्चा** कहल जाइत छैक। खोभारक फाटककेँ **बेरखरी** कहल जाइत छैक। खोभारक फाटककेँ बन्द करबाक हेतु ओहिमे लागल किल्लीकेँ **धुरखुर** कहल जाइत छैक। सूगरकेँ मारबाक हेतु ओकर गरदनि लग एक गोट तीक्ष्णाग्र बाँसक कीलक उपयोग कयल जाइत छैक। एकरा **खुभिया/ खोभन्टा/सुलफा/हिकनी** कहल जाइत छैक । मकइ छोड़ैबाक हेतु एही प्रकारक छोट उपकरणकेँ **खुभिया/सुलफा** कहल जाइत छैक।

एक पोर बाँससँ करचीक कलमक आकृतिक एकटा उपकरण बनाओल जाइछ । एहिसँ माल-जालकेँ सोन्हाओन, दवाइ आदि तरल पदार्थ पिआओल जाइत छैक । एकरा **कोँड़ी** कहल जाइत छैक। होलीमे रंग-प्रक्षेपण हेतु एक पोर बाँसक अगिला गीरहमे छेद कयल ओ मध्यमे एकटा डंटा लागल उपकरणक व्यवहार होइत अछि। एकरा **फिचकोँड़ी/फिचकाड़ी/फुचकोँड़ी/फुचुक्का** कहल जाइत छैक ।

बाँसक करचीसँ बनल जालाकार पात्रकेँ **जाबी** कहल जाइत छैक । एहिसँ माल-जालक मुँह छेकल जाइत छैक । पानक खिल्लीकेँ गँथबाक हेतु तथा दाँत खोधबाक हेतु बाँसक अत्यन्त पातर दण्ड बनाओल जाइत छैक । एकरा **सिक्की/सीकी/खड़िका** कहल जाइत छैक । मुर्गीकेँ रखबाक हेतु छेहर कऽ बीनल पौतीक आकृतिक बासनकेँ **खोप** कहल जाइत छैक। चिड़इकेँ पोसबाक हेतु छोट सन घरकेँ **पिजड़ा(रा)** कहल जाइत छैक। धियापुताक हवा पर नाचऽवला खेलऔनाकेँ **घिरनी** कहल जाइत छैक।

बाँसक गोल-गोल दंडसँ बनल डमरूक आकृतिक एक गोटाक बैसबाक साधनकेँ **मोढ़ा** कहल जाइत छैक। वस्तुजात रखबाक हेतु ढक्कनयुक्त घनाकार पात्रकेँ **डेली/डोलची** कहल जाइत छैक ।

खिड़की, दरबज्जा आदि पर परदा करबाक हेतु बाँसक काइम सभकेँ सुतरी द्वारा परस्पर जोड़ि कऽ बनाओल पटियाक आकारक वस्तुकेँ **सरकी/सिरकी** कहल

जाइत छैक। सौन्दर्यक हेतु अत्यन्त पातर काइमसँ बनल सिरकीकेँ **चिक** कहल जाइत छैक।

बाँसक बासन बनयबाक हेतु फारा, काइम, पाट आदिकेँ परस्पर सम्बद्ध करबाक क्रिया **बीनब** होइत अछि । बिनलासँ उत्पन्न सौन्दर्य ओ बिनबाक मजदूरीकेँ **बिनओट/बिनाइ/बिनकराइ/बिनाठ/बिनोट/बिनौट** कहल जाइत छैक। पावनि-तिहार अथवा संस्कारक हेतु बासन बिनबाक हेतु वंशकर्मीकेँ देय अग्रधनकेँ **साइ** कहल जाइत छैक।

बिनाइ आरम्भ करबाक क्रिया **लाधब/छानब** होइत अछि । वस्तुक अपन पूर्ण आकृति प्राप्त करबासँ पूर्वक स्थितिमे ओकरा **लधनी** कहल जाइत छैक ।

पाटक बिनाइ अनेक प्रकारक होइत अछि । नामानामी ओछाओल पाटमे एक-एक पाटक अन्तर पर चौड़ा-चौड़ी पाट घुसिऐबाक विधिसँ कयल गेल बिनाइकेँ **एकाउनी** कहल जाइत छैक। एहिना दू पाट, तीन पाट, पाँच पाटक अन्तर पर सेहो चौड़ा-चौड़ी पाटकेँ घुसियाकऽ बिनाइ कयल जाइत छैक । एकरा सभकेँ क्रमशः **दोआउनी, तेआउनी, पचाउनी** बिनाइ कहल जाइत छैक । चाकर पाटमे तेआउनी बिनाइकेँ **लहेरिया** कहल जाइत छैक।

पाटक बिनाइवला वस्तुमे कोर पर उघरबासँ बचयबाक व्यवस्थाकेँ **बान/बान्ह** कहल जाइत छैक । बान्ह अनेक प्रकारक होइत छैक । स्थान विशेष पर बन्धन दऽ बान्हवला पाटक दोसर छोरकेँ ओही ठाम खोंसि देलासँ उत्पन्न बन्धनकेँ **गरनड** कहल जाइत छैक। दोसर छोरकेँ घीचिकऽ पुनः-पुनः आन अनेक ठाम बन्धन देलासँ उत्पन्न बान्हकेँ **लपेटुआ** कहल जाइत छैक। कोनियामे मरड़ा पर देल बन्हनमे एकटा बन्हनक दोसर छोर दोसर बन्हनमे कसि देल जाइत छैक। एकरा **टिपका** बन्हन कहल जाइत छैक।

डगरामे बेंत, थकरी, चोप आदिसँ अनेक प्रकारक लपेटुआ बान्ह देल जाइत छैक। साधारण लपेटुआ बान्हकेँ **खजुरिया** बान्ह कहल जाइत छैक । एकटा बान्हक दोसर छोरकेँ दोसर बान्हमे फँसा देलासँ उत्पन्न बन्धनकेँ **दुबन्हा** कहल जाइत छैक । बन्धनक छोरकेँ गहबनसँ निकालि कऽ बन्हबाक विधिसँ कयल गेल बान्हकेँ **हरैया** आ बहरीमे घुसिया कऽ कयल गेल बान्हकेँ **सरही** कहल जाइत छैक ।

छिट्टा-पथिया आदिमे सेहो बिनौटक अनेक प्रकार होइत अछि । एहिमे **खजुरिया** ओ **पचबन्हा** प्रमुख अछि । पचबन्हामे पाँचटा काइमकेँ सटाकऽ मेढ़ि देल जाइत छैक। बीचमे किछु रिक्त स्थान छोड़ि पुनः पाँचटा काइम सटाकऽ मेढ़ि देल जाइत छैक । खजुरियामे सभटा काइम सटा-सटाकऽ बीनल जाइत छैक । एहिना **तेबान्ह, चौबान्ह**मे क्रमशः तीनटा, चारिटा काइम सटा-सटा कऽ आ बीचमे थोड़ेक रिक्त स्थान छोड़ि कऽ बिनाइ कयल जाइत छैक।

बिनौटमे काइम अथवा पाट सभक परस्पर अत्यन्त सटल रहला पर ओकरा गस्सल कहल जाइत छैक । काइम अथवा पाट सभ गस्सल नहि रहला पर बिनाइकें **छेहर** कहल जाइत छैक। छेहर बिनौटवला बासनकें **झाँझर/झझरी** कहल जाइत छैक। जाहि बासनक बाह्य भाग छिड़िआयल रहैत छैक ओकरा **छितनार** कहल जाइत छैक । बासनक प्रत्येक अंग दोसर अंगक अनुरूप नाम अथवा चाकर नहि रहने ओकरा **बेडोल/बेडौल/बेढब** कहल जाइत छैक ।

बिनौटमे कारा अथवा पाटक संख्या ओ लम्बाइ वस्तुक आकृतिक अनुरूप लेल जाइत छैक। अयुग्म संख्याक हेतु **काग** ओ युग्म संख्याक हेतु **दोस** शब्दक व्यवहार होइत छैक। बिनौटक हेतु कारा अथवा पाटकें काग रहब आवश्यक बुझल जाइत छैक । से नहि रहने कारामे बन्हन नहि पड़ि पबैत छैक। एहन बिनौटकें **कुबान्ह/कुबान/उबान्ह/उबान** कहल जाइत छैक । एकरा ठीक कयलासँ उत्पन्न बिनौटकें **सुबान/सुबान्ह** कहल जाइत छैक।

बिनबाक क्रममे काइमक ओझरयबाक क्रिया **छिटकी मारब** होइत अछि । बिनैत-बिनैत काइम खतम भऽ गेला पर ओहि स्थान पर देल नव काइमकें **खोचर/खोचरि** कहल जाइत छैक । कोनो कारा छोट कटि गेला पर बिनैत काल ओहि कारामे देल जोड़कें **पच्चर** कहल जाइत छैक । बासनक **भङठीक** क्रममे लगाओल काइम, कारा आदिकें **चिप्पी/चापी** कहल जाइत छैक । काइम, कारा अथवा पाटक अपन स्थान छोड़ि देबाक क्रिया **सरकब/फसरब** होइत अछि ।

निष्कर्ष

एहि तरहें काठ-बाँस व्यवसायमूलक शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन कयला उत्तर ई स्पष्ट होइत अछि जे एहि शब्दावलीक भंडार अत्यधिक समृद्ध अछि। दूनू व्यवसायक आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादनसँ सम्बद्ध सहस्राधिक शब्दक उपयोग होइत अछि । एहि शब्दावलीमे संज्ञा शब्दक प्राचुर्य अछि । पारिभाषिक विशेषण ओ अव्यय अल्प संख्यामे व्यवहृत होइत अछि।

बँसकरममे पारम्परिक शब्दावली काष्ठकर्मक अपेक्षा अधिक जीवित अछि। काष्ठ व्यवसायक औजार ओ उत्पादन सम्बन्धी शब्दावलीमे निरन्तर परिवर्तन भऽ रहल अछि । फारसी, अरबी ओ अंग्रेजीक शब्द सभ अपन तत्सम ओ तद्भव रूपमे प्राचीन शब्द सभकें छपने जा रहल अछि ।

एहि शब्दावली सबहिक ध्वनि-परिवर्तन पर क्षेत्रीयता ओ उच्चारण दोषक प्रभाव अछि।



तृतीय अध्याय

माटि-पानि व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

मिथिलामे माटि ओ पानि जातीय व्यवसायकें विकसित होयबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक काज कयलक अछि। माटिक रूपान्तरण द्वारा अनेक प्रकारक गृहस्थोपयोगी बासन सभक उत्पादन होइत अछि। पानिसँ माछ, मखान, सिङ्हारा, चून आदि विभिन्न उपयोगी वस्तुक उत्पादन कयल जाइत अछि। पानि जल-परिवहनक प्रमुख आधार थिक। जल-परिवहन द्वारा वस्तुमे स्थान-परिवर्तन जन्य उत्पादन होइत अछि। परम्परासँ माटिक बासन बनयबाक उद्योग कुम्हार ओ पानिसँ सम्बन्धित व्यवसाय सभ पर मलाह जातिक एकाधिकार रहलैक अछि आ माटि-पानिसँ सम्बद्ध व्यवसाय एहि दूनू जातिक जातीय-व्यवसाय रहल अछि।

कुम्हार जाति

मानव सभ्यताक आरंभहिसँ माटिक बासनकें पका कऽ ओकर व्यवहार होइत रहल अछि। ई तथ्य समस्त प्राचीन सभ्यताक अवशेषक उत्खननसँ सिद्ध भेल अछि। मिथिलामे सेहो माटिक बासनक उपयोग प्राचीने कालसँ होइत रहल अछि। बासन गढ़बाक हेतु एहिठाम मोलायम माटि सहज उपलब्ध रहल अछि। माटिसँ निर्मित बासन पकओला उत्तर कठोर वस्तुक रूपमे उपयोगी भेल आ एकर उपयोगिताक खास कारण ई भेल जे एहन बासन आगियो पर चढ़ाओल जा सकैत छल। आगि पर चढ़यबा योग्य खनिज एहिठाम सर्वथा अनुपलब्धे रहल अछि। तें माटिक बासनक कोनो विकल्पो एहिठाम नहि छल। स्थानीय आधार सामग्रीक रूपमे माटिक प्रचुरता ओ सहजोपलब्धताक कारणें माटिक बासन बनयबाक उद्योग एतऽ जातीय व्यवसायक रूपमे प्रस्फुटित भेल आ एहि उद्योगसँ जाहि श्रमजीवी जातिकें चीन्हल गेल से कुम्हार कहओलक। माटिक बासन मिथिलाक जनजीवनसँ तेना जुड़ि गेल जे प्रत्येक धार्मिक ओ सांस्कृतिक कार्यक हेतु माटियेक बासन प्रशस्त बुझल जाइत रहल अछि। सामान्य उपयोगक हेतु तँ ई उपयोगी अछिये।

कुम्हारक आधार सामग्री : माटिक बासन बनयबाक क्रममे माटि पर कयल गेल विभिन्न काजकें **मटिकम** कहल जाइत छैक। मटिकममे सर्वप्रमुख वस्तु थिक **माटि/माटी/मट्टी**। गुणक आधार पर माटिक अनेक भेद होइत अछि।

कारी रंगक कठोर माटि जे पानिक सम्पर्कमे लसिगर होइत अछि, **करियौटी** कहल जाइत अछि। स्वच्छ एवं पीताभ माटि **गोरकी/चिकनी/पियरकी** कहल जाइत अछि। जाहि माटिमे बालुक बहुत अल्प मात्रा मिलल रहैत छैक से **बलसुम / बलसुन / बलसुनरी / बलसुम्ही / बलुअट / बलुसुम्ही / बलुसुँही / बलुसुमनी / बलसुन्दर/बलुसुन्दरी/बलकुचाह (हि)** कहल जाइत अछि। जाहि माटिमे बालुक मात्रा अधिक होइत छैक से **बलुआह/बलुआही** कहल जाइत छैक। जाहि माटिक टुकड़ी पर अल्प दबाब देने बुकनी भऽ जाइत छैक ओ माटि **भुसना/भुसनी** कहल जाइत अछि। सुखला उत्तर अत्यन्त कठोर मुदा पानिक सम्पर्कमे गलि जायवला माटि **केबाल** कहल जाइत छैक। कारी रंगक केवाल माटि **तेलिया केबाल** ओ पीताभ वर्णक **गोरी केबाल** कहल जाइत छैक। पाथर जकाँ कठोर माटि **पथरौटी/पथरौटिया** कहल जाइत छैक। जाहि माटिक सतह स्वयं भखरऽ लगैत छैक ओ माटि **नोनी/नोनियाह** कहल जाइत छैक। माटिपर जमल उज्जर रंगक क्षारयुक्त पदार्थ **ऊस/ऊसर** कहल जाइत छैक। सुखला उत्तर जे माटि अनेक टुकड़ीमे चनकि कऽ फाटि जाइत छैक, **चनकी माटि** कहल जाइत छैक। जाहि माटिक बुकनीकेँ पानिसँ सनला उत्तर ओहिमे छोट-छोट ढेकुरी(ड़ी) बनि जाइत छैक से **रोड़ाह/रोड़ियाह** कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन एकरा **छराही** कहने छथि (बिहार पीजेन्ट लाइफ-पृ. -161)। आँकिर-पाथरसँ युक्त माटि **अँकराह/अँकराही/कँकराह/कँकराही/पथराह/पथराही** कहल जाइत छैक। जाहि माटिमे उपर्युक्त अनेक प्रकारक माटिक गुण सम्मिलित रहैत छैक से **दोमट/दोम्मट/अमोट/अमओट/दोगला** कहल जाइत छैक। मोलायम माटि **लरम/नरम** आ कठोर माटि **कड़ा/काड़ा** कहल जाइत अछि। पानिसँ भीजल माटि **गील/गिल्ला** कहल जाइत छैक। मैली युक्त कादो **कीच/खीच** कहल जाइत छैक। खूब गलल ओ लसिगर माटि जाहि पर पैर देने पैर तऽर धरि धसि जाइछ, से **पाँक/पाँका/पाँकी** होइत अछि।

उपर्युक्त माटिक प्रभेद सभ अधिकांशत: जमीनक उपरका सतह पर भेटैत अछि। ई माटि सभ कुम्हारक व्यावसायिक उत्पादनक अनुपयुक्त होइत अछि। अभावमे केबाल, दोम्मट आदि खपड़ा बनयबाक हेतु व्यवहारमे आनल जाइत अछि। बासन गढ़बाक हेतु कुम्हार सतहसँ डेढ़-दू मर्द गँहीर खाधि खूनि माटि कोड़ैत अछि। ई माटि **कुमरौट/कुम्हरौट/कुम्हरौटी/कुमरौटी** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **कारीमाटी/करिया माटि** कहल जाइत छैक।

खाधिसँ माटि निकालबाक क्रिया **कोड़ब/खूनब** होइत अछि। माटि खुनबाक हेतु कुम्हार जे गड़हा बनबैत अछि ओकरा **चूँ/चूँआँ/चुँइ/चुँइयाँ/मटखम/मटखन/मटिखना** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **मटियार** कहने छथि (बिहार पीजेन्ट लाइफ - पृ.-112)। ओना केबाल माटिवला जमीनकेँ सेहो

मटियार कहल जाइत छैक।

एकटा **चूँआँ** कोड़बाक हेतु जतेक जमीनक आवश्यकता होइत छैक ओकरा **टिक्कर** कहल जाइत छैक। चूँआँ बेसीकाल ऊँचास खेतमे कोड़ल जाइत छैक। एहन खेत **डीह/भीठ/भिट्ठा** कहल जाइत अछि। चूआँमे पैसिकऽ माटि कोड़निहार कुम्हार **कोड़वाह** होइत अछि।

चूँआँक आकार उनटल गिलास जकाँ होइत छैक। सतह पर एकर व्यास तीन हाथ रहैत छैक जे नीचा दिसि क्रमश: बढ़ैत 12-12 हाथ भऽ जाइत छैक। व्यासक हेतु **फाँस** शब्दक व्यवहार अछि। जाहि भागमे माटि खूनल जाइत छैक, ओकरा पेटी कहल जाइत छैक।

फाँस क्रमश: बढ़ि जयबाक कारणेँ माटिक उपरका चट्टानक नीचाँ रिक्त स्थान बनि जाइत छैक। भारक कारणेँ चट्टान फाटिकऽ खसियो पड़ैत छैक। चट्टानक खसबाक क्रिया **धसना धसब** होइत अछि आ टूटल चट्टानकेँ **धसना** कहल जाइत छैक।

चूँआँमे कोड़बाक काज अनेक दिन धरि चलैत रहैत छैक। बीचमे वर्षा भऽ गेला पर पानि भरि जयबाक कारणेँ अथवा धसना धसि जयबाक कारणेँ चूआँ माटि निकालबाक योग्य नहि रहैत छैक। एकरा चूआँक **मथब** कहल जाइत छैक।

सभ चूँआँमे कुम्हरौटी माटि भेटिये नहि जाइत छैक। कोनो-कोनोमे नीचा बालु, कंकड़ाही माटि आदि सेहो भेटैत छैक। गँहीर धरि खुनला पर कोनो-कोनो चूँआँमे नीचासँ स्वत: पानिक धार निकलब शुरुह भऽ जाइत छैक। एकरा **सोआ फूटब** कहल जाइत छैक।

जाहि चूँआँमे नीचा धरि उपयुक्त माटि भेटैत जाइत छैक ताहूमे 12-13 हाथ पर गेला पर कोड़वाहकेँ भयाओन लागऽ लगैत छैक। माटि कोड़ैत काल कोदारि चलबाक अथवा परस्पर गप्प करबाक आवाज चूआँक ऊपर बैसल कुम्हारकेँ अनुगुंजनक संग सुनि पड़ैत छैक। चूआँक अनुगुंजनक ध्वनि गोँ-गोँ कहल जाइत अछि। जखन कोदारिक आवाज **थबथब** सूनि पड़ैत छैक तँ चूआँक चट्टान **दरकबाक** पुर्वाभ्यास भऽ जाइत छैक। एहन स्थितिमे माटि कोड़ब बन्न कऽ देल जाइत छैक।

चूँआँक माटिकेँ उघबाक हेतु, ओकर छोट-छोट गोल पिंड बनाओल जाइत छैक जकरा **थिम्हा/गोनी** कहल जाइत छैक। गोनी सभकेँ कुम्हारक कार्यस्थलपर जमा करबाक क्रिया **जड़ करब** होइत अछि। गोनी सभक समूहसँ बनल माटिक ढेरी **टीला/टिल्हा** कहल जाइत छैक।

चूँआँसँ माटि बहार करबाक उपयुक्त समय जेठ-बैसाखक दिन होइत अछि। एही समय कुम्हार भरि सालक काजक हेतु माटि एकट्ठा कऽ लैत अछि।

आनुषंगिक आधार सामग्री

अपन उत्पादनक क्रममे कुम्हारकेँ माटिक अतिरिक्त अन्य अनेक आनुषंगिक सामग्रीक आवश्यकता होइत छैक। फड़ि बनयबाक हेतु ओ बासन तैयार करबाक हेतु बालु माटिक **मेजनक** रूपमे व्यवहृत होइत अछि। फैला, तौला आदिक उपरका भाग ओ कनखा पर काँचेमे **गाचिस** माटिसँ पोतल जाइत छैक। एहिसँ बासन चिक्कन ओ सुन्दर भऽ जाइत छैक।

गाचिस माटि **ऊसर** खेतसँ जमा कयल जाइत अछि। पहिल वर्षाक बून पड़ला पर ऊसर खेतक उपरका भागमे **पपड़ी** जमि जाइत छैक। पपड़ीवला माटिकेँ काछि कुम्हार घर अनैत अछि। उक्खरिमे ई माटि **हलमहल** कऽ कूटल जाइत छैक। कूटल माटि स्वच्छ जलमे **घोरि** देल जाइत छैक। बालुवला भाग नीचा बैसि जाइत छैक। उपरका **घोरकेँ** पाँच-सात दिन धरि तौलामे स्थिर छोड़ि देल जाइत छैक। जमला पर तौलामे जे धूसर वर्णक द्रव रहैत अछि, ओकरे गाचिस कहल जाइत छैक। तौलाक पेनीपर चून जकाँ उज्वर पदार्थ जमि जाइत छैक। ई **भट्ठाक** रूपमे व्यवहृत होइत छैक। भट्ठाक उपरका भागमे कारी रंगक गाढ़ द्रवक परत जमल रहैत छैक। एकरा **जमरी/ममुड़ी** कहल जाइत छैक।

मूरतक हेतु माटि तैयार करबाक लेल माटिमे **सनक** कुट्टी अथवा तूर मिलाओल जाइत छैक। एहि तरहेँ तैयार कयल माटि **सिलोह** कहल जाइत अछि।

मूरतकेँ रङबासँ पूर्व ओहि पर चूनक **पोतन/पोचाड़ा** देल जाइत छैक।

मूरत रङबाक हेतु विभिन्न प्रकारक बाजारू मशाला ओ रंगक प्रयोग होइत अछि। बाजारू मशालामे **बार्निस, खल्ली/पत्थलखल्ली/पथलखड़ी** आदिक उपयोग होइत अछि। रंग दुइ प्रकारक होइत अछि– **किनुआ** आ **बनौआ**। कुम्हार बाजारसँ **लाल, गुलाबी, आल, पिउरी/पीयर, हरियर, बुलू, असमानी, सफेदा, नारंगी, सिन्दूरी, कारी, बैगनी, कत्थी** आदि रंग कीनैत अछि। पानि पड़ला पर रंग छूटि जयबाक क्रिया **धोखड़ब** होइत अछि। जे रंग पानि पड़ने धोखड़ि जाइत छैक ओकरा **कचिया** ओ जे नहि धोखरैत छैक, से **पकिया** कहल जाइत छैक।

एक रंगमे दोसर रंग फेंटि कऽ बनौआ रंग सभ बनैत अछि। सिन्दूरी रंगमे पिउरी मिलओला पर सोना सन चमकऽवला रंग बनैत अछि। एकरा **सोनौला/सोनौली** कहल जाइत छैक। आल ओ पीयर रंगक मिश्रण **लड्डूलाल** कहल जाइत छैक। सफेदा रंग पातर कयला पर चानीक आभासँ युक्त भऽ जाइत छैक। एकरा **रुपौला/रुपौली** कहल जाइत छैक। आल रंग **तेजलाल** ओ साधारण लालीवला रंग **मर्कली लाल** कहल जाइत छैक। तीव्र रंग **गाढ़** ओ कम तीव्र रंग हल्लुक होइत अछि। अत्यन्त हल्लुक रंग **फिक्का** कहल जाइत अछि। फिक्का हरियर रंग **सबुज** कहल जाइछ। सिन्दूरीक हेतु **हिङ्गुरी** शब्दक सेहो व्यवहार अछि।

रङबाक क्रिया राङब ओ शोभाक हेतु फूलपात पाड़बाक क्रिया **ढेउरब/ढौरब** होइत अछि। फूलपात पाड़बासँ पूर्व बासन अथवा मूरत पर चूनक पोतन देल जाइत छैक। एहि पोतनसँ छहारबाक क्रिया सेहो **ढेउरब** होइत अछि।

पैघ मूर्ति बनयबाक हेतु पहिने ओकर मजगूत अनुकृति बनाओल जाइत छैक। एकरा **ढाँचा/डाँचा/ठट्ठर** कहल जाइत छैक। डाँचा बनयबाक हेतु काठक तकथा, बाँसक फट्ठी, **खऽढ़, लार, पुआर, सुतरी** आदि आनुषंगिक आधार सामग्रीक आवश्यकता होइत छैक।

कुम्हारक औजार : कुम्हारक काजमे माटि तैयार करब, वस्तु गढ़ब ओ तकरा पकायब प्रमुख अछि। एहि हेतु अनेक प्रकारक औजारक उपयोग होइत अछि। सुविधाक हेतु कुम्हारक औजार सभकेँ निम्नलिखित श्रेणीमे बाँटल जा सकैत छैक। 1. माटि तैयार करबाक औजार 2. वस्तु गढ़बाक औजार 3. पकयबाक औजार 4. सहायक औजार।

1. माटि तैयार करबाक औजार ओ तकर प्रयोग : धूँआँसँ माटि कोड़बाक हेतु कुम्हार लोहक एकटा सामान्य औजार **कोदारि/कोदारीक** उपयोग करैत अछि।

कोदारिसँ माटि पर प्रहार करबाक क्रिया **छौ मारब** होइत अछि। कोड़ला उत्तर माटिक जे पैघ-पैघ टुकड़ा कटैत छैक ओ **चट्टान/चखान/चेखान/दल/दलका** कहल जाइत छैक। तीन-चारि सेरक चखान जकरा उठाकऽ फेकब दुरूह होइत छैक से **चेप/चेक/चेका** कहल जाइत छैक। डेढ़-दू सेर परिमाणक चेपकेँ **चेपा/चेकरी** कहल जाइत छैक (**हिन्दुओ ने बुझै मोगला तुर्कों मे बुझै सब से चेकरी डुआबे। राजा सिंवसिंह बैठल छलै मचोलबा तकरो से चेकरी डुआबे॥'–कोसीगीत**)। आधा सेरसँ सेर भरिक चेपाकेँ **चेपी** कहल जाइछ। पाव भरिसँ आधा सेर परिमाणक चेपी जे मुट्ठी द्वारा पकड़ल जा सकैत छैक, से **ढेप** कहल जाइत छैक। छोट ढेपकेँ **ढेपा/ढेला** कहल जाइत छैक। कनमा भरिसँ आध पाव धरिक ढेलाकेँ **ढेपी** कहल जाइत छैक। कनमासँ छोट ढेप सभकेँ **ढेकुड़ी/ढिकुरी** कहल जाइत छैक।

खूनल माटि कुम्हारक कार्यस्थल धरि लऽ जयबाक क्रिया **उघब/उभब/ढोअब/ढोब** होइत अछि।

खपड़ा ओ मूरत बनयबाक हेतु कुम्हार जमीनक उपरको सतहवला माटिक उपयोग कऽ लैत अछि। एहन माटिक ढेप-चेप चुरबाक हेतु काठक हथौड़ीक व्यवहार होइत छैक। एकरा **मुङरि/मुङरी** कहल जाइत छैक। ढेप चुरबाक क्रममे ईंट-पाथरक टुकड़ी भेटैत छैक। एकरा **कंकड़**/(सं. कर्कर) कहल जाइत छैक। छोट छोट कंकड़ **रोड़ी/अँकरी/मकरी** कहल जाइत छैक। माटिमे पड़ल घास-पातक टुकड़ी **खऽढ़/खऽढ़पतार** कहल जाइत छैक। एकरा सभकेँ बीछि कऽ हटा देल जाइत छैक।

पश्चात् माटि पर आँजुरमे पानि लऽ छीटि-छीटि कऽ खसाओल जाइत छैक। एहि तरहेँ खसाओल पानि **फुहार/फोहार/फुहारा/फोहारा/छीटा/छिच्चा** कहल जाइत छैक। पानि पड़ने माटिक नमीयुक्त होयब **गील होयब** कहल जाइछ। कम गील माटि **कठम/कट्ठम/रुक्ख** होइत छैक। पानि बेसी पड़ि गेने माटि स्वतः पसरऽ लगैत छैक। एहन अवस्थामे माटिकेँ **तुरीं-तुरीं** कहल जाइत छैक। माटिक पसरबाक क्रिया **पलड़ब** होइत अछि। सनला पर माटि कखनो-कखनो छोट सन कठोर ओ गोल-गोल पिंडक रूप धारण कऽ लैत छैक। माटिक एहि तरहेँ कठोर होयबाक क्रिया **गुलठिआयब** होइत अछि। छोट-छोट पिंड **गुलठी** कहल जाइत छैक।

पानिक फोहारा देलाक बाद माटिकेँ रुक्खेमे पैरसँ जाँति-जाँति ओकर समस्त भागकेँ मिलाओल जाइत छैक। पैरसँ माटिकेँ सनबाक क्रिया **धूनब/थूनब/खूनब/रौनब** होइत अछि। शीघ्रतापूर्वक चिक्कस जकाँ सनबाक क्रिया **गीजब/मरदब/मर्दन करब/मथब/मैथन करब/थुरी-थुरीं** करब होइत अछि।

एहि तरहेँ तोड़ल माटिकेँ एक ठाम जमा कऽ लेल जाइत छैक। पश्चात् माटिकेँ लोहाक एकटा अन्य औजारसँ कचल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **छऽन/छन/छओन/छओनी** कहल जाइत छैक। एहिमे लोहक दू-तीन आँङुर चाकर, करीब एक-डेढ़ बीत नाम ओ दू तीन सूत मोट पत्तर रहैत छैक। पत्तरक एक दिस धार बनल रहैत छैक आ दुनू छोर पर दूटा लकड़ी लागल रहैत छैक। एहि दुनू लकड़ीक सहायतासँ छनकेँ पकड़ल जाइत छैक। एकरा दुनूकेँ छनक **मूठ/बेंट** कहल जाइत छैक।

छऽनकेँ माटिक पिण्ड पर ऊपर-नीचा करैत चलाओल जाइत छैक। एहिसँ माटिक पातर-पातर परत कटैत छैक। एहि परत सभकेँ **कच्ची** कहल जाइत छैक। छन द्वारा माटिक कच्ची बनयबाक क्रिया **चीरब/कतरब/कचरब/कचब/चाकब/खपिआयब** होइछ। माटिक कच्ची कटलासँ ओहिमे स्थित छोटो-छोटो कांकड़ सभ देखार भऽ जाइत छैक। ई कांकड़ सभ **घुन्नी/घुनसी** कहल जाइत छैक। एकरा सभकेँ चुटकीसँ पकड़ि पृथक् कऽ देल जाइत छैक।

छऽनसँ माटिक पिण्डकेँ एक बेर चीरि कऽ कंकड़ पृथक् करबाक प्रक्रिया **एकचीरा** ओ चीरल कच्ची सभकेँ पुनः पिण्डक रूप दऽ दोबारा चीरि कांकड़ बिछबाक प्रक्रिया **दुचीरा** कहल जाइत अछि। खपड़ाक हेतु एकचीरा माटिसँ काज चलि जाइत छैक, मुदा बासनक हेतु दुचीरा माटि आवश्यक बूझल जाइत छैक।

छऽनसँ चीरल माटिक कच्ची सभपर पुनः पानिक फोहार दऽ ओकर छओ-सात सेर मात्रा लऽ दुनू हाथसँ सानल जाइत छैक। एहि सानल माटिकेँ गोल पिण्डक रूप देल जाइत छैक। पुनः एहि पिण्डकेँ दुनू हाथसँ दुनू कातसँ ठोकल जाइत छैक। पिण्डकेँ ठोकबाक क्रिया **थोपब/थापब** होइत अछि। पिण्डकेँ थोपि-थापि

कऽ आधार दिस क्रमशः अधिक परिधिवला शिवलिंगक आकृतिक रूप देल जाइत छैक। ई पिण्ड **थिम्हा** कहल जाइत छैक। थिम्हाकेँ काठक एकटा टुकड़ा पर सुताकऽ हाथक सहायतासँ आगा-पाछाँ गुड़काओल जाइत छैक। काठक ई टुकड़ा **तकथा/पटरा/पटराहा** कहल जाइत छैक। कम चाकर ओ छोट रहने एकरा **पटरी/तकथी** कहल जाइत छैक। माटिक थिम्हाकेँ एहि पर गुरकयबाक संगहि पटराहा पर बालु छीटल जाइत छैक, जे थिम्हामे सटैत जाइत छैक आ थिम्हाक बाहरी भाग शुष्क भऽ जाइत छैक। बालुकेँ थिम्हाक **परथन** कहल जाइत छैक। परथन लागल माटिक पिंड चाक पर राखि वस्तु गढ़बाक हेतु उपयुक्त होइत छैक। ई पिंड **फड़/फड़ि/फड़ड़/फड़ी/ फड़ही/थोनी** कहल जाइत छैक। यैह थोनी चाक पर बासन गढ़बाक हेतु कुम्हारक तैयार माटि होइत छैक।

2. वस्तु गढ़बाक औजार ओ तकर प्रयोग : कुम्हारकेँ अपर प्रजापति कहल जाइत छैक। ई चक्र-सिद्धान्त पर वस्तु गढ़ैत अछि। एकर समस्त उत्पादन गोल आकृतिक होइत छैक।

वस्तु गढ़बाक हेतु कुम्हार करीब दू हाथ व्यासवला माटिक वृत्ताकार पहिया सन औजारक उपयोग करैत अछि। एकरा **चाक/चक्कर(सं. चक्र)/चक्का** कहल जाइत छैक। एहि हेतु लोकगीतमे चेका (**किए तोरा कोसिका चेका पर गढ़लक किए जे रूपा गढ़लक सोनार। ने हो रनपाल चेका पर गढ़लक ने रूपा गढ़लक सोनार।**) शब्द भेटैत अछि। एहिमे काठ अथवा बाँसक दूटा दंडक मध्यभाग एक दोसरा पर लम्बवत् जुड़ल रहैत छैक। ई दुनू दंड **बाँह** कहल जाइत छैक। बाँहक चारू टुकड़ीक बीचवला भाग करचीसँ बीनि कऽ भरि देल जाइत छैक। एहि बिनाठ पर नारिकेरक जल्ला मिलाओल माटि नीचा ऊपर दुनू दिससँ साटि देल जाइत छैक। केन्द्रमे ऊपर दिस एकटा लकड़ीक आयताकार अथवा गोल टुकड़ा साटि देल जाइत छैक। एकरा **मथनी/पटराहा/पट्टा** कहल जाइत छैक। नीचा दिससँ एकटा कारी रंगक पाथर साटल रहैत छैक। ई **तेलिया पत्थल** होइत छैक। एकरा **सील/सिल्ला/कील/किल्ला/पत्थल** कहल जाइत छैक। पत्थलक मध्य भागमे कनेकटा खाधि बनल रहैत छैक। एही खाधि पर अवलम्ब दऽ चाक माटिमे लकड़ीक नोंखगर खुट्टा पर टिकल रहैत छैक। एकरा **खूटा/खूटी/खुट्टी** कहल जाइत छैक। खुट्टाक हेतु चह, शीशो, बबूर, खैर आदिक लकड़ी नीक मानल जाइत छैक। लकड़ीक सारिल, **पाकल-पकौठ** भागक उपयोग होइत छैक।

सिल्लाक छेद ओ खुट्टीक नोंखपर चाकक नचबाक क्रिया **चाक बहब** होइत अछि।

चाकमे देल माटिक मोटाइ करीब-करीब चारि आङुर रहैत छैक। माटिक मोटाइ चारू कात समान रहैत छैक। जँ एक दिसुक मोटाइ कम ओ दोसर दिसुक बेसी

भऽ जाइत छैक तेँ नचओला उत्तर चाकक भारीवला भाग जमीन धरऽ चाहैत छैक आ चाक केन्द्रक परित: डगमग डोलैत नचैत छैक। एहन स्थितिमे चाककेँ **बेडरेब** कहल जाइत छैक। बेडरेब चाकमे मोटका भागक अतिरिक्त माटि छीलि चाकक सभ दिसुक भार समान करबाक क्रिया **तूल करब** होइत अछि। तूल करबाक हेतु अतिरिक्त माटिकेँ खुर्पी आदिसँ छीलिकऽ पृथक् करबाक क्रिया **छील-छाल करब** होइछ।

चाकक ऊपरी भागमे परिधिक कोरसँ छौ आङुर भीतर हटि कऽ एकटा छिद्र बनाओल रहैत छैक। एहि छिद्रकेँ **घिच्चो/घुच्चो/घुच्ची/घुच्चुल/घिच्चुल/मकरी** कहल जाइत छैक। एहि छिद्रमे काठ अथवा बाँसक एकटा दू हाथ नाम पातर दंड पैसाय परित: जोर लगाकऽ चाककेँ नचाओल जाइत छैक। एहि दंडकेँ **चकैट/चकैठ/छड़ी/छड़ि** कहल जाइत छैक।

चकैठसँ चाककेँ चलयबाक क्रिया **साहब** होइत छैक। चाकक गति **भाउर** कहल जाइत अछि। तीव्र गतिक क्रिया **गनगनायब** होइत अछि। चाकक गति तीव्र रहनहि बासन गढ़ब संभव होइत छैक, तेँ थोड़े-थोड़े काल पर चाककेँ साहल जाइत छैक।

कम श्रम लगाकऽ चाककेँ अधिक काल धरि नचयबाक हेतु आइकाल्हि बौल-बेरिंगवला चाकक व्यवहार शुरू भऽ गेल अछि। एहिमे खुट्टाक बदला लोहाक तीन टाँगवला आधार जमीनमे गाड़ल रहैत छैक। एकरा **तिरपाइ** कहल जाइत छैक। तिरपाइक मध्यवर्ती नोंखगर छड़पर चाकक सिल्ला अवलम्बित रहैत छैक। एहि चाकमे सिल्लाक स्थान पर **बॉलबेरिंग** रहैत छैक। बॉलमे चिकनाइक हेतु ग्रीस देबाक हेतु एकटा कटोरीक आकारक बासन लागल रहैत छैक। एकरा **ग्रीस-कप** कहल जाइत छैक। एहि चाकक मथनी लोहाक एक आङुर मोट करीब एक बीत व्यासक वृत्ताकार टुकड़ा रहैत छैक। एकरा **तऽब** कहल जाइत छैक।

बासन गढ़बाक हेतु कुम्हार चाकक मथनी पर फड़िकेँ स्थापित करैत अछि। एकरा **फड़ि थोपब** कहल जाइत छैक। पश्चात् चकैठसँ चाककेँ नचा देल जाइत छैक। चाकक गति तीव्र भेला पर चकैठ हटा कुम्हार फड़िकेँ दूनू हाथेँ बकोटि कऽ धरैत अछि। माटि पर दबाव दैत दूनू हाथ नीचासँ ऊपर दिस लऽ जाइत अछि। एहिसँ फड़ि सभ दिस नियमित आकृतिक भऽ जाइत छैक।

कुम्हारक दहिना कात पानि भरल एकटा बासन राखल रहैत छैक। एकरा **हथबानी/हथमानी/हथपानी/अथबानी/चकोरी** कहल जाइत छैक। चकोरीसँ पानि लऽ कुम्हार फड़िक उपरका भागपर ढारैत छैक। एहिसँ उपरका माटि गील भऽ जाइत छैक। माटि गलयबाक ई प्रक्रिया **बोड़ब** होइछ। पश्चात् कुम्हार फड़िक उपरका भागक मध्यमे दूनू अऊँठाकेँ गाड़ैत अछि आ बाहरसँ तर्जनी द्वारा दबाव दऽ फड़िकेँ ऊपर दिस नमरबैत अछि। फड़िक नमरबाक क्रिया **फाँड़ गीरब** होइछ। फाँड़ गिरलाक

बाद आवश्यकताक अनुरूप बासनक आकृति गढ़ल जाइत छैक। बीच-बीचमे हथपानीक सहायतासँ बोड़बाक क्रिया चलैत रहैत छैक आ कुम्हारक हाथमे जे गील माटि लागि जाइत छैक तकरा ओ हथमानियेमे पोछि कऽ खसा दैत अछि। एहि माटिकेँ **कैथलौट/कादो/कदइ/कचरी/पोछन** कहल जाइत छैक। गँहीर बासनक फाँड़ खसयबाक हेतु ओकर भीतरी भागमे माटिक एकटा गोलपिंड द्वारा दाब देल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **मँजनी** कहल जाइत छैक। बासनक सतहकेँ चिक्कन करबाक हेतु ओहिपर चारि तहमे चौपेतल लत्ता रगड़ल जाइत छैक। एकरा **नाथ** कहल जाइत छैक।

गढ़ल बासनकेँ चाकपरसँ उतारबाक हेतु ओकर जड़िमे सूत लपेटि कऽ ओकरा घीचि फड़िसँ बासनकेँ पृथक् कऽ लेल जाइत छैक। एहि हेतु मजगूत ओ पातर सूतवला एकटा औजारक प्रयोग होइत अछि। सूतक दूनू कात चारि आङुर नाम कमची बान्हल रहैत छैक। एहि औजारकेँ **सूत/सूता/डोरा/छन/छओन/कटना** कहल जाइत छैक।

जाहि बासनक गहराइ कम ओ पेंनी कम चाकर होइत छैक से अपन पूर्ण आकृतिक संग चाके पर गढ़ि लेल जाइत अछि। मुदा अनेक बासनकेँ अपन असली संज्ञा प्राप्त करयबाक लेल विभिन्न प्रक्रियाक प्रयोग होइत छैक।

चाकर पेंनीवला बासन बनयबाक हेतु चाक पर ओकर शरीर बनैत छैक। ई बासनक आकृतिसँ छोट ओ पेंनीरहित होइत छैक। एकरा **डऽल/डओल** कहल जाइत छैक। डलमे पेंनी बनयबाक क्रिया **सजब/साजब** होइत अछि। सजबाक हेतु काठक चारि-पाँच आङुर मोट तकथाक बनल औजारक सहायता लेल जाइत अछि। एहि औजारकेँ **करथर/करथरी/ कठअथरी/करथरि/अथरी** कहल जाइत छैक। एकर मध्य भागमे बीत भरि व्यासक उत्थर खाधि बनल रहैत छैक। एहिमे बालु धऽ कऽ डओलकेँ पेंनी दिससँ एहिमे सटाओल जाइत छैक आ बामा हाथेँ ओकरा नचाओल जाइत छैक। दहिना हाथ डओलक भीतर दऽ पेंनीक चारू कातक माटिकेँ ठोकि-ठोकि कऽ परस्पर सटा देल जाइत छैक। जँ माटि नमरिकऽ स्वयं नहि सटि पबैत छैक तँ पेंनीमे आर अतिरिक्त माटि देल जाइत छैक। एहि अतिरिक्त माटिकेँ **तऊरी** कहल जाइत छैक।

पेंनीयुक्त डलकेँ बासनक आकृति प्रदान करबाक क्रिया **अतारब** होइत अछि। अतारबाक हेतु पाकल माटिक एकटा औजारक प्रयोग होइत छैक। एकरा **पीर** कहल जाइत छैक। पीरक आकार डमरूक सदृश होइत छैक। मुदा मध्यसँ ऊपरवला भागक व्यास निचलका भागसँ कम होइत छैक। पीरसँ डलकेँ पीटि-पीटि कऽ चारू कातक माटिकेँ नमराओल जाइत छैक। गँहीर डलकेँ पिटबाक हेतु एहिमे करचीक एकटा दंड सेहो लगा देल जाइत छैक। छोट पीर **पिरहुर** कहल जाइत छैक। अत्यन्त

छोट (दू-तीन आङुर नाम) पिहुर **बुचकी** कहल जाइत अछि। कतहु-कतहु एकरा **टोकना/टोकनी** सेहो कहल जाइत छैक। पीरसँ डऽल पर आघात करबाक क्रिया **टोकब** होइत अछि।

करधरक स्थानमे कतहु-कतहु पाकल माटिक पेनींविहीन ढाकनक उपयोग होइत छैक। एकरा **पाढ़ी** कहल जाइत छैक।

घैलक कान जोड़बाक हेतु गाढ़ि पीरक व्यवहार होइत अछि से **घैलजोड़ी** कहल जाइत अछि। एहिमे बाँसक पातर दंड बेँट जकाँ लागल रहैत छैक।

बासनकेँ अतारबाक क्रममे कतहु-कतहु कोनो अँकड़ी पकड़ा जाइत छैक। ई अँकड़ी नहसँ खोंधि कऽ हटा देल जाइत छैक। एहिसँ बासनमे जे रिक्त स्थान बनि जाइत छैक, तकरा बन्द करबाक हेतु काठक छोट सन दाबिसँ छिद्रक चारू कात पीटल जाइत छैक। एहि दाबिकेँ **पिटना/पीटन** कहल जाइत छैक।

अतारबाक हेतु बालु रखबाक माटिक गमला जकाँ गँहीर पात्र **प्याला/खोला** कहल जाइत अछि।

अनेक ठाम घैला-तौलाक डऽल कनखा सहित बनाओल जाइत अछि आ अनेक ठाम कनखा बादमे जोड़ल जाइत छैक। कनखा सहित डल **बेंहीछ** कहल जाइत छैक। अतारल डलक किञ्चित सुखबाक क्रिया **तरखब** होइत अछि। तरखल कनखा ओ डलक जोड़ऽवला भाग भिजा देल जाइत छैक। एकरा **पनिआयब/बोहब** कहल जाइत छैक। बोहल कनखा डऽल पर राखि जोड़ पर ठोकल जाइत छैक। एहि तरहेँ डऽलमे कनखा जुटि जाइत छैक आ बासन अपन पूर्ण आकृति प्राप्त कऽ लैत छैक।

काँच बासनकेँ रौदमे सुखाओल जाइत छैक। सुक्खल बासन सभकेँ एक ठाम जमा करबाक क्रिया **ढेरियायब/ढेडरियायब/ढेंगरब/ढेङरब** होइछ। गोल कऽ राखल बासनक ढेरी **गोल** कहल जाइत अछि।

3. बासन पकयबाक औजार ओ तकर प्रयोग : बासन पकयबाक व्यवस्था **आबा** (सं. आपाक) होइत अछि एवं आबा लगयबाक हेतु नियत स्थायी स्थान सेहो आबा कहल जाइत अछि। आबा दू प्रकारक होइत अछि-

(क) स्थायी आबा (ख) अस्थायी आबा।

(क) स्थायी आबाकेँ **झोंक आबा/झोँकुआ आबा** कहल जाइत छैक। ई बासन पकयबाक पैघ चूल्हि थिक जाहिमे जारन झोँकिकऽ बासन पकाओल जाइत छैक।

झोँकुआ आबा कुम्हार अपना घरे पर बनबैत अछि। एकरा लेल तीन-चारि हाथ व्यासवला भरि डाँड़ गँहीर गोल खाधि खूनल जाइत छैक। खाधिक एक दिस मुँह खुलल रहैत छैक। एहि मुँहकेँ **मुहला/मोहिला/मुँहलाल/मुँहजोड़ा** कहल जाइत छैक। मुहलाक उपरका भाग खाधिक परिधि धरि काठ-बाँससँ पाटल रहैत छैक।

काठ-बाँसक नीचा-ऊपर माटिक मोट लेबा देल रहैत छैक। एहि व्यवस्थाकेँ **सट्टा** कहल जाइत छैक। बीचवला गोल खाधि **आँच/अँचिया/अछिया** कहबैत अछि। अँचियाक उपरका सतह पर बाँसक चारि-पाँचटा टोन लगाओल जाइत छैक। चारू टोन तेना टिकाओल जाइत छैक जे सभक उपरका भाग एकठाम जुटि जाइत छैक। एहिसँ अँचियाक ऊपर शंकुक आकृति बनि जाइत छैक। सभटा टोन पर माटिक मोट लेबा कऽ देल जाइत छैक। ई लेबा कयल टोन सभ **गोड़ा** कहल जाइत अछि। दूटा गोड़ाक बीच अनेक फूटल-भाङल बासन औन्हि कऽ धऽ देल जाइत छैक। ई सभ **छुतहर/खपरौड़ी** कहल जाइत छैक। ई काँच बासन पर अप्रत्यक्ष रूपसँ आँच लगयबाक हेतु देल जाइत छैक।

आबा लगयबाक हेतु कुम्हार गोड़ाक चारू कात जमीन पर खऽढ़ ओछबैत अछि। खऽढ़क ऊपर लकड़ीक जारनक छोट-छोट टुकड़ी ओछाओल जाइत छैक। लकड़ीक एहि टुकड़ी सभकेँ **चेरी/चेलखी** कहल जाइत छैक। उपलब्ध रहला पर राहड़िक गाछक जड़िवला भाग सेहो खऽढ़ पर ओछाओल जाइत छैक। एकरा **खुट्टी** कहल जाइत छैक। एहि सभक अतिरिक्त गोबरकेँ सुखाकऽ बनाओल विभिन्न जारनिक सेहो उपयोग होइत अछि। गोबरक टुकड़ी सभकेँ सोझे रौदमे सुखलापर **कड़सी** (सं. करीष) कहल जाइत छैक। गोबरक छोट-छोट सुक्खल टुकड़ी **करड़ा** कहल जाइत अछि। जखन गोबरकेँ पानिमे सानिकऽ ओकर दू-तीन आँङुर मोट ओ चाकर टुकड़ा बनाय रौदमे सुखाओल जाइत छैक, तँ एहि जारनकेँ **गोइठा** कहल जाइत छैक। छोट गोइठाकेँ **गोइठी/चिपरी** कहल जाइत छैक। सूप सनक गोल-गोल ओ पैघ आकृतिक गोइठाकेँ **सुपहा** कहल जाइत छैक। दू-तीन हाथ नाम बेलनाकार दंड सन गोइठा **गोइहा/गोइहन्नी** कहल जाइत छैक। चरौँतमे सुक्खल गोबरकेँ **बनकरड़ा** कहल जाइत छैक। चरौँतसँ बीछल गोबरसँ बनल गोइठाकेँ **बनगोइठा** कहल जाइत छैक। गोइठा, गोइहा आदिक छोट-छोट टुकड़ाकेँ खऽढ़ पर ओछओलाक बाद फेर ऊपरसँ खऽढ़क परत देल जाइत छैक। एहि तरहेँ आबाक आधार तैयार होइत छैक। एकरा **तरी/तऽह/बइर** कहल जाइत छैक।

तरीक ऊपर काँच बासन सजाकऽ ओछाओल जाइत छैक। सौंसे तरी भरि गेला पर काँच बासनक ओ समूह **गेँट/छल्ली/थाक** कहल जाइत छैक। थाक लगयबाक क्रिया **थाकब/थकिआयब** होइछ। तखन छल्लीक ऊपर फेर जारन बिछा देल जाइत छैक। ऊपरसँ बासनक दोसर छल्ली लगाओल जाइत छैक। एही तरहेँ तरऊपरी 4-5 छल्लीक बाद आबा पूर्ण बुझल जाइत छैक।

आब आबाक चारू कात गोइहा आदि ठाढ़ कयल जाइत छैक। एहि ठाढ़ कयल जारनकेँ **मोरियान** कहल जाइत छैक। पश्चात् आबाक सम्पूर्ण भाग खऽढ़, लार, पुआर आदिसँ झाँपि देल जाइत छैक। एहि व्यवस्थाकेँ **झाँपन/झाँप** कहल

जाइत छैक। झाँपन देबाक क्रिया पिहारब/पिहार करब होइछ। पिहारबाक हेतु दूनू हाथक बीच अँटऽवला खऽद् **दाबी/पाँज** कहल जाइत अछि। खऽद्‌क पाँजकेँ सम्हारि-सम्हारि कऽ आबा पर देबाक क्रिया **दबिआयब** होइत अछि।

एहि प्रक्रियाक बाद थोड़े माटिकेँ खूब गील कऽ पानिमे सानल जाइत छैक। एहि सानल माटिकेँ **गिलाबा/गिलेबा** कहल जाइत छैक। झाँपन पर गिलाबा दऽ हाथसँ ओकरा चिक्कन करबाक क्रिया **लेबब/लेवाइ करब** होइत अछि। एहिसँ झाँपन पर जे माटिक पातर परत चढ़ि जाइत छैक, से **लेबा/एकलेब** कहल जाइत अछि। एक लेबा भऽ गेलाक बाद सँसे आबा पर खढ़क पातर परत बिछाओल जाइत छैक आ लेबा दोहराओल जाइत छैक। दोसर बेर कयल लेबा **दुलेब/दोलेब** कहल जाइत छैक। दुलेबक ऊपर छाउर छीटल जाइत छैक एहिसँ लेबाक नमी समाप्त भऽ जाइत छैक।

एहि तरहेँ आबा तैयार भऽ जाइत छैक। आब नीचासँ ओहिमे आगि पजारल जाइत छैक। एकरा **आबा फूकब** कहल जाइत छैक।

आबामे मुहला होइत जारन झोंकि पहिने मद्धिम आँच देल जाइत छैक। किछु काल धरि आँचक प्रभावमे जखन ओकर पहिल थाकवला बर्त्तन गर्म भऽ कऽ लाल भऽ जाइत छैक, तँ आँच तेज कऽ देल जाइत छैक। जखन सँसे आबामे आगि पकड़ि लैत छैक तँ आगिक धधकबाक क्रिया **कहकह/खहखह करब** कहल जाइत अछि। जारनि जरि गेलासँ स्वतः अपन स्थान खाली कऽ दैत छैक। एहि तरहेँ जारनक जगह खाली होयबाक क्रिया **खड़हरब/खहरब** होइत अछि। आबाक उपरका भागक जारन खहरलासँ दू बर्त्तनक बीच जे रिक्त स्थान देखि पड़ैत छैक, ओकरा **कोली** कहल जाइत छैक। कोलीसँ देखला पर जखन उपरको बासन पाकल बूझि पड़ैत छैक तँ आबाकेँ ठंढयबाक हेतु छोड़ि देल जाइत छैक आ ठंढयला पर बासन निकालि लेल जाइत छैक। जरल जारनिक जे अवशेष आबामे रहैत छैक से **राख/छाउर/राबिस** कहल जाइत छैक।

दूध, घी, तेल आदि रखबाक बासनकेँ विशिष्ट विधिसँ पकाओल जाइत छैक। आबामे जखन ई बासन सभ लाल भऽ जाइत छैक तखन खढ़र ओ धानक भुस्सा झोंकि कऽ ओकर धूआँसँ ई पात्र सभ पकाओल जाइत छैक। एहि प्रक्रियाक बाद बासनक रंग कारी भऽ जाइत छैक आ एहन बासनमे नोनी नहि लगैत छैक।

आबामे पकबाक हेतु देल बासन सभ विभिन्न समयमे बनाओल जाइत अछि मुदा सभ बासन एके संग पाकि कऽ तैयार भऽ जाइछ (**प्रसिद्ध लोकोक्तिः फड़य बेराबेरी पकय एक्के बेरी**)। आबा सम्हरबा पर कुम्हारक सभटा दारोमदार रहैत छैक। जँ आबा सुतरि गेल तँ सभटा मेहनति कतेको गुन भऽ कऽ आबि जाइत छैक अन्यथा सभटा सत्यानाशो भऽ सकैत छैक (**छौ मासक कमाइ छन से गमाइ**)। तेँ कुम्हार आबाकेँ माइक कोखिसँ तुलना करैत अछि। ओ अपना धनमे आगि लगा कऽ ओकरा सोना बनबैत अछि।

(ख) अस्थायी आबा : आबाक ई प्रकार कोनो स्थान पर लगाओल जा सकैत छैक। एहिमे चुल्हि नहि रहैत छैक आ ने जारने झोंकऽ पड़ैत छैक। तरो ओ प्रत्येक दू छल्लीक बीच छल्लीकेँ पकयबाक हेतु पर्याप्त जारन अंदाजसँ एके बेर बोझि देल जाइत छैक। प्रकार भेदसँ एहन आबाक दू प्रभेद होइत छैक। (अ) **गरुआ/गोरिया/गरबा** आबा तथा (ब) **बिचअगुआ** आबा

गरुआ आबाकेँ जमीनक सतहसँ एक हाथ उपरे धरि लेबल जाइत छैक। एहिमे चारू कातसँ आगि लगाओल जाइत छैक जे तरोसँ क्रमशः सँसे आबामे धऽ लैत छैक।

बिचअगुआ आबा लगबऽकाल ओकर मध्य भागमे बेलनाकार फाँक छोड़ि देल जाइत छैक। एहीमे आगि धऽ देल जाइत छैक जे क्रमशः सँसे आबामे धऽ लैत छैक।

4. अन्य सहायक औजार ओ तकर प्रयोग : उपर्युक्त औजार सभक अतिरिक्त कुम्हारकेँ अन्य अनेक छोट-पैघ औजार सबहिक आवश्यकता विशिष्ट प्रकारक कार्यक हेतु होइत छैक।

सुरहीक गर्दनि पर छोलि कऽ गढ़नि करबाक हेतु लोहाक एक चोत नाम ओ एक-आङुर चाकर लोहक पत्तरक व्यवहार होइत छैक। एकरा **छोलनी** कहल जाइत छैक। खपड़ाकेँ कटबाक हेतु लोहाक **चक्कू/छूरी** नामक औजारक उपयोग होइत छैक। घैल, तौला आदिक कान पर शोभाक हेतु रेखा बनयबाक हेतु **ककहा/ककही/कइही**/ ककही/**कंघीक** व्यवहार होइत छैक।

छोट-छोट मूरुत गढ़बाक हेतु ओहि मूरुतक अनुरूप पाकल माटिक औजारक व्यवहार होइत अछि। ई दू भागमे विभक्त रहैत छैक। दूनू भागक बीच माटि दऽ दाबि देने मूरुतक अनुकृति बनि जाइत छैक। पाकल माटिक ई औजार **साँचा/डाँचा** कहल जाइत छैक। मूरुतक अनुकृतिसँ अतिरिक्त माटि छँटबाक हेतु तथा आँखि, नाक, कान आदि उगयबाक हेतु काठ अथवा बाँसक पातर कमचीक व्यवहार होइत छैक। एकरा **चभिया/चेभिया/ चबिया/जिभिया** कहल जाइत छैक। मूरुतकेँ रङबाक उपकरण **बूरुश/कूच/कूची/कुच्ची** कहल जाइत छैक।

जाहि सुतरीक जालमे बासन सभकेँ बान्हि कऽ बेचबाक हेतु एक ठामसँ दोसर ठाम लऽ गेल जाइत छैक, ओकरा **जल्ला/जलाबरी** कहल जाइत छैक। घैला सभक **कनखाकेँ** रस्सीसँ सम्बद्ध कयला उत्तर बनल समूह **गरछा/गरछी** होइत अछि।

कुम्हारक उत्पादन : कुम्हार पाक, पान, आवास, संस्कार आदिसँ सम्बद्ध विभिन्न आकार ओ उपयोगक पात्र सभ बनबैत अछि। ई पात्र सभ **भाँड़ा/भँड़हेर/बासन/बर्त्तन** कहल जाइत अछि। उपयोगिताक आधार पर कुम्हार

द्वारा निर्मित वस्तु सभकेँ निम्नलिखित श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत अछि:- 1. भोजन सम्बन्धी 2. पेय सम्बन्धी 3. आवास सम्बन्धी 4. व्यवसायोपयोगी 5. यज्ञ, संस्कार ओ पावनि-तिहार सम्बन्धी एवं 6. अन्य सामग्री।

1. भोजन सम्बन्धी सामग्री : अन्नकेँ आगि पर चढ़ाय रन्हबाक हेतु कुम्हार करीब एक हाथ ठाढ़, पैघ मुँहवला गोल पात्र बनबैत अछि। एकरा **कोहा** कहल जाइत छैक। कोहाक अन्य पर्याय **हंडी/हाँड़ी/हड़िया/हँड़िया** अछि। प्राचीन साहित्यमे हाँड़ीक प्रयोग भेटैत अछि (**हाँड़ीत भात नहि नित आवेशी-बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त, डा. जयधारीसिंह, मधुबनी, चर्यागीत सं. 33 (ढेण्ढणपाद)। हाँड़ीसँ सम्बन्धित अनेक लोकोक्ति प्रचलित अछि, जेना (क) दू पैसाके हाँड़ी गेल, कुकुरक जाति पहचानल गेल (ख) काठक हाँड़ी एक्के बेर**)।

छोट कोहाकेँ **कोही/कोहली/हँड़ोला** कहल जाइत छैक। कोहाक आधारवला भागकेँ **पेन/पेना/पेनी** कहल जाइत छैक। मध्यवला गोल भाग **पेट** कहल जाइत छैक। पेटक उपरका खुलल भाग **मुँह** कहल जाइत अछि। कोहाकेँ मुँह लगसँ पकड़बाक हेतु किञ्चित वक्र किनारीवला भाग **कान/कान्ह/कनहा/कंधा/कनखा** कहल जाइत छैक।

जाहि कोहाक पेट बेसी गँहीर ओ चाकर होइत छैक तथा मुँह अपेक्षाकृत छोट रहैत छैक, ओकरा **तौला** कहल जाइत छैक। दही पौड़बाक हेतु चाकर मुँह, कम गँहीर पेट ओ करीब चारि आँङ्गुर ठाढ़ कानवला तौलाक उपयोग होइत छैक। एकरा **खोर/खोरा/ अपखोरा/अवखोरा/आबखोरा/अमखोरा** कहल जाइत छैक। धान उसिनबाक हेतु चाकर ओ गँहीर पेटवला तौलाक व्यवहार होइत छैक। एकरा **तेलानी** कहल जाइत छैक। घी बरकयबाक हेतु जाहि तौलाक व्यवहार होइत छैक, ओकरा **तेलाय** कहल जाइत छैक (**बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-138**)। अत्यन्त पैघ आकृतिक तौलाकेँ **टाँक** कहल जाइत छैक। अन्न रखबाक हेतु समतल पेनी ओ मोट देबालवला कोहाक उपयोग होइत छैक। एकर खराइ तीन फुट अथवा अधिक रहैत छैक। एकरा **माँट/माठ/मटका/मेटा/कूँड़** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **छोंड़/छोँढ़ी** कहलनि अछि (बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-137)। अँचार आदि रखबाक माटिक कोहा **कोहला/टाँड़** होइत अछि। दालि रन्हबाक हेतु छोट कोहाकेँ **हड़कड़ाही** कहल जाइत छैक।

बीत भरि व्यासक पेटवला दही पौड़बाक एकटा बासनक प्रभेद **मटकी/मटुकी/ मटकूड़ी/मटकूही** कहल जाइत छैक। पैघ मटकूड़ी **मटकूड़ा/मटकूड़** होइत अछि। चाकर मुँह ओ गँहीर आकृतिक मटकूड़ **दहियाही हाँड़ी/करना/करुना/कौरना/ नदिया/लदिया** कहल जाइत छैक। भार आदिमे दही सैंठबाक हेतु एकटा उत्थर बासनक व्यवहार होइत छैक। एकर व्यास दू फीट रहैत छैक आ गहराइ मुश्किलसँ

चारि आङ्गुर। एकरा **छाँछ** कहल जाइत छैक। छोट छाँछ **छाँछी/छछिया** होइत अछि। एकर लघु आकृति **छन्ना** कहबैत छैक। गँहीर छाँछी **कसतरा/करतरा/ करतारा/कहतारा** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **कसतरी/ करतरी/कहतरी** कहल जाइत छैक।

माँड़ पसयबाक हेतु मोड़ल कानवला गँहीर ओ चाकर कसतराक व्यवहार होइत छैक। एकरा **अथरा/हथड़ा** कहल जाइत छैक। छोट अथरा **अथरी** होइत अछि। अथराक दूनू पार्श्वमे डंटी लागल रहला पर एकरा **कड़ाही** कहल जाइत छैक। एहिमे तरकारी सिद्ध कयल जाइत छैक। ई लोहक पात्र लोहिया द्वारा स्थानापन्न कऽ देल गेल अछि। एकर छोट प्रभेद **करही/करहुल्ली** होइत अछि। उत्थर करहुल्लीमे रोटी सेदल जाइत छैक। एकरा **रोटपक्का/रोटिपक्का** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **चड़िया** कहने छथि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ. 135**)।

तौला झँपबाक हेतु एकटा बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **ढाकन/ढकना/ ढाकनि** कहल जाइत छैक। एकर पेनी गोल, समतल ओ चारि आङ्गुर व्यासक होइत छैक। मुँह खुलल ओ बीत भरि व्यासक होइत छैक। पेनी ओ उपरका भागक बीच कोण बनैत छैक। एकर छोट प्रभेद **ढकनी/ढुकनी** होइत अछि। ग्रियर्सन ढकनाक हेतु **ढिमका** शब्द कहने छथि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ. 137**)।

समतल पेनी ओ गोलाक आधा भागक आकृतिसँ युक्त छोट सन बासन **प्याली/पियाली/पेयाली** कहल जाइत अछि। एकर पैघ प्रभेद **पियाला/पेयाला** होइत अछि। गँहीर पियालीकेँ **कपटी/चुक्कर(ड़)** कहल जाइत छैक। करीब दू आङ्गुर ठाढ़ कनखावला पियाली **सरबा** (सं. सराव) कहल जाइत अछि। छोट सरबा **सरबी** होइत अछि। कनखाविहीन छितनार सरबाकेँ **सराय** कहल जाइत छैक।

विभिन्न प्रकारक मसल्ला अथवा पूजाक विभिन्न सामग्री पृथक्-पृथक् रखबाक हेतु एकटा संयुक्त पात्रक उपयोग होइत छैक। एहिमे तीन-चारि अथवा अधिक संख्यामे छोट-छोट मटकूड़ी सभ परस्पर जोड़ल रहैत छैक। एहि पात्रकेँ उठयबाक हेतु माटिक अर्द्धवृत्ताकार डंटी सेहो एहिमे लागल रहैत छैक। एकर प्रत्येक मटकूरी **कोहिया** कहल जाइत छैक। मटकूड़ीक संख्याक आधार पर ई **तिनकोहिया, चरिकोहिया, अठकोहिया** आदि प्रभेदक होइत अछि। एहि बासनकेँ **जोट्टा/लगजोड़ी/चौघाड़ा** कहल जाइत छैक।

दालि आदि परसबाक हेतु माटियेक डंटी लागल डब्बुकक आकृतिक बासन **सकोरा** कहल जाइत अछि। पूजाक हेतु उपयोगी लोटाक आकृतिक अत्यन्त छोट पात्र **भँड़ेर** कहल जाइत अछि।

मुसलमान जातिमे सेहो अनेक प्रकारक माटिक बासनक उपयोग होइत अछि। समतल आधारवला गोल बासन जकर कोर पर करीब एक इंच ठाढ़ कान बनल रहैत छैक, भोजन करबाक व्यवहारमे अबैत छैक। एकरा **थारी/थरिया/छीपा** कहल जाइत

छैक। छोट थारी **तसतरी/कसतरी** होइत अछि। शादी-बिआहमे करीब बीत भरि व्यासवला तसतरीक व्यवहार होइत छैक। एकरा **सेफलिया/सिफलिया** कहल जाइत छैक। छोट ओ उत्थर सिफलियाकेँ **कोसलिया** कहल जाइत छैक। गँहीर कोसलियाकेँ **सनहक/सनहक्की/सनहकी** कहल जाइत छैक। छोट सनहककेँ **फिरनी** कहल जाइत छैक। फिरनीक अत्यन्त छोट प्रभेद **कुज्जा** होइत अछि। रान्हैत काल तरकारी आदिकेँ झँपबाक हेतु पाछू दिस डंटी लागल ढाकन **झप्पा** कहल जाइत अछि। छितनार ढाकनक एकटा प्रभेद **काब/रकाब/रिकबी/रकेबी/रेकाबी/रिकाब/रिकेबी/रिकाबी/रकाबी** कहल जाइत छैक। छोट-छोट ढाकन **ठिकरी/फुहरी** होइत अछि।

गर्म माटि पर साटिकऽ सेदल गेल रोटी तन्दूरी रोटी कहल जाइत अछि। तन्दूरी रोटी सेदबाक हेतु एक आङुर मोट देवालवला माटिक एकटा फोंक चूल्हिक व्यवहार होइत छैक जे आधार पर करीब डेढ़ हाथ व्यासक होइत छैक। एकर व्यास ऊपर दिस क्रमश: घटैत जाइत छैक आ अन्तिम भागमे एक बीत बचि जाइत छैक। एहि टापीक आकृतिक चूल्हिकेँ **तन्दूरी/तन्दूर** कहल जाइत छैक।

2. पेय सम्बन्धी सामग्री : पेय सम्बन्धी पात्रमे कुम्हार जल-संग्रह करबाक ओ पेय ग्रहण करबाक अनेक उपकरण बनबैत अछि। नीचा दिस गोलाक आकृतिक ओ ऊपर बेलनाकार कनखासँ युक्त पानि भरबाक एकटा मोट देवालवला बर्तन **गगरा** कहल जाइत अछि। पैघ गगराकेँ **गागर** कहल जाइत छैक। एकर कनखा चारि आङुर ठाढ़ ओ मुँहक व्यास सेहो चारि-पाँच आङुर होइत छैक। कनखाक उपरका भाग समतल ओ बाहरसँ नीचा दिस कनेक झुकल रहैत छैक। एकर छोट प्रभेद **गगरी** कहल जाइत छैक। एहि पर कुम्हार कलात्मक आकृति सेहो खिचने रहैत अछि।

गगराक एकटा अन्य प्रभेदमे शरीरक देवाल अत्यन्त पातर होइत छैक। ई करीब एक हाथ ठाढ़ रहैत छैक। गोलवला भाग ओ कनखाक जोड़ पर मुँहक व्यास करीब चारि आङुर रहैत छैक। कनखाक उपरका भागक व्यास छओ-सात आङुर रहैत छैक। पानि जमा करबाक एहि बासनकेँ **घैल/घैला** कहल जाइत छैक। छोट घैलाकेँ **घैली/ठिलिया/लबनी/ बसनी** कहल जाइत छैक। मध्यम आकृतिक घैला **अधघैली** होइत अछि। अत्यन्त पैघ घैल **रीझम** कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन पानि रखबाक एकटा पैघ बासनकेँ **परछा** कहने छथि (बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ.-138)। पैघ घैलाक अन्य प्रभेद **मरतबान/मर्त्तबान/मिरतबान/मर्त्तमान** कहल जाइत छैक। एकर मुँह बेसी चाकर होइत छैक। बरेबमे पानि पटयबाक हेतु कनखाविहीन पैघ घैल **लोइट/लोटि/लोटी** कहल जाइत अछि।

गर्मी मासमे पानिकेँ ठंढ़ा रखबाक हेतु एकटा विशेष प्रकारक बासनक उपयोग होइत छैक। एकर पेन समतल ओ गोल रहैत छैक। पेटवला भाग गोलाक

आकृतिक रहैत छैक आ कनखा करीब एक बीतसँ हाथ भरि नाम ओ बेलनाकार होइत छैक। एकर माटिमे बालुक बेसी मात्रा देल जाइत छैक, जाहिसँ ई छिद्रमय रहैत छैक। एहि बासनकेँ **सुराही/सोराही/सुँघैल** कहल जाइत छैक। एकर मध्यम आकृति **सुमेर** ओ लघु आकृति **सुमेरनी** होइत अछि। गंगाजल रखबाक माटिक बासन **डगमगी** कहल जाइत अछि।

इनारसँ पानि भरबाक हेतु पहिने बेलनाकार बासनक व्यवहार होइत छलैक। एकरा **कटिया/डाबा** कहल जाइत छलैक। छोट कटियामे पानि पीबाक प्रचलन सेहो छल। लोक साहित्यमे अतिथिकेँ **बुचकट** कटियामे पानि देबाक प्रसंग भेटैत अछि। बुचकट शब्द आब लोक साहित्येटामे जीवित अछि आ ओकर अर्थ हेरा गेल छैक। अनुमानत: ई फूटल कनखावला बासनक विशेषणक रूपमे गृहीत छल।

डाबाक छोट प्रभेदक उपयोग पानि पीबाक बासनक रूपमे होइत अछि। एकरा **लोटा** कहल जाइत छैक। जाहि लोटाक पार्श्वमे एकटा माटिक नली लागल रहैत छैक, ओकरा **सोबरना/टोंटिया** कहल जाइत छैक। मुसलमान एहने लोटाकेँ **बधना** कहैत छथि। छोट सोबरनाकेँ **सोबरनी/टूँआँ/टुइआ/टूँइ** कहल जाइत छैक। मुसलमान एकरा **बधनी** कहैत छथि।

बेलनाकार आकृतिक, कलाकृति कयल ओ उठयबाक हेतु माटियेक डंटी लागल सोबरना **झारी/झारिल/झारिल लोटा** कहल जाइत अछि।

पानि पीबाक हेतु उपयोगी आन पात्र **गिलास** होइत अछि। एकर पेनी समतल रहैत छैक आ व्यास करीब दू-तीन आङुर होइत छैक। गिलासक खरइ छओ इंचसँ नओ इंच धरि होइत छैक। एकर उपरका भागक व्यास छओ आङुर धरि होइत छैक, जे नीचा दिस क्रमश: घटैत जाइत छैक। मध्यम आकृतिक गिलास **गिलासी/बौरका/भौरका/भरूका/भुरका/ बरूका** कहल जाइत छैक। छोट आकृतिवला गिलास **बौरकी/भौरकी/भुरकी/भरुकी/ चुकड़ी/सैंका/सैंकी** कहल जाइत छैक। चाह आदि पीबाक हेतु छोट-छोट आकृतिक गिलासक उपयोग होइत छैक। एकरा **कुरुआ/करेबा/कुल्हिया/कुल्हड़(र)** कहल जाइत छैक। लोटाक आकृतिक छोट-छोट गिलास **चुक्का** कहल जाइत अछि। शराब पीबाक कुलहड़केँ **रमकरबा** कहल जाइत छैक।

3. आवास सम्बन्धी सामग्री : खपड़ैल मकानक हेतु कुम्हार खपड़ा (सं. खर्पर) बनबैत अछि। खपड़ा अपन नाम प्राप्त करबासँ पूर्व अनेक अवस्थामे अनेक नामे अभिहित होइत अछि। एकर लम्बाइ एगारहसँ तेरह आङुर होइत छैक। खपड़ा बनयबाक हेतु चाक पर सभसँ पहिने फड़िक बीचमे दूनू अऔंठासँ दबाब दऽ गँहीर खाधि कऽ देल जाइत छैक आ दूनू हाथक अन्य चारू आङुरक सहायतासँ माटिक मोट कटोरीक आकृति बनाओल जाइत छैक। एहि आकृतिकेँ **कौर/कओर** कहल

जाइत छैक। फौरकें अउँठा ओ तर्जनीसँ दबाव दऽ ओकरा ऊपर दिस उठयबाक क्रिया **सिरोड़ब/सुरड़ब/सिसोहब** होइत छैक। एहिसँ जे बेलनाकार आकृति बनैत छैक, ओकरा **गलिया** कहल जाइत छैक। गलियाक उपरका भाग पर दबाव दऽ ओकरा ऊपर दिस नमरयबाक क्रिया **दुहब** होइत अछि। दुहलापर प्राप्त खपड़ाक सभसँ उपरका पतरकी भाग **ठोढ़ी** कहल जाइत छैक। एहि स्थितिमे गलिया एक जोड़ खपड़ाक जोड़ल समष्टि रहैत अछि। एकरा **फाँड़** कहल जाइत छैक। फाँड़ अधसुक्खू भेला पर ओकर भीतरवला भागमे हाथ दऽ पचकलहा भागकें सोझ कऽ देल जाइत छैक। एकर क्रिया **पलिआयब/गोलिआयब** होइत अछि। फाँड़क निचला भाग **चुतरा** कहल जाइत छैक। चुतरामे जे अतिरिक्त माटि रहैत छैक, ओकरा चक्कूसँ छीलि देल जाइत छैक। एहि छीलल माटिकें **छीलन/छीजन/छीलनि/खुहरी/खाहरी** कहल जाइत छैक। पश्चात् फाँड़क ठोढ़ीवला भागक अतिरिक्त अन्य भागकें चक्कूसँ दू बराबर टुकड़ामे काटि देल जाइत छैक। एहि स्थितिमे काटल फाँड़ **दाइल** कहल जाइत अछि। ठोढ़ी सुखिकऽ उज्जर भेला पर खपटा आदिसँ दाइलक उपरका भागमे चोट कयने दाइल दूटा नालाक आकृतिक अर्द्धबेलनाकार टुकड़ीमे बँटि जाइत छैक। एकरा **नड़ी/नड़िया/फुट्टा** कहल जाइत छैक।

नड़िया सुखला पर गनि कऽ ढेरी कयल जाइत छैक। गिनतीमे **गाहीक** प्रयोग होइत छैक। पाँचटाक एक गाही होइत छैक। गाहीक अनुसारें नड़िया गनब **गहिआयब** कहल जाइत अछि। गनल नड़ियाकें गोल ढेरीक रूपमे तरउपरी राखल जाइत छैक। एहि ढेरीकें **ठेक** कहल जाइत छैक। ठेकसँ नड़िया आबामे जाइत अछि आ पकला पर खपड़ा (सं.खर्पर) कहबैत अछि।

बरेड़ी पर झाँपनक रूपमे पड़ऽवला बेसी चाकर (चारि इंच) मुदा अपेक्षाकृत छोट (छओ इंच) खपड़ाकें **मरड़ा** कहल जाइत छैक। चाड़क शुरूमे बत्ती पर अड़कल रहऽवला विशेष प्रकारक खपड़ा **टोंटिया** कहल जाइत अछि। एकर ठोढ़ी पूर्ण रूपमे एहिमे रहिते छैक मुदा एक दिसुक नड़ियावला भाग काटल रहैत छैक आ पाछाँ दिस दू इंच नोँखगर माटि साटल रहैत छैक, जकरा बत्ती पर अड़ा देने खपड़ा ससरैत नहि छैक। नोँखगर माटिक टुकड़ी **टोंटी/टोंटा** कहल जाइत छैक।

मि. भा. कोषमे खपड़ाक एकटा प्रभेदकें **लखौरी** कहल गेल अछि। मुदा लखौरी शब्द पातर ओ छोट आकृतिक ईंटक विशेषणक रूपमे प्रयुक्त अछि।

करीब छओ इंच लम्बा ओ चारि इंच चाकर समतल खपड़ाक प्रभेद जकर लम्बाइवला भागक दुनू छोर पर आधा इंच मुड़ल रहैत छैक से **औलिया/थपुआ/थोपुआ/पथुआ खपड़ा** कहल जाइछ। ई खपड़ा कुम्हार साँचा द्वारा हाथसँ पाथैत अछि। एकर निर्माणक हेतु चाकक कोनो आवश्यकता नहि होइत छैक।

कोनिआ घरमे छारबाक समय कोनाक मिलन विन्दु पर देल माटिक कोहा वा आन पात्र **गुम्बज/गुमुज** कहल जाइत अछि।

मकानमे पूर्वमे शोभाक हेतु ओ वायुक आवागमनक हेतु पाकल माटिक जाली बनैत छल। एकरा **कठहारा** कहल जाइत छलैक। आइकाल्हि सीमेन्टक जालीक प्रयोग भेने कठहारा शब्द विलुप्त भेल जा रहल अछि।

4. व्यवसायोपयोगी सामग्री : कुम्हार द्वारा निर्मित अनेक माटिक पात्र विभिन्न व्यवसायक हेतु उपकरणक रूपमे व्यवहृत होइत अछि। एहन व्यवसाय सभ अछि- (क) दुग्ध-व्यवसाय (ख) तेल-व्यवसाय (ग) ताड़ी-व्यवसाय एवं (घ) वाद्य-यन्त्र

(क) दुग्ध-व्यवसाय : दुग्ध-व्यवसायमे दूध दुहबाक हेतु, दूधकें नपबाक हेतु ओ दूधकें मथिकऽ मक्खन निकालबाक हेतु अनेक प्रकारक माटिक पात्रक प्रयोजन होइत छैक। दूध दुहबाक माटिक बासन **कटिया/कँटिया/डाबा/दुधही डाबा** कहल जाइत छैक। एकर पेन गोल, पेट खूब चाकर मुदा कम गँहीर होइत छैक। एहिमे पैले जकाँ पैघ कनखा लागल रहैत छैक। पैघ डाबाकें **झब्बहा/झभहा** कहल जाइत छैक। एकर छोट आकृति **झबही/झभही/डबही** होइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **दुहनी/मेटिया/मिटिया** सेहो कहल जाइत छैक (बिहार पीजेन्ट लाइफ- पृ.-26)।

ग्रियर्सन पैघ डाबाकें **पाथा/राइस/रासि** ओ छोट डाबाकें **थपरी** कहने छथि (तत्रैव)। पाथामे सेर भरि ओ **चुकड़ी/चुक्की** मे चारि सेर दूध अँटैत छैक। दूध रखबाक छोट पात्र **कुढ़िया** कहल जाइत अछि।

दूध नपबाक लोटाक आकृतिक सबसँ छोट बासन **फुच्ची** कहल जाइत अछि। फुच्चीमे पाओ भरि घरि दूध अँटैत छैक। सेर भरि दूध अँटऽवला दूध नपबाक पात्र **चपइ** ओ तीन पाओ अँटऽवला **तिनपइ** कहल जाइत अछि। चपइकें **डाबा/कटिया** सेहो कहल जाइत छैक। एकर पेटक गहराइ चारि-पाँच आङुर मात्र होइत छैक, मुदा गोलाइ अठारह-बीस आङुर होइत छैक। एहिमे पैले जकाँ कनखा लागल रहैत छैक।

मक्खन महबाक हेतु दू आङुर ठाढ़ कनखावला पैघ ओ गोल तौलाक व्यवहार होइत छैक। एकरा **महना/कूँड़ा** कहल जाइत छैक।

घी रखबाक हेतु डाबाक आकृतिक बासन **टारा(ड़ा)** कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन घी रखबाक पैघ पात्रक हेतु **घीवकड़हा** ओ छोट पात्रक हेतु **घीवकड़ही** शब्द कहने छथि (ग्रि.-पृ. 26)।

(ख) तेल-व्यवसाय : तेली तेल रखबाक हेतु डाबाक आकृतिक एकटा पात्रक उपयोग करैत अछि। एकरा **टारा(ड़ा)/टौंरा(ड़ा)** कहल जाइत छैक। छोट टाराकें **टारि(ड़ी)/टौंरि(ड़ी)** कहल जाइत छैक। लघु आकृतिक टारीकें **टरि(ड़ि)या** कहल जाइत छैक।

तेल रखबाक पैघ कोहाकेँ **तेलहाँड़ी/तेलहण्डा** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन तेल रखबाक अन्य पात्रकेँ **खीखी** कहलनि अछि (बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-135)। ई पात्र सभ माटिसँ निर्मित होइत अछि।

(ग) ताड़ी-व्यवसाय : ताड़ीक व्यवसाय पासीक जातीय व्यवसाय थिक। एहि व्यवसायसँ सम्बद्ध **हथौना, लबनी/नमनी/तरकट्टी, लबना/नमना, कटिया/चुक्कड़, छनान, घैला/बेचाही/दोकानी, घैली, अधघैली/बम्मा, चौठी/घचक्का/घचक्की, गुड़की/गोलकी, उढ़रा/ओढ़रा, अधचौठी, महाली** आदि माटिक पात्र कुम्हारे बनबैत अछि।

(घ) वाद्य यंत्र : कुम्हार चामसँ छाड़ि कऽ बजयबा योग्य अनेक वाद्ययंत्रक माटि सँ निर्मित आधार बनबैत अछि। एहि आधार सभक आकृति गोलार्द्ध जकाँ होइत छैक। एकरा सभकेँ **खोल/खोला** कहल जाइत छैक। विभिन्न वाद्ययंत्रमे प्रयोग होयबाक आधार पर एकर विशिष्ट शब्दावलीक विकास नहि भेलैक अछि।

5. यज्ञ संस्कार ओ पावनि-तिहार सम्बन्धी सामग्री : कुम्हारक बनाओल विभिन्न प्रकारक माटिक बासन यज्ञ, संस्कार ओ पावनि-तिहारमे व्यवहृत होइत छैक। किछु बासन यज्ञसँ सम्बद्ध भऽ गेने अपन सामान्य नामसँ पृथक् नामे अभिहित होइत अछि तँ किछु बासन खास आकृति ओ उपयोगक कारणेँ अपन विशिष्ट नामे जानल जाइत अछि।

पावनि-तिहार शुभकाजमे आम्र पल्लव देल जल भरल घैलकेँ **कलस/कलसा** कहल जाइत छैक। विआहमे सगुनक हेतु पनिभरनीक माथ पर राखल कलस **सिरहर** कहल जाइत छैक। छोट कलसकेँ **कलसी** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो कलसमे चारिटा टोँटी लागल रहैत छैक आ ऊपरी भाग विभिन्न फूल-पातक आकृति बनाय केँउरल रहैत छैक। चूड़ा, मखान आदिक भार सैंतबाक हेतु विशेष प्रकारक घैलक व्यवहार होइत छैक। एकर कानक उपरका भाग मोड़ल नहि रहैत छैक। एकरा **कूड़ा/कूँड़ा/कुण्डा** कहल जाइत छैक। छोट कूड़ा **कुड़नी** होइत अछि। उपनयनमे चारिटा टोँटी लागल कूड़ाक व्यवहार होइत छैक। एकरा **कुरबाड़** कहल जाइत छैक। छठि पावनिमे घाट पर एकटा घैल जाइत छैक। एहि पर दीप जराओल जाइत छैक। एकरो **कुरबाड़** कहल जाइत छैक। कन्याक विआहमे जे कलस प्रतिष्ठापित कयल जाइत अछि, ओकरा **पुरहर** कहल जाइत छैक। विआह कयलाक बाद वर विदा भऽ कऽ जखन अबैत अछि, तखन विध करबाक हेतु जाहि कलसमे पानि भरिकऽ राखल जाइत छैक, ओकरा **लगहर** कहल जाइत छैक। लगहर वरक ओहिठाम विआहक प्रात भरल जाइत छैक। लगनमे काजक हेतु छोट घैल **लगनी** कहबैत छैक।

विआह, मधुश्रावणीमे विधक हेतु व्यवहृत कनखा रहित कोहाकेँ **पातिल/पतिली/अहिबातक पातिल** (सं. पातिली) कहल जाइत छैक। यज्ञादिमे

मध्यसँ दू भागमे विभाजित सरबाक व्यवहार होइत छैक। एकरा **आरिवला मटकूरी** कहल जाइत छैक। बरिसाति पुजबाक हेतु डमरूक आकृतिक एकटा पात्रक व्यवहार होइत छैक। एहिमे दुनू दिस दूटा डंटी लागल रहैत छैक आ उपरका भागमे गड़हा बनल रहैत छैक। ओहि गड़हामे चाउर भरि पात्रकेँ माथ पर धऽ कन्या वटवृक्षक पूजनक हेतु जाइत छथि। एहि पात्रकेँ **बोहनी/खिरोदनी/खिरोधनी** कहल जाइत छैक। कन्याक विआहमे कन्या द्वारा एकटा सरबाक मध्य स्थापित माटिक शिवलिंगक आकृतिकेँ पुजबाक विधान छैक। सरबा सहित ओ आकृति **सीरी/सिड़ही** कहल जाइत छैक।

तुलसी उद्यापनमे 108 छिद्रवला तौलाक प्रयोजन होइत छैक। एकरा **कन्टील** कहल जाइत छैक। छठि पावनिमे जाहि सरबाक व्यवहार होइत छैक, ओकरा **कोसिया** कहल जाइत छैक। चौठचन्द्र पावनिमे जाहि दहीक मटकूड़ीक उपयोग होइत छैक, ओकरा **छाँछी** कहल जाइत छैक। उपनयनमे मड़बा पर **हाथी** बैसाओल जाइत छैक। छठिमे घाट पर हाथी लऽ गेल जाइत छैक। एहि माटिक हाथीक पीठ ओ माथ पर दीप लागल रहैत छैक। ब्रह्मस्थान ओ विभिन्न ग्रामदेवताकेँ घोड़ाक लगाम धयने मनुष्याकृति चढ़यबाक विधान छैक। ई मूरत **घोड़की/घोड़कलस** कहल जाइत छैक। मूर्ति गढ़निहार कुम्हार **छोलगढ़िआ** कहबैत अछि।

यज्ञ ओ विभिन्न अवसर परेँ विभिन्न भगवानक मूर्त्तिक पूजाक विधान अछि। कुम्हार दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश, विश्वकर्मा, कृष्ण, गोविन्द आदि देवताक मूर्त्ति बनबैत अछि। एहि मूर्त्ति सभमे प्रसंगक अनुरूप **चक्र, मटुक, कारा, चूड़ी** ओ अन्य सामान सेहो लगैत छैक।

कातिक मासमे मिथिलामे भाइ-बहिनिक पावन पर्व सामा-चकेबा मनाओल जाइत छैक। एहि पावनिमे बहिनलोकनि छठिक पारण दिनसँ कातिक पूर्णिमा धरि किछु मूर्त्तिक संगे खेलाइत छथि। ई मूर्त्ति सभ कुम्हारो बनबैत अछि। एहिमे पानक पातक सदृश माटिक आधार पर गर्दनि ओ माथवला भागक संग एकटा पुरुषाकृति होइत छैक। एकरा **चकेबा** कहल जाइत छैक। गोल आधार पर दूटा ओहने महिलाकृति आमने-सामने स्थापित रहैत छैक। एकरा **सामा** कहल जाइत छैक।

6. अन्य सामग्री : उपर्युक्त वर्गीकृत उत्पादनक अतिरिक्तो कुम्हार अनेक उपभोग्य सामग्रीक उत्पादन करैत छथि।

साँझ देबाक हेतु माटिक दू आङुर व्यासवला एकटा उपकरणक व्यवहार होइत छैक। एकर आधार समतल होइत छैक आ ऊपर दिस चारू कात एक आङुर ठाढ़ घेरा रहैत छैक। घेरा पर एक ठाम नोंख बनल रहैत छैक। एहि पात्रमे तेलहनक तेल अथवा घृत दऽ ओहिमे सूतक बाती देल जाइत छैक। बातीक एकटा छोर तेलमे डूबल रहैत छैक आ दोसर छोर नोंखवला भाग पर अड़का देल जाइत छैक। ओही छोर

पर आगि लगा देने प्रकाशक संग बाती जरैत छैक। प्रकाश-व्यवस्थाक ई उपकरण अत्यन्त प्राचीन अछि। एकरा **दीप/दीपक/दीया/दियरा/दिवारी/दियारि/सझाँती/चिराक/चिराग** कहल जाइत छैक। एकर नोखवला भाग **मुँह** कहल जाइत छैक। छोट-छोट दीपकें **दिपली/दियरी/दिउरी/ दियारी/दिउली/दियौरी** कहल जाइत छैक। जाहि दिपलीमे चारू कात मुँह बनल रहैत छैक, ओकरा **चौमुख दीप/चम्मुक/चम्मुख/डिब्बू** कहल जाइत छैक। पाँच मुँहवला दीपकें **पंचमुखी/पञ्चदीप** कहल जाइत छैक।

आइकाल्हि मटिया तेल प्रकाशक हेतु जराओल जाइत अछि। मटिया तेल जराकऽ प्रकाश करबाक हेतु करीब दू इंच व्यासवला गोल पात्रक व्यवहार होइत छैक। एही पात्रमे तेल भरल जाइत छैक। एकरा **दिप्पी/डिब्बी/डिबिया/चुक्का/चुकड़ी/चुकिया/चुक्कड़/चुक्की** कहल जाइत छैक। डिबियाक मुँह ऊपर दिस खुलल रहैत छैक। ई मुँह गोल रहैत छैक आ एहिमे मुश्किलसँ आङुर पैसि सकैत छैक। एहि मुँह पर एकटा ढक्कन लगाओल जाइत छैक। ढक्कनकें **मुन्ना/मुँहनाल/ठेपी/छुच्छी/छुछरी** कहल जाइत छैक। एकर मध्यमे छेद रहैत छैक जाहिमे बाती लगाओल जाइत छैक। मुन्ना मध्यमे एक आँगुर मोट रहैत छैक आ ऊपर-नीचा क्रमशः एकर मोटाइ कमल रहैत छैक जे छिद्र लग जा कऽ मसुरीक आकृतिक भऽ गेल रहैत छैक।

दीपकें ऊँच स्थान पर रखबाक हेतु डमरूक आकृतिक आधार **दीयठ/दीयठि/लावनि/लावन/दीपदान/दीपदानी** कहल जाइत छैक।

देहमे तेल लगयबाक लेल तेल रखबाक दीपक आकृतिक गोल पात्र **माली/मलिया/ मलसी** कहल जाइत छैक। पैघ मलसीमे चून राखि टकुरीयो काटल जाइत छैक। ई मलसी **टकुरकट्टा** कहल जाइत अछि।

धियापुताक हेतु कुम्हार अनेक प्रकारक माटिक **मूरुत/पुतरी/पुतरा** बनबैत अछि। मूरुत मनुष्यक ओ अनेक प्रकारक जन्तुक बनैत अछि। माटिक मुखौटा सन एकटा खेलौना जाहिमे मनुष्यक मुँहक विकृत आकृति बनाओल रहैत छैक, **लोली/हाउ** कहल जाइत छैक (**मंसूरचकक हाउ सन मुँह ककरो खौंझयबाक लेल कहबाक प्रचलन अछि**)।

धियापुताक खेलयबाक हेतु माटिक छोट-छोट **गोली** बनैत अछि। पाइ जमा करबाक हेतु माटिक फोंक गोलाकार पात्र बनैत अछि। एकर ऊपरमे एकटाम चोड़ल रहैत छैक। एहिसँ ओहिमे पाइ खसाओल जाइत छैक। एहि पात्रकें **गल्ला/गुल्लक/बौरकी/ चुकड़ी/बैंक** कहल जाइत छैक।

मालजालकें सानी-पानि देबाक हेतु समतल पेनवला अर्द्धगोलाक आकृतिक मोट देबालवला बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **नादि/नाद/लादि/लाद/लादी** कहल जाइत छैक।

धूम्रपान हेतु लोक नारिकेरक फल्लीवला हुक्काक व्यवहार करैत अछि। एहि हुक्काक उपरका भागमे एकटा माटिक पात्र लागल रहैत छैक, जाहिमे पानि ओ आगि

देल जाइत छैक। एकर उपरका भाग कटोरी जकाँ रहैत छैक आ निचला भाग नली जकाँ। एकरा **चीलम** कहल जाइत छैक। मुसलमानक हुक्का **गड़गड़ा** कहल जाइत छैक। एहि हुक्काकें जमीन पर ठाढ़ रखबाक माटिक आधार सेहो **गड़गड़ा** कहल जाइत छैक। एहूमे चीलमक व्यवहार होइत छैक। गाँजा पीबाक हेतु निर्मित विशेष प्रकारक चीलम **गजही चीलम** कहल जाइत अछि।

धूप जरयबाक हेतु कुम्हार **धुपदानी** नामक उपकरण बनबैत अछि। एहिमे पकड़बाक हेतु एकटा डंटी लागल रहैत छैक। उपरका भागमे कटोरी जकाँ खाधि रहैत छैक, जाहिमे आगि ओ धूप देल जाइत छैक।

पहिने कुम्हारक बनाओल माटिक **दोआत/दोआतिक** व्यवहार होइत छल आ मोसि ओहीमे राखल जाइत छल। मुदा आब ई उपकरण विलुप्त भऽ गेल अछि। एकर बदला आब शीशेक पात्र चलैत अछि।

आधुनिक युगक विभिन्न आवश्यकताक अनुरूप कुम्हार अनेक आनो सामग्रीक निर्माण करैत अछि। फूल लगयबाक हेतु माटिक बेलनाकार गँहीर बासन **घमला/गमला/फुलदान** कहल जाइत छैक। कागतकें हवामे उधिअयबासँ बचयबाक हेतु पाकल माटिक गोल ओ ठोस करीब पाव भरि वजनक थिम्हा बनाओल जाइछ। एकरा **पेपरवेट** कहल जाइत छैक। पानक पीक उगलबाक हेतु डमरूक आकृतिक एकटा बासन जकर उपरका भागक कटोरी सन छेदमे पीक फेकल जाइत छैक, **पानदान/पिकदान/पिकदानी/पिरिकदान/पिरिकदानी/थुकदान/थुकदानी/उगलदान/उगलदानी** कहल जाइत छैक। तेलकें एक बर्तनसँ दोसर बर्तनमे स्थानान्तरित करबाक हेतु एकटा उपकरणक उपयोग होइत छैक। एकरा **टीप** कहल जाइत छैक। एकर निचला भागमे एक आङुर मोट नली लागल रहैत छैक। ओहि नलीक उपरका छोर पर एकटा कटोरी जकाँ बनल रहैत छैक, जकर व्यास ऊपर दिस क्रमशः बढ़ल रहैत छैक। अँचार आदि रखबाक हेतु कुम्हार समतल आधार, बेलनाकार पेट ओ तीन इंच व्यासक गोल मुँहवला पात्र बनबैत अछि। एकरा **बुइयाम** कहल जाइत छैक। टेबुल आदि पर फूल सजयबाक हेतु माटिक आधार **गुलदस्ता/गुलदान** कहल जाइत अछि।

बासनक गुण-दोष व्यंजक शब्दावली : एहि तरहें कुम्हार विभिन्न उपयोगक बासन सभ बनबैत अछि। एहि बासन सभक गुण-दोषसँ सम्बद्ध शब्दावली सेहो प्रचुर संख्यामे कुम्हारक व्यवसायमे प्रयुक्त अछि।

आवामे देबासँ पूर्व बासनकें **काँच** कहल जाइत छैक। आवामे देलो पर जँ बासन ठीकसँ नहि पाकि पबैत छैक, तँ एहि प्रकारक किञ्चित काँच बासनकें **कचकूह/कचकुआह** कहल जाइत छैक। आधा काँच ओ आधा पाकल बासन **अधकच्चू/अधपक्कू** कहल जाइत छैक। सामान्य रूपें पाकल बासनक अवस्था **मीठापाक/गुलाबी पाक** कहल जाइत छैक। जे बासन कतहु फूटल-भाङल अथवा

निकृत नहि रहैछ, ओकरा **दढ़/सल्लग/साबुत** कहल जाइत छैक। किछु बासनमे बेसी ताओ लागि जाइत छैक। आगिक आधिक्यक कारणेँ एहन बासनक किछु भाग गलि कऽ टेढ़ भऽ जाइत छैक। एकरा **बरकब/पघिलब/पिघलब** कहल जाइत छैक। पघीलिकऽ जे बासन टेढ़ ओ अत्यन्त कठोर भऽ जाइत छैक ओकरा **रौंट** कहल जाइत छैक। **रौंट** बासनक गललाहा भागमे जे खुरदुराह आकृति बनि जाइत छैक ओकरा **झाम/झामा** कहल जाइत छैक। बासनमे धुआँ लागि गेने ओकर रंग कारी भऽ जाइत छैक, मुदा ओ पकैत नहि अछि। ओहन बासन **धुँआयल** कहल जाइत छैक। कम सुक्खल बासन आबामे धऽ देने ओकर सतह अपने भीतरक जलीय अंशक प्रभावेँ चित्र-विचित्र भऽ जाइत छैक। एहन बासन **भफायल** कहल जाइत अछि।

जाहि बासनक आकृति ओकर विविध अंगक अनुरूप नहि रहैत छैक, ओकरा **बेडओल/बेढब/कुढब/कुडओल** कहल जाइत छैक। आबामे बासनक पाछाँ बासनक मुँह सारल रहबाक कारणेँ अगिला बासनक पेनमे कारी दाग पड़ि जाइत छैक। ओकरा **गुल** कहल जाइत छैक। गुल बनबाक क्रिया **गुल उपड़ब** होइत अछि।

काँच बासनक माटि गील रहबाक कारणेँ बासनक नमरिकऽ टेढ़ भऽ जयबाक क्रिया **पलड़ब/लहब** होइत अछि। बर्तनमे कतहु अवतल आकृति बनि जयबाक क्रिया **खाल होयब/पचकब** होइत अछि। एकत्र बासनक ढेरी डोलला उत्तर बासन सभक एक दोसर पर खसबाक क्रिया **ढनमनायब/हरहरायब** (**प्रसिद्ध कहबी : जतऽ टूटा माटिक बासन रहतै ढनमनेबे करतै**) होइत अछि। माटिक बासनक परस्पर ठोकर **ढाब/ढाबा** कहल जाइत अछि। एही आधार पर लोकलक्षण अछि **ढाबाढूबी** लगायब। एकर अर्थ अछि दू गोटामे परस्पर टकराओ करायब। निरन्तर ढनमनयबाक क्रिया **ढनमनी लागब** होइत अछि। ढनमनीक प्रवृत्तिवला बासनकेँ **ढनमनाह** कहल जाइत छैक। बासनक बाहरी भागसँ ओकर उपरका किछु अंश पृथक् भऽ जयबाक क्रिया **चट ओदरब/चटकब** होइत अछि। एहिसँ जे धँसल रिक्त स्थान बनैत छैक, से **चट** कहल जाइत छैक।

बासनक अनेकशः खण्डित होयबाक क्रिया **फूटब/भाङब** होइत अछि। बासनमे अत्यन्त पातर रिक्त स्थान बनबाक क्रिया **दरकब/चिड़कब/चनकब** होइत अछि। चिड़कलासँ जे रिक्त स्थान बनैत छैक, ओकरा **दराड़/दराड़ि/चीरक/फाट/फाँक/फाड़ि** कहल जाइत छैक। बेसी नाम चीड़क **चिड़क्का** कहल जाइत छैक। जाहि बासनमे कनखा पर किञ्चित दराड़ि भऽ जाइत छैक ओकरा **कनहन/कंगहन** कहल जाइत छैक। कनेको आघातसँ बासनक फुटबाक क्रिया **टनकब/टुनकब** होइत अछि। टुनकबाक प्रवृत्तिवला बासनकेँ **टुनकाह/टुनकी** कहल जाइत छैक। गर्म बासन पर जलक बुन्द पड़ला पर बासनक फुटबाक क्रिया **सिहरब** होइत अछि। पानि भरला पर काँच रहबाक कारणेँ बासनक पानिक दबाबसँ फूटि जयबाक क्रिया **भसकब** होइत अछि। गर्म कयला उत्तर बासनक स्वतः फूटि जयबाक क्रिया **चिरिआयब** होइत अछि। अनेक बासनक एकें संग फुटबाक क्रिया **भहरायब** होइत अछि। किछु दिन धरि राखल रहला पर अधपक्कू बासनक बाहरी भागसँ ओकर सतहक किछु भाग स्वतः झहरऽ लगैत छैक। बासनक सतहक एहि तरहेँ स्वतः झहरबाक क्रिया **नोनिआयब/नोनी लागब** होइत अछि। बासन सभक फुटि कऽ अनेक छोट-छोट टुकड़ीमे खण्डित भऽ जयबाक क्रिया **भरकुस्सा होयब** होइत अछि।

माटिक बासनक गुण-दोषक पता लगयबाक हेतु ओकरा ठोकि-बजा कऽ देखल जाइत छैक। ठोंकलासँ विभिन्न प्रकारक आवाज निकलैत छैक। कम पाकल बासनक आवाज **टनाटनि/टन-टन** होइत छैक। सामान्य रूपेँ पाकल बासन चोट कयला उत्तर **झनाक्-झनाक्** उठैत अछि। फूटल बासन **खन-खन** आवाज करैत अछि।

बासन फुटला पर जे पैघ-पैघ टुकड़ा निकलैत छैक, ओकरा **खप्पा/खप्पर** कहल जाइत छैक। छोट-छोट खप्पाकेँ **खापट/खपटा/खुपटी/खिपटी/खपटी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट खपटी **खिप्पी** होइत अछि। मोट खपटाकेँ **झुटका/झिटुका** (**प्रसिद्ध लोकोक्ति : हारल नटुआ झिटुका बीछय**) **झिटुकी/झुटकी/झिकटा/झिकटी/झिकुटा/ झिकुटी/झिटकी** कहल जाइत छैक।

मलाह जाति

मलाह जाति पानिसँ सम्बद्ध व्यवसायमे संलग्न अछि। पानिसँ माछ, मखान, सिङ्हारा ओ चूनक उत्पादन कयल जाइत छैक।

माछ मिथिलावासीक प्रिय खाद्य रहल अछि। एहिठाम माछक प्रशस्तिमे कहल जाइत अछि जे आम, पान, धान, माछ ओ मखान स्वर्गहुमे दुर्लभ छैक। एही प्रशस्तिक कारणेँ एहि ठामक साहित्यमे माछक निरन्तर प्रयोग भेटैत अछि।

वर्णरत्नाकरमे (**पृष्ठ 40**) माछक अनेक प्रभेदक उल्लेख भेल अछि। बुकानन कोसीक माछ सभक सूची प्रस्तुत कयने छथि। (**ऐन एकाउण्ट आफ दी डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया इन 1809-10, पृ.-293-299**)। चन्दाझाक वाताह्वानमे अक्षरानुक्रमसँ अट्ठाइस गोट माछक उल्लेख भेटैत अछि। हरिमोहनझा माछक महत्व पर सरस निबन्ध प्रस्तुत कयने छथि (**खट्टर ककाक तरंग**)। श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' रचित प्रसिद्ध हास्य रचना 'कन्नू भाइक कण्ठी'मे ब्यालीस गोट माछक उल्लेख भेल अछि (**मिथिला मिहिर, 6 नवम्बर 1960**)। तदतिरिक्तो साहित्यमे आनो ठाम मछओर ओ माछक नाम सभसँ सम्बद्ध शब्दावलीक प्रयोग भेटैत अछि। भोजन विन्यासक क्रममे तँ जेना माछक प्रधानता मिथिलाक अपन वैशिष्ट्यक सूचक रहल अछि। माछक दर्शनसँ एहि ठाम यात्राकेँ शुभ बूझल जाइत छैक। चतुर्थी ओ कहाउतक शुभ भारमे तँ माछ सैंठबाक परम्परा अछिए, श्राद्धोकर्ममे माछ प्रयोजनीय होइत छैक आ द्वादशाक प्रात माछक भोजन अनिवार्य बूझल जाइछ।

मिथिलाक कोजागराक मखानक अपन विशिष्टता छैक। सिङ्हारा जलसँ प्राप्त फल होइत अछि। चून, पान-खैनी आदिक संगे खाद्यक रूपमे तथा गृह निर्माणक सामग्रीक रूपमे व्यवहृत होइत अछि। ई कठोर कवचयुक्त एकटा जलजीवी प्राणीक खपरोइयाकेँ जराकऽ बनैत छैक। पानिसँ मलाह एहि समस्त हस्तान्तरणीय वस्तु सभक उत्पादन करैत अछि।

एहि सभ हस्तांतरणीय उत्पादनक अतिरिक्त जल-परिवहनक वाहकक रूपमे सेहो मलाह जाति अप्रत्यक्ष उत्पादन करैत अछि। प्राचीने कालसँ परिवहन साधनमे जल-परिवहनक प्रमुखता रहलैक अछि। नदी मातृक देश मिथिलामे जल-परिवहनक खास महत्व रहलैक अछि। एकर महत्वक कारण छैक मिथिलामे आबऽवला प्रतिवर्षक बाढ़ि। एहि बाढ़ि सभक कारणेँ मिथिलाक अनेक क्षेत्र सालमे छओ-छओ मास धरि पानिसँ घेरले रहि जाइत छैक आ जल-परिवहनेटा ओतऽ सहायक सिद्ध होइत छैक।

बाढ़ि, वर्षा ओ नदीक बाहुल्यक कारणेँ पानिसँ सम्बद्ध व्यवसाय मिथिलामे खूब विकसित अछि आ एहि व्यवसाय पर जाहि जाति विशेषक एकाधिकार छैक, ओकरा मलाह कहल जाइत छैक।

प्रसिद्ध कवि ओ उपन्यासकार नागार्जुन (यात्री) अपन उपन्यास '*वरुणक बेटे*' (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1975)मे मिथिलाक मलाह जातिक सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक ओ राजनैतिक जीवनक सजीव चित्र प्रस्तुत कयने छथि। प्रो॰ मायानन्दमिश्रक '*माटीकेंलोगसोनेकोनैया*' (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, 1967) उपन्यास सेहो मिथिलाक मलाह जातिक सामाजिक जीवनकेँ आधार बनाकऽ रचित अछि।

मलाहक आधार सामग्री : मलाहक निवास स्थानकेँ **मलहटोली/गोढ़िआरी** कहल जाइत छैक। मलाहक वृत्ति **मलाही** होइत अछि। मलाहीक आधार सामग्री छोट-पैघ जलक भंडार सभ होइत अछि। पहाड़, झील आदिसँ निकलल पानि बहबाक बहुत पैघ ओ प्राकृतिक मार्ग **नदी/लद्दी/धार/दरिआओ** कहल जाइत छैक। कम चाकर ओ छोट नदीकेँ **नदिया** कहल जाइत छैक। जाहि नदीमे सालो भरि पानि बहिते रहैत छैक, ओकरा **सदानीरा** कहल जाइत छैक। बरिसातक मौसम भरि पानिसँ भरल रहऽवला नदी **बरसाती/बरिसाती** होइत अछि।

नदीक चौड़ाइकेँ **पेट/पाट** कहल जाइत छैक। पेटक मध्यवर्ती भाग **मँझधार** होइत अछि। पाटक दूनू छोरकेँ **अररा(ड़ा)/अड़रा(ड़ा)/ अरारा(ड़ा)/ अड़ारा(ड़ा)/अरारि(ड़ि)/किनार/किनारा/कन्हेर/कनहेरि/किनहरि/ किनहेर/किनहेरि/कछार(ड़)/कछेर (ड़)/किछेर(ड़)/ कछहरि(ड़ि)/तारा** (सं.तट) कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **भीत/भित्ता/भीता** (कोसी गीत पृ.-11, खुटबा जे गाड़ल कोइला, झझिया जे पसारल हे, भीत चढ़ि कै गेल ठाढ़ हे) कहल

जाइत छैक। किनारक सतहपरवला छोरकेँ **किनारी/कनछी/कंगनी/कंगनिआ** कहल जाइत छैक। धारक अपर तटकेँ **पार** कहल जाइत छैक। जाहि स्थानसँ लोक आर-पार करैत अछि, से **घाट** कहल जाइत छैक।

बरिसातमे नदीक पानिमे क्रमिक वृद्धि होयबाक क्रिया **नदी फुलब** होइत अछि। अत्यधिक पानि भऽ गेला पर नदीक बहबाक क्रिया **उफनायब** होइत अछि। नदीक कंगनी धरि पानि भरल रहला पर ओकरा **लबालब/छपोछप/कानोकान** भरल कहल जाइत छैक। दूनू किनार पर लबालब पानि भरबाक क्रिया **दूनू तारा-मिलब/दूनू तारा एक होयब** होइछ। किनार टपि कऽ पानि छिटकबाक क्रिया **उछलब/उछिलब** होइत अछि। नदी उछलला उत्तर पानिक वृद्धिकेँ **उछाल/पलार/पलारी** (सगरे समैया कोसिका सुति बैसि गमौले हे, भादो मास, मैया फेकल पलार कि भादो मास॥ कोसी गीत, पृ. 31) कहल जाइत छैक।

नदीमे पानिक बहाओकेँ **धार/धारा** कहल जाइत छैक। पानिक प्रखर धार **रेत** होइत अछि। पातर रेतकेँ **रेती** कहल जाइत छैक। विपरीत दिशामे बहैत दूटा धारक मिलबाक स्थानकेँ **हहाइट/टक्कर** कहल जाइत छैक।

हवाक प्रभावसँ जलक सतह पर बनल उभड़-खाभर अंशकेँ **तरङ्ग/लहर/ लहरि/हिलोर/हिलोरा/हिलकोर/हिलकोरा** कहल जाइत छैक। पानिकेँ तरङ्गित करबाक क्रिया **हिलकोरब** होइत अछि।

नदीमे जेम्हरसँ पानि अबैत छैक ओकरा **सीरा/उजान** कहल जाइत छैक आ जेम्हर पानि जाइत छैक ओकरा **भाठ/भाठा/भट्ठा/भाठि/भाठी** कहल जाइत छैक। नदीक प्रवाह दिसुक प्रदेशकेँ **भठियार/भठियारी** कहल जाइत छैक। पानिक बहाओक विपरीत दिशामे हवा बहलासँ धार पर उठल तरङ्गकेँ **नगदा/गएर** कहल जाइत छैक।

एकटा केन्द्रक परित: पानिक नचबाक स्थानकेँ **भँवर/भँवरा/भवरा/ भमर/भभरा/भाउर/भामर/भौंड़ा/भौंरी** कहल जाइत छैक। जाहि स्थान पर भ्रमर पड़ैत छैक, ओतऽ गँहीर खाधि भऽ जाइत छैक। एहि खाधिकेँ **खोन्ह/खोन/मोइन/मोनि** कहल जाइत छैक। मोनिसँ युक्त स्थल **मोनियार** कहल जाइत छैक। पानिमे नुकायल ओ वस्तु सभ (ऊख्वर जमीन, गाछ आदि) जे नाओक गतिमे बाधक होइत अछि, से **जक** कहल जाइत अछि। नदी द्वारा आनल बालुसँ ओकर मुँहक अवरुद्ध क्षेत्र **चहटी** कहल जाइत छैक।

नदीक धार द्वारा दूनू कातक माटि कटि कऽ क्रमहि धारमे सम्मिलित होइत जाइत छैक। एहि तरहेँ माटि कटबाक क्रिया **खँघरब** ओ धार द्वारा माटि खँघरलासँ नदीक दूनू कातमे भेल विकृतिकेँ **कटाओ/कटान/कटनिआ** कहल जाइत छैक।

कटाओंसँ किनारकेँ बचयबाक हेतु काते-काते अनेक खुट्टा गाड़ि, झाँखी दऽ, माटि भरि कऽ किनारकेँ सुरक्षित करबाक व्यवस्था **झाँझ/झाँझी/झझिया** कहल जाइत छैक।

नदीक धार जखन मार्ग बदलि लैत छैक तँ नदीक पूर्ववर्ती मार्गकेँ **छर(ड़)न/छर(ड़) नि/छार(ड़)नि/नासी/धथन/धथनि/मरन/ मरना/मरन/ मरनइ/मरनय/मारनि** कहल जाइत छैक। नदीक पेटमे उगल स्थल भागकेँ **दीअ(ब)र/दिअ(ब)रा/ दीअ(ब)रि/ दिआ(बा)रा** कहल जाइत छैक। पानि कम भेला पर अथवा कटनिआ दिसि धारक पेट चलि गेला पर नदीक क़ातमे उगल स्थल भागकेँ **बरार/गङ्गबरार** कहल जाइत छैक। जे स्थल भाग नदीक कटाओक कारणेँ ओकर पेटमे चलि जाइत अछि, से **गङ्गसिकस्त** कहल जाइत अछि।

नदीक उद्गम स्थलकेँ **मुहान/मुहाना** कहल जाइत छैक। एक नदीसँ दोसर नदीक मिलबाक स्थान **संगम/समगम** होइत अछि। तीनटा नदी जतऽ मिलैत अछि, ओहि स्थानकेँ **त्रिमुहान/तिरमुहान/त्रिमुहानी/तिरमुहानी** कहल जाइत छैक।

नदीक किनार पर ऊँच कऽ बान्हल घेराकेँ **बान्ह/छहर** कहल जाइत छैक। छोट छहरकेँ **छरकी** कहल जाइत छैक। बान्हक एक दिस पानि रहलासँ दोसर दिससँ फुटैत पानिक पातर-पातर धारकेँ **सो/सोआ** कहल जाइत छैक। सोआ फुटलासँ पानिक पातर धार निकलबाक क्रिया **झझायब** होइत अछि यथा- **(कोसी गीत, पृ. 6 एहेन बान्ह जे बान्हल बोहो रे मोगलबा, सिकियो ने झझाबे मोगलाक बान्ह)।**

नदीक एक कातसँ दोसर कात जयबाक क्रिया **पार करब** होइत अछि। नदी पार करबाक हेतु पानिमे स्तम्भ ठाढ़ कऽ काठ, बाँस, लोह आदिसँ पाटि कऽ बनाओल व्यवस्थाकेँ **पुल** कहल जाइत छैक। छोट पुलकेँ **पुलिया** कहल जाइत छैक। पुलक हेतु ईंटसँ बनाओल स्तम्भकेँ **पाया** कहल जाइत छैक। बैसाख-जेठ मासमे नदीमे पानि कम रहबाक कारणेँ बाँसक खुट्टा ओ खरचाल आदिसँ निर्मित पुलकेँ **ठट्ठर/ठठरी/चचरी/लचका** कहल जाइत छैक।

नदी जखन पाट छोड़ि दैत अछि तँ ओकर पानि छिड़िआ जाइत छैक। एहि छिड़िआयल पानिकेँ **दाहर/दाही/बाढ़/बाढ़ि/सयरा/सयला/सयलाओ/सयलबा** कहल जाइत छैक। जे पानि बहिकऽ अबैत छैक ओकरा **बोह/मोट** कहल जाइत छैक। पानि अयबाक ओ जयबाक कृत्रिम मार्ग **बाहा** कहल जाइत छैक। बाढ़िमे अत्यधिक पानि अयला पर **दाह-बोह आयब** कहल जाइत छैक। जाहि ठाम बेसी काल बाढ़ि अबैत छैक, ओहि स्थानकेँ **दहनाल/दहनायल** कहल जाइत छैक। पानि भरल क्षेत्र **जलामय/दह** होइत अछि। अति जल व्याप्त क्षेत्रकेँ **एकार्णवा** कहल जाइत छैक।

पानि बहयाक पातर मार्गकेँ **नाला** कहल जाइत छैक। छोट नालाकेँ **नाली** कहल जाइत छैक। नदीसँ पानि छिड़िअयबाक अथवा नदी दिस पानि लऽ जयबाक

चाकर ओ पैघ नाला **नहर/नहरि** होइत अछि। पानि पटयबाक हेतु माटिकेँ चीरिकऽ बनाओल मार्गकेँ **पइन/पएन/पीट/पीटी/बाहा** कहल जाइत छैक। बाहाक मुखस्थानकेँ **मुँहथरि** कहल जाइत छैक। अस्थायी बाहा **कनबह** होइत अछि। छोट बाहाकेँ **बहती/बहन्ती** कहल जाइत छैक। बरिसातमे पानि बहबाक स्वाभाविक मार्गकेँ **पनिबट/पनिबह** कहल जाइत छैक।

नदीक बहैत पानिक ध्वनि **कलकल/छलछल** होइत अछि। हवाक झोंकासँ बहैत पानि पर उत्पन्न ध्वनि **छप-छप** होइत अछि। धारक तीव्रताक संग बहबाक क्रिया **तोड़ मारब** होइत अछि। धारक वेगसँ वस्तुकेँ स्थानान्तरित करबाक क्रिया **दहायब/बहायब** होइत अछि। जलमे चललासँ उत्पन्न ध्वनि **छप्पर-छप्पर** कहल जाइत छैक।

मिथिलामे नदीक बाहुल्य अछि। नदी सभहिक वर्णनसँ एहिठामक साहित्य भरल अछि। मिथिलाक सीमा निर्धारण करैत कवीश्वर चन्दाझाक निम्नलिखित पद भेटैत अछि–

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिश पूर्व कौशिकी धारा ।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ।।
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ।।

मुकुन्दझा 'बख्शी' अपन 'मिथिला भाषामय इतिहास'मे मिथिलाक सीमा-निर्धारण करैत निम्नलिखित पद देने छथि :-

गङ्गा गण्डकि कौशिकी हिमवद्वन परिवेश।
दक्षिण पश्चिम पुब उत्तर जाहि से मिथिला देश।।
तीनि महानदि तीर मह भुक्ति जसु सभ काल।
अनुपम देश अनूप से तिरहुति विदित विशाल।।

यात्री अपन 'वन्दना' (चित्रा, पृ.-64) शीर्षक कवितामे मिथिलाक वन्दना करैत अनेक नदीक उल्लेख कयने छथि–

गंगा तरंग चुम्बित चरणा, शिर शोभित हिमगिरि निर्झरणा
गंडकि गाबथि दहिना जहिना, कौशिकी नाचथि बामा तहिना
धेमुड़ा त्रियुगा जीवछक रेह, कमला वागमतिसँ सिक्त देह।

'मिथिला वन्दना'मे सुमनजी नदी सभहिक सहायतासँ मा मिथिलाक कल्पनाकलित शृंगारक चित्र अंकित कयने छथि–

चारु चिकुर अछि जनिक हिमवतक वन हरीतिमा।
उर माला कमलाक भरल स्वर्णांचल महिमा।।

दहिन गंडकी भुजा वाम कोशी असीम बल।
हलधर अवनो अमरसिन्धु जलधौत चरण तल।।

एहि ठामक किछु प्रमुख नदी तँ सर्वत्र एकहि नामे जानल जाइत अछि। एहन नदीमे गंगा, **कोसी/कोसिका, गंडक/गंडकी, बूढ़ी गंडक, बागमती/बंगमत्ती, कमला, महानन्दा** आदिकेँ गनाओल जा सकैत अछि। नदी सभक धारमे निरन्तर परिवर्त्तन होइत रहबाक कारणेँ छोट धारक स्थानीय नाम सभ प्रचलित अछि, जकर संख्या सैकड़ो अछि। एहि नाम सभक संचय एकटा पृथक् अनुसन्धेय वस्तु थिक। एहने धार सभमे किछु नाम अछि- **अधवारा, अमृता, कंकइ, करेह, खैरी, खिरोइ, गहुमा, गाँगी, गोही, चिलोन, जीबछ, तिरसूला, तिलयुगा/तिलयुगवा, धेमुड़ा, धौरी, नीमा, पन्नार, परोला, पुरैनि, फरियानी, बलान/भुतहीबलान, बड़हरि, बरुणा/बरुणे, बलथी, बलुआहा, बुढ़नद, बेढ़ी, मेची, लखनदेइ, ललबगेया, लिवरी, सउरा/सौरा, सीर, सुपैन, सौंती** आदि।

मलाही वृत्तिमे नदी जल-परिवहन, मत्स्य व्यवसाय ओ सीप प्राप्त करबामे सहायक होइत अछि। नदीक अतिरिक्त आनो छोट-पैघ जलाशयक उपयोग मलाहक व्यवसाय सभमे होइत छैक। एहि जलाशय सभक जतेक भागमे पानि रहैत छैक ओकरा **पनिझाओ** कहल जाइत छैक।

पैघ जलाशयकेँ **पोखर/पोखरि/तलाब/तलाओ** कहल जाइत छैक। खूब विशाल ओ प्राचीन पोखरिकेँ **दउह** कहल जाइत छैक। छोट पोखरिकेँ **पोखरा/पोखरी** कहल जाइत छैक। पोखरिक चारू कातक ऊँच घेराकेँ **धरि/भिण्डा/भीड़ा/भीड़/मुहाड़/मोहाइ** कहल जाइत छैक। पोखरिक स्नानादिक स्थान **घाट** ओ मोहाड़क अतिरिक्त घाटक अन्य भाग **अघट/अपघट/औघट/कुघट** कहल जाइत छैक। जाहि पोखरिक नमाइ ओकर चौड़ाइक अनुपातमे अत्यधिक रहैत छैक ओकरा **नम्माघग्गी** कहल जाइत छैक।

ओ गँहीर स्थान जाहि ठाम पानि जमा भऽ जाइत छैक, **डबड़ा/गबड़ा** कहल जाइत छैक। पैघ डबड़ाकेँ **डाबड़** कहल जाइछ। गहराइक अल्पता **उथर/उत्थर** होइत अछि। काछुक पेट जकाँ उत्थर डाबड़केँ **कछुआ डाबड़** कहल जाइत छैक। छोट डबड़ाकेँ **डबड़ी/डुबड़ी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट डबड़ाकेँ **डोभा** कहल जाइत छैक। जाहि गंभीर स्थानमे बरिसाती पानि जमा भऽ जाइत छैक, ओकरा **खत्ता/खना/खद्धा/खाधि/गड्ढा/ गड़हा** कहल जाइत छैक। विस्तृत खाधि जतऽ बारहो मास पानि लगले रहैत छैक से **खाल/खाप** कहल जाइत छैक। पैघ ओ गँहीर खद्धाकेँ **चभच्चा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट ओ कम गँहीर खत्ताकेँ **खत्ती/खुत्ती/खुद्धी/खन्धक** कहल जाइत छैक। अत्यल्प गँहीर पसरल जलकेँ **गोड़िधोभ/गणिधोभ** (मिथिला भाषा कोष पृ.-86-87) कहल जाइत छैक।

गँहीर स्थानमे पानि जमा भऽ जयबाक क्रिया **जबकब** होइत अछि। जाहि स्थान पर आपरूपी बहुत गँहीर धरि पानि जमा भऽ जाइत छैक, ओकरा **झिल्ल/झील** कहल जाइत छैक।

मत्स्य व्यवसायमे धानक खेत सेहो सहायक होइत अछि। एकरा **धनहर** खेत कहल जाइत छैक। ओ गँहीर खेत सभ जाहिमे वर्षमे अधिक काल पानि लगले रहैत छैक मुदा जेठ-बैशाखमे सूखि जाइत छैक, से **चऽर/चओर/बहियार/बैहार/बोहियार** कहल जाइत अछि। छोट चरकेँ **चौरी** कहल जाइछ। चओरक जे भाग सालमे कहियो सुखा नहि पबैत अछि ओकरा **चाँचर** कहल जाइत छैक। **चर-चाँचर** युग्म शब्दक रूपमे सेहो व्यवहृत होइत अछि। मछहरक हेतु चओरमे बनाओल गँहीर खाधिकेँ **बिड़इ** कहल जाइत छैक।

अत्यन्त गँहीर जलाशय जकर गहराइ नापल नहि जा सकैत छैक से **अगम/अथाह** कहल जाइत अछि। पानिमे तलस्पर्श द्वारा जलाशयक गहराइ नपबाक क्रिया **थाहब** होइत अछि। तलस्पर्श करबा योग्य जलाशयक गहराइकेँ **थाह** कहल जाइछ। तलस्पर्श कऽ गहराइक अन्दाज करबाक क्रिया **थाह पायब** होइत अछि।

गहराइक आधार पर पानिकेँ भरि **ठेहुन**, भरि **छाबा**, भरि **डाँड़**, भरि **छाती**, भरि **गर्दनि**, भरि **मर्द/एक मर्द, डेढ़ मर्द, दू मर्द** आदि एकाइसँ नापल जाइत छैक। भरि जाँघक बरोबरि पानिक गहराइकेँ **कच्छाछोप** कहल जाइत छैक।

हाथ-पैर चलाकऽ पानिमे चलबाक क्रिया **हेलब/पौरब** होइत अछि। हेलि कऽ पार करबा योग्य पानिक जमाओकेँ **हेला/पौंरी** कहल जाइत छैक।

पानिक भीतरसँ वायुक निस्सरणसँ उत्पन्न गोल ओ खलिया आकृतिकेँ **बुलबुला/बुलबुल्ला** कहल जाइत छैक।

पानिक घास : पानिमे अनेक प्रकारक घास ओ अन्य जङ्गल सभ उत्पन्न होइत छैक। सतह पर डुबले हेलैत रहऽवला केशक गुच्छा जकाँ हरियर घासकेँ **खड्ड/सेमार**/(सं. शैवाल) **सेमैर** कहल जाइत छैक (कोसी गीत, पृ.-19-बहे पुरबैया कोसीमाय, डोललै सेमैर। नदिया किनारे महामैया भइबे गेलखिन ठाढ़ि)। चाकर पातवला एकटा घास **कुम्भी/कुम्ही** कहल जाइत अछि। पैघ पात ओ नीलवर्णक नाम फूलवला कुम्हीकेँ **कचुरी/केचली/केचुली/चेचरा/पनिकुम्ही/फटफटिया/फुलकुम्ही/भाकन/लाखन/बिलैती कुम्ही** कहल जाइत छैक। अमरलत्ती जकाँ पानिकेँ छाड़ि देबऽवला पानिक अन्य घास **भुसना/भुसनी** होइत अछि। गँहीर पानिक एकटा घास **बसन्त/बसन्ता/बसन्ती** कहल जाइत छैक। गहूमक डाँटक आकृतिक घास **कटार** कहल जाइत अछि। नेढ़ाक आकृतिक पानिक घासकेँ **नढ़बा/नेढ़बा/नेड़बा** कहल जाइत छैक। नदीक किनारमे **झौआ** नामक घास उगैत अछि। पोखरिक पानिक

ऊपर उगऽवला भरि डाँड़ लम्बाइक जड़िविहीन घासक एकटा प्रभेद **चरैल** होइत अछि।

प्याजक पात सदृश पातसँ युक्त एकटा पानिक खऽढ़कें **चिचोर/चिचोरी/चिहोर/चिचोढ़/चिचोढ़ी** कहल जाइत छैक। एही जातिक एकटा अपेक्षाकृत अधिक मजगूत खऽढ़कें **पटबा** कहल जाइत छैक।

पानि सड़ला पर ओहिमे हरिअर रंगक अत्यन्त सूक्ष्म ओ गोल पदार्थ हेलैत रहैत छैक। एकरा **कदइ** कहल जाइत छैक। पानिमे अधिक दिन धरि राखल काठ आदि पर जमल पिछराह घासकें **कजरी** कहल जाइत छैक। पानि पर हेलैत रूइक फाहा जकाँ फेनयुक्त मैलोकें **काह/काही** कहल जाइत छैक।

पानिक कातमे लाल डाँट ओ त्रिकोण पातवला एकटा घास उगैत छैक। एकरा **करमी** कहल जाइत छैक। ई पानिक सतह पर बहुत दूर धरि नमरि कऽ चलि जाइत छैक। पानिक सतह पर कुम्ही, करमी ओ आन घास सभ संश्लिष्ट भऽ घासक जे मोट परत बनबैत छैक, ओकरा **लाढ़ि/लाढ़ी/लीढ़** कहल जाइत छैक। लीढ़सँ युक्त जलाशय **लिढ़िआह** होइत छैक।

छोट-छोट पातसँ युक्त एकटा पानिक घास **कमरी** कहल जाइत अछि। लाल रंगक छोट-छोट पातवला घासकें **मडुअन/मडुअनि** कहल जाइत छैक। गोल-गोल अत्यन्त छोट पातवला घास **टिकुलिया** कहल जाइत अछि। नाम पातवला एकटा घास **कौड़िआ** होइत अछि। पातक खंडक आधार पर अनेक घासकें **तिनपत्ती/तिनपतिया, चरिपत्ती/चरिपतिया** आदि कहल जाइत छैक।

पानिक सानिध्यमे धानक पात सन पातवला गाछ उगैत अछि। एकरा **एमाढ़/एमार/हारा** कहल जाइत छैक। त्रिकोण पातसँ युक्त एकटा अन्य घासकें **अरिकोंच/अरिकोंछ/अरिकंचन** कहल जाइत छैक। चौखूट फऽड़वला पानिक एकटा गाछ **कौआठुट्ठी** कहल जाइत अछि।

पानिमे **कमल/पुरैनि** ओ **कुमुद/कुमुदिनि/कुमुदिनी** नाम फूल फुलाइत छैक। कुमुदिनिक रंग लाल होइत छैक। एकरा **रक्तकोंए** सेहो कहल जाइत छैक।

कमलक फूल अनेक रंगक होइत छैक। एकर बीजकोषकें **बड़री**, बीयाकें **कमलगट्टा** ओ जड़िमे होअऽवला कन्दकें **कन्दा/कड़हर** कहल जाइत छैक। श्वेत वर्णक एकटा पानिक फूल **भेंट/मलकोका** होइत अछि। एकर बीआ **मडुअनि** कहल जाइत छैक। **सारुख (क)/सरूकी (ख)/सौरखी** सेहो जलमे उत्पन्न होमऽवला कन्द थिक। उपरोक्त घास सभमे किछु माछक खाद्य होइत छैक। ओकरा सभकें **चरी/चारा/चरड़** कहल जाइत छैक। मुदा अधिकांश घास सभ माछ पोसऽ ओ मारऽमे व्यवधान होइत छैक। तें मलाहकें एकरा सभकें साफ करऽ पड़ैत छैक।

मलाहक औजार : मलाह अपन विविध उत्पादनसँ सम्बद्ध अनेक प्रकारक औजारक उपयोग करैत अछि। सुविधाक हेतु एहि औजार सभकें निम्नलिखित वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत छैक : 1. नौ परिवहनसँ सम्बन्धित औजार 2. मत्स्य व्यवसायसँ सम्बन्धित औजार 3. मखान, सिङ्हारा ओ चूनसँ सम्बन्धित औजार (एहि औजार सभक व्याख्या मखान, सिङ्हारा ओ चूनक उत्पादनक संग कयल गेल अछि)।

1. नौ परिवहनसँ सम्बन्धित औजार : नौ परिवहन द्वारा हस्तान्तरणीय उत्पादनतँ नहि होइत अछि मुदा एहिसँ वस्तुमे स्थान परिवर्तन जन्य उपयोगिताक वृद्धि कऽ उत्पादन कयल जाइत अछि।

मलाह नदीक विभिन्न घाट पर वस्तु ओ लोककें आर-पार करबैत अछि। आर-पार करयबाक हेतु काष्ठक जलयानकें **नाओ/नाह/लाह/नौका/लौका/नैया(आ) लैया(आ)** कहल जाइत छैक। लोकगीतमे नाओक हेतु **तरनी** शब्द प्रयुक्त भेल अछि (कोसी गीत-पृ.-42)।

घाट परक नाओकें **घटहा/घटही** कहल जाइत छैक। घटही नाओ चलबऽवला स्थायी मलाहकें **घटबार/घटबाह/घटबरिया/घटिया** कहल जाइत छैक। घटबारक काज **घटबारि** होइत अछि।

घटबारकें नियमित रूपसँ घाट पार कयनिहार ग्रामीणलोकनिसँ वार्षिक शुल्कक रूपमे जे अन्न-पानि दातव्य होइत छैक, से **घटबारी** कहल जाइत छैक। घाट पार करयबाक सामान्य मजदूरीकें **खेबा** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **चिराकी** (माटी के लोग-सोने की नैया, पृ.-9) सेहो कहल जाइत छैक। खेबाक हेतु प्राचीन शब्द **जगात** अछि।

नाओ पर जे व्यापारिक सामान लादल जाइत छैक ओकरा **रकम/जिन्स/जिनिस/माल** कहल जाइत छैक। माल लादऽवला नाओकें **जिनसी** नाओ कहल जाइत छैक।

मशीन संचालित पैघ नाओकें **जहाज/जहाद/अगिनबोट** कहल जाइत छैक। वर्णरत्नाकरमे (पृ०-68) अनेक प्रकारक जहाज ओ ओकर उपकरण सबहिक वर्णन भेटैत अछि।

नाओक प्रभेद : मिथिलामे नाओक अनेक प्रभेद पाओल जाइत अछि। एकेटा काष्ठखंडके खोदिकऽ बनाओल नाओ **एकठा** नाओ कहल जाइत अछि। एकठा नाओक प्रसंगमे एकटा किंवदन्ती अछि जे उमापति जखन अत्यन्त वृद्ध छलाह तखन धर्मशास्त्र विषयक कोनो कठिन विवादमे मध्यस्थताक हेतु आमन्त्रित कयल गेलाह। हुनक ग्राम ओ गन्तव्य स्थलक मध्य एकटा नदी बहैत छलैक। ओहिमे बाढ़ि आयल छलैक। तें बड़ उतफाल छलैक। उमापति स्वयं नहि जाय अपन प्रतिनिधि रूपमे गोकुलनाथकें पठौलथिन। संगहि एकटा पद्य सेहो पठौलथिन-

हम अति वृद्ध नदी मरखाहि । एकठा नाव चढ़ब नहि ताहि ।।
गोकुलनाथ कहँ छथि जैह। हमरो सम्मति मानब सैह ।।

(उमापति, डा. रामदेव झा, मैथिली अकादमी पटना, 1980, पृ.-32-33)

ग्रियर्सन एकरा **बँगड़ा** कहलनि अछि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-43**)। घाट पर लोककें आर-पार करबाक हेतु छोट नाओक अन्य प्रभेद **डेंगी/डेङी/डेङि/डोङी** (**नन्दीपति गीतिमाला, रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय दरभंगा, 1965 पृ.-14, डेङी बुरल मझधार रे। लय जहाज करू पार रे॥**) कहल जाइत अछि। प्राचीन साहित्यमे एहि हेतु **डेङि** शब्द सेहो भेटैत अछि (**विद्यापति, मित्र मजुमदार, पद सं. 876**)।

डेङी नाओक पैघ प्रभेदमे दूनू कातक भागकें लकड़ीक टुकड़ा द्वारा सम्बद्ध कऽ देल गेल रहैत छैक। माङीक अतिरिक्त इहो टुकड़ा सभ लोकक बैसबाक हेतु उपयोगी होइत छैक। एहि प्रकारक नाओकें **किस्ती** कहल जाइत छैक।

गाड़ी, माल-जाल आदिकें पार करयबाक हेतु व्यवहृत समतल पार्शसँ युक्त नाओकें **फरस** कहल जाइछ। जाहि नाओमे मलाहक रहबाक हेतु घर बनाओल रहैत छैक, ओकरा **घरैया** कहल जाइत छैक।

ग्रियर्सन अनेक प्रकारक छोट-पैघ नाओक प्रभेद सभ गनौलनि अछि। नाम ओ पातर अग्रभागसँ युक्त पैघ नाओक एकटा प्रभेद **उलाँक** होइत अछि। चाकर अग्रभागसँ युक्त एहने नाओकें **पटेली/पटैली** कहल जाइत छैक। लकड़ी उघबाक हेतु उपयोगी संकीर्ण अग्रभागवला नाओकें **मेल्हनी** कहल जाइत छैक। उत्थर पानिमे अधिक ओजन लादऽवला नाओक विभिन्न प्रभेद सभ **कच्छा/सरङगा/सरिन्गा** होइत अछि।

चाकर आधारवला छोट नाओक प्रभेद **दोहट/दोकठा** कहल जाइत अछि। उत्थर पानिमे चलऽवला गोल आधारसँ युक्त नाओकें **पनसी/पनसूही/पनसुहिया** कहल जाइत अछि। अत्यन्त छोट नाओक प्रभेद सभ **पलवार, खोलनैया** आदि होइत अछि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-42-43**)।

तेज धारमे यात्रीकें पार करयबाक हेतु कोसी नदीमे प्रयुक्त उत्थर आधारवला नाओ **हुलिया** कहल जाइत अछि। दूनू छोर पर नोंखगर अग्रभागसँ युक्त एहि नाओक अन्य प्रकारकें **भौलिया** कहल जाइत छैक।

बुकनन (**ऐन एकाउण्ट आफ दी डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया, पृ.-588**) **बेर/सिंगरी** नामक नौ-परिवहनक चर्चा कयने छथि। एहिमे दू गोट नाओकें बाँस द्वारा सम्बद्ध कऽ ओहि बाँसक ठठरी पर लकड़ी आदि सामान लादि धारक अनुरूप बहाओमे एक ठामसँ दोसर ठाम लऽ गेल जाइत छैक।

कखनो चारि-पाँचटा लकड़ी अथवा बाँस अथवा केराक थम्हकें परस्पर बान्हि पानिमे हेला देल जाइत छैक आ एकर उपयोग नाओ जकाँ कयल जाइत छैक। नदी पार करबाक ई व्यवस्था **बेढ़/बेड़/बेड़ि/बेड़ा/बेड़िया** कहल जाइत छैक। बेढ़ चलओनिहारकें **बेड़िबार/बेरीबरवा** कहल जाइत छैक (**कोसी गीत, पृ. सं.-12, नहि हम छियै बेरीबरबा दैतनी जे भुतनी रे, नहि हम भुतनी पिशाच रे। जाति के जे छियै बेरीबरबा ब्राह्मण बेटी रे हमर लोक धरलक कोसिका नाम रे॥**)।

मिथिलाक प्राचीन साहित्यमे नाओक प्रचुर उल्लेख भेटैत अछि। सिद्ध साहित्य, वर्णरत्नाकर, विद्यापति पदावली ओ अन्यान्य रचनामे नदी ओ नाओ सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग देखल जाइत अछि।

वर्णरत्नाकरमे (पृ.-67) **चाड/चडक, भोपाल, बेश, सरङा, झामट, कास, वृन्दावन, पतकुली, पटोरा, भौनाह, पचानी, षषिआरी, नओल** आदि नाओक प्रभेद भेटैत अछि, जाहिमे अधिक शब्दक अर्थ विलुप्त भऽ गेल छैक। नाओक लम्बाइक आधार पर सेहो एहिमे अनेक नामक उल्लेख भेल अछि, जेना **बरहिआ, सोरहिआ, बिसहथी, बइसा, पञ्चिसा, अठइसा** आदि। एहिमे जे अन्य नाम सभ भेटैत अछि से नाओक अग्रभागक कलात्मक आकृतिक आधार पर बुझना जाइत अछि। एहन नाम सभ अछि– **गरुड़ा, सिंहमुखी, व्याघ्रमुखी, घोटकमुखी, हंसमुखी, नागफनी, मछतनी** आदि।

नाओक अङ्ग : नाओक आधारकें **पेन/पेनी/पेंदी** कहल जाइत छैक। पेनीमे लागल लकड़ीक तकथाकें **तल्ली/तऽरी/मरिया/मरेया** कहल जाइत छैक। पेनीक सम्पूर्ण लम्बाइमे एकेटा सल्लग तकथा रहला पर ओहि तकथाकें **सिक्का/सुतबनिञा** कहल जाइत छैक। नाओक दूनू कातक ठाढ़वला भाग **बाकल/बगल/काछक पाटी** कहल जाइत अछि। तल्ली ओ बगलकें सम्बद्ध करऽवला समकोणिक खुट्टा सभकें **काछ/गुच्छा/गोछा/ठढ़बत्ता/ठढ़बाता/ठड़िया/बाता/बाँता** कहल जाइछ। बाँता सभकें परस्पर सम्बद्ध करऽवला नाओक लम्बाइक समानान्तर काष्ठखंड सभकें **गुढ़ा** कहल जाइत छैक। बगल ओ तल्लीकें सम्बद्ध करऽवला समकोणिक काष्ठखंड सभ **बाँक** कहल जाइत अछि।

नाओक बीच दऽ दूनू बगलकें सम्बद्ध करऽवला लकड़ीक मोट खंड सभकें **सुनरा/सोनरा** कहल जाइत छैक। पैघ नाओक अपेक्षाकृत मोट सोनराकें **दरोगा** कहल जाइछ। सोनरा पर पाटल तकथा सभकें **पाटन/पटोटन** कहल जाइत छैक। सोनरा पर उदग्र लकड़ी ठोकि वर्गाकार घरसँ युक्त पटोटनकें **उकरा/चाली/जाली/पटाइ** कहल जाइत छैक। नाओक दूनू कातक चाकर ओ समतल आसनकें **माँगी/माङि/माङी/माङ** कहल जाइत छैक। माङीक कोनवला भागकें **माथ/माथा/माथी** कहल जाइत छैक। माङीक कातमे ठोकल खुट्टा जाहिमे लङ्गरक रस्सी बान्हल जाइत छैक, से **थम्हुआ** कहल जाइत अछि।

नाओक तकथा सभकें सम्बद्ध करबाक हेतु **चौरसा/चौरसी, परेग/परयाग, चोन्ही/जोंक/जोंकी** आदि काँटीक विभिन्न प्रभेदक उपयोग होइत अछि। दूटा तकथाक बीच **गरभकील** सेहो पड़ैत छैक। दूटा तकटाक मध्यवर्ती फाँककें गह कहल जाइत छैक। गहकें सन, बोरा आदिसँ भरबाक क्रिया **गहनी करब/गहब** होइत अछि।

नाओमे दिशा परिवर्तन करऽवला यंत्र **पतवार/पतियार/पतियाल** कहल जाइछ। पतवारक उपरका भाग जाहि रस्सी द्वारा नाओक गुढ़ासँ सम्बद्ध रहैछ, से **नथिया** कहल जाइत अछि। पतवारक ऊपरवला गोल लकड़ी **गोल/गौला** कहल जाइत छैक। नीचावला भाग जकरा घुमने नाओमे दिशा परिवर्तन होइत छैक, से **सएल/सएला** कहल जाइत अछि। सएला जाहि छिद्रमे काज करैत छैक, ओकरा **बनरा/ठेल/ठेहरी** कहल जाइत छैक। पतवारक निचला छोरकेँ नाओसँ जकड़ऽवला रस्सीकेँ **गेंड़कस्सा** ओ उपरका भागकेँ कसऽवला रस्सीकेँ **अँकवरिया** कहल जाइत छैक।

नाओ खेबबाक यंत्रकेँ **डाँड़** कहल जाइत छैक। एहिसँ पानिक धारकेँ काटि नाओकेँ पानिमे आगाँ बढ़ाओल जाइत छैक। हल्लुक डाँड़केँ **कण्डहार/कड़हार/करुआर/ करुआरि/केरुआर/केरुआरी** कहल जाइत छैक। वर्णरत्नाकरमे (पृ. 66) एहि हेतु **करुआल** शब्द आयल अछि। करुआरिमे लकड़ीक एकटा दण्ड रहैत छैक। एकर निचला भागमे अंडाकार पातर लकड़ीक टुकड़ी ठोकल रहैत छैक। एकरा **पत्ता/पात/पाता** कहल जाइत छैक। थाह पानिमे नाओ चलयबाक हेतु बाँसक नमहर टुकड़ाक व्यवहार होइत छैक। एकरा **लग्गी/बाँस** कहल जाइत छैक। पैघ लग्गीकेँ **लग्गा** कहल जाइत छैक।

करुआरि अथवा लग्गीसँ एक बेर काटल पानिकेँ **चेहरि** कहल जाइत छैक (**एक चेहरि खेबले रे मलहा, दोसर चेहरि खेबले रे, तेसर चेहरि डुबलै मैयाक बहिनो हे को-कोसी गीत, पृ.-37**)।

नाओमे पानि भरला उत्तर ओहि पानिकेँ निकासबाक हेतु लकड़ीक एकटा उत्पर पात्रक व्यवहार होइत छैक। एकरा **सेवता/सोता/सेवती/सौंती/सौंथी** (सं. सेकपात्रम्) कहल जाइत छैक।

नाओकेँ किनार पर बन्हबाक हेतु लोहक एकटा यन्त्रक उपयोग होइत छैक। एहिमे लोहाक एकटा खूब भारी पिंड रहैत छैक। पिंडमे अनेक ठाम काँटा जकाँ मोड़ल रहैत छैक। ई रस्सीक एकटा छोरसँ बान्हल रहैत छैक। ओही रस्सीक दोसर छोर नाओक थम्हुआमे बान्हल रहैत छैक। एहि यन्त्रकेँ किनारमे खसा देने माटिमे ई तर धरि धँसि जाइत छैक आ नाओकेँ किनार नहि छोड़ऽ दैत छैक। एकरा **गिराबी/गिरामी/लङ्गर/लोहलङ्गर** कहल जाइत छैक।

नाओकेँ हवाक सहायतासँ संचालित करबाक हेतु कपड़ा टाङल जाइत छैक। एकरा **पाल** कहल जाइत छैक। पाल नाओक जाहि मध्यवर्ती दण्डमे टाङल जाइछ, ओकरा **जसोधा/दरसूधा/जसौधा** कहल जाइत छैक। जसोधाक सबसँ उपरका भाग **मस्तूल/मस्तल/ गुरखा/गोरखा/गुरनखा** कहल जाइत छैक। दण्ड नाओक

सतह पर एकटा अवतल काष्ठखंड पर अवलम्बित रहैत छैक। एकरा **मलवा/मलिया/दरसुधा के मलिया** कहल जाइत छैक। गुरखाकेँ सहारा देबाक हेतु ओकर चरित: दु-चारिटा दण्ड ओकरा थाम्हने रहैत छैक। ई सभ **सतवनिआ/सूत** कहल जाइत अछि। पाल टङबाक हेतु गुरखामे अनेक **घिरनी** लागल रहैत छैक। गुरखाकेँ स्थिर रखबाक हेतु ओकरा चारू कातसँ रस्सी द्वारा नाओसँ बान्हि देल जाइत छैक। ई रस्सी सभ **जङ्घा** कहल जाइत अछि। पाल घिचबाक हेतु जाहि रस्सीक उपयोग होइत छैक ओकरा **सोहर/सोहरि** कहल जाइत छैक। नाओक गति तीव्र करबाक हेतु बड़का पालक उपर जे अपेक्षाकृत छोट पाल टाङल जाइत छैक, ओकरा **डेओकी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त तीव्र गति प्राप्त करबाक हेतु डेओकीक उपर टाङल छोट पालकेँ **फेओकी** कहल जाइत छैक।

धाराक विपरीत नाओकेँ लऽ जयबाक हेतु जखन नाओक अग्रभागमे रस्सी बान्हि मलाह ओकरा नदीक कात-काते चलि खीँचैत अछि तँ जे रस्सी उपयोगमे आनल जाइत छैक, से **गून/गोन** कहल जाइत छैक। गून खीचऽवला मलाहकेँ **गुनबाह/गोनबाह** कहल जाइत छैक।

जिनसी नाओमे जिनिस लदबाक हेतु नाओ पर पाटल आधार रूप काष्ठखंड सभकेँ **गुरहा** कहल जाइत छैक। जिनिस लदबाक हेतु तथा माल-जाल, लोक आदिकेँ सुविधासँ नाओ पर सवार करबाक हेतु नाओसँ सटाकऽ लगाओल सीढ़ी सदृश तकथासँ पाटल व्यवस्थाकेँ **पाटा** कहल जाइत छैक।

नाओक विविध अङ्ग हेतु **नबरिया/नबेरिया** शब्दक प्रयोग भेटैत अछि (**महेशवाणी, श्रीलोकनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता-7; फाटल नबेरिया कोसिका, गुन पतवार से टुटि गेलै मैया हे, लागहु गोहारि से दया कालु-कोसी गीत, पृ.-35**)।

नाओकेँ पानिमे गतिमान करबाक क्रिया **खेबब/काढ़ब** होइत अछि। नाओ खेबऽवला मलाहकेँ **खेबैया/खेबनहार/नैआ** कहल जाइत छैक। नाओकेँ घाट छोड़यबाक क्रिया **नाओ खोलब** होइत अछि। ओकरा किनार पर लगयबाक क्रिया **घाट लगैब** होइत अछि। नाओक गतिकेँ कोनो दोसर दिशामे मोड़बाक क्रिया **मोँचब** होइछ। धारक अपर तट पर जयबाक क्रिया **पार उतरब** होइछ। पार उतारबाक हेतु नाओकेँ एक कातसँ दोसर कात लऽ जयबाक क्रिया **पार करब/पार लगायब** होइत अछि। अपर तट धरि पहुँचाय कार्य सम्पन्न करबाक क्रिया **पार-घाट लगायब** होइत अछि। ई कोनो कार्यकेँ सम्पन्न करबाक अर्थमे सेहो प्रयुक्त होइत अछि।

नाओ द्वारा जलक्रीड़ाकेँ **झलहेर/झलहेरि/झिलहरि/झिलहेर/झिझरी** कहल जाइत छैक (**चित्रा, पृ.-9, नाव पर भय बागमतीक प्रवाहमे, साँझखन झिझरी खेलाइत छलाह तोँ, वास्तविकता की थिकइ से बुझितहक बनल रहितह जेँ कनेक मलाह तोँ॥**)।

झिलहेरक हेतु प्राचीन शब्द **जरहरि** अछि (कीर्त्तिलता, विद्यापति, सं. बाबू राम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2032, पृ.-108- रुहिर तरंगिणि तीर भूत गण जरहरि खेल्लइ।)।

घुड़घुड़ा नामक एकटा कीट नाओक तकथाकेँ काटि दैत छैक। चाली जकाँ अत्यन्त पातर लाल रंगक अन्य कीड़ा नाओक निचला तलमे लागि ओकरा चाटि जाइत छैक। एकरा **नोनापानी** कहल जाइत छैक।

बामा-दाहिना डोलबाक क्रिया **डगमग करब/डोलमाल करब** होइत अछि। नाओक बामा-दाहिना डोलबाक क्रिया **डगमगायब** होइछ। डगमगायवला नाओकेँ **डगमगाह** कहल जाइत छैक। डगमगयबाक भाव **डगमगी** होइत छैक।

नदीमे वायुजन्य तरंग **नगदा** उठला पर नाओकेँ नगदाक सीधमे राखऽ पड़ैत छैक अन्यथा नगदाक पानि नावमे उछलि कऽ अयबाक सम्भावना रहैत छैक। नगदाक सीधमे नाओकेँ नहि रहने ओकरा **बेँर** कहल जाइत छैक।

तेज धारमे नाओक धारक अनुरूप दिशामे बहि जयबाक क्रिया **भसब/भासब/भसिआयब** होइत अछि। नाओक जलमग्न भऽ जयबाक क्रिया **डूबब/डूमब/बूड़ब** होइत अछि।

नाओसँ सम्बद्ध अनेक लोकोक्ति मिथिलाक जनजीवनमे व्याप्त अछि जे एहिठामक जनजीवनसँ नाओक सम्पृक्तिक सूचक अछि, जेना:-'नदिया नाओ संजोग', 'कहियो नाओ पर गऽड़ी, कहियो गऽड़ी पर नाओ'; 'जकरा खेबा नइ तकरा अगिले माड़ी', 'खेबो दी भसिअयलो जाइ', 'जब पुरबा पुरबैया पाबय। सुखलो नदिया नाओ चलाबय' आदि।

2. मत्स्य व्यवसायसँ सम्बन्धित औजार : मत्स्य व्यवसायमे प्रमुख काज अछि विभिन्न विधिसँ माछकेँ पकड़ब। माछ पकड़बाक हेतु अनेक प्रकारक औजारक उपयोग होइत छैक। सुविधाक दृष्टिये एहि औजार सभकेँ निम्नलिखित वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत छैक-

(क) नाओ (ख) जाल (ग) बनसी (घ) बाँसक औजार एवं (ङ) अन्य

(क) नाओ : छोट पैघ सभ प्रकारक नाओ जल-परिवहन-साधनक अतिरिक्त नदीसँ माछ पकड़बाक हेतु सेहो उपयोगी होइत अछि। छोट-छोट जलाशयसँ माछ पकड़बाक हेतु छोट आकृतिक नाओक एकटा प्रभेद **मछुआ/मछलहिया** नाओ कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन (बिहार पीजेन्ट लाइफ-पृ.-43) एकरा **डेंडी मछुआ** कहने छथि।

(ख) जाल : माछकेँ पानिसँ छनबाक सूतक उपकरण **जाल** कहल जाइत अछि। जालक सूतकेँ मजगूत करबाक हेतु ओकरा एकटा पैघ टकुरीक सहायतासँ बाँटल जाइत छैक। एहि टकुरीकेँ **टेरुआ/टकुआरी/ढेरुआ/बँटनी** कहल जाइत छैक।

बाँटल सूत बाँसक पातर काइम पर लपेटल जाइत छैक। काइमक दूनू छोर पर ढुकन्ना बनाओल रहैत छैक। एही औजारक सहायतासँ जाल बीनल जाइत अछि। एकरा **टेसर/तेसर** कहल जाइत छैक।

जाल छनबाक हेतु काठ अथवा बाँसक दु-तीन हाथक पातर दंडक आवश्यकता होइत छैक। एहि दंडकेँ **फर्बी** कहल जाइत छैक।

जालसँ पानिक निस्सरण ओ माछकेँ फँसयबाक हेतु जे छोट-छोट चौखूट घर सभ रहैत छक, ओकरा **फान** कहल जाइत छैक। फानक आकृतिक आधार पर जालक अनेक नाम होइत अछि। अउँठाक बराबर फानवला जालकेँ **औंठास** कहल जाइत छैक। डेढ़ आङुर फानवला जालकेँ **डेढ़ौन**, दू आङुर फानवला जालकेँ **दतुली/दुआली/दोआली/दोन्ही/दोनही, अढ़ाइ** आङुर फानवला जालकेँ **अढ़ैया**, तीन आङुर फानवला जालकेँ **तेआनी/तेन्ही**, चारि आङुर फानवला जालकेँ **चौआनी/चौनी/चोन्ही/चबौन** कहल जाइत छैक।

चारि आङुर धरि फानवला जाल सभकेँ **जौंरी/मरइल/मरइली/रौन्ही/रौनी/सरकी/सौरकी/सौरजाल** कहल जाइत छैक। चारि आङुरसँ अधिक फानवला जाल सभकेँ **बरनकी/बरान/खपियार** कहल जाइत छैक। बरानमे पाँच आङुरक फानवला जालकेँ **पचओन/पचौनी**, छओ आङुरक फानवला जालकेँ **छबओन/छैआरी**, सात आङुरक फानवला जालकेँ **सतन/सतओन/ सतोनहाँ/ सतोल**, आठ आङुरक फानवला जालकेँ **अठओन/ अठोनहाँ**, दस आङुरक फानवला जालकेँ **दसओन/दसोनहाँ** ओ बारह आङुर फानवला जालकेँ **बरओन** कहल जाइत छैक।

किछु जालक नाम ओहिसँ विशेषतया फँसऽवला माछक नाम पर सेहो भेटैत अछि। कनगुरिया आँगुरक बराबरि फानवला जाल जाहिसँ खास कऽ पोठी माछ मारल जाइछ, से **पोठियारी** कहल जाइत अछि। एक आङुर फानवला जाल जे कबइ फँसयबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि से **कबजल्ला/कबइजल्ला** कहल जाइत अछि।

बिनैत काल जालक आरंभिक फान सभकेँ **पिन्हाओन/पेन्हाओन** कहल जाइत छैक। जालक निचला भागक फान उपरका भागक फानक अपेक्षा छोट होइत छैक। पैघ ओ छोट फानक मिलविन्दुकेँ **मौंड़ी** कहल जाइत छैक।

जालक फान कोड़ीक हिसाबसँ गनल जाइत छैक। बीस संख्याक एक **कोड़ी** होइत छैक। चारि हाथ नाम जालकेँ एक **बियाँओ** कहल जाइत छैक। पाँच बिआँओक एक **कान** होइत छैक। दस कानक एक **जाल** होइत अछि। एहि तरहेँ सामान्यत: पैघ जालक लम्बाइ दू सय हाथ होइत छैक।

कानक हेतु **पाट** शब्दक सेहो व्यवहार अछि। बीस हाथक एहि **पाट** सभक अनेक टुकड़ीकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ पैघ जाल बनाओल जाइत अछि।

बनावटि ओ उपयोगक आधार पर जालक तीन गोट प्रभेद होइत अछि- (क) घुमौआ (ख) खिचौआ/घिचौआ आ (ग) बसेर

घुमौआ जाल : पानिमे घुमा कऽ फेकऽवला जालकें **घुमौआ जाल** कहल जाइत छैक। आकृतिमे ई वृत्ताकार होइत अछि। एकरा **खेबाली/फेकाजाल/फेकैल** सेहो कहल जाइत छैक। नचाकऽ पानिमे फेकला पर ई एकटा वृत्ताकार परिपथक बीचवला माछ सभकें घेरि लैत छैक। एहि जालक मध्यवर्ती भागमे बान्हल एकटा रस्सीकें पकड़ि जाल खींचल जाइत अछि। एहि रस्सीकें **फिरचइ** कहल जाइत छैक। जालक चारू कात नीचा दिससँ एकटा मोट रस्सीमे ओकर समस्त निचला फान सभ गाँथल रहैत छैक। एहि रस्सीकें **टगान** कहल जाइत छैक। टगानमे एक-एक हाथक दूरी पर लोहाक एक पोर नाम बेलनाकार वलय सभ लागल रहैत छैक। ई वलय सभ जालकें जमीन पकड़ाबयमे सहायक होइत छैक। एकरा सभकें **मलाही/माँरी/मोहारि/लोहा** कहल जाइत छैक। जालक केन्द्रपर जाहिठाम फिरचइ बान्हल रहैत छैक, से **चूआ** कहल जाइत छैक।

खिचौआ जाल : जाहि जाल सभकें पानिमे खसाय एकाधिक व्यक्तिक द्वारा खिचला उत्तर माछ फँसाओल जाइत छैक, से **खिचौआ/घिचौआ** जाल कहल जाइत छैक। ई जाल सभ आकृतिमे आयताकार अथवा झोराक आकृतिक होइत अछि।

खिचौआ जालक सभसँ पैघ प्रभेदकें **बजाल/बयजाल/महाजाल** कहल जाइत छैक। ई अपन लम्बाइ ओ फानक चौड़ाइ दूनू दृष्टिजे अत्यन्त पैघ होइत अछि।

बजालक निचला भागकें **तऽरी/मटघरिया** कहल जाइत छैक। एहि भागमे एक गोट मोट रस्सा लागल रहैत छैक। एहि रस्साकें **कचरा/मुड़िया** कहल जाइत छैक। मुड़ियामे डिबियाक मुनाक आकृतिक पाकल माटिक पैघ-पैघ टुकड़ी लागल रहैत छैक। ई टुकड़ी सभ जालकें नीचा दिस भारी कऽ माटि धराबयमे सहायक होइत छैक। माटिक ई उपकरण सभ **घुघरू/घुघरी/ढोंटा** कहल जाइत अछि। ग्रियर्सन (बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-125) एकरा **पौंड़ी/भोंटिया** कहने छथि।

एहि जालक उपरका भागमे सेहो एकटा मोट रस्सी रहैत छैक। एहि रस्सीकें **छबती/छैया/छैआ** कहल जाइत छैक। छबतीमे पाँच-छओ हाथक दूरीपर पानिपर हेलऽवला वस्तु बान्हल रहैत छैक। ई वस्तु सभ जालकें ऊपर दिस टनने रहैत छैक। एकरा सभकें **भेंड़ी** कहल जाइत छैक। भेंड़ी मुख्यत: जुआयल धिउराक **चोंचा,** सुखायल सजमनिक **तुम्मा/तुम्बा** अथवा कोढ़िलाक पाँच-छौ भत्ता कयल लपेटल गुच्छक होइत अछि। छोट तुम्माकें **तुम्मी/तुम्बी** कहल जाइत छैक। कोढ़िलाक गुच्छकें **भींड़ा** कहल जाइत छैक।

बजालकें जलाशयमे खसयबासँ पूर्व ओकर निचला भागमे स्थान-स्थान पर घुघरूवला भागकें करीब एक हाथ ऊपर बान्हि देल जाइत छैक। एहिसँ जे धोकड़ीक आकृति बनैत छैक से **घार/घारि/घाइर** कहल जाइत छैक।

आयताकार जालक लम्बाइक समस्त ओछाओल अंशकें **बारी** कहल जाइत छैक आ छोरवला भागकें **काना** कहल जाइत छैक। दूनू छोर पर निचला ओ उपरका भागकें जोड़लासँ जे कोन बनैत छैक सेहो **काना** कहल जाइत छैक। निचला ओ उपरका भागकें सम्बद्ध कयला उत्तर बीचमे जे जालक मोड़ल अंश बनैत छैक, ओकरा **कोसि/कोइस** कहल जाइत छैक।

कोसीगीतमे (पृ. 11) बारी-काना युग्म शब्दक रूपमे व्यवहृत भेल अछि। एहिसँ नदीक सम्पूर्ण पाटक जालसँ घेरल भागक अर्थबोध होइत अछि। द्रष्टव्य-

घड़ीएक चलिए विधाता पहर पंथ बितलै हो,
बारी-काना नैया लागल आबे है।
कहाँ गेल किए भेल बाबू रनपाल हो,
बारी-काना दिऔ ने छोड़ाय है।

आइ काल्हि बजालक आकारक अत्यन्त सूक्ष्म फानवला नाइलोनक जालक उपयोग होइत अछि। एकरा **चट्टी/मुसहरी/निपुत्ती** कहल जाइत छैक। एकर उपयोग जलाशयसँ समस्त छोट-पैघ माछकें छनबाक हेतु होइत छैक।

पहिने मुसहरीक स्थान पर अत्यन्त मेही फानवला हस्तनिर्मित देसी जालक उपयोग होइत छलैक। एकरा **कुर्कमहाल** कहल जाइत छलैक। दूसँ तीन आङुर फानवला खिचौआ जालक प्रभेद **पौरी/पौंरी** होइत अछि। औंठाक बराबर फानवला जालकें **घन्नी** कहल जाइत छैक। पौरी, चट्टी ओ घन्नी जालक दूनू दिस बराबर संख्यामे पाट दऽ बीचमे ढकक आकृतिक जाल जोड़ल रहैत छैक। ढकक आकृतिक एहि भागकें **घर** कहल जाइत छैक। जाल खिचला पर माछ सभ भागि-भागि कऽ घरमे जाइत अछि आ चारू कातसँ घेरा जाइत अछि। संगहि सभ माछ एक ठाम एकत्र भऽ जाइत अछि। घरसँ माछ बाहरो नहि भागि सकैत छैक, जखन कि आन ठामसँ छबतीकें टपि बाहर कूदि जा सकैत छैक।

घरविहीन दू आङुर फानवला आयताकार जालकें **बटान** आ तीन आङुर फानवला एहने जालकें **जोहाजाल** कहल जाइत छैक। जाहि आयताकार जालक फानमे हाथक पञ्जा आर-पार कऽ सकैत छैक ओकरा **पञ्जा** जाल कहल जाइत छैक।

कोसी आदि नदीक तीव्र धारमे बरिसातक मौसममे माछ पकड़बाक हेतु एकटा पैघ फानवला आयताकार जालकें नदीक सम्पूर्ण पाटमे ठाढ़ कऽ पसारि देल जाइत छैक। जाल नदीक प्रवाहक अनुरूप भसिआइत जाइत अछि। नाओसँ मलाह जालक पछोर धयने रहैत अछि। जखन कोनो पैघ माछ फँसैत छैक तँ भींड़ी सँ तकर संकेत पाबि जालक ओहि भागकें नाओ पर खींचि माछ निकालि लेल जाइत छैक। एहि भसिआइत जालकें **भासा** जाल कहल जाइत छैक।

खऽढ़सँ भरल जलाशयमे पैघ फानवला चौखुट आकृतिक जालकेँ ओछाय मलाह सभ जाल पर कूदि-कूदि खऽढ़सँ माछकेँ निकलबाक हेतु विवश कऽ दैत छैक। एम्हर-ओम्हर भगैत माछ सभ जालक फानमे फँसि जाइत अछि। एहि हेतु प्रयुक्त जालकेँ **चापा** कहल जाइत छैक।

पोखरि अथवा नदीमे आर-पार ठाढ़ कयल पैघ फानवला जाल जकर दूनू छोर दूनू कातमे गाड़ल खुट्टासँ बान्हल रहैत छैक आ एम्हर-ओम्हर जाय-आबऽवला माछकेँ फँसयबाक हेतु प्रयुक्त होइछ, से **चोरजाल/तिआरि/तेआरि/नागिन/फनमा/रांगी/लागिन/ लाँगी/लड़ी** कहल जाइत छैक।

चारिटा वंशदंडसँ युक्त वर्गाकार मुँहवला झोड़ाक आकृतिक जालकेँ **कुरेल/कुरैल/ खरैल/पऽही** कहल जाइत छैक। एकरा बहैत पानिमे लगौलासँ धारक अनुरूप दिशासँ अबैत माछ एहिमे फँसि जाइत छैक।

खुलल मुँहवला झोड़ाक आकृतिक दूटा वंशदंडसँ युक्त जालकेँ **डाभ** कहल जाइत छैक। दूनू वंशदंड पकड़ि दूटा मलाह पानिमे चलैत अछि आ जे माछ खुललाहा भागक बीच अबैत छैक से झोड़ावला भागमे घेरा जाइत छैक।

ठकिकऽ माछक शिकार करबाक हेतु एकटा विशेष प्रकारक जालक उपयोग होइत छैक। एकरा **भुतजाल/भुतजल्ला** कहल जाइत छैक। एहिमे बेंतक बनल एकटा गोल पिजड़ा रहैत छैक । पिजड़ाकेँ **चिलौन** कहल जाइत छैक। चिलौनक मुँह खोलि देल जाइत छैक आ मुँहक एक भागमे एकटा मोट रस्साक टुकड़ा बान्हि ओकर छोर पकड़ि बहुत दूर धरि गेल जाइत छैक। फेर दोसर दिससँ अंडाक आकृतिमे रस्सा पसारैत चिलौन लग रस्साक दोसर छोर आनल जाइत छैक। आब रस्साकेँ शनैः शनैः खीचल जाइत छैक। रस्सा माटिकेँ रगड़ैत घिचाइत अछि आ माटि धयने माछ सभ डेरा कऽ चिलौन दिस आबि ओहिमे फँसि जाइत अछि। चिलौनक मुँह बन्द कऽ ओहिमे फँसल माछ सभ निकालि लेल जाइत छैक।

बसेर जाल : बाँसक दंडमे लागल त्रिकोण आकृतिक जाल सभकेँ **बसेर/छिपनी** कहल जाइत छैक। एहिमे आठ हाथसँ पन्द्रह हाथ धरिक बाँसक दूटा दंड रहैत छैक। बाँसक दूनू दंडकेँ **लग्गा** कहल जाइत छैक। दूनू लग्गा जड़िसँ करीब एक हाथ ऊपर रस्सी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। लग्गाकेँ पसारलासँ उपरका भागमे जे त्रिकोण आकृति बनैत छैक ओहिमे जाल लगाओल रहैत छैक। पसारलाक बाद दूनू लग्गा परस्पर स्वतः नहि सटि सकय तेँ एकटा एक हाथक वंश दंड जोड़ लग समंजनक हेतु बान्हल रहैत छैक। एहि दंडकेँ **खऽरू** कहल जाइत छैक।

कुम्ही, मखान आदि छनबाक हेतु करीब तीन हाथक लग्गासँ युक्त बसेर जालकेँ **टेठी/ठेठी/ठेंठी/ठेठही** कहल जाइत छैक।

एक आङुर फानवला जालसँ युक्त बसेरक प्रभेदकेँ **लहतरी**, कनगुरिया आङुरक बरोबरि फानवला जालसँ युक्त बसेरक प्रभेदकेँ **रबैला**, तीनसँ पाँच आङुर फानवला जालसँ युक्त बसेरकेँ **खनसार/खनसारी** ओ पाँच आङुरसँ अधिक फानवला जालसँ युक्त बसेरकेँ **पौंटी** कहल जाइत छैक।

पन्द्रहसँ अठारह हाथक लग्गासँ युक्त बसेर जालकेँ **घोनका/बिसाढ़/बिसौंढ़ी/बिसारी** कहल जाइत छैक। हिलसा माछ मारबाक हेतु प्रयुक्त बसेरकेँ **हिलसैली** कहल जाइत छैक। जाहि बसेर जालमे सँीसे हरैत बाँसक लग्गा लगाओल रहैत छैक, ओकरा **खोराजाल** कहल जाइत छैक।

एहि तरहेँ माछ मारबाक हेतु अनेक प्रकारक जालक उपयोग मलाही वृत्तिमे होइत छैक। जाल खसयबाक क्रिया **जाल खिरायब** होइत अछि। एकर लाक्षणिक अर्थ गुप्त प्रयत्न होइत अछि। क्षेत्र विस्तार करबाक लाक्षणिक अर्थमे **जाल-पसारब** उपलक्षणक प्रयोग होइत छैक। **जाल-पात** युग्म शब्दक रूपमे मलाहक समस्त सामग्रीक हेतु प्रयुक्त होइत अछि। जाल फेकनिहार मलाहकेँ **जलबाह/जलुआ** कहल जाइत छैक। जाल फेकबाक व्यापार **जलबाहि/जलबाही** होइत अछि।

बनसी : माछ फँसयबाक एकटा सामान्य औजारकेँ **बनसी/लग्गी** कहल जाइत छैक। बनसीमे बाँसक एकटा कड़ची रहैत छैक। एकरा **लग्गी/छीप** कहल जाइत छैक। लग्गीमे मजगूत डोरा बान्हल रहैत छैक। एहि डोराकेँ **पगहा** कहल जाइत छैक। पगहाक दोसर छोर पर दोहराकऽ बाँटल सूतक दू इंच नाम टुकड़ा जोड़ल रहैत छैक। एकरा **पोदा/पौधा** कहल जाइत छैक। पौधामे लोहक नकुसी बान्हल रहैत छैक। एहि नकुसीकेँ सेहो **बनसी** कहल जाइत छैक। बनसीक मोड़लाहा भागमे उनटा काँट जकाँ बनल रहैत छैक। एकरा **घाओ/दुकन्ना** कहल जाइत छैक। दुकन्नाकेँ झँपैत बनसीमे माछकेँ आकृष्ट करबाक हेतु लगाओल खाद्यकेँ **बोर** कहल जाइत छैक। ई चिक्कस, चाली, बेङ ओ छोट माछक खंड होइत अछि। बनसीसँ दू-तीन हाथ ऊपर सरपत, खढ़ही अथवा मयूरक पाँखिक कठोर भागक दू तीन इंचक टुकड़ी बान्हल रहैत छैक। ई माछ द्वारा बोर खयला पर उबडुब कऽ माछक अयबाक संकेत दैत रहैत छैक। एकरा **टनेरा/टढ़ेरा/ तरेड़ा/तरैला** कहल जाइत छैक। टनेरा द्वारा संकेत पाबि लग्गीकेँ ऊपर खिचलासँ माछक मुँह बनसीमे फँसि जाइत छैक आ माछ ऊपर चलि अबैत छैक।

बनसी द्वारा माछ मारबाक क्रियाकेँ **बनसी खेलब** कहल जाइत अछि। बोर लागल बनसीकेँ पानिमे दऽ कऽ स्थिर करबाक क्रिया **पाथब** होइत अछि। टनेरा द्वारा संकेत पाबि बनसीकेँ ऊपर दिस तेजीक सङे घिचबाक क्रिया **छीपब** होइत अछि।

बनसी खेलयबाक स्थान विशेषपर माछकेँ आकृष्ट करबाक हेतु माटिमे खड़ि आदि मसाला जो माछक खाद्य मिलाकऽ ओकर गोल पिण्ड बनाय ओहि स्थान

पर फेकल जाइत छैक। माछक खाद्यसँ युक्त एहि पिण्डकेँ **आह/गोला/बीरा** कहल जाइत छैक।

बनसीक अनेक प्रभेद होइत अछि। छीपि कऽ माछ ऊपर करबाक बनसीकेँ **छिपुआ** कहल जाइत छैक। दोसर प्रभेदमे लग्गीक जड़ि लग एकटा घिरनी लागल रहैत छैक। एकरा **घिरनीवला लग्गी** कहल जाइत छैक। एहिमे घिरनीक सहायतासँ पगहाकेँ समेटि माछ ऊपर कयल जाइत छैक।

टनेराविहीन बनसीकेँ **लहका/लहकी/लहुका/लहुकी** कहल जाइत छैक। एहि बनसीकेँ माछ होयबाक संभावित स्थान सभ पर इतस्ततः बोर सहित डोलाओल जाइत छैक। गरइ, बोआरी आदि मांसाहारी माछ डोलैत बोरकेँ जीवित जलजन्तु बुझि बनसीकेँ लपकि कऽ धरैत अछि आ छिपला पर फँसि जाइत अछि। इतस्ततः डोलबैत बनसी खेलयबाक क्रिया **लहकायब/लहका मारब** होइत अछि।

बनसी अथवा लहुकीसँ माछ मारबाक हेतु निरन्तर लागल रहऽ पड़ैत छैक। एहिसँ बचबाक हेतु बनसीक एकटा विशेष प्रभेदक उपयोग होइत अछि। एकरा **तग्गी** कहल जाइत छैक।

तग्गीक हेतु एकटा लोहाक छड़केँ जलाशयक कातमे गाड़ल जाइत छैक। छड़मे एकटा लोहाक पाइप देल रहैत छैक। पाइपमे बहुत अधिक डोरा बान्हिकऽ लपेटल रहैत छैक। डोराक दोसर छोर पर पचीस-पचीस बनसीक गुच्छा बान्हल रहैत छैक। एहि गुच्छासँ चारि आङुर ऊपर चारि-पाँच गोट पोँघायुक्त बनसी बान्हल रहैत छैक। सभ बनसीकेँ झाँपैत माछक खाद्यक पैघ गोला लगाओल रहैत छैक। गोलाकेँ जुमाकऽ जलाशयमे फेकि देल जाइत छैक। खाद्यक आकर्षणसँ जखन माछ गोला पर मुँह मारैत अछि तँ बनसी ओकर मुँहमे गड़ैत छैक आ ओ एम्हर-ओम्हर भगबाक चेष्टा करैत अछि। एहिसँ बनसीमे आर अधिक फँसि जाइत अछि। माछ जँ एम्हर-ओम्हर भगितो अछि तँ पाइपमे लपेटल डोरा उघरिकऽ ओकरा स्वतंत्र विचरण करऽ दैत छैक। पश्चाति तग्गी पथनिहार आबि क्रमहि डोरा घीचि माछ ऊपर कऽ लैत अछि।

धारमे व्यावसायिक स्तर पर माछ मारबाक हेतु मलाह **दौनी/झामबंसीक** उपयोग करैत अछि। धारक दूनू छोर पर दूटा खुट्टामे पातर मुदा मजगूत ताग बान्हल जाइत छैक। तागक हाथ-हाथ भरि दूरी पर एक-एक हाथक ताग लटकैत बान्हल जाइत छैक। प्रत्येक तागमे पोँघा सहित बनसी लागल रहैत छैक। बनसी सभमे बोर सेहो लगा देल जाइत छैक। सभटा बनसी पानिक सतहसँ नीचा लटकैत रहैत छैक आ अबैत-जाइत माछ सभ बोर खयबाक लोभमे बनसीमे फँसि जाइत अछि। संकेत पाबि मलाह माछकेँ छोड़ा लबैत अछि।

गोहि आदि हिंसक जलजन्तुकेँ फँसयबाक हेतु पैघ बनसीकेँ **बनस** कहल जाइत छैक।

बाँसक औजार : माछ पकड़बाक हेतु बाँसक कमचीसँ बनल अनेक औजारक उपयोग होइत अछि।

कम पानिमे माछ मारबाक हेतु मलाह शंकुक आकृतिक एकटा औजारक उपयोग करैत अछि। एकर निचला भागक व्यास करीब डेढ़ हाथ ओ उपरका मुँहक व्यास करीब एक बीत रहैत छैक। एकरा **टापि/टाइप/टापी** कहल जाइत छैक। पैघ टापीकेँ **टाप/टापा** कहल जाइत छैक। टापी द्वारा स्थान विशेषकेँ घेरबाक क्रिया **छापब** होइत अछि। छापल स्थानक मध्य फँसल माछकेँ हथोरिकऽ बाहर कऽ लेल जाइत छैक।

घोड़ाक मुँहक आकृतिक माछ छनबाक उपकरण **गाँज/गाँजा/गाइंज/गाँजी** होइत अछि (**प्रसिद्ध कहबी- जत बल होँहि माछके घाये। तत बल जोँहि गाँज घिसियाये॥**)। एकर खुललाहा भागक व्यास करीब एक हाथ रहैत छैक आ पृष्ठ भागमे काइम सभ एकत्र कऽ मोड़ि कऽ बान्हल रहैत छैक। अगिला ओ पछिला भागकेँ दूनू हाथेँ पकड़ि पानिमे एकरा अर्द्धचन्द्रकार स्थितिमे घुमा-घुमाकऽ छोट-छोट माछ छानल जाइत अछि। गाँजसँ माछ छनबाक व्यापारकेँ **गँजबाहि/गँजबाही** कहल जाइत छैक। गँजबाही कयनिहारकेँ **गँजबाह** कहल जाइत छैक।

बहैत पानिक धारसँ माछ पकड़बाक पिंजड़ा सन किञ्चित चौखूट ओ किञ्चित बेलनाकार औजारक उपयोग होइत अछि। एकरा **सरैला** कहल जाइत छैक। छोट सरैलाकेँ **सरैली** कहल जाइत छैक। वृत्ताकार मुँहवला सरैलाक प्रभेद **कोयना** कहल जाइत अछि। एकर मुँहक भीतरमे एहन बनाबटि रखैत छैक जे पानि तँ निकलि जाइत छैक मुदा भीतरी भागक गोल घेरामे गेल माछ घुरि कऽ बाहर नहि आबि सकैत छैक। एहि बनाबटिकेँ **जिभिया** कहल जाइत छैक। जिभियाक संख्या दुइ होइछ। माछ निकालबाक हेतु एकर बन्दवला भागक ऊपर दिस हाथ घुसिअयबा योग्य छेद रहैत छैक।

पोखरि आदिसँ माछ पकड़बाक पैघ सरैलाकेँ **अण्टा/अण्टी/अन्ता/अन्ती** कहल जाइत छैक। खूब गँहीर पानिसँ माछ पकड़बाक गोल आकारक पैघ सरैलाकेँ **चहुका/टभका/टहुका/टेहुका/टोहका** कहल जाइत छैक। छोट टभकाकेँ **टभकी/टहुकी/तहुकी** कहल जाइत छैक। चौखूट मुँहवला टभकाक प्रभेद **अरसी/आरसी/एकाढ़ी/धामा/धारी** होइत अछि। वृत्ताकार मुँहवला टभकाकेँ **बिरती** कहल जाइत छैक। टभका आदिसँ माछ पकड़बाक क्रिया **चाहब** होइत अछि।

गाँज, टापी ओ सरैलाक विभिन्न प्रभेदमे बन्हन देबाक हेतु जाहि लत्तीक उपयोग होइत छैक से **गोँइलत्ती/मलाही लत्ती** कहल जाइत अछि।

बाँसक सिरकी सदृश औजारसँ पानिकेँ दू भागमे बाँटि क्रमहि दूनू भागक माछ मारल जाइत अछि अथवा धारकेँ घेरल जाइत अछि। एहि सिरकी सदृश

व्यवस्थाकेँ **चचरी/चाँचर/चाँचरि/चिरौंत/चिरौन/चिलौंद/चिलोन** (फा. चिलमन)/**झाझ/पहटा** कहल जाइत अछि। कम खरइवला पहटाकेँ **पहटी** कहल जाइत छैक। चिलौनकेँ स्थैर्य प्रदान करबाक हेतु ओकरा खुट्टा सभमे अड़काओल जाइत छैक। खुट्टा सभकेँ **बाड़ी** कहल जाइत छैक। चिलौन द्वारा पानिकेँ घेरबाक क्रिया **बाड़ी लगायब/बेढ़ब** होइत अछि।

नदी आदिक चलता पानिसँ माछ मारबाक लेल कोनिआ जकाँ घेरायुक्त वंश-औजारक उपयोग होइत अछि। एकरा **छन्नी** कहल जाइत छैक। छन्नीक बदला जाहि जालक उपयोग होइत छैक ओकरा **खौंढ़/खौंड़** जाल कहल जाइत छैक।

मारल माछकेँ रखबाक हेतु एकटा छोट मुँहक गोल बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **खोंघी/खोंड़ही** कहल जाइत छैक। छोट खोंघीकेँ **खोंघैला/खोंड़हैला** कहल जाइछ। पैघ मुँहक बेलनाकार बासन **डैली** होइत अछि। चारि-पाँच खोंघीक माछ अँटऽवला नम्हर खोंघीकेँ **टोपा** कहल जाइत छैक।

करीब दू हाथ व्यास ओ एक बीत घेरावला उत्थर छिट्टाक उपयोग माछकेँ एक ठामसँ दोसर ठाम लऽ जयबामे होइत छैक। एहन छिट्टाकेँ **टोकरा/टोकरा/छैंटी** कहल जाइछ। पैघ टोपरा **चाङ** होइत अछि।

मलाह एकटा बाँसक दंडक एक दिस जाल ओ दोसर दिस खोंड़ही आदि बासन लटकाय कान्ह पर उघैत अछि। एहि दंडकेँ **बहङी** (सं. विहंगिका) कहल जाइत छैक। माछ सुखयबाक हेतु खुट्टा पर अवलम्ब दऽ पसारल चिलौनकेँ **चाङि/चाँचरि** कहल जाइत छैक।

अन्य औजार : माछ पोसबाक क्रममे प्रयुक्त एकटा सहायक औजारकेँ **आइंट/ऐंठ** कहल जाइत छैक। एहिमे एकटा बहुत पैघ नारियरक रस्सी रहैत छैक जाहिमे हाथ भरि दूरी पर छोट-छोट रोड़ा बान्हल रहैत छैक। रस्सीक एकटा छोर जाठिमे बान्हि दोसर छोर पकड़ि पोखरिक चारू कात भूमि गेलासँ रोड़ासहित रस्सी माटिकेँ घसने आगू बढ़ैत छैक आ माछ सभ डेराकऽ एम्हर-ओम्हर भगैत छैक। मलाह सभक मान्यता छैक जे ऐंठ चला देलासँ माछक वृद्धि जल्दी-जल्दी होइत छैक। तेँ ऐंठ चलयबाक काज प्रत्येक जलकरमे मासमे एक-दू बेर कऽ देब आवश्यक बुझल जाइत छैक। ऐंठ चलाकऽ माछमे स्फूर्ति आनब **कमओट/कमओत** कहल जाइत छैक।

मछहरक पूर्व ऐंठ चला देने माछ सभ मलत्याग कऽ लैत अछि। माछक मलत्यागक क्रिया **गदरी झारब** होइत अछि। गदरी झारल माछ मारल गेला उत्तर अधिक स्वच्छ ओ देरी धरि नहि सड़ऽवला होइत अछि।

सिंघी माछ मारबाक हेतु नोंखगर अग्रभागसँ युक्त लोहाक पैघ-पैघ छड़वला औजारकेँ **गोंज/गोंजारी** कहल जाइत छैक। एहि औजारसँ बेर-बेर गैंथबाक ओ निकालबाक क्रिया **गोजब/गोंजब/गोंजारब/गोबब** होइत अछि।

उजाहि उठला पर पानिक सतह पर उपलाइत माछकेँ मारबाक हेतु बाँसक दंडक अग्रभागमे लागल लोहाक पातर-पातर आँकुससँ युक्त औजार सबहिक उपयोग होइत छैक। एहि औजार सभकेँ **सऽहत/सऽहथ/सऽहद** कहल जाइत छैक। एकटा काँटसँ युक्त सऽहतकेँ **कैंती/कोंती**, पाँचटा काँटसँ युक्त सहतकेँ **पचकी/पचखी**, सातटा काँटसँ युक्त सऽहतकेँ **सतखी** ओ अनेक संख्यक काँटसँ युक्त सऽहतकेँ **झाँझर** कहल जाइत छैक। पैघ-पैघ काँट ओ दण्डसँ युक्त पचखी आदिकेँ **बरछा** तथा छोट-छोट काँट एवं दण्डसँ युक्त बरछाक प्रभेदकेँ **बरछी** कहल जाइत छैक। एहि अस्त्र सबहिक अगिला नोंखवला भागकेँ **कोथ/कोथी/नोकनी** कहल जाइत छैक।

मलाहक उत्पादन : मलाहक प्रमुख व्यावसायिक उत्पादन थिक माछ। सहायक उत्पादन मध्य मखान, सिङहारा ओ चून अबैत अछि।

माछ : जलमे रहऽवला खाद्य जन्तु विशेष **माछ/मछरी/मछली** कहल जाइत अछि (**प्रसिद्ध कहबी : माछ भात पाँच हाथ**)। माछक हेतु प्राचीन शब्द थिक **मीन** (मडुआ मीन चीन संग दही। कोदोक भात दूध संग सही॥)/**मत्स्य/झख** (माछक अर्थमे झख शब्द आब लुप्त भऽ गेल अछि। मुदा प्रयोगमे झखब/झख मारब आदि क्रियापदक रूपमे झखक लक्ष्यार्थ जीवित अछि। दूनू क्रियापद निष्क्रिय होयबाक अर्थमे प्रयुक्त अछि। ई अर्थ माछ मारबाक हेतु बनसी पथने निष्क्रिय बैसल व्यक्तिक व्यापारसँ उद्‌भूत अछि)। पंडितलोकनि माछक हेतु **जलसेम/जलपरोड़** शब्दक व्यवहार करैत छथि। माछक गंध **इछाइन/इछैन/ बिसाइन/बिसानि/मछाइन** होइत अछि। माछसँ सम्बन्धित वस्तुक विशेषण **मछाह/मछही** होइत अछि। अधलाह रंग, गंध ओ स्वादवला माछकेँ **कुमाछ** कहल जाइत छैक।

अन्तनधय प्राणी मात्रक गर्भसँ निःसृत सजीव गोल वस्तु जे पछाति बच्चाक रूप धारण करैत अछि, से **अण्डा** कहल जाइत अछि। माछक अण्डाकेँ **आरा/स्पॉन** कहल जाइत छैक। आरामे जखन चलबाक क्षमता आबि जाइत छैक तखन ओ **फ्राइ** कहल जाइत छैक। फ्राइ करीब एक इंच नाम भेला पर सूक्ष्म बच्चाक रूपमे चीन्हल जा सकैत छैक। ई पोखरि आदिमे वृद्धिक हेतु देल जाइत छैक। एकरा **ज्यौरा/जियारा/जिअओरा/ जिऔरा/जीरा** कहल जाइत छैक।

जाहि गँहीर स्थानमे माछ अंडा दैत छैक ओकरा **खाप** कहल जाइत छैक। माछक अण्डा देयाक योग्यताकेँ **पेङर** कहल जाइत छैक। ई अषाढ़ मासमे होइत छैक। रोहिणी नक्षत्रक पेङर अगता होइत छैक। एकरा **रोहिनिआ पेङर** कहल जाइत छैक।

माछक छोट-छोट बच्चा सभकेँ **छब्बड़ा** कहल जाइत छैक। अपन छब्बड़ा सभक संग माछक रहबाक स्थान **थर/थइर/थरि/थरी** होइत अछि।

फड़ीसँ माछक एक संख्याक बोध होइत छैक। संस्कृतमे माछक पर्याय **सफरी** भेटैत अछि जाहिमे ध्वनि ओ अर्थ परिवर्तनसँ फड़ी शब्द बनल अछि।

अत्यन्त लघु आकृतिक माछकें **गिधनी/घिनसी** कहल जाइत छैक। माछकें एक स्थानसँ दोसर स्थान पर लऽ जयबाक हेतु खऽढ़ आदिमे बान्हल मोटरीकें **खोंचड़ि** कहल जाइत छैक।

नदी मात्रमे पाओल जायवला माछ **नदियारी** कहल जाइत अछि। जे माछ सभ पोखरिमे सेहो उत्पादित कयल जाइत अछि, **पोखराइन/पोखरौनी** कहल जाइत अछि। अधिक माछसँ युक्त जलाशयकें **मछगर** कहल जाइत छैक। जाहि ठाम माछ नहि होइत छैक से जलाशय **अमच्छ** कहल जाइत छैक। मलाहक अनुसार कोनो जलाशय अमच्छ नहिभेटा होइत अछि।

सुदूर प्रदेशमे माछक निर्यात करबाक हेतु तथा अधिक दिन धरि उपयोगक योग्य बनयबाक हेतु माछकें रौदमे सुखाओल जाइत छैक। एहन माछ **सुकठा/सुकठी/सुखठी/सुखोंत/सुखौंत** कहल जाइत छैक (**प्रसिद्ध कहबी : सुकठीक बनिज पशुपतिक दर्शन**)। सुकठी अधिकांशत: छोटे माछ सभक बनाओल जाइत छैक। सुकठी बनयबाक स्थानकें **खटाल** कहल जाइत छैक।

उत्पादन योग्य जलाशयकें **जलकर** कहल जाइत छैक। जलकरक हेतु देल गेल करकें सेहो **जलकर/सैरात** कहल जाइत छैक। जलकरमे माछ मारबाक अधिकारी मलाह **जलकरिया** होइत अछि। जलकरिया जलाशयक मालिककें सैरातक अतिरिक्त किछु माछो दैत छैक। एहि दातव्य माछकें **डाली** कहल जाइत छैक। जलकरमे माछ पोसबाक हेतु मालिककें देल अग्रधनकें **अगाउ/अगात/अगउत/अगुवार** कहल जाइत छैक।

माछक जलक सतह पर आबि कऽ उबडुब करबाक क्रिया **जागब/उबियायब/उजहब** होइत अछि। जलाशयमे माछक जागरणकें **उजाहि/उजहिया** कहल जाइत छैक। मिथिला भाषा कोषमे उजाहि/उजहियाक अर्थ माछक जल वेगाभिमुख गमन कहल गेल अछि जे समीचीन नहि।

जलाशयमे ओकर क्षमतासँ अधिक माछ भऽ जयबाक कारणें अथवा पानिक खराबीसँ ओकर माछ एकटा रोगसँ ग्रस्त भऽ जाइत छैक। एहि रोगकें **गढ़बा/गड़बा** कहल जाइत छैक। एहि रोगसँ ग्रस्त माछक कनखुर आदि लग कारी दाग पड़ि जाइत छैक आ ओ जलक तल पर आबि स्वत: मरि जाइत अछि।

गड़बा रोगक अतिरिक्त आनो कारणसँ उजाहि उठैत छैक। एकरा पानिमे गर्मी आयब कहल जाइछ। गर्मीवला जलाशयक चारू कात केराक थम्हकें टुकड़ी-टुकड़ी कऽ घऽ देने पानिक गर्मी समाप्त भऽ जाइत छैक।

धारमे चलैत माछक समूहकें **जोह** कहल जाइत छैक। धारक विपरीत दिशामे चढ़ल जोह **अबार** होइत अछि।

जाहि स्थानपर घुट्ठी भरि गँहीर पानिक धार चलैत छैक ओकरा **चाँच/चाँछ** कहल जाइत छैक। धाराक विपरीत चढ़बाक प्रवृत्तिक कारणें जलाशयसँ निकलि माछक चाँछ दिस चढ़बाक क्रिया **चाँछ पर चढ़ब** होइत अछि। चाँछ पर चढ़ल माछ मारि खा जाइत अछि। एही आधार पर उपलक्षण अछि **चाँछ पर चढ़ब** ओ **चाँछ पर चढ़ायब**। चाँच पर माछक चढ़ैत रहबाक क्रिया **चाँच चलब** होइत अछि। चाँचमे शनै: शनै: पानिक बहबाक क्रिया **झिहिर-झिहिर** बहब होइत अछि।

माछक इतस्त: कुदबाक क्रिया **डेब देब** होइत अछि। वर्षा भेला पर कबइ आदि माछ पानिसँ बाहर भऽ डेब देबऽ लगैत अछि। जलक सतहपर माछक ऊपर-नीचा करबाक क्रिया **चाल देब/चालि देब** होइत अछि (**प्रसिद्ध कहबी : टेंगरा पोठी चालि दिअय, रोहु सिर बिसाय।**)।

विभिन्न विधि द्वारा माछ मारब **मछओर/मछबाहि/मछहर/मछेर/शिकार** कहल जाइत छैक। माछ मारनिहार **मछबार/मछबाह** होइत अछि।

तुरत मारल माछ **ताजा** कहल जाइत अछि। ताजा माछ छूला पर किञ्चित कठोर बुझाइत छैक। ओकर कठोरताकें **तरख** कहल जाइत छैक। तरख क्रमहि समाप्त होयबाक क्रिया **लहब** होइत अछि। लहिकऽ खराब ओ अखाद्य स्थितिमे परिवर्तित माछ **सड़ल** कहल जाइत अछि। सड़ल माछ छूला पर **गजगज/पलपल** करैत छैक। एक-दू दिनक भीतर उपयोग नहि कऽ लेला पर माछ सड़ि जाइत छैक (**प्रसिद्ध कहबी: माछ आ पहुना, तीन दिन कहुना**)।

खत्ता-खुत्तीसँ माछ मारबाक हेतु माटिसँ बनाओल घेराकें **आरि/आरी/छेका** कहल जाइत छैक। कम ऊँच आरिकें **अहरी** कहल जाइत छैक। नम्हर ओ बेसी ऊँच आरिकें **आहर** कहल जाइत छैक। चाकर ओ नम्हर आहर **धूर** होइत अछि।

पानिक बीचमे आरि देबाक हेतु कास-पटेर आदिक जुन्नासँ चारू कातसँ गछारल माटिक बोझक उपयोग होइत छैक। एकरा **गुड़र** कहल जाइत छैक।

खत्ताक मध्यमे गोल आरि बान्हि ओकर भीतरवला पानि उपछिकऽ बनाओल खाली स्थान **अपियारी/डेबा/डेबानी** कहल जाइत अछि। चारू कात माछ सभ कूदि-कूदि कऽ एहिमे खसैत अछि आ पकड़ि लेल जाइत अछि।

जलाशयक कातमे सेमार आदि जमा कऽ ओहिपर जीरा छोटि माछकें सेमार दिस आकृष्ट करबाक क्रिया **घाट देब/घाट पाथब** होइत अछि। आकृष्ट भेल माछकें सेमार सहित ऊपर कऽ मारि लेल जाइत छैक।

पोखरि आदिमे नाओक सहायतासँ माछ पकड़बाक एकटा विशिष्ट विधिकें **खेघा-पौंटी** कहल जाइत छैक। एहिमे एकटा नाओक एकटा माड़ी पर बैसल मलाह पानिमे घसेर जाल खसबैत अछि आ दोसर माड़ीपर बैसल मलाह शनै:-शनै: नाओकें जालक अनुरूप खेबैत अछि। एहि दोसर मलाहक क्रिया **कन्हेर करब** होइत अछि।

माछक डेराकऽ भगबाक क्रिया **हरकब** होइत अछि। जालक क्षेत्रसँ बाहरवला माछ सभकेँ जाल दिस हरकयबाक हेतु दोसर नाओ पर चढ़ल मलाह जालक परित: नाओ खेबितो जाइत अछि आ सौंतीसँ नाओमे ठक्-ठक् ध्वनि सेहो उत्पन्न करैत जाइत अछि। एहि मलाहकेँ **ठकठकिया** कहल जाइत छैक। हरकल माछ जाल दिस अयला पर जाल उठाकऽ माछ छानि लेल जाइत छैक।

कात दिस नुकायल माछ सभकेँ हरकयबाक हेतु कखनो-कखनो पैरसँ पानिक तलकेँ चलायमान कयल जाइत छैक। एहिसँ पानि मलिन भऽ जाइत छैक। पानिकेँ मलिन करबाक ई क्रिया **घोकब/घोंकब** होइत अछि। अति संचालन द्वारा पानिकेँ अधिक मलिन कऽ देबाक क्रिया **घोकारब/घोंकारब** होइत अछि।

तेज बहैत धारसँ माछ छनबाक हेतु बीच-बीचमे खुट्टा गाड़ि ओहि सभ पर झाँखी आदि अड़का देल जाइत छैक। धारमे आयल माछ झाँखी लग रुकैत अछि। पश्चाति झाँखीक प्रदेशकेँ जालसँ घेरि झाँखी सभ ऊपर कऽ फँसल माछ सभ मारि लेल जाइत अछि। माछ मारबाक ई व्यवस्था **जेँग** कहल जाइत अछि।

मछहरक हेतु मलाह जतऽ ठहरैत अछि ओ स्थान **बाड़ी/डेरा** कहल जाइत छैक (प्रसिद्ध कहबी : सभ ठाम राम राम, बाड़ी पर नै राम राम)।

माछक शरीरक विभिन्न अंग

माछक शरीरकेँ मुख्यत: तीन भागमे बाँटल जा सकैत अछि। अग्रभाग **मूड़/मूड़ा/मूड़ी/सीरा** (प्रसिद्ध कहबी : सीरा खाय मीरा पुच्छी खाय गुलाम) कहल जाइत अछि। बीचवला भाग **पेट/पेटी** कहल जाइछ। पाछूवला भाग **पुच्छी/पुछड़ी** होइत अछि।

मूड़ाक अगिला खुलल भाग **मुँह** ओ मुँहक भीतरवला भाग **गलफर** कहल जाइत छैक। गलफरक दूनू कात दूटा केवाड़ जकाँ कवच रहैत छैक। एकरा **कनखुर** कहल जाइत छैक। कनखुरक भीतरी भागमे लाल रंगक केश सन पातर-पातर अंशक समूहसँ बनल बनावटि रहैत छैक। एकरा **कसेल/केसी** कहल जाइत छैक।

पेटीक ऊपरी भाग, कनखुरक पार्श्व, पुच्छी आदिमे पंखी लागल रहैत छैक। एकर सहायतासँ माछ पानिमे हेलबामे सक्षम होइत अछि। एकरा **पेखना/पंखी** कहल जाइत छैक। माछक शरीर परक छिलकाकेँ **खोंइचा/खोइया/चोंइटा/चोंइयाँ/सइर** कहल जाइत छैक।

पेटीक भीतर अँतरीवला भाग **पचौनी** कहल जाइत छैक। फेफड़ावला भागकेँ **खोखस/खोखसा/फोकचा** कहल जाइत छैक। हल्का लाल वर्णक गुर्दावला भाग **तेल** कहल जाइत अछि। गाढ़ लाल रंगक मोलायम अङ्गकेँ **कलेजी** कहल जाइत छैक। पीत वर्णक एकटा थैली **पित्त** कहल जाइत अछि। पचौनीमे माछक खायल वस्तुक पचल-अनपचल अंशकेँ **गदरी/लेदी** कहल जाइत छैक।

माछकेँ अनेक खंडमे कटबाक क्रिया **बनायब/निकायब/निकैब** होइत अछि। खंड सभकेँ **कुटिया** (प्रसिद्ध लोकोक्ति : पानीमे मछरी, नौ नौ कुटिया बखरा)/**कुट्टी/ खंड** कहल जाइत छैक। पेटीवला कुटिया **पलइ/पलै** होइत अछि। पीठ दिसुक खंडकेँ **पिठकट** कहल जाइत छैक।

माछक शरीरक भीतरी भागमे जे कठोर अंश रहैत छैक ओकरा **काँट/काँटा** आ मोलायम मांसल अंशकेँ **गुद्दा** कहल जाइत छैक।

माछक विक्रय : माछ बेचबाक स्थानकेँ **मछहटा**(कीर्त्तिलता, पृ.-30)/**मछट्टा/ मछहट्टा** कहल जाइत छैक। मूल्य दऽ वस्तु प्राप्त करबाक क्रिया **कीनब/बिकिनब/खरीदब** होइत अछि। मूल्य ग्रहण कऽ वस्तु देबाक क्रिया **बेचब** होइत अछि। किनलासँ प्राप्त वस्तुकेँ **खरीद/बिकिन** आ बेचला पर देय वस्तुकेँ **बिक्री/बेच** कहल जाइत छैक। **खरीद-बिक्री** ओ **बेच-बिकिन** युग्म शब्दक रूपमे क्रय-विक्रयक हेतु व्यवहृत होइत अछि।

एक संग अधिक सामानक क्रय-विक्रयकेँ **थोक** कहल जाइत छैक। थोड़-थोड़ कऽ सामानक क्रय-विक्रयकेँ **फुटकर/खुदरा** कहल जाइत छैक। जाहि ठाम माछक थोक खरीद-बिक्री होइत छैक, ओहि स्थानकेँ **आढ़त** कहल जाइत छैक। आढ़त पर वस्तुक मालिकसँ सभटा सामान कीनि कऽ फुटकर व्यापारीकेँ अधिक मूल्य पर बेचऽवला व्यापारी **पैकार** होइत अछि।

खरीदमे जे पूजी लगैत छैक ओकरा **लग्गति/लगति/लग्गित/लागत/लागति** कहल जाइत छैक। क्रय-विक्रयमे स्थिरताक हेतु प्रथमत: देल अल्प अग्रिम मूल्यकेँ **ब्यौना/बेआना/बेना** कहल जाइत छैक। वस्तुकेँ बेचला पर लागत ओ आन खर्चक बाद जे अधिक धन प्राप्त होइत छैक, ओकरा **नफ्फा/नफा/बचत/बचता/ बचती/बचन्ता/बचन्ती/बरक्कत/ बरक्कति/लाभ** कहल जाइत छैक। जँ विक्रय मूल्य क्रय मूल्यसँ कम होइत छैक, तँ दूनूक अन्तरकेँ **घट्टी/घाटा/टूट/टुट्टी/ हरक्कति** कहल जाइत अछि।

विक्रय मूल्यक दरकेँ वस्तुक **भाओ/मोल** कहल जाइत छैक। मूल्य निर्णय करबाक क्रिया **भाओ करब/मोलायब** होइत अछि। मूल्यक स्थिरीकरण सम्बन्धी विवादकेँ **मोलतोल/मोलाइ/मोलमोलाइ** कहल जाइत छैक। बेचनिहार ओ खरीदनिहारक बीच मूल्यक स्वीकृति होयबाक क्रिया **पटब** होइत अछि। स्वीकृतिक हेतु **पटता/पड़ता/पटती/पटन्ती** शब्दक व्यवहार होइत छैक। बेचनिहारकेँ लाभक आशा रखबाक क्रिया **पड़ता पड़ब/पोसायब/पोसाइ खायब** होइत अछि।

स्थिर मूल्यक अनुसार वस्तुक हेतु देय राशिकेँ **दाम** कहल जाइत छैक। अन्नादिक रूपमे देल दामकेँ **बेच** कहल जाइत छैक (बेचसँ सम्बद्ध एहि लोकोक्तिक विपरीत लक्षण द्रष्टव्य-बेच दऽ कऽ जे कीनथि माछ। ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच।।)।

बेचक ओजनक बराबर माछ देबाक दरकेँ **बराबर/बरोबरि**, डेढ़ गुणित देबाक दरकेँ **डेढ़बर**, द्विगुणित देबाक दरकेँ **दोबर**, त्रिगुणित देबाक दरकेँ **तेबर**, चतुर्गुण्ति देबाक दरकेँ **चौबर**, दु तिहाइ देबाक दरकेँ **डेढ़ी**, आधा देबाक दरकेँ **अधिया**, तृतीयांश देबाक दरकेँ **तेहाइ** ओ चतुर्थांश देबाक दरकेँ **चौठाइ/चौठइया** कहल जाइत छैक।

सद्यः मूल्य दऽ खरीद-बिक्रीकेँ **नगद/नगदा/नगदी/नगदा-नगदी** कहल जाइत छैक। मूल्य पछाति चुकयबाक व्यवस्थाक अनुरूप खरीद-बिक्रीकेँ **उधार/उधारी** कहल जाइत छैक। प्रथम विक्रयकेँ **बोहनि/बोहनी/बोहनीबट्टा** कहल जाइत छैक। एहि हेतु प्राचीन शब्द **पड़ओक/परहोँक** अछि (द्रष्टव्य, विद्यापति गीतावली, सं. गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटना-'पहिल पढ़ओक भला के हाथ। तेँ उपहस नहि गोपी साथ ॥' तथा 'केओ देअ हास सुधा सम नीक। जइसन परहोँक तइसन बीक ॥')।

मलाहिन द्वारा घुमि-फिरि कऽ माछ बेचबाक क्रिया **भौरी देब/फेरीदेब** होइत अछि। भौरी देबाक हेतु मलाहिनक माछ रखबाक काठक गँहीर पात्रकेँ **कठौत** कहल जाइत छैक। ओकर माछ निकएबाक हाँसुकेँ **मलाही हाँसू** कहल जाइत छैक।

माछ जोखबाक उपकरण **तराजू** होइत अछि। आढ़त पर माछ जोखबाक पैघ तराजूकेँ **काँटा** कहल जाइत छैक। काँटापर जोखबाक क्रिया **काँटा करब** होइत अछि। जोखबाक हेतु मानक ओजनकेँ **बाट/बटखरा/बटिखारा** कहल जाइत छैक।

वस्तु जोखबाक मानक बटखराकेँ **सेर/सेरही** कहल जाइत छैक। सेर दू प्रकारक होइत अछि– कच्ची सेर आ पक्की सेर। कच्ची सेरमे पचास तोला ओ पक्की सेरमे अस्सी तोला होइत छैक। अठासी तोलाक सेर सेहो प्रचलित अछि। आइकाल्हि मीटरिक तौल पद्धतिक प्रचार भऽ गेने सेरक उठाओ भऽ रहल छैक आ अन्य मानक बटखराक व्यवहार भऽ रहल छैक जकरा **किलो** कहल जाइत छैक। एक किलोमे एक हजार **ग्राम** रहैत छैक।

सेरक आधा ओजनक बटखरा **असेरा** कहल जाइत अछि आ एकर बराबर वस्तुक तौल **आसेर** कहल जाइत छैक। सेरक चतुर्थांश ओजनक बटखरा **पौआ** कहल जाइछ आ एकर बराबर वस्तुक तौल **पाओ भरि** कहल जाइत छैक। पौआक आधा ओजनक बटखरा **अधपइ/अधपै** कहल जाइछ आ एकर बराबर वस्तुक तौल **आधपा** कहल जाइत छैक। अधपइक आधा ओजनक बटखराकेँ **कनमा** कहल जाइत छैक आ एकरा बराबर वस्तुक तौल सेहो **कनमा भरि** कहल जाइछ। एहि तरहेँ एक सेरमे सोलह कनमा होइत छैक।

अढ़ाइ सेर ओजनक बटखराकेँ **अढ़इया/अढ़ैया** ओ पाँच सेर ओजनक बटखराकेँ **पसेरी** कहल जाइत छैक। दू पसेरीक एक धारा ओ चारि धाराक एक मन होइत छैक।

आढ़त पर माछ जोखबामे एगारह किलोक एक धारा मानल जाइत छैक।

तराजूक दूनू दिस लटकैत भाग **पलड़ा** ओ बीचवला दण्डकेँ **डंडी** कहल जाइछ। माछवला पलड़ा झुकल रहला पर तौलकेँ **जिन्दा/जीता/जीयत** कहल जाइत छैक। वस्तु दिस पलड़ाक झुकाओकेँ **लउत/लेओत** कहल जाइत छैक। वस्तु दिसुक पलड़ा ऊपर उठल रहला पर जोखकेँ **उदास/उस** कहल जाइत छैक। किञ्चित उदासक हेतु **झंस/झूस** शब्दक व्यवहार होइत अछि।

तराजूक दूनू पलड़ाक असाम्यकेँ **पासंग/पासङ/पसङा** कहल जाइत छैक। दूनू पलड़ाकेँ साम्यमे अनबाक हेतु कोनो पलड़ा पर देल अतिरिक्त ओजन सेहो **पासंग/पासङ/पसङा** होइत अछि। बटखराक अभावमे छोट बटखारासँ हेरा-फेरी द्वारा साधित वृहत् परिमाणकेँ **कठधारा** कहल जाइत छैक। दूनू पलड़ा पर क्रमशः बाट ओ वस्तु राखि कऽ जोखबाक क्रिया **धारा करब** होइछ। बाम पलड़ा पर राखल बाट द्वारा एक बेर जोखल वस्तुकेँ **एक धारा** कहल जाइत छैक। बाटक तौलसँ कम माछ दऽ ग्राहककेँ ठकबाक क्रिया **टाल मारब/डंडी मारब** होइत अछि। अपेक्षित बटखाराक अभावमे ईंट आदिक टुकड़ीकेँ बाटक स्थान दऽ वस्तुकेँ जोखि पछाति ओहि टुकड़ी सभक वास्तविक ओजन ज्ञात कऽ वस्तुक तौल ज्ञात करबाक क्रिया **भेयारब/भजारब** होइत अछि। भेयारबाक भाव **भेयार** होइत अछि।

अपन ग्राहककेँ मलाहिन सगुनक रूपमे जे अतिरिक्त माछ दैत छैक, ओकरा **लाथा-दूआ/मङनी-चङनी** कहल जाइत छैक।

माछक सहचर ओ शत्रु : माछक अनेक जलजीवी सहचर ओ शत्रु सभ होइत छैक। मत्स्य न्यायक अनुसार छोट माछकेँ पैघ माछ खा जाइत छैक, तेँ स्वभावतः सभ माछ परस्पर शत्रु होइत अछि। मुदा किछु माछ खास कऽ मांसाहारीये होइत अछि आ अपनासँ छोट माछेकेँ अपन आहारक मुख्य साधन बनौने रहैत अछि। एहन माछमे गरइ ओ बोआरीक नाम लेल जा सकैत अछि।

जल ओ स्थल दूनूपर समान रूपेँ रहऽवला चारि टाङसँ युक्त एकटा छोट जन्तु **बेङ** होइत अछि। एकर छोट बच्चा **बेङची** कहल जाइत छैक। पीयर रंगक पैघ आकृतिक बेङक एकटा प्रभेद **ढबुसा/ढाबुस** होइत अछि।

गन्दा पानिमे रहऽवला कारी रंगक चप्पत आकृतिक एकटा जलजन्तुकेँ **जोँक** कहल जाइत छैक। ई पानिमे पैसल जीवक चाममे सटि खून चूसऽ लगैत छैक। पनिझाओक कालमे घास पर रहऽवला एकटा अन्य खून चूसऽवला जन्तु **जोँकि/ढेङी** कहल जाइत छैक।

माछक अन्य सहचर **कँकोड़ा/काँकोड़/कँकोड़बा** (**प्रसिद्ध लोकोक्ति : बहुतहि लोभ बगुलबे कीन्हा। क्षणमे प्राण कँकोड़बे लीन्हा** तथा **ककोड़बा बियान ककोड़बे खाय**) होइत अछि। ई बिल बनाकऽ रहैत अछि। एकरा आठटा सामान्य टाङ ओ दूटा

कैंचीयुक्त चाङुर रहैत छैक। चाङुरेसँ ई अपन शत्रु पर आक्रमण करैत अछि। एकर पैघ प्रभेद **तेलिया कौंकोड़** कहल जाइत छैक। छोट जातिक कौंकोड़कें **कठकौंकोड़** कहल जाइत छैक। कौंकोड़क बिल **कँकड़ोहरि** होइत अछि।

कम पानिसँ माछक शिकार करऽवला एकटा उज्जर रंगक पंछी **बगुला/बक** होइत अछि। कछुआ ओ बगुलाक सम्बन्धमे प्रसिद्ध लोकोक्ति अछि– **'की बक हेरसि दीठी। सए सए जाल घड़कि गेल पीठी॥'**। हल्का रंगीन पाँखिसँ युक्त बगुलाक एकटा प्रभेद **खयरा बगुला** कहल जाइत अछि। ई जलाशयक कातमे एकटङा दऽ ध्यानस्थ रहैत अछि आ अबैत-जाइत माछकें टप दऽ पकड़ि लैत अछि। बगुला सन एकाग्रचित्तताकें **बगुलबा धेयान/ बकध्यान/बकोध्यान** आ ओकर कपटी स्वभावक अनुरूप चालिवला सन्तकें **बगुला भगत** कहल जाइत छैक।

पानिक तल पर आयल माछकें अकस्मात् अपन चाङुर अथवा लोलसँ शिकार करऽवला एकटा पैघ पंछी **चिल्हा/चील्ह/चिल्होड़ि(रि)/चिलहोड़ि(रि)** कहल जाइत छैक। एकर आकस्मिक आक्रमणकें **झपट्टा** कहल जाइत अछि। झपट्टा मारि कऽ लऽ लेबाक क्रिया **लुझब** होइत अछि।

धोबिया चिड़इ पानि पर चारूकात मड़राइत रहैत अछि आ माछ पर नजरि पड़ैत देरी आकाशसँ समकोणिक उतरि पानिक भितरेमे डूबि माछ पकड़ि लैत अछि।

माछकें आहार करऽवला कारी रंगक जलीय साप **मछगिद्धी** होइत अछि। चित्‌कावर दग्गीसँ युक्त अन्य जलीय साप **ढोंड़/ढोंढ़िया/ढोंड़बा/ढोर/ढोरिया** होइत अछि। पानियेमे वास करऽवला विषधर सापकें **दराध/पनिया दराध** कहल जाइत छैक (**प्रसिद्ध लोकोक्ति- जानथि ढोंढ़क मन्त्र नहि, देथि दराधक माथा हाथ**)।

पीठ पर कठोर कवचसँ युक्त, गोल आकृतिक, माछक एकटा जलीय सहचर **काछु/कछुआ** होइत अछि। आकृति ओ कवचक रंगक आधार पर एकर अनेक प्रभेद **कठकाछु, पतकाछु, सिमकाछु, हड़काछु** आदि होइत अछि।

नाङरिमे काँटसँ युक्त कछुएक जातिक एकटा जलजन्तु **सकुची** कहल जाइत अछि। सुगरक मुखाकृतिसँ युक्त नदीक सतह पर सदिखन उलटैत रहऽवला कारी रंगक अन्य जलजन्तु **सोंस/सोइंस/सोंसि** होइत अछि। बिल्लीक आकृतिक मत्स्याहारी जलजन्तु **उऽद/उऽध/उद्ध/उधबिलाड़** कहल जाइत अछि।

नदीक सभसँ भयानक जन्तु **गोहि/घड़ियार/नकार/लंकार** (सं. नक्र) होइत अछि। एकर मुँह नाम, नाङरि काँटयुक्त तथा शरीर नाम एवं विशाल होइत छैक। एही जातिक अन्य जलजन्तु **बोच/बोंछ** होइत छैक।

मलाह सभक मान्यता छैक जे जलमे डूबि कऽ मुइल व्यक्तिक आत्मा विभिन्न जन्तुक रूप धऽ ओहिमे वर्तमान रहैत छैक आ सुनहट पओला पर अभरैतो छैक। एकरा सभकें **डुब्बा/पनिडुब्बा/पनिडुब्बी** कहल जाइत छैक।

माछक प्रभेद : माछक अनेक प्रभेद पाओल जाइत अछि। किछु माछक रंग स्वच्छ ओ श्वेताभ होइत छैक। किछु मांसक रंग मलिछौन होइत छैक। कोनो-कोनो माछ वार्द्धक्य प्राप्त कयला उत्तर अधिक ओजन जो लम्बाइसँ संयुक्त भऽ जाइत छैक आ अनेक माछ बढ़लो पर छोटे आकृतिक रहैत छैक। माछ सभक मुँहक आकृति, पंखीक बनाबटि, शरीरक आकार, काँटक स्थिति आदिमे सेहो अन्तर रहैत छैक। ओना तँ सभ माछमे सइर रहिते छैक मुदा कोनो-कोनो माछक सइर ततेक छोट होइत छैक जे खयबाक हेतु बनयबाकाल ओकरा पृथक् करब आवश्यक नहि बूझल जाइत छैक। एकर विपरीत अनेक माछक सइर बहुत पैघ-पैघ सेहो होइत अछि। एही विभिन्नता सबहिक आधार पर माछकें चीन्हल जाइत छैक। तकर बादो एकेटा माछ स्थान भेद भेला उत्तर विभिन्न नामे जानल जाइत अछि। स्थान भेद जन्य वातावरणक प्रभाव सेहो माछक आकृति पर अपन महत्वपूर्ण प्रभाव दैत छैक।

अधिकतम एक फुट धरि लम्बाइवला माछकें छोटका जो ताहिसँ पैघ जातिक माछकें बड़का कहल जा सकैत छैक।

छोटका माछ : सइरयुक्त उज्जर छोट माछमे **इलङा/खर्रा/खरोइ/खड़िका, खेसरा, गल्ला/गलड़ा/गलकब्बइ, गुत्ता/गुर्त्ता/गुर्दा/गुलता, घड़चाला/घोरचाला/ घोरचाल्हा, चल्हा/चल्हवा/चाल्हा/चेल्हा/चेल्हवा, तिलकिया/तिलिकिया/ तिलिपिया, धनारी/धनेरा, नदियारी, नुनचट/नुनचट्टी, पथरचट्टा/पथलचट्टा, पलबा, पोठी** (प्रसिद्ध कहबी-1. अघायल बककें पोठी तीत, 2. एक पोठ पर नौ रोट, 3. पोठी-टेङरा/चेल्हवा-पोठी चालि दिअय, रेहू सिर बिसाय), **फाँसा, बजहा, बनकब्बइ, बँसपत्ता/बँसपत्ती, मारा/मड़बा, मरुड़/मरेड़, माली/माल्ही, मिड़का, ललमूँहा/ललमूँही/ललमुँहिआ** आदिकें राखल जा सकैत अछि। लघु आकारक खेसरा माछकें **खेसरी/कचरी/कोचरी** कहल जाइत छैक। पूर्णियाँ रिपोर्ट (पृ. 297)मे पथरचट्टा माछकें **गंगाजली/घटपौना** सेहो कहल गेल अछि। पैघ आकारक पोठीकें **पोठा** ओ छोट आकारक पोठीकें **पोठिया** कहल जाइत छैक। लघु आकारक बजहा माछकें **बजही** कहल जाइत छैक।

सइरयुक्त मुदा मैलछौन रंगक छोट माछ सभ **अरुआरी/डरा(ड़ा)/ हुर्रा/हुड़बा, कबइ/कबै, गरइ, चिपनी, चेंगा/चेङा, डेढ़बा/डेढ़ा/डेड़बा, ढल्ला/ढलइ/ ढलबा/ढलै/ढलोइ**(प्रसिद्ध कहबी- तोरा के पुछै गे ढलोइ), **बुल्ला/भुल्ला, मलङ, मुसिआ** आदि होइत अछि। बुकनन हुर्रा माछकें **मुरैल** कहने छथि (ऐन एकाउण्ट आफ दी डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णिया, पृ.-287)। लघु आकृतिक गरइकें **गरचुन्नी** कहल जाइत छैक। कबइ माछक छवड़ाकें **कचुरी** कहल जाइत छैक (मि. भा. कोष)।

अत्यन्त छोट सइरसँ युक्त अथवा सइरविहीन छोट ओ श्वेताभ माछ सभ **इच्चा/इचना, झिंगा/झिङा/झिङ्गा/कौड़िया झिंगा, ककहिया/सुही, खोखसा/**

खोखसी, फकड़ा/फोचका/फोकची, खुद्धी, घरवा/घरूआ/घड़िया/ घेरुआ, चचरा/चेचरा, पपता/पोपता, चन्दा/चन्ना, चुना, टेंगरा/टेङरा/डेङरा/ बजही टेङरा, ठेङहा, थुकचट्टा/थुकचट्टी, धोली, नढ़िया/नेरुका, बचवा/कचकी, पदना, भकुरचन्ना/ भकुरचाना, ललिया, सिसरा/सिरसा आदि थिक। लघु आकृतिक झिङा माछकेँ **झिङी** ओ ओकर पैघ प्रभेदकेँ **गुर्रा/गोर्रा/गोरड़ा(रा)/ गोड़ड़ा(रा)** कहल जाइत छैक। लघु आकृतिक सूहीकेँ **सुहिया/लुहिया/लूही** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेदकेँ **सूहा/सोहा** कहल जाइछ। लघु आकृतिक चेचरा माछकेँ **चचरी/चेचरी** कहल जाइत छैक। पैघ आकृतिक टेङराकेँ **बड़का टेङरा/सुसना टेङरा** आ लघु आकृतिक टेङराकेँ **टेंगरी/टेङरी** कहल जाइत छैक।

मैलछौन रंगक सइरविहीन छोट माछ सभ **कठगेंची, पतसिया/पतासी, पिठिया, बाघी, लट्टा/लटबा** आदि होइत अछि।

बड़का माछ : उज्जर रंगक सइरयुक्त बड़का माछक प्रतिनिधि रउहु/रउहु/रेहु/रोहु/रोहु/रोहुआ (सं. रोहित) होइत अछि। एकर मूड़ा बेसी पसिन्न कयल जाइत छैक (**प्रसिद्ध कहबी:- रहुक मूड़ी भुनाक पेट। दहीक ऊपर गुड़के हेठ ॥**)। एकर जियाराकेँ **गोजी/गोंजारी**, गोंजीसँ पैघकेँ **लबही**, बीत भरिक लबहीकेँ **खल्ली** आ हाथ भरिक भऽ गेलापर एकरा **भुमुरी** कहल जाइत छैक।

एही जातिक अत्यन्त चाकर मुँहवला एकटा माछ **कतरी/कतली/कोतरी** होइत छैक। एकर पैघ प्रभेद **कतरा/कतला/कोतरा** कहल जाइत छैक। जुआयल कतराकेँ **भकुरा/भकुरी/भाकुर/भोकरा/भकुरबा** कहल जाइत छैक। भाकुर सन चाकर मुँहवलाकेँ **भकुरमुँह/भकुरमुँहा** कहल जाइत छैक।

रेहुएक जातिक पियरौँछ रंगक एकटा माछ **नएन/नेन/नैनी** होइत अछि। अत्यन्त चाकर शरीरवला अन्य माछ **भूना/भुन्ना** होइत अछि। छोट भुन्नाकेँ **फल्ली** ओ पैघ भुन्नाकेँ **मेदिनी/मोदिनी/मोइ** कहल जाइत छैक।

अन्य सइरयुक्त श्वेताभ बड़का माछ सभ **कचाड़ी, कठगोला/कनचट्टी/ कपटी, भुंइचट्टी, कंधली, गोल्हा/गोल्ही/गोलही/ गोला/गोली, धुनी, कन्हुआ/ भौंटी, कर्सा/ करसा/कुर्सा/खुरसा, नारा/मोछना, गन्हकबइ, गोह/गोहि/गोही, घोंघररिया, छउही/रेवा, तेलचिट्टा, तोड़, दही/दइही, नङरा, बचोइ, बाटा, बिलड़ा, भेलड़ा, रेखड़ा/रेखड़ी, घइदरही, सहरा, हिलसा** आदि अछि।

सइररहित श्वेताभ पैघ माछमे **कुब्जा/कुबजा, कौंटी/अँड़िया/गगरी/सरङा, गच्छर, घोंघैल, पगांस/पघैसा/पघौंस/पङसा/पङास/पड्हास/पड्हसा/पनसा, सीलङ/सीलन/सीलोन, लोदरा, सरड़ा** आदिकेँ राखल जा सकैत अछि। छोट गगरीकेँ **टोही** ओ पैघ गगरीकेँ **गगरा/गागर/तेलगगरा** कहल जाइत छैक।

मैलछौन रङक सइरवला बड़का माछ सभ **बसरा/बसराहा/बसराही/बसाढ़ी/ बसौंढ़ी/बिसार** (सं. बिसारः), **बामी, भोरा/भौंरा/भोणा** (**प्रसिद्ध कहबी : भोरा खाय से घोड़ा खाय**), **सौरा** आदि अछि। अत्यन्त पैघ बिसौंढ़ीकेँ **कालबोछ** कहल जाइत छैक। बामीक पैघ प्रभेदकेँ **बाम/राजबाम** कहल जाइत छैक। भोरा खूब स्वादिष्ट नहि होइत छैक। छोट भौंरा **भोंडही/भोणही** होइत अछि। छोट सौराकेँ **सौरी/सौराठी/सौरबचबा** तथा पैघकेँ **सौर** (सं. शकुल) कहल जाइत छैक।

कत्थक रंगक एकटा सर्पाकार माछ **अन्ही/अन्हइ/अन्है** होइत अछि। गाढ़ लाल रंगक एहने माछ **बम्मच** कहल जाइत अछि। अन्य सइरविहीन मझोला आकृतिक मैलछौन माछ सभ **सिंघी/सिङही, मङुरी/ममुरी/मुङरी, गैंची, कौआ, बेलओना/बेलौना, चपुआ/चिपुआ** आदि होइछ। पैघ सिंघीकेँ **सिंघाठ/सिङाट/सिङ्हाठ** कहल जाइत छैक। एकर कंठ लग काँट होइत छैक जाहिसँ ई शरीर पर आघात कऽ पकड़निहारकेँ चीरि दैत छैक। एहि तरहेँ चिरबाक क्रिया **बीन्हब** होइत अछि।

पैघ ममुरीकेँ **माङुर** (सं. मद्गुरः)/**ममुरा/मङुरा** कहल जाइत छैक (**प्रसिद्ध कहबी- माघ मास जे माङुर खाइ। ससरि-फसरि बैकुण्ठे जाइ॥**)। पैघ गैंचीकेँ **गैंचा** कहल जाइत छैक। बेलौनाक पैघ प्रभेद **बेलौन/बेलओन** ओ छोट प्रभेद **बेलौनी/बेलओनी** होइत अछि।

सइर विहीन माछमे सभसँ पैघ प्रभेद **बुआरी/बोआरी/बोगारी/बोङारी** होइत अछि। बोआरीक बच्चाकेँ **लपची** ओ पैघ बोआरीकेँ **बोआर/बोगार** कहल जाइत छैक। विभिन्न प्रकारक माछक समष्टिकेँ **रहुआ-बोआर** कहल जाइत छैक। मिथिलाभाषा कोषमे एकरा समुद्री मत्स्य विशेष कहल गेल अछि।

रहु ओ बोआरी माछक युग्म शब्दक रूपमे सेहो व्यवहार होइत अछि। मिथिला भाषा कोषमे **रघबा बोआर** नामक एकटा मत्स्य विशेषक उल्लेख अछि।

भुल्ल रंगक एकटा पैघ माछ **चोन्हा/चोनहा** होइत अछि। एकर छोट प्रभेदकेँ **चोन्ही/चोनही** कहल जाइत छैक। एही जातिक अन्य माछ सभ **बल्गारा/बगलऐंरा, गोंछ/गोंछरा** आदि होइत अछि। पैघ गोँछराकेँ **बघाइर/बघारि/बघैर** कहल जाइत छैक।

दूटा माछक गुणसँ समन्वित माछकेँ **दोगला/बेसर/बेसरा/बेसरी** कहल जाइत छैक। पोठी, चुन्ना, खेसरा, मड़बा/झिंगा आदि माछ एक संगे फेंटल रहला पर **इच्ना/इचना** कहल जाइत अछि।

सरकारक मत्स्य विभाग द्वारा आइकाल्हि अनेक प्रकारक आयातित माछ सभक प्रचार मलाह सभक बीच अधिक उत्पादनक दृष्टिऍं कयल जा रहल अछि। एहि माछ सभक नाम अपन मूलसँ विकृत भऽ प्रचलित भेल जा रहल अछि। एहन

किछु नाम सभ अछि- **कमलकाठ/कलमकाठ, गिलासकप, घासकाठ, चाइना पोठी, पवनकाठ, मेजरकाठ, लोहाकाठ, सिल्भरकाठ** आदि।

वर्णरत्नाकरमे **वाडसि, बसाड़, बोआर, वचा, वामु, अरि, मोञ, कोन्धु, नयना, सौर, मिलिन्धि, सफरी** प्रभृति माछक उल्लेख अछि। एहिमे वाडसि, मिलिन्धि, कोन्धु आदि शब्दक अर्थलोप भऽ गेल अछि। पैघ बिसाढ़ीकेँ बसाढ़, पैघ बोआरीकेँ बोआर, बचवाकेँ वचा, वामीकेँ वामु, गगरीकेँ अरि, पैघ भुन्नाकेँ मोञे, पैघ नयनीकेँ नयना ओ पैघ सौराकेँ सौर कहल जा सकैत अछि। सफरी माछक प्रभेद थिक। ई शब्द फड़ीक रूपमे माछक एक संख्याक हेतु सेहो व्यवहृत होइत अछि।

बुकनन कोसी नदीक करीब डेढ़ सय माछक उल्लेख कयने छथि। एहिमे **आँजन, ककुरा, कुम्हड़ी, कौंढ़ी, कोसौती, खयरा, खौंड़ी, गरहन, गोहाली, चमार, चिकड़ा, जाया, जोंजा, टिट्टुआ, टुड़िआ, ढोंगा, तिलुआ, तिली, दुधिया, देसरी, धनी, नौड़िन, पेमा, पौड़की, फूआ, बड़ा, भँगीआ, भू, भोंटी, मशाल, मलकी, महुअर, मंगोड़, सोली, ससुआ, सुवर्णखरिका, हलुआद** आदि अतिरिक्त नाम अछि (**ऐन एकाउन्ट आफ दी डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णिया-पृ.-293-299**)।

कविचन्द्र रचित वाताह्वानमे **जासर, ठकुरा, तीर्थदन्त, योगनानिल** आदि नवीन नाम भेटैत अछि (**चन्द्र रचनावली, डॉ. विश्वेश्वर मिश्र, पृ.-353, 358**)।

मिथिला भाषा कोषमे **चनसूर, चमरमाछ, जहरी, दरसा, नान्दन, बकाची/बकुची** आदि माछक नाम भेटैत अछि। एहिमे **चमरमाछ** वस्तुतः माछ नहि थिक। ई कारी रंगक नाङरिवला एकटा जलजन्तु थिक जे पछाति बेङ बनि जाइत अछि। एकरा **चमरमछरी/बेङमाछ/फुलौंचा** सेहो कहल जाइत छैक।

मखान : मखान/मखाना पानिमे उपजऽवला एकटा फल थिक। नदीक चलता पानिमे एकर उत्पादन संभवे नहि छैक। दैनिक उपयोगवला पोखरिमे सेहो ई नहि लगाओल जाइत अछि।

एकर बीयाकेँ **बीहन/बीहनि** कहल जाइत छैक। एक आकार गोल आ रंग कारी रहैत छैक। कारी रंगवला ऊपरी भाग कठोर कवचक रूपमे रहैत छैक। तरमे उज्जर रंगक गुद्दा रहैत छैक। आकृतिमे ई मटरक दानासँ कने पैघ होइत अछि।

मखानक बीहनि कातिकमे जलाशयमे छीटल जाइत छैक। किछु समयक बाद बीहनिसँ कमलक डंटी जकाँ काँटयुक्त डंटी निकलैत छैक। डंटीक उपरका भाग पातक आकृति ग्रहण करैत छैक। पात गोल, करीब हाथ भरि व्यासक ओ काँटयुक्त होइत छैक। भादो मासमे पातसँ निकलल डंटी सभमे अनेकसँ नील वर्णक फूल निकलैत छैक। फूल झरलाक बाद डंटीक उपरके भागमे गेन्दक आकृतिक काँटयुक्त आवरणवला फऽड़ बहराइत छैक। एहि फऽड़केँ **पुर/पडट** कहल जाइत छैक। पडटक भीतरी भागमे मखानक बीया रहैत छैक। एहि बीयाकेँ **गूड़ी(री)/गुड़िया**

कहल जाइत छैक। बीया पकलाक बाद पडट स्वतः गलि जाइत अछि आ गूड़ी सभ जलक भीतर खसि जमीन धऽ लैत छैक। पानिक तरमे खसल गूड़ीकेँ ऊपर करबाक क्रिया **मखान खरड़ब/मखान बहारब** होइत अछि। कम पानि रहला पर टेंठी आलक सहायतासँ गूड़ी छानल जाइत छैक। टेंठीसँ माटिक सतह परक गूड़ी सभ छना जाइत छैक।

पानि अधिक रहला पर निश्चित स्थान पर एकटा करची गाड़ि देल जाइत छैक। एकरा **काड़ा** कहल जाइत छैक। काड़ाक परितः अनेक मलाह पानिक तऽलसँ नीचा जाइत अछि। एहि क्रियाकेँ **डुब्बी मारब** कहल जाइत छैक। जलाशयक सतह पर पहुँचि मलाह सभ हाथसँ टारि-टारि गूड़ी सभकेँ काड़ा दिस बढ़बैत ओतऽ जमा करैत अछि। पानिमे निमग्न रहैत भितरे-भीतर चलबाक क्रिया **डुबकुनिआ मारब** होइत अछि। डुबकुनिआ मारबाक संगहि सतह पर इतस्ततः चलबाक क्रिया **गुड़कुनिआ/घुसकुनिआ** देब होइत अछि। पानिक भीतर मलाहक साँस अवरुद्ध भऽ जयबाक क्रिया **दम घुटब** कहल जाइत अछि। दम घुटला पर जलक तल पर आबि साँस लेबाक क्रिया **दम मारब** होइत छैक।

काड़ा लग बाँसक कमचीसँ बनल कोठीक आकृतिक बासनक राखि सभटा गूड़ी ओहिमे उठा लेल जाइत अछि। एहि बासनकेँ **औंका** कहल जाइत छैक। औंका भरि गेला पर अनेक मलाह मिलि ओकरा जलाशयसँ बाहर लऽ अबैत अछि। औंकाक स्थान पर प्रयुक्त जालक टुकड़ीसँ बनल बासन जे मखान उठयबाक हेतु व्यवहृत होइछ से **पेलनी** कहल जाइत अछि।

कादोमे गँथल गूड़ीकेँ ऊपर करबाक हेतु गँजबाहि कयल जाइत छैक। कादो सहित गूड़ीकेँ गाँजसँ उठा ऊपरमे पानि पर खूब झमारल जाइत छैक। कादो पानिमे घुलिकऽ गाँजसँ बाहर भऽ जाइत छैक आ गूड़ी गाँजमे बचि जाइत छैक।

जलाशयसँ बाहर कयल गूड़ीक उपरका भागमे एकटा हल्लुक आवरण रहैत छैक। एहि आवरणकेँ **चोइंटा** कहल जाइत छैक। चोंइटा छोड़यबाक हेतु गूड़ीकेँ खूब लतिमर्दन कऽ साफ पानिसँ धो देल जाइत छैक। एहि साफ गूड़ीकेँ रौदमे सुखा लेल जाइत छैक।

सुखावल गूड़ीकेँ समान आकृतिक अनुरूप छँटबाक हेतु ओकरा सात आकृतिक छेदसँ युक्त सातटा चालनिसँ होइत क्रमशः चालल जाइत छैक।

गूड़ीसँ मखान बनयबाक क्रिया **भूजब** होइत अछि। भुजबासँ पूर्व गूड़ीकेँ हल्का गर्म करबाक क्रिया **भाड़(र)ब** होइत अछि। भाड़ल गूड़ीकेँ एकठाम जमा कऽ एक-दू दिन छोड़ि देबाक क्रिया **जमाब्ब** होइत अछि।

जमल गूड़ीकेँ खापरिमे लाल कऽ भूजि गर्ममे तीन-चारिटा गूड़ी एकटा काठक चाकर आधार पर राखि काठेक हथौड़ीसँ पीटल जाइत छैक। काठक चाकर

आधारकेँ **तरिहट** ओ हथौड़ीकेँ **मुङरि/पिटना** कहल जाइत छैक। एहि तरहेँ कयलासँ गुड़ीक उपरका आवरण टूटि कऽ छिड़िया जाइत छैक आ भीतरवला उज्जर भाग अनेक गुणित आकार पकड़ि बाहर होइत छैक। एहि उज्जर वस्तुकेँ **मखान** कहल जाइत छैक।

फुटि कऽ अत्यधिक पैघ भेल मखानकेँ **फोका/फोका मखान** कहल जाइत छैक। बिनु फूटल अथवा कम फूटल मखानकेँ **किर्री/ठुर्री** कहल जाइत छैक। आघातक कारणेँ जे किर्री टूटि कऽ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत छैक, ओकरा **दाइल** कहल जाइत छैक।

सिङ्हारा : पानिमे उपजऽवला एकटा खाद्यफल **सिङ्हारा/पानीफल** कहल जाइत छैक। इहो मखाने जकाँ अल्प गहराइवला डबड़ा आदिमे लगाओल जाइत अछि। एहि फलक आकृति त्रिकोण होइत छैक। एकर बाहरी आवरण हरियर अथवा लाल रंगक तथा भितरका गुद्दा उज्जर रंगक होइत छैक।

सिङ्हारा लत्तीमे फड़ैत अछि। एकर लत्ती पानिक उपरे-ऊपर लतरैत छैक। वैशाखमे एकर लत्ती पानिक तल पर इतस्ततः छीटि देल जाइत छैक। बीयावला ई लत्ती सभ **कौँखी** कहल जाइत अछि। किछुए दिनुक बाद लत्तीक जोड़ सभपरसँ अंकुर निकलैत छैक। एहि अंकुर सभकेँ सेहो **कौँखी** कहल जाइत छैक। अंकुर सभकेँ तोड़ि-तोड़ि सौँसे जलाशयमे छीटि देल जाइत छैक जे क्रमशः पुनः अंकुर लऽ जलाशयक समस्त भागकेँ छेकि लैत छैक। अंकुरकेँ छिटयाक प्रक्रिया **कमठौन** कहल जाइत अछि। आसिन धरि लत्तीमे फल आबि जाइत छैक, जकरा तोड़ि कऽ बेचल जाइत अछि।

कमठौन करबाक हेतु एवं फलकेँ तोड़बाक हेतु मलाह दूटा वंशदंडक दूनू छोर पर दूटा उनटल भैलकेँ बान्हि पानिमे हेलाकऽ दंड पर बैसि एम्हर-ओम्हर अबैत-जाइत अछि। एहि उपकरणकेँ **घटनइ/घड़नइ/घर्रा/घड़रा/घैला/घोड़ा** कहल जाइत छैक।

मिथिलाक मलाह दू प्रकारक सिङ्हारा उपजबैत छथि। देशी प्रभेदकेँ **देशवाली** ओ आयातित प्रभेदकेँ **कनपुरिया/कानपुरी** कहल जाइत छैक। देशवाली प्रभेदक फल कनपुरियाक अपेक्षा छोट होइत छैक। संगहि जुअयला उत्तर देशवाली प्रभेदक सिङ्हाराक आवरण कठोर भऽ जाइत छैक आ ओकरा दाँतसँ काटिकऽ खायब संभव नहि रहैत छैक। कनपुरियाक आवरण जुआयलो पर नरमे रहैत छैक। तेँ जुआयल देशवाली सिङ्हाराकेँ उसीनिकऽ हाँसूसँ छीलि खयबाक प्रचलन अछि। नरम गुद्दावला सिङ्हाराकेँ **खिच्चा/खिज्जा/अबोह** कहल जाइत छैक।

चून : **चून/चूना** जलाशयसँ प्राप्त कठोर कवचयुक्त एकटा जन्तुक खपरोइयासँ बनैत अछि। एहि जन्तुकेँ **सीप/सितुआ/सितुहा/सित्तू/खुरचन** कहल जाइत छैक।

खूब नाम ओ चाकर प्रभेदक सीप **नमका/नमकी**, चाकर सीप **बटुरी** ओ गोल आकृतिक सीप **करियारी/करुआरी** कहल जाइत छैक।

कठोर कवचसँ युक्त आनो अनेक जलजन्तुक खपरोइया चून बनयबाक हेतु प्रयुक्त होइत छैक। यद्यपि सीपक अतिरिक्त आन जन्तुक खपरोइयासँ बनल चून नीक नहि होइत छैक तथापि गृहनिर्माणक मशाला बनयबामे ओहनो चूनक उपयोग कयल जाइत छैक।

अन्य खपरोइयावला जन्तुमे **डोका/घोंघा/घोङ्हा** प्रमुख अछि। एकर लघु प्रभेदकेँ **डोकी/घोंघी/घोङ्ही/घोङरी/घोङारी/घोंघड़ी/घोंघाड़ी** कहल जाइत छैक। नाम आकृतिक एकटा बरिसाती जन्तु **अइँठा/ऐंठा/ऐँठा** होइत अछि।

अइँठाक अतिरिक्त आन एहन जन्तु सभक माँसवला भाग खाद्यक रूपमे व्यवहृत होइत छैक आ कवचवला भागकेँ आगिमे पकाओला पर चून बनैत छैक।

पकयबाक हेतु जाहि चूल्हिक उपयोग होइत छैक ओकरा **भट्ठी/चूनाभट्ठी** कहल जाइत छैक। ई काँच माटिक मोट देवालक बेलनाकार कोठी सदृश होइत अछि। एकर उपरका भाग खुलल रहैत छैक आ एहि भागक व्यास करीब दू हाथ रहैत छैक जे क्रमहि कम होइत जड़ि लग एक फुट भऽ जाइत छैक। निचला भागसँ सीप निकालबाक हेतु तीनटा मुँह बनाओल रहैत छैक।

सीपकेँ लकड़ीक खुहरीक संग फोंटि भट्ठीमे धऽ आगि लगा देल जाइत छैक। गर्मीसँ सीप पाकि जाइत छैक। पाकल सीप निचला मुँहसँ निकालि लेल जाइत छैक। सद्यः निकालल पाकल सीपकेँ **कली/फूल** कहल जाइत छैक।

कलीमे पानिक अल्प मात्रा देला पर ई मखड़ि कऽ गर्दा-गर्दा भऽ जाइत छैक। एहि चूनकेँ **भरकी चूना** कहल जाइत छैक।

सीपक नीक जकाँ पकबाक क्रिया **घुलब** होइत अछि। नीक जकाँ पाकल नहि रहने भरकओला पर सीपक खंड सभ चूनमे देखि पड़ैत छैक। एहि खंड सभकेँ **ददरी/सिफ्फी** कहल जाइत छैक।

चूनकेँ पानिमे घोरि ओहिसँ देवाल आदिकेँ छछारल जाइछ। एहि क्रियाकेँ **चुनेटब** कहल जाइत छैक। एक बेर पानिमे घोरल चून सूखि गेला पर खरकटि जाइत छैक आ पुनः पानिमे नहि घुलि पबैत छैक। एहन चूनकेँ **खरचून** कहल जाइत छैक।

पान, खैनी आदिक संगे खयबाक हेतु घुलाकऽ पकाओल कलीकेँ टीनमे पानिक संगे भोरि खौलाओल जाइत छैक। अधिक स्वच्छ चून प्राप्त करबाक हेतु एहिमे थोड़ेक खइर सेहो फोंटि देल जाइत छैक। खौलाकऽ चूनकेँ सिद्ध करबाक क्रिया **नीहब/रान्हब/रीन्हब** होइत अछि। रन्हला उत्तर प्राप्त वस्तुकेँ **रान्ह** कहल जाइत छैक। कपड़ा पर छानल घोरकेँ **कपड़छान** कहल जाइत छैक।

गोइठाक छाउर पर राखि एहि घोरक जलीय अंश अवशोषित कराय चून प्राप्त कयल जाइत छैक। प्रयोगमे चून रखबाक छोट पात्रकेँ **चुनौटी** कहल जाइत छैक।

निष्कर्ष

एहि तरहेँ देखैत छी जे माटि-पानिक व्यवसायमे सहस्राधिक शब्दावलीक प्रयोग होइत अछि। कुम्हारक शब्दावली अपन मूल स्वरूपमे सुरक्षित अछि आ एहि पर भाषिक अन्तःपरिवर्त्तनक प्रभाव अल्प अछि। मुदा माटिक बासनक विकल्पक रूपमे धातु, प्लास्टिक आदिक प्रयोगसँ कुम्हारक व्यवसायक अधिकांश शब्द अर्धलोपक प्रक्रियामे अछि।

मलाहक शब्दावलीमे क्षेत्रीयताक अत्यन्त अधिक प्रभाव छैक। संगहि एहि पर भाषिक अन्तःपरिवर्त्तन अबाध गतिसँ भऽ रहल अछि।

एहि दूनू व्यवसायमे उत्पादनक विविध स्तरमे पर्याप्त पारिभाषिक शब्दावली भेटैत अछि। एहि शब्दावलीमे स्थान भेदसँ एकहि वस्तुक अनेक नाम भेटैत अछि ओ प्रत्ययविधान द्वारा विभिन्न शब्द निष्पन्न होइत अछि।

चतुर्थ अध्याय

तूर-सूत व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

तूर-सूतक व्यवसाय एकटा संश्लिष्ट जातीय व्यवसाय थिक। एहि व्यवसायक विभिन्न स्तरमे जोलहा, पटबा, दर्जी, धुनिआ, रंगरेज ओ धोबि जाति लागल अछि। जोलहा ओ पटबा जाति सूतसँ वस्त्र बुनैत अछि। सूतक विभिन्न प्रसाधन तैयार करब ओ सूतमे गहनाक गँथाइ पटबाक अन्य व्यवसाय थिक। दर्जी वस्त्रकेँ काटि-सीबि कऽ पहिरबा योग्य बनबैत अछि। धुनिआ सीड़क ओ तोशकक हेतु तूर धूनैत अछि तथा ओकर तगाइ करैत अछि। रंगरेज वस्त्रकेँ रंगबाक ओ धोबि मैल वस्त्रकेँ साफ करबाक व्यवसाय करैत अछि। एहि तरहेँ एहि व्यवसायमे एक जातिक उत्पादन दोसर जातिक आधार सामग्री भऽ जाइत छैक।

तूर-सूत व्यवसायक प्रारंभिक आधार सामग्री बाङ कृषि व्यवसायसँ उत्पादित होइत अछि, जकर कोनो जातीय आधार नहि छैक। बाङसँ सूत तैयार करबाक व्यवसायकेँ सेहो जातीय आधार नहि छैक।

ऊनी वस्त्रक व्यवसाय सेहो जातीय व्यवसाय थिक आ एहि व्यवसायमे गरेड़ी जाति लागल अछि।

रेशमी वस्त्रक व्यवसायक मिथिलामे कोनो जातीय आधार नहि छैक।

सामान्य आधार सामग्री ओ औजार : तूर-सूत व्यवसायक सामान्य आधार सामग्री बाङ थिक। बाङकेँ चरखी द्वारा पेड़िकऽ ओकर रेशावला भागकेँ पृथक् कयल जाइत छैक। रेशावला भागकेँ धूनि कऽ समस्त रेशाकेँ पृथक्कृत कयल जाइत अछि आ दण्डाकार बनाय चरखा द्वारा सूत काटल जाइत अछि। बाङ उपजयबासँ लऽ कऽ सूत बनयबा धरिक व्यवसाय जाति निरपेक्ष व्यवसायक रूपमे चलैत अछि।

बाङ : बाङ वृक्षविशेषक फलक भीतरी भागसँ प्राप्त रेशायुक्त पदार्थ थिक। एकरा **बाङ/बाङा/बङ्गा/बाँगो/कपास** कहल जाइत छैक।

बाङक फऽड़केँ **ढेढ़ी** कहल जाइत छैक। परिपक्व ढेढ़ीक स्फुटित होयबाक क्रिया **बाङ फूटब** होइत अछि। फूटल बाङक रेशायुक्त पदार्थकेँ **रू/रूआ/रुइया/तूर** कहल जाइत छैक। बाङक बीयाकेँ **बङौर/बङौरा** कहल जाइत छैक। बाङक सुखायल गाछकेँ **बङठी** कहल जाइत छैक।

यद्यपि व्यावसायिक स्तर पर आब बाड़क खेती मिथिलामे नहि होइत अछि, मुदा बाड़ी-झाड़ीमे एखनो अनेक प्रकारक बाड़ उपजाओल जाइत अछि। ताजपुर ओ सीतामढ़ी बाड़ उपजयबाक प्रमुख केन्द्र रहल अछि (**ए स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ बंगाल, पृ.-83**)। परिपक्व होयबाक समयक आधार पर मिथिलामे बाड़क मुख्यत: दूटा प्रभेद उपजाओल जाइत रहल अछि– बैसाखमे तैयार होमऽवला प्रभेद-बैसक्खा ओ भादोमे तैयार होमऽवला प्रभेद-भदैया।

बैसक्खा बाड़मे दुइटा प्रभेद होइत अछि– पैघ ढेढ़ीवला प्रभेद **मोगा/मोगला/मोगिला** आ छोट ढेढ़ीवला प्रभेद **मोचरा/मोचरी/मुजारू**। मोगला ओ मोचराक मिश्रण **मिड़रा/फेटवाल** होइत अछि।

भदैया बाड़कें **कोकटी/कोगटी** कहल जाइत छैक। एकर तूर ललौन होइत छैक। मिथिलाक एहि प्रसिद्ध बाड़क वस्त्र जीवन पर्यन्त चलैत छैक (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-237**)।

एकर अतिरिक्त बाड़क अन्य अनेक प्रभेद सभ सेहो उपजाओल जाइत रहल अछि। संश्लिष्ट बीजसँ युक्त बाड़क प्रभेदकें **जटही** कहल जाइत छैक। खूब लाल तूरवला बाड़क दोसर प्रभेदकें **गज्जर/गाजर/गज्जरि** कहल जाइत छैक। फागुनमे परिपक्व होमऽवला बाड़क प्रभेदकें **फगुनिआ/फागुनी/हेवँती/हेमती** कहल जाइत छैक। सालमे दू बेर फड़ऽ-फुलायवला बाड़क प्रभेद विशेषकें **बरा/बरबड़ा** कहल जाइत छैक।

चरखी : बाड़सँ बढ़ौरकें पृथक् करबाक उपकरणकें **चरखी/चर्खी** कहल जाइत छैक। बढ़ौरकें पृथक् करबाक क्रिया **पेड़ब/ओटब/औंटब/औंटाइ** कहल जाइत अछि।

चरखीक आधारभूत चाकर काठकें **पीढ़ा/पीढ़ी/पिढ़िया** कहल जाइत छैक। पीढ़ाक मध्यमे ठोकल काठ जकरा पैरसँ दाबि देने चलबऽ काल पीढ़ा हिलडुल नहि करैत अछि, से **माझा/मज्झा/मझवा** कहल जाइत अछि। पीढ़ा पर उर्ध्वाधार ठोकल दुइ गोट समानान्तर काष्ठदंडकें **खूटा/खुट्टा/खूटी/खूँटी/खुट्टी/खुटरी** कहल जाइत छैक। खुटरीक उपरका भागमे नीचा-ऊपर लागल दुइ गोट बेलनाकार क्षैतिज काष्ठकें **जाठि** कहल जाइत छैक। जाठि ओ खुट्टाकें सुसम्बद्ध करबाक हेतु ठोकल काठक छोट-छोट टुकड़ीकें **पच्चड़/पाचड़/पचड़ी/पच्ची** कहल जाइत छैक। निचला जाठिकें परित: नचयबाक हेतु ओकर एकटा छोरपर लागल चाकर काष्ठखंडकें **मकरी** कहल जाइत छैक। मकरी ओ जाठिकें सम्बद्ध करऽवला काठक कीलकें **किल्ली** कहल जाइत छैक। मकरीक निचला छेदमे पैसल काठ अथवा बाँसक टुकड़ी जकर सहायतासँ मकरीकें ऐंठल जाइत छैक, से **लागनि/हत्था** कहल जाइत अछि।

चरखी द्वारा पेड़ल बाड़क तूरवला भागक तन्तु सभकें **रेशा/फाहा** कहल जाइत छैक। एहिमे कीड़ा द्वारा खायल भाग, छोट-छोट बढ़ौर आदि सेहो रहैत छैक। एकरा सभकें **करकुट/कुरकुट** कहल जाइत छैक।

तूरकें चुटकीसँ नोंचि-नोंचि कऽ ओकर फाहा सभकें पृथक् करबाक ओ विजातीय पदार्थ सभकें पृथक् करबाक क्रिया **तुमब/तूनब** होइत अछि।

आइकालिह बढ़ौर रहित विभिन्न प्रकारक तूर सभ आयातित होइत अछि। किछु आयातित तूर सभक नाम **बरदा/बरदाहा/बरदाही, नवसारी/नवसारिल, देवकपास, पहल, कमल, खाधी, कच्ची खाधी, डारापीन, स्टिपिन, शिल्पी** आदि अछि। ई सभ अत्यन्त गस्सल, पैघ ओ चौखूट पिण्डक रूपमे आयातित होइत अछि। एहि पिंडकें **गेठिया/गाँठ/गट्ठर** कहल जाइत छैक।

तूनल तूरक फाहा सभकें खूब पृथक्-पृथक् करबाक क्रिया **धूनब** होइत अछि। धुनबाक काज जाहि उपकरणसँ होइत अछि से **धुनकी/धनुकी/धुनैठ/धुनहट/फटका/फटकी** कहल जाइत छैक। ई बाँसक फट्ठीक धनुषाकार मोड़ल उपकरण थिक जकर दुनू छोर मूँजक डोरी अथवा ताँतिसँ जोड़ल रहैत छैक। डोरी अथवा ताँतिकें तूनल तूरक सम्पर्कमे राखि ताँतिक कम्पन द्वारा तूरक रेशा सभकें पृथक्कृत कयल जाइछ। ताँतिपर आघात करबाक हेतु अग्रभागमे गोल पिंडसँ युक्त काष्ठक करीब एक बीत नाम उपकरणकें **गुल्ली/लारन/लारनि** कहल जाइत छैक। तूर धुनला पर निकलल गन्दगीयुक्त बेकार तूरकें **छीजन** कहल जाइत छैक।

जातीय व्यवसायक रूपमे धुनबाक काज धुनिआ जातिक पारम्परिक व्यवसाय थिक, मुदा आब धुनिआ सभ मात्र सीड़क-तोशक आदिक हेतु धुनाइ करैत अछि। आब धुनबाक काज अधिकांशत: मशीनें द्वारा होइत अछि, जाहिसँ धूनल तूरक आयताकार पिंड भेटैत छैक।

धूनल तूरक कने-कने मात्रा लऽ ओकरा चारि आङुर चाकर ओ एक बीत नाम पिंडक रूपमे कोनो समतल आधार पर राखल जाइत छैक। पश्चाति एकटा खरहीक टुकड़ी ओकर एक कातमे धऽ बामा हाथें तूरकें ओहिपर लपेटि बेलनाकार दंडक स्वरूप दऽ देल जाइत छैक। खरहीक टुकड़ीकें **पिरसीर/पिढ़सरि (प्रि.)/पीरबटनी** तथा तूरक दंडकें **पीर/पिउर/पूनी** कहल जाइत छैक। दस-पन्द्रहटा पूनीक थक्कीकें **मुट्ठी** कहल जाइत छैक।

पीरसँ सूत कटबाक हेतु टकुरी एवं चरखा नामक यंत्रक व्यवहार होइछ।

टकुरी : जनउ आदिक हेतु अत्यन्त पातर सूत कटबाक यंत्रविशेष **टकुरी/तकुली/तकुरी** कहल जाइत अछि। एकर आधारमे लागल पुरनका पैसाक आकृतिक काठक टुकड़ीकें **पैनी** कहल जाइत छैक। पैनीक मध्यमे छेद रहैत छैक।

एहि छेदमे पेनीसँ एक इंच नीचा धरि करीब छओ इंचक बाँसक कमची पैसल रहैत छैक। एकरा **कामि/काइम** कहल जाइत छैक।

टकुरीकेँ माटिक जाहि गोल बासनमे राखि कऽ नचाओल जाइत छैक, ओकरा **टकुरकट्टा/माली** कहल जाइत छैक। टकुरीक सम्पर्कमे पिउरकेँ राखि टकुरीकेँ नचौला उत्तर तूरक पातर तन्तु क्रमशः बनल चल जाइत छैक। एहि तन्तुकेँ **सूत** कहल जाइत छैक। पिउरकेँ स्थिर कऽ सूतमे देल गेल मेढ़केँ **बट/बाँट** कहल जाइत छैक।

चरखा : व्यावसायिक स्तर पर सूत बनयबाक पारम्परिक यंत्रकेँ **चरखा/चर्खा** कहल जाइत छैक। आकृतिक अनुसार चरखाक अनेक प्रभेद होइत अछि- (क) बिहार चरखा (ख) किसान चरखा (ग) पेटी चरखा एवं (घ) अम्बर चरखा

बिहार चरखाक आधारकेँ **पीढ़ा/पिढ़िया** कहल जाइत छैक। एहिमे एकटा चौखूट काठक दूनू छोरपर बाम ओ दहिन कात क्रमशः छोट ओ पैघ चौखूट काठक दूटा टुकड़ी उदग्र ठोकल रहैत छैक। पिढ़ियाक मध्य भागक काठकेँ **माँझा/मँझवा/मनझाइ** (चि.) कहल जाइत छैक। पिढ़ियाक दहिन भागवला काठ पर लकड़ीक दूटा करीब एक फुट नाम खुट्टा ठोकल रहैत छैक जकर उपरका भागमे कान बनल रहैत छैक। दुनू कान पर अवलम्बित लकड़ी अथवा लोहक ठोस छड़केँ **धूरा/धूरी/जाठ/जाठि/जाइठ/लाठ/लाइठ/लाठि** कहल जाइत छैक। धूरा एकटा ढोल सन बेलनाकार काष्ठखंडक केन्द्रमे कयल छिद्रमे पैसल रहैत छैक। एहि काष्ठखंडकेँ **ताम/तामा/ताम्बा** कहल जाइत छैक। तामाक दुनू कात सटल दूटा लकड़ीक पहिया सदृश वस्तुकेँ **मोढ़ा/मुढ़िया/मोढ़िया/मूड़ी/मूँड़** कहल जाइत छैक। मूड़ीसँ सटाकऽ देल पंखीक सदृश काठक चाकर ओ पातर दंडक समूहकेँ **पुती/पुत्ती** कहल जाइत छैक। दुनू कातक पुत्तीक उपरका भाग रस्सी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। एहि रस्सीकेँ **अमाल्ह/अमाल** कहल जाइत छैक।

धूरीक अग्रभागमे लागल करीब एक बीत नाम ओ चारि आङुर चाकर काठक टुकड़ीकेँ **मकड़ी (री)/नाक** कहल जाइत छैक। नाकक निचला कोरमे कयल छेदमे बाँस अथवा काठक दण्ड दऽ परितः नचौला पर धूरी ओ पुत्ती नाचऽ लगैत छैक। नचयबाक दंडकेँ **लारन/लारनि** कहल जाइत छैक।

पिढ़ियाक बाम भागक अपेक्षाकृत छोट काष्ठखंडपर तीनटा छोट-छोट खुटरी ठोकल रहैत छैक। मध्यवर्ती अपेक्षाकृत पातर खुटरीकेँ **मलकाठी** कहल जाइत छैक। दुनू कातवला खुटरीक उपरका भागक छेदमे चम्मचक आकृतिक दूटा काठक पातर टुकड़ी ठोकल रहैत छैक। एकरा **चमरख** कहल जाइत छैक। पूर्वमे ई चामक होइत छल।

दुनू चमरखक छेदमे दुनू कात नोंकवला लोहाक पातर छड़ लागल रहैत छैक जकरा **टाकु/टकुआ** कहल जाइत छैक। टाकुक अग्रभागमे छोरसँ करीब पाँच इंचक दूरीपर लागल काठ अथवा लोहक पैसाक आकृतिक गोल वस्तुकेँ **पेनी/चकती** कहल जाइत छैक। दूनू चमरखक पृष्ठभागमे टाकुमे लागल नड़कटिक फोंफीकेँ **छुच्छी** कहल जाइत छैक।

अमाल्ह ओ टाकुक मध्य भागमे लागल बँटल सूतकेँ **माल/माल्ह** कहल जाइछ। माल्हकेँ चिक्कन ओ कठोर करबाक हेतु ओकर उपरका भागमे रौदमे पाकल कड़ू तेल ओ धूमनक मिश्रणक लेपसँ **मजैया/सोंटाइ** कयल जाइत छैक। एहि मिश्रणकेँ **राल** कहल जाइत छैक।

मकरीकेँ परितः घुमयबाक क्रिया **ऐंठब** होइत अछि। मकरी ऐंठलासँ माल्ह टाकुकेँ नचबैत छैक आ ओकर सम्पर्कमे पीरकेँ लगाय बामा हाथेँ क्रमशः ऊपर दिस लऽ गेने सूतक पातर-पातर तन्तु बनैत छैक जकरा टाकुकेँ उनटा मुहेँ नचाय ओहिमे लपेटि लेल जाइत छैक। सूतकेँ टाकु पर लपेटबाक क्रिया **घोंटब** होइत अछि। सूतसँ भरल टाकुकेँ **कुकरी/कुकुरी/कुखरी** कहल जाइत छैक।

किसान चरखा पारम्परिक चरखाक विकसित रूप थिक। एकरा **अरमदा चक्र/यरवदा चक्र/सरञ्जी चरखा** सेहो कहल जाइत छैक। एकरा आधारकेँ **पिढ़िया,** बड़का पहियाकेँ **गति** आ टाकु लगयबाक दंडकेँ **पट्टी** कहल जाइत छैक। पट्टीक उपरका भागमे दुनू कात दू-दूटा छेद ऊपर-नीचा रहैत छैक, जाहिमे ताँतिक डोरी लगाओल रहैत छैक। ई टाकुकेँ काठक साक्षात् घर्षणसँ बचबैत छैक।

एहि चरखाक टाकुक बीचमे घिरनी रहैत छैक, जे मुख ओ गतिमे लागल माल्ह द्वारा नचाओल जाइत छैक। घिरनीक दुनू कात लागल चामक टुकड़ीकेँ **चमरख** कहल जाइत छैक। मुखक उपरका भागमे लागल त्रिकोण काठक टुकड़ी जकर सहायतासँ ओकरा परितः नचाओल जाइत छैक, से मूठ कहल जाइत अछि।

एहि चरखाक आधारमे ठोकल टुकड़ी जाहिपर चलबैत काल पैर घऽ देने चरखा हिल-डोल नहि करैछ, से **पौदान/पावदान/पैतान** कहल जाइत छैक। सूत उघारबामे सहायक लौहवलय लागल पातर काठक छोट सन दंडकेँ **सूतरिंग** कहल जाइत छैक।

पेटी चरखाक समस्त व्यवस्था किसाने चरखा जकाँ होइत छैक मुदा एकर समस्त उपकरणकेँ छोट सन पेटीमे बन्द करबाक व्यवस्था रहैत छैक।

अम्बर चरखा आधुनिक चरखा थिक। एकर अधिकांश भाग लोहक होइत छैक तथा एकर विभिन्न अंगसँ सम्बद्ध शब्दावली अंग्रेजीसँ सोझे गृहीत अथवा

रूपान्तरित अछि। एहि चरखामे सुविधा ओ उत्पादनक दृष्टिसँ नित्य नव परिवर्तन होइत रहबाक कारणेँ एकर अंगक नामावली पारिभाषिक स्वरूप पकड़बासँ पहिनहि विलुप्त भऽ जाइत रहल अछि।

एहि चरखामे खरखर सतहसँ युक्त लोहक बेलन परसँ जाइत तूरकेँ दाब दऽ नचौलापर सूत बनैत छैक। एहि चरखा द्वारा पेड़बाक हेतु तूरक करीब चारि आङुर चाकर ओ एक हाथ आयताकार पिंडकेँ **पाट/पट्टा** कहल जाइत छैक। पट्टा बनयबाक हेतु काठक उपरका भागमे खुलल आयताकार छोट सन बकसा ओ ओकर भीतरी भागमे अँटबा योग्य दाबक उपकरणक प्रयोजन होइत छैक। एकरा **परेसपट्टी** (अं. प्रेस + सं. पट्टिका) कहल जाइत छैक।

पट्टाकेँ पेड़लासँ तूरक मोट सूत बहराइत छैक जकरा पूनी कहल जाइत छैक। पूनीकेँ पेड़ला उत्तर अपेक्षाकृत मोट सूत सदृश वस्तुकेँ **बट** कहल जाइत छैक। बटकेँ पेड़ला उत्तर प्राप्त सूतकेँ **फैनल** (अं. फाइनल) कहल जाइत छैक।

आइकाल्हि मशीन द्वारा तैयार तूरक करीब दू आङुर चाकर लच्छी भेटैत छैक जकरा **पट्टी** कहल जाइत छैक। पट्टीसँ पूनी तैयार करबाक हेतु व्यवहृत अम्बर चरखाक प्रभेदकेँ **बेलनी** कहल जाइत छैक।

अम्बर चरखाक खरखर पृष्ठवला तीन गोट बेलनकेँ परस्पर आबद्ध लोहक दाँतदार चक्का सबहिक सहायतासँ गतिशील कराओल जाइत छैक। एहिमे बड़का चक्काकेँ **बड़ीदाँत** ओ छोटका चक्काकेँ **छोटी दाँत** कहल जाइत छैक। चक्का सभकेँ गतिमान करयबाक हेतु लोहक जाहि छड़केँ परित: घुमाओल जाइत अछि तकर पकड़उवला भागकेँ **हैंडिल/मूठ** कहल जाइत छैक। तूर पेड़बाक हेतु लोहक खरखर पृष्ठवला बेलन सभकेँ **कटाइ मुड़िया** कहल जाइत छैक। तूर पर दबाव देबाक हेतु रबरक गोल बेलनाकार टुकड़ी सभकेँ **रबड़ी गुटका** कहल जाइत छैक।

अम्बर चरखामे सूत पेनीमे घिरनी लागल काठक करीब एक बीत नाम पातर बेलनाकार दंड सभपर लेपटाइत जाइत छैक। एहि दंड सभकेँ **बाबिन/बॉबिन** कहल जाइत छैक। बॉबिन लोहक जाहि दंडपर नचैत अछि से **हारबर** कहल जाइत अछि। बॉबिनकेँ नचयबाक हेतु माल्ह लागल काठक घिरनी सदृश चक्का सभकेँ **गतिचक्र** कहल जाइत छैक। माल्हकेँ नीचा दिस दबने रहबाक हेतु ओहिपर देल प्लास्टिकक घिरनी सदृश चक्का सभकेँ **दबाब चक्र** कहल जाइत छैक। बॉबिन सभ लोहक एकटा चदराक वृत्ताकार खाली भागमे नचैत अछि। एहि चदराकेँ **चूड़ीपट्टी** कहल जाइत छैक। चूड़ीपट्टीक दूनू छोरपरक लोहक दंडकेँ **भरनी खंभा** कहल जाइत छैक। चूड़ीपट्टीकेँ निरन्तर ऊपर-नीचा होइत रहबाक हेतु ओहिसँ लागल एकटा छड़ पानक आकृतिक एकटा चक्का पर नचैत अछि जकरा **पानचक्र** कहल जाइत छैक।

चूड़ीपट्टीक वृत्ताकार खाली भागक परित: सूतकेँ फँसाकऽ नचयबाक हेतु कोर पर लागल अँकुसी सदृश लोहक वस्तुकेँ **टेभलर** कहल जाइत छैक। पेड़ल तूर टेभलर पर निश्चित स्थानसँ खसयबाक हेतु जाहि लोहक वलयसँ होइत खसाओल जाइत अछि से **सूतकड़ी** कहल जाइत छैक। पूनीक हेतु व्यवहृत एहने वलयकेँ **पूनीकड़ी** कहल जाइत छैक।

बॉबिन अथवा टाकुपरसँ सूत उतारबाक हेतु काठक चौखूट उपकरणकेँ **परता/परेता** कहल जाइत छैक। एही कार्यक हेतु समान आकृतिक दूटा एककेन्द्रीय काष्ठक टुकड़ाकेँ जकर छोर पर करीब चारि आङुर ठाढ़ दंड ठोकल रहैत छैक, एकटा फोंफीपर अवलम्बित कऽ फोंफीकेँ एकटा काठक आधारक अग्रभागमे ठोकल लोहक कील पर नचाओल जाइत छैक। एहि उपकरणकेँ **लटबा/नटबा/नटइ** कहल जाइत छैक। सूतक एक लपेट एक गजक बराबर होइछ जकरा **घोरइ/धत्ता/धत्ती** कहल जाइत छैक। छओ सय चालीस घोरइ सूत भऽ गेला पर सूतक समूहकेँ लटबा पर सँ उतारि, ऐंठि, लपेटि कऽ जौड़क आकृतिमे मोड़ि देल जाइत छैक। एहि वस्तुकेँ **गुण्डी/लच्छी/लत्ती/किरची/गरछा/गुरछा/पोला/पोलिया/पोली** कहल जाइत छैक।

पातर सूतक गुण्डी हल्लुक आ मोट सूतक भारी होइत छैक। समान मोटाइक सूतमे एक किलो सूतमे जतेक संख्यक गुण्डी चढ़ैत छैक, ओहि संख्याकेँ सूतक नम्बर कहल जाइत छैक। पातर ओ मोट सूतक गुण्डीकेँ पृथक्-पृथक् छँटबाक हेतु नम्बरक व्यवहार होइत अछि।

सूतक ऐब-गुण : सूतमे अवगुण्ठित अनावश्यक तूर अथवा तूरमे स्थित विजातीय पदार्थक अंशकेँ **फुटका/फुटकी** कहल जाइत छैक। अधिक बाँट पड़ल सूतक जौड़क आकृतिमे अवगुण्ठित भागकेँ **घुरचा/घुरची/घुरछा/घुरछी** कहल जाइत छैक। घुरछी लगबाक क्रिया **घुरचिआयब/घुरछिआयब** होइछ। सूतक अन्तिम भाग **ओर/छोर** कहल जाइत अछि। दूटा ओरकेँ जोड़लासँ बनल संयुक्त अंशकेँ **गाँठ/गीरह/गिट्ठह/जोड़/जोड़न** कहल जाइत छैक। पैघ गीरहकेँ **ढेका/ढेकरी** कहल जाइत छैक। सूतक ओरक भुतिआकऽ लटपटा जयबाक क्रिया **ओझरायब** होइत अछि। ओझरायल सूतक लटपटीक समाप्तिक क्रिया **सोझरायब** होइत अछि।

वस्त्रक बिनाइमे लागल पटवा ओ जोलहा

सूतसँ वस्त्र तैयार करब हिन्दूमे पटवा ओ मुसलमानमे जोलहा जातिक पारम्परिक व्यवासाय थिक।

आधार सामग्री : वस्त्र तैयार करबाक हेतु मुख्य आधार सामग्री सूत होइत अछि आ आनुषंगिक सामग्री माँड़,मटियातेल, कड़ू तेल ओ रंग होइत अछि।

औजार एवं प्रक्रिया : सूतसँ आरम्भ कऽ वस्त्र बिनबाक एकटा लम्बा प्रक्रिया छैक जाहिमे अनेक औजार ओ क्रियाक प्रयोग होइत छैक। पटवा ओ जोलहाक किछु औजार ओ प्रक्रिया समान छैक आ किछुमे भिन्नता देखल जाइत अछि। एहिना दुनूक शब्दावलीमे सेहो भिन्नता देखल जाइत अछि। भिन्न औजार ओ क्रियाक हेतु भिन्न शब्द तँ छैके, समानो क्रिया ओ औजारक हेतु भिन्न शब्दावली छैक। वस्त्र बिनबाक प्रक्रियाक आरंभ होइत अछि तानी बनयबासँ।

तानी : वस्त्र तैयार करबाकहेतु नामानामी सूतकेँ **तान/ताना/तानी** कहल जाइत छैक।

पटवा तानीक सूतक गरछीकेँ बाँससँ बनल एकटा शंकुक आकृतिक औजार पर चढ़बैत अछि। एकरा **चरखी** कहल जाइत छैक। चरखीक मध्यवर्ती दण्डकेँ **लाड़ी** कहल जाइत छैक। एकर निचला ओ उपरका भागक बाँसक फट्ठीक बनल पंखीक सदृश आकृतिकेँ **पेखना** कहल जाइत छैक। उपरका ओ निचला पेखना सभक बाह्य भाग अनेक उदग्र फट्ठीसँ सम्बद्ध रहैत छैक जाहिपर गरछीकेँ खोलि कऽ राखल जाइत छैक। चरखीक लाड़ी माटिक थिम्हाक मध्यमे गाड़ल बाँसक फोंफी पर नचैत छैक। फोंफी युक्त थिम्हाकेँ **थाना/थौना/थओना** कहल जाइत छैक।

चरखीपर चढ़ल सूतक ओर पकड़ि एकटा थओनाविहीन छोट चरखीक आकृतिक औजारकेँ नचाय ओहिपर सूत उतारल जाइत अछि। एहि औजारकेँ **लपेटन/लटबा/लटबा/ परेता** कहल जाइत छैक। लपेटन पर उतारल करीब बीत भरि व्यासक सूतक लच्छीकेँ **छिन्ना/छीना** कहल जाइत छैक।

पटवा छिन्नाकेँ माँड़ अथवा पातर घोरमे डुबाकऽ मलैत अछि। एकरा **मँड़िआयब** कहल जाइत छैक

मँड़िआयल छिन्नाक सूतकेँ तानाक हेतु पसारबाक क्रिया **पुराइ/नुरपुराइ/पूरी तानब/नुड़र तानब/नुड़र पूरब/तानी तानब/तान पूरब/ताना पूरब** होइत अछि। तानाक हेतु पसारल सूतकेँ **नुड़र/नूरी/ताना** कहल जाइत छैक।

पुराइक हेतु छिन्नाकेँ एकटा छोट सन चरखीपर चढ़ाओल जाइत छैक जकरा **नुरपुरिया चरखी** कहल जाइत छैक। एकर निचला भागमे लागल वंशदंड जकर एकटा छोरपर एहि चरखीक लाड़ी लागल रहैत छैक, हलका कहल जाइत छैक। हलकाक दोसर छोरक उनरल भागमे काँचक चूड़ीक टुकड़ी लागल रहैत छैक। एहि परसँ होइत सूत चरखी परसँ उघरैत जाइत छैक।

पुराइ मैदानमे एक सीधमे गाड़ल अनेक वंशदंड पर कयल जाइत अछि। आरम्भ ओ अन्तमे बाँसक दू फाँकमे चीड़ल फट्ठा गाड़ल जाइत छैक। एहि दुनू

फट्ठाकेँ **खूटा/ खुट्टा/खुट्टी/खूँटी** कहल जाइत छैक। दुनू खूटाक दू तीन हाथक अन्तर पर जोड़ संख्यामे अनेक क्रमवर्ती फट्ठी सभ गाड़ल रहैत छैक, जकरा सभकेँ **सर/सरका** (क्रि.) कहल जाइत छैक। प्रत्येक तेसर सरमे सूतकेँ भारक कारणेँ खसबासँ बचयबाक हेतु फट्ठीक तिर्यक् सोङर लगाओल जाइत छैक। एहि सोङर सभकेँ **मंझा/मांझा** कहल जाइत छैक। सर, खूँटा आदिकेँ जमीनमे गाड़बाक हेतु ऊपरसँ आघात करबाक हेतु व्यवहृत भारी काष्ठदंडकेँ **मुङरा/मोङरा** कहल जाइत छैक।

सूतकेँ खूटासँ आरम्भ कऽ प्रत्येक क्रमवर्ती सरपर दिशा परिवर्तन करैत पसारल जाइत छैक। एक खूटासँ दोसर खूटा धरि पसारल सूतक एकटा लपेटकेँ **खेबा** कहल जाइत छैक।

आरंभिक ओ अन्तिम खेबा वस्त्रक कोर पर रहैत अछि तेँ ओहिमे दुन्ना सूत देल जाइत छैक आ ओकरा बाँटि देल जाइत छैक। सूतकेँ बँटबाक क्रिया **पागब** होइत अछि। पागल दुनू खेबाकेँ **किनार/किनारा/किनारी** कहल जाइत छैक।

आवश्यक संख्यामे खेबा पूरि गेलाक बाद सर ओ खूटी सभकेँ ठामहि उखारि कऽ सूतकेँ नीचा दिस खसा देल जाइत छैक। खसाओल सूतकेँ **जड़ाम** कहल जाइत छैक। जड़ामक प्रत्येक सर लग एक-एकटा अन्य फट्ठी पेसि देल जाइत छैक। एहि फट्ठी सभकेँ **चीबर/चीबरि** कहल जाइत छैक। सर ओ चीबर द्वारा सूतमे बनल रिक्त स्थानकेँ **बीह** कहल जाइत छैक।

दुनू खुट्टीमे एकटाकेँ हटाकऽ ओकर स्थानपर एकटा पातर फट्ठी पेसि देल जाइत छैक। एहि फट्ठीकेँ **काठी** कहल जाइत छैक। दोसर दिसुक खुट्टीकेँ सेहो निकालि लेल जाइत छैक। ओकर स्थानपर बाँसक लाठी सदृश दंड लगा देल जाइत छैक जकरा **सीनर** कहल जाइत छैक। चीबर, सीनर, सर ओ काठीसँ युक्त खसल सूतकेँ सेहो **जड़ाम** कहल जाइत छैक।

काठी ओ सीनरपर सूतकेँ चौड़ा-चौड़ी पसारबाक क्रिया **जड़ाम चीड़ब** होइत अछि। जड़ाम चिड़लाक बाद सीनरकेँ दूटा समानान्तर ठोकल खुट्टापर फँसाकऽ अवलम्बित कऽ देल जाइत छैक। काठीकेँ सूतक डोरीक सहायतासँ एकटा अन्य लाठी सदृश बाँसक दंडसँ सम्बद्ध कऽ देल जाइत छैक। एहि दंडकेँ सेहो **सीनर** कहल जाइत छैक। सूतक डोरीकेँ **पैसका** कहल जाइत छैक। पैसकासँ सम्बद्ध सीनरक पाछाँ करीब चारि हाथक दूरीपर एकटा खुट्टा गाड़ल जाइत छैक। सीनरक एक छोरपर रस्सी बान्हि खुट्टा होइत सीनरक दोसर छोरसँ सम्बद्ध कऽ टानल जाइछ। एहि रस्सीकेँ **उभनि/लेओज** कहल जाइत छैक। लेओजकेँ टनलासँ जड़ाम ऊपर दिस उठि जाइत छैक। तखन लेओजक दोसर छोर सीनरक दोसर दिस बान्हि देल

जाइत छैक। एही सीनरक नीचाँमे जड़ामकेँ ऊपर दिस टँगने रहबाक हेतु बाँसक एकटा कँच सेहो लगा देल जाइत छैक। एहि कँचकेँ **डोगरा** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **ठेंघनी/खसरैया/डाठा/ढाँठी** कहने छथि (बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ.-73)।

जड़ामक बीच-बीचमे स्थान-स्थानपर दूटा खुट्टापर अवलम्बित वंशदंड सभ नीचा दिससँ सूतक भार टढने रहबाक हेतु लगाओल जाइत छैक। एहि दंड-व्यवस्थाकेँ **टाँड़** कहल जाइत छैक।

पश्चात् बीचवला सूत सभकेँ सेहो चौड़ा-चौड़ी पसारि देल जाइत छैक आ सर ओ चीबर सभकेँ परस्पर निकटतर कऽ देल जाइत छैक। एहिसँ प्रत्येक सर ओ चीबरक बीच नीचा-ऊपरवला सूतसँ बनल गुनचिह्न स्पष्ट भऽ जाइत छैक। एहि गुनचिह्नक आकृतिपर एक दोसरापर चढ़ल सूतकेँ पृथक् करबाक हेतु ओहिपर बाँसक अत्यन्त पातर करचीक टुकड़ी चलाओल जाइत छैक जकरा **पाचन/पचलक्खा** कहल जाइत छैक।

एहि तरहेँ रौदमे सुखबाक हेतु पसारल सूतकेँ **तासन** कहल जाइत छैक। तासन तैयार भेलाक बाद सूतक फुटका-फुटकीकेँ झाड़बाक हेतु ओकरा एकटा औजारसँ रगड़ल जाइत छैक। एकरा **कूच/कूँच/कुच्ची/मजना/माँजा** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। एहिमे हाथसँ पकड़बाक भाग काठक उदग्र दंड रहैत छैक आ झाड़बाक तन्तु **खसखस, कतरा, उस्सीर** नामक घासक जड़िक होइत छैक जे सूतक रस्सी द्वारा गसि कऽ बान्हल रहैत छैक। कूचमे कड़ू तेल लगाय ओकरा सूतपर सहारा दैत रगड़ल जाइत छैक। कूच चलाकऽ सूतकेँ साफ करबाक क्रिया **मजिया/मँजाइ/पाइ करब** होइत अछि। **आइ-पाइ/पाइबितरी/पाइबिथरी/दूधा पाइ/ताना पाइ** करबाक अर्थ मँजाइ ओ वस्त्र बनयबाक अन्य प्रक्रिया अछि। (**प्रसिद्ध कहबी:- जोलहाके आइ पाइ, चमड़ा के बिहान। आइ-पाइ आ दोइया पाइक उपलाक्षणिक अर्थ निरर्थक काजमे एम्हर -ओम्हर लागल रहब अछि।**)

मँजाइक बाद तासनपर वस्त्रक नापीक अनुसार देल चेन्ह सभकेँ **दाग/दागी/दग्गी** कहल जाइत छैक। दागी देबाक क्रिया **आँकब** होइत अछि। आँकबाक हेतु घोरल **गोबरक** प्रयोग कयल जाइत छैक।

रौदमे तासनक सूत सूखि गेलाक बाद लेओज,पैसका ओ पैसकामे लागल सीनरकेँ खोलि लेल जाइत छैक। सभटा खुट्टा ओ टाँड़केँ उखारि लेल जाइत छैक। सूतकेँ ठामहि खसा चटाइक आकृतिमे लपटि लेल जाइत छैक। सूतकेँ एहि तरहेँ मोड़बाक क्रिया **समरब** होइत अछि।

समरि कऽ आनल सूतक छोरपरक काठी निकालि प्रत्येक सूतक नीचा-ऊपरवला भागकेँ एकटा खिड़की सदृश औजारक छिद्रमे लगा देल जाइत छैक

आ पाछू दिस गीरह मारि देल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **राछ** कहल जाइत छैक। ई करीब चारि-पाँच हाथ नाम आ चारि आङ्गुर चाकर होइत छैक। एहिमे थोड़े-थोड़े स्थान छोड़ि कऽ बाँसक मोट सीकीक दंड सभ लागल रहैत छैक। दंड सभक निचला ओ उपरका भाग सूत द्वारा दृढ़ बन्धित रहैत छैक। राछमे सूत पैसयबाक हेतु करचीक कलमक सदृश औजारकेँ **सुतारी** कहल जाइत छैक।

राछ लगौलाक बाद सूतकेँ फेर पसारि देल जाइत छैक। आब सूतकेँ एकटा काठक गोल दंडपर लपेटल जाइत छैक। एकरा **लरदी/नरदी** कहल जाइत छैक। लरदीक दुनू कात दूटा छोट खुट्टा गाड़ल जाइत छैक। बाम दिसुक कानविहीन खुट्टा ओकर एकटा छोरक ओठक काज करैत छैक आ दहिन दिसुक खुट्टाक कान ओकरा स्वत: आगू-पाछू घुमबासँ रोकैत छैक। लरदीक एक स्थानपर नामा-नामी नाला बनल रहैत छैक जकरा **घाइ** कहल जाइत छैक। घाइपर राछक पछिला सूत फँसाकऽ एकटा काठीसँ दाबि देल जाइत छैक।

लरदीक दहिना कातक खाटक पौआक सदृश छेदमे एकटा नोंखगर फट्ठी लगाकऽ ओकरा परित: नचाओल जाइत छैक। एहि फट्ठीकेँ **हथकील** कहल जाइत छैक।

लरदीमे सूत लपेटैत काल राछकेँ क्रमश: आगू दिस घुसका कऽ सूतकेँ **फड़िआओल** जाइत छैक आ अन्तिम दूटा सर ओ चीबरकेँ छोड़ि सभटा सर ओ चीबर क्रमश: निकालि लेल जाइत छैक। दू-तीन हाथ सूत लरदीपर लपेटि लेलाक बाद लरदीपर सूतक तरमे एकटा कऽ सर पैसि देल जाइत छैक जे सूतक लपेटकेँ कठोर कयने रहैत छैक। एहि सर सभकेँ **जूआ** कहल जाइत छैक। लरदीपर लपेटल सूतक दुनू कोरपर कपड़ाक जोड़ लपेटि देल जाइत छैक जे सूतकेँ छिड़िअयबासँ बचबैत छैक। एहि जोड़केँ **धज्जी** कहल जाइत छैक।

लरदीपर सूत लपेटैत काल सूतक संख्याकेँ पुन: निश्चित कऽ लेल जाइत छैक। आवश्यकतासँ अधिक तानी रहलापर सूत निकालि लेल जाइत छैक आ कम रहलापर सूत धऽ देल जाइत छैक। एहि अतिरिक्त सूतक तानीकेँ **बाइट** कहल जाइत छैक।

क्रमवर्ती सूतकेँ नीचा-ऊपर रखबाक व्यवस्थाकेँ **बय** कहल जाइत छैक। सूतमे बय लगयबाक क्रिया **बयभरी/बय भरब** होइत अछि। बयक संख्या दुइ होइत छैक । बयक हेतु बाँटल सूतक उपयोग होइत छैक। एकरा **बँटुआ सूत** कहल जाइत छैक। बयभरीक हेतु बँटुआ सूतकेँ एकटा चरखीपर चढ़ाओल जाइत छैक आ लरदीक दोसर छोरवला भागकेँ खुट्टा द्वारा जमीनसँ कने ऊँच उठाकऽ राखल जाइत छैक। बँटुआ सूतमे क्रमवर्ती सूतकेँ फँसाय-फँसाय बयभरी कयल जाइत छैक। बयभरीक

क्रममे निचला ओ उपरका सूतकेँ पृथक्-पृथक् रखबाक हेतु सूतमे सर ओ चौबरक स्थानपर दू फाँकिमे चीड़ल बाँससँ बनल औजारक उपयोग होइत छैक। एकरा **सतास/छिटकिल** कहल जाइत छैक। बयक बिनाइ करबाक औजारकेँ **बतरा** कहल जाइत छैक। ई करीब एक बीत नाम ओ चारि आङुर चाकर चिक्कन काष्ठफलक होइत अछि जकर पृष्ठवर्ती छेदमे एकटा करीब पाँच-छौ फीटक सूतक रस्सी पेसल रहैत छैक। एहि रस्सी द्वारा बीनल बयक उपरका ओ निचला भागमे एक-एकटा मोट ओ चाकर तथा एक-एकटा पातर ओ गोल फट्ठी पेसल जाइत छैक। चाकर ओ मोट फट्ठीकेँ **कण्डा** तथा पातर ओ गोल फट्ठीकेँ **सीक** कहल जाइत छैक। दूनू बयमे एक-एक जोड़ **सीक** ओ कण्डाक आवश्यकता होइत छैक।

राछ आ बय लागल लरदीपर लपेटल तानीकेँ **साहित** कहल जाइत छैक जे करघापर बिनबाक हेतु चढ़ाओल जाइत अछि।

जोलहाक तानी करबाक प्रक्रिया पटबासँ कोन रूपमे भिन्न होइत अछि, सेहो देखब आवश्यक अछि ।

जोलहा तानी करबाक हेतु सूतक गरछीकेँ खोलि मौंड़िआ लैत अछि। मौंड़िआयल सूतकेँ चरखीपर राखि चरखाक टाकुमे लागल बाँस अथवा काठक नली पर उतारैत अछि। तानीक हेतु अपेक्षाकृत पैघ नलीक उपयोग होइत छैक, जकरा **लल्ला/लारा/लऽड़ा** कहल जाइत छैक। सूतविहीन लल्लाकेँ **छुच्छा** कहल जाइत छैक।

लल्लाकेँ लोहक एकटा तारमे पेसल जाइछ जकर एकटा छोरपर लाहक गोल पिंड लागल रहैत छैक आ दोसर छोर एक पोर करचीक पातर फोंफीमे घुसिआओल रहैत छैक। नूरी तनबाक हेतु प्रयुक्त एहि औजारकेँ **खूड़ा/खूँड़ा** कहल जाइत छैक।

नूरी तनबाक हेतु जोलहाकेँ तीनटा खूटी आ अनेक सरक प्रयोजन होइत छैक। दूटा खूटी करीब दू हाथक दूरीपर समानान्तर गाड़ल जाइत छैक आ तेसर एहि दूनूक मध्यवर्ती भागमे दूरपर गाड़ल जाइत छैक। दूरवला खूटी ओ आरम्भवला दूनू समानान्तर खूटीक बीच दू पंक्तिमे अनेक सर गाड़ल जाइत छैक। दूनू सामानान्तर खूटीक निकटवर्ती दुइ गोट सरकेँ **छुटिया/छिटकी (ग्रि.)/डोरीक सर (ग्रि.)** कहल जाइछ। दूनू समानान्तर खूटीसँ आरम्भ कऽ सूतकेँ क्रमवर्ती सर पर विपरीत दिशामे लपेटल जाइत छैक, मुदा आगूवला खूटीमे सूत मात्र पृष्ठे भागमे लपेटल जाइत छैक।

सर ओ खुटियेपर तानी सूखि गेलाक बाद प्रत्येक सर लग नीचा-ऊपरवला सूतकेँ विभाजक एकटा पातर फट्ठी लगाओल जाइत छैक। एहि फट्ठी ओ सरक उपरका छोर रस्सी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। सूतकेँ नीचा-ऊपर होमऽसँ बचयबाक एहि

उपकरणकेँ **भाँज/सुतरी/ बन्हका** कहल जाइत छैक। भाँज लगाओल सूतकेँ गोलियाकऽ मोड़ि लेल जाइत छैक। एहि मोड़ल सूतक पिंडकेँ **भेड़ी** कहल जाइत छैक। भेड़ीमे राछ ओ बय लगयबाक हेतु ओकरा एकटा आयताकार फर्मापर कसल जाइत छैक, जकरा **बयभंजा** कहल जाइत छैक। बयभंजापर कसल सूतक अन्तिम छोरपर खूटाक स्थानमे लागल बाँसक लाठी सदृश उपकरणकेँ **भरनौठा** कहल जाइत छैक। भरनौठाक समानान्तर सूतक चौड़ा-चौड़ी लागल सरकेँ **सिरार/सिरारा/सिरारि** कहल जाइत छैक। नीचा-ऊपरवला सूतक विभाजक दंड सभकेँ **अतराओन** कहल जाइत छैक। बय बिनबाक बतराकेँ जोलहा **बयभरा** कहैत अछि। जोलहाक बयमे कण्डाक स्थानपर लागल काठक पातर दंडकेँ **बयसर** कहल जाइत छैक। सीकक स्थानमे लागल मोट रसीकेँ **जिरैं** कहल जाइत छैक। जिरेंकेँ बाँसक जाहि फोँफीक सहायतासँ बयमे लगाओल जाइत छैक ओकरा **तिरीं/तिरैं** कहल जाइत छैक। बयक सूतकेँ विभाजित सूतक मध्य दऽ लऽ जयबाक हेतु व्यवहृत करचीक पैघ सूच्याकार औजारकेँ **सिकड़ी** कहल जाइत छैक।

आधुनिक करघामे तानाक हेतु सूतकेँ लकड़ीक एकटा फोंक बेलनाकार डिब्बा पर लपेटल जाइत छैक। एकरा **ड्राम** कहल जाइत छैक। ड्रामपर सूत लपेटबाक हेतु लल्ला सभकेँ एकटा खिड़कीक सदृश काष्ठाधारपर लटकाओल जाइत छैक जकरा **फर्मा** कहल जाइत छैक। लल्लाक सूतक छोर राछ सदृश औजारक छिद्र होइत नचैत ड्रामपर लपेटिकऽ तानीक सूत तैयार कयल जाइत छैक। पश्चात् तानीमे बय ओ राछ लगाकऽ बिनाइ कयल जाइत छैक।

भरनी

कपड़ा बिनबाक हेतु चौड़ा-चौड़ी सूतकेँ **भरनी/बानि/बाना/बानी** कहल जाइत छैक। भरनीक हेतु जोलहा ओ पटबा दूनू सूतकेँ बाँस अथवा काठक फोंफी पर चरखा ओ चरखीक सहायतासँ उतारैत अछि। भरनीक हेतु अपेक्षाकृत छोट फोंफीक व्यवहार होइत छैक जकरा **खाली/खलिया/छुच्छी** कहल जाइत छैक। सूत भरल छुच्छीकेँ **नल्ली/नली/नऽड़ी/ लऽड़ी/लल्ली** कहल जाइत छैक।

करघा

वस्त्र बिनबाक मुख्य यंत्रकेँ **करघा/ताना/हाथताना/हथकरघा** कहल जाइछ। पटबाक करघाकेँ **फिटलुम/पिटलुन/ताना** कहल जाइत छैक। जोलहाक तानाकेँ **भाँजवाला ताना** कहल जाइत छैक।

पटबाक करघा

पटबाक करघाक पाछूवला भागमे करीब तीन हाथ ऊँच दूटा मोट लकड़ीक खुट्टा जमीनमे गाड़ल रहैत छैक। एहि दूनू खुट्टाकेँ **सुरहा** कहल जाइत छैक।

सुरहाक उपरका भागमे क्षैतिज ठोकल काठकें **चलान** कहल जाइत छैक। चलानमे रस्सीक सहायतासँ लटकैत पातर फट्ठीकें **सीक** कहल जाइत छैक। सीकमे थोड़-थोड़ दूरी पर पैसल पंखीक आकृतिक बत्तीकें **लोचनी/नोचनी/नचनी** कहल जाइत छैक। एकर दूनू छोरसँ लटकैत रस्सी दूनू बयक उपरका सीक ओ कण्डामे बान्हल रहैत छैक। निचला सीक ओ कण्डामे बान्हल भारी ओ चौखूट काष्ठदंडकें **पौदान/पुसलमान** कहल जाइत छैक। पुसलमान रस्सी द्वारा करघाक खाधिमे लागल दूटा बाँसक टेँटाक अग्रभागमे बान्हल रहैत छैक। एहि दूनू टेँटाकें **गोडन्टा** कहल जाइछ। दूनू गोडन्टाक दोसर छोर खाधिमे गाड़ल खूटीक कानमे कयल छेदमे लागल कीलमे पैसल रहैत छैक। खाधिवला खूटीकें **पतालखूटी/पातालखूटी** कहल जाइत छैक।

दुनू सुरहाक अग्रभागमे साहित राखल रहैत छैक। साहित लरदीमे बान्हल रस्सीक सहायतासँ जमीनसँ ऊपर उठाकऽ राखल जाइत छैक। साहितमे लागल राछक निचला भाग एकटा काष्ठदंडक उपरका भागक खाधिमे लागल रहैत छैक। एहि काष्ठदंडकें **पलस्तर** कहल जाइत छैक आ एहिमे बनल नालाकें **झरी** कहल जाइत छैक। राछक उपरका भाग पलस्तरक समानान्तर काष्ठखंडक निचला भागक झरीमे लागल रहैत छैक। एहि काष्ठखंडकें **हत्था** कहल जाइत छैक। पलस्तरक दूनू छोर पर राछसँ हटिकऽ बनल दुइ गोट खुलल बकसाक सदृश आकृतिकें **घर/घार/बक्सा** कहल जाइत छैक। घरक उपरका भागमे लागल काठक छोट सन चौखूट टुकड़ीकें **बन्दर** कहल जाइत छैक। एकर निचला भागमे नीचा दिस मोट चाम लागल रहैत छैक। चामसँ रस्सी जोड़ल रहैत छैक जे लीभर व्यवस्था द्वारा पटाक आगूमे लटकैत काठक एकटा छोट सन टुकड़ीसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि टुकड़ीकें **लोल/लोला** कहल जाइत छैक। लोलाकें नीचा-ऊपर कयने बन्दर आगू-पाछू घुसकैत छैक।

पलस्तर, राछ ओ हत्थाक समानान्तर दूटा काष्ठफलक ठोकल रहैत छैक। सबसँ उपरका काठ सुरहामे लम्बवत् ठोकल बत्तापर लटकैत रहैत छैक। करघाक पलस्तर ओ हत्थावला भागकें सेहो **ताना/तानी** कहल जाइत छैक। एहिमे नामानामी लकड़ी सभकें सम्बद्ध करबाक कम चाकर तकथा सभकें **बाँता/बत्ता** कहल जाइत छैक।

करघामे काठक एकटा नोंखगर औजार भरनीक सूतकें एम्हर-ओम्हर दौड़बैत अछि। एहि औजारकें **माकू** कहल जाइत छैक। माकूक आकृति पेनीविहीन नाओक सदृश होइत छैक। एकर दूनू नोंकगर लौह अग्रभागकें **लोल** कहल जाइत छैक। एकर भीतरी भागमे लागल लोहक कील जाहिमे भरनीक नऽड़ी लगाओल जाइत छैक, से **टकुआ/तिरीं/तिरी** कहल जाइत छैक। नऽड़ीसँ सूत बाहर होयबाक माकूक

पार्श्ववर्ती छेदकें **हड़बा/हाड़ी** कहल जाइत छैक। हाड़ीक छेदमे भरनीक सूत पैसयबाक हेतु प्रयुक्त काँटीकें **सुतारी** कहल जाइत छैक।

पटवा कपड़ा बुनबाक हेतु जाहि खाधिमे बैसैत अछि ओकरा **खड्डा** कहल जाइत छैक। ओकरा आगाँ राखल जाहि लरदीपर ओ बुनल कपड़ाकें लपेटैत अछि, तकरा **पेटलरदी** कहल जाइत छैक। पेटलरदीकें अवलम्ब देनिहार दूनू कातक छोट-छोट खुट्टाकें **बिसकर्मा** कहल जाइत छैक। पेटलरदीक दहिना कातक छेदमे घऽ फट्ठीक जाहि नोंखगर टुकड़ीसँ ओकरा नचाओल जाइत छैक, से **झिक्का** कहल जाइत छैक।

बुनाइत कपड़ाक अग्रभागकें तनने रखबाक हेतु अग्रभागमे काँटी लागल दूटा फट्ठीसँ बनल औजारकें **कटहन** कहल जाइत छैक। दूनू फट्ठीक दोसर छोर एकटा रस्सीसँ सम्बद्ध रहैत छैक तथा दूनू फट्ठीक बीच दूनू कात दूटा सूतक रस्सीक वलय लागल रहैत छैक।

जोलहाक करघा

भाँजवाला तानाक खाधि जाहिमे जोलहा बैसैत अछि से **करगह/करिगह** कहल जाइत अछि। एहिमे पेटलरदीकें **बीम/बीमा/बेमा/चौपत/लपेटन** कहल जाइत छैक। बीमामे कपड़ा लपेटब शुरू करबाक हेतु ओकर नामानामी खाधिमे जाहि लकड़ीक टुकड़ीसँ कपड़ाक छोरकें फँसाकऽ दाबि देल जाइत छैक, से **चिहुट/छिटकी** कहल जाइत अछि। बीमा जाहि दूटा खुट्टा पर अवलम्बित रहैत छैक ताहिमे बाम भागवलाकें **बघला/बमैला/कँधेला** (ग्रि.)/ **बँयारी** (ग्रि.) कहल जाइत छैक आ दहिन भागवलाकें **जिहला/जिहेला/जिभेला/ गाली खूँटा** कहल जाइत छैक।

करिगहक मध्य भागक पार्श्वमे गाड़ल दुइ गोट मोट खाम्हकें **खुट्टा** कहल जाइत अछि। दूनू खुट्टापर ठोकल क्षैतिज काष्ठखंडकें **बल्ला/धचान** (**ग्रि.**) /**धचानाः**(ग्रि.)/**अकासी** (ग्रि.)/**उपरकर**(ग्रि.) कहल जाइत अछि। बल्लाक नीचामे लागल काठक बेलनाकार दंड जकर सहायतासँ बयकें नीचा -ऊपर कयल जाइत अछि से **रूल/रोल/रोला/रोलर** कहल जाइत अछि।

दूनू खुट्टाक आगू दिस गाड़ल दुइ गोट छोट-छोट खुट्टाकें **खरको खूँटा** कहल जाइत अछि। खरको खूटा पर देल मोट बाँसकें **खरकूटी/खरकौट/खरकौटी** कहल जाइत छैक। तानीक अगिला भाग अनेक खतयुक्त काठक दंडपर चाकर कऽ पसारल रहैत अछि। एहि दंडकें **पसार/पोसार/पौसार** कहल जाइत अछि। पौसारक दूनू छोरपर लागल रस्सी करघाक अग्रभागमे गाड़ल खुट्टापर दऽ होइत जोलहाक दहिन भागमे गाड़ल खुट्टासँ बान्हल रहैत छैक। अग्रभागक खुट्टाकें **सरकौनीके खूटी**

कहल जाइत अछि। जोलहाक दहिन भागक खुट्टाकेँ **डोरबन्हा के खूटा/डरकसना/डोरकसना/कनकिल्ली** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

तानीक अतिरिक्त भागकेँ ऊँच स्थानपर टाँगि देल जाइत छैक। ओहि लपेटल भागकेँ **टँगना/टँगनी** कहल जाइत छैक। टँगनीपर सूत करघाक अग्रभागमे देल काठक बेलनाकार दंडक तर दऽ होइत ऊपर जाइत अछि। एकरा **लरदा** कहल जाइत छैक। ई डोरबन्हाक खूटाक स्थानमे कोनो-कोनो करघामे लगाओल जाइत छैक। पसारल तानीक क्रमवर्ती सूतकेँ पृथक्-पृथक् करबाक हेतु सूतक बीचमे घुसिआओल लोहक पातर छड़क युगलकेँ **बिधनी** कहल जाइत छैक। एही कार्यक हेतु प्रयुक्त सरक युगलकेँ **अतरान/अतरौन/ अतराओन/बान्ह** कहल जाइत छैक।

एहि करघाक बयकेँ **झाँप** सेहो कहल जाइत अछि। एकर बससरसँ एक-एकटा पोसार लटकैत रहैत छैक, जकर सम्बन्ध रस्सी द्वारा काठक गोल टुकड़ीसँ रहैत छैक। रस्सीकेँ **जोता** कहल जाइत छैक। काठक गोल टुकड़ीकेँ **पावदान/पौतान/पौदान/पैडल** कहल जाइत छैक। एहिमे पैरक अऊँठा फँसाकऽ बय केँ क्रमशः नीचा-ऊपर कऽ भरनीक सूत पैसयबाक हेतु रिक्त स्थान बनाओल जाइत छैक। एहि रिक्त स्थानकेँ **बम** कहल जाइत छैक।

जोलहा माकूक हेतु **ढरकी/फिरकी/माकुल/माकूल/कपरबिन्नी/कपरनी**(ग्रि.)/ **शेटल** शब्दक व्यवहार करैत अछि। माकूलक भीतरवला लोहाक टकुकेँ **बीड़** कहल जाइत छैक। बन्दरकेँ **घुटरू/मेरी/मेढ़ी/गुड़की** सेहो कहल जाइत छैक। घुटरूकेँ गति प्रदान करऽवला लोलाकेँ **मुठ/मुट्ठी/मुठिया** कहल जाइत छैक। राछक उपरका काष्ठदंडकेँ जोलहा **हथा/हत्था/हाथर/हथरस/तनकर/उपरौटी** कहैत अछि। हत्थाकेँ पकड़बाक हेतु ओकर मध्य भागमे ठोकल काठकेँ **महदेबा/महादेबा** कहल जाइत छैक। हत्थाकेँ तानामे नीक जकाँ सम्बद्ध करबाक हेतु प्रयुक्त पच्चड़केँ **चेपनी** कहल जाइत छैक। राछक नीचावाला लकड़ीकेँ **तरौटी/तरी/सबजी** सेहो कहल जाइत अछि। कटइनकेँ जोलहा **पन्निख / पन्नी** (ग्रि.) कहैत अछि।

उत्पादन

करघा पर तानी ओ भरनीकेँ सम्बद्ध कऽ कपड़ा बिनबाक व्यवसाय **बिनाइ/बुनाइ/बिनकराइ** कहल जाइत अछि। बिनबाक क्रममे बुननिहार दहिना ओ बामा पैरसँ पौदानकेँ क्रमशः दाबि बयक सहायतासँ क्रमवर्ती सूतकेँ नीचा-ऊपर करैत रहैत अछि। दहिना हाथ मूठकेँ नीचा-ऊपर कऽ बंदर द्वारा माकूमे लागल भरनीक सूतकेँ बाम-दहिन दौड़बैत अछि आ बामा हाथ हत्थाकेँ आगू-पाछू घीचि भरनीक सूतकेँ परस्पर सटबैत रहैत अछि।

बिनबाक क्रममे माकूक बाहरी भागमे मटिया तेल लेपि ओकरा पलस्तर पर सुविधापूर्वक आवगमनक योग्य बनाओल जाइत छैक। राछक पछिला भागक तानीमे कड़ू तेलक अल्प मात्रा लगाय ओकरा राछमे **छिछलाह** बनाओल जाइत छैक जाहिसँ राछक सींकी सूतकेँ रगड़सँ तोड़ैत नहि छैक।

तानी अथवा भरनीक हेतु रँगीन सूत तैयार करबाक हेतु सूतकेँ गर्म पानिमे औंटि साफ पानिमे धोखारि सुखाकऽ गर्म पानिमे घोरल रँगमे डुबाओल जाइत छैक।

विभिन्न प्रक्रियाक क्रममे सूतक जे अंश तोड़िकऽ फेकि देल जाइत छैक से **छीजन** कहल जाइत छैक। करघापर चढ़ाओल सम्पूर्ण तानीसँ बनल कपड़ाकेँ **थान** कहल जाइत छैक। थानक चौड़ाइकेँ **पाट/डरिया** कहल जाइत छैक। थानमे दूटा कपड़ाक जोड़पर भरनी रहित भागकेँ **छीन/छीना/छिल्ला** कहल जाइत छैक। तानी अथवा भरनीमे बिनबाक दोषेँ सूतक अभावसँ युक्त प्रदेशकेँ **उचिला** कहल जाइत छैक। तानी समाप्त होयबाकाल पटबाक लरदीपर बचल सूत जकरा बीनल नहि जा सकैत छैक, काटि कऽ फेकि देल जाइत छैक। एहि सूतकेँ **दस्सी** कहल जाइत छैक। जोलहाक तानीक अन्तिम प्रदेश जाहिमे दोसर तानीक सूतकेँ जोड़ि देल जाइत छैक, से **गेठुआ** कहल जाइत अछि। कपड़ाकेँ चौखूट मोड़ि कऽ छोट करबाक क्रिया **चौपतब/चौपेतब/तह लगायब/तहिआयब** होइत अछि। तहिआयल कपड़ाक प्रत्येक मोड़ल अंशकेँ **तह** कहल जाइत छैक। दू तहमे मोड़बाक क्रिया **दोबरायब** होइत अछि।

कपड़ा बिनबाक मजदूरीकेँ **बिनाइ/बुनाइ**(प.)/**बाना/बानी** (जो.) कहल जाइत छैक।

परस्पर आबद्ध तानी ओ भरनीसँ बनल वस्तुकेँ **वस्त्र/बस्तर/कपड़ा/नूआ** कहल जाइत छैक। कपड़ाक हेतु प्राचीन शब्द **बास/बसन/अम्बर/चीर/कापर/कापल** (कीर्तिलता, डा. बाबूरामसक्सेना, पृ. 24-काहु कापल काहु घोल । काहु सम्बल देल बोल ॥) छल। अपेक्षाकृत छोट वस्त्रखण्डक हेतु प्राचीन शब्द **नेत** छल। विभिन्न प्रकार वस्त्रक हेतु **नुआ-बस्तर/कपड़ा-लत्ता** शब्दक व्यवहार होइत अछि।

कपासक सूतसँ बनल वस्त्रकेँ **सूती** कहल जाइछ। एकहरा सूतक तानी ओ भरनीसँ बनल वस्त्रकेँ **एकसुत्ती** आ दोहरा सूतक तानी ओ भरनीसँ बनल वस्त्रकेँ **दुसुत्ती** कहल जाइत छैक।

विरल तानी ओ भरनीसँ बनल वस्त्रकेँ **फसरल/खिसरल** कहल जाइत छैक। अल्प तनावसँ कपड़ाक तानी अथवा भरनीक स्थान विशेषपर टूटि जयबाक क्रिया **मसकब/फसकब** होइत अछि। दृढ़ सम्बद्ध तानी ओ भरनीसँ बनल वस्त्रकेँ **गफ/गफ्फस/गस्सल** कहल जाइत छैक। अत्यधिक फसरल कपड़ाकेँ

जलफाँफी/झलफाँफी कहल जाइत छैक। परदा करबामे अक्षम अत्यन्त पातर कपड़ाकेँ **झलझल/झलझली** कहल जाइत छैक। झलझल जो जलफाँफी कपड़ाकेँ **दँतखिसोट/दँतखिसोड़/गिदरनोंच/कुकुरभुक्की** (मि.भा.को.) कहल जाइत अछि।

सादा अथवा एक रंगसँ युक्त कपड़ाकेँ **पॉपलीन/पलीन कहल** जाइत छैक। अनेक रंगक तानी ओ भरनीसँ बनल चौकोर आकृतिसँ युक्त कपड़ाकेँ **चरखाना/चेक** कहल जाइत छैक। सरल रैखिक आकृतिसँ युक्त कपड़ाकेँ **डोरिया** कहल जाइत छैक। विभिन्न प्रकारक फूल-पत्ती अंकित कपड़ाकेँ **छींट** कहल जाइत छैक। करघा परसँ उतारलाक बाद बिनु धोअल कपड़ाकेँ **कोरा** कहल जाइत छैक।

कपड़ाक चौड़ाइक दुनू कातवला भागकेँ **कोर/किनार/किनारा/किनारी** कहल जाइत छैक। चौड़ाइक अन्तिम भागक भिन्न रंगक रेखाकेँ सेहो कोर कहल जाइत छैक। चाकर कोरकेँ **पाढ़ि** कहल जाइत छैक। कपड़ाक मध्यवर्ती भागक हेतु **जमीन** शब्दक व्यवहार होइत छैक।

कपड़ाक नाप गजमे होइछ। ई तीन फुटक मानक नाप होइत अछि। एकर सोलहम भागकेँ **गीरह** कहल जाइत छैक। **आङुर, दुट्ठी, बीत, निमुट्ठ** हाथ, हाथ आदि पारम्परिक एकाइ सेहो कपड़ाक नापमे प्रयुक्त होइत अछि। कपड़ाक चौड़ाइक हेतु **अर्ज/अरज** शब्दक व्यवहार होइत छैक।

मीलक सूत द्वारा जोलहाक बनाओल वस्त्रकेँ **जोलही/जोलहउ/जोलहंडी** कहल जाइत छैक। चरखाक काटल सूत द्वारा हथकरघापर बीनल वस्त्रकेँ **खाधी/खद्धर** कहल जाइत छैक। गज भरि अर्जवला कपड़ाक प्रभेद विशेषकेँ **गजी/गज्जी/फरगज्जी** कहल जाइछ। मोट वस्त्रक प्रभेद विशेष **मटिआ/मोटिआ** होइत अछि। कपड़ाकेँ वस्त्रबद्ध कऽ बेचल जाइत छल। वस्त्रबद्ध समष्टिकेँ **मोटा** कहल जाइत छैक। एहि आधार पर सभटा जोलहउ वस्त्रकेँ **मटिया/मोटिआ** कहल जाइत छल। अत्यन्त अधलाह वस्त्रकेँ **खद्धी** कहल जाइत अछि।

कपड़ाक उपयोग मुख्यतः पहिरबाक, ओढ़बाक ओ ओछयबाक हेतु होइत छैक। पुरुषक पहिरबाक करीब अढ़ाइ हाथ चाकर अधोवस्त्रकेँ **धोती** कहल जाइत छैक। लम्बाइक भिन्नताक आधारपर ई **सतहत्थी, अठहत्थी, नओहत्थी** ओ **दसहत्थी** प्रभेदक होइत अछि। स्त्रीक एही प्रकारक अधोवस्त्रकेँ **साड़ी/नूआ/नुंगा/लुंगा/चीर** कहल जाइत छैक। एकर कोर अपेक्षाकृत बेसी चाकर होइत छैक। लम्बाइक अनुसार ई **नओहत्थी, दसहत्थी, बारहहत्थी** ओ **बिसहत्थी** प्रभेदक होइत अछि।

खूब मोट धोती-साड़ीक एकटा प्रभेद **मनगिलाट** कहल जाइत अछि। पातर सूतक धोती-साड़ीकेँ **नन्हसुत** कहल जाइत छैक। मोटगरे सूतक कम चाकर साड़ीक एकटा प्रभेद **फरदी/फरजी** होइत अछि। कम चाकर धोती ओ साड़ीकेँ **छनकट**

कहल जाइत छैक। आवश्यकतासँ कम लम्बाइक परिधानकेँ **ओछ** कहल जाइत छैक। सामान्यसँ अधिक चाकर कोरवला साड़ीकेँ **कोरदार/कोरगर** कहल जाइत छैक। पाढ़िसँ युक्त साड़ीकेँ **पढ़िया** कहल जाइत छैक। किनारपर पाढ़िक रंगक संख्या अथवा समानान्तर पाढ़ि सदृश बुनाइक संख्याक आधार पर साड़ीक **दुपढ़िया/दोपढ़िया, तिनपढ़िया, पचपढ़िया** आदि प्रभेद होइत अछि। धोती-साड़ी आदिक एक प्रतिकेँ **खण्ड** आ दू प्रतिकेँ **जोड़/जोड़ा** कहल जाइत छैक। मुसलमान पुरुषलोकनिक करीब चारि हाथ नाम अधोवस्त्रकेँ **लुङ्गी** कहल जाइत छैक।

ओढ़बाक हेतु करीब चारि हाथ चाकर ओ छओ हाथ नाम उत्तरीय वस्त्रकेँ **चद्दर/चादर/चादरि/चद्दरि/ओढ़ना** कहल जाइत छैक। पातर ओ छोट चद्दरिकेँ **तौनी/तिउनी** (मि.) कहल जाइत छैक। मोट तौनीकेँ **तौलिया** कहल जाइत छैक। देह-हाथ पोछबाक हेतु छोट तौनीकेँ **अंगोछा/अंगपोछ/अंगपोछा/गमछा/साफी** कहल जाइत छैक। छोट गमछाकेँ **गमछी/अंगौछी** कहल जाइत छैक।

बिछाओनक ऊपरसँ देबाक करीब पाँच हाथ नाम ओ तीन हाथ चाकर वस्त्र **जाजिम/पलिया/उलेंच/उलोंच** कहल जाइत अछि।

तूर-सूतसँ सम्बद्ध पटबाक अन्य व्यवसाय

सूतसँ वस्त्र बिनबाक अतिरिक्त **पटवा/पटहार/पटुआ** (**विद्यापति, मित्र-मुजमदार, पद सं. 204**) सूतक अनेक सामग्री बनयबाक एवं सूतमे विभिन्न गहनाकेँ गँथबाक व्यवसाय सेहो करैत अछि।

आधार सामग्री : पटवाक मुख्य आधार सामग्री विभिन्न प्रकारक सूत होइत अछि। बाँटल पातर सूतकेँ बँटुआ **सूत/ताग/तागा/धाग/धागा** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत मोट धागाक उज्जर रंगक एकटा प्रभेद **ठर्रा** कहल जाइत अछि। हाथक तर्जनीसँ कनगुरिया पर्यन्त चारू आङुरक समूहकेँ **चाङुर** कहल जाइत छैक। चाङुरपर सूतकेँ भिड़िअयबाक क्रिया **चङुरायब** होइत अछि। चङुरायल सूतक गोलाकेँ **चङुरा** कहल जाइत छैक। गोल कऽ भिड़ियाओल तागकेँ **गोलीताग** कहल जाइत छैक। सनसँ बनल सूतकेँ **पटुआ** कहल जाइत छैक। मशीन पर बाँटल मोट सूतक एकटा प्रभेद **आलदुन/आलदूना** कहल जाइत अछि। आलदूनाक मशीने द्वारा गोल भिड़िआओल लच्छीकेँ **पोला/पोली/पोलिया/नरी/लच्छी** कहल जाइत छैक। मशीन द्वारा अनेक सूत्रकेँ परस्पर गुम्फित कऽ बनल चाकर ओ मोट तागक एकटा प्रभेद **फीता** कहल जाइत अछि। एकहरा सूतकेँ **लर** कहल जाइत छैक।

गँथाइमे तूरक सेहो व्यवहार होइत छैक। शोभाक हेतु धातुक अत्यन्त पातर चकमक कागत सदृश वस्तुकेँ **पन्नी/डाक** कहल जाइत छैक।

मजगूतीक हेतु गँथाइमे तामक अत्यन्त पातर रंगीन तारक व्यवहार होइत छैक, जकरा **अंटा/अंटी/बादला** कहल जाइत छैक। खूब नमरऽवला अंटाकेँ **सलमा** कहल जाइत छैक। चानी जकाँ चमकैत फटुआक तारकेँ **जिक** कहल जाइत छैक। चानीक पानि चढ़ाओल तामक तारकेँ **किरमिची** कहल जाइत छैक। आभूषण गँथबामे व्यवहृत सोन-चानीक अथवा तत्सदृश अत्यन्त मेही तारकेँ **कलबत्तू/कलाबत्तू** कहल जाइत छैक।

तूर-सूत आदिकेँ रङबाक हेतु विविध प्रकारक रंगक उपयोग होइत अछि।

औजार : पटवाक औजारमे सर्वप्रमुख अछि ओकर **थूनी/थून्ही**। एहिमे लकड़ीक एकटा भारी गोल अथवा चौखूट आधारक मध्यभागमे करीब तीन आङुर व्यासक एक हाथ ठाढ़ बेलनाकार काष्ठदंड रहैत छैक। एकरा **ओस्ताद/महोदेओ** सेहो कहल जाइत छैक।

थूनीक उपरका भागमे लागल आ लौहवलयमे निकलल आँकुस सदृश वस्तुकेँ **अँकुड़ा/अँकुसी** कहल जाइत छैक।

आइकाल्हि थूनी ओ अँकुड़ाक स्थानपर उपरका भागमे आँकुस बनल लोहाक छड़केँ जमीनमे गाड़ि व्यवहार कयल जाइत छैक। एकरा **गऽज/सर/सरसा** कहल जाइत छैक।

सूतकेँ स्थानविशेषपर परित: आवृत करबाक क्रिया **मढ़ब** होइछ। मढ़बाक हेतु काठक पातर दंडक अग्रभागमे करीब छओ आङुरक दूरी पर लागल काठक दुइ गोट छोट-छोट पहियासँ बनल औजारकेँ **लटाइ/लटाँइ/चरक/चरख/अण्टी** कहल जाइत छैक।

अतिरिक्त तागकेँ कटबाक हेतु लोहक गुनचिह्नक औजारकेँ **कैंची** कहल जाइत छैक। एकरा अउँठा ओ अन्य आङुर द्वारा पकड़बाक हेतु वलयाकार मूठ बनल रहैत छैक। सूतक गोलपिंडकेँ ससारबाक हेतु व्यवहृत लोहाक अंग्रेजीक **भी** अक्षरक आकृतिक औजारकेँ **चूटा/चूँटा/चुट्टा/चिमटा/चिमटी** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : पटवाक व्यवसाय प्रसाधन सामग्रीसँ सम्बद्ध अछि। ओकर उत्पादनकेँ दु वर्गमे बाँटल जा सकैत छैक- (क) सूतक परिधान आ (ख) सूतमे गाँथल गहना।

सूतक परिधानमे पुरुषलोकनिक डाँड़मे पहिरबाक वलयाकार वस्तुकेँ **डाँरा/डराडोर/ डराडोरि/हरिला/हरिड़ा** कहल जाइत छैक। वयस्कक डराडोरिकेँ **सयानी** आ नेनाकक डराडोरिकेँ **बचकानी** कहल जाइत छैक। डराडोरिक छोरपर चारू कात सूतसँ मढ़ल गोल आकृतिकेँ **मुन्ही** कहल जाइत छैक। धियापुताक डराडोरिमे मुन्हीक स्थानपर रंगीन तूरक गोल आकृति लटकैत रहैत छैक। एहि

आकृतिकेँ **फुदना** कहल जाइत छैक। छोट फुदनाकेँ **फुदनी** कहल जाइत छैक। छठिहारक दिन धियापुताक हाथ, पैर ओ डाँड़मे पहिरयबाक सूतक वलयकेँ **छठिहारी डोरा** कहल जाइत छैक।

देवोत्सृष्ट गरामे पहिरबाक सूत्रनिर्मित परिधानकेँ **बद्धी** कहल जाइत छैक। एकर जोड़वला भागपर फुदना बनल रहैत छैक। प्रसूताक हेतु पीयर रंगक फुदना रहित बद्धीकेँ **गेठा (प्रसिद्ध कहबी:- पेटमे बेटा पेठारमे गेठा)** कहल जाइत छैक। कारी रंगक सूतकेँ गुहिकऽ बनाओल बद्धीक विशेष प्रभेदकेँ **गंडा** कहल जाइत छैक। डोराक ऊपर कपड़ा ओ तूर लपेटि सूत मेढ़ि कऽ बनाओल पैघ आ गोल पिंडकेँ **घुण्डी** कहल जाइत छैक। घुण्डीयुक्त बद्धीक विशेष प्रभेदकेँ **पटनिआ बद्धी** कहल जाइत छैक।

स्त्रीलोकनिक खोपा बन्हबाक फुदना लागल डोरीकेँ **ऐंठा/नारा/खोपबन्ह/ थोपी** कहल जाइत छैक। केशक जुट्टीमे लगयबाक तीनटा लरसँ युक्त खोपबन्हक विशेष प्रभेदकेँ **चोटी** कहल जाइत छैक। साड़ीक कोंचाकेँ बन्हबाक हेतु दुनू कात फुदना लागल डोराकेँ **कोचबन/चोटबन** कहल जाइत छैक। विआहमे आम-महु विआहबाक हेतु व्यवहृत पीयर रंगक सूतकेँ **ताग-पात** कहल जाइत छैक। द्विरागमनक दिन पठयबाकाल व्यवहृत सिन्दूरक गद्दीकेँ बन्हबाक तागकेँ **डोर** कहल जाइत छैक। श्राद्धमे उज्जर रंगक तूरक फुदना लागल सूत जकरा शय्याक पौआमे बन्हबाक हेतु व्यवहृत कयल जाइछ, से **सेजबन** कहल जाइत छैक।

फोंढ़िला, पातर कपड़ा ओ तागसँ बनल माथ पर पहिरबाक विशिष्ट परिधानकेँ **पाग** कहल जाइत छैक। पाग पटवो बनबैत अछि आ माली, मुसलमान आदि अन्यो जाति। लाल रंगक पागकेँ **बियहुती पाग** कहल जाइत छैक। बियहुती पागक चारू कात लटकैत लर ओ फुदनायुक्त वस्तुकेँ **घुनस/घुनेस** कहल जाइत छैक। पागक अग्रभागकेँ **पेंच** कहल जाइत छैक। असवर्णक विआहमे प्रयुक्त शंकुक आकृतिक पैघ पाग सदृश वस्तुकेँ **मौड़** कहल जाइत छैक।

अनन्त चतुर्दशीमे बाँहिपर धारण करबाक चौदह गीरहसँ युक्त सूतक एकटा वस्तु पटवा बनबैत अछि। एकरा **अनन्त/अनन्ता** कहल जाइत छैक। तेरह गीरहसँ युक्त अनन्तकेँ **फनन्त/फनन्ता** कहल जाइत छैक। श्रावणी पूर्णिमामे हाथमे बन्हबाक हेतु प्रयुक्त रंगीन सूतक छोरपर रंगीन तूरक एकटा फुदना लागल वस्तुकेँ **राखी** कहल जाइत छैक। मोट सूतक बनल अनेक फुदनायुक्त वलयाकार राखीकेँ **राखा** कहल जाइत छैक।

भगवतीकेँ खोंइछ देबाक कपड़ाकेँ **अँचरी** कहल जाइत छैक। पटवा अँचरीक हेतु जे फुदना बनबैत अछि, तकरो **अँचरीये** कहल जाइत छैक।

सूतमे गाँथल गहना : विभिन्न प्रकारक गहनाकेँ धारण करबाक हेतु ओकरा सूतक वलयमे सम्बद्ध करबाक क्रिया **गाँथब** होइत अछि। गहनाकेँ सूतमे सम्बद्ध करबाक हेतु ओहिमे लागल सच्छिद्र अवयवकेँ **कोढ़ा/कोड़हा** कहल जाइत छैक। कोढ़ाक छेद जाहिमे गँथाइक सूत पेसल जाइत छैक से **घर** कहल जाइछ। सूत, कलबत्तू आदिकेँ परित: लगयबाक क्रिया **मेढ़ब** होइछ। मेढ़लासँ उत्पन्न आकृति **मेढ़ाइ** होइत अछि। मेढ़ाइ द्वारा आवद्ध स्थलकेँ **फंदा/छल्ला** कहल जाइत छैक। जिलेबीक आकृतिक फंदाकेँ **जिलेबिया फंदा** कहल जाइत छैक। साधारण फंदाक मेढ़ाइकेँ **पेचबान्ह** कहल जाइत छैक। सूतपर कपड़ाक टुकड़ी, तूर आदि परित: लेपटाय मेढ़ाइ कयला उत्तर बनल गोल पिंडकेँ **घुण्डी** कहल जाइत छैक। मध्यवर्ती सूतपर एम्हर-ओम्हर घुसकउवला घुण्डीकेँ **ससरघुंडी** कहल जाइत छैक। गर्दनिक मालाक मध्यवर्ती पैघ फुदनाकेँ **सुमेर/सुराही** कहल जाइत छैक।

पटबा सोन ओ चानीक विभिन्न गहना सभक गँथाइ करैत अछि। गरदनिमे पहिरबाक गहनामे **हैंकल/हँकल, असरफी, चौअन्नी, अठन्नी, मटरमाला, मरीचदाना, जुगनू, ढोलना, हलुमानी, सहोदरा, सुगरक दाँत, सौतिनिआ, जन्त्र, ताबीज, चाँद, नजरिया- गुजरिया, जितिया** आदि ओ हाथक गहनामे **अनंत/अनंता, शंखलाथी, बाजू, बिजौटा, बाँक, जहसन, तिनखंडी, पचखंडी** आदिक गँथाइ कयल जाइत छैक। **कोचबन** ओ **मनोरी** सेहो पटवे गँथैत अछि।

एकर अतिरिक्त पटबा **रीठा/रीठी** फलक बीजकेँ सूतमे गाँथि माला तैयार करैत अछि। एहि मालाकेँ **हैंठाक माला** कहल जाइत छैक। छोट हैंठाकेँ **हैंठी** कहल जाइत छैक। वैष्णवलोकनि तुलसी वृक्षक धड़केँ काटि सूतमे गँथाय कंठ लग धारण करैत छथि। एहि मालाकेँ **कंठी** कहल जाइत छैक। शैवलोकनि एकटा वृक्षविशेषक फड़सँ माला गँथाय धारण करैत छथि। एकरा **रूद्राक्ष/रूदराछ/रूदरांच/उदरांच** कहल जाइत छैक। आइकाल्हि पटबा सभ शीशा, प्लास्टिक, मूंगा, मोती आदिक अनेक आकृतिक सच्छिद्र टुकड़ीकेँ गाँथि **माला/हार** बनाकउ सेहो बेचैत अछि।

पटबाक व्यवसाय समइया होइत छैक। गहनाक गँथाइ लगनेटामे चलैत छैक। अन्य समयमे ओ शृंगार तथा अन्य उपयोगक विविध वस्तु सभ बेचैत अछि। एहन वस्तु सभमे केश थकरबाक काठ अथवा प्लास्टिकक दाँतदार वस्तु **कंघी/ककही/कड़घी**, पैघ कंघी **ककहा**,कतराक जड़िसँ बनल केश थकरबाक साधन **थकरी/थकरनी**; अत्यन्त पातर सूतसँ बनल केश गुहबाक वस्तु **बनारसी चोटी**; केश बन्हबाक करीब चारि आङ्गुर चाकर कपड़ाक टुकड़ी-**फीता/रीबन**; साबुन रखबाक पात्र-**सबुनदानी**; मुँह देखबाक शीशाक साधन-**अएना**; स्त्रीगणक माथक मध्यभागमे लगयबाक सोहागक चेन्ह-**सिन्दूर/सेनूर**; पुड़ियामे बान्हल सेनुर-**गद्दी**; विआहमे व्यवहृत

मटमैल सिन्दूर-**भुषणा सिन्दूर**; विआहेक हेतु व्यवहृत पीयर रंगक सिन्दूर-**पीपा सिन्दूर**; रक्तवर्णक सिन्दूरक प्रभेद विशेष-**अचीन सिन्दूर**; सिन्दुर घोरबाक काठक पैघ पात्र-**सिनुरघोरा/सिंघोरा**; सिन्दूर रखबाक काठक पात्र-**सिनुरदानी**; छोट सिनुरदानी-**कीया/कियौरी/सपरी**;ललाट पर सटबाक रंगीन वस्तु-**टिकुली**; सादा टिकुली-**बिन्दी/बिन्दिया**; गेन्हारीक बीया सदृश कपारपर सटबाक उज्जर वस्तु-**खुदिया**; खुदियाक संगे व्यवहृत छोट ओ चकचक वस्तु-**चमकी**; सिन्दुरदानक काल व्यवहृत काठक पातर ओ गोल वस्तु - **साँख**; सिन्दूरदानेमे व्यवहृत हाथी दाँतक पुरान पाइक सदृश छिद्रयुक्त वस्तु - **सुहेली/सोहगैली/सोहगीली**; पैर रङबाक आयातित रंग-**अलता/आलता**; नह रङबाक आयातित रंग-**नहरंगा**; सिलाइक हेतु लोहक पातर पासयुक्त औजार -**सुई/सुइया**; पोलावला डोरा-**आशापोला**; सुजनी सीबामे फूल काढ़बाक हेतु व्यवहृत पातर डोरा - **लक्खी/बाकुच**; दू वस्तुकेँ सम्बद्ध करबाक लोहक साधनविशेष **आलपीन**; चून रखबाक पात्र-**चुनरौटा/चुनहा**; चानन रगड़बाक गोल पाथर - **चनरौटा**; छोट चनरौटा - **चनरौटी**; छठि, रवि-शनि आदि पावनिमे अकोनक तूरसँ बनल छोट पापड़ सदृश वस्तु-**आरतक पात** आदि अछि।

रङरेज

कपड़ाकेँ रङबाक एवं ओहि पर विभिन्न प्रकारक फूलपत्ती छपबाक काज करउवला व्यवसायी जाति **रङरेज/रंगसाज** कहल जाइत अछि।

आधार सामग्री ओ औजार : रंगरेजक आधार सामग्री विभिन्न प्रकारक वस्त्र ओ रंग होइत अछि। नीक जकाँ चढ़ल रंगकेँ **गाढ़** कहल जाइत छैक ओ हल्का रंगकेँ **फिक्का** कहल जाइत छैक। जे रंग पानिक सम्पर्कमे धोखड़ि जाइत छैक ओकरा **कचिया** ओ जे नहि धोखड़ैत छैक ओकरा **पकिया** कहल जाइत छैक।

आइकालि विभिन्न रंगक आयातित चूर्णक उपयोग होइत अछि। **लाल, पीयर/पीरा, हरियर, नील, नारंगी** आदि किछु सामान्य रंग अछि। एक रंगक चूर्णकेँ दोसर रंगमे विशिष्ट अनुपातमे फेँटि अनेक प्रकारक रंगक निर्माण कयल जाइत अछि। पीयर रंग संयुत लाल रंगकेँ **केसरिया** कहल जाइत छैक। हल्का लाल रंग संयुत नील रंगकेँ **आसमानी** कहल जाइत छैक। बैंगन जकाँ नील संयुत लालरंगकेँ **बैंगनी/भाँटा** कहल जाइत छैक। पाकल जामुन जकाँ हल्का लाल संयुत कारी रंगकेँ **जमुनिआ** कहल जाइत छैक। चम्पाक फूल जकाँ पीताभ रंगकेँ **चम्पइ** कहल जाइत छैक। गुलाबक फूल जकाँ हल्का लाल रंगकेँ **गुलाबी** कहल जाइत छैक। कुसुमक फूलसँ तैयार रंगकेँ **कुसुम** कहल जाइत छैक। कमलक दल जकाँ हल्का लाल रंगकेँ **कमलपत्री** कहल जाइत छैक। चिनिआबदामक खोइंचा सदृश लालीवला रंगकेँ **बदामी** कहल जाइत छैक। कउथ जकाँ हल्का लाल रंगकेँ **कत्थी/कत्थइ** कहल

जाइत छैक। खूब गाढ़ लाल रंगक प्रभेद **आल** कहल जाइत छैक। गन्धक जकाँ पीयर वर्णकेँ **गन्हकी** कहल जाइत छैक। धानक पात जकाँ गाढ़ हरियर रंगकेँ **धानी** कहल जाइत छैक। सुग्गाक पाँखि जकाँ हरियर रंगकेँ **सुगापंखी** कहल जाइत छैक। हल्का कारी रंगकेँ **सिलेटी** कहल जाइत छैक। हल्का पीयर रंगकेँ **बसन्ती** कहल जाइत छैक। सिन्दूर जकाँ लाल रंग **सिन्दूरी** कहल जाइत छैक। गैरिक वर्णकेँ **गेरुआ** कहल जाइत छैक। हरियर संयुत नील वर्णकेँ **फिरोजी** कहल जाइत छैक। कटहरक को सदृश हल्का पीताभ रंगकेँ **कटहरिया/कठरिया** कहल जाइत छैक। सोन जकाँ पीयर रंगकेँ **सोनहुल/सोनहुला/सोनौला/सोनौली** कहल जाइत छैक। गहूम जकाँ अत्यन्त हल्लुक पीतवर्णकेँ **गहुमी/गेहुमी/गेहुआँ** कहल जाइत छैक। अत्यन्त हल्लुक हरियर रंगकेँ **अंगूरी** कहल जाइत छैक। प्याज जकाँ उज्जर संयुत गुलाबी रंगकेँ **प्याजी** कहल जाइत छैक। हल्का नारंगी रंगकेँ **सरबती** कहल जाइत छैक।

पानिमे **फिटकिरी, कास्टिक सोडा** आदिक संगे रंग घोरिकऽ साधारण रंग बनाओल जाइत अछि। पकिया करबाक हेतु घोरकेँ गर्म कऽ देल जाइत छैक। छापक हेतु रंगक चूर्णकेँ उज्जर रंगक एकटा लसगर पदार्थक संगे मिलाकऽ रंग तैयार कयल जाइत छैक। एहि लसगर पदार्थकेँ **लस्सा** कहल जाइत छैक।

रंग घोरबाक हेतु रंगरेजक गोल आकृतिक माटिक बासनकेँ **अथरा/नाद** कहल जाइत छैक। काठक एही आकृतिक बासनकेँ **कट्ठी/कटही/कठही** कहल जाइत छैक। आइकाल्हि एकर स्थानपर लोहक डंटी लागल बासनक सेहो व्यवहार होइछ जे **लोहिया/कड़ाही** कहल जाइत अछि। घोरल रंगकेँ औंटबाक हेतु एवं रखबाक हेतु रंगरेजक माटिक पैघ तौलाकेँ **माट/कूँड़** कहल जाइत छैक। गर्म रंगमे कपड़ाकेँ बोरबाक हेतु काठक दंडकेँ **डण्टी/लरना** कहल जाइत छैक।

कपड़ापर फुलपत्ती उखारबाक रंगरेजक काठ अथवा धातुक औजारकेँ **साँचा/ठप्पा/छापा** कहल जाइत छैक। छापा देबाक हेतु कपड़ाकेँ जाहि चौकी पर ओछाकऽ राखल जाइत छैक, ओकरा **अड्डा/अट्टा** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : रंगरेज जाहि रंगमे वस्त्रकेँ रँगैत अछि तदनुसार वस्त्रकेँ **ललका/ललकी, पियरका/पियरकी, हरियरका/हरियरकी, करियक्का/करिक्की/करियक्की, गुलबिआ, कुसुमी** आदि प्रभेदक कहल जाइत अछि।

हल्का लालीसँ युक्त वस्त्रकेँ **ललौन**, हल्का पीतवर्णसँ युक्त वस्त्रकेँ **पियरौन/पियरौंछ**, हल्का कारीवर्णसँ युक्त वस्त्रकेँ **करिछौंह/करिछौंह/करियौंछ** कहल जाइत छैक। अत्यन्त लाल वर्णक वस्त्रकेँ **लालरक्त/लालरक्कत/लालबुन्द/लालटेस/लालभुजुङ**, अत्यन्त हरियर वर्णक वस्त्रकेँ **हरियर कच्चन/हरियर कचोर**, अत्यन्त कारी रंगक वस्त्रकेँ **कारी खटखट/कारी खटोर**, अत्यन्त पीयर

रंगक वस्त्रकेँ **पीयर दहदह/पीयर दपदप** कहल जाइत अछि। जाहि वस्त्रकेँ रंग नीक जकाँ नहि पकड़ैत छैक, तकरा **भटरङ** कहल जाइत छैक। आंशिक रूपेँ पकड़ल रंगकेँ **चित्तिर-बित्तिर** कहल जाइत छैक। चित्तिर-बित्तिर रंगाइकेँ समरस करबाक हेतु कपड़ाकेँ रंगमे घुमा-घुमाकऽ डुबयबाक क्रिया **कचारब** होइछ। वस्त्रकेँ रंग संयुत करबाक क्रिया **रंगब/राङब** होइत अछि। विविध रंगसँ युक्त वस्त्रकेँ **चितकाबर/चितकबरा** कहल जाइत छैक। रंगमे नीक जकाँ डुबाकऽ राङल वस्त्रकेँ **कुण्डाबोर** कहल जाइत छैक।

वस्त्र पर साँचा द्वारा आकृति उखाड़बाक क्रिया **छापब** होइत छैक। उखड़ल आकृतिकेँ **छाप** कहल जाइत छैक। छापल वस्त्रकेँ **छपुआ** कहल जाइत छैक। वस्त्रक चारू कातक छोरपरक छापकेँ **किनार/किनारा/किनारी** कहल जाइत छैक। साड़ीक चौड़ाइक एक दिसुक किनारीक अतिरिक्त भागक छापकेँ **आञ्चर** कहल जाइत छैक। आञ्चरक भाग माथपर लेल जाइत छैक। चौड़ाइक दोसर छोर **डेढ़ी** कहल जाइत छैक। एकरा छापल नहि जाइत छैक। कपड़ाक मध्यभागमे देल छापकेँ **जाल** कहल जाइत छैक।

जाल अनेक प्रकारक होइत छैक आ जनरुचिक अनुरूप एहिमे नित्य नव परिवर्त्तन देखल जाइत छैक। तेँ ई सभ अपन पारिभाषिक स्वरूप धारण करबासँ पूर्वहि विलीन भऽ जाइत रहल अछि। ओना पानिक बून जकाँ छापकेँ **बुनका**, मटरक दानाक आकृतिक छापकेँ **मटरदाना**, दंतपंक्ति सदृश छापकेँ **दाँत**, पानक पातक आकृतिक छापकेँ **पान/पनमा**, रसगुल्लाक आकृतिक छापकेँ **रसगुल्ला**, ठकुआक आकृतिक छापकेँ **ठेकुआ**, तीनटा दलसँ युक्त फूलक छापकेँ **चिरतन**, विषमकोण समचतुर्भुजक आकृतिक छापकेँ **ठिकरी**, पानिक लहरिक सदृश वक्र रेखासँ युक्त छापकेँ **लहेरिया**, जंगल-झारक छापकेँ **जंगलाती** कहल जाइत छैक। छापयुक्त कपड़ाकेँ **छींट** कहल जाइत छैक।

कन्यालोकनिक ओढ़बाक पातर उत्तरीय वस्त्रकेँ **ओढ़नी** कहल जाइत छैक। छपाइसँ युक्त रंगीन ओढ़नीकेँ **चुनरी** कहल जाइत छैक। **पटोर, गलिहारा, गुलबदना, नीलाम्बरी, चुनरी** आदि अनेक प्रकारक नाम साड़ीक हेतु उपलब्ध होइत अछि। रेशमी किनारदार साड़ी **पटोर**, पैघ चाकर किनारीदार लालसाड़ी **गुलबदना**, आसमानी रंगक किनारीवला साड़ी **नीलाम्बरी** कहल जाइत अछि। चुनरी साड़ीक सेहो अनेक प्रभेद भेटैत अछि, जाहिमे **एकबंडी** (एकरङ), **चौबंडी** (चौरंगा) ओ **सतबंडी** (सतरंग) विशेष प्रचलित रहल अछि (**मिथिला मिहिर, 15 जनवरी 1991, पृ.-९**)। चारू कात लाल रंगसँ युक्त आ बीचमे अन्य रङक साड़ीकेँ सुगाठोर कहल जाइत छैक। लालरंगक जमीनवला छापयुक्त साड़ीक एकटा प्रभेद **मनराजी** कहल

जाइत अछि। पीयर रंगमे रङल साड़ी ओ धोतीकेँ **पटम्बर/पटम्मर/पीतमरी** कहल जाइत छैक। अनेक रंगक साड़ीक एकटा प्रभेद **धूपछाँह** कहल जाइत अछि। लोकगीतमे **दच्छिन चीरक** (**पहिरि लेल सखि दछिनक चीर-विद्यापति**) उल्लेख भेटैत अछि जे आधुनिक **मदरासी** साड़ी जकाँ होइत छल होयत ।

धोबि

कपड़ा धोवाक पारम्परिक व्यवसाय करऽवला जाति **धोबि/धोबी** कहल जाइत अछि। पूर्वमे ई कपड़ा रङबाक वृत्ति सेहो करैत छल जे एकर **रजक** नामसँ स्पष्ट अछि। एखनो ई यज्ञ, संस्कार आदिक हेतु वस्त्र रङैत अछि। धोबिक निवास स्थानकेँ **धोबियाही/धोबिगामा** कहल जाइत छैक।

आधार सामग्री : धोबी विभिन्न प्रकारक कपड़ाकेँ धो कऽ साफ करैत अछि। ओकर मूल आधार सामग्री विभिन्न प्रकारक वस्त्र होइत छैक जकरा **नूआ** कहल जाइत छैक। प्रसूताक वस्त्रकेँ **सोइरीक नूआ** आ मृतकक परिवारसँ सम्बद्ध कपड़ाकेँ **छुतकाक नूआ** कहल जाइत छैक। मलिन वस्त्रकेँ **मैल** कहल जाइत छैक। किञ्चित मलिनतासँ युक्त वस्त्रकेँ **मैलाह/मलिछन/मैलछन/मलिछाह** कहल जाइत छैक।

कपड़ा साफ करबाक हेतु धोबी ओहिपर ऊसर खेतक ऊपरी भागमे जमल पपड़ीवला माटिक लेप करैत अछि। एकरा **ऊस/ऊसर/रेह/रेहड़/सज्जी माटि** कहल जाइत छैक। आइकालिह बाजारसँ कीनल अनेक प्रकारक चूर्ण तथा **सोडा,साबुन** आदि सेहो कपड़ा साफ करबाक हेतु उपयोग कयल जाइत अछि। ऊनी तथा रेशमी कपड़ा साफ करबाक हेतु **रीठा/रीठी/रिट्ठी** नामक फलक खोइंचाकेँ पानिमे फुलाकऽ उपयोग कयल जाइत छैक। कपड़ाक दग्गी छोड़ैबाक हेतु अनेक प्रकार रसायनक उपयोग कयल जाइत अछि।

धोअल कपड़ामे कड़ापन अनबाक हेतु ओकरा चिपचिपाह पदार्थक घोलमे डुबाओल जाइत छैक। एहि पदार्थकेँ **कलप/कलफ** कहल जाइत छैक। कलफक हेतु **माँड़, गील भात, मैदा, अरारोट, साबुरदाना** आदिक पानिक संगे गर्म कयला उत्तर बनल लसलस पदार्थक उपयोग होइत अछि। माँड़क कलफकेँ **माँड़ी** कहल जाइत छैक।

उज्जर कपड़ामे चमक अनबाक हेतु ओकरा नील रंगक चूर्णक घोरमे डुबाओल जाइत छैक। एकरा **नील/लील** कहल जाइत छैक। हल्का नीलवर्णक लीलकेँ **सिकिया/बम्बइया** कहल जाइत छैक। गाढ़ नीलवर्णक लीलकेँ **सोनामार/काला लील** कहल जाइत छैक। साधारण नील वर्णक लीलकेँ **बूलू लील** कहल जाइत छैक। सोनामार, काला लील एवं बूलू लीलक उपयोग मैल पियरौंछ

कपड़ाक हेतु होइत छैक। उज्जर कपड़ामे तीनू लीलकेँ उचित अनुपातमे फेटि कऽ उपयोग कयल जाइत छैक।

औजार : साफ कयलाक बाद कपड़ा सभकेँ पोशिन्दाक अनुसार छँटबाक हेतु सफाइसँ पूर्व ओकरा चिह्नित करबामे **भेला** नामक पहाड़ी फऽड़क उपयोग होइत छैक। भेलाक फऽड़मे सूइ गाँथि ओहिपर लागल रस द्वारा कपड़ापर निशान बना देल जाइत छैक। एहिसँ उत्पन्न निशानकेँ **चेन्ह/चेन्हा/चेन्हासी/मार्का** कहल जाइत छैक।

कपड़ाकेँ ऊस, लील, कलफ आदिक घोरमे डुबाकऽ मलबाक हेतु माटिक खुलल मुँहक गोल बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **नाद/नादी/लाद/लादी/लदिया/लदिला** कहल जाइत छैक।

कपड़ाकेँ पानिक भाफमे सिद्ध करबाक हेतु धोबिक चुल्हिकेँ **भट्ठी** (सं. भ्राष्ट्रिका) कहल जाइत छैक । ई साधारण चूल्हि सदृश होइत अछि, जकर औँछिया पर पैघ तौला, टीन अथवा लोहिया देल रहैत छैक।

पोखरि, डबरा आदिक ओ स्थल जतऽ धोबी कपड़ाकेँ साफ करैत अछि, से **घाट/धोबीघाट** (**प्रसिद्ध कहबी-नींद ने मानय टूटी खाट। प्यास ने मानय धोबीघाट।।**)/ **धोबिघट्टा** कहल जाइत छैक।

धोबिघट्टा पर करीब छौ-सात आङुर मोट, एक हाथ चाकर ओ दू हाथ नाम लकड़ीक खण्ड जाहिपर कपड़ाकेँ पीटल जाइत छैक, **पाट** (सं. पट्ट)/ **पटहा/धोबिया पाट** कहल जाइत अछि। ई जामुनक लकड़ीक होइत छैक जे पानिमे निरन्तर रहलो उत्तर सड़ैत नहि छैक। पाटक उपरका भागकेँ **माथ/मूड़ा/मुहरा** कहल जाइत छैक। ई भाग पानिक तलसँ कनेक ऊपर जमीनपर राखल रहैत छैक। मूड़ाक विपरीत भाग पानिमे जोड़ल ईंटक स्तम्भ पर स्थिर रहैत छैक। एहि स्तम्भकेँ **लौठन/लहठन/लोथन** कहल जाइत छैक। पाटक उपरका भागमे पाँतीमे खत बनल रहैत छैक, जकरा **दाँत/खाँच/खिरहिरी** कहल जाइत छैक। कपड़ाकेँ पाटपर पटकबाक हेतु धोबी जाहि स्थानपर ठाढ़ होइत अछि, ओकरा **गोरारी/लतमारा** कहल जाइत छैक।

मोट कपड़ाकेँ धोबी लकड़ीक जाहि मोट दण्डक सहायतासँ पीटैत अछि, से **पिटना/मुङरा** (सं.मुद्गरक)/**सोंटा/गरनाठ/डाङ/धोबडाङ/धोबिडाङ** कहल जाइत छैक।

लीलकेँ कपड़ाक एकटा छोट सन टुकड़ीक मध्य भागमे स्थित कऽ मोटरी बनाकऽ पानिक सम्पर्कमे राखि हिला कऽ घोरल जाइत छैक। एहि कपड़ाक टुकड़ीकेँ **पचोड़ा** कहल जाइत छैक।

कपड़ा सुखयबाक हेतु धोबिक व्यवस्थाकेँ **तनाब** कहल जाइत छैक। एहिमे नारिकेरक एकटा खूब पैघ ओ मोट रस्सीकेँ दूर-दूरपर गाड़ल दूटा खुट्टीमे बान्हि देल जाइत छैक। खुट्टीसँ थोड़े हटिकऽ एक-एकटा भरि मर्दक दंड रस्सीकेँ ऊपर दिस टढने रहैत छैक। एहि दुनू दंडकेँ **लग्गा/लग्गी** कहल जाइत छैक। रस्सी पैघ रहला पर निश्चित अन्तरालपर अनेक लग्गा मरसाहाक रूपमे लगाओल रहैत छैक।

कपड़ाक पोकचल भागकेँ समतल करबाक लोहक त्रिकोण भारी दाबक औजारकेँ **लोहा/इस्त्री/इस्तिरी/आयरन** (अं.)/**परेस** (अं. प्रेस) कहल जाइत छैक। एकरा गर्म कऽ कपड़ाक सतहपर दबाव दैत फेरल जाइत छैक। गर्म अवस्थामे एकर डंटीकेँ पकड़बाक हेतु व्यवहृत कपड़ाक टुकड़ीकेँ **मूठ** कहल जाइत छैक। जाहि चौकीपर लोहाक हेतु कपड़ा ओछाओल जाइत छैक, से **मेच** कहल जाइत अछि। मेच पर ओछाओल कपड़ाक मोट परतकेँ **गद्दा/गद्दी** कहल जाइत छैक। चूल्हि परसँ उतारल इस्तिरीकेँ किञ्चित सेरयबाक हेतु पहिने कदू तेल देल एकटा मैल कपड़ा पर राखल जाइत छैक। एकरा **ठेक** कहल जाइत छैक।

कुर्त्ताक कपड़ामे सौन्दर्यक हेतु लहरदार संकुचन बनयबाक हेतु **गेल्हा/गेहला/गेल्ही/गेलही** नामक जंगली फऽड़क उपयोग कयल जाइत छैक। एकर आकृति गोल ओ नीचा-ऊपरवला पृष्ठ चाकर ओ समतल होइत छैक। एकरा मध्यवर्ती भागक छेदमे दूटा आङुर पैसाय पकड़ल जाइत छैक।

उत्पादन : कपड़ाकेँ साफ करबाक क्रिया **धोब/धोअब** होइत अछि।

धोबी मैल वस्त्रकेँ पोशिन्दाक ओहिठामसँ एकत्र करैत अछि आ वस्त्रक आधारपर बान्हि कऽ रखैत अछि। आधारक हेतु व्यवहृत वस्त्रकेँ **बेठन/मोटबन्हना** कहल जाइत छैक। वस्त्रबद्ध कपड़ाक समूहकेँ **मोटा**/गेठा कहल जाइत छैक। छोट मोटाकेँ **मोटरी/गेठरी** कहल जाइत छैक। पैघ मोटाकेँ **मोटरा/गेठरा** कहल जाइत छैक। एकरा माथ पर उठाकऽ आनल जाइत छैक। कान्हमे लटकाओल पैघ मोटाकेँ **बकुचा/बकुच्चा** कहल जाइत छैक। छोट बकुच्चाकेँ **बकुच्ची** कहल जाइत छैक। बहुत अधिक कपड़ा रहलापर ओकरा गदहापर लादि कऽ अनबाक हेतु खूब नाम मोटरी बनाओल जाइत छैक जकरा **लादी** कहल जाइत छैक।

मैल वस्त्रपर सूइक सहायतासँ भेलाक रस द्वारा चेन्ह लगाओल जाइछ। भिन्न-भिन्न प्रकारक कपड़ा पर भिन्न-भिन्न चेन्ह देल जाइछ। चेन्हमे **चाउर, बुन्ना/बुन्दा, कैंची, चरखी**/तारा, **कटुआ** आदि प्रभेदक उपयोग होइत अछि। सरल रैखिक चेन्हकेँ **चाउर** कहल जाइत छैक। बिन्दुक आकृतिक चेन्हकेँ **बुन्दा/बुन्ना** कहल जाइत छैक। कोणक आकृतिक चेन्हकेँ **चरखी/तारा** कहल जाइत छैक। दूटा समानान्तर रेखाकेँ तेसर तिर्यक रेखा द्वारा कटलासँ बनल चेन्हकेँ **कटुआ** कहल

जाइत छैक। एही चेन्ह सभमे चाउर, बुन्ना आदिक संख्या एवं रेखाक दिशा परिवर्तन द्वारा भिन्न-भिन्न मार्का बनाओल जाइत अछि। मुट्ठीमे अँटबा योग्य कपड़ाक समूहकेँ **बाट/बाटि/बाइट/गौँछा** कहल जाइत छैक। मार्का लागल कपड़ाक बाइट बना लेल जाइत अछि। बाइट बनयबाक क्रिया **बटियैब** होइछ। बटिआओल कपड़ाकेँ क्रमशः पानिमे डुबयबाक क्रिया **बोरब** होइत अछि। बोरल कपड़ाकेँ नादीमे बनल ऊसक घोरमे डुबयबाक क्रिया **औंसब/सौनब/रेहब** होइत अछि। रेहबाक क्रममे कपड़ाकेँ बेर-बेर घोरमे डुबाकऽ मथबाक क्रिया **सुरख/छिकोरब/खिचरब/खिचोरब/खिचारब** होइत अछि।

किछु काल धरि कपड़ाकेँ खिचारलाक बाद ओकर अतिरिक्त पानिकेँ गाड़ि देल जाइत छैक। गाड़ल कपड़ाकेँ रौदमे पसारि कऽ किञ्चित शुष्क करबाक क्रिया **घमायब** होइत अछि।

कपड़ाक बेसी मैल अथवा दग्गीयुक्त भागपर ऊसक मोट परत दऽ देबाक क्रिया **लपेसब/लहेसब** होइत अछि।

घमयबाक हेतु देल खूब भीजल स्थितिमे वस्त्रकेँ **ओदा** कहल जाइत छैक। पानि गड़ब समाप्त भऽ गेला उत्तर अर्द्धशुष्क कपड़ाकेँ **अधसुक्खू** कहल जाइत छैक। शुष्क होयबासँ पूर्वक स्थितिमे अत्यन्त कम जलीय अंशसँ युक्त वस्त्रकेँ **सिमसिम** कहल जाइत छैक। सिमसिम वस्त्रकेँ धोबि रौदसँ हटा कऽ जमा कऽ लैत अछि। एहि क्रियाकेँ **भाडब** कहल जाइत छैक। भाडल कपड़ाकेँ पुनः बटिया कऽ भट्ठी पर सैंतबाक क्रिया **भट्ठी लगैब/भट्ठी भरब** होइत अछि।

भट्ठी भरबाक हेतु ओकर टिनमे पानि भरि देल जाइत छैक आ पानिमे दू मुट्ठी बालु सेहो धऽ देल जाइत छैक। टिनक मुँहक चारू कात कपड़ाक बाटिक थाक लगाओल जाइत छैक। थाककेँ नीक जकाँ लगयबाक क्रिया **सैंतब** होइत अछि। थाकमे देल सभसँ नीचावला कपड़ाक समूहकेँ **तऽरी** कहल जाइत छैक। टिनक उपरका भागमे बेलनाकार खाली भाग छोड़ि देल जाइत छैक जे उँचपर जाकऽ मोट कपड़ा द्वारा **झाँपि देल** जाइत छैक। झँपबाक हेतु व्यवहृत कपड़ाकेँ **फैंट/फेटला** कहल जाइत छैक।

भट्ठीमे आगि पजारलासँ टिनक पानि वाष्पीकृत भऽ कपड़ाक बाटि सभकेँ सिद्ध करैत अछि। बालुक कारणे खोलैत पानिसँ विचित्र ध्वनि अबैत रहैत छैक। ध्वनि बन्द भेलापर पानिक समाप्ति बूझल जाइत अछि आ फेटलाकेँ हटा कऽ फेर टिनकेँ भरि देल जाइत छैक। जखन भट्ठीक सभटा कपड़ा सिद्ध भऽ जाइत छैक तँ भट्ठीक चारूकातसँ भाफ बहराय लगैत छैक। एहि स्थितिमे भट्ठी आँचब छोड़ि कऽ सम्पूर्ण भट्ठीक कपड़ा सभकेँ मोट कपड़ाक टुकड़ासँ झाँपि, सेरयबाक हेतु छोड़ि देल जाइत

छैक। झँपबाक हेतु व्यवहृत एहि मोट कपड़ाकेँ **बेढ़न/बेरहन** कहल जाइत छैक। भट्ठीपर देल कपड़ा सभक नीक जकाँ सैंतल नहि रहने गर्म करबाक क्रममे थाकसँ खसि पड़बाक क्रियाकेँ **भट्ठी भथब** कहल जाइत छैक।

ठंढायल भट्ठीक कपड़ा सभकेँ धोबि लादी अथवा मोटा बनाय पाटपर लऽ जाइत अछि। कपड़ाक बाटि सभकेँ पाटपर पटकि कऽ आघात करयबाक क्रिया **खींचब** होइत अछि।। खिचबाक क्रममे कपड़ाकेँ पानिक सतहपर छिरिअयबाक क्रिया **फलहारब/फलकारब/फलहोरब** होइत अछि। फलहारबाक क्रममे कपड़ाकेँ दूनू हाथे मलि कऽ साफ करबाक क्रिया **पखारब/खेंघारब** होइत अछि। कपड़ाकेँ बेर-बेर पानिमे डुबायब ओ ऊपर करबाक क्रिया **कचारब** होइत अछि। जलक आघात द्वारा कपड़ाक मैलीकेँ हटयबाक क्रिया **धोखारब** होइत अछि।

साफ कपड़ाक बाटिकेँ ऐंठि कऽ ओकर पानिकेँ अंशतः पृथक् कऽ देबाक क्रिया **गाड़ब** होइत अछि। गाड़ल बाइटकेँ पाटपर पसारल पैध कपड़ा पर फेंकि देल जाइत छैक। एहि कपड़ाकेँ **अगोट/अगोटी/अगौटी/अगवटी/अगओटी** कहल जाइत छैक।

पहिल धोआइमे साफ नहि भेल कपड़ाकेँ रौदमे घमबाक हेतु पसारि देल जाइत छैक आ अधसुक्खू भेलापर पुनः पाटपर धोल जाइत छैक। दुबारा धोआइक व्यापार **छटाइ** होइत अछि।

धोअल कपड़ाकेँ आवश्यकतानुसार लील अथवा कलफक घोरमे डुबाकऽ मलल जाइत छैक। पछाति गाड़ि कऽ तनाबपर अथवा भूमिजेपर सुखबाक हेतु पसारि देल जाइत छैक। कलपक हेतु कपड़ामे छानल घोरकेँ **कपड़छान** कहल जाइत छैक। कलप देल कपड़ाकेँ **कलपौआ** कहल जाइत छैक।

जाहि कपड़ामे लोहा नहि करबाक रहैत छैक, ओकरा चौखूट टुकड़ामे मोड़ि लेल जाइत छैक। मोड़बाक क्रिया **चोपतब/चौपेतब/तहिआयब** होइत अछि। चौपेतला उत्तर बनल कपड़ाक परत सभकेँ **तह** कहल जाइत छैक। तह कयल कपड़ाकेँ **तहौआ** कहल जाइत छैक।

साड़ी, धोती आदिकेँ तहिअयबाक हेतु दूटा धोबि ओकर दूनू दिसुक खूट युगल पकड़िकऽ परस्पर तानि कपड़ाक संकोचकेँ समाप्त करैत अछि। एहि प्रक्रियाकेँ **घीचतीर/घिच्चातिरी/घिचघिचौआ/घिचाघिचौअल/घिच्चाघिच्ची / खीचतीर/खिच्चातिरीं/खीचखीचौआ/खिचाखिचौअल/खिच्चाखिच्ची / तिरातिरौअल/तिरातिरीं** कहल जाइत छैक।

कलप देल कपड़ापर लोहा दऽ ओकर संकुचनकेँ नष्ट कयल जाइत छैक आ सतहकेँ समतल कऽ देल जाइत छैक। लोहा देबासँ पूर्व कपड़ा पर देल पानिक

फुहारकेँ **छींटा/छिच्चा/नम** कहल जाइत छैक। छिच्चा देल कपड़ाकेँ गोल कऽ मोड़बाक क्रिया **नुरियैब/लुरियैब** होइत अछि ओ बनल पिंडकेँ **लूड़ी/भीड़ी/लूड़ी-भीड़ी** कहल जाइत छैक। लुड़ीकेँ खोलिकऽ ओहिपर गर्म लोहाक दबाव देबाक क्रिया **बनायब** होइत अछि। बनाओल नूआकेँ **बनौआ** कहल जाइत छैक। सद्यः बनाओल नूआकेँ **तहदर्ज** कहल जाइत छैक। तहौआ नूआक बाहरी सतहपर लोहा देबाक क्रिया **सजायब** होइत अछि।

बेसी गर्म लोहा द्वारा कपड़ाक किञ्चित जरि जयबाक क्रिया **लहकब** होइत अछि। साबुन आदिक फेनसँ युक्त कपड़ापर लोहा कयला उत्तर कपड़ापर बनल चेन्हकेँ **दाग/दग्गी/धब्बा/धप्पा** कहल जाइत छैक। कुर्ताक बाँहिमे सौन्दर्यक हेतु बनाओल लहरदार संकोचकेँ **चून/चुन्नन/चूनन/चूनट** कहल जाइत छैक। ई गेल्हाक छिद्रयुक्त फउड़मे आङुर घुसाय ओकर निचला सतहकेँ कपड़ापर रगड़लासँ उत्पन्न होइत अछिः चूनन देबाक क्रिया **चुनिआयब** होइत अछि। कपड़ा सभकेँ पोशिन्दाक अनुसार छँटबाक क्रिया **बाछब** होइत अछि। एकटा पोशिन्दाक समस्त कपड़ाकेँ एक ठाम एकत्र करबाक क्रिया **गोँछब** होइत अछि। करघासँ सद्यः उतरल कपड़ाकेँ **कोरा** कहल जाइत छैक। नव कोरा कपड़ामे चमक अनबाक विशेष प्रक्रियाकेँ **गोबरझार** कहल जाइत छैक। एहि प्रक्रियामे कपड़ाकेँ मालक गोबरवला पानिमे सानि कऽ दोसर दिन सोडाक सहायतासँ भट्ठी कऽ साफ कयल जाइत छैक। कपड़ाक दग्गीकेँ हटयबाक हेतु ओकरा कुम्हीपर पसारि निरन्तर रौद ओ पानिक सम्पर्कमे रखैत साफ कयल जाइत अछि। कोरा कपड़ाकेँ धोला उत्तर **धोआ** कहल जाइत छैक। धोबीक कपड़ा साफ करबाक मजदूरीकेँ **धोआइ** कहल जाइत छैक।

दर्जी

दर्जी जातिक पारम्परिक व्यवसाय कपड़ाकेँ नापि-काटि ओ सीबिकऽ पहिरबाक एवं अन्य उपयोगक हेतु विशिष्ट आकृति प्रदान करब थिक।

आधार सामग्री : दर्जीक आधार सामग्री विभिन्न प्रकारक कपड़ा होइत अछि। आइकाल्हि खाधी ओ जोलही कपड़ाक अतिरिक्त मीलनिर्मित अनेक प्रकारक कपड़ा ओ शोभाधायक वस्तु सभक उपयोग दर्जीक व्यवसायमे होइत अछि।

उज्जर रंगक कम चाकर सूती कपड़ाक प्रभेद **लट्ठा** कहल जाइत छैक। लट्ठासँ अपेक्षाकृत चाकर पाटक सूती कपड़ाक पातर प्रभेद विशेषकेँ **मारकीन** कहल जाइत छैक। एके रंगमे रङल झलझल वस्त्रक एकटा प्रभेद **एकरंगा/एकरङा/सालू** कहल जाइत अछि। कुर्ताक हेतु अत्यन्त पातर कपड़ाक प्रभेद **मलमल** होइत अछि। मलमलक अत्यन्त मोलायम प्रभेद **खासा** कहल जाइत अछि। खासासँ पातर मलमलक एकटा अन्य प्रभेद **अद्धी** होइत अछि। घघरा आदिक हेतु उपयोगी मोलायम वस्त्रक

एकटा प्रभेद **साटन** कहल जाइत अछि। रोमयुक्त कपड़ाक प्रभेदकेँ **मखमल** कहल जाइत छैक। तूरक परतसँ युक्त कपड़ाक प्रभेदकेँ **फलालेन/फलानेन** कहल जाइत छैक। कीटविशेष द्वारा उत्पादित सूतसँ बनल वस्त्रकेँ **रेशमी** कहल जाइत छैक। रेशमी वस्त्रक विभिन्न प्रभेद **तसर, बनात, बाफदा** आदि होइत अछि। ऊनसँ तैयार कयल वस्त्रकेँ **ऊनी** कहल जाइत छैक। पूर्वमे तीसीक डाँटक तन्तुसँ सेहो कपड़ा तैयार कयल जाइत छल जकरा **क्षौम वस्त्र** कहल जाइत छलैक। एकरा हेतु **तिसिऔटा** शब्द भेटैत अछि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न रसायन द्वारा निर्मित **टेरीलीन, टेरीन, टेरीकॉटन** आदि वस्त्र एवं विभिन्न प्रकार सूतकेँ मिश्रित कऽ बनाओल वस्त्र सभ सेहो लोकप्रिय भेल अछि, मुदा एकरा सभक नाम पारिभाषिक स्वरूपक नहि भऽ सकल अछि।

वस्त्रकेँ सीबाक हेतु दर्जी बाँटल सूतक अवगुण्ठित समूहक उपयोग करैत अछि जकरा **पोला/पोली/पोलिया/लच्छी** कहल जाइत छैक। आइकाल्हि कूटपर लपेटल सूतक बेलनाकार लच्छीक उपयोग होइत छैक जकरा **रील** कल जाइत छैक। अत्यन्त पातर सूतक एकटा प्रभेद **डेम्सी** होइत अछि।

आइकाल्हि वस्त्रक दू भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु सीप, कचकड़ा अथवा धातुक दू अथवा चारि छिद्रसँ युक्त वस्तुक उपयोग स्यूत वस्त्रमे कयल जाइत अछि। एकरा **बटम/बटाम/बट्टम/बटन/बुताम** कहल जाइत छैक।

एकर अतिरिक्त अनेक प्रकारक चलानी वस्तु सेहो दर्जीक व्यवसायमे आधार सामग्रीक रूपमे उपयोगी होइत अछि। साड़ीक कोरपर लगयबाक द्रव्यसूत्र रचित चकचक वस्तुकेँ **किनारी** कहल जाइत छैक। साड़ीक जे भाग पैरक परित: आवृत करैछ ओकरा **गोझनट/गोझनौट** कहल जाइत छैक। गोझनौटमे लगयबाक करीब छओ आङुर चाकर पातर वस्त्रक खंडकेँ **फाल** कहल जाइत छैक। पूर्वमे सादा साड़ीक कोरमे साटिकऽ चाकर रंगीन फीता सीबि लेल जाइत छलैक। एकरा **डोर** कहल जाइत छलैक । साड़ी पर शोभाक हेतु लगयबाक धातुक फुलपत्तीकेँ **गोटा** कहल जाइत छैक। चाकर गोटाकेँ **पट्टा** कहल जाइत छैक। फराक आदिमे कपड़ाक ऊपरसँ शोभाक हेतु लगयबाक करीब एक आङुर चाकर झलफाँफी कपड़ाक वस्तुकेँ **लेस** कहल जाइत छैक।

औजार : कपड़ा सीबाक हेतु दर्जीक मशीनकेँ **सिलाइ मशीन** कहल जाइत छैक। सीबाक हेतु दरजीक पारम्परिक औजारकेँ **सुइ/सुइया** कहल जाइत छैक। ई लोहक अत्यन्त पातर ओ नोंखगर छड़ होइत अछि। एहिमे ताग पैसयबाक हेतु नोंखक विपरीत छोरपर छेद रहैत छैक जकरा **पास** कहल जाइत छैक। कपड़ाकेँ नपबाक हेतु लकड़ीक इंच ओ फुटमे चिह्नित नपनाकेँ **फुट/स्केल/फुटपट्टी** कहल जाइत छैक।

शरीरक नाप लेबाक हेतु कपड़ासँ बनल नपनाकेँ **गऽज/टेप/फीता** कहल जाइत छैक। कपड़ा पर चेन्ह लगयबाक हेतु साबुन सदृश वस्तुकेँ **चाक मिट्टी** कहल जाइत छैक। कपड़ाकेँ कटबाक हेतु दरजी लोहक **कैंची** नामक औजारक उपयोग करैत अछि। हाथसँ सिलाइ करैत काल दरजी अपन बामा हाथक अनामिकामे सूइक आघातसँ बचबाक हेतु जे लोहक टोपी सदृश वस्तु धारण करैत अछि से **अंगुस्ताना/अंगुस्तान/अंगुरताना/अंगुरतान** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : कपड़ाक टुकड़ीक हेतु **पाट/पट्टी/पाटी** शब्दक व्यवहार अछि। कपड़ाक दोहराकऽ सोयल चाकर अवयवकेँ सेहो **पट्टी** कहल जाइत छैक। कपड़ाकेँ खण्डित करबाक क्रिया **काटब** होइत अछि। कोर पर काटल कपड़ाक दुनू भाग पकड़ि कऽ तनाव द्वारा दू भागमे विभाजित करबाक क्रिया **फाड़ब/चीरब** होइत अछि। सूचीक्रिया द्वारा वस्त्रक दू भागकेँ परस्पर सम्बद्ध करबाक क्रिया **सीब/सीयब** होइत अछि। सीलासँ वस्त्रमे बनल जोड़परक आकृतिकेँ **सीयन/सीयनि/सिलाइ** कहल जाइत छैक। व्यक्तिक अंग ओ कपड़ाक टुकड़ीकेँ नापि कऽ टुकड़ीमे वस्त्र बनयबाक योग्यताक अन्दाज करबाक क्रिया **भेआरब/ब्यौंतब** होइत अछि।

भेआरबाक हेतु व्यक्तिक शरीरक विभिन्न अंगक लम्बाइ, चौड़ाइ ओ मोटाइ तथा कपड़ाक लम्बाइ ओ चौड़ाइ ज्ञात करबाक क्रिया **नापब** होइत अछि। नपला उत्तर ज्ञात आयामकेँ **नाप/नापी** कहल जाइत छैक।

नापीक क्रममे वस्तुक अनुरूप शरीरक लम्बाइकेँ **लम्बाइ**, डाँड़क घेराकेँ **कमर**, सीनाक चौड़ाइकेँ **सीना**, गलाक गोलाइकेँ **गला**, नितम्बक चौड़ाइकेँ **हीप/सीट**, कन्हासँ पाञ्जर धरिक दूरीकेँ **सेस्त**, दुनू कन्हाक नीचाक दूरीकेँ **पुट**,बाँहिक लम्बाइकेँ **आस्तीन/बाहू/बाँहू/बहुँआ**, काँख लग बाँहिक गोलाइकेँ **हाला** ओ पैरक निचला भागक घेराकेँ **मोहरा/मोहरी** कहल जाइत छैक।

कपड़ाकेँ नापीक अनुसार विभिन्न अंगक हेतु टुकड़ी बनयबाक क्रिया **कतरब** होइत अछि। कतरबाक क्रममे ई ध्यान राखल जाइत छैक जे कपड़ाक अधिक भाग भागमे तानीक अधिक लम्बाइक व्यवहार कयल जाय। तद्नुरूप कपड़ाक काटकेँ **आरा** कहल जाइत छैक। जँ कपड़ाक भरनीक अधिक भाग टुकड़ीक लम्बाइक हेतु व्यवहृत होइत छैक, तँ एहि काटकेँ **खड़ा/तीरा** कहल जाइत छैक। सीबाक हेतु कतरल टुकड़ी सभकेँ **खरचा/जोगाड़** कहल जाइत छैक। सरल रेखामे काटल वस्त्रक एवं तद्नुसार सीयनिकेँ **सुरेब/सुरेबी/सुरेबगर** कहल जाइत छैक। तिरछा कटाव एवं तद्नुसार सियनिकेँ **उरेब/उरेबी** कहल जाइत छैक। वस्त्रक टुकड़ीसँ अतिरिक्त अंशकेँ काटि कऽ फेंकि देबाक क्रिया **छाँटब** होइत अछि। काट-छाँटसँ बनल कपड़ाक छोट आ बेकार टुकड़ीकेँ **छाँट/कतरन** कहल जाइत छैक।

कपड़ाक सिलाइमे अनेक विधिक व्यवहार होइत छैक। दूर-दूरपर सूइ भोंकि कऽ कयल गेल क्रमिक सिलाइ करबाक क्रिया **टाँकब/खीलब/गुलब** होइत अछि। टाँकलासँ उत्पन्न सिलाइकेँ **लङ्गर/कच्ची सिलाइ/टाँक/टाँका/पसूज** कहल जाइत छैक। टाँकामे तागक दु पैसानक बीचक दूरीकेँ **टोप** कहल जाइत छैक। कपड़ाक किनारकेँ मोड़िकऽ उपरका ओ निचला परतकेँ लैत कयल गेल सिलाइकेँ **तुरपन/तुरपइ/तुरपाइ/हेम** कहल जाइत छैक। तुरपनक हेतु कपड़ाक कोरकेँ किञ्चित मोड़िकऽ बामा हाथक अङैठा ओ अनामिकासँ पकड़बाक क्रिया **अङैठिआयब** होइत अछि। वृत्तक परिधिक अनुरूप क्रमिक सूतकेँ चलाकऽ कयल गेल सीबाक क्रिया **मेढ़ब** होइत अछि। कपड़ाक कोरकेँ मोड़ि कऽ टँकला उत्तर उत्पन्न सिलाइकेँ **दरज** कहल जाइत छैक। अत्यन्त कम मोड़ दऽ कयल गेल सिलाइकेँ **गोलदरज** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत अधिक मोड़ दऽ कयल गेल सिलाइकेँ **इमलपत्ती** कहल जाइत छैक। खूब चाकर मोड़वला सिलाइकेँ **चौरा** कहल जाइत छैक।

कपड़ाक दूटा सतहकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु प्रत्येक टोपक मध्य भागसँ टाँका दैत प्रत्येक टोपमे आधा टोपक दूरी तय करबाक विधिसँ कयल गेल सिलाइ करबाक क्रिया **बखिआयब** होइत अछि। कोरपर चाकर मोड़ दऽ कयल गेल बखियाकेँ **चौंपा बखिआ** कहल जाइत छैक। कपड़ाक किनारवला भागमे देल मोड़मे बँड़ुआ सूत पेसि कऽ अत्यन्त पातर मोड़ देल बखिआक प्रभेदकेँ **डोरी दे के बखिया** कहल जाइत अछि। जोड़पर दूनू कात पृथक्-पृथक् मोड़ दऽ कयल गेल बखियाकेँ **सुलतान लोढ़ी** कहल जाइत छैक। मेढ़बाक विधिसँ कयल गेल सिलाइकेँ **काज-टाँका** कहल जाइत छैक। क्रमिक छोट ओ पैघ टाँका दैत कयल गेल सिलाइक प्रभेदकेँ **जवा** (प्रि.)कहल जाइत छैक। सूतसँ लहरिक आकृति उखारैत सिलाइ करबाक प्रभेदकेँ **काँटा फोड़ी बखिया** कहल जाइत छैक।

सलवारक मोहरी पर बखिआओल भागपर पुनः लहरिक सदृश कयल गेल बखियाक प्रभेदकेँ **सिंघारा** कहल जाइत छैक। एकहरा सिंघाराकेँ **लखखी/बाकुच** कहल जाइत छैक।

जरल अथवा कटल कपड़ाक खाली भागमे सुइ द्वारा **तानी-भरनी** बुनाइकेँ **रफू/रफ्फू** कहल जाइत छैक। रफू कयनिहार कारीगरकेँ **रफूगर** कहल जाइत छैक। कपड़ाक टुकड़ी लागल रहलापर कपड़ाक फाटल भागकेँ **खोंच** कहल जाइत छैक। खोंचक फाटल भागमे सिलाइ कऽ जालक आकृतिक बिनाइकेँ **जाली** कहल जाइत छैक। कपड़ापर उखारल फूल-पत्तीकेँ **कसीदा/कसिद्दा/काज/काम** कहल जाइत छैक। कसीदा करबाक क्रिया **काढ़ब** होइत अछि। कपड़ामे लगयबाक धातुक तारकेँ **जड़ी** कहल जाइत छैक। कपड़ामे जड़ीकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **जड़ब** होइत अछि। जड़ल फूलपत्तीकेँ **बेल/बेल-बूटा/बूटा** कहल जाइत छैक।

कपड़ाक जाहि भागपर बटन लगाओल जाइत छैक, ओ भाग दोहराओल रहैत छैक। एहि भागकेँ **बटनपट्टी** कहल जाइत छैक। बटनकेँ कपड़ाक दोसर भागसँ सम्बद्ध करबाक हेतु प्रयुक्त छेदकेँ **काज** कहल जाइत छैक। काजसँ युक्त प्रान्तकेँ **काजपट्टी** कहल जाइत छैक।

पूर्वमे बटनक बदला कपड़ाक गोलकऽ सीयल पिंडक उपयोग होइत छल, जकरा **भुण्डी/भुंड़ी/घुण्डी** कहल जाइत छलैक। भुण्डीमे कपड़ाक दोसर भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु प्रयुक्त कपड़ाक रस्सी सदृश वस्तुक अग्रभागमे काज कयल वलयकेँ **मुन्ही/फनकी/फनुकी** कहल जाइत छैक। कपड़ाक दू भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु दूनू भागमे लागल कपड़ाक रस्सीकेँ **बन/बन/बन्द** कहल जाइत छैक।

फाटल कपड़ामे जोड़ल कपड़ाक टुकड़ीकेँ **पेओन/चिप्पी/पेबन्द/पैबन्द/चेफड़ी** कहल जाइत छैक। नाम वस्त्रकेँ थोड़े-थोड़े लऽ कऽ कोंचिऔला पर बनल संकुचनकेँ **चून/चुनट/चुन्नन** कहल जाइत छैक। चुन्नन बनयबाक क्रिया **चुनिआयब** होइत अछि। कोनो वस्त्रक छोरपर चुन्नन दऽ सीयल दोसर वस्त्रक प्रान्तकेँ **फालर/फालरि** कहल जाइत छैक । फालर लागल कपड़ाकेँ **फालरदार** कहल जाइत छैक। फालरक स्थानमे प्रयुक्त चुन्नन रहित कम चाकर वस्त्र खंडकेँ **मगजी** कहल जाइत छैक। मगजी अथवा फालर मोड़िकऽ दोहराओल वस्त्रखंडकेँ **पट्टी** कहल जाइत छैक। कपड़ाक संकुचित भागकेँ **सल** कहल जाइत छैक। संकुचित होयबाक क्रिया **घोकचब** होइत अछि ।

जे कपड़ा शरीरमे अत्यन्त कसल बुझना जाइत छैक ओकरा **कसकस** कहल जाइत छैक। शरीरक नापसँ नम्हर कपड़ाकेँ **फल्लर/ढकढोल** कहल जाइत छैक। उपयुक्त नापसँ छोट वस्त्रकेँ **ओछ** कहल जाइत छैक। वस्त्रक जाहि भागमे विभिन्न खण्डकेँ जोड़बाक भाग स्पष्ट दृष्ट होइत अछि, से भाग **उन्टा/उल्टा** आ तकर विपरीत भाग **सुन्टा/सुल्टा** कहल जाइत छैक ।

मुसलमानलोकनि परिधानक हेतु **लिबास/लेबास/पोशाक/पोसाख** शब्दक व्यवहार करैत छथि। सरकारी कर्मचारीक विशिष्ट लिबासकेँ **उर्दी** कहल जाइत छैक। शरीरकेँ फँसाकऽ आवृत करऽवाला वस्त्रकेँ **पहिरना/पहिरन/पहिरावा** ओ ऊपरसँ धारण करबाक वस्त्रकेँ **ओढ़ना/ओढ़ावा** कहल जाइत छैक ।

कपड़ा सीबाक मजदूरीकेँ **सियाइ/सिलाइ** कहल जाइत छैक।

दर्जी द्वारा सीयल वस्त्रकेँ उपयोगिताक आधारपर तीन वर्गमे बाँटल जा सकैत छैक– (क) पुरुषक उपयोगी वस्त्र, (ख) नारीक उपयोगी वस्त्र एवं (ग) अन्य वस्त्र

पुरुषक उपयोगी वस्त्र : पुरुषक माथ पर धारण करबाक ढनटल ढकनाक आकृतिक वस्त्रकेँ **टोपी/ताखी/ताज** कहल जाइत छैक। कान धरि झाँपऽवला टोपीक एकटा प्रभेद **मुण्डा** होइत छैक। नाम आकृतिक टोपीक प्रभेद **गाँधी टोपी** कहल जाइत छैक। दूटा टुकड़ीकेँ जोड़ि कऽ बनाओल टोपीकेँ **दुपलिया** आ चारिटा टुकड़ीकेँ जोड़ि कऽ बनाओल टोपीकेँ **चरिपलिया** कहल जाइत छैक। कटोरी सन गोल टोपीकेँ **किस्तीनामा/सरबन/सरबन्द** कहल जाइत छैक। रोआँदार टोपीकेँ **साम्बर टोपी** कहल जाइत छैक। एकटा टोपीक बामा ओ दहिना दिसुक पट्टी गरदनिक अग्रभागमे बटन अथवा बन्न द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। एकरा **कनटोप/कनझप्पा/कनझप्पी/ कनझोपा/झपला** कहल जाइत छैक। झालरि लागल कनझप्पाकेँ **फलगु** (मि.भा.को.) कहल जाइत छैक।

टोपीक स्थानपर मिथिलामे **पाग/पगिया** धारण करबाक परिपाटी छल। ई पातर, कम चाकर ओ अधिक नाम वस्त्र खंडकेँ ठेहुनपर लपेटि कऽ तैयार कयल जाइत छल। एकरा **बूतपाग** सेहो कहल जाइत छलैक। साठि हाथक वस्त्रखंडसँ तैयार पागकेँ **साठापाग** कहल जाइत छलैक। पूर्णिया रिपोर्टमे **मोरस्सा** (**एन एकाउन्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया, - पृ.- 137**) नामक एकटा माथपर धारण करबाक वस्त्रक उल्लेख भेल अछि।

दूटा पाटकेँ परस्पर सीबिकऽ बनाओल पुरुषक कान्हपर धारण करबाक चद्दरिकेँ **दुपटा/दोपटा/डोपटा/उपरना** कहल जाइत छैक। डेढ़ पाटक चद्दरिकेँ **डेढ़पट्टा/डेढ़पट्टी** कहल जाइत छैक। चारू कातसँ सीबि कऽ बनाओल दोबारा वस्त्रक ओढ़नाकेँ **दोहर/दोहरि** कहल जाइत छैक। मगजी लागल दोहरकेँ **सलगा** कहल जाइत छैक।

पुरुषक डाँड़सँ ऊपर गर्दनि धरिक अंगवस्त्रकेँ **अङ्गा** कहल जाइत छैक। अल्प तूर भरल दोहर वस्त्रसँ निर्मित अङ्गाकेँ **तुरभरा/तुरोड़ा** कहल जाइत छैक। केहुनीसँ कने ऊपर धरि बाहुवला देहसँ सटल अङ्गवस्त्रकेँ **गंजी/बनियान** कहल जाइत छैक। बाँहिवला भागसँ हीन गंजीकेँ **सैंडो/फतुही/फतूही/अधकट्टी** कहल जाइत छैक। गरदनिक परितः गोल कटानसँ युक्त गंजीकेँ **गोलगला** कहल जाइत छैक। पाइ इत्यादि रखबाक हेतु अङ्गाक पार्श्वमे कयल व्यवस्थाकेँ **थोकड़ी/जेबी/खलती** कहल जाइत छैक। अदृश्य जेबीकेँ **चोर जेबी** कहल जाइत छैक।

गंजीक ऊपरसँ पहिरबाक अपेक्षाकृत फल्लर वस्त्रकेँ **अधबहुआँ/अधबहिआँ/ अधबाँही/नीमा** (मुसलमान) कहल जाइत छैक। एहिमे छातीक अग्रभागमे तीन-चारिटा बटनक व्यवस्था रहैत छैक आ एकर बाहुक लम्बाइ गंजीसँ अपेक्षाकृत पैघ रहैत छैक। तथापि, बाहुक गोलाइ गंजीये जकाँ बेलनाकार रहैत छैक।

गंजीक ऊपरसँ पहिरबाक अन्य वस्त्र **कमीज** होइत अछि। एकर बाहुक लम्बाइ हाथक सम्पूर्ण भागकेँ झँपैत छैक। एकर बाहुक अग्रभाग ओ छातीक समक्ष बटन-व्यवस्था रहैत छैक तथा बाहुवला भाग अङ्गमे सटल रहैत छैक। एकर बहुँआक निचला भागमे करीब चारि आङुर दोहरा कपड़ाक मोट पट्टी रहैत छैक जकरा **कफ** कहल जाइत छैक। एहिमे गलावला भागक पृष्ठमे लगाओल कपड़ाक मोट पट्टीकेँ **कालर** कहल जाइत छैक। कालर ओ धड़वला भागकेँ जोड़ऽवला प्रदेशकेँ **तीढ़ा** कहल जाइत छैक। बाँहि ओ धड़वला भागकेँ जोड़ऽवला प्रदेश **घोर** कहबैत छैक।

बेलनाकार बाहुवला कमीजकेँ **कुर्ता/पंजाबी** कहल जाइत छैक। एकर बाँहिवला भाग अपेक्षाकृत फल्लर होइत छैक तथा बटन-व्यवस्थासँ विहीन होइत छैक। एकर बाँहिक खुलल अग्रभागकेँ **खलता/खालता** कहल जाइत छैक। ऊपर दिस कम चाकर ओ नीचा दिस क्रमशः अधिक चाकर काटल कपड़ाक टुकड़ीकेँ **कली** कहल जाइत छैक। कलीकेँ जोड़िकऽ बनाओल कुर्ताकेँ **कलीदार** कहल जाइत छैक।

जाड़मे पहिरबाक हेतु मोट कपड़ाक कुर्ता सदृश वस्त्रकेँ **कोट** कहल जाइत छैक। कोटमे मोट कपड़ाक तरमे साटल वस्त्रकेँ **अस्तर** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत फल्लर ओ पैर धरि लटकैत कोटकेँ **लबादा** कहल जाइत छैक। कोट, लबादा आदिक सामनेवला भागमे नीचासँ ऊपर धरि बटन- व्यवस्था रहैत छैक। बाहुविहीन तथा गर्दनिसँ पेटक निचला भाग धरिक ऊपरसँ पहिरबाक कसकस वस्त्रकेँ **बण्डी/आस्कोट/सदरी** कहल जाइत छैक।

पाञ्जर ओ छाती लग बन्न लागल तथा बाम कान्हपर भुँड़ीसँ युक्त अधबहुँआ वस्त्रकेँ **अचकन** कहल जाइत छैक। पूर्ण बाहुवला तथा छातीक अग्रभागमे बटन-व्यवस्थासँ युक्त अचकनेक सदृश वस्त्रकेँ **चपकन** कहल जाइत छैक। माथपर होइत पहिरबाक छातीक अग्रभागमे बटन व्यवस्थासँ विहीन वस्त्रकेँ **अङरखा** कहल जाइत छैक। छोट अङरखाकेँ **अङरखी** कहल जाइत छैक। छातीक अग्रभागमे बन्न द्वारा बान्हल जयबाक डाँड़ धरिक अङरखाक प्रभेदकेँ **मिरजइ/मिरजै** कहल जाइत छैक। ओछ मिरजइकेँ **खुटिया मिरजइ** कहल जाइत छैक। दुनू पाञ्जर लग दू-दूटा बन्न द्वारा बन्हबाक व्यवस्थासँ युक्त अङरखाक प्रभेदकेँ **चौबंडी/चौबंदी** कहल जाइत छैक। एक कान्हसँ दोसर कान्ह धरि छातीक अग्रभाग होइत अर्द्धचन्द्राकार स्थितिमे अनेक शोभाधायक बटनसँ युक्त अङरखाक प्रभेदकेँ **बालावर/बालावर्ज** कहल जाइत छैक। बन्द गलाक कोट सदृश ठेहुन धरि लटकैत मोट वस्त्र निर्मित ढिलढिल कपड़ाकेँ **सिरबानी/सेरबानी** कहल जाइत छैक। बबाजीलोकनिक सेरबानीकेँ **झूल/झुल्ला** कहल जाइत छैक। खतनाक समयमे मुसलमान नेनालोकनिकेँ पहिरयबाक सेरबानी सदृश वस्त्रकेँ **जामा** कहल जाइत छैक। मौलवीलोकनिक सेरबानीकेँ

पैहरान/पयराहन कहल जाइत छैक। मृतक मुसलमानक पयराहनकेँ **कफनी** कहल जाइत छैक। बहुआँविहीन तथा समक्षवला सम्पूर्ण भागमे बन्न अथवा बटन-व्यवस्थासँ युक्त गर्दनिसँ ठेहुन धरिक वस्त्रकेँ **अबा/आबा/एबा/चोंगा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त फल्लर मोहरीसँ युक्त सम्पूर्ण बाहुवला एवं गर्दनिसँ नीचा दिस जमीनपर सोहराइत आबा सदृश वस्त्रक प्रभेदकेँ **कबा/काबा** कहल जाइत छैक।

डाँड़मे पहिरबाक करीब दू हाथ नाम ओ एक हाथ चाकर वस्त्रखण्डक मध्य भागमे नीचा दिस जोड़ल करीब छओ आङुर चाकर ओ दू हाथ नाम वस्त्रखण्डसँ निर्मित वस्त्रकेँ **लँगोट/लङोट/लँगोटा/लङोटा/लंगौटा/लङौटा/नङोट/नङोटा/नङौटा** कहल जाइत छैक। जांघ ओ डाँड़केँ झँपबाक स्यूत वस्त्र विशेषकेँ **कच्छा/काछा/जँघिया/ जाङ्घिया/इजार** कहल जाइत छैक। नेनाक कच्छाकेँ **कछिनी/कछटा/कछोटा/कच्छी** कहल जाइत छैक। एहिमे दूनू जाँघक बीचमे जोड़ल कपड़ाक टुकड़ीकेँ **मियानी** कहल जाइत छैक। मियानी रहित अधोवस्त्रमे पैर संचालनमे असौविध्यकेँ **छन्ना लागब** कहल जाइत छैक। कच्छाक डाँड़क चारू कातवला दोहरा वस्त्रक परकेँ **नेफा/नफ्फा** कहल जाइत छैक। नेफामे कच्छाकेँ कसबाक हेतु पैसाओल वस्त्रक डोरीकेँ **इजारबन्द/इजारबन्न/नारा** कहल जाइत छैक।

डाँड़ तथा दूनू पैरक सम्पूर्ण भागकेँ पृथक्-पृथक् आवृत करउवला वस्त्रकेँ **पएजामा/पउजामा/खिसकट** कहल जाइत छैक। देहमे एकदमसँ सटल पयजामाक प्रभेदकेँ **चुस्त/चूड़ीदार** कहल जाइत छैक। ठेहुन लग खालतावला पएजामा प्रभेदकेँ **खलतेदार/मोहरीदार** कहल जाइत छैक। कम मोहरीवला पएजामाकेँ **सुरवाल** कहल जाइत छैक।

मोट वस्त्रसँ बनल पयजामाक आधुनिक प्रभेदकेँ **पैंट** कहल जाइत छैक। एकर डाँड़क चारू कातक दोहरा वस्त्रक पट्टीकेँ **कमरपट्टी/कमरतोड़** कहल जाइत छैक। कमरपट्टीक बाहर दिस स्थान-स्थान पर एक आङुर चाकर वस्त्रक टुकड़ी जे चमौटीकेँ फसयबाक उपयोगमे आनल जाइत छैक, से **फिद्दी/लुप्पी** कहल जाइत अछि। एकर अग्रभागमे बटन-व्यवस्थाक हेतु पट्टीकेँ **गेदरी/गिदरी** कहल जाइत छैक। बकलस लगयबाक हेतु कमरपट्टीक बाहर निकलल भागकेँ **बढ़ती** कहल जाइत छैक। धियापुताक जाँघ ओ डाँड़केँ झँपैत पैंटक एकटा प्रभेदमे कपड़ाक फीता द्वारा ओकरा दूनू कान्ह पर अवलम्ब देबाक व्यवस्था रहैत छैक। एहि पैंटकेँ **गेलिस** कहल जाइत छैक।

अङपोछाक स्थानपर व्यवहृत वस्त्रक छोट सन वर्गाकार टुकड़ीक चारूकातक भागकेँ सौबिकऽ बनाओल वस्त्रकेँ **रुमाल** कहल जाइत छैक।

नारीक उपयोगी वस्त्र : नारीलोकनिक डाँड़सँ ऊपर गर्दनि धरि झँपबाक वस्त्रकेँ **आँगी/आङी/अङा/अंगा/ अङ्गा/अङ्गिया** कहल जाइत छैक। छातीये धरि आवरण करउवला आँगीकेँ **चोली/कसनी/चेस्टर/टाइटर/शलूका** कहल जाइत छैक। एकरा हेतु प्राचीन शब्द **कंचुक/कंचुकी/कांचुली/केंचुली/केंचुआ/कञ्चुआ/काञ्चुअ** अछि। ग्रियर्सन वेश्यालोकनिक चोलीकेँ **महरम** कहने छथि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ-148**)। गर्दनिसँ डाँड़ धरिक आङीकेँ **झुल/झुल्ला** कहल जाइत छैक। झुल्ला आदिक कोणिक गलाक हेतु पट्टीकेँ **कण्डा** कहल जाइत छैक। मुसलमान स्त्रीक दहिन भागमे जेबी लागल आङीकेँ **कुर्ती** कहल जाइत छैक। पेट धरि झाँपऽवला आधा बाँहुक कुर्तीक आधुनिक प्रभेदकेँ **बेलाउज** कहल जाइत छैक। पैघ गलावला अधबहियाँ कुर्तीकेँ **नीमा/निमस्तीन/निमास्तीन/खरबहिआ** कहल जाइत छैक। पूर्णिया रिपोर्टमे अपेक्षाकृत पैघ बाहूसँ युक्त नितम्ब धरिक कुर्तीकेँ **मुहरंम** कहल गेल अछि (**एन एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया, पृ. 138**)।

बेलाउज, कुर्ती आदिक बाँहिपर चुन्नन द्वारा संकुचनक बीच फलकल भागकेँ **फलको/सुरहिया/सोराही** कहल जाइत छैक।

मुसलमान स्त्रीलोकनिक गर्दनिसँ डाँड़ धरिक चोळाकेँ **बुड़का** कहल जाइत छैक। बुड़कामे मुँहकेँ झँपबाक हेतु पर्दावला भागकेँ **नकाब** कहल जाइत छैक। मुसलमान स्त्रीक बिआहमे व्यवहृत गर्दनिसँ पैर धरि आवृत करउवला लम्बा कुर्ता ओ सलवारकेँ **जामा-जोड़ा** कहल जाइत छैक।

कन्यालोकनिक छातीक भागकेँ झँपबाक पीठ दिस लटकैत वस्त्रकेँ **ओढ़नी/दुपट्टा** कहल जाइत छैक। देहमे सटल डाँड़ धरिक वस्त्रकेँ **समीज/जम्फर** कहल जाइत छैक। वस्त्रमे चुन्नयुक्त घेराकेँ **घेर** कहल जाइत छैक। डाँड़सँ नीचा दिस घेरयुक्त जम्फरकेँ **फराक** कहल जाइत छैक।

नारीलोकनिक साड़ीक तरमे पहिरबाक तथा डाँड़ ओ निचला भागकेँ आवृत करऽवला वस्त्रकेँ **साया/तहमद/तहबन/तहबन्द** कहल जाइत छैक। सायाक नेफाक अग्रभागमे नाराक हेतु घरक खुलल भागकेँ **नीबी** कहल जाइत छैक।

अत्यधिक चुन्ननसँ युक्त नेफावला एवं स्वतंत्र रूपसँ धारण करबाक हेतु उपयुक्त सायाक प्रभेदकेँ **लँहगा/अलँगा** कहल जाइत छैक। लँहगाक आधुनिक प्रभेद **गरारा** होइत अछि। युवतीक लहँगाकेँ **घघरा/घँघरा/घाघर/(वर्ण.)/ घग्घर** कहल जाइत छैक। नेनाक घघराकेँ **घघरी/घँघरी** कहल जाइत छैक। साड़ीक सम्पूर्ण भागसँ बनल मुसलमानक विआहमे प्रयुक्त घघराक प्रभेदकेँ **पेसबाज** कहल जाइत छैक।

चुस्त मोहरी ओ कोणिक काटसँ युक्त कन्याक पयजामा सदृश वस्त्रकेँ **सलवार** कहल जाइत छैक। जाँघपर अत्यधिक चुन्नयुक्त एवं नीचा दिस घेरदार सलवारकेँ **सरारा** कहल जाइत छैक।

अन्य वस्त्र : जाहि दोहर वस्त्रक दून् भागक खाली स्थानमे अन्य वस्तु पेसल जाइत छैक से **खोल/खोला/खोली/खोलिया** कहल जाइत छैक। दर्जी सीड़क, तोशक, गेडुआ आदिक खोल सीबैत अछि। सीड़कमे तूर भरि कऽ ओढ़बाक काज लेल जाइत छैक। एकर खोलक ऊपरवला भागकें **पल्ला** ओ नीचावला भागकें **अस्तर** कहल जाइत छैक। एकर खोलमे चारूकातसँ मगजी लगाओल जाइत छैक। तोशकक दून् पल्ला समाने कपड़ाक होइत छैक आ ई ओछाओनक तरमे देबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि। गेड़ुआक खोलक भीतर स्यूत कपड़ाक धोकड़ीमे तूर भरल रहैत छैक। एहि धोकड़ीकें **रूइभरा** कहल जाइत छैक तथा एकर खोलकें **गिलाफ/गिलेफ/गिलेफी** कहल जाइत छैक।

मालासँ जप करबाक हेतु हाथमे धारण करबाक गाइक मुखक आकृतिक वस्त्रकें **गोमुखी/गउमुखी** कहल जाइत छैक। मन्दिरमे छत्रक रूपमे तानल जयबाक मगजी लागल रंगीन कपड़ाक चौखूट वितानकें **चनबा/चनमा/चंदोआ** (वर्ण०) कहल जाइत छैक।

विरल तानी ओ भरनीवला जालाकार वस्त्रकें सीबिकऽ ऊपर ओ चारूकात घरक सदृश घेरल, मच्छरसँ त्राणदायक वस्त्रकें **मच्छरदानी/मसहरी/मुसहरी** कहल जाइत छैक।

वस्तुकें स्थानान्तरित करबाक हेतु उपयोगी दू तहसँ युक्त वस्त्रकें **थैला/झोरा** कहल जाइत छैक। छोट झोराकें **झोरी/थैली** कहल जाइत छैक। झोराकें पकड़बाक हेतु ओहिमे लगाओल फीताकें **डंटी** कहल जाइत छैक। **झोरी-झपटा समेटब** समस्त वस्तुजातक संग विदा होयबाक अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि। पाइ रखबाक हेतु डाँड़मे लटकाकऽ रखबामे प्रयुक्त छोट सन झोराकें **बगली/बगुली** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट बगुलीकें **बटुआ** कहल जाइत छैक।

खिड़की, दरबज्जा, रंगमंच आदिपर आवरणक हेतु व्यवहृत वस्त्रकें **परदा** कहल जाइत छैक। हाथीक शरीरपर देल शोभाक हेतु झूलैत वस्त्रकें **झूल/झुल्ला** कहल जाइत छैक।

एकर अतिरिक्त अनेक प्रकारक एहन वस्त्र सेहो जनजीवनमे प्रयुक्त होइत अछि जे लोक स्वयं सीबि लैत अछि। किछु अस्यूत वस्त्र उपयोगक आधार पर विशिष्ट नाम धारण कऽ लैत अछि। **सामियाना, रावटी, कनात** आदि वस्त्रगृह सेहो सीबिये कऽ बनाओल जाइत छल। मुदा ई सभ जातीय आधारपर तैयार नहि होयबाक कारणें अस्पृष्टे राखल गेल अछि।

धुनिआ

धुनिआ जातिक पारम्परिक व्यवसाय विभिन्न प्रकारक तूरकें धूनब ओ

सूचीक्रिया द्वारा खोलमे धूनल तूरकें सम्बद्ध करब अछि। एकर आधार सामग्री तूर, ताग ओ खोल होइत अछि।

औजार : धुनिआक तूर धुनबाक औजारकें **धुनकी/धनुकी/धनुही/धनुष/धुनेठी/धुनेठ/धुनैठ/धुनहठ** (धि.) कहल जाइत छैक। जाति निरपेक्ष आधारपर तूर धुनबाक उपकरण फटकासँ ई किञ्चित भिन्न होइत अछि।

एहिमे एकटा तीन हाथ नाम काष्ठदंड रहैत छैक जकरा **डण्टा/डण्टी/डाँड़ी** कहल जाइत छैक। डंटाक अपेक्षाकृत मोट भागक कातमे वृत्तक चतुर्थांशक आकृतिक काठक तकथा लागल रहैत छैक जकरा **परहा/फरहा/फरूहा/फरेहा/फरौटा** कहल जाइत छैक। फरहाक सम्मुख डाँड़ीमे लागल काठक अर्द्धवृत्ताकर अपेक्षाकृत छोट टुकड़ीकें **माँगी/माड़ी/माथा/मथवा** कहल जाइत छैक। डंटाक मध्य भागमे बान्हल मोट सूत सदृश वस्तुकें **ताँत/ताँति/ताँती** कहल जाइत छैक। ई माँगी ओ फरहाक उपरका भागपर तानल रहैत छैक। ताँति बड़दक रीढ़ लगक एकटा नससँ तैयार कयल जाइत अछि जकरा **पाढ़ि/पाढ़ी** कहल जाइत छैक। पाढ़िकें पानिमे फुलाय, चीरि, ओकर तन्तुकें अमेठैत संयुक्त कयलासँ ताँति बनैत छैक। ताँतिकें गोल कऽ भिड़िआओलापर बनल पिण्डकें **शंखा** कहल जाइत छैक।

धुनकीमे लागल ताँतिक दोसर छोर फरहाक उदग्र भागसँ दू-तीन इंच नीचा दिस दोहराओल ताँतिक मुन्हीमे फँसाओल रहैत छैक। दोहरा ताँतिक हेतु **बद्धी** शब्दक व्यवहार अछि। दोहरा ताँति डंटाक छोरपरक छेदसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एकहरा ओ दोहरा ताँतिक मिलनविन्दुकें **गीठ** कहल जाइत छैक।

फरेहाक गोलीय भागपर ताँतिक साक्षात् घर्षणसँ काठकें बचयबाक हेतु ओकर ऊपरी सतह पर करीब दू आङुर चाकर चामक टुकड़ी लागल रहैत छैक। एकरा **पुछेट/पुछेटा/पुछैटा/पुछौटा/पछौटा/पुशटैल** (धि.) कहल जाइत छैक। पुछैटाक एकटा छोर फरहाक ऊपरी भागक छेदमे देल बाँसक कीलसँ सम्बद्ध रहैत छैक आ दोसर छोर दोहरा ताँति द्वारा डंटामे फरहाक गोलीय भागसँ थोड़ हटिकऽ बान्हल रहैत छैक। पुछौटाकें तानल रखबाक हेतु दोहरा ताँतिमे एकटा लकड़ीक कील लगाय मेड़ देल जयबाक व्यवस्था रहैत छैक। एहि कीलकें **बीड़ी/बिड़िया** कहल जाइत छैक। बीड़ी ओ दोहरा ताँतिसँ बनल पुछौटाकें कसबाक व्यवस्थाकें **अम्हेरी** कहल जाइत छैक। माँगीक परितः लोहक पत्तर लागल रहैत छैक।

धुनकीकें पकड़बाक हेतु फरहाक मध्यवर्ती दुइ गोट छिद्र ओ डंटामे बान्हल रस्सीकें **हत्था/हथा/हथरा/हथकर/हथगर/हथहर/हथरस** कहल जाइत छैक।

धुनकीक ताँतिपर चोट कऽ कम्पन करयबाक हेतु प्रयुक्त काठक करीब एक

फुट नाम औजारकेँ **जस्ता/दस्ता/जिस्ता/दिस्ता** कहल जाइत छैक। एकर मध्यवर्ती भाग बेलनाकार होइत छैक तथा दूनू छोरपर गदा सदृश गोल पिंड बनल रहैत छैक।

तूरकेँ पीटिकऽ ओकरा हल्लुक करबाक धुनिञाक फट्ठीक दंडकेँ **गऽज/डंटा** कहल जाइत छैक।

तगाइक हेतु धुनिञा लोहक पैघ सुइक व्यवहार करैत अछि।

उत्पादन : धुनिञा संश्लिष्ट तूरकेँ पहिने नोंचि-नोंचि कऽ पृथक् करैत अछि। पश्चात् गज द्वारा ओकरा पीटि कऽ गर्दा आदिकेँ झाड़ि लैत अछि। बामा हाथकेँ हथकरमे घुसाय डंटा पकड़ि जमीनसँ कने ऊपर डंटा ओ ताँतिकेँ समानान्तर रखैत तूरक ऊपरी सतहसँ ताँतिकेँ संस्पर्श करबैत ताँतिपर जिस्तासँ चोट करैत अछि। ताँतिक कम्पनसँ ओकर सम्पर्कमे आयल तूर सभक तन्तु पृथक् पृथक् भऽ जाइत छैक। तूरक पृथक्कृत तन्तु सभकेँ **फाहा** कहल जाइत छैक। तूरक फाहा बनयबाक क्रिया **धुनब/धूनब** होइत अछि। धुनलापर तूरक जे अत्यन्त हल्लुक फाहा सभ हवामे हेलैत रहैत छैक से **पम** (**लोकोक्ति:-थोड़े गिया उड़न-पुरनमे थोड़े गिया पम। थोड़े गिया धुन लपेटन थोड़े लिया हम।।)/पम्ह/पम्ही** कहल जाइत छैक। धुनबाक क्रममे जे तूर एम्हर-ओम्हर उड़ि जाइत छैक, से **उड़न-पुरन** कहल जाइत छैक। हथकड़क रस्सीसँ हाथकेँ कटबासँ बचयबाक हेतु हथकड़मे धुनबाक काल लपेटल तूरकेँ **लपेटन** कहल जाइत छैक। धूनल तूरक ढेरीकेँ **गोठि/गोठी** कहल जाइत छैक।

धुनिञा काते-कात तीन दिस सीयल दोहर वस्त्रमे तूर ओछाय वस्त्रक दूनू तह ओ तूरकेँ ताग द्वारा सम्बद्ध करैत अछि। काते कात तीन दिस सीयल दोहरकेँ **खोल/खोला** कहल जाइत छैक। एकरा दर्जी तैयार करैत अछि। खोलमे धूनल तूर ओछयबाक क्रिया **भरब** होइत अछि। तूर भरल खोलमे दूर-दूरपर सीबाक व्यापार **तगाइ/टँकाइ/गथाइ** होइत छैक। खोलमे तूर भरिकऽ तगाइ करबाक क्रिया सेहो **भरब** सैह होइत अछि।

तगाइक प्रभेद : खोलमे तूर भरि कऽ सूचीक्रिया द्वारा वस्त्र ओ तूरकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **तागब/टाँकब/गाँथब** होइत अछि। धुनिञा अनेक प्रकारक तगाइक उपयोग करैत अछि।

1. **पोखरिया**-मध्य भागमे छोट सन वर्ग ओ तकर परितः थोड़े-थोड़े दूरी पर क्रमशः वर्गाकार तगाइक प्रभेद **पोखरिया** कहल जाइत छैक।
2. **लहेरिया**-वस्त्रक सम्मुखीन कोनाकेँ तागि कऽ चारिटा त्रिभुजाकार घर बनाय चारू त्रिभुजमे उपरका दूनू भुजाक समानान्तर तगाइकेँ **लहेरिया** कहल जाइत छैक।

3. **बदामी**-वस्त्रक चारू भुजाक मध्यवर्ती विन्दुकेँ मिलबैत तागि कऽ बनल चतुर्भजक भुजा सभक समानान्तर केन्द्राभिमुखी तगाइकेँ **बदामी** कहल जाइत छैक।
4. **चानपंखा**-वस्त्रक केन्द्रपर वृत्ताकार तगाइ कऽ ओकर परितः तागक अनेक बाह्यवृत्तसँ युक्त तगाइकेँ **चानपंखा** कहल जाइत छैक।
5. **बरफी/बर्फी/सकरपाला**-वस्त्रक नामानामी एवं चौड़ाचौड़ी तागक समानान्तर रेखासँ युक्त तगाइकेँ **बर्फी/सकरपाला** कहल जाइत छैक।

एकर अतिरिक्त कपड़ाक सम्पूर्ण भागकेँ अनेक त्रिभुजाकार अथवा चतुर्भुजाकार क्षेत्रमे बाँटि प्रत्येक भागक भुजाक समानान्तर तगाइ कयल जाइत छैक । एहि तगाइ सभकेँ घरक संख्याक अनुसार **तिनघरबा,पचघरबा, सतघरबा** आदि कहल जाइत छैक।

दूर-दूरपर डोरा देल तगाइकेँ **छेहर** कहल जाइत छैक। तगबा काल अँउठा द्वारा तूरकेँ ससारि सुइ पैसयबाक हेतु रिक्त स्थान बनयबाक क्रिया **बेरायब** होइत अछि। सीबाक दोषेँ तूर सभक अनपेक्षित स्थानपर जमा भऽ जयबाक क्रिया **गुलठिआयब** होइत अछि।

धुनिञाक तूर धुनबाक मजदूरीकेँ **धुनाइ** ओ सूची-क्रियाक मजदूरीकेँ **तगाइ** कहल जाइत छैक।

तूर भरल छोट ओ मोट आसनकेँ **गद्दा** कहल जाइत छैक। छोट ओ अपेक्षाकृत पातर गद्दाकेँ **गद्दी** कहल जाइत छैक। मोट ओ मोलायम गद्दीकेँ **गदगर/गद्दीदार** कहल जाइत छैक। ओछाओनक तरमे देबाक करीब चारि हाथ नाम ओ अढ़ाइ हाथ चाकर गद्दीकेँ **तोशक** कहल जाइत छैक। एही आकृतिक करीब सेर भरि तूर भरल वस्तुकेँ **दोलाइ/सिड़क/सीड़क/सीड़ग/तुराइ** कहल जाइत छैक। तीन सेर धरि तूर भरल सीड़ककेँ **रजाइ/नेहाली/लेहाली** कहल जाइत छैक। पाँच-छओ सेर तूर भरल रजाइकेँ **लेहाफ/लिहाफ** कहल जाइत छैक।

सुतबाकाल माथ तर लेबाक चाकर ओ छोट, मध्यमे बिनु टाँकल गद्दीदार वस्तु **तकिया/तकेया/गड़ुआ/गेड़ुआ/बलिस्ता/बालिस्ता** कहल जाइत छैक। बेलनाकार पैघ गेड़ुआकेँ **मसनद/मसलङ/मसलन्द/मसलन** कहल जाइत छैक।

गरेड़ी

बाङक तन्तुसँ तैयार सूती वस्त्रकेँ प्राचीनकालमे कार्पासिक **वस्त्र** कहल जाइत छल। प्राचीन मिथिलामे व्यवहृत कार्पासिक वस्त्रक अतिरिक्त सरोम वस्त्र, क्षौम वस्त्र, कौशेय वस्त्र, कुश वस्त्र, कृमिज वस्त्र, मृगलोमज वस्त्र, वृक्षत्वक्संभव वस्त्र

ओ आविक वस्त्रक उल्लेख भेटैत अछि (विद्यापति ठाकुर, म.म.डा.उमेश मिश्र, पृ. ७३-७४)। मुदा सम्प्रति कार्पासिक ओ आविक वस्त्रक अतिरिक्त आन कोनो वस्त्रक व्यवसायमे जातीय आधार नहि देखल जाइत अछि। आविक वस्त्रकें **ऊनी** वस्त्र कहल जाइत छैक। ऊनी वस्त्रक उत्पादनक हेतु **भेड़** नामक पशुविशेषकें पोसब, ओकर केसकें काटि, तूमि, धुनिकऽ सूत तैयार करब एवं ओहि सूतसँ जाड़क हेतु उपयोगी कम्बलादि बनयबाक व्यवसायमे जाहि जाति विशेषक एकाधिकार देखल जाइत अछि से **गरेड़ी** कहल जाइत अछि।

आधार सामग्री : गरेड़ीक मुख्य आधार सामग्री थिक ऊन। ऊन **भेड़/भेंड़/भेण** नामक पशुविशेषक सम्पूर्ण शरीरकें आच्छादित कयने केशकें कहल जाइत छैक। नर भेड़कें **भेड़ा/भेणा** आ मादा भेड़कें **भेड़ी/भेंड़ी/भेणी** कहल जाइत छैक। भेड़क बच्चाकें **पठरू/बकरू/पठेर** कहल जाइत छैक। नर पठरूकें **पाठा** आ मादा पठरूके **पाठी** कहल जाइत छैक। जवान भेड़ाकें **पेड़ार** कहल जाइत छैक।

मिथिलाक देसी भेड़क प्रभेद **देसाउर/देसवाली** कहल जाइत अछि। एकर शरीरक आकृति नाम होइत छैक। भुट्ट भेड़क प्रभेद **बरेड़ा** कहल जाइत अछि। भेड़क एकटा पर्वतीय प्रभेदक नाडरिमे चर्बी जमा होइत रहैत छैक । एकरा **दुम्मा** कहल जाइत छैक।

जाहि भेड़क कान छोट होइत छैक, ओकरा **लिटिया/लुट्ट** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट कानवला भेड़कें **गुज्जा** कहल जाइत छैक। अण्डकोषरहित भेड़ाकें **बाङर/इनोह** कहल जाइत छैक।

जाहि भेड़क सम्पूर्ण शरीरक रोआँ एके रंगक रहैत छैक ओकरा **एकवर्णा/सुकरी/ सुकार** कहल जाइत छैक। अनेक रंगक रोआँसँ युक्त भेड़कें **फुटार** कहल जाइत छैक। एकवर्णा भेड़ सामान्यत: उज्जर,कारी ओ गोला रंगक होइत अछि। उज्जर रंगवला भेड़कें **बलाह** कहल जाइत छैक। गोला रंगवला भेड़कें **लो/लोह/लोही/लोहिया** कहल जाइत छैक। जुआयल भेड़क रोआँ विवर्ण भऽ जाइत छैक। एहन भेड़कें **धुसरा** कहल जाइत छैक।

फुटार भेड़क अनेक प्रभेद होइत छैक। ठाम-ठाम कारी आ ठाम-ठाम उज्जर रंगक रोआँसँ युक्त भेड़कें **चितकबरा/चितकाबर/कबरी/काबर/चित्ता** कहल जाइत छैक। जाहि भेड़क सौंसे देह उज्जर रहैत छैक मुदा आँखि ओ कान लग कारी रहैत छैक, ओकरा **भौंरा/भौंरा/भौंर** कहल जाइत छैक। पेट ओ मुँह लग कारी तथा पीठपर उज्जर रोआँसँ युक्त भेड़कें **डेड़बर** कहल जाइत छैक। पेट ओ मुँह लग उज्जर तथा पीठपर कारी रोआँसँ युक्त भेड़कें **कासर** कहल जाइत छैक। मूड़ीक सम्पूर्ण भाग कारी एवं सम्पूर्ण शरीर उज्जर रंग रहने भेड़कें **बाहुर** कहल जाइत छैक।

भेड़क समूहकें **झुण्ड/हेड़/जेड़/जेल**(ग्रि.)/**सहेर**(ग्रि.)कहल जाइत छैक। बीसटा भेड़क समूहकें **लेंहड़**, एक सय भेड़क समूहकें **बाग**, चारि-पाँच सय भेड़क समूहकें **गेंहड़** कहल जाइत छैक। भेड़क समूहक अपना सरदारक अनुगमनक प्रवृत्तिकें **भेड़िया धसान** कहल जाइत छैक। समूहमे आगू-आगू चलऽवला भेड़कें **लागनि/लखिया** कहल जाइत छैक।

भेड़कें दुब्भी, मोथा, सामी, दहिया आदि घास बेसी प्रिय होइत छैक। बरसाती खऽढ़ खयलासँ भेड़कें ग्रस्त करऽवला बिमारीविशेष **जहदा** होइत छैक।

गरेड़ी भेड़कें कातिकसँ चैत धरि विभिन्न चओरमे चरयबाक हेतु लऽ जाइत अछि। भेड़कें हाँकि कऽ आगू दिस बढ़यबाक व्यापारकें **हक्का/हाँका** कहल जाइत छैक। चरयबाक हेतु भेड़ सभकें इतस्तत: टहलयबाक क्रिया **बहटायब** होइछ। रात्रिकालमे गरेड़ी अपन भेड़क संग जाहि स्थानपर ठहरैत अछि, ओकरा **अड़ानी/अड्डा/बथान** कहल जाइत छैक। बथानपर रहनिहार गरेड़ीकें **बथनिआ** कहल जाइत छैक। चराकऽ आनल भेड़ी सभकें बथानपर गोलिअयबाक क्रिया **बथनायब** होइत अछि। बथानपर बैसल भेड़ी सभकें प्रस्थानक हेतु ठाढ़ करयबाक क्रिया **खभायब** होइत अछि।

भेड़क काटल केशकें **ऊन/ऊना** कहल जाइत छैक। एहिमे स्थित भेड़ीक चर्मतन्तुकें **रुस्सी** कहल जाइत छैक। केश कटबाक क्रिया **खउरब** (**प्रसिद्ध कहबी:- मरला भेड़ खउरला बौनु**) होइत अछि। भेड़कें कातिक, फागुन आ अषाढ़मे खउरल जाइत छैक। परस्पर सम्बद्ध ऊनकें हाथसँ पृथक् करबाक क्रिया **चूड़ब** होइत छैक। चूड़ल ऊनक असम्बद्ध तन्तुकें **रेशा/फाहा** कहल जाइत छैक। रेशाकें चरखा पर कटलासँ ऊनक सूत सदृश वस्तु बनैत छैक। ई चर्खाक टाकु परसँ शंखाकार पिंडक रूपमे भेटैत छैक। एकरा **कुखरी/खुखरी/गुल/गेठ** कहल जाइत छैक। दूटा कुखरीक छोर पकड़ि ऊनकें दोहरा कऽ बनाओल गोल पिंड **भिरौड़ी** कहल जाइत छैक। पैघ भिरौड़ीकें **भिरौड़ा** कहल जाइत छैक। सूतमे स्थान-स्थानपर गोलिआयल अनपेक्षित ऊनक मात्राकें **फुटका/फुटकी** कहल जाइत छैक।

आइकाल्हि कश्मीरसँ आयातित अनेक प्रकारक ऊनक कपड़ा सेहो बनैत अछि, मुदा एहन कपड़ा बनयबाक कोनो जातीय आधार नहि छैक। आयातित ऊनमे सबसँ नीक प्रभेद **पसमीना** कहल जाइत छैक। पसमीनासँ अधलाह ऊनक प्रभेद **मैरीनो** होइत अछि। पसमीना ओ मेरीनोक मिश्रणकें **नीम पसमीना** कहल जाइत छैक। आयातित ऊनक सबसँ रुक्ष प्रभेद **पट्टू** होइत अछि।

औजार एवं बिनबाक प्रक्रिया : भेड़क केश कटबाक हेतु कचिया हँसुक आकृतिक दाँतविहीन हँसुकें **हँसुली** कहल जाइत छैक। केश कटबाक क्रममे भेड़क पैरमे बन्हबाक रस्सीकें **छान** कहल जाइत छैक।

भेड़कें नहा-सुखाकऽ केश काटल जाइत छैक, तथापि केशमे मैली बचले रहि सकैत छैक। एहि हेतु केशकें थोड़ेक-थोड़ेक मात्रामे लऽ पातर दंडसँ पीटल जाइत छैक। एहि दंडकें **पिटना** कहल जाइत छैक। पिटलासँ ऊनक रेशा पृथक्-पृथक् भऽ जाइत छैक। संश्लिष्ट ऊनक रेशाकें चूड़ि कऽ असम्बद्ध कऽ देल जाइत छैक। पश्चात ऊनकें धूनल जाइत छैक। ऊनकें धुनबाक यंत्रकें **धनुष/पीजन** कहल जाइत छैक। धनुष बाँसक फट्ठीसँ बनल रहैत छैक आ एहिपर ताँतिक डोरी लागल रहैत छैक । ऊनकें ताँतिक सम्पर्कमे राखि ताँतिपर चोट कयने ऊनक रेशा सभक पृथक् होयबाक क्रिया **लट फुटब** होइत छैक।

धूनल ऊनकें चर्खापर काटि कऽ सूत बनाओल जाइत छैक। ऊन कटबाक चर्खा सामान्ये चर्खा जकाँ होइत छैक। मुदा एकर टाकु अपेक्षाकृत अधिक मोट ओ पैघ होइत छैक तथा एकर मध्यमे एकटा बाँसक फोंफी लागल रहैत छैक जे माल्हक घर्षणसँ टाकुकें नचबैत छैक।

ऊनकें बिनबाक हेतु सूतक नामा-नामी समूहकें **तान/ताना/तानी** कहल जाइत छैक। ताना उठयबाक हेतु जमीनपर पाँच अथवा सातटा छोट-छोट खुट्टी गाड़ल जाइत छैक। एहि खुट्टी सभकें **गाली** कहल जाइत छैक। खुट्टीक दू अथवा तीन जोड़ एक-दोसरासँ दूर-दूर तथा परस्पर समानान्तर गाड़ल जाइत छैक। एकटा खुट्टी आगू दिस दूरपर गाड़ल जाइत छैक। एहि खुट्टी सभपर होइत सूतकें दौड़ैलासँ एक-दोसरापर नीचा-ऊपर मेल सूतक लड़ बनैत छैक। चारि संख्याकें एक **गंडा** कहल जाइत छैक। आवश्यकतानुसार गंडा पुरि गेलापर तानाकें खुट्टीसँ निकालि माँड़ अथवा खइरमे डुबाय सुखा लेल जाइत छैक। एहि क्रियाकें **पाइ करब** कहल जाइत छैक। पाइ कयने ऊन मजगूत भऽ जाइत छैक।

ताना-पाइ कयल ऊनकें दूनू छोरपर दूटा पातर ओ गोल फट्ठीक टुकड़ी पर तानल जाइत छैक। एही दूनू फट्ठीकें **बहतानी** कहल जाइत छैक। अगिला बहतानीक दूनू छोर मुन्हीक आकृतिक रस्सीमे फँसाओल रहैत छैक जे आगू दिस गाड़ल खुट्टासँ सम्बद्ध कऽ तानल रहैत छैक।

पछिला बहतानीक दूनू छोर एकटा एक हाथ नाम चौखूट काष्ठखंडमे कयल छेदमे लागल रस्सीसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि काष्ठखंडकें **सीजो** कहल जाइत छैक। एकर दहिना दिस खाटक पौआ जकाँ छेद कयल रहैत छैक, जकर सहायतासँ ओ भाग जमीनमे गाड़ल खुट्टीसँ सम्बद्ध रहैत छैक। सीजोक दोसर दिसुक छोर गोल रहैत छैक आ इहो एकटा खुट्टापर अड़कल रहैत छैक। वस्त्र बिनयलापर सीजोपर लपेटि लेल जाइत छैक।

तानाक सूत सभकें ऊपर-नीचा करबाक व्यवस्थाकें **बय** कहल जाइत छैक। बयमे लागल फट्ठीक टुकड़ीकें **बयलट/तगधरी** कहल जाइत छैक। तानाक निचला ओ उपरका भागक बीच देल करीब डेढ़ हाथक वंशदंडकें **टोंटा** कहल जाइत छैक। निचला तानाकें ऊपर ओ उपरका तानाकें नीचा कयलाक बाद दूनूक बीच स्थान बेरयबाक हेतु व्यवहृत चाकर ओ पातर फट्ठीकें **चपनी** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत बेसी चाकर चपनीकें **बड़ा चपनी** आ कम चाकर चपनीकें **छोटा चपनी** कहल जाइत छैक। तानामे चौड़ा-चौड़ी ऊन भरबाक हेतु जाहि फट्ठीपर ऊन लपेटल रहैत छैक, ओकरा **सरङा** कहल जाइत छैक। सरङापर लपेटल ऊनकें **भरनी** कहल जाइत छैक। भरनीकें ठोंकि कऽ सटयबाक हेतु कृपाणक आकृतिक काठक औजारकें **हत्था** कहल जाइत छैक। हत्थासँ भरनीपर आघातकें **ठोक** कहल जाइत छैक। बीनल वस्त्रक चौड़ाइकें तनने रहबाक हेतु ओकर तरऽवला भागमे लगाओल फट्ठीक टुकड़ीकें **टरना** कहल जाइत छैक। कलमक आकृतिक फट्ठीक टुकड़ी जाहिसँ भरनीकें अपन उचित स्थानपर आनल जाइत छैक से **कलम/खखोरना/खिखोरना/खिखोरनी** कहल जाइत छैक।

ऊनक दूटा वस्त्र खंडकें सीबाक हेतु पासयुक्त लोहक औजारकें **सुआ/सूगा** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : गरेड़ीक करघापरसँ उतरल करीब एक फुट चाकर वस्त्र खंडकें **पाट/पाटी** कहल जाइत छैक। दूटा छोट-छोट पाटीकें जोड़ि कऽ बनाओल पूजाक हेतु बैसबाक ऊनी वस्त्र विशेषकें **आसनी/आसन** कहल जाइत छैक। अनेक पाटसँ बनल करीब चारि-पाँच हाथ नाम ओ तीन हाथ चाकर ओढ़बाक हेतु प्रयुक्त ऊनी वस्त्रकें **कम्मर/कमरा/कम्बल** कहल जाइत छैक। छोट कम्मलकें **कमरी/कमरिया** कहल जाइत छैक। मोट ऊनी कम्बलकें **धूस/धुस्सा** कहल जाइत छैक। कम्बलेक आकृतिक कम चाकर ऊनी ओढ़नाकें **साल** कहल जाइत छैक। दोहरा सालकें **दुसाला/दोसाला** कहल जाइत छैक। वर्षासँ बचबाक हेतु ऊनक वस्त्रविशेषकें **घोघी/घोंघी/घोकड़ी/बुक्की** (**ग्रि.**) कहल जाइत छैक।

ऊनी वस्त्र बिनलाक बाद पानिक फुहार दऽ ओकरा पिटबाक क्रिया **मँजाइ** होइत अछि। मँजैयासँ सूत सभ घोकचि जाइत छैक।

तानी ओ भरनी अलग-अलग रहने वस्त्र छिद्रमय देखि पड़ैत छैक । एहन वस्त्रक बिनाइकें **छेहर** कहल जाइत छैक आ एहन वस्त्रकें **जलफाँफी/झलफाँफी** कहल जाइत छैक। तानी ओ भरनी सभ परस्पर सम्बद्ध रहने वस्त्रकें **गफ/गफ्स/गस/गस्सल** कहल जाइत छैक।

आयातित ऊनक पट्टाकें तूरें जकाँ काटि सूत बना जोलहाक करघा पर बीनि कऽ **चद्दरि, गलेबन्द/गुलूबन्द/गुलूबन** ओ अन्य वस्त्र बनैत अछि। आयातित ऊनक कम चाकर कपड़ाक एकटा प्रभेद **मलीदा** होइत अछि ।

निष्कर्ष :

तूर - सूत व्यवसाय एकटा संश्लिष्ट व्यवसाय थिक। एकर विभिन्न स्तरमे आधार-सामग्री, औजार ओ उत्पादनसँ सम्बद्ध सहस्राधिक शब्दक प्रयोग होइत अछि। एहि शब्दावलीमे देशी शब्दक प्राधान्य अछि मुदा संस्कृतभव ओ विदेशज शब्द सेहो प्रचुरतया गृहीत अछि।

एहि व्यवसायमे प्रमुख आधार सामग्री सूतक उत्पादनक कोनो जातीय आधार नहि छैक। सूतसँ वस्त्र तैयार करबाक व्यवसायमे जोलहा ओ पटवा जाति लागल अछि। दूनू जातिक औजार ओ प्रक्रियामे किञ्चित भिन्नताक संगहि शब्दावलीयोमे अन्तर होइत छैक। ग्रियर्सन ताँतीकें एहि व्यवसायसँ सम्बद्ध कहने छथि मुदा हुनक शब्द-संचयक क्षेत्र जोलहे धरि केन्द्रित रहलनि। जोलहाक व्यवसायमे तानी बनयबाक एवं बव भरबाक प्रक्रियाक संक्षिप्तीकरणसँ अनेक शब्द लोपक स्थितिमे अछि।

रङरेजक शब्दावलीमे डिजाइनक नित्य नव्यताक कारणें जनरुचिक अनुरूप पारम्परिक डिजाइन सभक नाम अप्रचलित भेल जा रहल अछि आ नव-नव डिजाइन सभ पारिभाषिक होयबासँ पूर्वहि स्थानापन्न भऽ जाइत रहल अछि।

धोबिक शब्दावलीमे क्रियापदक आधिक्य अछि। धोबि, धुनिया ओ गरेड़ीक शब्दावलीमे पारम्परिक शब्द सर्वाधिक सुरक्षित देखल जाइत अछि।

तूर-सूत व्यवसायमे दरजीक शब्दावली सर्वाधिक संक्रमणशील अछि। अन्तःप्रान्तीय सम्पर्क, सिनेमा ओ नव-नव फैशनक प्रादुर्भावक कारणें एहि व्यवसायमे नव शब्द तीव्रतासँ गृहीत होइत रहल अछि आ फैशनक परिवर्त्तनक संग लुप्त सेहो होइत रहल अछि। एहि व्यवसायक शब्दावलीमे अरबी, फारसी ओ अन्य विदेशज शब्द प्रचुरतया भेटैत अछि जे सम्प्रति अंग्रेजीक शब्द द्वारा स्थानापन्न भऽ रहल अछि।



पंचम अध्याय

धातु व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय मध्य धातु-व्यवसाय सेहो प्रमुख अछि। एहि व्यवसायकें जातीय आधार छैक आ एहिमे स्थानीय उपयोगिताक हेतु स्थानीय श्रमक सहयोगसँ उत्पादन कयल जाइत छैक। मुदा एहि व्यवसायमे आधार सामाग्रीक हेतु आयात पर आश्रित रहऽ पड़ैत छैक।

धातु व्यवसायमे लोहार, कसेरा ओ सोनार जाति लागल छथि। लोहार लोहसँ विभिन्न प्रकारक औजार एवं अन्य सामग्री बनबैत छथि। कसेरा ताम धातु एवं पित्तर ओ अन्य धात्विक मिश्रणसँ मृत्पात्रक विकल्पक उत्पादन करैत छथि। श्रम विभाजनक आधार पर काँसक बासन बनौनिहारकें **कसेरा** ओ तामक बासन बनौनिहारकें **तमेरा** कहल जाइत छैक। सोनार सोन ओ चानी नामक धातुसँ विभिन्न प्रकारक आभूषण बनबैत छथि। एकर एकटा उपजाति **ठठेरी** होइत अछि, जे गहनाक मरम्मती ओ धातुक बासनक बिक्रीसँ सम्बद्ध देखल जाइत अछि।

लोहार

कृषि ओ विभिन्न व्यवसायक हेतु लौह औजार, सामान्य उपयोगक विविध उपकरण एवं शस्त्रास्त्र बनयबाक व्यवसायी जाति लोहार होइत छथि। कतोक ठाम बरहीयो जातिक लोक लोहारक व्यवसाय करैत छथि। लोहारक व्यवसायकें **लोहारी/लोहकम** कहल जाइत छैक। लोहाक वस्तुकें सेहो **लोहकम** कहल जाइत छैक। लोहारक कार्यस्थलकें **लोहसारि/लोहसारी/पसरा/ लोहरपसरा/लोहरसारि /कमरसायर/कमरसारी/ कमरपसरा/मड़इ** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

आधार सामग्री

लोहारक आधार सामग्री **लोह/लोहा** नामक कठोर खनिज धातु होइत अछि। लोहारीमे सामान्यतः पुरान लोहाक टुकड़ी सभकें काटि-छाँटि कऽ वस्तु गढ़ल जाइत छैक। लोहाकें भूपटलसँ प्राप्त करब, परिशुद्ध करब ओ ढलाइ द्वारा खास आकृतिक बनायब मशीन-उद्योग द्वारा होइत अछि।

आयातित लोह दु प्रकारक होइत छैक। मोलायम लोहाक प्रभेदकें **कच्चा लोहा/भतलोह** कहल जाइत छैक। कठोर वस्तु पर आघात कयने ई ठेढ़ भऽ जाइत

छैक। कठोर लोहक प्रभेदकेँ **पक्का/पकिया लोहा** कहल जाइत छैक। आघात कयने ई टूटि जाइत छैक।

लोहारक व्यवसायमे लोहक **सुलिस** प्रभेदकेँ सर्वोत्तम मानल जाइत छैक। ई ने अधिक मृदु होइत अछि ने अत्यन्त कठोर। कच्चा लोहाक एकटा प्रभेद **धुरही/धुरी/धुरियाहा/बिलैंती** कहल जाइत छैक। ई कच्चा लोहासँ अपेक्षाकृत अधिक कठोर होइत अछि। एहिसँ सामान्य उपयोगक वस्तु बनाओल जाइत छैक।

दानेदार कणसँ युक्त लोहाक एकटा प्रभेद **बुन्दा/बुन्ना लोहा** कहल जाइत छैक। ई लौहकर्मक हेतु उपयोगी नहि बूझल जाइत छैक, कारण ई आघात पड़ला पर चूर्णमे बदलि जाइत छैक।

पक्का लोहामे **चुम्मुक, स्टील** आदि नीक लोह मानल जाइत अछि। ई सभ शस्त्रास्त्र बनयबामे उपयोगी होइत अछि।

बहुत दिनसँ राखल लोहामे हवा ओ पानिक प्रभावसँ ओकर उपरका सतह पर एकटा भुरभुराह सतह जमि जाइत छैक। एहि सतहकेँ **बीझ/जंग/जङ/मैली** कहल जाइत छैक। बीझ लगबाक क्रिया **बिझायब** होइत अछि। अत्यन्त पुरान लोहकेँ **लोहझाम** कहल जाइत छैक।

लोहाक चाकर फलककेँ **चदरा/चद्दर/चादर** कहल जाइत छैक। लोहाक गोल ओ नाम टुकड़ाकेँ **छड़** कहल जाइत छैक। लोहाक पैघ छड़केँ **लोहङ्गर** कहल जाइत छैक। विभिन्न प्रकारक मशीन समक टूटल-फूटल अङ्गसँ प्राप्त लोहकेँ कीनि कऽ एकत्र कयनिहार व्यवसायीकेँ **कबारी** कहल जाइत छैक। कबारीक भंडारगृहकेँ **कबारखाना** कहल जाइत छैक। कबारखानामे जमा कयल विभिन्न प्रकारक लोह समकेँ **कबार/लोहा-लक्कर** कहल जाइत छैक। लोहाक टुकड़ीसँ उपयोगी अंशकेँ काटि लेलाक बाद बचल खण्डकेँ **छाँट** कहल जाइत छैक। छाँटक समूहकेँ **कुच्चा** कहल जाइत छैक।

लोहाकेँ गर्म करबाक हेतु लोहार **कोइला/पथलकोइला** नामक कारी खनिज इंधनक उपयोग करैत अछि।

औजार : लोहारक व्यवसायमे मुख्य व्यापार अछि लोहाकेँ गर्म करब, पकड़ब, पीटब, काटब ओ छेदब। एहि समस्त व्यापारमे व्यवहृत विभिन्न औजारकेँ निम्नलिखित श्रेणी मध्य विभाजित कयल जा सकैत अछि। 1. गर्म करबाक औजार, 2. पकड़बाक औजार, 3. पिटबाक औजार, 4. कटबाक ओ छेद करबाक औजार तथा 5. सहायक औजार

1. गर्म करबाक औजार : लोहाकेँ गर्म करबाक हेतु लोहार माटि पर खूनल खाधिमे लोहा रखैत अछि। एहि खाधिकेँ **खद्धा/गड्ढा** कहल जाइत छैक। खद्धामे **कोइला/पत्थल कोइला** नामक खनिजमे आगि लगाकऽ ओकरा पजारल

जाइत छैक। कोइलाक आगिकेँ तीव्र करबाक व्यवस्थाकेँ **भाथि/भाथी/भाँथी** कहल जाइत छैक।

भाथीमे खाधिसँ किछु हटिकऽ काठक एकटा शंकुक आकृतिक पिंड रहैत छैक जकरा **मुड़िया/मुहला/मुहलाल** कहल जाइत छैक। एकर मध्य भागमे छेद रहैत छैक जाहिमे लोहक एकटा फोंक बेलनाकार दंड लागल रहैत छैक। एकर अगिला छोर खाधिमे पैसल रहैत छैक। लोहाक एहि बेलनाकार दंडकेँ **नरिया/नढ़िया/छुच्छी/फोंफी/चोंगा/चोंगी/फूंक** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। नरियाक अग्रभाग खाधिमे पैसल रहैत छैक। एकरा **मूड़ा/मूड़ी/मूढ़ी** (ग्रि.)/ **सालक** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

नरियाक परितः एकटा अन्य लोहाक बेलन मुरियासँ किछु नीचा धरि लागल रहैत छैक, जकरा **मटिहम/मठिहम/मठियम** कहल जाइत छैक। ई भाथीमे नरिया दऽ प्रवेश करऽवला हवाक निस्सरणक हेतु लगाओल जाइत छैक जाहिसँ ओम्हरुका हवाक दबावक कारणेँ भाथीक फटबासँ सुरक्षा होइत छैक। ग्रियर्सन नरियाक परितः लगाओल माटिक बेलनकेँ **आरन/अरनी/आर/मटिहम/मेदुम** कहने छथि। (**बिहार पीजैन्ट लाइफ,पृ.-87**)। पूर्वमे भाथीक नरिया माटिक होइत छल जकरा **मटिहम** कहल जाइत छलैक। लोहाक बेलन सहज उपलब्ध होयबाक कारणेँ आब माटिक बेलनक प्रयोग अप्रचलित भऽ गेल अछि आ मटिहम शब्द नरिया अथवा ओकर परितः देल लोहक फोंफीक हेतु प्रयुक्त होमऽ लागल अछि।

मुड़ियामे लोहाक नलीक विपरीत दिशामे तीनटा काठक तकथा नीचा-ऊपर सम्बद्ध रहैत छैक। बिचला तकथा मुड़ियामे बनल खतमे दृढ़तापूर्वक सम्बद्ध रहैत छैक। एकरा **जामतकथी** कहल जाइत छैक। जामतकथीक नीचा ओ ऊपरवला तकथा कब्जा द्वारा मुड़ियासँ सम्बद्ध रहैत छैक। एकरा दूनूकेँ **फ्रीतकथी** कहल जाइत छैक। सबसँ निचला तकथाक पछिला भाग किछु बेसी निकलल रहैत छैक। एकरा **एड़ा/पुछड़ा/पुछड़ी/पुछिया** कहल जाइत छैक। निचला ओ बिचला तकथाक मध्य भागमे चौखूट छेद रहैत छैक जाहिसँ होइत बाहरी हवा भाथीमे प्रवेश करैत छैक, मुदा ओकर भीतरी भागमे वाल्व व्यवस्था रहैत छैक,जाहिसँ पैसल हवा ओही छिद्र द्वारा बाहर नहि निकलि पबैत छैक आ मुड़ियामे लागल नली द्वारा कोइलासँ होइत दबावक संग बहरइत छैक। वाल्व व्यवस्थाकेँ **पंखा/पंखी/बेनिया/जिभिया** कहल जाइत छैक। तीनू तकथाक पृष्ठभाग मुड़िया सहित देशी चामसँ घेरल रहैत छैक जकरा **चरसा/छाल/खाल/चाम/चमड़ा** कहल जाइत छैक।

भाथीक बिचला तकथाक दूनू पार्श्वमे दूटा **हुक** लागल रहैत छैक। दूनू हुक पार्श्वमे गाड़ल दुइ गोट खुट्टामे लागल लौह-वलयमे फँसाओल रहैत छैक। एहि वलयकेँ **कोड़ा/कोरहा/कोँढ़ा/सुरसा** कहल जाइत छैक। दूनू खुट्टाक उपरका भागमे कान बनल रहैत छैक। दूनू कान पर एकटा वंशदंड अवलम्बित रहैत छैक।

एकरा **डण्टा/बरेड़ी** कहल जाइत छैक। एहि डण्टाक मध्य भागमे हुक लागल रहैत छैक जाहिमे नीचा दिस एकटा नाम वंशदंडक मध्य भागमे ठोकल सुरक्षा फँसाओल रहैत छैक। एहि नाम वंशदंडकें सेहो **डंटा** कहल जाइत छैक। ई कान परक डंटा पर समकोणिक रहैत अछि आ एकर पृष्ठभाग लोहक सिकड़ी द्वारा पुछड़ीसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि डंटाक दोसर छोरपर सेहो लोहक सिकड़ी लागल रहैत छैक, जकर अग्रभागमे एकटा लौहवलय लागल रहैत छैक। एहि वलयकें पकड़ि डंटाकें नीचा-ऊपर कयने लीवर व्यवस्थाक कारणें भाथीक निचला तकथा **ऊपर-नीचा** होइत रहैत अछि आ ओहिमे गेल वायु नरिया होइत खाधिक कोइला दऽ निकलैत रहैत छैक आ ओकर आगिकें प्रज्वलित करैत रहैत छैक।

भाथीक उपरका तकथाक ऊपर काँटी ठोकि ओहिपर वजन दऽ देने ओ शीघ्र दबि हवाकें निस्सरित करैत रहैत अछि। एहि हेतु प्रयुक्त वजनकें **जतना** कहल जाइत छैक। निचला तकथाक पुछड़ापर सेहो वजन दऽ देने ओ तकथा शीघ्र नीचा दबि बाहरसँ हवा खीचैत अछि। एहि हेतु प्रयुक्त वजनकें **पछुआ/पिछुआ** कहल जाइत छैक।

भाथीक समस्त अंगकें सम्बद्ध करबाक किया **भाथी सालब** होइत अछि। भाथी चलाकऽ अग्नि प्रज्वलित करबाक क्रिया **हौंकब** होइत अछि।

भाथीक खाधिमे देल कोइलाकें फोड़बाक हेतु अग्रभागमे कने टेढ़ लोहाक छड़सँ निर्मित औजारकें **अँकुड़ा/अँकुड़ी/अँकोड़ा/ओंकड़ा/ओंकड़ी** कहल जाइत छैक। जरल कोइलाकें खाधिसँ निकालबाक हेतु प्रयुक्त छिछलाह करछुक सदृश औजारकें **सावल** कहल जाइत छैक।

खाधिमे जरैत कोइलाक ताओसँ निवारणक हेतु खाधिक परितः लोहक चदरासँ बनाओल घेराकें **आर/आढ़** कहल जाइत छैक।

2. पकड़बाक औजार : लोहकें पकड़बाक हेतु अग्रभागमे लोल सन आकृतिवला लौह औजारकें **सड़सी/सँड़सी/सनसी** कहल जाइत छैक। एहिमे वक्र अग्रभागसँ युक्त दूटा लोहाक छड़ रहैत अछि। दूनूकें **पल्ला** कहल जाइत छैक। वक्र अग्रभाग लग दूनू छड़मे छेद रहैत छैक जाहिमे लोहाक गिट्टी दऽ ओकरा दूनूकें सम्बद्ध कयल रहैत छैक। ओहि गिट्टीकें **कील/खील** कहल जाइत छैक। चाकर ओ गोल लोलवला सड़सीकें **गहुआ/जमुरा/जमौड़ा/जम्बूर/जम्बूरा** कहल जाइत छैक। सोझ ओ पातर अग्रभागसँ युक्त सड़सी द्वारा पातर लोहक टुकड़ीकें पकड़ल जाइत छैक। एकरा **लाइग सड़सी** कहल जाइत छैक। मोट एवं सोझ लोलवला सड़सी मोट लोहकें पकड़बाक हेत व्यवहृत होइछ जकरा **बेलाइग सड़सी** कहल जाइत छैक। एकटा सड़सीक अग्रभाग पल्लापर समकोणिक मुड़ल रहैत छैक। एकरा **बकुली सड़सी** कहल जाइत छैक। पैप आकृतिक सड़सीकें **सड़सा** कहल जाइत छैक।

लोहक कोनो टुकड़ाकें स्थिर राखि ओहिपर काज करबाक हेतु प्रयुक्त चलानी औजारकें **बैस** (अं. Vice)/**बाँक** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन बैसक दूनू दिसुक मोट ओ चाकर लौह फलककें जकर बीच लोहाकें **फँसाओल** जाइत छैक, **पल्ला** कहने छथि। पल्ला जाहि पेंचक सहायतासँ आगू-पाछू ससरैत अछि, से **मुसरा/कबला** कहल जाइत छैक। मुसराकें परितः नचयबाक हेतु ओकर छोरपर लागल लोहक छड़कें सेहो **मुसरा/चलौनी/हातुल/हत्था/हथरा** कहल जाइत छैक। पेंच जाहि गूना पर काज करैत छैक ओकरा **छुच्छी/चोंगा/चोंगिया** कहल जाइत छैक। पल्ला जाहि स्प्रिंग द्वारा पृथक् कयल जाइत अछि ओकरा **कमानी** कहल जाइत छैक (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-88**)।

3. पिटबाक औजार : लोहाकें पिटबाक हेतु ओकरा चाकर माथवला ठोस बेलनाकार आधारपर राखल जाइत छैक। एहि औजारकें **नहाइ/निहाइ/नेहाइ** (**प्रसिद्ध कहबी:-सुन चोट नेहाइक माथा**)/नेहाय (सं. निपातिका)/ **लहाइ/लिहाइ/लेहाय /लेहाइ/घीमा** कहल जाइत छैक। नेहाइ माटिमे गाड़ल लकड़ीक पैप खण्ड पर गाड़ल रहैत छैक। एहि लकड़ीकें **ठेहा/ठीहा/ठीया/ ठेयूया/परकठ/परिकठ/परिकठा /परिकट्ठो/परियठ/गड़ियास** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

लोहाक फोंक ओ बेलनाकार वस्तु गढ़बाक हेतु लोलयुक्त नेहाइक उपयोग होइत छैक। एकरा **एकबाइ/एकाबे** कहल जाइत छैक। लोहाकें पिटबाक हेतु आधार रूपमे व्यवहृत चाकर ओ समतल ठोस लौह पिंडकें **चौरसा** कहल जाइत छैक।

बीचमे फोंक बेलनाकार लौह आधारकें **घनमुधी** (ग्रि.)/ **फिरीश** कहल जाइत छैक। करछु आदिक गँहीर भाग गढ़बाक हेतु प्रयुक्त फिरीशकें **कगना/कंगना/टुकिया/चुकिया** कहल जाइत छैक। तऽबक सतहकें गँहीर करबाक हेतु कम ऊँच ओ अधिक व्यासवला फिरीशकें **खन्नी** कहल जाइत छैक। परेग काँटीक माथ बनयबाक हेतु अनेक विभिन्न आकृतिक छेदसँ युक्त लोहक समतल टुकड़ाक उपयोग होइत छैक। एहि औजारकें **चपरीना/चपरीनी/चपरावन/ कान्डिल/हन्ना** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। एकरा फिरीशपर राखि एकर छेदमे लोहक छड़कें पिटलापर काँटीक माथ बनि जाइत छैक।

लोहाकें आधारपर राखि ओहिपर आघात करबाक हेतु व्यवहृत लोहक भारी पिंडसँ बनल औजारकें **हथौड़ी** कहल जाइत छैक। हथौड़ीक मध्यमे भूर रहैत छैक जाहिमे ओकरा पकड़बाक हेतु काठ अथवा बाँसक दंड लागल रहैत छैक। भूरकें **पास/छेद** तथा पकड़बाक दंडकें **बेंट** कहल जाइत छैक। हथौड़ीक आघातक फलककें **मुँह** कहल जाइत छैक। समतल फलकवला मुँहकें **पास** कहल जाइत छैक। नोंखगर फलकवला मुँहकें **लोल/बाल/बाइल** कहल जाइत छैक। पाससँ

आघात कऽ लोहकेँ असारल, हूरल ओ समतल कयल जाइत छैक। लोहकेँ नमारबाक हेतु बाइलसँ आघात करऽ पड़ैत छैक।

अत्यन्त छोट हथौड़ीकेँ **मड़िया/मड़ेया** कहल जाइत छैक। पैघ हथौड़ीकेँ **हथौड़ा** कहल जाइत छैक। हथौड़ाक अत्यन्त पैघ ओ भारी प्रभेद जे करीब दू-अढ़ाइ सेर ओजनक होइछ, से **घन/घनमुङरा/हामर/हैमर/लेहारि/लेहाउर** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत छोट घनकेँ **हथौड़** कहल जाइत छैक। लोहक पिंडकेँ गँहीर धँसयबाक हेतु गोलमुहाँ पासवला हथौड़ीकेँ **गोलमरिया/मर्त्तुल** कहल जाइत छैक। पैघ मर्त्तुलकेँ **मरतौल/मारतौल** कहल जाइत छैक। सामान्यतः हथौड़ीक एकटा फलक चौरस आ दोसर फलक बाइल होइत छैक। दूनू फलक चौरस रहला पर हथौड़ीकेँ **दुमुहाँ** कहल जाइत छैक।

हथौड़ीसँ आघात करबाक क्रिया **पीटब/डेङायब** होइछ। आघातकेँ **चोट** (प्रसिद्ध कहबी: सौ चोट सोनार के एक चोट लोहार के)/**डाड**, कहल जाइत छैक। सोझ ओ भारी आघातकेँ **ठाँइ** (सोनार के टुकटुक लोहार के ठाँइ) कहल जाइत छैक।

4. कटबाक ओ छेद करबाक औजार : लोहाकेँ कटबाक हेतु करीब छओ आङुर नाम ओ दुइ आङुर चाकर लौह औजारकेँ **छेनी/छैनी** कहल जाइत छैक। छेनीक अग्रभाग पातर ओ नोंखगर होइत छैक जकरा लोहापर ठाढ़ कऽ ऊपरसँ आघात कयने लोहा कटि जाइत छैक। कटबाक हेतु व्यवहृत तीक्ष्ण भागकेँ **धार/फल** कहल जाइत छैक। गर्म लोहकेँ कटबाक हेतु व्यवहृत छेनीकेँ **गरम छेनी** आ ठंढा लोह कटबाक हेतु छेनीकेँ **कच्चा छेनी/ठंढा छेनी** कहल जाइत छैक। गोल धारवला छेनीकेँ **गोल छेनी** कहल जाइत छैक। पातर ओ कम चाकर धारवला छेनीकेँ **कलम छेनी कहल** जाइत छैक। छड़ आदिकेँ कटबाक हेतु, बसुलाक कंठा गढ़बाक हेतु एवं लोहक सतहकेँ चकरयबाक हेतु करीब दू आङुर चाकर ओ तीन आङुर नाम आयताकार समतल फऽलवला छेनीकेँ **धरछेनी** कहल जाइत छैक।

लोहाक पातर चदराकेँ कटबाक हेतु करीब तीन आङुर नाम फऽलवला एवं सड़सीक आकृतिक **कैंचीक** व्यवहार होइत छैक। लकड़ीये जकाँ समतल पृष्ठवला लोहाक फलककेँ घर्षण द्वारा चिड़बाक हेतु व्यवहृत औजारकेँ **आरी** कहल जाइत छैक। एकर फऽल करीब दू आङुर चाकर, एक हाथ नाम तथा नीचा खुरदुरह होइत छैक। एकर फऽलक हेतु **ब्लेड** शब्दक व्यवहार होइत छैक। ब्लेड लोहेक एकटा फ्रेममे कसल रहैत छैक जकरा **हेक्सा** कहल जाइत छैक।

लोहाक टुकड़ीमे बनाओल रिक्त स्थानकेँ **घाट** कहल जाइत छैक। नीचा दिस घाट बनल करीब दू आङुर चाकर ओ चारि आङुर नाम लोहक औजारकेँ **ठाँसा** कहल जाइत छैक। लोहक छड़केँ कटबाक हेतु ठाँसाक घाटमे छड़केँ फँसाय ठाँसा

पर आघात कयने छड़ टुटि जाइत छैक। छड़केँ चौरसापर राखल चौखूट लौहखंड पर राखल जाइत छैक। एहि लौहखंडकेँ **कुटका/गुटका** कहल जाइत छैक।

लोहाक पातर टुकड़ीमे छेद करबाक हेतु करीब चारि आङुर नाम लोहक छेपहल औजारकेँ छेद करबाक स्थानपर ठाढ़ कऽ ऊपरसँ आघात कयल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **सुम्भा/सुम्हा** कहल जाइत छैक। एकर अग्रभाग किञ्चित नोंखगर ओ गोल होइत छैक। छोट आकृतिक एवं पातर अग्रभागवला सुम्हाकेँ **सुम्भी/सुम्ही/सुम्मी** कहल जाइत छैक। सुम्हा द्वारा छेद करबाक हेतु लोहाक टुकड़ीकेँ चौरसापर राखि छेद करबाक स्थानमे नीचाँसँ एकटा लोहेक गोल ओ फोंक टुकड़ी राखल जाइत छैक। एकरा **नट/ढिबरी/दरी** कहल जाइत छैक। दरीक बिचला भागमे छेदक बाद लोहक कटल टुकड़ी खसि पड़ैत छैक आ सुम्हाक अग्रभाग ओहिपर अटकि जाइत छैक। सुम्हा द्वारा कयल छेदकेँ वृत्ताकार करबाक हेतु ओहिमे सुम्हेक आकृतिक मुदा बेलनाकार पृष्ठवला औजारकेँ दऽ ठोकि देल जाइत छैक। छेदकेँ शुद्ध करबाक एहि औजारकेँ **टोपन/टोपना/बेना/बीड़** कहल जाइत छैक। छोट ओ पातर टोपनकेँ **टोपनी/बीड़ी** कहल जाइत छैक।

लोहाक मोट टुकड़ीमे छेद करबाक हेतु एकटा चलानी औजारक उपयोग होइत छैक। एकरा **कचला बरमा** कहल जाइत छैक। कचला बरमा द्वारा छेद करबाक हेतु दू ठाम क्रमशः दक्षिणावर्त ओ बामावर्त समकोणपर मुड़ल लोहक फ्रेमकेँ **गाछ** कहल जाइत छैक। गाछक निचला लौहखण्डपर रखबाक काठक आधारकेँ **गुटका/कुटका** कहल जाइत छैक। कुटकापर छेद करबाक हेतु आनल लोहकेँ राखि छेदक स्थानपर कचला बरमाक फल्ली राखि बरमाकेँ गाछमे कसि देल जाइत छैक। पश्चात् बरमाक हाथसँ पकड़बाक भागकेँ आगू-पाछू चलओलासँ ओकर फल्ली नचैत छैक आ लोहकेँ काटि छेद कऽ दैत छैक। छेदक क्रममे छेदक स्थानसँ जे पातर-पातर लौह कतरन निकलैत छैक ओकरा **कुन्नी** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन लोहाकेँ कटबाक हेतु जाहि बरमाक उल्लेख कयने छथि से प्रभेद सम्प्रति व्यवहारमे नहि देखल जाइत अछि। एहि बरमाक आकृति ओ तत्सम्बन्धी शब्दावली बढ़ईक बरमासँ मिलैत छैक (बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-87)।

ढिबरीक भीतरी भाग ओ बाल्टूक बाहरी भागमे क्रमिक वृत्ताकार खत सभकेँ **चूड़ी/गुना/गुनट/पेंच** कहल जाइत छैक। चूड़ी बनयबाक हेतु लोहाकेँ कटबाक औजारकेँ **डाइ**(अं.)/**बादियाः**(ग्रि.)/**बदीया** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। एहिमे लोहाक एकटा छड़क मध्य भाग चाकर कयल रहैत छैक। चाकर भागमे चौखूट घाट बनल रहैत छैक। घाटमे खतयुक्त लोहाक दूटा टुकड़ी लागल रहैत छैक जकरा **कुटका/गुटका/गोटी/ठाँसा** कहल जाइत छैक। गुटकाकेँ घाटमे कसबाक पेंचकेँ **चुटकी** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। बैसपर कसल लोहाक छड़केँ दूनू गुटकाक बीच

फँसाय डाइकेँ परित: नचौलासँ छड़मे चूड़ी कटैत चल जाइत छैक। डिबरी आदिक भीतरी भागमे चूड़ी कटबाक हेतु गूनट युक्त लोहक छड़केँ **टप** (अं. टैप)। **पेचकस** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

टपकेँ लोहक फोंक बेलनाकार भागक मध्य पैसि डाइकेँ परित: नचौलासँ ओहिमे गूना बनि जाइत छैक।

5. सहायक औजार : उपरोक्त वर्गीकृत औजार सभक अतिरिक्तो अन्य अनेक औजार लोहारक व्यवसायमे सहायक होइत अछि।

लोहाक गोल टुकड़ी कटबाक हेतु चेन्ह करबाक औजारकेँ **परकाल** कहल जाइत छैक। एहिसँ लोहाक बाहरी भागक मोटाइ अथवा गोलाइ सेहो नापल जाइत छैक। लोहाक वस्तुक भीतरी भागक गोलाइ नपबाक हेतु बाहर दिस अर्द्धचन्द्राकार फलकसँ युक्त परकालकेँ **कम्पास** कहल जाइत छैक। लोहाक चदरा आदिकेँ कटबाक हेतु चेन्ह करबाक लोहक नोखगर टुकड़ी **खिसनी** कहल जाइत छैक। खिसनीसँ लोहपर उखारल चेन्हकेँ **चेन्ह/चाक/चाकी/रबीस/डरीर** कहल जाइत छैक। **चेन्ह-चाक** युग्म शब्दक रूपमे सेहो व्यवहृत अछि। लोहाक लम्बाइ नपबाक हेतु इंच ओ फुटमे चिह्नित काठक दू फूटक औजारकेँ **दुफिट्टा** कहल जाइत छैक। तीन फुटक एहने औजारकेँ **गऽज** कहल जाइत छैक। पैघ लम्बाइ नपबाक हेतु कपड़ाक चलानी फीताकेँ **टेप** कहल जाइत छैक।

लोहाकेँ गर्म कऽ पिटला उत्तर ओकर उपरका भागक मैली पृथक् भऽ जाइत छैक। एहि मैलीकेँ **फुलिया** कहल जाइत छैक। फुलियाकेँ झाड़बाक हेतु खजूरक डल्लीक जड़िवला भागकेँ चूड़ि कऽ बनाओल औजारकेँ **कूच/कूची/कुच्ची** (प्रसिद्ध कहबी: लोहारक कुच्ची, आगि-पानि दूमू) कहल जाइत छैक।

लोहाकेँ पनिअयबाक हेतु ओकरा गर्मेमे पानिमे डुबा देल जाइत छैक। एहि हेतु लोहार जाहि बासन अथवा माटिमे खूनल खाधिमे पानि रखैत अछि, ओकरा **लबेर/लबेरी/लाबर** (ग्रि.)/**नबेर/नमेर/नबेरी/नमेरी/चाहा/पनचाहा/पनिचाहा/पनहण्डा** (ग्रि.)/**पनिहण्डा** कहल जाइत छैक। जाहि पाथर पर घसिकऽ लोहार अपन छेनी आदि औजार ओ अन्य उत्पादित औजारक धारकेँ तीक्ष्ण करैत अछि, से **पत्थल** कहल जाइत छैक।

हँसु, सरौता, कैंची आदि औजारक धारकेँ तीक्ष्ण करबाक हेतु लोहार ओकरा एकटा पाथरपर घर्षण करबैत अछि। एहि पाथरकेँ **सानपत्थर/चकरसान** कहल जाइत छैक। सान पत्थर अत्यन्त पातर ओ वृत्ताकार होइत अछि। ई चपड़ा ओ चौड़ीकेँ बालुक संग गर्म कऽ जमओला उत्तर बनैत छैक। एकर मध्यभागमे गोल छेद रहैत छैक। एहि छेदमे एकटा काठक बेलन लागल रहैत छैक। एहि बेलनकेँ

कुन्दा/कुन्द/कून कहल जाइत छैक। कुन्दाक दूनू छोर माटिमे गाड़ल बाँसक दूटा खुट्टापर अवलम्बित रहैत छैक। कुन्दापर रस्सी अथवा साइकिलक चेन लपेटि ओकर दूनू छोरकेँ क्रमश: आगू-पाछू घिचलासँ पत्थर वामावर्ती ओ दक्षिणावर्ती दिशामे घुमैत छैक। घुमैत पत्थरकेँ धारसँ संस्पर्श करयलासँ ओ चिक्कन ओ तीक्ष्ण भऽ जाइत छैक।

लोहक खुरदुराह सतहकेँ रगड़िकऽ चिक्कन करबाक हेतु एवं दाँतदार औजारक दूटा दाँतक बीचवला भागकेँ पृथक्कृत करबाक हेतु खुरदुराह सतहसँ युक्त लोहक छड़क सदृश औजारकेँ **रेती** कहल जाइत छैक। पैघ रेतीकेँ **फाइल** (अं.) कहल जाइत छैक। बेलनाकार फलकवला रेतीकेँ **गोलरेती/गोलक/गोलख** कहल जाइत छैक। तीन पृष्ठवला रेतीकेँ **तेपहल/तिनपहल/तिरपहला/तेपहला/तिनपहला/तिकोनी रेती** कहल जाइत छैक। आयताकार फऽलवला रेतीकेँ **चौपहल//चोरसा/चौरसा/चौरस रेती** कहल जाइत छैक। आधा पृष्ठ गोल ओ आधा पृष्ठ आयताकार रहलापर रेतीक प्रभेदकेँ **निमगीरिद** कहल जाइत छैक।

लोहाक छड़क अग्रभागकेँ मोड़बाक हेतु अग्रभागमे घाटयुक्त लोहाक चौरस छड़सँ बनाओल ओजारकेँ **डाइ** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : लोहार लोहाक विभिन्न प्रकारक वस्तु सभ बनबैत अछि। वस्तु बनयबाक हेतु लोहकेँ आगिमे गर्म करबाक क्रिया **धिपायब** होइत अछि। धीपल लोह पर आघात द्वारा ओकर लम्बाइकेँ बढ़यबाक क्रिया **नमारब/असारब** होइत अछि। असारिकऽ अत्यन्त पातर कयल अल्प चाकर चदराक टुकड़ीकेँ **पत्तर** कहल जाइत छैक। लोहाक नाम टुकड़ीकेँ आघात द्वारा छोट करबाक क्रिया **हूरब** होइत अछि। आघात करबाक क्रिया **पीटब** होइत अछि। पीटिकऽ अत्यन्त पातर कयल छड़क खूब नाम टुकड़ीकेँ **तार** कहल जाइत छैक। आघात द्वारा फलकक चौड़ाइकेँ बढ़यबाक क्रिया **चकरायब/चपरायब** होइत अछि। एकटा टुकड़ीकेँ अनेक खण्डमे बँटबाक क्रिया **काटब** होइत अछि। मध्यमे रिक्त स्थान बनयबाक क्रिया **छेदब** होइत अछि। छेद कयला उत्तर रिक्त स्थानसँ पृथक् भेल टुकड़ीकेँ **गिट्टी** कहल जाइत छैक। सद्य: कयल छेदक दोसर दिस चारू कात अल्प उनरल भागकेँ **बाबरी** कहल जाइत छैक। छेदकेँ बन्न करबाक व्यवस्थाकेँ **रिपीट** कहल जाइत छैक। फलकक कोरकेँ समतल रखैत ओकरा नामानामी खण्डित करबाक क्रिया **चीड़ब** होइत अछि।

लोहक औजार सभक तीक्ष्ण भागकेँ **धार/फल** कहल जाइत छैक। धारक तीक्ष्णीकरणक क्रिया **धार बनायब** होइत अछि। पाथरपर रगड़िकऽ धारक तीक्ष्णीकरणक क्रिया **पिजायब/पथरायब** होइत अछि। रेतीसँ रगड़िकऽ धारक तीक्ष्णीकरण क्रिया **रेतब** होइत अछि। रगड़ि-रगड़ि कऽ कटबाक क्रिया सेहो **रेतब** होइत अछि। कचिया हँसु, आरी आदिक दंतपंक्ति सदृश धारकेँ **दाँत** कहल जाइत छैक। कचिया हँसुक

धारपर दंतपंक्ति सदृश आकृति उखारबाक क्रिया **धार कूटब** होइत अछि। सान पत्थर पर धारकेँ रगड़िकऽ तीक्ष्ण करबाक क्रिया **सान चढ़ायब** होइत अछि।

लौह औजार सभक धारकेँ लाल गर्म कऽ पिटलाक बाद पानिमे डुबयबाक क्रिया **पनियायब/पानि चढ़ायब** होइत अछि। पानि चढ़ाओल धारकेँ **पनिगर** कहल जाइत छैक। लाल गर्म लोहकेँ पानिमे डुबओलासँ लोहपर चढ़ल पानिकेँ **कड़ा** ओ मलिन भेल लोहकेँ पानिमे डुबओलासँ लोहपर चढ़ल पानिकेँ **नरम** कहल जाइत छैक। लाल गर्म लोह किञ्चित ठंढयला पर हरियर रंग धारण कऽ लैत छैक। एहि स्थितिमे पानिमे डुबओलासँ ओहिपर चढ़ल पानिकेँ **तीसीफूल/दोरस/दोरस्सा** कहल जाइत छैक। लोहक प्रकृति एवं औजारक हेतु उपयोगी कठोरताक अनुरूप ओहि पर कड़ा अथवा नरम पानि चढ़ाओल जाइत छैक। पानि चढ़ल लोहक तन्यतामे कमी आबि जाइत छैक। पानि चढ़ल लोहकेँ गर्म कयला उत्तर ओहिमे पुनः तन्यता आबि जयबाक क्रिया **पानि उतरब** होइत छैक। धातुकेँ गर्म कऽ ओहिमे तन्यता अनबाक क्रिया **पानि उतारब** होइत अछि।

लोहारक व्यवसायमे निःसार द्रव्यक रूपमे जरल कोइलाक परस्पर संश्लिष्ट पिंड भेटैत अछि। एकरा **झामा** कहल जाइत छैक।

लोहार द्वारा निर्मित विभिन्न सामग्रीमे अधिकांश अग्रिम उत्पादनक हेतु अछि। ओकर समस्त उत्पादनकेँ निम्नलिखित श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत छैक– 1. सामान्य उपयोगक सामग्री 2. व्यवसायोपयोगी सामग्री 3. शस्त्रास्त्र एवं 4. विविध सामग्री

1. सामान्य उपयोगक सामग्री : सामान्य गृहोपयोगी सामग्रीमे तऽब, झँझ़, गऽज, छोलनी, डब्बुक, करछु, चुट्टा, कराह, लोहिया, छन्ना/ताइ आदि लोहक भानस करबाक औजार सभक उत्पादन लोहारी व्यवसाय द्वारा होइत अछि। (**व्याख्याक हेतु द्रष्टव्य अध्याय-6**)। चुट्टाकेँ कतहु-कतहु दसपना सेहो कहल जाइत छैक। आयातित लोहिया बुन्दा लोहाक होइत अछि। लोहार लोहक चदरासँ अनेक प्रकारक छोट-पैघ लोहिया बनबैत अछि। गऽजकेँ मुसलमान **सीक/सीख/सिखचा/ सीखचा** कहैत छथि। दूध औंटबाक हेतु प्रयुक्त लोहक एक बीत व्यासक गोल ओ गँहीर पात्रकेँ **तबका** कहल जाइत छैक।

तरकारी उतारबाक हेतु काष्ठाधारमे लागल चाकर ओ टेढ़ फऽलवला हँसूकेँ **फौसुल/फाँसु/पहसुल/फहसुल/बैठी/पघरिया हँसु** कहल जाइत छैक। तऽबसँ रोटी निकलबाक हेतु व्यवहृत मोड़ल सड़सी सदृश औजारकेँ **अरड़ा/बगुली** कहल जाइत छैक। दवाइ, मशाला आदि कुटबाक हेतु खुलल मुँह, समतल आधार ओ बेलनाकार पेटवला उक्खरि तथा शंकुक आकृतिक ठोस लौह दंडक समाठक समष्टिकेँ **खल-मूसल/खर-मुसल/खल-मुसली/खरल-मुसली/इमामजस्ता**

/इमामदस्ता/ हमामदिस्ता (फा.) कहल जाइत छैक। काजर रखबाक छोट सन बन्द पात्रकेँ **कजरौटी** कहल जाइत छैक। पैघ कजरौटीकेँ **कजरौटा/कजरोट** कहल जाइत छैक। पानि भरबाक हेतु लोहक चदरासँ बनल गँहीर किञ्चित बेलनाकार पात्रकेँ **डोल/दोल** कहल जाइत छैक। एकरा पकड़बाक हेतु उपरका भागमे लागल अर्द्धचन्द्राकार लोहक छड़केँ **डंटी/कड़ी** कहल जाइत छैक। पैघ डोलकेँ **बाल्टी/बाल्टीन** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पैघ बाल्टीकेँ **बालट** कहल जाइत छैक। शंकुक आकृतिक पेनवला डोलक उपयोग इनारसँ पानि पटयबाक हेतु होइत छैक। एकरा **कूँड़/कूँड़ी/कुण्डी** कहल जाइत छैक।

खाधिसँ पानि उपछिकऽ पटयबाक हेतु लोहक चदरासँ बनल कोणक आकृतिक बासनकेँ **डोस/डोसि/डोइस** कहल जाइत छैक। एकर नीचा-ऊपर दुनू कात छोट-छोट लौह वलय लागल रहैत छैक जाहिसँ दू-दुटा रस्सीक छोर बान्हल रहैत छैक। रस्सीक दोसर छोड़केँ दुनू कात पकड़ि दू गोटे पानि उपछबाक काज करैत अछि। चदराक गँहीर बेलनाकार पात्रकेँ **टप** (अं. टब) कहल जाइत छैक।

माल-जालकेँ बन्हबाक हेतु लोहक वलयकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनाओल शृंखलाकेँ **सिकड़ी/जंजीरा** कहल जाइत छैक। पैघ ओ मोट सिकड़ीकेँ **सिक्कड़** कहल जाइत छैक।

लोहार गृह निर्माणक हेतु लोहक हुक, इसकल, बाला, जंजीरा, छिटकी, कोढ़ा, नट, बोल्ट ओ विभिन्न प्रकारक काँटीक सेहो निर्माण करैत अछि। (**व्याख्याक हेतु द्रष्टव्य, अध्याय- 2**)। पूर्वमे लोहासँ मोसि रखबाक पात्र सेहो बनैत छल। एकरा **दोआत/दोआति** कहल जाइत छैक। सम्प्रति ई शीशाक पात्र द्वारा स्थानापन्न भऽ गेल अछि। लोहाक दीपाधार पात्रकेँ **दीयठि/दिपरा/दिपदान/दिपदानी/दिपहरा/ चिरकदान/चिरकदानी/चिरागदान/ चिरागदानी** कहल जाइत छैक।

धान कुटबाक हेतु आपात देबाक काठक बेलनाकार दंडकेँ **समाठ** कहल जाइत छैक। समाठक एकटा छोरपर लोहाक वलय लगाओल जाइत छैक जकरा लोहारे तैयार करैत अछि। एकरा **साम/सामी/समी** कहल जाइत छैक।

माटि खुनबाक हेतु अग्रभागमे चाकर फलसँ युक्त लोहक छड़क व्यवहार होइत छैक। एहि औजारकेँ **खन्ती** कहल जाइत छैक।

गाछकेँ पड़बाक हेतु ओ झौंखीकेँ छकड़बाक हेतु व्यवहृत किञ्चित त्रिभुजाकार लौह औजारकेँ **टेङारी** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेदकेँ **कुड़हरि/कुलहड़ि/कुल्हाड़ी/कुलहड़** कहल जाइत छैक। कुलहड़क छोट प्रभेदकेँ **कुलहड़ी** कहल जाइत छैक। माल-जालक हेतु घासक कुट्टी काटबाक हेतु लौह औजारकेँ **गड़ाँस/गड़ाँसा/गड़ाँसी/गड़सी/चापा गड़ाँस/सरौता गड़ाँस** कहल जाइत छैक।

2. व्यवसायोपयोगी सामग्री : लोहारक अधिकांश उत्पादन विभिन्न व्यवसायक हेतु औजार होइत अछि। लोहार जाहि-जाहि व्यवसायक हेतु औजारक उत्पादन करैत अछि तकर दूटा वर्ग कएल जा सकैत छैक-(क) निर्माणाश्रयी पारम्परिक जातीय व्यवसाय तथा (ख) श्रमाश्रयी अथवा जाति निरपेक्ष व्यवसाय

निर्माणश्रयी पारम्परिक जातीय व्यवसायमे बरहीक बसुला, हथौड़ी, सूँवल, खिसनी, कम्चक, रुखाण, जमौड़ा, चटारी, सड़की, पेंचकस, पिलास आदि लौह औजार लोहारे बनबैत अछि तथा ओकर रन्दा, आरा, बरमा, आदिक फलकेँ पीटि कऽ तीक्ष्ण करैत अछि। डोमक विभिन्न प्रकारक कोती; कुम्हारक छऽन; मलाहक कोती, गोँजी आदि औजार; हलुआइक भानस करबाक विविध लौह औजार; कुरेड़ीक सर; पनेरीक पान कटबाक औजार कैंची ओ सुपारी कटबाक औजार सरोता/सरौता; पासीक तरछेबा, कलवारक सऽरी; लहेरीक फुट्टा; चमारक रौंपी, कटरनी, पिञ्चिस आदि औजार; मालीक छूरा; पटबाक अँकुड़ा; सरसा; दर्जीक कैंची; कसेराक विभिन्न प्रकारक नेहाय, सड़सी, कैंची, नेहनी, सरइ आदि लौह औजार; सोनारक विभिन्न प्रकारक चुट्टा, जन्त्री, छेनी, मड़िया आदि औजार ओ लौह-व्यवसायक समस्त लौह औजार सेहो लोहारे बनबैत अछि।

जाति निरपेक्ष व्यवसायमे कृषि व्यवसायक हेतु लोहार अनेक औजारक उत्पादन करैत अछि। खेतकेँ कोड़बाक हेतु करीब एक फुट फलवला चदराक करीब सवा फुट नाम पासयुक्त औजारकेँ **कुदार/कुदारी/कोदारि/कोदार/कोदारी** कहल जाइत छैक। घसल ओ छोट कोदारिकेँ **ठेंठी/ठेठिया कहल** जाइत छैक। ठेंठिया कोदारिमे जोड़ल लोहक चदराकेँ **फड़की** कहल जाइत अछि। माटिकेँ उपरे-ऊपर छोलिकऽ खेतक विजातीय घासकेँ उपटयबाक हेतु मुख्यत: व्यवहृत लौह औजारकेँ **खुरपी/पासनि** कहल जाइत छैक। पैघ खुरपीकेँ **खुरपा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त नाम फलसँ युक्त खुरपीक प्रभेदकेँ **रम्भा/सुम्हा खुरपी** कहल जाइत छैक। कोदारिक पासवला भागमे ओकरा पकड़बाक हेतु लागल बाँसक दंडकेँ **बेंट** कहल जाइत छैक। खुरपीक फलक पृष्ठ भागमे निकलल नोंखगर भागकेँ **डंटी** कहल जाइत छैक। एकर डंटी काठक बेंटमे पैसल रहैत छैक। बेंटमे पैसल डंटीक भागकेँ **नर/नड़ी/नड़िया/लार/लारू** (प्रि.)कहल जाइत छैक। बेंट ओ डंटीकेँ सुसम्बद्ध करबाक हेतु डंटीक बाहरी भाग ओ बेंटक अग्रभागक मिलनविन्दु लग बेंट पर परित: लगाओल लोहक वलयकेँ **सामं/सामी/समी/चूड़ी** कहल जाइत छैक।

खेतकेँ जोतबाक औजार **हर** होइत अछि। हरमे लागल लोहक टुकड़ा जे माटिकेँ कोड़ैत अछि, से **फार/फाल/फाला/लोहामा** कहल जाइत अछि। दू आङुर चाकर फारकेँ **कटही फार** कहल जाइत छैक। आगू दिस चारि आङुर चाकर ओ पाछू

दिस क्रमश: अधिक चाकर फारक प्रभेदकेँ **चदरा फार** कहल जाइत छैक। खूब चाकर फारकेँ **पचफारा/नगफनिआ फार** कहल जाइत छैक। कल्टी हरक फारकेँ **कल्टी फार** कहल जाइत छैक। अग्रभागमे त्रिभुजाकार ओ पृष्ठभागमे पुछरी जकाँ निकलल फारक प्रभेदकेँ **बालम/मलदहिया फार** कहल जाइत छैक। फारकेँ हरकठमे सम्बद्ध करबाक टेढ़ काँटीकेँ **करुआरी/जोंका/जोंकी/चोभी** कहल जाइत छैक।

घास आदि कटबाक हेतु लोहक दाँतयुक्त औजारकेँ **हाँसू/हँसुआ/हँसिया/कचिया** हाँसू कहल जाइत छैक। धान कटबाक हेतु व्यवहृत कचिया हाँसूकेँ **धनकट्टा** सेहो कहल जाइत छैक। एकर धारक लगवला दंतपंक्ति सदृश बनावटिकेँ **दाँत/दनासी** कहल जाइत छैक। कुसियार आदि कटबाक हेतु व्यवहृत अपेक्षाकृत मोट फलकवला दाँतहीन हाँसूकेँ **पथरिया/सैंगिया** (प्रि.)/**डाब**(प्रि.) कहल जाइत छैक।

परिवहन व्यवसायक हेतु सेहो लोहार अनेक प्रकारक लौह सामग्रीक उत्पादन करैत अछि। कठही गाड़ीक पहियाक परित: लगयबाक लोहक वलयकेँ **हाल** कहल जाइत छैक। एकर पहियाक नाओक बिचला छेदमे देबाक लोहाक फोंक बेलनाकार अवयवकेँ **आओन** कहल जाइत छैक। टायरगाड़ीक शरीरक आधार ओ घेराबला भागकेँ सम्बद्ध करऽवला समकोणपर मुड़ल लोहाक चाकर टुकड़ा सभकेँ **कोनिआ** कहल जाइत छैक। एहि गाड़ीक जुआ ओ फड़िकेँ सम्बद्ध करऽवला लोहाक चदराकेँ मोड़िकऽ बनाओल अवयवकेँ **हबका** कहल जाइत छैक। रिक्शाक आधारमे लागल टेढ़ लोहाक छड़केँ **नेङरा** कहल जाइत छैक। रिक्शाक हुडकेँ संकुचित करबाक हेतु ओकर फट्ठीमे लागल लोहाक वस्तुकेँ **पञ्जा** कहल जाइत छैक।

परिवहन व्यवसायमे उपयोगी बड़द ओ घोड़ाक पैरक तरबापर ठोकल जयबाक लोहाक टुकड़ीकेँ **नाल** कहल जाइत छैक। खुरक सड़ल भागकेँ कतरबाक हेतु व्यवहृत तरछेवा सदृश लौह औजारकेँ **सुमतराश** कहल जाइत छैक। घोड़ाक खुरक परित: भागकेँ कटबाक हेतु व्यवहृत छेनीकेँ **सुमकट्टी** कहल जाइत छैक।

घर बनयबाक व्यवसायमे लागल राजमिस्त्रीक ईंटा फोड़बाक हथौड़ी सदृश औजारकेँ **बसुली** कहल जाइत छैक। मशालाकेँ उठयबाक हेतु राजमिस्त्री पानक पातक आकृतिक फऽलवला खुरपी सदृश औजारक उपयोग करैत अछि। जोड़ाइमे अधिक मशाला उठयबाक हेतु व्यवहृत पैघ आकृतिक एहि औजारकेँ **करनी** कहल जाइत छैक। पलस्तर आदि करबाक हेतु कम-कमकऽ मशाला उठयबाक हेतु एवं मशालाक तलकेँ समतल करबाक हेतु व्यवहृत अपेक्षाकृत छोट आकृतिक करनीकेँ **अधला/अधेला/मझोला** कहल जाइत छैक। मशालासँ कसीदाक काज करबाक हेतु अत्यन्त छोट आकृतिक करनीक व्यवहार होइछ जे **कलम/कलमी** कहल जाइत छैक।

गृह निर्माणक हेतु मजूर द्वारा मशाला उठयबाक लोहक पातर चदरासँ बनाओल उत्थर कठौत सदृश बासनकेँ **तगारी** कहल जाइत छैक। जमीनकेँ पीटिकऽ धँसयबाक ओ सरि करबाक हेतु व्यवहृत भारी लौह उपकरणकेँ **धुमसुर/धुरमुस** कहल जाइत छैक।

नौआ जाहि लौह औजारसँ केश छिलैत अछि ओकरा **अस्तुरा/छूरा** कहल जाइत छैक। ओकर नह कटबाक लौह औजारकेँ **नहरनी/नहेरनी/नहकट्टा/लहरनी/लहेरनी** कहल जाइत छैक। एहि औजारमे लोहाक करीब छओ आङुर नाम छड़ रहैत छैक जकर अग्रभाग चाकर ओ तीक्ष्ण होइत छैक। केश छँटबाक हेतु हजाम लोहक **कैंचीक** व्यवहार करैत अछि।

वस्त्र व्यवसायमे लोहार विभिन्न प्रकारक चरखाक हेतु **टाकु/टकुआरी** बनबैत अछि। ई लोहक पातर ओ नोंखगर छड़ होइत अछि।

गुड़-व्यवसायी कुसियारक रसकेँ औंटैत काल ओकर मैली निकालबाक हेतु जाहि झँझक उपयोग करैत अछि ओकरा **मैलछन्ना** कहल जाइत छैक।

3. शस्त्रास्त्र : लोहार अनेक प्रकारक छोट-पैघ शस्त्रास्त्र सबहिक सेहो निर्माण करैत अछि। दतमनि आदि कटबाक करीब एक आङुर नाम ओ आधा इंच चाकर फऽलवला एकधारी औजारकेँ **चक्कू/छूरी** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेद **छूरा** कहल जाइत छैक। एक दिस धारवला औजारकेँ **एकधारी** ओ दुनू दिस धारवला औजारकेँ **दुधारी** कहल जाइत छैक। अधिक चाकर फऽलवला छूराक एकटा प्रभेद **कटार** होइत अछि। छोट कटारकेँ **कटारी** कहल जाइत छैक। नम्हर कटारकेँ **कृपाण** कहल जाइत छैक। नेपाली सभक मोट धारवला कृपाणकेँ **खुखरी** कहल जाइत छैक। पैघ फऽलवला कृपाणकेँ **तलवार/तरुआरि** कहल जाइत छैक। आगू दिस क्रमशः चाकर फऽलवला सोझ दुधारी तरुआरिकेँ **खाँड़** कहल जाइत छैक। अग्रभागमे कील जकाँ नोंखगर दुधारी लौह औजारकेँ **खंजर** कहल जाइत छैक। काठक फोंक डंडमे नुकाकऽ रखबाक लोहक तीक्ष्णाग्र छड़सँ बनल औजारकेँ **गुप्ती/गुपती/गुपुती/ किरची/किरीच** कहल जाइत छैक।

करीब एक हाथ नाम ओ चारि आङुर चाकर लोहक मोट फऽलवला औजारकेँ **कत्ता/काता** कहल जाइत छैक। छोट कत्ताकेँ **कत्ती/काती/खोड़ेया** कहल जाइत छैक। टेढ़ कातीकेँ **भुजाली/दबिला/दबिया/दाब/दाबी** कहल जाइत छैक। सोझ फऽलसँ युक्त एवं उपरका भागमे बेंटक हेतु लोहक छड़सँ युक्त कत्ताक प्रभेदकेँ **गड़ाँस** कहल जाइत छैक।

तीनटा समानान्तर नोंखगर अग्रभागसँ युक्त लोहक औजारकेँ **त्रिशूल/तिरसुल** कहल जाइत छैक। अर्द्धचन्द्राकार फऽलवला लाठीमे लगाकऽ चलयऽवला लौह

औजारकेँ **फरसा/फरुसा** कहल जाइत छैक। लाठीयेमे लगाकऽ चलबऽवला मध्यभागमे चाकर ओ अग्रभागमे नोंखगर फऽलवला औजारकेँ **भाला** कहल जाइत छैक। मध्यमे गोल ओ अग्रभागमे तीक्ष्ण नोंखीसँ युक्त भालेक सदृश औजारकेँ **बलम/बल्लम** कहल जाइत छैक। तेपहल धारवला भालाकेँ **तेगा** कहल जाइत छैक।

करीब चारि हाथक लोहाक छड़क अग्रभागमे तीक्ष्ण नोंखसँ युक्त लौह औजारकेँ **साङि/साँघि** कहल जाइत छैक। साङिक अग्रभागमे उनटल काँट सदृश बनावटिकेँ **घाओ** कहल जाइत छैक। एकटा घाओसँ युक्त साङिकेँ **कैंती/कोंती** कहल जाइत छैक। जाहि कैंतीक उपयोग बेर-बेर नीचा पेसि पुनः ऊपर घिचबाक हेतु होइत छैक, ओकरा **गोजी/गोंजी/गोबनी** कहल जाइत छैक। लाठीक अग्रभागमे लगाकऽ चलबऽवला कैंतीकेँ **बरछी** कहल जाइत छैक। पैघ बरछीकेँ **बरछा** कहल जाइत छैक। पाँचटा अग्रभागसँ युक्त बरछीकेँ **पचकी/पचखी** ओ सातटा अग्रभागसँ युक्त बरछीकेँ **सतकी/सतखी** कहल जाइत छैक। एहि औजार सभक तीक्ष्ण अग्रभागकेँ **कोथ/कोथी** कहल जाइत छैक। पचखी, सतखी आदिकेँ **सऽहत/सऽहद** सेहो कहल जाइत अछि। युद्धमे प्रयोग करबाक लोहाक पातर तारसँ बनल टेढ़ अग्रभाग ओ घाओसँ युक्त औजारकेँ **बंसी/झगड़** कहल जाइत छैक। धनुष द्वारा निक्षेपित करबाक लोहक तीक्ष्णाग्र अस्त्रकेँ **तीर** कहल जाइत छैक।

हाथीक कानमे भोंकि कऽ ओकरा पीड़ा पहुँचयबाक हेतु व्यवहृत वक्र अग्रभागवला औजारकेँ **गजारा/आँकुस/गोबनी/गोभनी** कहल जाइत छैक। साँढ़केँ दगबाक हेतु अग्रभागमे मोड़ल लौह उपकरणकेँ **अँकुड़ा/अँकोड़ा/दगनी** कहल जाइत छैक।

4. विविध सामग्री : लोहार विभिन्न उपयोगक हेतु अन्य सामग्री सभक सेहो निर्माण करैत अछि। बालू-छर्री आदि उठयबाक खुर्पीक सदृश पैघ उपकरणकेँ **बेलचा** कहल जाइत छैक। कठोर जमीनकेँ कोड़बाक हेतु एक हाथ नाम ओ चारि आङुर चाकर फऽलवला मोट लोहसँ बनल कोदारिक सदृश औजारकेँ **फावड़ा/कैंता/गैंता** कहल जाइत छैक। बोरामे कसल अन्नक बानगी देखबाक हेतु लोहाक नालाक सदृश छोट सन उपकरणकेँ **बोमा** कहल जाइत छैक। इनारमे डोल खसलापर ओकरा निकालबाक हेतु लोहाक अनेक अंकुशक समष्टिसँ बनल उपकरणकेँ **काँकोड़/झग्गर/झगड़** कहल जाइत छैक। कपड़ा सीबाक हेतु लोहक तारसँ बनल पासयुक्त औजारकेँ **सुइ/सुइया** (सं. शुचि) कहल जाइत छैक। आइकाल्हि ई मशीन उद्योग द्वारा उत्पादित होइत अछि। बोरा आदि सीबाक हेतु मोट सूइकेँ **सूआ/सूगा** कहल जाइत छैक। पास रहित सुआकेँ **टाकु** कहल जाइत छैक। एहिसँ सीकीक मौनी आदि बीनल जाइत अछि आ विभिन्न उपयोगक हेतु छेद कयल जाइत अछि। भारी लकड़ीकेँ गुड़कयबाक हेतु लोहक मोट छड़सँ बनल औजारकेँ **साँबल** कहल जाइत छैक। इनारमे नीचा

उतारबाक हेतु ओहिमे स्थान-स्थान पर लगाओल वलयकेँ **कड़ी** कहल जाइत छैक। घरमे वस्तुकेँ टङबाक हेतु स्थान-स्थान पर लगयबाक एक दिस मोड़ल छड़केँ सेहो **कड़ी** कहल जाइत छैक। जमीन नपबाक हेतु अमीनक उपकरण सेहो **कड़ी** कहल जाइत छैक। घोड़ाक मुँहमे लागल लोहक छड़केँ **लगाम** कहल जाइत छैक। टमटमक घोड़ाक साजमे लागल लोहकेँ **दाउनी** कहल जाइत छैक। घोड़सवार घोड़ापर बैसबाकाल जाहि अर्द्धवलयमे अपन पैर फँसबैत अछि से **पौदान/रकाब/रकाबी** कहल जाइत छैक। बाकसमे व्यवहार करबाक तालाकेँ **कुण्डी** कहल जाइत छैक। कुण्डीकेँ खोलय ओ बन्द करबाक हेतु अग्रभागमे टेढ़ कऽ मोड़ल लौह उपकरणकेँ **ताली** कहल जाइत छैक। सूगाकेँ रखबाक हेतु लोहक पत्तरसँ बनल घरकेँ **पिजड़ा** कहल जाइत छैक। मूस फसयबाक हेतु लौह-उपकरणकेँ **मुसकल/मुसकौड़ी/मुसकाणी** कहल जाइत छैक। गीतगायनमे ताल देबाक हेतु कविराहा सभक लोहक वाद्ययंत्रकेँ **कनसी** कहल जाइत छैक।

कसेरा

काँस/काँसा नामक धात्विक मिश्रणसँ मृत्पात्रक विकल्पक रूपमे व्यवहृत विभिन्न प्रकारक बासन ओ अन्य उपयोगी सामग्री सभ बनबऽवला जाति **कसेरा/कसेरी** होइत छथि। तामक बासन बनबऽवला एकर उपजाति **तमेरा/तम्हेरा** होइत अछि। धातुक बासनक मरम्मती ओ विक्रयसँ सम्बद्ध जाति **ठठेरा/ठठेरि/ठठेरी** होइत अछि। कसेरी, तमेरी ओ ठठेरी जाति यद्यपि कार्य-विभाजनक आधारपर गठित भेल अछि मुदा सम्प्रति एकर बीच व्यवसायक दृष्टिऍ दृढ़ सीमाबद्धता नहि देखल जाइत अछि।

आधार सामग्री : कसेराक आधार सामग्री विभिन्न धातु ओ धात्विक मिश्रण होइत अछि जकरा **दरब** (सं. द्रव्य) कहल जाइत छैक। बादामी रंगक अत्यधिक नमनशील धातुविशेषकेँ **ताम/ताम्बा** कहल जाइत छैक। उज्जर रंगक अन्य धातु **जस्ता** होइत अछि। **राङ/राँगा/राङा, सीसा, निकिल, कार्टीन** आदि विभिन्न उपधातु सेहो कसेरीक आधार सामग्री होइत अछि। राङाक उत्कृष्टतम प्रभेद **कमताइ** कहल जाइत अछि। राङाक अन्य प्रभेद **जिलेबिया, दुनकी** आदि होइत अछि। ताम ओ जस्ताक मिश्रणसँ **पित्तर(ड़)/पित्तरि(ड़ि)/पीतल** नामक उपधातु बनैत अछि जकर रंग हल्का पीयर होइत छैक। ई तामसँ अधिक दृढ़ होइत अछि। पित्तरमे राङा, निकिल, सीसा आदिक मिश्रणसँ अनेक प्रकारक धात्विक मिश्रण तैयार होइत अछि। राङाक आधिक्य रहने पित्तरमे अधिक सफेदी आबि जाइत छैक। सीसाक आधिक्य रहला पर पित्तरमे अधिक लाली भऽ जाइत छैक आ एहन धात्विक मिश्रणकेँ **कँसकूट/कसकूट** कहल जाइत छैक। पित्तरमे निकिलक मिश्रणसँ चमकसँ युक्त उज्जर रंगक कम ओजनक धात्विक मिश्रण तैयार होइत छैक। एकरा **गिलट** कहल जाइत छैक।

पित्तर ओ कार्टीनक मिश्रणसँ बनल धात्विक मिश्रणकेँ **सिल्भर** कहल जाइत छैक। नौ भरि ताममे एक भरि राङाक मिश्रणसँ **काँस/काँसा** नामक उपधातु बनैत छैक। काँसाक शुद्धतम रूपकेँ **फूल** कहल जाइत छैक। राङाक अनुपात अधिक भेने निम्न कोटिक काँस बनैत छैक। टूटल- फूटल बासनक मरम्मति कसेरीक व्यवसायक प्रमुख अंग होइत छैक। फूटल बासनकेँ **फुट्टा** कहल जाइत छैक।

टूटल बासनक खण्डित भागकेँ संलग्न करबाक क्रिया **रैसब** होइत अछि। बासनमे गोल आ अत्यन्त सूक्ष्म भूरकेँ **सुराख/छेद/सोन्हि** कहल जाइत छैक। चाकर छेदकेँ **दराड़ि** कहल जाइत छैक। पैघ छेदमे दरबक टुकड़ी दऽ रैसबाक क्रिया **टाँकब** होइत अछि। टँकबाक हेतु व्यवहृत मशालाकेँ **टाँक/टाँका/डाँक/टाँकी/पाएन** कहल जाइत छैक। टाँक बनयबाक हेतु ताम, जस्ता, पित्तर, काँस आदिकेँ गलयबाक हेतु ओहिमे **सुहागा/सोहागा** नामक द्रव्य फेंटि देल जाइत छैक, जाहिसँ गर्म कयला उत्तर टाँक द्रवीभूत भऽ पसरि जाइत छैक आ दराड़िकेँ भरि दैत छैक। **नौसादर/निसादर** नामक रसायन सेहो टाँकक रूपमे व्यवहृत होइत अछि। नौसादर ओ सोडाकेँ जस्ता, पित्तर ओ राङाक संगे गर्म कऽ सेहो टाँक बनाओल जाइत अछि। टाँकल बासनक प्रभावित भागमे गर्ममे एकटा पदार्थक लेप कऽ देल जाइत छैक। एहि पदार्थकेँ **घारन** कहल जाइत छैक। ई पथलखऽड़ी ओ कड़ू तेलकेँ मिलौलासँ बनैत छैक। एकर लेप कऽ देलासँ टाँक कयलाक बादो जँ कोनो गऽह बचल रहि जाइत छैक, तँ घारनक कण ओकरा भरि दैत छैक। बासनकेँ साफ कऽ चमचम करबाक हेतु **तेजाबक** उपयोग कयल जाइत छैक।

बासनकेँ खरादबाक मशीनपर चढ़यबाकाल लाहक उपयोग होइत छैक। कूनक अग्रभागमे साटल लाहपर गर्म बासनकेँ साटि कऽ खरादल जाइत छैक। कसेरीक भट्ठीमे गलैयाक हेतु लकड़ी, लकड़ीक कोइला, पत्थल कोइला ओ हार्ड कोकक उपयोग होइत छैक। पानि उतारबाक भट्ठीमे कुन्नी अथवा पातक झोंका देल जाइत छैक।

बासनकेँ पनिअयबासँ पूर्व ओकर बाहरी भागपर नून ओ खड़रक लेप लगाओल जाइत छैक।

औजार : कसेरीक व्यवसायमे व्यवहृत विभिन्न प्रकारक औजारकेँ निम्नलिखित श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत अछि–(क) गर्म करबाक औजार (ख) पिटबाक औजार (ग) कटबाक औजार तथा (घ) सहायक औजार

गर्म करबाक औजार : कसेरी जाहि चूल्हामे बासनकेँ राखि ओकर पानि उतारैत अछि, से **भट्ठी** कहल जाइत छैक। भट्ठी माटिमे गोल कऽ खूनल विभिन्न व्यासक चुल्हि थिक। एकर चारू कातक भाग माटिक पिंडसँ तीन-चारि हाथ ऊँच धरि घेरल रहैत छैक। एकर उपरका भागमे करीब एक हाथ व्यासक वृत्ताकार छेद रहैत

छैक। एहि छेदकेँ बन्द करबाक हेतु माटिक चारि आङुर मोट एवं छेदक आकृतिसँ कने पैघ माटिक पिंडक उपयोग होइत छैक। एकरा **चक्का/चाक** कहल जाइत छैक। भट्ठीमे आगि झोँकबाक हेतु एवं बासनकेँ भीतर-बाहर करबाक हेतु समक्षवला भागमे खाली स्थान बनल रहैत छैक, जकरा **मुँह** कहल जाइत छैक। मुँहसँ आगिक ताओ बाहर होयबासँ बचयबाक हेतु ओकरा झाँपबाक हेतु प्रयुक्त लोहक चदराकेँ **आर/आढ़/झपना** कहल जाइत छैक।

दरबकेँ पघिलयबाक हेतु कसेरीक भट्ठीकेँ **मसुरी** कहल जाइत छैक। मसुरीमे मुँहक स्थानपर छोट सन छेद रहैत छैक जाहिमे चरखी अथवा भाथीक नरिया पैसाय हवा कयल जाइत छैक।

बासनकेँ जोड़बाक हेतु कसेरी जाहि चूल्हि द्वारा आगि पजारैत अछि, ओकरा **भाथी/भाथि** कहल जाइत छैक। कसेरीक भाथी लोहारक भाथीसँ थोड़ेक भिन्न होइत छैक। एहि भाथिक माटिमे खूनल खाधिकेँ **अफरा** कहल जाइत छैक। अफरामे हवा फुकबाक हेतु चामक गोल घर सदृश बनाओल रहैत छैक। चामक घरक उपरका भाग दू भागमे विभाजित रहैछ। दूनू भागक कोर पर फट्ठी लागल रहैत छैक। दूनू फट्ठीकेँ बामा हाथेँ पृथक् कऽ चाममे हवा भरल जाइत छैक आ पुनः फट्ठीकेँ सटाकऽ हवा पर दाब दऽ ओकरा भट्ठीमे फेकल जाइत छैक। दूनू फट्ठीकेँ **हत्थी/हत्थू/डण्टा/हत्था** कहल जाइत छैक। चाम ओ अफराकेँ सम्बद्ध करऽवला लोहक नलीकेँ **चोंगा/नरौआ/नराई/नरिया** कहल जाइत छैक।

कोनो-कोनो भाथीमे फोइलाक गोल चूल्हि लागल रहैत छैक। चूल्हिकेँ **सनइहेरी/सन्हेली/सनहेली/सन्हेरी/सनहेरी** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो सन्हेरीमे आगि फुकबाक हेतु लोहाक गोल चक्रकेँ नचयबाक व्यवस्था रहैत छैक। एहि व्यवस्थामे आगि फुकबाक औजारकेँ **चरखा/चरखी** कहल जाइत छैक।

कसेरी जाहि बासनमे चूर्ण कयल दरबकेँ मसुरीमे पघिलयबाक हेतु रखैत छैक, ओकरा **घड़िया** कहल जाइत छैक। एकर आकृति ठाढ़ कयल नारियरक सदृश होइत छैक तथा भूमिपर बैसि जयबाक हेतु एकर निचला भागमे तीनटा टोंटी सदृश आधार बनल रहैत छैक जकरा **गोरा** कहल जाइत छैक। घड़ियाक भीतरी पेटमे दरबकेँ भरल जाइत छैक। पघिलल दरबकेँ ढारबाक हेतु एकर उपरका भागमे करीब दू आङुर व्यासक मुँह बनल रहैत छैक। एहि मुँहकेँ झँपबाक हेतु छिद्रमय ढाकनकेँ **ढक्कन/ओहार** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

पिटबाक औजार : कसेरा धातुक बासनकेँ पिटबाक हेतु ओकरा लोहक आयताकार ठोस पिंडक आधारपर रखैत अछि। एहि आधारकेँ **नहाय/नेहाय/लेहाय/निहाइ/लिहाइ** कहल जाइत छैक। ई लोहारक चौरसा सदृश होइत अछि मुदा अपेक्षाकृत छोट होइत अछि। नेहायकेँ माटिमे गाड़ल काष्ठखंडपर राखल जाइत छैक,

जकरा **ठेहा/ठेयुआ/ठीहा** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो नेहाय लोहारेक नेहाय सदृश होइत छैक जकर निचला नोंखगर भाग ठेहाक उपरका छेदमे फसा देल जाइत छैक। एहन नेहायक उपरका भाग चौरस अथवा गोल एवं आधार भागसँ बेसी मोट होइत छैक। करीब तीन आङुर व्यासक लौह छड़ सदृश नेहायकेँ **समदान/चकती** कहल जाइत छैक। एकर अग्रभाग नोंखगर होइत छैक जकर सहायतासँ ई माटिमे कोनो ठाम गाड़ल जा सकैत अछि। समदानक माथवला भाग अनेक प्रकारक होइत छैक। चौरस माथवला समदानकेँ **चौका समदान/बगलभरुआ** कहल जाइत छैक। गोल माथवला समदानकेँ **गोल समदान/गोली/साबर/साबरा/सबरी** कहल जाइत छैक। बगुलाक गर्दनि जकाँ टेढ़ अग्रभागसँ युक्त समदानकेँ **बगुलिया** कहल जाइत छैक। जाहि समदानक माथवला भागमे खाधि बनल रहैत छैक ओकरा **गोलसाबर/गोलीसाबरी** कहल जाइत छैक। जाहि समदानक माथवला भागमे समकोणपर लोल सदृश निकलल रहैत छैक, ओकरा **एकवाइ/एकावे** कहल जाइत छैक। लोहक करीब तीन हाथ नाम, चौरस अथवा बेलनाकार मोट छड़ सदृश समदानकेँ **खड़बे** कहल जाइत छैक। खड़बेपर बासनकेँ पिटैत काल ओकरा क्षैतिज अवस्थामे काठक दू गोट चौपहल खण्डपर अवलम्बित कराओल जाइत छैक। एहि अवलम्बकेँ **दुगोड़ा/दुगोड़ी/खराट/खँराट/खराटी/खँराटी** कहल जाइत छैक।

चौका समदानपर बासनकेँ पीटि कऽ ओकर सतहकेँ समतल कयल जाइत छैक आ गोल समदान पर पीटि कऽ बासनक गोल भागकेँ असारल जाइछ। गोलसाबरपर पीटिकऽ बासनक खाधिवला भागकेँ **चौरस** कयल जाइत छैक। एकवाइ ओ खड़बे पैघ आकृतिक बासनकेँ पिटबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि। बासनमे गँहीर स्थल बनयबाक हेतु कगना सदृश लोह अथवा काठक औजारकेँ **काठ** कहल जाइत छैक।

धातुक बासन सभकेँ पीटिकऽ आकृति प्रदान करबाक हेतु विभिन्न आकृतिक हथौड़ीक उपयोग होइत छैक। पैघ हथौड़ीकेँ **घन** कहल जाइत छैक। छोट घनकेँ **हथौड़ा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट हथौड़ीकेँ **मरिया** कहल जाइत छैक। राजक बसुली सदृश मरियाकेँ **बाली हथौड़ी** कहल जाइत छैक। बासनकेँ पीटिकऽ ओकर उपरका भागमे चेन्ह बनयबाक हेतु व्यवहृत हथौड़ीकेँ **मठना/मठरना** कहल जाइत छैक। छोट मठरनाकेँ **मठरनी** कहल जाइत छैक। मठरनाक पीटऽवला भाग नोंखगर होइत अछि, जखन कि सामान्य हथौड़ीक चौरस। जोड़ बनयबाक हथौड़ी चमारक पिटना जकाँ लोहाक बेलनकार ठोस छड़ होइत अछि। बासनक गँहीर स्थलकेँ **खाप** कहल जाइत छैक। खाप बनयबाक हेतु गोल मुँहवला हथौड़ाक व्यवहार होइत छैक जकरा **गोलमरिया/गोलमूड़ी** कहल जाइत छैक। थारी आदिक कोरकेँ ठाढ़

करबाक हेतु काठक पैघ हथौड़ीक उपयोग होइत छैक। एकरा **मुङरा/मुङरी** कहल जाइत छैक।

पानि उतारल धातुक बासनकेँ चुड़िकऽ गर्दा-गर्दा करबाक हेतु काठक उक्खरिक प्रयोग होइत छैक। एकरा **खरल/खल/उक्खरि** कहल जाइत छैक। धातुपर चोट देबाक हेतु व्यवहृत लोहक छड़क समाठकेँ **मूसल/मुसली** कहल जाइत छैक।

थारीक तलकेँ समतल करबाक हेतु गर्ममे ओकरा गोल ओ समतल पाथर पर राखि पीटल जाइत छैक। एहि पाथरकेँ **लौना** कहल जाइत छैक। लौनाक केन्द्रमे गोल खाधि बनाओल रहैत छैक जे बासनकेँ गँहीर करबाक क्रममे पिटबामे सहायक होइत छैक।

कटबाक औजार : कसेरी धातुक बासनक अतिरिक्त भागकेँ कटबाक हेतु लोहक छोट मुँहवला कैँचीक उपयोग करैत अछि। पैघ कैँचीकेँ **कात/काती/कतिया** कहल जाइत छैक। धातुक चदराक किनारकेँ कटबाक हेतु कसेरीक कुड़हरिकेँ **टाँगी/टेङारी** कहल जाइत छैक। टेङारी वास्तवमे नेहायक काज करैत छैक। ओकरा ठेहापर उनटाकऽ राखल जाइत छैक, जाहिसँ ओकर पसाठ आधारक काज करैत छैक आ तीक्ष्ण फऽलवला भाग ऊपर मुँहे रहैत छैक, जाहिपर धातुक चदराकेँ राखि ऊपरसँ हथौड़ी द्वारा आघात कयने चदरा कटि जाइत छैक। मोट ओ नाम चदराकेँ कटबाक हेतु कसेरा लोहारे जकाँ **छेनी/छैनी**क उपयोग करैत अछि। छेद करबाक हेतु सुम्मा, टोपन आदि औजार लोहारे जकाँ व्यवहृत होइत छैक।

सहायक औजार : कसेरीक व्यवसायमे उपरोक्त वर्गीकृत औजार सबहिक अतिरिक्तो अनेक सहायक औजारक प्रयोजन होइत छैक, यथा– धातुक बासनकेँ पकड़बाक हेतु लौह औजारकेँ **सनसी/सड़सी/सँड़सी** कहल जाइत छैक। चाकर मुँहवला छोट सड़सीकेँ **गहुआ** कहल जाइत छैक। गर्म घड़िया एवं अन्य बासनकेँ पकड़बाक हेतु विभिन्न आकृतिक पैघ-पैघ सड़सीक उपयोग होइत छैक जे **सनसा/सड़सा** कहल जाइत छैक। ई सभ प्रयोजनक आधार पर चीन्हल जाइछ। भट्ठीमे बासनकेँ भीतर-बाहर करबाक हेतु आगू दिस किञ्चित टेढ़ लोहक दू आङुर चाकर मोट चदराक औजारकेँ **बाँक** कहल जाइत छैक। भट्ठीक राखकेँ निकालबाक हेतु लोहक उत्थर करछु सदृश उपकरणकेँ **डब्बू/सरी** कहल जाइत छैक। सनहेरीक आगिकेँ कोड़बाक हेतु व्यवहृत लोहाक छड़केँ **सरी/सरइ/सराइ** कहल जाइत छैक। धातुक चदरासँ गोल टुकड़ा कटबाक हेतु चेन्ह करबाक औजारकेँ **परकाल** कहल जाइत छैक। मोटाइ नपबाक हेतु व्यवहृत परकालकेँ **कम्पास** कहल जाइत छैक। थारीक तल उभर-खाबड़ रहला पर ओकरा गर्म कऽ काठक गोल चकतीक सहायतासँ दबाओल जाइत छैक। एहि चकतीकेँ **जतना** कहल जाइत छैक। बासनक कोरकेँ

रगड़िकऽ चिक्कन करबाक हेतु लोहक चौरगर खुरदुराहक छड़क प्रयोजन होइत छैक। एकरा **रेती/फाइल** कहल जाइत छैक। पघिलल दरबकेँ बासनक आकृति प्रदान करबाक हेतु ओकर प्राथमिक रूप तैयार कयल जाइत छैक। एहि हेतु ओकरा माटिक कटोरी सदृश औजारमे ढारल जाइत छैक । एहि औजारकेँ **पग्गा/साँचा/फर्मा** कहल जाइत छैक। थारीक कोरकेँ ठाढ़ करबाकाल दरबक पत्तरकेँ पिटबाक हेतु ओकर निचला भागमे लोहक एकटा मोट त्रिकोण टुकड़ी राखल जाइत छैक। एकरा **एड्डा** कहल जाइत छैक। बासनकेँ खरादबाक औजारकेँ **कून** (फा.कुन्दह) कहल जाइत छैक। कूनमे एक दिस लागल लौहकीलकेँ **गूजा** कहल जाइत छैक। एकर दहिन भागमे अवलम्ब देबाक हेतु माटिमे गाड़ल खऽतवला पटरा **बघेली** कहल जाइत अछि। एहिमे काठक दूटा खट्टापर अवलम्बित एकटा बेलनाकार काष्ठखंडकेँ रस्सी, चाम अथवा साइकिलक चेनक सहायतासँ आगाँ-पाछाँ नचयबाक व्यवस्था रहैत छैक। कून पर चढ़ाओल बासनक सतहकेँ एक आङुर चाकर टेढ़ फऽलवला लौह औजार द्वारा छीलल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **नेहनी/लेहनी/छीलनी** कहल जाइत छैक। नेहनीसँ छिलाइ करैत काल सहाराक हेतु लोहक एकटा पातर छड़ सेहो पकड़ल जाइत छैक। एकरा **सरइ** कहल जाइत छैक। चाकर फऽलवला छोट नेहनीकेँ **खखोरना/खखोरनी** कहल जाइत छैक। थारीमे चेन्ह उखारऽवला नेहनीक तीक्ष्ण ओ पातर अग्रभागवला प्रभेदकेँ **गूना** कहल जाइत छैक। खूब चाकर फऽलवला नेहनीकेँ **रुखाणी** कहल जाइत छैक। नेहनीक फलकेँ पिजयबाक हेतु उपयोगी पाथरकेँ **अदाही/कारमति** कहल जाइत छैक। बासनपर पानि चढ़यबाक हेतु कसेरी ओकरा गर्म कऽ खाधि अथवा बासनमे राखल पानिमे डुबा दैत अछि। पानि रखबाक एहि पात्रकेँ **नाद/नादी** कहल जाइत छैक। रेसबाक हेतु राङा, सोहागा आदिकेँ रखबाक हेतु व्यवहृत छोट सन गँहीर पात्रकेँ **कटोरी** कहल जाइत छैक। रेसबाक हेतु अग्रभागमे छौपहल लौह औजारकेँ **कइया** कहल जाइत छैक। एकरा धिपाकऽ राङापर राखि देने राङा गलि जाइत छैक। गलल टाँककेँ एहिसँ सरि सेहो कयल जाइत अछि। टाँककेँ सरि करबाक हेतु वक्र अग्रभागसँ युक्त लोहक छड़ निर्मित औजारकेँ **लोपन** कहल जाइत छैक। टाँकक हेतु राङा आदिकेँ अल्प मात्रामे उठयबाक हेतु व्यवहृत औजारकेँ **पनकाठी/पनिकाठी/पनदेनी/पनिदेनी** कहल जाइत छैक। ई लोहक एक हाथ नाम छड़ होइत छैक जकर अग्रभाग चप्पत होइत छैक आ समकोण पर किञ्चित मुड़ल रहैत छैक। खरीद-बिक्रीक हेतु कसेरीक जोखबाक उपकरण **तराजू/तरजू/तरजुइ** आ **बाट-बटखरा**क सेहो उपयोग करैत अछि।

धातु निर्मित पात्र : कसेरा विभिन्न दरबसँ भिन्न-भिन्न आकृति ओ उपयोगक वस्तु सभ बनबैत अछि। धातुक पात्रक हेतु सामान्य शब्द **बासन/बरतन/दर्बजात/दरबजात** अछि।

मूल धातु ताम, जस्ता आदिकेँ गलाकऽ परस्पर उचित अनुपातमे फेँटि तैयार कयल गेल धात्विक मिश्रणसँ निर्मित बासनकेँ **कराउत** कहल जाइत छैक। धातु अथवा धात्विक मिश्रणकेँ गर्म कऽ द्रवीभूत करबाक क्रिया **गलाइ** होइत अछि। गलल द्रव्यकेँ साँचामे ढारि कऽ आवश्यक आकृति प्रदान करबाक क्रिया **ढलाइ** होइत अछि। ढलाइ द्वारा पूर्ण आकृति प्राप्त बासनकेँ **ढरुआ/ढलुआ** कहल जाइत छैक।

सम्प्रति मिथिलाक कसेरीलोकनि धात्विक मिश्रण स्वयं तैयार करैत नहि देखल जाइत छथि। तेँ कराउत बासनक हेतु मूल स्रोत आयाते अछि। ताम धातु अथवा अन्य धात्विक मिश्रणक चदरासँ तैयार होमऽवला बासनक हेतु चदराक आयात कयल जाइत अछि।

फुट्टा बासनकेँ गलाकऽ नव स्वरूपमे अनलापर बनल बासनकेँ **उपटा** कहल जाइत छैक। उपटा बासनमे केवल विभिन्न आकारक थारीक उत्पादन प्रक्रिया देखल जा सकल अछि। फुट्टा थारीक द्रव्यक चूर्णकेँ गलाकऽ साँचामे ढारला उत्तर बनल पूआ सदृश चकतीकेँ **खूटी/खूँटी** कहल जाइत छैक। खूँटीकेँ आघात द्वारा असारला उत्तर अथवा मशीन द्वारा बेलला उत्तर द्रव्यक पातर ओ गोल चदरा सदृश वस्तुकेँ **छक्का** कहल जाइत छैक। छक्काकेँ थारी बनयबाक हेतु परकाल द्वारा चिह्नित कऽ काटलापर बनल गोल टुकड़ीकेँ **पन्ना** कहल जाइत छैक। लोटा, बाटी, गिलास आदि बासनक सेहो उपटा तैयार होयबाक लोकश्रुति भेटैत अछि, मुदा ओकर उत्पादन प्रक्रिया ओ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक लोप भेल बुझना जाइत अछि।

टूटल-फूटल बासनकेँ जोड़ि-जाड़िकऽ नव स्वरूप प्रदान कयलापर बनल बासनकेँ **नारिक/नारि/नारी/नड़िया** कहल जाइत छैक। नड़ियाक उत्पादन सामान्य रूपेँ सर्वत्र देखल जाइत अछि आ एहि ठामक कसेरीक व्यवसाय मुख्यतः एहीपर अवलम्बित अछि।

बासन बनयबाक अथवा मरम्मति करबाक क्रममे विभिन्न स्तरमे भिन्न-भिन्न प्रक्रियाक प्रयोजन होइत छैक आ एहि हेतु विशिष्ट शब्दावलीक प्रयोग होइत छैक। द्रव्यकेँ आघात करबाक क्रिया **हनब/पीटब** होइत अछि। पीटि कऽ तैयार कयल बासनकेँ पिटुआ कहल जाइत छैक। बासनक सतहकेँ छीलिकऽ शोभाधायक आकृति उखारबाक क्रिया **छीलब** होइछ। छीलिकऽ बनाओल शोभायुक्त आकृतिवला बासनकेँ **छिलुआ/पहलदार** कहल जाइत छैक। छिलुआ बासनमे बनल क्रमिक अवतलोत्तल सतहकेँ **पहल** कहल जाइत छैक।

आघात द्वारा द्रव्यक पिंडकेँ नमरयबाक क्रिया **असारब** होइत अछि। आघातक प्रक्रियाकेँ **हनाइ** कहल जाइत छैक। बासनक हेतु दरबक चदरामे ऊभड़-खाभड़ स्थलकेँ पीटि कऽ समतल करबाक क्रिया **पचाइ** होइत अछि। पाचल

चदरासँ बासनक अनुरूप आकृतिक अतिरिक्त अंशकेँ काटिकऽ पृथक् करबाक क्रिया **छोड़ाइ** होइत अछि। छोड़ाइक क्रममे काटि कऽ हटाओल द्रव्यक भागकेँ **कट्टन/छट्टन/काट-छाँट** कहल जाइत छैक।

फुट्टा बासनकेँ गलयबासँ पूर्व चूर्णमे परिणत करऽ पड़ैत छैक। एहि हेतु ओकरा भट्ठीमे किछु काल धरि गर्म करऽ पड़ैत छैक। एहिसँ ओकर तन्यता समाप्त भऽ जाइत छैक। एहि तरहेँ बासनकेँ गर्म करबाक क्रिया **पानि उतारब/उघारब** कहल जाइत छैक। बासनकेँ गर्म कऽ पानिमे डुबौलासँ ओकर नमनशीलता समाप्त भऽ जाइत छैक। गर्म बासनकेँ पानिमे डुबाकऽ ओकर नमनशीलता समाप्त करबाक क्रिया **पानि चढ़ायब/पनिआयब** होइत छैक। पनिअयबासँ पूर्व दरबपर नून ओ खड़िक लेप चढ़ाओल जाइत छैक, जे दरबपर हल्का कारी रंगक धब्बा जकाँ जमि जाइत छैक।

दरबक चदराक कोनो भागकेँ गँहीर करबाक क्रिया **खलब** होइत अछि। चदरापरसँ नून ओ खड़िक धब्बा हटाकऽ ओकरा चमचम बनयबाक हेतु नेहनी द्वारा उपरे-ऊपर कतरबाक क्रिया **छीलब** होइत अछि। छिललासँ दरबक पातर-पातर छिल्लन निकलैत छैक, जकरा **कचौर/चून** कहल जाइत छैक। चूनपर छिलाइ करबाक क्रिया **कुनाइ** होइत अछि।

पानि उतारल बासन, छट्टन अथवा कचौरकेँ खरल ओ मुसलक सहायतासँ कूटि कऽ चूर्णमे बदलि देल जाइत छैक। प्राप्त दरबक चूर्णकेँ **रबा/राबा** कहल जाइत छैक। यैह राबा गलयबाक हेतु घड़ियामे राखल जाइत छैक।

बासनक अधार भागकेँ **पेन/पेना/पेनी/पेन्दी** कहल जाइत अछि। कोनो-कोनो बासनक पेनक निचला भागमे पेनकेँ जमीनक साक्षात् सम्पर्कसँ बचयबाक हेतु व्यवस्था कयल रहैत छैक। एहि व्यवस्थाकेँ **गोरा** कहल जाइत छैक। पेनक उपरका पार्श्वभागक घेराकेँ **पाञ्जर** कहल जाइत छैक। पाञ्जरक मोटाइकेँ **देवाल** कहल जाइत छैक। पाञ्जरक उपरका खुलल भागकेँ **मुँह** कहल जाइत छैक। संकुचित मुखाग्रसँ युक्त बासनकेँ **घपोल** कहल जाइत छैक। मुँह ओ पाञ्जरकेँ सम्बद्ध करऽवला भागकेँ **गर्दनि** कहल जाइत छैक। गर्दनिक उपरका भागमे क्षैतिज अवस्थामे मोड़ल भागकेँ **कान** कहल जाइत छैक।

पिटुआ बासनमे दू अथवा तीन अवयवकेँ जोड़ि कऽ आकृति बनाओल जाइत छैक। एहि अवयवमे प्रत्येककेँ **खप्पा** कहल जाइत अछि। खप्पा सभक संयोजन विन्दुकेँ **जोड़** कहल जाइत छैक।

पित्तर, ताम आदि पात्रक बाहरी भागमे शोभाक हेतु गोलमरियाक आघातसँ ऊभड़-खाभड़ सतह बनयबाक क्रिया **मठब/मठारब** होइत अछि। मठारलासँ उत्पन्न

सौन्दर्यकेँ **मठार/दाग/दग्गी** कहल जाइत छैक। रेती द्वारा बासनक कोरकेँ रगड़िकऽ चिक्कन करवाक क्रिया **रेतब** होइत छैक। कसेरीक कार्यस्थलपर बासन बनयबाक क्रममे जे ध्वनि निकलैत अछि तकरा हेतु विद्यापति **झंकार** (**कीर्तिलता, सं० बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2032, पृ. 28**) शब्दक प्रयोग कयने छथि।

बरतनक विशिष्ट आकृतिकेँ **काट** कहल जाइत छैक। उठापटक भेने बरतनक कोनो भाग तर धँसि जाइत छैक। धँसबाक क्रिया **पचकब** होइत अछि। पचकल भागकेँ **पचका** कहल जाइत छैक।

विभिन्न धातु ओ धात्विक मिश्रणसँ अनेक विशेषण बनैत अछि। तामक बासनकेँ **तमहा** कहल जाइत छैक। पित्तरक बासनकेँ **पितरिया** कहल जाइत छैक। पित्तरक बासनमे राखल खाद्यमे उत्पन्न विकृत स्वादकेँ **पितराइन** कहल जाइत छैक। काँससँ निर्मित बासनकेँ **कँसहा/कँसही** ओ फूलसँ निर्मित बासनकेँ **फुलहा/फुलही** कहल जाइत छैक। कँसही बासनमे राखल खाद्यमे उत्पन्न विकृत स्वादकेँ **कसाइन** कहल जाइत छैक।

कसेरा-ठठेरा द्वारा स्वनिर्मित ओ आयातित धातु-पात्रक विक्रय कयल जाइत अछि। एकरा उपयोगक आधार पर निम्नलिखित श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत छैक-(क) पाक सम्बन्धी (ख) भोजन एवं पान सम्बन्धी (ग) पूजाक बासन तथा (घ) अन्य

पाक सम्बन्धी : कसेराक व्यवसायसँ सम्बद्ध विभिन्न प्रकारक पात्र, पाक बनयबाक हेतु माटिक पात्रक विकल्पक रूपमे गृहीत अछि। ई पात्र सभ आगि पर चढ़ाकऽ खाद्य पदार्थकेँ सिद्ध करबाक हेतु उपयोगी होइत अछि। ई सभ माटि जकाँ जलक अवशोषण नहि करबाक कारणेँ अधिक पवित्र बूझल जाइत अछि आ माटिक पाक-पात्रक स्थानापन्न अछि।

पित्तरक करीब एक फुट व्यासक किञ्चित अवतल पेनीवला भात रन्हबाक हेतु व्यवहृत बासनकेँ **तसला/तसलबा** कहल जाइत छैक। ई पातर चदराक पिढ़ुआ बासन अछि। एकर पाञ्जरवला भाग पेनीसँ करीब तीस डिग्रीक कोणपर मुड़ल रहैत छैक आ एकर गर्दनि करीब एक आङुर ठाढ़ रहैत छैक। गर्दनिक परितः करीब दू आङुर चाकर कान बाहर दिस मुड़ल आ मुँह दिस ढालू रहैत छैक। छोट तसलाकेँ **तसली** कहल जाइत छैक। तसलेक आकृतिक काँस, फूल अथवा पित्तरक पैघ बासनकेँ **झिंगा/झिङ्गा/झिङा** कहल जाइत छैक। एकर पेनक व्यास करीब दू फीट होइत छैक आ पेन बेसी अवतल रहैत छैक। पेन आ पाञ्जरक बीच करीब एक सय बीस डिग्रीक कोण बनैत छैक। एकर कान करीब चारि आङुर चाकर, क्षैतिज तथा उत्तल होइत छैक। पैघ झिंगाकेँ **खाँखड़/खँखड़ा/खँखहर/खँखड़हरा** कहल जाइत

छैक। झिङाक लघु प्रभेदकेँ **झिङी/झिङ्गी/झिंगी** कहल जाइत छैक। एकर सभक उपयोग खासकऽ भोज-भातमे चाउर, दालि आदि रन्हबाक पात्रक रूपमे होइत छैक।

फूल,कसकुट अथवा काँससँ निर्मित गोलाकार पेट, अदृश्य गर्दनि तथा क्षैतिज ओ समतल कानसँ युक्त बरतनकेँ **बटुआ/बटु/बटुक** कहल जाइत छैक। एकर पेटक व्यास करीब एक बीत होइत छैक आ ई एक-दू व्यक्तिक हेतु पाकपात्रक रूपमे व्यवहृत होइत अछि। एकर देवाल मोट ओ ठोस होइत छैक तथा ई ढरुआ बासन थिक। एकर छोट प्रभेदकेँ **बटुली/बटलोही/बटलोहिया** कहल जाइत छैक।

पित्तरक समतल पेनवला पाकपात्रक प्रभेदकेँ **हंडी/हाँड़ी** कहल जाइत छैक। एकर पेन ओ पाञ्जरक बीचक मोड़ थोड़े गोलाइ लेने समकोणिक होइत अछि। पाञ्जरक उपरका भाग मुँह दिस करीब सय डिग्रीपर मुड़ल रहैत छैक। एकर गर्दनि करीब दू आङुर ठाढ़ होइत छैक तथा कानक चौड़ाइ करीब तीन आङुर होइत छैक। एकर गर्दनि ओ कानवला भागक बीच करीब सय डिग्रीक मोड़ रहैत छैक तथा कान मुँह दिस ढालू रहैत छैक। पैघ हण्डीकेँ **हण्डा/हाँड़ा/टोकनी/टुकनी** कहल जाइत छैक। एहिमे करीब तीन सेर धरि चाउर रान्हल जा सकैत छैक।

करीब पाँच सेर चाउर रन्हबाक हेतु प्रयुक्त पित्तरक हण्डीक प्रभेदकेँ **टोकना/टुकना** कहल जाइत छैक। एकर आकृति हण्डीसँ भिन्न होइत छैक। एकर पेनी अवतल होइत छैक आ पाञ्जरक निचला भाग ओ पेनीक बीचक मोड़ थोड़ेक गोलाइ लेने समकोणिक होइत छैक। मुदा एकर पाञ्जरक उपरका भाग शंकुक आकृतिक होइत छैक तथा गर्दनि कानविहीन, मुँह दिस ढालू तथा पाञ्जरक उपरका भागसँ करीब-करीब सय डिग्रीक कोणपर मुड़ल रहैत छैक। गर्दनिक चौड़ाई करीब तीन आङुर होइत छैक।

मुसलमानलोकनि ताम अथवा कसकुटक छोट मुँहवला तौलाक आकृतिक बासनकेँ **पतीला** कहैत छथि। छोट पतीलाकेँ **पतीली** कहल जाइत छैक। तसलाक आकृतिक पतीलाकेँ **देगचा/डेगचा/डेकचा** कहल जाइत छैक। छोट डेगचाकेँ **देगची/डेगची/डेकची** कहल जाइत छैक। पैघ देगचाकेँ देग (फा.)/**डेग** कहल जाइत छैक।

मुसलमानलोकनिक भोज-भातमे व्यवहृत भात रन्हबाक हेतु प्रयुक्त समतल पेनवला तामक पैघ बासनकेँ **तामी/तमिआ** कहल जाइत छैक। एकर पाञ्जरक आकृति टोकनासँ मिलैत छैक मुदा गर्दनि करीब छओ इंच ठाढ़ होइत छैक। एकर छोट प्रभेदकेँ **तम्हेरी** कहल जाइत छैक।

विविध उपयोगमे आबऽवला बासनक एकटा प्रभेदकेँ **बहुगुना/बहुगुन्ना/बरगुना/बरगुन्ना/ टोपिया/गमला/घमला** कहल जाइत छैक। एकर पेनी समतल

होइत छैक तथा पेंटवला भागक चारू कात समकोणपर ठाढ़ घेरा रहैत छैक। घेरावला भागक उपरका सतह पर बाहर दिस मुड़ल करीब दू आङुर चाकर समतल कान बनल रहैत छैक। पैघ टोपियाकें **टोपा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पैघ टोपियाकें **टोप** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो टोपा कानरहित होइत छैक तथा एकरा पकड़बाक हेतु उपरका भागक पार्श्वमे दू ठाम एक-दोसराक समक्ष दूटा धातुक वलय लागल रहैत छैक। एहि वलयकें **कड़ा/बाला/बलिया/कड़ी** कहल जाइत छैक।

तरकारी रन्हबाक हेतु पित्तर अथवा काँसक खुलल मुँहक बासन सेहो व्यवहृत होइत अछि । एकरा **कड़ाही/लोहिया/कँसहड़ी/लोहँदा/लोहना** कहल जाइत छैक। ई लोहाक सेहो बनैत अछि। लोहे जकाँ पित्तरोसँ **कड़ाह, छोलनी/कफगीर** (मुसलमानमे), **छनोटा/सनोटा/**(ग्रि.) **/झँझरा/झरना/झाँझा** आदि पाक सम्बन्धी पात्र बनाओल जाइत अछि।

पाक सम्बन्धी विभिन्न पात्रक मुँहकें झँपबाक हेतु व्यवहृत बासनकें **ढकना/ढाकन/ढपना/झकना/झपना/सरपोस** (मुसलमानमे) कहल जाइत छैक।

भोजन ओ पान सम्बन्धी : खयबाक हेतु आधार पात्रक रूपमे व्यवहृत समतल आधार ओ वृत्ताकार परिधिवला काँस, फूल अथवा पितरक बासनकें **थारी/** (सं. स्थाली)**/थाली/थरिया/छीपा** कहल जाइत छैक। एकर परिधिक चारू कातक उठल भागकें **कोर/बाढ़/कान** कहल जाइत छैक। थारीक भीतरी व्यास करीब एक फुटसँ सवा फुट धरि होइत छैक। एक फुटसँ कम व्यासवला थारीकें **रिकबी/रिकाबी/रिकेबी/छिपली/छिपुली** कहल जाइत छैक। छोट छिपलीकें **छीप** कहल जाइत छैक । अत्यन्त छोट छीपकें **छिप्पी** कहल जाइत छैक । पैघ थारीकें **थार** कहल जाइत छैक। काँसक थारीकें **टाँठी** (ग्रि.)**/ठाँठी** (ग्रि.) कहल गेल अछि। वर्णरत्नाकरमे एहि हेतु **टाठी** शब्द भेटैत अछि (वर्णरत्नाकर पृ.-12)। मधुर आदि रखबाक हेतु करीब दू हाथ व्यासक चारि आङुर ठाढ़ बाढ़वला पित्तरक थारकें **परात** कहल जाइत छैक। कोनो-कोनो थारीक सतहपर विभिन्न प्रकारक चेन्ह-चाक उखारल रहैत छैक, जकरा **सिक्का** कहल जाइत छैक।

आयातक स्थान, बाढ़क खरइ ओ काटक भिन्नताक आधारपर थारीक अनेक प्रभेद होइत छैक। आगरासँ आयातित थारीक प्रभेदकें **अगरैल/अगरैलही** कहल जाइत छैक। एकर कोर करीब दू आङुर ठाढ़ तथा बाहर दिस किञ्चित् झुकल रहैत छैक। दू आङुर ठाढ़ तथ ऊपर दिस एक आङुर चाकर कानवला थारीकें **गायसरी/गेसरी/गैसरी** कहल जाइत छैक। चारि आङुर सीधा ठाढ़ कानवला पित्तरक थारीकें **गिरमी/मिर्जापुरी** कहल जाइत छैक। ई मिर्जापुर (उ०प्र०) सँ अयातित होइत अछि। चारि आङुर ठाढ़ तथा बाहर दिस अल्प झुकल बाढ़वला थारीकें **झरका/धरका/धरुका** कहल जाइत

छैक। चारि आङुर सीधा ठाढ़ कानवला फूलक थारीकें **मलंगिया/पूर्वी** थारी कहल जाइत छैक। करीब पाँच आङुर बाढ़वला कठौतक सदृश थारीकें **मलाही/कठौतिया** कहल जाइत छैक। डेढ़ आङुर बाढ़वला थारी **बलेसरी** कहल जाइत छैक। जाहि थारीक बाढ़ एक आङुर होइत छैक तथा कान भीतर दिस अवतल सतहसँ युक्त रहैत छैक, ओकरा **बग्गी/बोगी/बौगी/बङला** कहल जाइत छैक। **सानक** थारीक बाढ़ दू आङुर ठाढ़ होइत छैक तथा ऊपर जाकऽ चाकर भऽ जाइत छैक। डेढ़ आङुर ठाढ़ बाढ़वला उत्थर थारीक प्रभेदकें **कञ्चनी/कञ्चनपुरी** कहल जाइत छैक। पैघ आकृति एवं छितनार बाढ़वला थारीकें **छैनीकाट** कहल जाइत छैक। करीब आधा आङुर ठाढ़ बाढ़वला थारीक प्रभेदकें **सरैया** कहल जाइत छैक।

मुसलमानलोकनि वृत्ताकार एवं उत्थर धातुक विशिष्ट पात्रकें **तसत** कहैत छथि। ई उपहार देबाक हेतु सामान्यतया प्रयुक्त होइत छैक। छोट तसतकें **तश्तरी** कहल जाइत छैक, जे पान-सुपारी प्रस्तुत करबाक हेतु प्रशस्त बुझल जाइत रहल अछि। करीब एक आङुर ठाढ़ घेराक ऊपर करीब चारि आङुर चाकर ओ उत्तल कानसँ युक्त मुसलमानलोकनिमे व्यवहृत उत्थर पात्रकें **सेनी/सैनी/सैन** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। ई भोज्य पदार्थक स्थानान्तरणक हेतु व्यवहृत होइछ।

दालि-तरकारी आदि खयबाक हेतु फाँक गोलाक अर्द्धभागक आकृतिक मोट देवालवला धातुपात्रकें **कटोरी** (सं. करोटि) कहल जाइत छैक। मुसलमानलोकनि एकरा **प्याली/पिआली/पेआली** कहैत छथि। पैघ कटोरीकें **कटोरा/पिआला/पेआला/प्याला** कहल जाइत छैक। गोरा लागल पैघ कटोराकें **बाटी/मेहिबाटी** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। पैघ बाटीकें **बट्टा/बटबा** कहल जाइत छैक। फूलक गोराविहीन बटबाकें **जाम** कहल जाइत छैक। पातर देवालवला पित्तरक पैघ जामकें **बटिया** कहल जाइत छैक। मोट देवालसँ युक्त पैघ बटियाकें **गमला/घमला** कहल जाइत छैक। काँस अथवा पित्तरक करीब एक बीत व्यासक समतल पेनीवला कठौतक सदृश बासनकें **अढ़िया/कठौत** कहल जाइत छैक। एकर पान्जरक घेरा पेनसँ करीब एक सय बीस डिग्रीक कोण बनबैत छैक तथा पान्जर बाहर दिस उत्तल होइत छैक। एकर घेराक उपरका सतहपर करीब दू आङुर चाकर क्षैतिज कान बनल रहैत छैक। चिक्कस आदि सनबाक हेतु अढ़ियाक व्यवहार होइत अछि। मुसलमानलोकनिमे व्यवहृत अढ़ियेक सदृश बासनकें **लगन** कहल जाइत छैक।

पानि पीबाक हेतु व्यवहृत पात्रक एकटा प्रभेद **लोटा** होइत अछि। ई सामान्यतः फूलक होइछ। तामक लोटाकें **तमहा** कहल जाइत छैक। सामान्य आकृतिसँ छोट लोटाकें **लोटकी/लोटिया** कहल जाइत छैक। पैघ लोटाक हेतु **लोटका** शब्दक सेहो व्यवहार अछि। पानि ढारि कऽ पीबाक हेतु छोट सन लोटाक

व्यवहार होइत छैक। एकरा **दुकनी** कहल जाइत छैक। छोट आकृतिक गोल लोटाकें **टुनमुन/टुनमुनिआ** लोटा कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट लोटकोकें **लुटकी** कहल जाइत छैक।

आयातक स्थान, दरब ओ आकृतिक आधारपर विभिन्न प्रकारक लोटा भिन्न-भिन्न नामे अभिहित होइत अछि। **जयपूरी/जयपुरिया** लोटा फूल अथवा काँसक होइत छैक। एकर पेन समतल तथा गोराविहीन होइत छैक, पाञ्जरक घेरा गोल तथा पेन पर उदग्र रहैत छैक। पाञ्जरक उपरका भाग किञ्चित शंक्वाकार होइत छैक तथा गर्दनि करीब चारि आङुर नाम ओ पाञ्जरक शंक्वाकार भागपर उदग्र रहैत छैक। एहि लोटाक पाञ्जरक गोलवला भाग पहलदार होइत छैक। दानक हेतु व्यवहृत अत्यन्त हल्लुक दरबसँ निर्मित गोरा लागल, अवतल पेन, शंक्वाकार पाञ्जर तथा बाहर दिस मुड़ल कानवला लोटाकें **बम्बइया/पूर्बी/हवासी/ कुमकुमा/मलँगिया/दनहा** कहल जाइत छैक। अवतल पेनीपर करीब अस्सी डिग्रीक कोण बनबैत पाञ्जरसँ युक्त गोराविहीन पित्तरक लोटाकें **जगाधरी/मारवाड़ी** कहल जाइत छैक। एकर पाञ्जरक उपरका भागमे करीब एक आङुर चाकर क्षैतिज कान बनल रहैत छैक। **मुरादाबादी** लोटा फूल अथवा काँसक होइत छैक। एकर पेनी खूब अवतल होइत छैक तथा ई गोरायुक्त होइत छैक। एकर पाञ्जरक निचला भाग शंक्वाकार होइत छैक तथा गर्दनिसँ उपरका भाग निचला शंकुक विपरीत दिशामे मुड़िकऽ छिरिआयल रहैत छैक। पित्तरक लोटाक एकटा प्रभेद **कलगैआ** होइत अछि। एकर पेन गोराविहीन आ किञ्चित अवतल होइत छैक। एकर पाञ्जरक निचला भाग बेलनाकार तथा उपरका भाग शंक्वाकार होइत छैक। पाञ्जरक उपरका भागमे करीब सय डिग्रीक कोणपर दू आङुर ठाढ़ कान रहैत छैक। एहि लोटाक बाहरी भागमे कोदबाक चेन्ह सदृश मठार उत्पन्न कयल रहैत छैक। मठाररहित गोराविहीन पितरिया लोटाक चौरस पेटवला प्रभेदकें **परयागी** कहल जाइत छैक। गोलाक आकृतिक पेट ओ एक आङुर कानवला लोटाक प्रभेदकें **कासीवाल** कहल जाइत छैक। वैष्णव बबाजीलोकनिक गोल पेट तथा अत्यन्त छितनार कानवला लोटाक प्रभेदकें **साधुशाही** कहल जाइत छैक।

लोटेक एक गोट प्रभेदमे कम-कम मात्रामे पानि चुअयबाक हेतु ओकर पार्श्वमे धातुक नली लागल रहैत छैक । एहि नलीकें **टोंटी** कहल जाइत छैक। टोंटीसँ युक्त लोटाकें **टोंटीदार** कहल जाइत छैक। टोंटीदार लोटाक अत्यन्त छोट प्रभेदकें **टुइयाँ** कहल जाइत छैक। सोझ टोंटीसँ युक्त लोटाक प्रभेदकें **हथहड़/गडुआ/गेडुहा** कहल जाइत छैक। छोट हथहड़कें **हथहड़ी** कहल जाइत छैक। गोल अग्रभागवला टोंटीसँ युक्त लोटाकें **सोबरना/सुवर्णा** कहल जाइत छैक। छोट सोबरनाकें **सोबरनी/सुवर्णी** कहल जाइत छैक। नाम शरीर तथा चपोल मुँहवला सोबरनाक

प्रभेदकें **झारी/झारिल** कहल जाइत छैक। हाथसँ पकड़बाक हेतु डंटी लागल झारीक प्रभेदकें **माधवसिंघी** कहल जाइत छैक। **राजासाही, सलमशाही** आदि विभिन्न कालमे प्रचलित लोटाक प्रभेद छल।

मुसलमानलोकनि पैघ मुँहवला टोंटीदार लोटाक उपयोग करैत छथि। एकरा **बधना** कहल जाइत छैक। छोट बधनाकें **बधनी** कहल जाइत छैक। पानि पीबाक हेतु मुसलमानलोकनिमे व्यवहृत तामक गोरायुक्त कटोराकें **पनपीया** कहल जाइत छैक। पनपीयाक सदृश फूल, काँस आदिक बासनकें **अपखोरा/अबखोरा/अमखोरा/खोरा** कहल जाइत छैक।

गंगाजल रखबाक हेतु बोतलक आकृतिक धातु पात्रकें **गंगाजली** कहल जाइत छैक। पेंचयुक्त ढक्कनसँ युक्त लोटा जाहिमे कामरक हेतु जल बोझल जाइत छैक, सेहो गंगाजली कहल जाइत अछि।

पानिके पीबाक हेतु व्यवहृत समतल पेनी ओ किञ्चित बेलनाकार पेटवला धातु-पात्रकें **गिलास** (अं. ग्लास) कहल जाइत छैक। छोट गिलासकें **गिलसी** कहल जाइत छैक। वक्र पहलसँ युक्त गिलासकें **ऐंठुआ गिलास** कहल जाइत छैक।

पानिक संचय करबाक हेतु समतल पेनी, बेलनाकार पेट ओ चारि आङुर ठाढ़ कानवला बासनकें **गगरा** कहल जाइत छैक। छोट गगराकें **गगरी** कहल जाइत छैक। तामक गगरीकें **तमघैल/तमघैला** सेहो कहल जाइत छैक। छोट तमघैलाकें **तमघैली** कहल जाइत छैक। काँस अथवा फूलसँ बरुआ तमघैला सेहो बनैत अछि। एकर आकृति गगरा अथवा घैलसँ भिन्न होइत छैक। एकर पेन करीब चारि आङुर व्यासक गोरादार होइत छैक। पाञ्जरक व्यास पेनीसँ ऊपर दिस क्रमशः अधिक भेल रहैत छैक आ मध्य भागमे जाकऽ पेट करीब एक फुट चाकर भऽ जाइत छैक। पश्चात् पेटक व्यास क्रमश ऊपर दिस घटल रहैत छैक आ पुनः चारि आङुर भऽ जाइत छैक। पेटक उपरका भागमे करीब एक बीत नाम चपोल गर्दनि बनल रहैत छैक। गर्दनिक उपरका भागमे बाहर दिस झुकल करीब दू आङुर चाकर कान बनल रहैत छैक। एहि तमघैलक छोट प्रभेदकें **कलसा** सेहो कहल जाइत अछि। छोट कलसाकें **कलसी/ठिल्लि/ठिलिया** कहल जाइत छैक। समतल पेन, संकुचित मुखाग्र, किञ्चित बेलनाकार पेट ओ करीब एक हाथ नाम गर्दनिवला पानि रखबाक पात्रकें **सुराही/सोराही** कहल जाइत छैक। समतल पेन ओ नीचासँ ऊपर दिस क्रमशः अधिक व्यासवला पेटसँ युक्त धातुक खुलल मुँहक पात्रक उपयोग मुसलमानलोकनि पानि जमा करबाक हेतु करैत छथि। एहि पात्रकें **मटका/मटुका** कहल जाइत छैक।

लोहे जकाँ पित्तरोक **डोल, बाल्टी** सेहो बनैत अछि, मुदा ई बरुआ होइत अछि। साधु-सन्यासी पित्तरक कम व्यासक नाम डोलक उपयोग करैत देखल जाइत छथि, जकरा **कमण्डल/कमण्डलु** कहल जाइत छैक।

पूजाक बासन : पूजामे अनेक प्रकारक धातु-पात्रक व्यवहार होइत छैक। जल उत्सर्ग करबाक हेतु अत्यन्त लघु आकृतिक ताम अथवा काँसक करछुकेँ **अचमनी/आचमनी** कहल जाइत छैक। करीनक आकृतिक अर्घ्य देबाक ताम्र पात्रकेँ **अर्घा** कहल जाइत छैक। छोट अर्घाकेँ **अर्घी** कहल जाइत छैक। पूजाक हेतु जल जाहि बेलनाकार गिलासमे राखल जाइत अछि, से **जलपात्र/पञ्चपात्र/पँचपातर** कहल जाइत छैक। भगवानक विग्रहकेँ धातुक जाहि छीपमे स्नान कराओल जाइत छनि से **सराइ** कहल जाइत अछि। अगरबत्ती खोंसबाक हेतु धातुक अनेक छिद्रयुक्त पात्रकेँ **अरगदान/अरगदानी/अगरदान/अगरदानी** कहल जाइत छैक। धूप जरयबाक हेतु धातुक डंटी लागल गँहीर पात्रकेँ **धुपदान/धुपदानी/धूपहल (वर्ण.)** कहल जाइत छैक। प्रकाशक हेतु तेल-बाती रखबाक आधार पात्रकेँ **दीप/दीया/दिपली/दिपुली** कहल जाइत छैक। धातुक दीपाधार पात्रकेँ **दीपदान/दिपदानी** कहल जाइत छैक। धातुक स्तम्भमे उपरका भागमे दीपसँ युक्त पात्रकेँ **निरंजनी/समइ** कहल जाइत छैक। आरती देखयबाक हेतु अनेक टेमीसँ युक्त अनेक दीप-पात्रक समूहकेँ **आरती** कहल जाइत छैक। महादेवक अभिषेकक हेतु व्यवहृत पात्रकेँ **शृंगी** कहल जाइत छैक। फुल लोढ़बाक हेतु धातुक **फुलडाली/फुलडलिया** सेहो बनैत अछि। अर्घा, आचमनी, पंचपात्र आदिक समूहकेँ **पारखत** कहल जाइत छैक। भगवानक विग्रहकेँ धातुक जाहि आसनपर बैसाओल जाइत छनि, से **सिंगासन/सिंघासन** कहल जाइत अछि। भगवानक विग्रहकेँ जाहि बन्द धातु-पात्रमे राखल जाइत छनि, ओकरा **सम्पुट/सम्पोट** कहल जाइत छैक। महादेवकेँ पूजाक हेतु जाहि धातुक आधारपात्रमे राखल जाइत छनि, से **जलधरी/जलढरी** कहल जाइत अछि। महादेवक ऊपर ठोपे-ठोप जल चुअयबाक हेतु पेनीमे छिद्रयुक्त गगराकेँ सेहो **जलधरी/जलढरी** कहल कहल जाइत छैक। चानन करबाक हेतु धातुक छोट सन दंडकेँ **चननकाठी** कहल जाइत अछि।

काशीमे चौखूट ओ समतल आधार पर चारू दिस चौखूट घेरासँ युक्त हवनपात्र बनैत अछि। एकरा **तमकुण्ड (वर्ण.)/तमुकुण्ड (कीर्त्तिलता, सं. बाबूराम सक्सेना,पृ.-40)** कहल जाइत छैक। छोटा तमकुण्डाकेँ **तमकुण्डी** कहल जाइत छैक।

मन्दिरक सभसँ उपरका भागमे धातुक शोभायुक्त बनावटिकेँ **गुम्बद/कलस** कहल जाइत छैक। शंकर भगवानक मन्दिरक कलसक उपरका भागमे धातुक त्रिशूल, विष्णु मन्दिरक कलसक उपरका भागमे चक्र ओ भगवती मन्दिरक कलसक उपरका भागमे खड्ग(खाँड़) लगयबाक विधान अछि।

पूजाक समयमे अनेक प्रकार धातु-वाद्य बजाओल जाइत अछि। पुजारी पूजाकाल बामा हाथेँ फूलक उनटल कटोरी सदृश आधारमे डंटी लागल वस्तुकेँ डोलबैत अछि। एकर कटोरीक मध्य भागमे एकटा लोहाक दंडाकार वस्तु डोलैत रहैत

छैक जे कटोरी पर चोट कऽ ध्वनि उत्पन्न करैत रहैत छैक। एहि वाद्यकेँ **घंटी/घाँटी (धनके बाजय घाँटी। निरधन लोटय माटी॥)/गरूड़घण्टी** कहल जाइत छैक। मन्दिरमे प्रवेश करैत काल भक्तलोकनि छतमे टाङल उनटल कटोरी सदृश वाद्यक बिचला भागमे लागल लौह दंडसँ आघात कऽ ध्वनि उत्पन्न करैत छथि। एकर कटोरी सदृश भाग फूलक होइत छैक तथा ढरूआ रहैत छैक। एहि वाद्यकेँ **घंटा** कहल जाइत छैक। पैघ घंटाकेँ **घण्ट** कहल जाइत छैक। आरतीक समय फूलक दू सूत मोट वृत्ताकार वस्तुपर काठक हथौड़ीक आघातसँ ध्वनि उत्पन्न कयल जाइत अछि। एहि वाद्यकेँ **घड़ी** कहल जाइत छैक। पैघ घड़ीकेँ **घड़ियाल** कहल जाइत अछि। फूल अथवा कसकुटक समतल आधार ओ केन्द्र दिस मुड़ल उठल कानसँ युक्त थारीक सदृश वाद्यकेँ काठक दण्डक आघात द्वारा बजयबाक विधान अछि। एहि वाद्यकेँ **विजघंट/विजयघंट/झाँझ/ ढनढननिआ/टनटनिआ** कहल जाइत छैक। घड़ी ओ विजयघंटक समूहकेँ **घड़ीघंट/घड़ीघण्टा** कहल जाइत छैक।

अन्य : सामान्य उपयोगक हेतु धातुक दीपाधार पात्रकेँ **दीयठ /दीयठि / चिरकदान/ चिराकदान/ चिरागदान/चिराकदानी/चिरागदानी/दिपरा/ दिपहरा/ फतीलसोज (फ़ि.)/पितलसोझ (मुसलमानलोकनिमे)** कहल जाइछ। देहमे तेल लगयबाक हेतु गोराविहीन छोट कटोरीकेँ **माली** कहल जाइत छैक। थूक फेकबाक हेतु डमरूक आकृतिक खुलल मुँहक बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **पिकदान/पिकदानी/पिरिकदान/पिरिकदानी/उगलदान** कहल जाइत छैक। आधारमे गोल तथा ऊपर दिस पैघ मुँहवला छितनार हस्तप्रक्षालन पात्रकेँ **चिमची/चिलिमची/सिलफची/डाबर** कहल जाइत अछि। इत्र छिटबाक हेतु व्यवहृत धातुपात्रकेँ **इत्रदान/इतरदान/अतरदान** कहल जाइत छैक। गुलाब जलक प्रक्षेपणक हेतु अग्रभागमे अनेक छिद्रयुक्त पात्रकेँ **गुलाबपास** कहल जाइत छैक। शोभाक हेतु फूल रखबाक हेतु व्यवहृत पात्रकेँ **फुलदान/गुलदस्ता** कहल जाइत छैक। पित्तरक काजर रखबाक पात्र सेहो बनैत अछि। एकरा **कजरौटा** कहल जाइत छैक। छोट कजरौटाकेँ **कजरौटी** आ पैघकेँ **कजरोट** कहल जाइत छैक। पान रखबाक हेतु धातुक चौखूट डिब्बाकेँ **पनबट्टा** कहल जाइत छैक। छोट पनबट्टाकेँ **पनबट्टी** कहल जाइत छैक। एहिमे सुपारी आदि रखबाक हेतु खोल बनल रहैत छैक। पानक खिल्ली रखबाक हेतु व्यवहृत धातुक खोलरहित डिब्बाकेँ **खिलबट्टी** कहल जाइत छैक। पैघ खिलबट्टीकेँ **खिलबट्टा** कहल जाइत छैक। पान रखबाक हेतु मुसलमानलोकनिमे प्रचलित गोल पनबट्टाकेँ **पानदान/खासदान** कहल जाइत अछि। किमाम रखबाक डिब्बाकेँ **किमामदान** कहल जाइत छैक। गहना-गुड़िया रखबाक हेतु व्यवहृत छोट सन डिब्बाकेँ **कन्तोड़/मजुक्खा** कहल जाइत छैक। छोट

कन्तोड़कें **कन्तोड़ी** कहल जाइत छैक। भोजन उठाकऽ खयबाक हेतु छोट सन करछु सदृश पात्रकें **चम्मच/चम्मस/चमचा** कहल जाइत छैक। एकर अग्रभाग छिछलाह आ अल्प गँहीर होइत छैक। छोट चम्मचकें **चमची** कहल जाइत छैक।

ढोलक चामकें कसबाक हेतु ओकर रस्सीमे लागल पित्तरक वलयकें **बाला/बलिया** कहल जाइत छैक। चाउर आदि नपबाक हेतु तामाक कटोरी सदृश नपनाकें **तामा** कहल जाइत छैक। संगीत, कीर्त्तन आदिमे एक जोड़ फूलक वाद्यकें परस्पर टकराकऽ ध्वनि उत्पन्न कयल जाइत अछि। एहि वाद्यकें **झालि/झाइल** कहल जाइत छैक। एकर प्रत्येक पल्लाक मध्य भाग अवतल ओ छिद्रयुक्त होइत छैक जाहिमे रस्सी पैसाकऽ एकरा पकड़ल जाइत अछि। अवतल भागक उपरका फलक समतल आ वृत्ताकार होइत छैक। पैघ झालिकें **झाल** कहल जाइत छैक। पचनिआ पित्तरक अत्यन्त पातर ओ पैघ झालक उपयोग करैत अछि। एकरा **झामर** कहल जाइत छैक। चौपहरा नाचमे थारीक आकृतिक पैघ झालक उपयोग होइत छैक, जकरा **झल्लर** कहल जाइत छैक। कटोरीक आकृतिक अत्यन्त छोट झालिकें **मजीरा** कहल जाइत छैक। काठक फर्ममे छोट-छोट वृत्ताकार झालिक युग्मकें फँसाकऽ ध्वनि करबाक हेतु प्रयुक्त वाद्यकें **करताल/कठताल** कहल जाइत छैक। तबलाक डुग्गीक खोल सेहो तामक बनैत अछि। दू ठाम विपरीत दिशामे समकोणपर मुड़ल फुकिकऽ बजयबावला तामक वाद्यकें **धूतहू/सिंगाबाजा/सिंङ्घाबाजा** कहल जाइत छैक। एकर शरीरक समस्त भाग बेलनाकार होइत छैक आ फुकबाक मुँह पातर तथा ध्वनि बहरयबाक मुँह दिस बेलन क्रमशः अधिक व्यासक रहैत छैक। धियापुताक डाँड़मे फूलक एकटा छोट सन वाद्य लगाओल जाइत छैक। एकरा **घुघरू/घुङ्घरू/झुनझुना** कहल जाइत छैक। नटुआक पैरमे बन्हबाक हेतु व्यवहृत घुङ्घरूक समूहकें **पावटी** कहल जाइत छैक। मालजालक गर्दनिमे बन्हबाक हेतु प्रयुक्त पैघ घुँघरूकें **घुरघुरा** कहल जाइत छैक। एहिमे रस्सी पैसयबाक हेतु उपरका भागमे कोढ़ा बनल रहैत छैक तथा एकर आकृति गोल होइत छैक। एकर भीतरी भागमे देवालपर चोट करबाक हेतु पाथर अथवा लोहक गोली पैसाओल रहैत छैक। पैघ लोकक घरमे **झाड़-फानूसक** प्रकाश-व्यवस्थामे शीशाकें आधार देबाक हेतु धातुक दंड सेहो लागल रहैत छैक।

कलवारक व्यवसायमे दारू चुअयबाक हेतु विभिन्न प्रकारक ताम्रपात्र सेहो कसेरीक उत्पादन थिक। कसेरी लोहक चदराकें मोड़ि ओ रेसिकऽ अनेक उपयोगी सामग्री बनबैत अछि। तेल आदिकें एक बासनसँ दोसर बासनमे ढारबाक हेतु व्यवहृत शंकुक आकृतिक पात्रकें **टीप** कहल जाइत छैक। मटिया तेल जराकऽ प्रकाश करबाक हेतु टिनक चदरासँ निर्मित गोल धातु-पात्रकें **डिबिया** कहल जाइत छैक। दूध नपबाक हेतु व्यवहृत लोहक चदरासँ बनल बोतलक आकृतिक पैघ पात्रकें

कंटर/कनस्तर कहल जाइत छैक। आइकाल्हि कसेरा लोहाक चदरासँ विभिन्न आकारक **बाकस** सेहो बनबैत अछि। लोहाक चदराक अत्यन्त पैघ बाकसकें **ट्रंक** (अं.) कहल जाइत छैक। अन्न-पानि रखबाक हेतु लोहक चदरासँ निर्मित बेलनाकार पात्रकें **टप** कहल जाइत छैक।

सोनार

सोना तथा चानी नामक धातुसँ विभिन्न अंगकें आभृत करऽवला प्रसाधन सामग्रीक रूपमे व्यवहृत वस्तुकें **गहना/अभरण/आभरण/जेवर** (फा.) कहल जाइत छैक। एकरा हेतु प्राचीन शब्द **भूषण/आभूषण** अछि। विभिन्न प्रकार गहनाक समूहक हेतु **गहना-गुरिआ/ जेवरात** शब्दक प्रयोग होइत अछि। छोटछीन गहनाकें **टुमटाम** कहल जाइत छैक। गहनाक निर्माण ओ विक्रयसँ सम्बद्ध जातिकें सोनार कहल जाइत छैक। सोनारक वृत्तिकें **सोनारी** कहल जाइत छैक। सोना ओ चानीक थोक बाजारकें **सर्राफा** कहल जाइत छैक। सोन ओ चानीक थोक व्यापारीकें **सर्राफ** कहल जाइत छैक।

पूर्वमे सोन ओ चानीसँ विभिन्न प्रकारक धातु-पात्र सेहो बनैत छल। सोन ओ चानीक महार्घताक कारणें आब एहि दूनू धातुक बासनक उपयोग मात्र सम्पन्न लोकक ओहिठाम देखल जा सकैत अछि। एहि बासन सभसँ सम्बद्ध शब्दावली धातु पात्रक सामान्य शब्दावली अछि।

आधार सामग्री

सोनारक प्रमुख आधार सामग्री अछि **सोन/सोना** नामक धातु। ई हलका पीताभ वर्णक तथा अत्यन्त नमनशील होइत अछि। सोना खानसँ प्राप्त होइत अछि तथा एकरा परिशुद्ध कऽ बजारमे पठाओल जाइत छैक। सरकारी मोहरसँ युक्त शुद्ध सोनाक चौखूट ओ मोट टुकरीकें **सील/पाँसा/बिस्कुट/छलकी/छिलकी/थोक/थौक** कहल जाइत छैक। सोनाक गोल-मोल ठोस रूपकें **गद्दा/गद्दी/डल/डली** कहल जाइत छैक। सर्वथा विशुद्ध सोनाकें **खालिस सोना/बिठुर सोना/निःकसरि** कहल जाइत छैक। सोनमे मिलाओल अन्य धातुकें **बट्टा/खाद** कहल जाइत छैक। सोनमे बट्टाक रूपमे चाँदी, जस्ता, ताम्बा आदि धातु फेंटल रहैत अछि। अत्यधिक बट्टासँ युक्त सोनाकें **गोबरिया सोना** कहल जाइत छैक। नेपालसँ आयातित सोनाक बट्टेदार प्रभेदकें **नेपाली सोना** कहल जाइत छैक। जाहि सोनामे साढ़े चौदह ओ डेढ़क अनुपातमे शुद्ध सोना ओ बट्टा रहैत अछि ओकरा **गिन्नी सोना** कहल जाइत छैक।

बट्टेदार सोनामे शुद्ध सोनाक अनुपातकें **छारी** कहल जाइत छैक। बारह आना छारीक अर्थ बट्टेदार सोनमे शुद्ध सोना ओ बट्टाक अनुपात बारह ओ चारि होइत अछि।

सोनक शुद्धता ओ ओहिमे देल बट्टाक निर्धारण करबाक मानककेँ **कैरेट/करंट** कहल जाइत छैक। खालिस सोनाकेँ चौबीस कैरेट मानल जाइत अछि। आधा सोना ओ आधा बट्टा रहलापर सोनाकेँ बारह कैरेटक, तीन चौथाइ सोन ओ एक चौथाइ बट्टा रहलापर सोनाकेँ अठारह कैरेटक बूझल जाइत अछि। एही तरहेँ सोना चौदह, सोलह, बाइस कैरेटक सेहो होइत अछि।

सोनारक दोसर प्रमुख आधार सामग्री अछि **चानी/चाँदी** नामक धातु। एकर रंग उज्जर होइत छैक तथा इहो अत्यन्त नमनशील खनिज होइत अछि। चानीक मोट ओ चौखूट टुकड़ीकेँ **चौरस/सील** कहल जाइत छैक। चानीमे बट्टाक रूपमे ताम, जस्ता, राङा आदि धातुक उपयोग होइत अछि। जाहि चानीमे शुद्ध धातु ओ बट्टाक अनुपात दस ओ छौ होइत छैक, ओकरा **रूप/रूपा** कहल जाइत छैक। छौ ओ दसक अनुपातमे शुद्ध धातु ओ बट्टा रहलापर चानीकेँ **टलहा** कहल जाइत छैक।

सोनारी व्यवसायमे व्यवहृत आठटा धातुक सम्मिश्रित रूपकेँ **अष्टधातु/अष्टद्रव्य/अठदरब** कहल जाइत छैक। एहिसँ खासकऽ प्रतिमा ओ तांत्रिक यन्त्र बनाओल जाइत छैक। अष्टधातुमे सोना, चाँदी, लोहा, ताम्बा, जस्ता, पारा, राङा ओ सीसाक मिश्रण रहैत अछि (**संस्कृत अंग्रेजी कोष, वी. एस. आप्टे, पृ.-124, स्वर्णं, रूप्यं, ताम्रं च रंगं यशदमेव च। शीशं लोहं रसश्चेति धातवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः**)। लोहा स्लेटक वर्णक कठोर धातु अछि। ताम्बा बदामी रंगक नमनशील धातु अछि। जस्ता उज्जर रंगक नमनशील धातु होइत अछि। राङा सेहो उज्जर धातु थिक आ ई गर्म कयलापर सुगमतया गलि जाइत अछि। पारा उज्जर रंगक द्रव धातु थिक। सीसा पारदर्शी यौगिक होइत अछि।

गरीब लोक सोन ओ चानीक महार्घताक कारणेँ ताम, पित्तर, राङा, काँस, कसकुट, गिलट, सिल्पर आदि धातु ओ धात्विक मिश्रणसँ सेहो विभिन्न प्रकारक गहना बनबाबैत छथि।

गहनामे सौन्दर्यक हेतु धातुपर बैसाओल मूल्यवान पाथरकेँ **नग/नगीना/रत्न/रतन** कहल जाइत छैक। रत्नक संख्या नौ मानल जाइत छैक। एकरा सभक समूहकेँ **नौरत्न/नौरतन/नवरत्न** कहल जाइत छैक। नओ रत्नसँ सम्बद्ध दोहा अछि–

हीरा पन्ना नीलमणि लहसुनिआ पोखराज।
मानिक ओ गोमेद पुनि मोती मूँगा साज॥

हीरा अत्यन्त कठोर पाथर होइत अछि। एकर चमक सेहो अत्यधिक होइत छैक तथा ई विभिन्न रंगक होइत अछि। उज्जर, पीयर ओ लाल रंगक हीरा बेसी प्रयुक्त होइत अछि। एकरा संस्कृतमे कुलिश कहल जाइत छैक। पन्ना हरियर रंगक पाथर थिक। एकरा संस्कृतमे मरकत कहल जाइत छैक। नीलमणिकेँ **इन्द्रनील/नीलम** सेहो

कहल जाइत छैक। एकर रंग नील होइत छैक। लहसुनिआक रंग ईंटासँ मिलैत छैक। पोखराज उज्जर तथा पीयर रंगक पाथर थिक। मानिक (सं. माणिक्य) केँ **लाल** सेहो कहल जाइत छैक। एकर रंग सेहो लाल होइत छैक। गोमेदक रंग गोमूत्र सदृश हल्का पीयर ओ गाढ़ लालक मिश्रित रूप होइत छैक। मोती सीपसँ प्राप्त पदार्थ थिक। एकर रंग उज्जर होइत छैक तथा ई अत्यन्त चमकयुक्त होइछ। मूँगा/मङा समुद्रसँ प्राप्त होइत अछि। संस्कृतमे एकरा प्रवाल कहल जाइत छैक। एकर रंग सिन्दूरी होइत छैक।

नवरत्नक अतिरिक्तो अनेक पाथर गहनामे लगाओल जाइत छैक। एहिमे अबरख जकाँ उज्जर ओ चमकदार पाथरकेँ **ओपल** कहल जाइत छैक। कत्थइ ओ लाल रंगक पाथरक एकटा प्रभेदकेँ **तामा** कहल जाइत छैक। हलका नील रंगक पाथरक एकटा प्रभेदकेँ **फिरोजा** कहल जाइत छैक। हकीक (अ. अकीक) नामक पाथर अनेक रंगक होइत अछि। उज्जर-पीयर तथा उज्जर-लाल रंगक हकीक प्रचुरतया उपलब्ध होइत अछि।

सोन ओ चानीक गहनापर रंगीन काज करबाक हेतु जाहि रंगक व्यवहार होइत अछि, ओकरा **मीना** कहल जाइत छैक। सोन ओ चानीकेँ गलयबाक हेतु **सोहागा/सुहागा** नामक रसायनक उपयोग होइत अछि। **सुहागा, नौसादर/ निसादर** ओ **शोरा** नामक रासायनिक पदार्थक मिश्रणसँ बनल सोन-चानीकेँ गलयबाक हेतु प्रयुक्त पदार्थकेँ **पक्का सुहागा** कहल जाइत छैक। चानीकेँ गलयबाक हेतु सुहागामे अल्प मात्रामे सोडा सेहो फेँटि देल जाइत छैक।

एकरा सभक अतिरिक्त सोनारक व्यवसायमे उत्पादनक क्रममे लकड़ीक **कोइला, आमक खटाइ, खट्टा तेजाब** (सलफ्यूरिक एसिड), **पक्का तेजाब** (नाइट्रिक एसिड), **शोराक तेजाब, रीठा, तुतिया, गंधक, सोडा, नून, फिटकिरी लाह/चपड़ा, गोइठाक राख, कड़ू तेल, चून** आदि अनेक आनुषंगिक सामग्री सबहिक प्रयोजन होइत छैक।

सोनार विभिन्न कालमे प्रचलित सोन ओ चानीक सिक्काकेँ गलाकऽ सेहो गहनाक निर्माण करैत अछि। प्राचीन कालमे प्रचलित सोनाक देशी रुपैयाकेँ **मोहर** कहल जाइत छैक। एक भरिक सोनक मोहरकेँ **असरफी** कहल जाइत छैक। असरफीक एकटा प्रभेद **छत्रपुरी** होइत अछि। असरफीसँ अपेक्षाकृत छोट आकृतिक मुगलकालीन सिक्काकेँ **खजुरिया सिक्का** कहल जाइत छैक। ब्रिटिश कालमे प्रचलित दू आना बट्टासँ युक्त चानीक एक भरिक सिक्काकेँ **कम्पनी/नोट/रुपया/रूपैआ/रूपा/टका/टाका** कहल जाइत छैक। आधा चानी ओ आधा बट्टावला ब्रिटिश कालक चानीक सिक्काकेँ **कलदार/कालदार/सन्देश** कहल जाइत छैक। आठ आना भरिक सोन अथवा चानीक सिक्काकेँ **अठन्नी** ओ चारि आना भरिक सोन

अथवा चानीक सिक्काकें **चौवन्नी/सुक्की/सुक्का** कहल जाइत छैक। दस आना भरि सोना ओ एक आना भरि ताम्बासँ बनल ब्रिटिशकालीन सिक्काक एकटा प्रभेद **गिन्नी** होइत छल। एकर अतिरिक्त विभिन्न कालमे प्रचलित तामक **छदाम, पाइ/डेबुआ, एकन्नी, दुअन्नी, डेढ़अन्नी** आदि सेहो सोनारक आधार सामग्रीक रूपमे व्यवहृत होइत रहल अछि।

औजार : सोना अथवा चानीक गहना बनयबाक क्रममे सोनार जाहि-जाहि औजारक उपयोग करैत अछि, ओकरा सभकें निम्नलिखित श्रेणीमे बाँटल जा सकैत अछि— 1. गर्म करबाक औजार 2. पिटबाक औजार 3. पकड़बाक औजार 4. कटबाक औजार, 5. जोखबाक उपकरण तथा 6. अन्य

गर्म करबाक औजार : सोनार सोन अथवा चानीकें लकड़ीक कोइलाक आगि पर गर्म करैत अछि। आगिकें माटिक छोट अथरामे राखल जाइत छैक। एहि अथराकें **अँगैठा/अँगेठा/अड़ेठा/अड़ैठा** कहल जाइत छैक। छोट अड़ैठाकें **अँगैठी/अड़ैठी** कहल जाइत छैक। सामान्य भाषामे एकरा **बोरसि/बोरसी** सेहो कहल जाइत छैक। अड़ैठाक आगिकें हौंकबाक हेतु बाँसक उपकरणकें **पंखा/बेना/बेनिआ** कहल जाइत छैक। छोट पंखाकें **पंखी/बीनी** कहल जाइत छैक। खास स्थान पर आगिकें फुकबाक हेतु बाँस अथवा लोहक फोंक नलीक उपयोग होइत छैक। एहि नलीकें **नरी/नारी/लरी/लारी/फुकनी/फुकना/फुकाठी/फोंफा/बाँसी/सुड़की** कहल जाइत छैक।

सोना-चानीकें गलयबाक हेतु ओकरा माटिक गँहीर दिपलीक आकृतिक बासनमे राखि अड़ैठाक आगिपर राखल जाइत छैक। एहि बासनकें **घड़िया** कहल जाइत छैक । पैघ घड़ियाकें **मोहछी** कहल जाइत छैक।

जोड़ बनयबाक क्रममे गहनाक सीमित भागकें गर्म करबाक हेतु ओहिपर दीपक लौ लगाओल जाइत छैक। दीपमे अंडीक तेल देल जाइत छैक आ ओकर बाती कपड़ाक होइत छैक। बातीकें **पलीता/फलीता** सेहो कहल जाइत छैक। दीप जाहि काष्ठाधारपर राखल रहैत छैक, ओकरा **चिरकदान/दिपदान/दीयठ/दीयठि** कहल जाइत छैक। दीपक टेमीकें फुकिकऽ गहना दिस ताओ देखयबाक हेतु धातुक पातर नलीक उपयोग होइत छैक। नलीक अग्रभाग टेढ़ होइत छैक। एहि नलीकें **बकनार/बाकनर/बकनल** (सं. वक्रनलिका) कहल जाइत छैक।

आइकालिह सोनार सभ कसेराक सन्हेरी सदृश चूल्हि सेहो धातुकें तपयबाक हेतु व्यवहार करैत छथि एहि चूल्हिमे हवा करबाक लौहचक्रसँ युक्त यंत्रकें **चरखा/चरखी** कहल जाइत छैक।

नेयारसँ धातु प्राप्त करबाक हेतु पैघ आकृतिक आयातित घड़ियाक उपयोग होइत छैक । एहि घड़ियाकें जाहि चूल्हिमे राखि गर्म कयल जाइत छैक, ओकरा

भट्ठी कहल जाइत छैक। भुट्ठीक आगिकें फुकबाक हेतु ओहिमे पैघ चरखा लागल रहैत छैक। चरखा ओ चुल्हिकें सम्बद्ध करऽवला मध्यवर्ती लौह नलीकें **सिसुआ** कहल जाइत छैक।

पिटबाक औजार : सोनारक पिटबाक औजार सभ कसेराक पिटबाक औजार सबहिक सदृश होइत अछि। एहि औजार सभक नाममे सेहो साम्य छैक मुदा ई सभ ओजन ओ मोटाइमे अपेक्षाकृत हल्लुक ओ पातर होइत अछि।

पिटबाक हेतु आधार रूपमे व्यवहृत लोहक चौखूट माथवला औजारकें **निहाइ/नेहाइ/ नहाय/नहाइ/लेहाइ/लहाइ/लिहाइ** कहल जाइत छैक। नोंखगर ओ टेढ़ अग्रभागवला नेहाइकें **एकबाइ/एकाबे** कहल जाइत छैक। ठोस ओ गोल छड़सँ बनल नेहाय जकर उपरका माथ गोल, चौरस अथवा वक्र होइत छैक, से **समदान** कहल जाइत छैक। नेहाय, समदान, एकाबे आदिक माटिमे गाड़ल काष्ठाधारकें **ठेहा/ठैयूया/परकठ/परिकठ/पिरगिठी (प्रि.)** कहल जाइत छैक।

सोन ओ चानीपर आघात कऽ ओकरा चकरयबाक हेतु व्यवहृत लोहक ठोस पिंडमे बेंटसँ युक्त औजारकें **हथोड़ा/हथौड़ा** कहल जाइत छैक। हथौड़ाक आघात करऽवला फलककें **मुँह** कहल जाइत छैक। दूनू दिस समतल मुँहवला छोट हथौड़ाकें **हथौड़ी** कहल जाइत छैक। जाहि हथौड़ीक एकटा मुँह नोंखगर आ दोसर समतल होइत छैक ओकरा **मरिया/मरेया** कहल जाइत छैक। शनैः शनैः हल्लुक आघात करबाक हेतु व्यवहृत लघु आकृतिक मरियाकें **तरपा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट तरपाकें **तरपी** कहल जाइत छैक। गोलाकार मुँहवला मरेयाकें **खोलमरिया/गोलमुँहा** कहल जाइत छैक। छोट गोलमुँहाकें **गोलमुँही** कहल जाइत छैक।

पकड़बाक औजार : सोन-चानी अथवा गर्म घड़ियाकें पकड़बाक हेतु सोनार गुनचिह्नक आकृतिक तथा अग्रभागमे लोलयुक्त लोहाक युगल छड़सँ निर्मित औजारक उपयोग करैत अछि। एहि औजारकें **सड़सी** कहल जाइत छैक। पैघ सड़सीकें **सड़सा/चिमटा** कहल जाइत छैक। एकर अग्रभाग पहिने गोल पश्चात् नोंखगर होइत छैक। घड़ियाकें पकड़बाक हेतु सड़साक विशेष प्रकार जाहिमे लोलक अग्रभाग विपरीत दिशामे मोड़ल रहैत छैक, से **कगमुँही** कहल जाइत छैक। जाहि सड़सीक लोलक अग्रभाग समकोण पर मुड़ल रहैछ, से **बकुली सड़सी/ बगसँड़सी/बगमुँही** कहल जाइत छैक। छोट सड़सीक एकटा प्रभेदमे अग्रभाग करीब-करीब गोलाइविहीन होइत छैक। एहन सड़सीकें **पिलास** कहल जाइत छैक। पिलासेक सदृश एकटा औजारक अग्रभाग चाकर ओ वृत्ताकर होइत छैक। एहि औजारकें **जमौड़ा/जमूड़ा/जम्बूर/गहुआ** कहल जाइत छैक। छोट गहुआकें **जमूरी/गहुवी/गहुइ (प्रि.)/गहुली (प्रि.)** कहल जाइत छैक।

आगिकें पकड़बाक हेतु व्यवहृत लोहाक पत्तरसँ निर्मित औजारकें सेहो **सड़सा/सड़सी** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेदक उपयोग सोन ओ चानीक सूक्ष्म काजमे पकड़बाक उपकरणक रूपमे होइत छैक। सोन-चानीक टुकड़ीकें पकड़बाक हेतु व्यवहृत एकर पैघ प्रभेदकें **चिमटा/चुट्टा/चूटा/चूँटा/सोहना/सेहुना** कहल जाइत छैक। छोट चुट्टाकें **चूँटी/चुट्टी/सोहनी/चिमटी/सेहुनी** कहल जाइत छैक। सूक्ष्म अग्रभागसँ युक्त अत्यन्त छोट चुट्टाकें **मोचना** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट मोचनाकें **मोचनी** कहल जाइत छैक।

कटबाक औजार : सोनारलोकनि सोन ओ चानीक मोट सीलकें खण्डित करबाक हेतु करीब चारि इंच नाम आ एक इंच चाकर लोहाक छड़सँ बनल औजारक उपयोग करैत छथि। एहि औजारक अग्रभाग पातर ओ तीक्ष्ण रहैत छैक जकरा धातुपर ठाढ़ कऽ ऊपरसँ आघात कयने धातु खण्डित भऽ जाइत छैक। एहि औजारकें **छेनी/छैनी** कहल जाइत छैक। धातुकें काटबासँ पूर्व चिह्नित करबाक हेतु प्रयुक्त छोट सन छेनीकें **कपतारा** कहल जाइत छैक। धातुक पातर टुकड़ीकें खण्डित करबाक हेतु गुणचिह्नक आकृतिक लौह औजारक उपयोग होइत छैक। एकर अग्रभागक दूनू पल्ला चाकर तथा तीक्ष्ण फऽलसँ युक्त होइत छैक जकर मध्य रखलापर धातुक पत्तर दबाब द्वारा कटि जाइत अछि। एहि औजारकें **कैंची** कहल जाइत छैक।

सोन अथवा चानीमे नक्काशीक काज करबाक हेतु अनेक प्रकारक छोट-छोट लौह औजारक उपयोग होइत छैक। एकरा सभकें **कलम** कहल जाइत छैक। गहनाक उपरका भागकें छीलिकऽ पहल बनयबाक हेतु व्यवहृत छोट लहेरनीक सदृश कलमकें **कटना/छिलना/छेला** कहल जाइत छैक। सोनक टुकड़ीमे खाधि बनाकऽ मीना आदि बैसयबाक हेतु घर बनयबाक कलमकें **बुली/बुल्ली** कहल जाइत छैक। सोनाक छोट टुकड़ीपर नक्शा उखारबाक हेतु व्यवहृत कलमकें **रेहना** कहल जाइत छैक। अर्द्धवृत्ताकार फलसँ युक्त कलमकें **टेरिया/पोलखी** कहल जाइत छैक। उत्तल आकृति खोधबाक हेतु व्यवहृत कलमकें **थरना** कहल जाइत छैक। एकर लघु प्रभेद **कौड़िआ** कहल जाइत अछि। गोल अग्रभागसँ युक्त कलम जाहिसँ गोलाकार नक्काशी खोधल जाइत अछि, से **खलनी/खोलनी** कहल जाइत छैक। आगू दिस ढालू आकृतिसँ युक्त कलमकें **गोलरेहना** कहल जाइत छैक। समतल धारवला कलमकें **सुम्हा** कहल जाइत छैक। गोलाकार अग्रभागसँ युक्त कलम जाहिसँ नक्कासीकें शुद्ध कयल जाइछ, से **टोपनी/टोवनी/टोभनी** कहल जाइत छैक। नोंखगर अग्रभागसँ युक्त पातर कलमकें **मेहिआ** कहल जाइत छैक। चाकर धारवला कलमकें **चपड़ा** कहल जाइत छैक। जाहि कलमक अग्रभागमे दूनू दिस धार बनल रहैत छैक, ओकरा **दुमूहाँ/दुमूहीं** कहल जाइत छैक। पैघ ओ चाकर अग्रभागसँ युक्त कलमकें **बालिस** कहल जाइत छैक। चौखुट शरीर ओ अत्यन्त तीक्ष्ण तथा नोंखगर अग्रभागसँ युक्त कलमकें **चिमचिमा** कहल जाइत छैक। रावाकें गोल करबाक हेतु व्यवहृत कलमकें **एकौंआँ** कहल जाइत छैक। एकर मुखभाग खाधियुक्त रहैत छैक। पार्श्वमे एक दिस नालीदार गड़हासँ युक्त कलमकें **जोकठी** कहल जाइत छैक। आरी सदृश दंतपंक्तिसँ युक्त कलमकें **दसकलम** कहल जाइत छैक। आन कलमसँ खोधल नक्काशीकें साफ करबाक हेतु व्यवहृत कलम **दोकठी** होइत अछि।

जोखबाक उपकरण : सोनार सोन ओ चानीकें जाहि तराजू द्वारा जोखैत अछि, ओकरा **निकती/ निकुती** कहल जाइत छैक। निकुतीसँ जोखबाक हेतु व्यवहृत मानक ओजन सभकें **बाट/बटखरा/डक** कहल जाइत छैक। जोखबाक क्रममे धातुवला पलड़ाक अपेक्षा बाटवला पलड़ा झुकल रहलापर तौलकें **झूस/झंस** कहल जाइत छैक। बाट ओ धातुवला पलड़ामे धातुवला पलड़ाक अपेक्षाकृत झुकल रहलापर तौलकें **लऽत/लेओत** कहल जाइत छैक। धातुकें जोखबाक क्रममे प्राचीन मानक **तोला/भरी/भर** अछि। ग्रियर्सन एकरा **डक** कहने छथि (**बिहार पीजेन्ट लाइफ**, पृ.-430)। सामान्य तौलमे पाँच तोलाक एक कनमा ओ सोलह कनमाक एक सेर होइत छलैक। ई तोला बारह माशाक होइत छलैक। मुदा सोनारक तौलमे तोलाक मानक ओजन एक भरी होइत अछि जे मात्र साढ़े दस माशाक ब्रिटिश रुपैआक सिक्काक तौलक बरोबरि होइत अछि। तें सोनारक तोलाक मानक बटखरा **कम्पनी** अथवा **कलदार** होइत अछि। एक भरीमे सोलह आना होइत छैक। आठ आनाक सिक्काकें **अठन्नी** ओ चारि आनाक सिक्काकें **चौअन्नी/सुक्की** कहल जाइत छैक, जे तौलोमे क्रमशः कलदारक आधा ओ चौठाइ होइत अछि तथा बटखराक रूपमे सेहो व्यवहृत होइत अछि। एक आनाक तौलक बटखराकें **अन्नी** कहल जाइत छैक। एक आनामे चारि **पाइ/पैसा** अथवा छओ **रत्ती** होइत छैक। रत्तीक बटखराक रूपमे रत्ती नामक जंगली फऽड़ अथवा तामक बटखराक प्रयोग होइत छलैक। पाइक आधा तौलकें **अद्धी/लाल** कहल जाइत छलैक। लालक बटखराक रूपमे करजनीक मानक ओजनवला फऽड़क उपयोग होइत छलैक। एक लालमे तीन जौ होइत छलैक आ एक रत्ती चारि जौक मानल जाइत छल। जौक बटखराक रूपमे जौक सुखायल दानाक उपयोग होइत छल। एक जौमे छओ तिल होइत छलैक आ एकर बटखरा सेहो तिलक दाना होइत छल। तिल, जौ, लाल आदिक बटखरा बनयबाक हेतु ओकरा मानक ओजन द्वारा जोखि कऽ ओकर तौल स्थिर कयल जयबाक क्रिया **भेयारब/भजारब** होइत छल। भेआरल मानक ओजनक वस्तुकें **भेआर** कहल जाइत रहलैक अछि।

एहि तरहें सोनारक तौलक पैमानाकें एहि सारणी द्वारा स्पष्ट कयल जा सकैत अछि।

... = १ जौ

३ जौ = १ लाल/अद्धी
४ जौ = १ रत्ती

१ रत्ती = २ अद्धी = १ पैसा/पाइ
४ पैसा = १ आना
१६ आना = १ भर/भरी/तोला

एक भरी ब्रिटिशकालीन रुपैयाक सिक्काक तौलक बराबर छल। सम्प्रति अद्धीसँ नीचा तौल नहि देखल जाइत अछि आ तिल ओ जौक प्रयोग लुप्त भऽ गेल अछि। क्रमहि तौलमे ग्रामक प्रयोग भऽ रहल अछि। एक भरीमे ११.६६४ ग्राम होइत छैक। एक ग्राममे सय मिलीग्राम होइत छैक। ग्रामक छोट बटखरा पित्तरक ओ पैघ बटखरा लोहक आयातित होइछ तथा मिलीग्रामक बटखरा अल्युनियमक रहैत छैक।

अन्य : सोनार सोन ओ चानीक शुद्धता ओ ओहिमे फेँटल बट्टाक अनुपातक अंदाज करबाक हेतु ओकरा एकटा कारी रंगक पाथर पर घसि कऽ चेन्ह उखारैत अछि आ चेन्हक रंगक आधारपर शुद्ध धातु ओ मिश्रित बट्टाक निश्चय करैत अछि। एहि पाथरकेँ **कसौटी** कहल जाइत छैक। विद्यापति एकरा **कसबट्ट** कहने छथि (**कीर्त्तिलता, सं. बाबूराम सक्सेना, पृ.-71**)।

धातुकेँ पीटिकऽ ओहिमे विभिन्न प्रकारक फूलपातक आकृति उखारबाक हेतु जाहि साँचा सभक व्यवहार होइत अछि। ओकरा सभकेँ **ठोका/ठाँस/ठाँसा/ठासा/ठस्सा/ठप्पा/डाइस** (अं.)**/डाइ** कहल जाइत छैक। छोट आकृतिक साँचाकेँ **छापा/ठोकी** कहल जाइत छैक। साँचा सभ लोह अथवा फूलक होइत अछि। फूलक साँचाकेँ **कुट्ट** कहल जाइत छैक। चन्नक बनयबाक हेतु व्यवहृत साँचाकेँ **चनकी ठाँसा/बलिया ठाँसा** कहल जाइत छैक। जाहि पोथीमे विभिन्न गहनाक हेतु उपलब्ध साँचाक विवरण ओ चित्र रहैत छैक, ओकरा **केटलक** (अं. कैटलॉग) कहल जाइत छैक। सोनार ग्राहकक अभिरुचि ओ प्रचलित फैशनक अनुरूप ठोकाक उपयोग कऽ गहनापर फूल बनबैत अछि। ठोका सभकेँ आयातक स्थान, उखरल आकृति ओ व्यवहृत गहनाक आधारपर अनेक नामे अभिहित कयल जाइत अछि। मुङेरसँ आयातित ठोका सभकेँ **मुङेरिया** कहल जाइत छैक। छपरासँ आयातित ठोकाकेँ **छपरहिया** कहल जाइत छैक। जाहि ठोकामे पिटला उत्तर धातुपर मटरक दानाक आकृतिक शृंखला उखरैत छैक, ओकरा **मटरदाना** कहल जाइत छैक। खीराक बीयाक आकृति उखारऽवला ठोकाकेँ **खीरबिच्चौ**, लहरिक आकृति उखारऽवला ठोकाकेँ **लहेरिया**, तरेगनक आकृति उखारऽवला ठोकाकेँ **तारा** कहल जाइत छैक। एकर अतिरिक्त विभिन्न आकृति उखारऽवला ठोका सभ होइत अछि जकर कोनो पारिभाषिक नाम नहि छैक। अनेक प्रकारक आकृतिकेँ उखारबाक हेतु ठोकासँ युक्त लौह औजारकेँ **कटकिरा/कठकीरा/बोकना** कहल जाइत छैक। जाहि कठकीरामे अनेक पंक्तिमे विभिन्न प्रकारक साँचा बनल रहैत छैक ओकरा **पगड़ा** कहल जाइत छैक। उत्तल आकृतिक शृंखला उखारऽवला ठोकाकेँ **रहटवार/रहटबारि** कहल जाइत छैक।

धातुक तार खिचबामे सहायक लोहाक आयताकार टुकड़ी जाहिमे अनेक आकृतिक छेद बनल रहैक, से **जंत्री/जतरी/जैंत्री** कहल जाइत छैक। धातुक तारकेँ मोड़बाक हेतु व्यवहृत लोहक अत्यन्त पातर छड़सँ निर्मित औजारकेँ **टकुआ/टेकुआ** कहल जाइत छैक। छोट टकुआकेँ **टकुरी/टेकुरी** कहल जाइत छैक। खाप बनयबाक हेतु धातुकेँ काँसक एकटा घनाकार टुकड़ीपर राखि कऽ पीटल जाइत छैक। एहि औजारक छऽवो फलकपर अनेक आकृतिक खाधि खोधल रहैत छैक। एहि औजारकेँ **कसला/कँसला/कँसुला/काँसुला** कहल जाइत छैक। गलल धातुकेँ छड़क आकृतिमे जमयबाक हेतु ओकरा लोहक अनेक नालीसँ युक्त औजारमे ढारल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **ढारा/ढाला/नाली** (**ग्रि.**) कहल जाइत छैक। गलल धातुकेँ दबाकऽ पातर ओ गोल आकृतिमे पसारबाक हेतु व्यवहृत माटिक औजारकेँ **टकपिच्चा** कहल जाइत छैक। एकर निचला भाग गोल ओ समतल रहैत छैक तथा पकड़बाक हेतु उपरका भागमे माटियेक मूठ बनल रहैत छैक। धातुक सिकड़ी बनयबाक हेतु तारकेँ जाहि औजारमे दाबल जाइत छैक से **चेनचपुआ** कहल जाइत छैक। धातुमे छेद बनयबाक हेतु सोनार एक हाथसँ चलबऽवला **बरमा** नामक औजारक उपयोग करैत अछि। धातुक गोल आकृति कटबाक हेतु चेन्ह बनयबाक औजारकेँ **परकाल** कहल जाइत छैक। छोट लम्बाइ, चौड़ाइ आदिक नाप सेहो एही औजारसँ कयल जाइत छैक। पैघ लम्बाइ नपबाक हेतु **टेपक** व्यवहार होइत छैक। लम्बाइकेँ इंच, फुट आदि एकाइमे व्यक्त कयल जाइत अछि। मोटाइ नपबाक हेतु प्रयुक्त परकालकेँ **कम्पास** कहल जाइत छैक। धातुक छोट-छोट फोंक गेन्द सदृश आकृति बनयबामे सहायक औजारकेँ **घोटा/घोटनी** कहल जाइत छैक। धातुक मोट सीलकेँ कटबाक हेतु लोहक छोट सन **आरीक** उपयोग होइत छैक। गहनामे गुना बनयबाक औजारकेँ **डाइ** कहल जाइत छैक। नक्कासीक काज करबाक क्रममे गहनाकेँ काठक **बैस** नामक औजारमे कसल जाइत अछि। गहनाक खुरदुराह सतहकेँ चिक्कन करबाक हेतु खुरदुराह सतहसँ युक्त औजारकेँ ओकर तलपर रगड़ल जाइत छैक। एकरा **रेती/फल्ली** कहल जाइत छैक।

मीनाकेँ कूटि कऽ बुकनी करबाक हेतु हकीक पाथरक छोट सन उक्खरिकेँ **खल/खरल** कहल जाइत छैक। एहिमे व्यवहृत लोहक छोट सन समाठकेँ **मूसल/मुसली** कहल जाइत छैक। मीनाकेँ जाहि बन्द शीशीमे राखल जाइत छैक ओकरा **रंगेहरी** कहल जाइत छैक। मीनाक पानिकेँ सोखयबाक हेतु व्यवहृत सीसाक अत्यन्त महीन कणसँ बनल औजारकेँ **कुची/कुच्ची** कहल जाइत छैक। मीनाक बुकनीकेँ उठाकऽ गहनापर रखबाक हेतु व्यवहृत तुलिकाकेँ **तुली** कहल जाइत छैक। ई काठक कलमक सदृश होइत अछि। एकर अग्रभागमे सुगरक केस लागल रहैत छैक। गहनाक सफाइमे जाहि ब्रशक उपयोग होइछ ओकरा **बुरुश/कुच्ची/बरीछी** कहल जाइत छैक। एहिमे रगड़बाक वस्तु पित्तरक केस सदृश पातर तारक समूह होइत छैक।

सोनारक छिलबाक कलमक अग्रभागकेँ तीक्ष्ण करबाक हेतु ओकरा जाहि पाथरपर घसल जाइछ,से **छिलाइ सान/ओपनी/पोत** (वि.) कहल जाइत छैक। लोहाक जाहि चौखूट टुकड़ीपर रगड़िकऽ कलमकेँ तीक्ष्ण कयल जाइत छैक से **रूखासान/मसकला** कहल जाइत छैक। तीक्ष्ण धारकेँ जाहि कागतपर उपयोगसँ पूर्व रगड़ल जाइत छैक से **पॉलिस पेपर** कहल जाइत छैक।

छोट-मोट सामान रखबाक हेतु सोनार धातुक कटोरीक व्यवहार करैत अछि। सामानकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु बंद डिब्बाकेँ **डिबिया** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : गहना बनयबाक क्रिया **गढ़ब** होइत अछि। गहना गढ़बाक प्रक्रिया ओ मजदूरीकेँ **गढ़ाइ** कहल जाइत छैक।

सोन ओ चानीक गहनाकेँ बनयबाक क्रममे अनेक प्रक्रियाक प्रयोग होइत छैक। धातुकेँ गर्म करबाक क्रिया **तपायब/धिपायब** होइत अछि। धातुपर आघात करबाक क्रिया **पीटब** होइत अछि। सोनार द्वारा शनैःशनैः हल्लुक आघात कयलासँ उत्पन्न शब्द ठुक-ठुक (**प्रसिद्ध कहबी:- सोनार के ठुक-ठुक लोहार के ठोंड़**) होइत अछि। धातुक गर्म भऽ द्रवीभूत होयबाक क्रिया **गलब** होइत अछि। सोन ओ चानीकेँ गलयबाक हेतु ओकरा सोहागाक संगे गर्म कयल जाइत छैक। बट्टेदार धातुकेँ पक्का सुहागाक संगे गर्म कयलापर ओकर बट्टा सेहो दूर भऽ जाइत छैक। चानीकेँ गलयबाक हेतु पक्का सुहागामे अल्प मात्रामे सोडाक उपयोग सेहो कयल जाइत छैक। गलल धातुकेँ जमबाक हेतु घड़ियासँ दोसर बासनमे पलटबाक क्रिया **ढारब/ढालब** होइत अछि।

गहनापर जे फूलपत्तीक आकृति खोधल जाइत छैक, ओकरा **नक्कासी** कहल जाइत छैक। नक्कासी करबाक क्रिया **खोधब/काढ़ब** होइत अछि। नक्कासीक हेतु गहनाक धातुकेँ कतरबाक क्रिया **छीलब** होइत अछि। उपरे-ऊपर छिलबाक क्रिया **तराशब** होइत अछि। नक्कासीक हेतु खाधि बनयबाक क्रिया **कोड़ब** होइत अछि। तैयार गहनाक विशिष्ट आकृतिकेँ **गढ़नि/काट** कहल जाइत छैक। काटक विशिष्ट प्रभेद **हीराकाट** होइत अछि।

सोन ओ चानीकेँ खींचिकऽ प्राप्त पातर ओ नाम आकृतिकेँ **तार** कहल जाइत छैक।तार बनयबाक क्रिया **तार खीचब** होइत अछि। गहनाक दू भागकेँ संयुक्त करबाक क्रिया **जोड़ब** होइत अछि। जोड़क स्थानपर प्रयुक्त मिश्रित धातुकेँ **टाँक/टाँका** कहल जाइत छैक। चारि आना भरि चानी, साढ़े तीन आना भरि ताम्बा ओ आधा आना भरि जस्ताक अनुपात दऽ बनाओल मिश्रधातुकेँ दर कहल जाइत छैक। चानीक गहनामे जोड़क हेतु दरक उपयोग होइत छैक तथा सोनाक गहनामे सोना

ओ दरक मिश्रणसँ निर्मित टाँकक व्यवहार होइत छैक। टाँक द्वारा जोड़बाक क्रिया **टाँकब** होइत अछि। दरकेँ गलयबाक हेतु पक्का सुहागाक उपयोग होइत छैक।

गहनाक लम्बाइ, चौड़ाइ ओ मोटाइकेँ निर्धारित करबाक क्रिया **नापब** होइत अछि। नपला उत्तर प्राप्त मानकेँ **नाप** कहल जाइत छैक। वृत्ताकार गहनाक भीतरी व्यासकेँ **फान** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत अधिक फानसँ युक्त गहनाकेँ **फनगर** कहल जाइत छैक। पैघ लम्बाइ नपबाक हेतु फुट, इंच आदि मानकक तथा छोट लम्बाइ नपबाक हेतु **सुत/सूता** आदि मानकक प्रयोग होइत छैक।

सोन ओ चानीक निर्धारणक हेतु परीक्षाकेँ **जाच/जाँच** कहल जाइत छैक। जाँच करबाक क्रिया **जाँचब/जाचब** होइत अछि। जाचमे धातुकेँ कसौटी पाथर पर **घर्षण** कयल जाइत छैक, कैंचीसँ काटि कऽ देखल जाइत छैक, हथौड़ीसँ पीटि कऽ देखल जाइत छैक। कसौटीपर घर्षणक क्रिया **कसब** होइत अछि। धातुक घर्षणसँ कसौटीपर उत्पन्न चेन्हकेँ **कस** कहल जाइत छैक। जाँचमे धातुकेँ गर्म कऽ ओकर रंग सेहो द्रष्टव्य होइत छैक।

गहनामे बहुमूल्य पाथरकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **जड़ब** होइत अछि। जड़बाक प्रक्रिया **जड़ाइ** होइत अछि। नगवला वस्तुमे सोनाक पानि चढ़ाय छीलिकऽ चमक उत्पन्न करबाक क्रिया **कुन्दन करब** होइछ आ एहि प्रक्रियाक बाद बनल जेवरकेँ **कुन्दनकारी जेवर** कहल जाइत छैक। गहनापर रंगीन काजकेँ **मीनाकरी/मीनागरी** कहल जाइत छैक। मीनाकारी कयनिहार कारीगरकेँ **मीनाकार/मीनागर** कहल जाइत छैक। मीनाकारीक हेतु रंगक बुकनीकेँ पानिसँ धोकऽ खोधल स्थानपर कुच्चीसँ उठाकऽ राखि फुकनीक सहायतासँ गर्म कऽ देल जाइत छैक। तखन मीना सोनक संगे सम्बद्ध भऽ जाइत छैक। पश्चाति सिला द्वारा मीना पर घर्षणसँ ओहिमे चमक आनल जाइत छैक।

सोनारक अड्डाक राख ओ दुकानक बहारनकेँ **नियार/न्यार/नेआर/नेयार/नेयारा/नेयारी/न्यारा/नियारी/न्यारी/राखी** कहल जाइत छैक। नेयारसँ धातुक कण निकालबाक हेतु राखकेँ पानिमे धोकऽ धात्विक अंशकेँ बासनक पेनीमे जमा भेलापर परिशुद्ध कयल जाइत छैक। एहि प्रक्रियासँ सम्बद्ध कारीगरकेँ **नेअरिया/नेआरिया** कहल जाइत छैक। नेआरियाक व्यवसायकेँ **न्यारियागिरी** कहल जाइत छैक। साल भरिक नेआर प्राप्त करबाक हेतु सोनार ओ नेआरियाक व्यवस्थाकेँ **साली** ओ मास भरिक नेआर प्राप्त करबाक व्यवस्थाकेँ **महिनवारी** कहल जाइत छैक।

सोना ओ चानीकेँ शुद्ध करबाक क्रिया **सोधब** होइत अछि। सोनाकेँ शुद्ध करबाक प्राचीन विधिकेँ **सलोनी करब** कहल जाइत छैक। एहि विधिमे बट्टेदार सोनाक पातर चदरा पीटि कऽ ओहिपर नून, फिटकिरी, शोरा ओ कडू तेलक मिश्रणक

लेप चढ़ा देल जाइत छलैक आ चदराकेँ तराउपरी थकिआय गोइठाक आगिमे चारू दिससँ गर्म कयल जाइत छलैक। किछु काल धरि गर्म कयलाक बाद मिश्रण बट्टाकेँ खा जाइत छलैक आ शुद्ध सोनाक चदरा बचि जाइत छलैक जकरा निकालि गला कऽ डऽल (ठोसाकृति) प्राप्त कऽ लेल जाइत छलैक।

सोनाकेँ शुद्ध करबाक नव विधिकेँ **पक्की चाशनी करब** कहल जाइत छैक। एहि विधिमे चारि आना भरि बट्टेदार सोनमे दू आना भरिक अनुपातमे चानी अथवा जस्ता मिलाकऽ घड़ियामे राखि गर्म कऽ गलाय टकपिच्चासँ पीचिकऽ मिश्रणक पातर-पातर चदरा सदृश बना लेल जाइत छैक। एहि चदराकेँ किछु काल धरि शोराक तेजाबमे राखि बाहर निकालि लेल जाइत छैक। तेजाब द्वारा सोनाक समस्त बट्टाकेँ यौगिक रूपमे परिवर्तित करबाक क्रिया **खा जायब** होइत अछि। तत:पर शुद्ध सोनाक चदरा बचि जाइत छैक, जकरा तेजाबसँ बाहर निकालि घड़ियामे गर्म कऽ गला देला उत्तर ढारलापर शुद्ध सोनाक डऽल प्राप्त होइत छैक। एहि शुद्ध सोनाकेँ **तेजापी/तेजाबी/बम्बइया** सोन कहल जाइत छैक।

चानीकेँ शुद्ध करबाक हेतु दू हीस चून ओ एक हीस राख मिला जमीनपर कटोरीक आकृति बना लेल जाइत छैक। एहि आकृतिकेँ **अड्डा** कहल जाइत छैक। अड्डामे कोइला जोड़ि आगि पजारल जाइत छैक आ चानीक डेओढ़ा राङाकेँ अड्डामे गलाय पश्चात् चानीकेँ सेहो गलाकऽ राङाक संगे मिश्रित कऽ देल जाइत छैक। मिश्रणपर ताप देलासँ द्रव खौलऽ लगैछ आ मैली तथा बट्टा दृष्टिगोचर होमऽ लगैछ जकरा लोहाक छड़क सहायतासँ पृथक् कऽ लेल जाइत छैक। घंटा भरि गर्म कयलाक बाद राङा चानीक अत्यल्प अंश लऽ अड्डामे प्रविष्ट भऽ जाइत छैक आ शुद्ध चानी कटोरीक ऊपर बचि जाइत छैक जकरा घड़ियामे निकालि गर्म कऽ ढारामे ढारलासँ शुद्ध चानीक चौरसा (चौखूट टुकड़ी) प्राप्त होइत छैक। चानीकेँ थोड़ेक राङाक संगे गलौलापर फुकनी द्वारा फुकैया कयलापर बट्टा भागक पृथक्करणक क्रिया उड़ब होइछ। बट्टा उड़ि गेलापर राङाक क्वचित् मात्रा चानीमे बचल रहला पर ओकरा शोराक अल्प मात्राक संगे गर्म कयल जाइत छैक। एहिसँ शोरा बट्टाकेँ खा जाइत छैक आ शुद्ध चानी शेष रहि जाइत छैक। जस्ताक बट्टा रहला पर पक्का सुहागाक संगे चानीकेँ गर्म कयलापर नौसादर जस्ताकेँ खा जाइत छैक।

दोसर धातुक वस्तुपर चढ़ल सोन अथवा चानीक अत्यन्त पातर परतकेँ **मोलामा/मोलम्मा/तबक** कहल जाइत छैक। मोलामा चढ़यबाक हेतु शोरा, नून ओ फिटकिरीक मिश्रणकेँ दू बूँद खट्टा तेजाब दऽ पानिमे धऽ देल जाइत छैक आ घोरकेँ गर्म कऽ खौला देल जाइत छैक। घोरकेँ **जम्मक** कहल जाइत छैक। जम्मकमे सोनाक डल रखलापर ओहिसँ किछु सोन घोरमे मिलि जाइत छैक। एहि घोरमे आन

धातुक वस्तु रखलापर ओहि पर सोनक पातर सतह चढ़ि जाइत छैक। वस्तुकेँ निकालि लेलाक बादो घोरमे सोनक किछु अंश बचले रहि जाइत छैक। ओहि सोनकेँ पृथक् करबाक हेतु घोरमे अल्प मात्रामे नोन धऽ देल जाइत छैक। तखन सोन बासनक पेनीमे बैसि जाइत छैक जकरा काछिकऽ घड़ियामे गलाय सोनक डऽल प्राप्त कऽ लेल जाइत छैक।

गहनाक पूर्ण आकृति बनि गेलाक बाद सोनार काठक तकथीपर लाह अथवा चपड़ाकेँ जमाकऽ ओहिपर गहनाकेँ गर्म कऽ साटि दैत छैक आ कलम द्वारा गहनाक ऊपरी सतहक अतिरिक्त भागकेँ छाँटि ओकरा चमचम बना दैत छैक। एहि प्रक्रियाकेँ **छिलाइ** कहल जाइत छैक।

गहनाक उपरका सतहपरक मैलीकेँ दूर कऽ ओकरा चमकयबाक प्रक्रियाकेँ **सफइया** कहल जाइत छैक। सफइयाक हेतु पानिमे दू बूँद खट्टा तेजाब धऽ थीपल गहनाकेँ ओहिमे डुबा देल जाइत छैक आ पश्चात् रीठाक पानि ओ बुरुशक सहायतासँ गहनाक मैली दूर कऽ देल जाइत छैक। खट्टा तेजाब ओ शोराक मिश्रणकेँ **चटका** कहल जाइत छैक। चटकामे किछु काल धरि जेवर धऽ रीठाक पानि ओ बूरुशसँ सफइया कयने जेवर चमकदार भऽ जाइत छैक। बट्टेदार सोनाक गहनाकेँ शोरा, तूतिया ओ गंधकक संगे गर्म कऽ बूरुश चलओलासँ ओकरा सतहक बट्टा समाप्त भऽ जाइत छैक। पश्चाति ओकरा रीठाक पानि ओ बूरुशक सहायतासँ साफ कऽ चमकम कऽ लेल जाइत छैक।

सोन ओ चानीक गहनामे फूल खोधल भागकेँ **फूलदार/नक्कासीदार** कहल जाइत छैक। उत्पन्न नक्कासीकेँ **बेल/बेलबूटा** कहल जाइत छैक। जालक आकृतिक गढ़निकेँ **जालदार** कहल जाइत छैक। क्रमिक उत्तल ओ अवतल सतहसँ युक्त गहनाकेँ **पहलदार** कहल जाइत छैक। रत्नजटित भूषणकेँ **जड़ाव/जड़ाओ** कहल जाइत छैक।

सोना गलयबाक क्रममे व्यवहृत सोहागाक जे अंश सोनाक डऽलमे लागल रहैत छैक से **कीट** कहल जाइत छैक। गहनाक एक अददक हेतु **थान** शब्दक प्रयोग होइत अछि।

अनेक गहनामे बाफरक आकृतिक लटकन लगाओल रहैत छैक। एकरा **भुंडी/भूंड़ी/घुण्डी/जाफरी** कहल जाइत छैक। आँखिक आकृतिक बनाबटिकेँ **अँखुआ** कहल जाइत छैक। धातुक छोट सन विषमकोण समचतुर्भुजाकार बनाबटिकेँ **तक/तौक/चमेल/बचबा** कहल जाइत छैक। अर्द्धगोलाक आकृतिक बनाबटिकेँ **रवा/राबा/राबरी** कहल जाइत छैक। दोबर रवासँ युक्त भूषणकेँ **दोरब्बी** कहल जाइत छैक। दूटा रबाकेँ जोड़ि कऽ बनाओल आकृतिकेँ **गोनी/बोर/घुंघरू/झुनकी**

कहल जाइत छैक। दालिक आकृतिक चाकर रवाकेँ **चनक/चन्दक** कहल जाइत छैक। छोट चन्नककेँ **चनकी/चन्दकी** कहल जाइत छैक। गहनाकेँ गँथबाक हेतु ओहिपर लगाओल वलयाकार आकृतिकेँ **कोढ़ा/कोड़हा/टोप** कहल जाइत छैक। धातुक सिकड़ीक लटकैत भागकेँ **लर/लरी** कहल जाइत छैक। सामान्य लटकल भागकेँ **लटकन/लुटकुन** कहल जाइत छैक।

बोर सभक परस्पराघातसँ उत्पन्न शब्दकेँ **रुनुझुनु** कहल जाइत छैक। गहनासँ ध्वनि उत्पन्न करबाक क्रिया **झमकायब** (**प्रसिद्ध कहबी:- पहिरैत अछि सब, झमकाबैत अछि केओ केओ**) होइत अछि। फोंक गहनामे पैसल बालुकादिकेँ **पच्ची** कहल जाइत छैक। अङ्गकेँ कसिकऽ आभृत करऽवला गहनाकेँ **कसकस** कहल जाइत छैक। शिथिलतया लग्न भेनिहार गहनाकेँ **ढिलढिल** कहल जाइत छैक। किञ्चित ढिलढिलकेँ **ढिलढिलाह** कहल जाइत छैक।

जखन पोशिन्दा सोनारकेँ सोन दऽ कऽ गहना बनयबाक हेतु कहैत छैक तँ सोनक कनेकटा टुकड़ी काटिकऽ सोनार बानगीक रूपमे पोशिन्दाकेँ दऽ दैत छैक। एहि टुकड़ीकेँ **चाशनी** कहल जाइत छैक। निर्मित गहना ओ चाशनीकेँ कसलापर उत्पन्न समान कस द्वारा ई निश्चित कयल जाइत छैक जे निर्मित गहना देल गेल सोनहिसँ निर्मित भेल अथवा ओहिमे बट्टा कऽ देल गेलैक। अत्यधिक बट्टासँ युक्त गहनाक नकली रूपकेँ **टलहा** कहल जाइत छैक।

दूटा समान अङ्गमे धारण करबाक समान गहनाक युग्मकेँ **जोड़/जोड़ा** कहल जाइत छैक। जोड़मे एकाकीकेँ **बेजोड़/बेजोड़ा** कहल जाइत छैक। सोनार गहना बनयबाक ओ बेचबाक धन्धाक संगहि पोशिन्दासँ प्राप्त गहनाकेँ अमानतिक रूपमे राखि सूदिपर टका सेहो लगबैत अछि। सूदिपर देल टकाक हेतु अमानतिक रूपमे राखल वस्तुकेँ **बन्धक/बन्हक** कहल जाइत छैक। बन्धक रखबाक व्यवसायकेँ **बन्धकी/बन्हकी** कहल जाइत छैक।

गहना : सामान्यत: शरीरक उत्तमांगमे सोनक ओ अधमांगमे चानीक गहना धारण करबाक परिपाटी अछि। सोनार द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकारक गहनाकेँ जाहि अंगमे धारण कयल जाइत अछि, तदनुसार ओकरा निम्नलिखित श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत छैक–1. माथ परक गहना 2. नाकक गहना 3. कानक गहना 4. गर्दनिक गहना 5. बाँहिक गहना 6. पहुँचीक गहना 7. हाथक आङुरक गहना 8. डाँड़क गहना 9. पैरक गहना ओ 10. कपड़ाक गहना

माथक परक गहना : नवविवाहिता स्त्रीगण सिउँथकेँ झँपैत एकटा सोनक गहना धारण करैत छथि। एकरा **टीका/सीथी/मानिक लट/माङी** कहल जाइत छैक।

एकरा उपरका भागमे नकुशी बनल रहैत छैक, जकर सहायतासँ एकरा केसमे फँसा देल जाइत छैक। नकुसीसँ सिउँथ झँपबाक भाग जुड़ल रहैत छैक। ई भाग जौक आकृतिक होइछ। सीथीक निचला भाग जे लिलार पर लटकैत रहैत छैक, से गोल पत्तरक रहैत छैक। एकरा सेहो टीका कहल जाइत छैक। चौखूट रहला पर एकरा **चौकठा** कहल जाइत छैक। सीथीक एकटा प्रभेदमे टीकाक पार्श्वसँ क्रमश: एक-एकटा लर निकलल रहैत छैक जकर नकुशी कनपट्टी लग केसमे फँसा लेल जाइत छैक। एहि लर युग्मसँ युक्त टीकाकेँ **मङटीका/माङटीका/मनटीका/बननी** (त्रि.)/**टयरा** कहल जाइत छैक। ललाटपर सटबाक हेतु प्रयुक्त सोनक अत्यन्त पातर पत्तरसँ गोल आकृतिक **टिकुली** सेहो बनैत छलैक। नक्काशीदार टिकुलीकेँ **सिसफूल** कहल जाइत छैक। अर्द्धचन्द्राकार कढ़ाइसँ युक्त सिसफूलकेँ **चान/चान्द** कहल जाइत छैक। नाम आकृतिक टिकुलीक हेतु **बिन्दी** शब्दक प्रयोग होइत छल। मुदा सोनक टिकुली, बिन्दी आदिक उपयोग आब विरले देखल जाइत अछि।

केसकेँ मुँह दिस छिड़िअयबासँ बचयबाक हेतु दुनू कनपट्टी दिस परस्पर सटल पल्लावला चुट्टाक सदृश गहनाकेँ केसमे खोँसल जाइत छैक। एहि गहनाकेँ **सटिया/नागिन/चुट्टा/किलिप** (अं. क्लिप)/**पिन** (अं. हेयर पिन) कहल जाइत छैक। खोंपामे चारू कातसँ खोँसबाक हेतु अंग्रेजीक 'यू' अक्षरक आकृतिमे मुड़ल तारक गहनाकेँ **काँटा** कहल जाइत छैक। एकर मोड़वला भागमे पाछू दिस फूलदार रहैत छैक जे खोंपापर शोभाधायक होइछ। खोंपाक परित: आवृत करऽवला जालदार गहनाकेँ **जूड़ा/जुड़बन्द/जुड़बन्ह** कहल जाइत छैक। जुट्टीकेँ झँपबाक हेतु ओहिमे खोंसबाक हेतु प्रयुक्त गहनाकेँ **चोटी** कहल जाइत छैक। एहिमे क्रमिक छोट पानक पातक आकृतिक शृंखला रहैत छैक, जकर निचला भागमे अनेक लर ओ झुनकी लागल रहैत छैक।

नाकक गहना : नाकक दुनू पूराक बाहरवला उपास्थिमे छेद कऽ अनेक प्रकारक गहना धारण कयल जाइत अछि। एहि गहना सभमे छेदमे पैसल फोंक ओ बेलनाकार भागकेँ **चोंगी/चोङी** कहल जाइत छैक। चोंगीमे नीचा दिससँ तामक एकटा कील सदृश वस्तु लगाओल जाइत छैक जे गहनाकेँ नाकसँ स्वत: बाहर निकलबासँ बचयबामे सहायक होइत छैक। एहि वस्तुकेँ **तल्ली** कहल जाइत छैक। एहि गहना सभक चोङीक उपरका भागमे बनल आकृतिक आधारपर एकर अनेक नाम होइत छैक। पानक डंटी विहीन पातक आकृतिवला गहनाकेँ **पनमा**, तासक चिड़िया आकारक गहनाकेँ **चिरतन/चिड़िया**, चन्द्रमाक आकृतिसँ युक्त गहनाकेँ **नकचन्दा**, पुष्पक आकृतिसँ युक्त गहनाकेँ **नकफूल**, लौंगक फूलक आकृतिसँ युक्त गहनाकेँ **लौंग**, नगयुक्त लौंगकेँ **मोती**, चौखूट आकृतिसँ युक्त गहनाकेँ **ढोंप**, गोलाकार

आकृतिसँ युक्त गहनाकेँ **बुट्टा** तथा छिलुआ बुट्टाकेँ **मरीच** कहल जाइत छैक। जाहि नकफूलमे एकटा मध्यवर्ती पैघ रवाक चारूकात छोट-छोट दाना उखारल रहैत छैक, ओकरा **छक/छौंक** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत छोट आकृतिक छककेँ **छकुली** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट छककेँ **खुटिया/खोटला/खोटिला** कहल जाइत छैक। रवाक स्थानपर नगसँ युक्त खोटिलाकेँ **गुल्फी** कहल जाइत छैक।

धियापुताक नाकमे पहिरयबाक हेतु प्रयुक्त पातर तारक वलयाकृति गहनाकेँ **नथनी/नथुनी** कहल जाइत छैक। एहिमे तारक दूनू छोरमे एकटा छोरपर मुन्ही सदृश घर बनल रहैत छैक जाहिमे दोसर छोरकेँ पैसाकऽ उनारि कऽ बैसा देल जाइत छैक। मुन्हीविहीन मोट तारक नथुनीकेँ **नथिआ** कहल जाइत छैक। नथिआक निचला भागमे फूलपात काढ़ल रहलापर एवं परिधिवला भागपर नग बैसाओल रहलापर एकरा **बेसर/बेसरि/नकबेसर/नकबेसरि** कहल जाइत छैक। नकबेसरिमे नीचा दिस लर ओ टोपा लागल रहलापर एकरा **झुलनी** कहल जाइत छैक। पैघ नथियाकेँ **नथ** कहल जाइत छैक। नथकेँ सिकड़ी द्वारा कानमे बन्हबाक व्यवस्था रहलापर ओकरा टयरा **नथिया/नकमुनी** (**प्रसिद्ध कहबी- क्यो नाके टेढ़ क्यो नकमुनिञे टेढ़**) कहल जाइत छैक।

नाकक दूनू पूराक मध्यवर्ती उपास्थिमे धारण करबाक हेतु प्रयुक्त नथिआकेँ **नकेल/नकेली** कहल जाइत छैक। नाकक बिचला उपास्थिमे धारण करबाक हेतु व्यवहृत किञ्चित बेलनाकार झुलैत अवयववला गहनाकेँ **बुलकी/बुलाकी** कहल जाइत छैक। पैघ बुलकीकेँ **बुलाक** कहल जाइत छैक। मुसलमानमे प्रचलित चाकर ओ मध्यम आकृतिक बुलकीकेँ **लैलक** कहल जाइत छैक।

कानक गहना : कानक उपरका भागमे छेद कऽ नथुनीक आकृतिक गहना धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **कनेली/कनैली/कनौसी** कहल जाइत छैक। फूलदार कनैलीकेँ **उतरना** कहल जाइत छैक। कानक उपरका भागमे धारण करबाक हेतु प्रयुक्त माछक आकृतिसँ युक्त कनैलीकेँ **खुट्टीमछरिया** कहल जाइत छैक। कानक निचला लटकैत भागक छेदमे नाके जकाँ लौंग, चिरतन, पनमा, मोती आदि गहना धारण कयल जाइत अछि। फूलक आकृतिसँ युक्त कानक चोंढीवला गहनाकेँ **कनफुल/करनफुल/कर्णफूल/कनरफुल** कहल जाइत छैक। उत्तल नक्कासीवला कर्णफूलके **टॉप्स** (अं.) कहल जाइत छैक। अवतल सतहपर मीनाकारी संयुक्त टॉप्सक एकटा प्रभेद **कनपासा** होइत अछि। पैघ आकृतिक कर्णफूलकेँ **तड़का** (सं. ताटङ्क) कहल जाइत छैक। छोट तड़काकेँ **तड़की** कहल जाइत छैक। तितलीक आकृतिसँ युक्त कर्णफूलकेँ **तितली/फतिंगा** कहल जाइत छैक। मध्यमे एकटा पैघ रवा ओ तकर चारूकात नक्कासीसँ युक्त कर्णफूलक एकटा प्रभेद **खुटिला / खुटला / खोटिला/खुटिया/खुटिली/खुटली/खुटी** (वर्ण.)/**खुट्टी** होइत अछि। सोनक ठोस

ओ गोल पिंडसँ युक्त कर्णफूलकेँ **ढेला/चटका** कहल जाइत छैक। छिलुआ ढेलाकेँ **हीराकाट के ढेला** कहल जाइत छैक।

कानक निचला भागमे पहिरबाक हेतु प्रचलित करीब एक इंच व्यासक फोंक वलयाकार गहनाकेँ **बाली/ढोल/कनबाली** कहल जाइत छैक। ठोस ओ पैघ बालीकेँ **बाला/कनबाला** कहल जाइत छैक। छोट बालीकेँ **बलिया/बलेआ** कहल जाइत छैक। धियापुताक हेतु दोहरा तारसँ निर्मित बालीकेँ **फिरकी** कहल जाइत छैक। पुरुषक हेतु ठोस ओ मोट बालीकेँ **कुण्डल** कहल जाइत छैक। बालीक परिधिवला भागपर काँट सदृश आकृति उखारल रहलापर एकरा **बुजबाली** कहल जाइत छैक। बालीक परिधिक भीतरी भागमे नीचा दिस फूलदार पत्ती लागल रहलापर एकरा **मकरी/माकरी** कहल जाइत छैक। माकरीक निचला भागसँ लर ओ बोर लटकैत रहलापर एकरा **कड़ी** कहल जाइत छैक। मुसलमानिमे प्रचलित एकटा गहनामे कानक उपास्थिक परितः पहिरबाक हेतु चानीक पाँच गोट बालीक समूह रहैत अछि। एकरा **बारि/दूर** कहल जाइत छैक।

कानक निचला भागक छेदमे धारण करबाक हेतु प्रचलित ठोस सोनक खूब मोट आकृतिक पिटुआ गहनाकेँ **लोर/लोरि/लोइर** कहल जाइत छैक। लोरिक निचला भाग फूलदार रहलापर एकरा **अमती/अन्ती** कहल जाइत छैक।

कानक निचला लटकैत भागक छेदमे नकुशी द्वारा लटकाकऽ पहिरयवला गहनाक एकटा प्रभेदकेँ **झुमका/लटका** कहल जाइत छैक। एहिमे चन्नकक शृंखला द्वारा एकटा गुम्बदाकार वस्तु लटकैत छैक जकरा **टोप** कहल जाइत छैक। टोपक चारूकात छोट-छोट बोर लागल रहैत छैक। पैघ आकृतिक झुमकाकेँ **झुमक/झुम्मक** कहल जाइत छैक। झुम्मकक भीतर छोट आकृतिक एकटा अन्य झुमका लागल रहला पर ओकरा **उम्मक** कहल जाइत छैक। छोट झुमकाकेँ **झुमकी** कहल जाइत छैक। मुसलमानिमे प्रचलित झुमकामे टोपक स्थानपर चन्द्रमाक आकृति डोलैत रहैत छैक। एहि गहनाकेँ **बिजली/बिजुली/बिजुलिया** कहल जाइत छैक। कानक सम्पूर्ण भागकेँ झाँपऽवला गहनाक एकटा प्रभेदकेँ **बीड़/बी ँड़** कहल जाइत छैक। बी ँड़मे झुम्मक लागल रहलापर एकरा **बिड़झुम्मक** कहल जाइत छैक।

कर्णफूलमे नीचा दिस लर ओ बोर लटकैत रहलापर एकरा **झिमझिमिञा** कहल जाइत छैक। झिमझिमिञामे लर ओ बोरक स्थानपर माछक आकृति रहला पर एकरा **मछरिया/मछलिया** कहल जाइत छैक। कर्णफूलक फूलदार भागक सटले नीचा दिस विभिन्न प्रकारक नक्कासीसँ युक्त चन्द्राकार गहनाक एकटा प्रभेदकेँ **ऐरिंग** (अं. इयररिंग) कहल जाइत छैक।

निरन्तर उपयोगक कारणेँ कानक गहना कानक छेदकेँ क्रमहि पैघ कऽ दैत छैक। एहन स्थितिमे गहनाक साक्षात् सम्पर्कसँ कानकेँ बचयबाक हेतु गहनाक ऊपर लपेटल कपड़ा आदिक टुकड़ीकेँ **गेरू/गेरुली** कहल जाइत छैक।

गरदनिक गहना : गरदनिमे सटाकऽ धारण करबाक हेतु प्रयुक्त अग्रभागमे चौरस ओ नक्कासीदार चन्द्राकृति ठोस गहनाकेँ **सूता (वर्ण.)/सुत्रत/सूति/हँसली/हँसुली** कहल जाइत छैक। एकर मुँह ऊपर दिस खुलल रहैत छैक आ अन्तिम छोर पर छड़ विपरीत दिशामे ऐंठल रहैत छैक। एहि छोरपर हंसक मुखाकृति बनल रहैत छैक जकरा **बतकलोली** कहल जाइत छैक। मुसलमानिलोकनिमे प्रचलित नीचा दिस बचवा लागल सूतिकेँ **तक/तौक/तबक/तकवला हँसुली** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर पत्तरसँ निर्मित चोरयुक्त सूतिक प्रभेदकेँ **हूमेल/चमेल** कहल जाइत छैक। चाकर जालदार पत्तरसँ निर्मित गर्दनिकेँ झाँपऽवला गहनाक एकटा प्रभेद **टीप** होइत अछि।

गर्दनिमे सोन अथवा चानीक तारमे गाँथल मालाक सदृश अलङ्करणकेँ **माला/हार/हरबा/नकलेस** (अं.) कहल जाइत छैक। मालामे गाँथल गेल प्रत्येक अददकेँ **दाना** कहल जाइत छैक। धात्रीक बीया सदृश सोनक गोल, पहलदार ओ छिद्रमय टुकड़ी सभकेँ गँथलासँ बनल हारकेँ **गिरिमहार/ग्रिमहार/ग्रीवाहार/गिरमलहार** कहल जाइत छैक। मटरक दानाक आकृतिक सोनक दाना सभकेँ गाँथिकऽ बनाओल हारकेँ **मटरदाना/मटरमाला** कहल जाइत छैक। मरीचक आकृतिक छिलुआ दाना सभकेँ गाँथिकऽ बनाओल हारकेँ **मरीचदाना** कहल जाइत छैक। मध्यसँ ऊपर दिस क्रमिक छोट दानावला मूङा ओ सोनक हारकेँ **मोहरमाला/मोहनमाला** कहल जाइत छैक। मोतीक हारकेँ **मोतीमाला** कहल जाइत छैक। एहिमे दूटा मोतीक दानाक बीच देल सोन अथवा चानीक बेलनाकार टुकड़ीकेँ **टोन/हारी** कहल जाइत छैक। तीनटा कऽ मोती आ एकटा कऽ चानी अथवा सोनक टोन दऽ बनाओल हारकेँ **मंगलसूत्र** कहल जाइत छैक। मूङाक हारकेँ **मुङबा** कहल जाइत छैक। पैप आकृतिक सोनक दानासँ निर्मित छोट सन हारकेँ **कंठा/कंठमाला** कहल जाइत छैक। कटहरक ऊपरका सतहक सदृश अवतलोत्तल सतहवला दानासँ बनल हारकेँ **काँट/कटसर/कटसरि/ कटसरी/कटेसर** कहल जाइत छैक। पानक पातक आकृतिक अनेक पत्तरकेँ सम्बद्ध कऽ बनाओल हारकेँ **जोगिनी/जोगौली** कहल जाइत छैक। बेलनाकार दानाकेँ गाँथिकऽ बनाओल हारकेँ **चाँपकली** कहल जाइत छैक। चम्पाक फूलक सदृश दानाकेँ गाँथिकऽ बनाओल हारकेँ **चम्पाकली** कहल जाइत छैक। जौक आकृतिक दानाक समूहसँ बनल हारकेँ **जइ** कहल जाइत छैक। सीसाक पातर बेलनाकार टुकड़ीक बीच-बीचमे सोनक नाम आकृतिक छिद्रमय दानाकेँ गाँथि कऽ बनाओल हारकेँ **पुरहरि** कहल जाइत छैक।।

हार सभक निचला भागमे चौखूट अथवा गोल आकृतिक नक्कासीयुक्त पत्तर लगाओल जाइत अछि। एहि वस्तुकेँ **रॉकेट/लॉकेट** कहल जाइत छैक। लॉकेटमे सीपक नग लागल रहलापर ओकरा **सीपी** कहल जाइत छैक।

गर्दनिमे पहिरबाक हेतु प्रयुक्त अनेक गहनाकेँ डोरामे गाँथिकऽ धारण कयल जाइत अछि। एहि गहना सभमे किछुमे डोरा पैसयबाक हेतु वलयाकार पत्तर लागल रहैत छैक। एहि वलयकेँ **कोढ़ा/कोरहा** कहल जाइत छैक। कोढ़ामे रिक्त स्थानकेँ **घर** कहल जाइत छैक।

कोढ़ा लागल चौखूट आकृतिक गहनाकेँ **चकुठा/चौकठा** कहल जाइत छैक। छोट चकुठाकेँ **चकुठी/चौकठी/चकती** कहल जाइत छैक। कोढ़ा लागल ठोस ओ बेलनाकार गहनाकेँ **ठुमरी** कहल जाइत छैक। कुसियारक गुल्लीक आकृतिक छिद्रमय टुकड़ीकेँ डोराकेँ गँथाय कनिआकेँ पहिरयबाक व्यवहार छैक। एहि गहनाकेँ **ढोलना/ढोलना चौका** कहल जाइत छैक। छोट ढोलना चौकाकेँ **ढोलना चौकी** कहल जाइत छैक। नग अथवा मीनासँ युक्त कोढ़ा लागल राकेटकेँ डोरामे गँथौलासँ बनल गहनाकेँ **जूगनू/जुगलू** कहल जाइत छैक। हनुमानजीक आकृति खोधल जूगनूकेँ **हलुमानी** कहल जाइत छैक। नेनाक हेतु छोट हलुमानीकेँ **धुकधुकी** कहल जाइत छैक। सम्पूर्ण चन्द्रमाक आकृतिक जुगनूकेँ **जितिया** कहल जाइत छैक। अर्द्धचन्द्रकार आकृतिवला चानीक ठोस टुकड़ीसँ निर्मित कोढ़ा लागल गहनाकेँ **चाँद/चान** कहल जाइत छैक। ताम अथवा चानीक नाम पत्तरपर शिशुक आकृति खोधल कोढ़ायुक्त गहनाकेँ **सहोदरा** कहल जाइत छैक। जाहि नेनाक अग्रज सोदर मुइल रहैत छैक ओकरा ई गहना डोरामे गँथाय गर्दनिमे धारण कराओल जाइत छैक। जाहि स्त्रीक सौतिन मुइल रहैत छैक ओ नारीक आकृति खोधल सहोदरा सदृश गहना धारण करैत अछि। एकरा **सौत/सौतिन/सौतिनिञा/साल** कहल जाइत छैक। सितला माताक आकृतिसँ युक्त सहोदरा सदृश गहनाकेँ **सितला** कहल जाइत छैक। बाघक नहक आकृतिक नगकेँ सोनमे मढ़ाय डोरामे गाँथि धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **बघनहा/बघनही** कहल जाइत छैक। सुगरक दाँतक आकृतिक टेढ़ नगकेँ चानी अथवा सोनमे मढ़ाय डोरामे गाँथि कऽ गर्दनिमे धारण कयल जाइत छैक। एहि गहनाकेँ **दाँत** कहल जाइत छैक। धियापुताकेँ पहिरयबाक हेतु प्रयुक्त मोतीक मालाक एकटा प्रभेद **नजरिया-गुजरिया** कहल जाइत छैक। एहिमे लॉकेटमे तांत्रिक वस्तु देल रहैत छैक। लहसुनक पोरुक आकृतिक एवं कोढ़ा लागल गहना जकरा डोरामे गँथाकऽ गर्दनिमे धारण कयल जाइछ, से **लशुनी/लहसुनिञा** कहल जाइत छैक। घम्हौड़ीक फलक आकृतिक एहने गहनाकेँ **घम्हौड़ीदाना** कहल जाइत छैक। ताम, चानी अथवा अष्टधातुक बेलनाकार अथवा चौखूट गहनामे तान्त्रिक वस्तुकेँ राखि गर्दनिमे धारण

कयल जाइत अछि। एहि गहना सदृश वस्तुकेँ **जन्त्र/जन्तर** कहल जाइत छैक। मुसलमानलोकनिमे प्रयुक्त चकुवा सदृश जन्तरकेँ **ताबीज** कहल जाइत छैक।

सोनाक सिक्काक आकृतिक वस्तुमे कोढ़ा लगाकऽ पाँच-सातक समूहमे गँथाकऽ गर्दनिमे धारण कयल जाइत रहल अछि। एक भरिक सोनक सिक्काक समूहक हारकेँ **असफींक छड़**, आठ आना भरिक सोनाक सिक्काक समूहक हारकेँ **अठन्नीक छड़** आ चारि आना भरिक सोनाक सिक्काक समूहक हारकेँ **चौअन्नी/सुक्कीक छड़** कहल जाइत छैक। चानीक सिक्का अथवा तदाकार चानीक गहना अथवा आधुनिको सिक्कामे कोढ़ा लगाकऽ डोरामे गँथबाय गर्दनिमे धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **हेकल/हेंकल/हयकल/हँयकल/हैकल** कहल जाइत छैक।

सोन अथवा चानीक पातर तारसँ निर्मित छोट-छोट वलयक शृंखलासँ निर्मित हारकेँ **सिङ्कली (वर्ण.)/सिकड़ी/चेन (अं.)** कहल जाइत छैक। समतल वलयक एकहरा सिकड़ीकेँ **एकावली (वर्ण.)/रस्सी सिकड़ी** कहल जाइत छैक। ऐंठल वलयक एकहरा सिकड़ीकेँ **बिच्छा सिकड़ी/गोप/गोफ/घुनसी (ग्रि.)** कहल जाइत छैक। चाँपि कऽ किञ्चित चाकर कयल तारक वलयसँ निर्मित सिकड़ीकेँ **चपुआ सिकड़ी** कहल जाइत छैक। सिकड़ीमे प्रत्येक वलयकेँ **गुटका** कहल जाइत छैक। दूटा वलयकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनाओल एकटा गुटकाक शृंखलासँ निर्मित सिकड़ीकेँ **कदम सिकड़ी** कहल जाइत छैक। चारि गोट वलयकेँ सम्बद्ध कऽ बनाओल एकटा गुटकाक शृंखलासँ निर्मित सिकड़ीकेँ **दोहरा कदम सिकड़ी** कहल जाइत छैक। दूटा सिकड़ीकेँ परस्पर सटाकऽ सम्बद्ध कयलासँ बनल सिकड़ीक प्रभेदकेँ **टीबी सिकड़ी** कहल जाइत छैक। दोहरा कदम सिकड़ीक प्रत्येक गुटका परस्पर गूहल रहलापर एकरा **चोटी सिकड़ी/चौकड़िया** कहल जाइत छैक। चाकर पत्तरक चौखूट शृंखलासँ निर्मित सिकड़ीकेँ **गोट सिकड़ी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर तारसँ निर्मित सिकड़ीकेँ **बद्धी** कहल जाइत छैक। आइकाल्हि सिकड़ीक स्थानमे **चेन** शब्दक प्रयोगाधिक्य देखल जाइछ।

सिकड़ीक निर्माणक हेतु धातुक काटल तारक टुकड़ीकेँ **फरसी** कहल जाइत छैक। दूटा फरसीकेँ परस्पर सम्बद्ध कयलासँ बनल शृंखलाकेँ **गूढ़ा** कहल जाइत छैक। गूढ़ाक शृंखलाकेँ **लर** कहल जाइत अछि। छाती पर पाँच-सात गोट लटकैत लर ओ बीच-बीचमे गोल-गोल नक्कासीदार पत्तरसँ युक्त चन्द्राकार हारकेँ **चन्दहार/चनरहार** कहल जाइत छैक। नगक काजसँ युक्त चन्द्रहारकेँ **झिलमिली** हार कहल जाइत छैक। दूटा क्रमश: पैघ आकृतिक सिकड़ीकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनओल हारकेँ **दुलरी**, तीनटा क्रमश: पैघ आकृतिक सिकड़ीकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनाओल हारकेँ **तिलरी/तेलरी**, पाँचटा क्रमश: पैघ आकृतिक सिकड़ीकेँ परस्पर

सम्बद्ध कऽ बनाओल हारकेँ **पचलरी** ओ सातटा क्रमश: पैघ आकृतिक सिकड़ीकेँ सम्बद्ध कऽ बनाओल हारकेँ **सतलरी** कहल जाइत छैक। एकटा गहनामे गर्दनिसँ लटकैत सिकड़ीमे नाभि लग लॉकेट लटकैत रहैत छैक आ ओहि लॉकेटसँ दूनू दिस लर निकलल रहैत छैक जे पीठपर स्थित लाकेटसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि गहनाकेँ **पेटबद्धी** कहल जाइत छैक।

हार, सिकड़ी आदिक पृष्ठ भागमे छोरकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु बनाओल नकुशीकेँ **कुलाबा/कुलेबा/बगुलदानी** कहल जाइत छैक।

बाँहिक गहना : गरदनिजे जकाँ बाँहिपर सेहो चकुवा, जन्त्र, चान आदि गहनाकेँ डोराने गाँथिकऽ धारण कयल जाइत अछि। चौदह गोट पहलदार गोल दानासँ युक्त बाँहिपर धारण करबाक हेतु प्रयुक्त चानीक गहनाकेँ **अनन्त/अनन्ता/अनन्दा/गोलकी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त सूक्ष्म आकृतिक दानावला अनन्तकेँ **किरमिछ** कहल जाइत छैक। जाहि व्यक्तिक हाथमे कनकनी रहैत छैक ओ बाँहिपर तामक मोट तारक वलय धारण करैत अछि। एकरा **टन्टा** कहल जाइत छैक। चानी अथवा सोनाक चाकर पत्तरसँ निर्मित बाँहिपर धारण करबाक हेतु प्रयुक्त सामक आकृतिक गहनाकेँ **पात/पाइत/पाति** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत कम चाकर पातिकेँ **टाड़/टाँड़/टड़िया** कहल जाइत छैक। सोन अथवा चानीक मोट छड़सँ निर्मित बाँहिपर धारण करबाक वलयाकार गहनाकेँ **लपेट** कहल जाइत छैक। शंखनाभिकेँ सोन अथवा चानीमे सम्बद्ध कऽ कोढ़ा लगाय डोरामे गँथाकऽ बाँहिपर धारण कयल जाइत छैक। एहि गहनाकेँ **शंखलाभी** कहल जाइत छैक। सपताक डोराक संगे सोन अथवा चानीक स्प्रिंगक आकृतिक वस्तु धारण कयल जाइत अछि। एकरा **गूना** कहल जाइत छैक। चानीक नओ गोट बेलनाकार दानाकेँ डोरामे गँथाकऽ बाँहिपर धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **नवग्रह/नौग्रह/नौग्रही** कहल जाइत छैक। नगयुक्त नवग्रहकेँ **नौनगा** कहल जाइत छैक। छक सदृश तीन गोट चानीक वस्तुकेँ डोरामे गँथाय बाँहिपर धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **तेमनिआ** कहल जाइत छैक। अदृक संख्या पाँच रहला पर एकरा **पचबनिआ** कहल जाइत छैक।

चानीक चाकर अर्द्धचन्द्राकार पत्तरसँ निर्मित बाँहिपर धारण करबाक हेतु प्रयुक्त गहनाकेँ **बाजू/बजुआ/बाजूबन्द/बाजूबन/बाजूबन्न/बजुल्ला/भुजबन्द/भुजबन** कहल जाइत छैक। रबाक आकृति उखारल बाजूकेँ **रबड** कहल जाइत छैक। लहरिक आकृतिमे मोड़ल चानीक तारक दूनू कातमे लागल कोढ़ाक सहायतासँ डोरामे गाँथिकऽ बनाओल अर्द्धचन्द्रकार बाँहिक भूषणकेँ **लहेरिया बाजू/कटबी बाजू/ कटुबी** कहल जाइत छैक। लहेरिया बाजूक ऊपरसँ धारण करबाक कुम्हरक फूलक आकृतिक चानीक टुकड़ीक समूहसँ निर्मित गहना केँ **ककोड़हा/**

ककोड़्या/कोपराहा बाजू कहल जाइत छैक। मृदङ्गक आकृतिक दानाक पाँच गोट समूहकेँ डोरामे गँथाकऽ बाँहि पर धारण करबाक भूषणकेँ **बिजोठ/बिजौठ/बिजौठा/मुठला** कहल जाइत छैक। गोल दानावला जालदार बिजौठक सदृश गहनाकेँ **बिरखी/बिरेंठी/** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। केहुनी लग धारण करबाक हेतु प्रयुक्त गहनाक एकटा प्रभेदकेँ **कुसियारक गेंड़ी/जइसम/जइसन/जउसम/ जउसन/जसोन्ह** कहल जाइत छैक। इहो डोरामे गाँथल जाइत अछि। एहिमे पाँच गोट दाना होइत छैक। प्रत्येक दानामे दू-दूटा परस्पर सम्बद्ध जन्त्रक आकृतिक फोंक वस्तु रहैत छैक। यंत्रक मुँह उत्थर बनाबटि द्वारा बन्द रहैत छैक तथा ओहिपर बिन्दुक आकृति उखारल रहैत छैक। तीन गोट यंत्राकृति वस्तुकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनाओल जइसमक प्रभेदकेँ **तिनखंडी** आ पाँच गोट यंत्राकृति वस्तुकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बनाओल प्रभेदकेँ **पचखंडी** कहल जाइत छैक। मयूरक पाँखिक आकृतिक केहुनीपर धारण करबाक हेतु प्रचलित गहनाकेँ **कृष्णचूर/कृष्णचूरा** कहल जाइत छैक। चानीक पत्तरक फुलदार गहनाकेँ **बाँके** कहल जाइत छैक।

बाजू, बिजौठ, बाँक, जइसन आदि गहनाकेँ गँथबाक डोराक नीचा लटकैत भागक छोरपर एकटा गोल आकृतिक पहलदार दाना लटकैत रहैत छैक। एकरा **भुंडी/भूड़ी/सुराही** कहल जाइत छैक। चानीक पत्तरक उपरका भागमे नाम-नाम नक्काशीदार कोसासँ युक्त बाँहिक गहना **ठेक** कहल जाइत अछि।

पहुँचीक गहना : छोट नेनाक पहुँचीपर धारण करबाक चानीक ठोस वलयकेँ **मठ्ठा/माठा/मठबा/ मठिया/बलिया/हथना** कहल जाइत छैक। एकर खुलल मुँह पर बाघक मुखाकृति बनल रहैत छैक जकरा **बघमूँहा** कहल जाइत छैक।

स्त्रीगणक पहुँचीपर धारण करबाक हेतु प्रचलित करीब दू आङुर चाकर नक्कासीदार वलयकेँ **पहुँची** कहल जाइत छैक। एहिमे एकटा पत्तर बाह्य भागमे रहैत छैक जाहि पर नक्कासी कयल रहैत छैक आ ओहि पत्तरक भीतरी भागमे एकटा अन्य पत्तर रहैछ जे उपरका पत्तरसँ छोट रहैछ। दूनू पत्तरक बीचवला रिक्त स्थान चानीक बेलनाकार टुकड़ी द्वारा स्थान-स्थानपर भरल रहैत छैक। एहि गहनामे दूटा अदद परस्पर सम्बद्ध रहैत छैक। खोलबाक हेतु एहिमे एकठाम मुँह बनल रहैत छैक जतऽ चानीक कील द्वारा दूनू पृथक्कृत भागकेँ सम्बद्ध कयल जा सकैत छैक। एहि कीलकेँ **खील** कहल जाइत छैक।

स्त्रीगण हाथमे सोन ओ चानीक कम चाकर पत्तरसँ निर्मित वलय धारण करैत छथि। एहि वलयकेँ **चुलि** (वर्ण.)**/चुड़ी/चूड़ि/चूड़ी** कहल जाइत छैक। हाथक अग्रभागमे धारण करबाक हेतु प्रयुक्त डोरी जकाँ ऐठल तारसँ निर्मित चूड़ीकेँ **अगुआ/अगेली** कहल जाइत छैक। अपेक्षाकृत अधिक चाकर पत्तरसँ निर्मित उत्तल

सतहवला चूड़ीकेँ **बिचला/बिचली/छन/छन्द** कहल जाइत छैक। पहुँचीपर पृष्ठभागमे धारण करबाक गोल सतहवला चूड़ीकेँ **पछुआ/पिछुआ/पिछेली** कहल जाइत छैक। चूड़ीक ऊपरसँ पहुँचीक अग्रभागमे धारण करबाक हेतु प्रचलित करीब एक आङुर चाकर, मोट ओ नक्कासीदार वलयकेँ **वलया** (वर्ण.)**/बाला** कहल जाइत छैक। बालाक एकटा प्रभेदमे भीतर दिस एकटा चाकर पत्तरक बाह्य भागमे क्रमिक अवतलोत्तल सतह बनाओल रहैत छैक। एहि बालाकेँ **बड़हरा/बड़हरी** कहल जाइत छैक। पातर तारक बड़हरीकेँ **अमिरती / तारकसी** कहल जाइत छैक। बड़हरीक उपरका भागमे सरिसोक दाना सदृश नक्कासी रहलापर एकरा **दरोबी** कहल जाइत छैक। पैलाक कनखाक उपरका भागक आकृतिक चूड़ीकेँ **टोड़ा/तोंड़ा/तोड़िआ** कहल जाइत छैक। भीतरमे तामक तारसँ युक्त सोनाक चूड़ीक प्रभेद **टड्डा** कहल जाइत अछि।

काँससँ निर्मित चूड़ीकेँ **बाँहू/बाँही/बहिआ** कहल जाइत छैक। बाँहूक समूहमे आगू ओ पाछू लगयबाक हेतु प्रचलित अपेक्षाकृत चाकर चूड़ीकेँ **बन/बन्द** कहल जाइत छैक। चप्पत चूड़ीक एकटा प्रभेद **कतरी/कटबी/कटुबी** होइत अछि। बाहर दिस काँट सदृश आकृतिसँ युक्त चूड़ीकेँ **खसिया** कहल जाइत छैक। उत्तल सतहवला खसियाकेँ **सबरबी** कहल जाइत छैक। तीसीक फूलक आकृतिक गढ़निसँ युक्त चूड़ीकेँ **तिसियौटा** कहल जाइत छैक। ऐंठुआ चानीक तारसँ निर्मित चुड़ीक प्रभेदकेँ **रुल्ली** कहल जाइत छैक। चाकर चूड़ीक एकटा प्रभेदकेँ **पटरी** कहल जाइत छैक। अउँठी जकाँ एक-दू-ठाम नग बैसाओल सोनक चाकर चूड़ीकेँ **बाउटी/बाओटी** कहल जाइत छैक। बालाक एकटा प्रभेदमे दूनू कात दूटा चूड़ी मध्यमे फूल ओ जाल द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक। एहि बालाकेँ **बएताना** कहल जाइत छैक। निम्नवर्गमे चारि-पाँचटा चूड़ीक सम्बद्ध रूपकेँ धारण कयल जाइत अछि, जकरा **रुपौठी** कहल जाइत छैक। मुसलमानिलोकनिमे व्यवहृत जालदार चाकर चूड़ीकेँ **समसेबन्द/समसेर बन्द/समसेबन** कहल जाइत छैक।

तामक छड़पर सोनक पत्तर लपेटि कऽ बनाओल फूलदार चूड़ीक प्रभेदकेँ **टड्डा** कहल जाइत छैक। गोल ओ फोंक फूलदार बलियाकेँ **काँकन/कंकन/कंकना/ कग्गन /कंगन/कगना/कंगना** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **ककनी/कगनी** होइत अछि।

पहुँचीक एकटा गहनामे तरहत्थीक पृष्ठ भाग पर एकटा पैघ पनमा रहैत छैक, जाहिसँ पाँच गोट लर आगू दिस निकलल रहैत छैक। ओ लर सभ क्रमशः पाँचो आङुरक औंठीसँ सम्बद्ध रहैत छैक तथा पाँच गोट लर पाछू दिस निकलल रहैत छैक जे चाकर पत्तरक फूलदार वलयसँ पहुँचीपर सम्बद्ध रहैत छैक। एहि गहनाकेँ

हथसंकर/हाथसंकर कहल जाइत छैक। केराक कोसा सन-सन चानी अथवा सोनक टुकड़ीक नओ गोटक समूहकेँ डोरामे गाँथि कऽ पहुँचीपर धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **नघुरी/नौघरी/लघुरी** कहल जाइत छैक।

हाथक आङुरक गहना : हाथक आङुरमे पहिरबाक हेतु प्रचलित वलयाकार गहनाकेँ **अँगूठी/अउँठी/औंठी** कहल जाइत छैक। जाहि औंठीक उपरका भागमे आँखिक आकृति बनल रहैत छैक ओकरा **अँखुआ** कहल जाइत छैक। उपरका भागमे नगसँ युक्त अउँठीकेँ **पथरौटी** कहल जाइत छैक। ऐंठल तारसँ निर्मित औंठीकेँ **ऐंठुआ** कहल जाइत छैक। मोट तारक ठोस अउँठीकेँ **छल्ला** कहल जाइत छैक। तीनटा तारकेँ ऐंठिकऽ निर्मित अउँठीकेँ **तिनछलिया** कहल जाइत छैक। जाहि अउँठीमे नगक स्थानपर छोट सन अयना लागल रहैत छैक ओकरा **आरसि/आरसी** कहल जाइत छैक। जालक आकृतिसँ युक्त औंठीकेँ **जालदार** आ फूलक आकृति उखारल औंठीकेँ **फूलदार** कहल जाइत छैक। जाहि औंठीक उपरका भागमे बोर लागल रहैत छैक, ओकरा **मुनरका** (सं. मुद्रिका) कहल जाइत छैक। छोट मुनरकाकेँ **मुन्द्री/मुन्दरी/मुनरी/मुनरकी** कहल जाइत छैक। जनउमे धारण करबाक हेतु प्रचलित ताम अथवा सोनक पवित्रतासूचक औंठी **पवित्री** कहल जाइत छैक। मुसलमानलोकनि सिकड़ीसँ निर्मित एकटा औंठी धारण करैत छथि जकरा खोलि देलापर पुनः सोझरायब कठिन होइत छैक। एहि औंठीकेँ **गोरखधन्धारी/गोरखधन्हारी/औझरौआ/झगरौआ** कहल जाइत छैक। एकर सभक अतिरिक्त ग्रियर्सन **बदलोली, मथानी, बदामी** आदि अंगूठीक प्रभेदक उल्लेख कयने छथि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-155**), मुदा सोनार सभ एहि प्रभेद सभक व्याख्या नहि प्रस्तुत कऽ सकल।

डाँड़क गहना : नेनाक डराडोरिमे पहिरबाक हेतु प्रचलित चानीक फोंक गदा सदृश गहनाकेँ **छुछरी** कहल जाइत छैक। नेनाक डाँड़केँ आवृत करऽवला करीब एक आङुर चाकर चानीक पहलदार पत्तरक गहनाकेँ **कमरधनी** कहल जाइत छैक। एहिमे स्थान-स्थान पर घुघरू लागल रहैत छैक। नेनाक डाँड़मे पहिरबाक चानीक सिकड़ीकेँ सेहो **करधनी/करमधनी/हरहरा** कहल जाइत छैक। स्त्रीगण डाँड़मे करीब तीन आङुर चाकर चानीक गहना धारण करैत छथि। एहि गहनाक मुख्य भाग चौखूट पत्तर ओ सिकड़ीसँ बनल रहैत छैक। एकरा **मेघल/मेघला/डँड़कस/कमरकस/कमरजेब** कहल जाइत छैक। चाभीक समूहकेँ डाँड़मे लटकाकऽ रखबाक हेतु नकुशीयुक्त चानीक गहनाकेँ **खोसना/झब्बा/झबिया/झाबा/डँड़पेंच** कहल जाइत छैक। साड़ीक कोंचामे लगयबाक हेतु प्रचलित झुमकाक आकृतिक चानीक गहनाकेँ **कोचयन/कोचबन्द/कोचबन** कहल जाइत छैक। जाफरक आकृतिक कोचबनकेँ **जाफरी** कहल जाइत छैक।

पैरक गहना : धियापुताक पैरक घुट्ठीपर पहिरबाक हेतु प्रचलित चानीक ठोस, मोट और वलयाकार गहनाकेँ **गोरा/गोरहा/गोड़ना/गोरहन/गोरांय** (व.ड़) कहल जाइत छैक। एहूमे माथा जकाँ बघमुँहा बनल रहैत छैक। सयान स्त्रीक गोड़ाँविकेँ **कड़ा/काड़ा** कहल जाइत छैक। फोंक काड़ाक भीतरी भागमे लोहक गोली देल रहैत छैक, जे गतिक क्रममे ध्वनि उत्पन्न करैत छैक। एहन काड़ाकेँ **बाजवला काड़ा** कहल जाइत छैक। पैरमे पहिरबाक हेतु प्रचलित चानीक चूड़ीक समूहकेँ **छऽड़ा/छाड़ा/छड़ड़ा** कहल जाइत छैक। करीब दू आङुर चाकर चानीक पत्तरकेँ लहरिक आकृतिमे मोड़ि कऽ घुट्ठी पर धारण कयल जाइत अछि। एहि गहनाकेँ **पैरी/पैरम** कहल जाइत छैक। बोरयुक्त पैरीकेँ **जेहरि** कहल जाइत छैक। चानीक कम चाकर जेहरि जाहिमे कतहु-कतहु पैघ-पैघ बोर लागल रहैत छैक आ बोरमे लोहक छोट-छोट दाना रहैत छैक जे गतिक क्रममे ध्वनि उत्पन्न करैत छैक, से **पजेब/पाजेब/पायजेब/पौजेब/पाँवजेब** कहल जाइत छैक। एहिमे ध्वनिकारक बोरकेँ **बाज** कहल जाइत छैक। पैरक उपरका भागकेँ झँपैत एँड़ीक दिसुक सम्पूर्ण भागकेँ आच्छादित करऽवला ओ नीचा दिस जइक आकृतिसँ युक्त पौजेबकेँ **साट** कहल जाइत छैक। जइक आकृतिकेँ **जबड** कहल जाइत छैक। बाजवला साटकेँ **पायल/पाइल** कहल जाइत छैक। खूब भारी पायलकेँ **तोड़ा** कहल जाइत छैक। नीचा दिस छोट-छोट बोर लागल पायलकेँ **नुपूर/नेपुर/नेपुल** (**प्राचीन शब्द नेउर**) कहल जाइत छैक। बाजवला भारी पायलकेँ **पैजनी/पैंजनी** कहल जाइत छैक। पैरमे पहिरबाक हेतु प्रचलित घुघरूक समूहकेँ **पावट/पावटी** कहल जाइत छैक। एहिमे काँसक पैघ-पैघ घुघरूक समूह रहैत छैक। पैरक एकटा गहनामे पाँचो आङुरक औंठी लर द्वारा पैरक उपरका भागक मध्यमे स्थित गोल नक्कासीदार पत्तरसँ सम्बद्ध रहैत छैक आ ओहि पत्तरसँ निकलल लर पौजेबसँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि गहनाकेँ **पैरसंकर/पाँवसंकर** कहल जाइत छैक।

पैरक आङुरमे पहिरबाक हेतु प्रचलित अउँठीकेँ **बिछिया/बिछुआ** कहल जाइत छैक। ई सामान्यतः मध्यवर्ती तीनू आङुरमे पहिरल जाइत अछि। पैरक अउँठामे पहिरबाक हेतु प्रचलित बिछियाकेँ **औन्ही/पोर** कहल जाइत छैक।

कपड़ाक गहना : पूर्वमे सोन अथवा चानीक चौअन्नीक आकृतिक टुकड़ी सभकेँ पोप काढ़बाक स्थानपर साड़ीमे गाँथि कऽ धारण कयल जाइत छल। एहि गहनाकेँ **मनौरी** कहल जाइत छलैक। साड़ीक घोघवला भागक पार्श्वमे अर्द्धगोलकक आकृतिक बोर लागल छोट-छोट गहना लगाओल जाइत छल जकरा **कटोरी** कहल जाइत छलैक। खोंइछाक अग्रभागमे लगाओल मनोरी अथवा कटोरीकेँ **अँचरी** कहल जाइत छलैक। अनेक प्रकारक अङ्गवस्त्रमे सोन ओ चानीक **बुतामक** प्रयोग सेहो होइत रहल अछि।

एकर अतिरिक्त सोन, चानी ओ अष्टधातुसँ भगवानक आकृति सेहो बनाओल जाइत रहल अछि। एकरा **मूरुत/मुर्त्ति/मुरती/विग्रह** कहल जाइत छैक। भगवानक मूर्तिक माथवला भागकेँ झँपबाक हेतु त्रिकोण आकृतिक गहनाकेँ **मकुट/मुकुट** कहल जाइत छैक। गौड़ पुजबाक हेतु सोन अथवा चानीक छोट सन छीपक व्यवहार होइत छैक। एकरा **सोहगैली** कहल जाइत छैक। श्राद्धमे प्रयुक्त धातुक मनुष्याकृतिकेँ **काञ्चनपुरुष** कहल जाइत छैक। श्राद्धहिमे सपिंडीकरणक विधिमे पिंडकेँ सोन अथवा चानीक दण्डाकार छड़सँ कटबाक विधान छैक। एकरा **शलाका** कहल जाइत छैक।

एतावता सोन ओ चानीसँ निर्मित विभिन्न प्रकारक गहना ओ वस्तुसँ सम्बद्ध विपुल शब्दावलीक प्रयोग सोनारक व्यावसायमे होइत छैक। गहनाक अधिक प्रयोगकेँ **चलनि/चलनिसारि** कहल जाइत छैक। चलनि जनरुचिक अनुरूप बदलैत रहबाक कारणेँ सोनारक उत्पादन सामग्रीमे अनेक ओकर अर्थक संग लोपक स्थितिमे अछि। सोनारक शब्दावली अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टिक पात्र ओ पारिभाषिक स्वरूपक अछि। स्वरूपमे अल्प परिवर्तनसँ उत्पादन सामग्रीक हेतु भिन्न शब्द भेटैत अछि मुदा भिन्न डिजाइनक वस्तुक हेतु सेहो समान शब्दक व्यवहार होइत रहल अछि।

निष्कर्ष : धातु व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहि व्यवसायमे आधार सामग्रीक हेतु आयात पर निर्भरताक कारणेँ एहि सामग्री सभकेँ प्रकृतिसँ प्राप्त करबाक हेतु प्रयुक्त विधिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक प्रयोग सम्बद्ध व्यवसायमे नहि होइत रहल अछि। धातु व्यवसायमे अनेक औजार सामान्य अछि, मुदा कार्यक भिन्नताक आधारपर औजारक आकृतिमे क्रमिक परिवर्तनसँ ओकर नामसँ सम्बद्ध शब्दावलीमे सेहो परिवर्तन देखल जाइत अछि। क्रमिक मशीनीकरणक प्रभावेँ लोहार ओ कसेराक अनेक औजारसँ सम्बद्ध शब्दावली लोपक स्थितिमे अछि। उत्पादन सामग्रीक दृष्टिएँ लोहारक व्यवसायमे अपेक्षाकृत कम शब्दक प्रयोग होइत छैक। कसेराक उत्पादन सामग्रीमे अधिकांश आयातित होयबाक कारणेँ ओकरा आयातक स्थानक नामपर चीन्हल जाइत छैक। अल्मुनियम, लोह, प्लास्टिक आदिक पात्रक स्थानापन्न रूपेँ व्यवहारक प्रचलन भेने कसेराक व्यवसाय तथा ओकर शब्दावली संक्रमित भऽ रहल अछि। सोनारक शब्दावली विपुल अछि, मुदा आभूषणमे जनरुचिक प्रत्यक्ष प्रभावक कारणेँ पुरान गहना सभसँ सम्बद्ध शब्द सभ लोपक स्थितिमे अछि।



षष्ठ अध्याय

अन्य पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली

मिथिला मध्य प्रचलित अन्य पारम्परिक जातीय व्यवसाय सभकेँ तीन श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैत अछि।

१. खाद्य सम्बन्धी व्यवसाय
२. पेय सम्बन्धी व्यवसाय
३. प्रसाधन सम्बन्धी व्यवसाय।

भूजा भूजब, मधुर बनायब, तेल पेड़ब, नोन बनायब, मधु छोड़ायब ओ पान उपजायब खाद्य सामग्रीसँ सम्बद्ध पारम्परिक जातीय व्यवसाय थिक। एहि व्यवसाय सभमे क्रमशः कानू, हलुआइ, तेली, नोनिजा, कुरेड़ी, ओ बरइ जाति लागल रहल छथि। मुदा नोनिजाक व्यवसाय आब समाप्त भऽ गेल अछि।

तारी ओ दारूक उत्पादन पेय सम्बन्धी व्यवसाय थिक। एहिमे कमशः पासी, ओ सूड़ी तथा कलवार जाति लागल-रहल छथि। कानूनी प्रतिबन्धक कारणेँ अधिकांश सूड़ी ओ कलवार आब दारू व्यवसायसँ विरत भऽ गेल छथि आ हिनक व्यवसाय जाति निरपेक्ष जकाँ भऽ गेल अछि।

प्रसाधन सम्बन्धी व्यवसायमे लाहक चूड़ी बनयबाक, चामक जुत्ता बनयबाक आ माला गँथबाक व्यवसाय अबैत अछि। एहि तीनूमे क्रमशः लहेरी, चमार ओ माली जाति लागल छथि।

कानू

आधार सामग्री : कानूक आधार सामग्री भुजा भूजि कऽ खयबा योग्य विभिन्न प्रकारक अन्न होइत अछि। लोक **धान, चाउर, मकइ, बूट/चना, मटर, राहरि, चीन, कुलकुम, जनेरा/चिउर/जनेर, जौ, गहूम** आदिकेँ भूजि कऽ खाइत अछि। आइकाल्हि मील द्वारा निर्मित विशेष प्रकारक चाउरक उपयोग मुरही भुजायबक हेतु होइत छैक। एकरा **कलहा/चापा** कहल जाइत छैक। चओरसँ **भेंट, खोभी** ओ **रामदाना** प्राप्त होइत छैक। एहू तीनू अन्नक लावा भूजल जाइत अछि। एकरा सभक

फऽरकें **ढेढ़ी** कहल जाइत छैक। ढेढ़ीमे अत्यन्त सूक्ष्म आकृतिक अन्न रहैत छैक। भैटक ढेढ़ीसँ प्राप्त मड़ुआक आकृतिक अन्नकें **मड़ुअनि** कहल जाइत छैक।

औजार : कानूक कार्यस्थलकें **कनसार/कंसार/कनिसार/कनसारी** कहल जाइत छैक। कंसारमे आगि पजारबाक व्यवस्थाकें **चुल्हा/चूल्हा/चुलहा** कहल जाइत छैक। छोट चुल्हाकें **चूल्हि/चुइल्ह/चुलही/चुल्हिया** कहल जाइत छैक। चूल्हा बनयबाक हेतु माटिक आयताकार आधार बनाओल जाइत छैक। एकरा **पट्टा** कहल जाइत छैक। अधसुक्खू पट्टाकें ठाढ़ कऽ वृत्ताकार पथमे मोड़लापर चुल्हाक घेरा बनैत छैक। एकरा **दाबा** कहल जाइत छैक। दाबाक दुनू छोरक बीच करीब दुट्ठी भरि दूरी रहैत छैक। दुनू छोरक उपरका भागकें माटिक दंड द्वारा जोड़ल जाइत छैक। एहिसँ ओहि भागमे बनल आकृतिकें **पुत्ता/पुत्ती** कहल जाइत छैक। पुत्तीक निचला खुलल भागकें चूल्हाक **मुँह** कहल जाइत छैक। चूल्हापर देल बासनकें दाबाक उपरका सतहसँ किञ्चित ऊपर उठल रखबाक हेतु दाबाक ऊपर तीन ठाम ऊँच कऽ देल जाइत छैक। एहि ऊँच स्थलकें **उझकुन** कहल जाइत छैक। चूल्हाक पेटवला भाग जाहिमे आगि जरैत रहैत छैक, से **आँची/आँचिया/आँछी/आँछिया** कहल जाइत छैक। एकटा आँछियासँ युक्त चुल्हाकें **एकचुल्हिया** कहल जाइत छैक।

कंसारमे समान्यत: दू अथवा अधिक आँछियासँ युक्त चूल्हिक व्यवहार होइत छैक। आँछियाक संख्याक आधारपर ई **दुचुल्हिया, तीनचुल्हिया, चरिचुल्हिया, पँचचुल्हिया, छऽचुल्हिया, सतचुल्हिया** प्रभेदक होइत अछि। एहि सभ प्रभेदमे आँछिया सभकें परस्पर विभाजित करऽवला उपरका माटिक घेराकें **मगजी** कहल जाइत छैक। चारि ओ अधिक आँछियावला चुल्हामे जारन पैसेबाक अलग मुँह ओ राख निकालबाक अलग मुँह रहैत छैक। चुल्हाक परित: स्थानकें **पौर/पौरी** कहल जाइत छैक।

चूल्हामे विभिन्न गाछक पात जारनिक रूपमे व्यवहृत होइत छैक। गाछीमे छिड़िआयल पातकें हाथ द्वारा एक-एक कऽ एकत्र करबाक क्रिया **बीछब/लोढ़ब** होइछ। अधिक पातकें बहारिकऽ एकठाम जमा करबाक क्रिया **खड़रब** होइत अछि। खरड़बाक हेतु करचीक समूहसँ बनल औजारक उपयोग होइछ। एकरा **खरड़/खरड़ा** कहल जाइत छैक। खरड़ल पातकें एकठाम बान्हि कऽ उघबाक हेतु रस्सीक बीनल जालीक उपयोग होइत अछि। एकरा **जल्ला/जलावरी/जलखरी** कहल जाइत छैक। पातक समूहसँ गोल कऽ बनाओल थाककें **ढेर/ढेरी/टाल** कहल जाइत छैक।

पातकें चूल्हिमे प्रवेश करयबाक क्रिया **झोंकब/झोंकारा देब** होइत छैक। झोंकबाक हेतु जाहि काष्ठखंडक उपयोग होइत छैक, ओकरा **खोरना/खोरनाठ** कहल

जाइत छैक। छोट खोरनाकें **खोरनी/खोरनाठी** कहल जाइत छैक। खोरनाक अग्रभागमे आगि पकड़ि लेलापर ओकरा मिझयबाक हेतु एकटा माटिक गोल पात्रमे राखल पानिमे डुबा देल जाइत छैक। एहि पात्रकें **मटकूर** कहल जाइत छैक।

जाहि कोहा सभमे अन्न भूजल जाइत छैक, ओकरा सभकें **खापड़ि** कहल जाइत छैक। छोट खापड़िकें **खपड़ी** आ पैघ खापड़िकें **खापड़** कहल जाइत छैक। जाहि कोहा सभमे बालु धिपाओल जाइत छैक, ओकरा सभकें **कूर/कूरा** कहल जाइत छैक।

बालुकें कूरसँ निकालिकऽ खापड़िमे देबाक हेतु **सरबा-डंटा** नामक औजारक उपयोग होइत छैक। एहिमे एकटा पातर वंशदंडक अग्रभागमे एकटा सरबा बान्हल रहैत छैक। ई करछुक आकृतिक होयबाक कारणें **करछु** नामे सेहो जानल जाइत अछि।

अन्न ओ बालुकें चलायमान करबाक क्रिया **लारब** होइत छैक। लारबाक हेतु बाँसक करचीक करीब एक हाथ नाम चारि-पाँच गोट पातर दंडक व्यवहार होइत छैक। एकरा **लरना/लारनि/लरनी/चलौनी/भुजनाठी** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन (पृ. 91) एकरा छिपनी कहने छथि।

बालु ओ भूजल अन्नकें पृथक् करबाक हेतु बाँस अथवा लोहक एकटा छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **चलना/चलनी/चालनि** कहल जाइत छैक। कतहु-कतहु एकरा **सूप** सेहो कहल जाइत छैक।

चालनिक तरमे बालुकें एकत्र होयबाक हेतु माटिक गँहीर बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **ढाकन/ढकना** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **ढकनी** होइत अछि।

उत्पादन : कानूक उत्पादन मध्य **भूजा, लावा, फरही/फरुही, माढ़/माढ़ा/माढ़ी, फुटहा, मुरही** ओ **सातु** अबैत अछि। अन्नकें तापक योगसँ ओकर आकार, स्वरूप ओ स्वादमे परिवर्तन करबाक क्रिया **भूजब** होइत अछि। भुजला उत्तर प्राप्त खाद्यकें सामान्य रूपें भूजा कहल जाइत छैक। अनेक प्रकारक भूजाक हेतु **भूजा-भर्री/भरड़ी** शब्दक प्रयोग होइत अछि। भूजाकें चिबाकऽ खायल जयबाक कारणें ओकरा **चरबन/चारबन** सेहो कहल जाइत छैक।

धान, मकइ, चीन आदिकें भुजलापर ओकर आकृति मूलसँ चौगुन-पचगुन भऽ जाइत छैक आ ओकर भूजामे मूल स्वरूप गौण बुझना जाइत छैक। एहन भूजाकें लावा कहल जाइत छैक। धानक भूजाकें **फड़भी/फरही/फरुही** कहल जाइत छैक। चीनक लावाकें **माढ़/माढ़ा/माढ़ी** कहल जाइत अछि। दलिहनकें भुजलापर ओकर

खोइंचा दरकि जाइत छैक आ गुद्दावला भाग झलकऽ लगैत छैक। एकरा **फुटहा** कहल जाइत छैक। कम फुटल फुटहाकें **फुटही** कहल जाइत छैक। चाउरकें विशेष विधिसँ भुजलापर निर्मित ओकर पैघ-पैघ लावाकें **मुरही** कहल जाइत छैक। भूजल बूटक गुद्दावला भागकें पीसि कऽ तैयार कयल खाद्यकें **सातु/सतुआ** कहल जाइत छैक। तारल ओ भारल धानकें किञ्चित भूजि कऽ समाठक नड्ड दिससँ आघात द्वारा कुट्टलापर बनल खाद्यान्न **चूड़ा** होइत अछि। एकरो भूजि कऽ खायल जाइत अछि।

भूजल चूड़ा, मुरही, भूजल बूटक दालि ओ भूजल तिलकें गुड़क पाग दऽ बनाओल गोलाकार वस्तुकें क्रमशः **चुड़लाइ/चुड़लऽड्डू, मुरलाइ/मुड़लऽड्डू, मसका** तथा **तिलबा** कहल जाइत छैक। आन अन्नक एहि प्रकारें बनाओल वस्तुकें **लाइ** (**प्रसिद्ध कहबी:- 1 एक बेटी लाइ, दोसर मिठाइ, तेसर भेली तँ तीनू बलाय २. खाइ लय लाइ नै, किदन पोछै लय मिठाइ**) कहल जाइत छैक।

मकइकें भुजला उत्तर ओकर किछु दाना प्रस्फुटित भऽ लावा भऽ जाइत छैक, मुदा किछु दाना भुजलोपर आकृतिमे यथावत् रहि जाइत छैक। एहि दाना सभकें **किर्री/ठुर्री/लवाठी** कहल जाइत छैक। तुरत तैयार मकइकें छोड़ाकऽ खापड़िमे गर्म कऽ तैयार अन्न **गलबल** कहल जाइत अछि। नेरहा सहित आगिक साक्षात् सम्पर्कमे मकइक दानाकें गर्म कऽ तैयार अन्नकें **ओड़हा** कहल जाइत छैक। तुरत तैयार मकइमे एक रौद लगाकऽ भुजलापर किञ्चित प्रस्फुटित ओ मोलायम खाद्य तैयार होइत छैक। एकरा **मखानी** कहल जाइत छैक।

भूजल अन्नक विशिष्ट स्वादकें **सोन्ह** कहल जाइत छैक। सोन्ह स्वादसँ युक्त अन्न **सोन्हगर** होइत अछि। बेसीकाल धरि भुजलापर भूजाक स्वाद अधिक सोन्हगर भऽ जाइत छैक। एहन स्थितिमे भूजाकें **झूर** कहल जाइत छैक। अत्यधिक काल धरि भूजल अन्नक रंग करिछौन भऽ जाइत छैक आ स्वाद किञ्चित तीत भऽ जाइत छैक। एहि स्वाद विशेषकें **अतिखाइन** कहल जाइत छैक।

चाउरक अत्यन्त कठोर भूजाकें **रबायल** आ चाउरे जकाँ किञ्चित कठोरतायुक्त रहने **चौरायल** कहल जाइत छैक।

तुरत भूजल भूजाक कठोरताक भाव **कुड़कुड़** होइत अछि। भूजाक कठोरतामे अन्नकें स्फुटित होयबासँ पूर्वक स्थिति धरि गर्म करबाक क्रिया **उलायब** होइत अछि। उलाओला उत्तर प्राप्त अन्नकें **उलबा/उलायल/उलाओल** कहल जाइत अछि। मकइ, राहरि आदि अन्नकें उलाकऽ उपयोग कयल जाइत छैक।

भुजबाक विधि : कंसारमे आगि प्रज्वलित करबाक क्रिया **कंसार फूकब** होइत अछि। आगि प्रज्वलित करबाक क्रिया **पजारब** होइत अछि। कंसार फुकला उत्तर

ओकर खापरि तथा कूर ओ ताहिमे देल बालु गर्म होमऽ लगैत छैक। आगि निरन्तर प्रज्वलित रखबाक हेतु पात आदि जारनकें कनसारक चूल्हिमे भीतर करबाक क्रिया **झोंकब** होइछ । झोंकि कऽ आगि प्रज्वलित रखबाक क्रिया **आँचब** होइत अछि। आँचलासँ उत्पन्न ज्वालाकें **आँच** कहल जाइत छैक। आगिक ज्वाला शान्त होयबाक क्रिया **पझायब/मिझायब/बुतायब** होइत अछि। चुल्हिमे आवाजक संग आगि मिझा जयबाक क्रिया **हम्हरब** होइत अछि। आँच शान्त भेलापर चूल्हिक राख ओ ईंधन आदिकें चलायमान करबाक क्रिया **खोरब/खोरनाठब** होइछ। कखनो-कखने आगि चूल्हाक मुँहसँ बाहर भऽ पातक ढेरीमे पकड़ि लैत छैक। एहि क्रियाकें **पसाही लागब** कहल जाइत छैक। आगि मिझयलाक बाद जारनिक अवशेषकें **राख/छाउर/छाइ** कहल जाइत छैक।

खापड़ि आदिक गर्म होयबाक क्रिया **धीपब** होइत अछि। धिपला उत्तर भुजबाक हेतु अन्नकें खापड़िमे देल जाइत छैक। एक खेपमे जतेक अन्न खापड़िमे देल जाइत छैक, ओ मात्रा **घानी** (**प्रसिद्ध कहबी:- घानी जरि गेल, भार लय बान्हल छी**) कहल जाइत छैक। घानीक हेतु दूनू हाथक तरहत्थीक जोड़ल भागपर अँटल अन्नकें भरि **आँजुर** ओ एक हाथक तरहत्थीपर अँटल अन्नकें भरि **लऽप** कहल जाइत छैक।

अन्नकें लारनि द्वारा चलायमान करैत गर्म करबाक क्रिया **झोरब/झोलब** होइछ। झोरलासँ अन्नक आन्तरिक भागक प्रस्फुटित होयबाक क्रिया **फूटब** होइत अछि।

किछु अन्न सोझे झोरलासँ फुटि जाइत छैक। किछु अन्न बालुक संगे झोरल जाइत छैक। ओकर फुटबाक अवस्थाक ध्यान राखल जाइत छैक। एहि अवस्थाकें **ताक** कहल जाइत छैक। ताकपर सरबा-डंटाक सहायतासँ कूरक गर्म बालु झोरैत अन्नमे देने किछु अन्न अत्यन्त प्रस्फुटित भऽ जाइत छैक। ताकसँ पूर्व बालू दऽ देने अन्न स्फुटित नहि होइत अछि आ कठोर भऽ जाइत अछि। एहन कठोर अन्नकें **रोड़** आ एकर कठोरता प्राप्त करबाक क्रिया **रोड़ायब** होइत अछि। पाथर जकाँ अत्यन्त कठोरता प्राप्त करबाक क्रिया **पथरायब/पथरा जायब** होइछ। भुजबाक क्रममे जे अन्न खापड़ि आदिसँ उछटि कऽ पौरमे खसि पड़ैत छैक ओकरा **पड़ुआ/अरिपड़ुआ/भरपड़ुआ** कहल जाइत छैक।

भूजल अन्नकें नीचा दिस राखल चालनिमे खसयबाक क्रिया **उझलब/उझिलब** होइछ। उझिलल अन्न चालनिकें वामा-दहिना डोलाय बालुसँ पृथक् कऽ लेल जाइत छैक। एहि पृथक्करणक क्रिया **चालब** होइत अछि। चालला उत्तर बालु ढकनामे जमा भऽ जाइत छैक जकर पुनः-पुनः उपयोग कयल जाइत अछि।

अन्नकेँ भुजबाक हेतु कानूकेँ देय मजदूरी **भुजाइ** कहल जाइत छैक। अन्नक रूपमे देल मजदूरीकेँ **भार** कहल जाइत छैक।

मुरही बनयबाक विधि : मुरहीक हेतु चाउर विशेष विधिसँ तैयार कयल जाइत अछि। एकटा विधिमे कोनो बासनमे पानिकेँ खौलबाक स्थिति धरि गर्म कयल जाइत छैक। पानिक ई अवस्था विशेष **अदहन** कहल जाइत छैक। अदहन भेल पानिमे धान दऽ किछु काल आँच देबाक क्रिया **तारब** होइत अछि। तारल धानकेँ उतारि कऽ दू-तीन दिन धरि ओही पानीमे फुलबाक हेतु छोड़ि देल जाइत छैक। पश्चाति पहिला पानि पसाकऽ अल्प पानि दऽ ओही पानिक भाफमे ओकरा सिद्ध कयल जाइत छैक। एहि तरहेँ सिद्ध करबाक क्रिया **उसनब/उसिनब** होइत अछि। एहि उसिनल धानकेँ रौदमे किञ्चित सुखाकऽ कुटलापर मुरहीक चाउर बनैत छैक।

दोसर विधिमे तारल धानकेँ पानिसँ छानि खापड़िमे पैघ-पैघ थानी दऽ ओकर जलीय अंशकेँ सुखाओल जाइत छैक। तारल धानकेँ एहि प्रकारेँ शुष्क करबाक क्रिया **भारब** होइत अछि। भारल धानकेँ दू-तीन दिन धरि झाँपिकऽ रखबाक क्रिया **जमायब** होइत अछि। जमाओल धानकेँ कुटलापर मुरहीक चाउर तैयार होइत छैक।

मुरहीक चाउरमे अल्प मात्रामे नोन ओ पानिकेँ सानि देबाक क्रिया **मोब/मोअब** होइछ। देल पानिकेँ **मो** कहल जाइत छैक। मोअल चाउरकेँ दोसर दिन भुजलापर पैघ-पैघ आकृतिक मुरही फुटैत छैक।

मुरहीकेँ जोखि ओ नापिकऽ बेचल जाइत छैक। नपबाक पात्रकेँ **पैली/पइली** कहल जाइत छैक। बिक्रीमे **बेच** सेहो ग्राह्य होइत छैक।

सतुआ बनयबाक विधि : सतुआक हेतु बूटकेँ पानिमे फुलाय, दोसर दिन रौदमे अधसुक्खू कऽ भुजल जाइत छैक। ओकरा तारि, भारि कऽ सेहो भुजल जयबाक परिपाटी अछि। भूजल-बूटकेँ चकरीक सहायतासँ दरड़ल जाइत छैक। दरड़ल बूटक खोइंचावला भागकेँ **कोड़ाइ** ओ गुद्दावला भागकेँ **दालि** कहल जाइत छैक। कोड़ाइ ओ दालिकेँ सूपक सहायतासँ पृथक् करबाक क्रिया **झटकब/फटकब** होइत अछि। दालिकेँ जाँतमे पिसलापर जे चिक्कस बनैत छैक, से **सातु/सतुआ** कहल जाइत छैक। पीसल सातुसँ दानाक पैघ-पैघ टुकड़ीकेँ पृथक् करबाक क्रिया **चालब** होइत अछि। चालबाक काज वंशनिर्मित चालनि नामक औजारसँ होइत छैक। चालला उत्तर चालनिक उपरका भागमे जे अवशेष बचि जाइत छैक, ओकरा **चलौंस/चलौंसी/चलनौंस** कहल जाइत छैक।

मकइ, जौ आदिकेँ सेहो भूजिकऽ सातु तैयार कयल जाइत अछि।

हलुआइ

आधार सामग्री : हलुआइ अनेक प्रकारक मधुर ओ नोनगर वस्तु सभक निर्माण करैत अछि। एहि वस्तु सभक निर्माणमे अनेक प्रकारक आधार सामग्री सबहक उपयोग होइत छैक।

मधुर सभमे मधुरता उत्पन्न करबाक हेतु गुड़ ओ ओकर विभिन्न परिष्कृत रूप सबहिक व्यवहार होइत अछि। कुसियारक रसकेँ गर्म कऽ गाढ़ भेला पर जमओलासँ **गुड़/मीठा** नामक पदार्थ बनैत अछि। बिनु जमल गुड़केँ **राब** कहल जाइत छैक। गुड़केँ परिशुद्ध कऽ जमओलापर दानासँ युक्त गुड़क प्रभेदकेँ **शक्कर** कहल जाइत छैक। धुल्ल रंगक परिशुद्ध ओ शुष्क शक्कर जकर समटा दाना पृथक् पृथक् रहैत छैक, से **भुराँ चीनी** कहल जाइत छैक। रंगहीन रससँ तैयार सूक्ष्म दानासँ युक्त पदार्थकेँ **चीनी** कहल जाइत छैक।

हलुआइक दोसर प्रमुख आधार सामग्री **दूध** होइत अछि। ई प्रधानतः गाय आ महींससँ प्राप्त होइत अछि। दूधकेँ गर्म करबाक क्रिया **औंटब** होइत अछि। औंटबाक क्रममे दूधक द्वारा बासनक ऊपरी विस्तृत क्षेत्रमे पसरि जयबाक क्रिया **उधिआयब** होइत छैक। औंटल दूधकेँ ठंढयलापर ओकर उपरका सतहपर जमल गाढ़ पपड़ीकेँ **छाल्ही** कहल जाइत छैक। छाल्हीक पातर परतकेँ **ममुरी** कहल जाइत छैक। दूधक सतहपरसँ काछिकऽ निकालल छाल्हीकेँ **मलाइ/मलीदा** कहल जाइत छैक। दूधक सार तत्त्वक हेतु **मावा** शब्दक व्यवहार होइत अछि। छाल्ही सेहो दूधक सार तत्त्व थिक तेँ एकरो मावा कहल जाइत छैक। बिनु औंटल दूधकेँ राति भरि छोड़ि देलासँ ओकर ऊपरी भागमे जमल गाढ़ पदार्थकेँ सेहो **मावा/गाभ** कहल जाइत छैक। गाभ निकालल दूधकेँ **गभकच्चू** कहल जाइत छैक। दूध जाहि बासनमे औंटल जाइत छैक ओकर पेनीमे दूधक किछु अंश जरि कऽ पकड़ि लैत छैक। एहि पदार्थकेँ **डाढ़ी** कहल जाइत छैक। दूध जरलापर ओकर स्वादक विकृतिकेँ **डढ़ाइन** कहल जाइत छैक।

सद्यःप्रसूता गाय-महिंसिक दूधकेँ **खिरसा** कहल जाइत छैक। दूध अधिक काल धरि काँच रहलापर अथवा अन्य कारणसँ दोषयुक्त भऽ गन्ध करऽ लगैत छैक। एहि स्थितिमे दूधमे अत्यन्त सूक्ष्म कण सभ दृष्टिगोचर होमऽ लगैत छैक। दूधक एहि तरहेँ दोषयुक्त होयबाक क्रिया **मसकब** होइछ। जखन दूधक जलीय अंशपर ठोस कण सभ स्पष्टतः पृथक् बुझना जाइछ तँ ओकर दोषयुक्त होयबाक क्रिया **खुदिआयब** होइछ । अधिक दोषयुक्त दूधक पानि पृथक् भऽ जाइत छैक आ ओकर सार तत्त्वक थक्का बनि जाइत छैक। एकरा **दूधक फाटब** कहल जाइत छैक। फाटल दूधक

थक्कावला अंशकेँ **फटोन/फटौन/छन्ना/छेना** कहल जाइत छैक। निर्दोष दूधकेँ अम्ल रस मिलाकऽ फाड़ल जाइत छैक।

दूधकेँ खूब औँटलापर ओकर जलीय अंश वाष्पीकृत भऽ उड़ि जाइत छैक आ सार तत्त्व गील पदार्थक रूपमे बचि जाइत छैक। एकरा **खोआ** कहल जाइत छैक। पातर खोआकेँ **राबड़ी** कहल जाइत छैक।

हलुआइक तेसर प्रमुख आधार सामग्री **घी/घृत/घिउ** होइत छैक। ई दूधक सार तत्त्वसँ निर्मित होइत अछि। दूधकेँ संचालित करबाक क्रिया **मथब/महब** होइछ। महलासँ दूधक सार तत्त्व अलगि जाइत छैक। एहि सार तत्वकेँ **नेनु/ननू/मक्खन/माखन** कहल जाइत छैक। मक्खन निकाललाक बाद दूधक अवशिष्ट अंशकेँ **दुद्धी** कहल जाइत छैक। आइकाल्हि दूधकेँ मशीन द्वारा संचालित कऽ मक्खन निकालल जाइत छैक। एहि तरहेँ मक्खन निकालबाक क्रिया **पेड़ब** होइत अछि। दूध ओ दहीक छाल्हीकेँ मथलासँ सेहो मक्खन पृथक् होइत छैक। मक्खनमे पानि मिलाकऽ दोबारा मथलासँ ओ अधिक कठोर स्वरूप धारण कऽ लैत छैक। एहि गील पदार्थकेँ अलग कऽ लेलापर बासनमे बचल पानि ओ मक्खनक मिश्रित अंशकेँ **घोर/मट्ठा/माठा** कहल जाइत छैक।

दूधसँ मक्खन निकालबाक कार्य वृहत् औद्योगिक रूपमे चलैत अछि। एहि उद्योगमे लागल व्यक्तिकेँ **मखनिआ** कहल जाइत छैक। मक्खन तैयार करबाक स्थलकेँ **मखनाहा/मखनाही** कहल जाइत छैक।

मक्खनकेँ गर्म कयलापर द्रवीभूत होयबाक क्रिया **बरकब** होइत अछि। अधिक काल धरि गर्म कऽ ओकर जलीय अंशकेँ सर्वथा वाष्पीकृत कऽ देबाक क्रिया **टाँसब** होइत अछि। टाँसला उत्तर जे द्रव प्राप्त होइत छैक, तकरा **घी/घिउ/घीव/घृत** कहल जाइत छैक।

अनेक प्रकारक वस्तु बनयबामे हलुआइकेँ **तेलक** सेहो आवश्यकता होइत छैक। ओ मुख्यतः सरिसो आ तीसी तेलक व्यवहार करैत अछि। तेल तेलहनकेँ पेड़ि कऽ प्राप्त द्रव होइत अछि। सरिसोक तेलकेँ **कडू/कड़ुआ तेल** सेहो कहल जाइत छैक। आइकाल्हि अनेक प्रकारक वानस्पतिक तेलक सेहो व्यवहार होइत अछि।

एहि सभक अतिरिक्त हलुआइक प्रमुख आधार सामग्री मध्य विभिन्न अन्नक **चिक्कस/चिकसा** अबैत अछि। गहूम अथवा जइ नामक अन्नकेँ अत्यन्त मेही कऽ पीसि कपड़ापर चाललासँ प्राप्त अत्यन्त पातर चिक्कसकेँ **मैदा** कहल जाइत छैक।

कपड़ापर चालबाक क्रिया **झोलब/कपड़छान करब** होइत अछि। गहूमक मोट दानेदार चिक्कसकेँ **सुज्जी** कहल जाइत छैक। चाउरक चिक्कसकेँ

चौरट्ठा/चौरठ/चौरेठा कहल जाइत छैक। अरबा चाउरक चौरट्ठाकेँ **अरबेठ** कहल जाइत छैक। दलिहनक चिक्कस **घाटि/घाठि/बेसन** कहल जाइत छैक। हलुआइक काजमे मुख्यतः उड़ीद, केराओ, मूँग ओ बूटक बेसनक उपयोग होइत छैक। एकरा सभकेँ **घटिहन/घठिहन** कहल जाइत छैक।

अन्य आनुषंगिक आधार सामग्री मध्य विभिन्न प्रकारक रंग, खाद्य मसाला ओ अन्य वस्तु सभक उपयोग होइत अछि। खाद्य मसालामे **गरी/नारिकेरि/नारियर/नारियल, सौंफ, छुहारा/छुहौरा, किसमिस, इलैंची / इलायची, पोस्तादाना** आदिक उपयोग होइत अछि। एहि मसाला सभकेँ **कर-कट्टुक/मर-मसल्ला** कहल जाइत छैक। चाशनीकेँ साफ करबाक हेतु **हाइड्रो** नामक रसायनक उपयोग होइत छैक। पूर्वमे हाइड्रोक स्थान पर **रीठा/रीठी** नामक फलक उपयोग होइत छल। मुरब्बा नामक मधुर बनयबामे **कुम्हर/सजकुम्हर/भतुआ** नामक लताफल विशेषक आवश्यकता होइत छैक। मिठाइकेँ सुगन्धित करबाक हेतु ओहिमे विभिन्न प्रकारक सुगन्धि-द्रव्य देल जाइत छैक। एहि द्रव्यकेँ **फुलेल/अतर/सेंट** कहल जाइत छैक। नोनगर वस्तु बनयबाक हेतु **नोन, मरचाइ/मिरचाइ/मेरचाइ, प्याज/पेआज/पिआज/पियाजु/पेआजु, हरदि/हरदी, धनी/धनिआ, जीर/जीरा, मंगरैल, मरीच, सोइंठ, जमाइन** आदि वस्तुक उपयोग होइत अछि।

औजार : हलुआइक अनेक उपकरण होइत छैक। ओकर आगि पजारबाक व्यवस्था चूल्हि कहल जाइत छैक। जमीनक सतहपर कोड़ल चूल्हि **भोंगकुलहा/भमकौला** होइत छैक। ईंटसँ निर्मित कोइलाक चूल्हिकेँ **भट्ठी** कहल जाइत छैक।

लोहाक चदरासँ बनल गोलार्द्धक आकृतिक गँहीर ओ पेंघ बर्त्तन जकर उपरका भाग खुलल रहैत छैक से **कड़ाह** कहल जाइत अछि। एहिमे विभिन्न वस्तु छानल जाइत अछि। छोट कड़ाहकेँ **कड़ाही** कहल जाइत छैक। बूँदा लोहाक कड़ाहीकेँ **लोहिया** कहल जाइत छैक। कड़ाह, लोहिया आदिकेँ पकड़बाक हेतु ओकर पार्श्वमे आमने-सामने अर्द्धवृत्ताकार वलय लागल रहैत छैक। एकरा **कान/कड़ा/काड़ा** कहल जाइत छैक। जिलेबी छनबाक हेतु समतल आधार ओ करीब चारि आङुर ठाढ़ घेरावला कड़ाहीक उ ोग होइत अछि । एकरा **ताइ** (सं. तापिका) कहल जाइत छैक।

कड़ाहमे देल वस्तुकेँ तेल अथवा घीसँ पृथक् करबाक हेतु लोहक एकटा छिद्रमय औजारक उपयोग होइत छैक। एकरा **झाँझ/छनौटा/झरना** कहल जाइत छैक। एहिमे लोहाक एकटा गोल चदरा रहैत छैक जाहिमे छोट-छोट छिद्र रहैत छैक। एकरा पकड़बाक हेतु लोहाक पैघ छड़ छिद्रमय चदरासँ सम्बद्ध रहैत छैक। छड़केँ **डंटी** कहल जाइत छैक।

लोहेक एकटा औजार जे कड़ाहमे देल वस्तुकेँ लारबाक हेतु प्रयुक्त होइत अछि से **छोलनी** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन एकरा **खुरपी/खुरचनी** कहने छथि (बिहार पीजैन्ट लाइफ-पृ.-49)। एकर पैघ प्रभेद **केओँचा** होइत अछि (तत्रैव)। एहिमे लोहाक एकटा छड़क निचला भागमे तरहत्थीक आकृतिक चाकर फलक लागल रहैत छैक।

विभिन्न पदार्थकेँ एकटा बासनसँ दोसर बासनमे स्थानान्तरित करबाक हेतु एकटा औजार **करछु/करछुल/करछी** कहल जाइत छैक। एहिमे लोहाक छड़क निचला भागमे गोलार्द्धक आकृतिक गँहीर बासन सम्बद्ध रहैत छैक। छोट करछुकेँ **करछुल्ली** आ पैघ करछुकेँ **डब्बू/डब्बुक** कहल जाइत छैक।

कड़ाहीसँ जिलेबी निकालबाक हेतु लोहाक एकटा पातर ओ नोँखगर छड़क व्यवहार होइत अछि। एकरा **गऽज** कहल जाइत छैक। लोहाक एकटा अन्य औजार जे वस्तुकेँ पकड़बाक हेतु व्यवहृत होइछ से **चिमटा/चुट्टा/चिमटी** कहल जाइत अछि। छोट चुट्टाकेँ **चूटी/चुट्टी** कहल जाइत छैक। एहिमे एकटा करीब दू आङुर चाकर लोहाक मध्यसँ मोड़ल चदरा रहैत छैक जकर दुनू छोर अग्रभागमे निकलल रहैत छैक।

खोआ ओ अन्य पदार्थकेँ मिलयबाक क्रिया **घोंटब/मरदब** होइछ। मरदबाक हेतु काठक छोलनीक व्यवहार होइत अछि। एकरा **दारु/दाब/दाइब/दाबि** कहल जाइत छैक।

चिक्कसकेँ पानिक संगे सानि कऽ गोल-गोल टुकड़ा काटि ओहिपर दबाव दऽ पातर ओ गोल आकृतिक निर्माण करबाक क्रिया **बेलब** होइत अछि। बेलबाक हेतु काठक एकटा चिक्कन तकथा रहैत छैक जकर एकटा छोरपर गोड़ा लागल रहैत छैक। एकरा **पाटा** कहल जाइत छैक। जाहि औजारसँ दबाव देल जाइत छैक, से **बेलना** कहल जाइत अछि। एहिमे एकटा करीब डेढ़ बीतक लकड़ीक बेलनाकार टुकड़ा रहैत छैक जकर दुनू कात पकड़बाक हेतु मध्यभागसँ अपेक्षाकृत पातर मूठ बनल रहैत छैक। छोट बेलनाकेँ **बेलनी** कहल जाइत छैक। बेलल वस्तु **बेलुआ** होइत अछि।

खाजा, निमकी आदिकेँ कतरबाक हेतु लोहक **छुरी/चक्कूक** व्यवहार होइत छैक।

जिलेबी बनयबाक हेतु कपड़ाक एकटा टुकड़ाक व्यवहार होइत छैक। एकर मध्य भागमे छेद रहैत छैक। कपड़ामे मैदानी भरि छेदसँ घीमे खसाओल जाइत छैक। कपड़ाक ई औजार **लेटना** कहल जाइत छैक। लेटनाक बदला आइकाल्हि नारिकेरक खपरोइया अथवा पेनीमे छेद कयल गिलासक उपयोग होइत अछि। नारिकेरक खपरोइयाकेँ **नारियली** कहल जाइत छैक। गिलासकेँ **कोइया/कुल्हिया** कहल जाइत छैक।

कड़ाहीकेँ चुल्हिपरसँ उतारबाक हेतु जाहि कपड़ाक टुकड़ाक व्यवहार होइत छैक ओकरा **साफी** कहल जाइत छैक।

सेवइ बनयबाक औजार **साँचा/फर्मा/चटुआ** कहल जाइत छैक। एहिमे लकड़ीक दूटा गोरापर छिद्रयुक्त लोहक चदरा ठोकल रहैत छैक।

झिल्ली बनयबाक औजार सेहो **साँचा** कहल जाइत छैक। एहिमे दूटा भाग होइत छैक। दुनू भागमे दू-दूटा काठक पाँखि जकाँ निकलल रहैत छैक। उपरका भागक मध्यवर्ती भाग काठक बेलन होइत छैक। निचला भागमे बेलनाकार खोल रहैत छैक जाहिमे उपरका बेलन पूरा-पूरी अँटि जाइत छैक। निचला बेलनाकार खोलक आधार छिद्रमय रहैत छैक।

चिक्कस सनबाक हेतु काठक गोल ओ चारू कातसँ घेरावला औजारकेँ **कठौत/कठौता/कठौती** कहल जाइत छैक। मिठाइ रखबाक हेतु चारि आङुर ठाढ़ कानवला पित्तरक गोल बासन **परात** होइत अछि। पित्तरक गँहीर बासनकेँ **अढ़िया** कहल जाइत छैक। रोटी आदि सेकबाक लोहाक समतल ओ गोल औजारकेँ **तब/तबा/ताबा** कहल जाइत छैक।

पकमान बनयबाक हेतु लकड़ीक विभिन्न खोधामासँ युक्त औजारकेँ **साँच/साँचा/सचबा** कहल जाइत छैक।

मिठाइकेँ बेचबाक हेतु हलुआइ चारूकात घेराबासँ युक्त काष्ठक बासनक उपयोग करैत अछि। एकरा **खोञ्चा/खोमचा/खोइंचा** कहल जाइत छैक। खोञ्चाकेँ बाँसक डमरूक आकृतिक आधारपर राखि कऽ घूमि-फिरि कऽ मिठाइ बेचल जाइत अछि। एहि आधारकेँ **तरौना/तरौनी** कहल जाइत छैक। दहीक छाँछकेँ पुआर आदिक गोल कऽ बनाओल आधार पर राखल जाइत छैक। एकरा **बीड़ा/बिड़बा** कहल जाइत छैक।

मिठाइ जोखबाक हेतु तराजू ओ **बटखाराक** उपयोग होइत अछि।

उत्पादन : हलुआइक उत्पादनमे विभिन्न प्रकारक मिष्टान्नक प्रधानता अछि। एहि मिष्टान्न सभकेँ **मधुर/मिठाइ** कहल जाइत छैक। मिष्टान्नक विशिष्ट स्वादकेँ **मधुराइ** कहल जाइत छैक। किञ्चिन्मात्र मधुरतासँ युक्त मिठाइकेँ **मधुरौठ/मधुराह** कहल जाइत छैक।

मिठाइक अतिरिक्त हलुआइ विभिन्न प्रकारक पकमान ओ नोनगर वस्तु सेहो बनबैत अछि। संगहि चूड़ा ओ दहीक विक्रय सेहो हलुआइ करैतहिँ अछि। तेँ हलुआइक उत्पादनकेँ निम्नलिखित चारि वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि—(क) मिठाइ (ख) नोनगर वस्तु (ख) पकमान एवं (घ) अन्य

मिठाइ : दूध, चीनी, मैदा, बेसन आदिक योगसँ बनल खाद्य सामग्रीकेँ **मिठाइ/मधुर** कहल जाइत छैक। मिठाइमे चीनीक उपयोग बेसीकाल ओकर रस बनाकऽ कयल जाइत छैक। पानिमे चीनी दऽ गर्म कयलापर बनल पदार्थकेँ **रस/चाशनी/सिरका/सीरा/खाँड़** कहल जाइत छैक। चीनीक अपेक्षा पानिक मात्रा अधिक रहलापर सीराकेँ **पातर** ओ कम रहलापर **मोट** कहल जाइत छैक। सीरा पातर अछि कि मोट से बुझबाक लेल ओकर अल्प मात्रा छोलनी पर लऽ नीचा दिस चुआओल जाइत छैक। चुबैत सीरा जँ वायुक प्रभावमे पातर तारक सदृश ठोस रूप धारण कऽ लेत छैक तँ मोट सीरा बूझल जाइत छैक । सीराकेँ अङैठा ओ तर्जनीक बीच लऽ दुनूक दूरी बढ़ाओल जाइत छैक। एहिसँ जे सीराक तार बनैत छैक तकर आधारपर सीरा एकतार, दू तार अथवा तीन तारक बूझल जाइत छैक। सीराकेँ गर्म करबाक क्रममे ओहिसँ निकलल फेनयुक्त मैलीकेँ **काह/काही** कहल जाइत छैक।

चाशनीक पाग कड़ा भऽ गेलापर मिठाइ कठोर भऽ जाइत छैक। एहन मिठाइकेँ **रोड़ाह** कहल जाइत छैक।

सीराकेँ **पाक/पाग** सेहो कहल जाइत छैक। सीरामे वस्तुकेँ डुबाकऽ ओकरा मधुरतायुक्त करबाक क्रिया **पागब** होइछ। सीराकेँ गर्म कऽ जलीय अंश जरा देलाक बाद अवशिष्ट चीनीक अंशकेँ **भूरा/भुर्रा** चीनी कहल जाइत छैक। एकर पुन: सीरा बनयबामे उपयोग कयल जाइत छैक।

मिठाइ बनयबाक क्रममे घी अथवा तेलकेँ गर्म करबाक क्रिया **टहकायब/करकायब** होइछ । घीमे बनाओल पदार्थकेँ **घिवही** ओ तेलमे बनाओल पदार्थकेँ **तेलही/तेलपक** कहल जाइत छैक।

गर्म घी अथवा तेलमे वस्तुकेँ सिद्ध करबाक क्रिया **छानब** होइत अछि। छनला उत्तर प्राप्त पदार्थकेँ **छनुआँ** कहल जाइत छैक। घी-तेलक किञ्चित स्पर्श द्वारा बनल वस्तुकेँ **मखुआ/पोछुआ** कहल जाइत छैक।

मिठाइ बनयबाक हेतु विभिन्न प्रकारक चिक्कसकेँ पानिक योग दऽ मिलयबाक क्रिया **सानब** होइत अछि। गील कऽ सानल वस्तुक निश्चित परिमाणक गोलीकेँ **लोइया** कहल जाइत छैक। सानबाक क्रममे चिक्कसमे देल तेल अथवा घीकेँ **मोम/मेन/मैन/मो** कहल जाइत छैक। मेनसँ युक्त पदार्थकेँ **मेनदार** कहल जाइत छैक। बेसनकेँ अपेक्षाकृत पातर कऽ सानल जाइत छैक। एकरा सनबाक क्रममे हाथसँ घुमा-घुमाकऽ मिलयबाक क्रिया **फेनब** होइत अछि।

मिठाइकेँ एक-दोसरापर थकियाकऽ रखबाक क्रिया **रद्दा लगायब** होइत अछि। पाँच गोट मधुरक मिश्रणकेँ **पचमेर** कहल जाइत छैक। पचमेरमे सामान्यत: पेड़ा, लड्डू, सिरनी, बताशा ओ जिलेबी अबैत अछि।

वस्तुक प्रधानताक आधारपर हलुआइ द्वारा निर्मित मिठाइ सभक निम्नलिखित श्रेणी विभाजन संभव अछि–1. गुड़ ओ चीनीसँ निर्मित मधुर 2. मैदासँ निर्मित मधुर 3. बेसनसँ निर्मित मधुर 4. खोआसँ निर्मित मधुर एवं 5. छेनासँ निर्मित मधुर ।

गुड़ ओ चीनीसँ निर्मित मधुर : ओनातँ मधुर मात्र बिना गुड़ अथवा चीनीक सहयोगे नहि बनि सकैत छैक, मुदा किछु मधुरमे ई विशिष्ट रूपेँ प्रयुक्त होइत अछि। गुड़केँ पानिक संगे गर्म कऽ ठंढयलापर ओकर नाम-नाम दण्डाकार मिठाइ बनाओल जाइत छैक । एकरा **गुड़लाठी** कहल जाइत छैक। बरकल गुड़मे सोडा मिलाकऽ साँचापर रोटीक आकृतिक मिठाइ बनाओल जाइछ । एकरा **गुड़क मिठाइ** अथवा **गुड़क रोटी** कहल जाइत छैक। बरकल चाशनीमे रंग मिलाय गर्म कऽ शुष्क कयला पर गीलेमे पंखा, छिट्टा आदिक आकृतिक मिठाइ बनाओल जाइछ। एकरा सभकेँ **लालछड़ी/गुलाबछड़ी** कहल जाइत छैक।

तीन तारक चाशनी बनओलाक बाद ओहिमे चीनीक दसमांश मैदा ओ थोड़ेक खाइवला सोडा दऽ खूब घोँटल जाइत छैक। कने पतरे रहलापर एहि चाशनीकेँ चूल्हि परसँ उतारि ओकरा एकटा डब्बुकमे उठा लेल जाइत छैक। बामा हाथमे डब्बुक पकड़ि दहिना हाथे कोनो काठक टुकड़ीसँ थोड़े-थोड़े कऽ चाशनीकेँ ओछाओल कपड़ापर खसाओल जाइत छैक। सुखलापर एकटा अत्यन्त फोंक मिठाइ बनैत छैक। एकरा **बतासा** कहल जाइत छैक। पैघ बतासाकेँ **फेना** कहल जाइत छैक। एकर उल्लेख वर्णरत्नाकरोमे (पृ. 13) अछि।

तीन तारक चाशनी बनाकऽ उतारि लेल जाइछ आ एकटा दोसर कड़ाहमे चाशनीमे प्रयुक्त चीनीक दसमांशकेँ छोलनीसँ निरन्तर चलबैत गर्म कयल जाइत छैक। एहि गर्म चीनीपर ओहि चाशनीकेँ ढारि तीव्र गतिसँ संचालित कयने गोल-गोल आकृतिक मिठाइ तैयार होइत अछि। एकरा **गोलदाना/इलायचीदाना/अड़ौ(णा)ची दाना** कहल जाइत छैक।

चीनीक चाशनी बनाकऽ ओकरा निरन्तर औंटलासँ अत्यन्त गाढ़ भेलापर गोल-गोल मिठाइ बनाओल जाइछ। एकरा **चीनीक लड्डू (प्रसिद्ध कहबी 1. चीनीक लड्डू टेढ़ो मीठ 2. दिल्लीक लड्डू जे खयलक सेहो पछतायल जे नहि सेहो 3. दून हाथ लड्डू 4. लड्डू लड़य, झिल्ली झड़य)/सिरनी** कहल जाइत छैक। चाशनीमे बरक्कतिक हेतु चौरट्ठा सेहो अल्प मात्रामे मिलाओल जाइत छैक। तिलसँ युक्त चीनीक लड्डूकेँ **गुलाब रेवड़ी** कहल जाइत छैक। चिनियाबदामपर जमाओल गाढ़ चाशनीसँ बनल मधुरकेँ **बदामपापड़ी** कहल जाइत छैक। चाशनीमे सतुआ मिलाकऽ गर्ममे ओकर तार खिचलासँ बनल मधुरकेँ **सनपापड़ी** कहल जाइत छैक। चीनीक एकटा अत्यन्त फोंक मधुर **हवामिठाइ** होइत अछि ।

भूजल चाउरक चिक्कसकेँ पानि संगे औंटल गुड़क रसमे दऽ गोल-गोल लड्डू बनाओल जाइत छैक । एकरा **कसार/भुसबा/शंकर लड्डू** कहल जाइत छैक।

सजकुम्हरकेँ छीलिकऽ चूनक पानिसँ धोला उत्तर उसिनलाक बाद चाशनीमे सिद्ध कयला उत्तर **मुरब्बा/मोरब्बा** नामक मधुर बनैत छैक।

मैदासँ निर्मित मधुर : पानिमे घोरल मैदाकेँ **मैदानी** कहल जाइत छैक। नारियली द्वारा मैदानीक लत्तीकेँ गर्म घीमे खसाय अनेक अन्तर्वृत्तयुक्त मिठाइ बनाओल जाइत अछि। एकरा मधुर करबाक हेतु चाशनीमे डुबाओल जाइत छैक। एहि मिठाइकेँ **जिलेबी** कहल जाइत छैक। पैघ जिलेबीकेँ **जिलेबा** कहल जाइत छैक। किनारीसँ युक्त जिलेबीकेँ **अमिरती/इमरती/इमरिती/इमिरती** कहल जाइत छैक। जिलेबी बनयबाक हेतु दू-तीन दिनक बासि मैदानीक उपयोग होइत छैक। मैदानी टटका रहलापर कम चाशनी सोखैत छैक। टटका मैदानीसँ बनल जिलेबी कम मधुर होइत छैक। एकरा **छेनौह** कहल जाइत छैक।

मैदाक अनेक परतसँ युक्त आयताकार आकृतिक मिठाइकेँ **खाजा** कहल जाइत छैक। एकर परत सभकेँ **बीट** कहल जाइत छैक। बीट बनयबाक हेतु दूटा संलग्न भागक बीच कड़ू तेल ओ सुक्खल मैदाक परथन देल जाइत छैक। एहि परथनकेँ **पोत** कहल जाइत छैक। एहि मिठाइकेँ घीमे छानि चाशनीक पाग देल जाइत छैक। एकर पैघ आकृतिक प्रभेदकेँ **खजबा** ओ छोट आकृतिक प्रभेदकेँ **खजुली** कहल जाइत छैक। वर्गाकार खजुलीकेँ **खजबी** कहल जाइत छैक। कोषमे मिष्टान्नक एकटा प्रभेदकेँ **गुलाबखाजा** कहल गेल अछि (**मि. भा. को., पृ. 94**)। तीन सेर मैदासँ निर्मित एक सय खाजामे प्रत्येक **तिनसेरी खाजा** आ पाँच सेर मैदासँ निर्मित एक सय खाजामे प्रत्येककेँ **पनसेरी खाजा** कहल जाइत छैक।

मैदामे सोडा ओ मोम मिलाकऽ सानल जाइत अछि। पश्चात् करीब दू इंच मोट परतक रूपमे एकरा पाटापर बेलि वर्गाकार टुकड़ाक रूपमे काटि लेल जाइत अछि। टुकड़ा सभकेँ घीमे छानि चाशनीक पाग देला पर **गाजा/गाँजा** नामक मिठाइ बनैत छैक। छोट आकृतिक गाँजाकेँ **सकरपाला** कहल जाइत छैक।

गाँजाक हेतु तैयार मैदाकेँ हाथसँ मथि छोट-छोट गोली काटि चाँपिकऽ गोल-गोल टिकिया बना लेल जाइत छैक। टिकियाक मध्यमे आङुरसँ खाधि कऽ देल जाइत छैक। एकरा घीमे सिद्ध कऽ चाशनीक पाग देलापर **बलुशाही/बालूशाही** नामक मिठाइ बनैत अछि। एकरा बेलनाकार आकृतिमे बनौला उत्तर **गुलाबजामुन/गुलाबजामु** कहल जाइत छैक।

मोम ओ रंग मिलाकऽ सानल मैदाक करीब दू इंच चाकर ओ पाँच इंच नाम आयताकार रोटी बेलल जाइत छैक। पोत दऽ ओकर दू-तीन परत बनाकऽ चौड़ाइवला

दूनू छोरकेँ सटा कऽ मोड़ि फाँक बेलनक स्वरूप देल जाइत छैक। घीमे एकरा छानि चीनीक पाग देला पर बनल मिठाइकेँ **लवङलता/लवङलती/लौंगलता/लौंगलती/लौंगलत्ती** कहल जाइत छैक।

मैदाक दूटा गोल पूरीक मध्य खोआ भरिकऽ चाकू कातसँ गूहिकऽ घीमे छानि चीनीक पाग देलापर **चन्द्रकला** नामक मिठाइ बनैत छैक।

अत्यन्त पातर कऽ घोरल मैदाकेँ गर्म घीमे खसा छानि कऽ चीनीक पाग देला पर **घेबर** नामक मिष्टान्न बनैत अछि।

मैदाक बनल सूत सन-सन टुकड़ीकेँ **सेवइ** कहल जाइत छैक। एकरा घी मे छानि दूध ओ चीनीक संगे रान्हि कऽ उपयोग कयल जाइत छैक।

वर्णरत्नाकरमे **फिनी** नामक पक्वान्नक उल्लेख भेल अछि (**वर्णरत्नाकर, पृ.-13**)। डा. अम्बा प्रसाद सुमन मैदाक सेवइ जकाँ सूत सन टुकड़ीकेँ घीमे छानि कऽ चाशनीक पाग देल वस्तुकेँ **फैनी** कहलनि अछि (**कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली, भाग-1, पृ. 271**)। ग्रियर्सन गहूमक चिक्कस ओ चीनीक सहयोगसँ बनल पक्वान्नकेँ **फैनी/बतास फेनी** कहने छथि (**ग्रि. पी. लाइफ, पृ. 352**)।

बेसनसँ निर्मित मधुर : बूटक बेसनकेँ फेनि पातर कऽ छनौट पर दऽ गर्म घीपर झारल जाइत छैक। एहिसँ पानिक बूँदक आकृतिक छोट-छोट दाना बनैत छैक। सिद्ध भेलापर चाशनीक पाग देला पर ई मधुर **बूँदी/बुँदिया/बुनिञा** कहल जाइत अछि। बुनियाँकेँ गोल-गोल आकृतिमे बन्हलापर बुनियाँके **लड्डू/लड्डू/मेहीदाना लड्डू** बनैत छैक। पैघ-पैघ लड्डूकेँ **लाडु** आ छोट लड्डूकेँ **लडुबी** कहल जाइत छैक। वर्णरत्नाकरमे (पृ.- 13) एहि हेतु **नुड़िबी** ओ **लडिबी** (**तत्रैव, पृ. 66**) शब्द आयल अछि।

बुनिञाकेँ दूधक संगे बरकओला उत्तर **सकरौड़ी** नामक मधुर बनैत छैक। मूँगक बेसनक बुनिञासँ बनल लड्डूकेँ **मुँगबा/मुगबा** (**वर्णरत्नाकर, पृ. 13**) कहल जाइत छैक। मुदा आब ई शब्द बुनिञाक कोनो पैघ लड्डूक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि। मूँगक बेसनसँ अत्यन्त मेही बुनियाँ बनाकऽ बन्हलापर बनल लड्डूकेँ **मोतीचूरक लड्डू** कहल जाइत छैक। बेसनकेँ चीनीक संगे घीमे भूजि लड्डू बन्हलापर बेसनक लड्डू बनैत छैक।

बेसनक आङुर भरि मोट लत्ती बनाय ओकर छोट-छोट टुकड़ी काटि घीमे छानि पाग देलापर **कटबी/झडुआ/कटुआ** नामक मधुर बनैत छैक। ओना काटि कऽ बनाओल मधुर मात्र हेतु कटबी शब्दक व्यवहार अछि।

खोआसँ निर्मित मधुर : खोआकेँ चीनीक संगे घाँटि शुष्क भेलापर गोल-गोल लोइया काटि चाँपि कऽ वृत्ताकार मिठाइ बनाओल जाइत छैक। ई **पेड़ा/**

पेणा कहल जाइत छैक। बरक्कातिक हेतु खोआमे चौरट्ठा सेहो मिला देल जाइत छैक। चौरट्ठाक मात्रा अधिक भऽ गेलापर पेड़ाक नहि बनबयबाक क्रिया **भखरब** होइत छैक।

शुष्क खोआकेँ पाटापर बेलि ओकर चौखूट टुकड़ी काटल जाइत छैक। ई मिठाइ **बरफी/कटबी** कहल जाइत छैक।

छेनासँ निर्मित मधुर : छेनाकेँ मरदि कऽ छोट-छोट गोली बनाय चाशनीमे खौलेला पर **रसगुल्ला/रसभरी** नामक मिठाइ बनैत छैक। वर्णरत्नाकरमे रसगुल्लाक हेतु **षिरओला** (तत्रैव, पृ. 13, सं. क्षीरगोलक) शब्द भेँटैत अछि। दूधमे देल रसगुल्लाकेँ **रसमलाइ** कहल जाइत छैक। बगेयाक आकृतिक दूनू कात नोंखगर ओ मध्यमे चाफर छेनाक मिठाइकेँ **चमचम** कहल जाइत छैक। गोल आकृतिक चपता छेनाक मिठाइकेँ **छनाबाड़ा/छेनाबाड़ा** कहल जाइत छैक।

वर्णरत्नाकरमे **खिरिसा** (पृ. 13) नामक पक्वान्नक उल्लेख भेल अछि। इहो छेनेक मधुर रहल होयत। सम्प्रति सद्य:प्रसूता मालक दूध यावत् स्वत: फटैत रहैत छैक, तावत् खिरसा कहल जाइत छैक।

छेनाक गोलीकेँ घीमे सिद्ध कयला उत्तर ओकर रंग कत्थइ भऽ जाइत छैक। एकरा चाशनीमे डुबौलासँ **पनितोआ/पनितौआ/पैनोआ** नामक मधुर बनैत छैक। नाम-नाम पनितोआकेँ **लालजामुन** कहल जाइत छैक। छेनाकेँ सिद्ध करबाक क्रममे अधिक काल धरि आँच देने पनितोआक कवच कठोर आ रंग कारी भऽ जाइत छैक। एकरा **कालाजामुन** कहल जाइत छैक। छेनामे खोआ मिलाकऽ लालजामुनक आकृतिक मधुर बनैत छैक। एकरा **कलाकन्द** कहल जाइत छैक।

मरदल छेनाकेँ गोली बनाय तरहत्थीपर चाँपि गोल आकृतिक बनाय मध्यमे आङुरसँ खाधि कऽ देल जाइत छैक। एकरा घीमे छानि चाशनीमे डुबओला उत्तर **खीरमोहन** नामक मधुर बनैत छैक।

छेनाकेँ मथिकऽ चीनीक संग कड़ाहमे दऽ दाबिसँ खूब घाँटल जाइत छैक। पश्चात् ओकरा हाथपर ठोकि-ठोकि पातर-पातर टिकिया बना लेल जाइत छैक। दू-दूटा टिकियाकेँ परस्पर साटि कऽ **संदेश** नामक मधुर बनैत अछि।

आइकाल्हि रंग, सेन्ट, आकृति ओ स्थान भेदसँ मिठाइ सभक नव-नव नाम सभ भेँटैत अछि, मुदा ई सभ पारिभाषिक नहि बनि सकल अछि।

वर्णरत्नाकरमे **खडनी, खण्डउति, मेतिआ, अमृतकुण्डी, सरूआरी, मधुकुपी** आदि मिष्टान्नक उल्लेख अछि जकर अर्थलोप भऽ गेल अछि (वर्णरत्नाकर, पृ. 13 ओ 69)। मिथिला भाषा कोषमे **दलिभिस्त, मण्डा, मानसिंही, सारभाजा** आदि मिष्टान्नक उल्लेख भेँटैत अछि।

पकमान : हलुआइक जातीय नाम जाहि पकमान विशेषपर आधारित अछि से **हलुआ** कहल जाइत छैक। सुज्जीकेँ घीमे भूजि पानि ओ चीनीक योग दऽ खदकओला पर किञ्चित गोल ओ मोलायम खाद्य बनैत छैक। एकरे **हलुआ** कहल जाइत छैक। कर-कट्टुक देल उत्तम हलुआकेँ **महनभोग / मोहनभोग** कहल जाइत छैक। मैदा ओ आनो चिक्कससँ हलुआ बनाओल जाइत अछि। हलुआक हेतु प्राचीन शब्द **लपसी** (सं. लप्सिका) भेँटैत अछि। गहूम, चाउर अथवा मडुआक चिक्कसकेँ भुजि कऽ ओहिमे पानि ओ गुड़ मिलाकऽ खदकयलापर लसिगर ओ गील पदार्थ बनैत छैक। एकरा **लपसी** कहल जाइत छैक।

मेनदार गहूमक चिक्कसकेँ चीनीक संगे सानि नाम-नाम ठोकल वस्तुकेँ घीमे छनला उत्तर **खजूर/टिकिया** नामक पकमान बनैत अछि। बिनु चीनी फेंटल गहूमक चिक्कसक टिकिया बनाय चाशनीक पाग देलापर **माठ** नामक पकमान बनैत अछि जकर वर्णरत्नाकरोमे उल्लेख अछि (वर्णरत्नाकर, पृ. 13)।

चाशनीमे चौरट्ठा दऽ कड़ाहमे खूब घँटैत गर्म कयलापर हलुआ जकाँ शुष्क भेला उत्तर ओकर छोट-छोट लोइया बनाय पाटापर देल पोस्तादानापर दबला सँ **अनरसा/अनारसा** नामक पकमान बनैत अछि।

भारदोरमे सैंठबाक हेतु गुड़क संगे सानल गहूमक चिक्कसक लोइया काटि छोट-छोट गोल आकृतिक **पूरी** बेलल जाइत अछि आ तेलमे छानि कऽ एकरा सिद्ध कयल जाइत छैक। एहि पकमानकेँ **गुड़पूरी/बेलुआ पूरी** कहल जाइत छैक। साँचा पर ठोकल अग्रभागमे लोलीयुक्त पानक आकृतिक पकमानकेँ **साँच/ठकुआ/ठेकुआ/ठोकुआ/मुड़की/खबौनी** कहल जाइत छैक। गोल ठकुआकेँ **टिकरी** कहल जाइत छैक। गुड़पूरीक चिक्कसमे पोस्तादाना मिला ढील कऽ सनला उत्तर तेलमे गोल-गोल पिंडक रूपमे खसाय छनलासँ **गुलगुल्ला** नामक पकमान बनैत अछि।

मैदाक गोल पूरी बेलि कऽ ओहिपर रइ दऽ आधापर मोड़ि कातवला भागकेँ गुहि देला उत्तर घीमे छनलासँ **पिड़किया/पिड़ुकिया/पिड़िकिया/पिड़ाकड़ी/पिड़ाकी/पिड़ाँकी** नामक पकमान बनैत अछि। एहि पकमानमे भरल जायवला वस्तुक हेतु **रइ** शब्दक व्यवहार होइत छैक। रइक रूपमे खोआ, मलाइ, भूजल चिक्कस ओ चीनीक मिश्रण, भुजल सुज्जी ओ चीनीक मिश्रण आदिक व्यवहार होइत छैक। पिड़कियाक किनारवला भागमे लहरदार मोड़ उत्पन्न कऽ ओकर निचला ओ उपरका भागकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **गुहब** होइत अछि।

गहूमक चिक्कसकेँ गुड़क संग पातर कऽ घोरि गर्म तेलमे सिद्ध कयलासँ **पू/पूअ/पूआ** (सं. अपूप) नामक पकमान बनैत अछि। पूआ बनायब समाप्त भेला

पर बासनमे लागल चिक्कस सभकेँ घोरि कऽ लपसी बरकाओल जाइत छैक। एहि लपसीकेँ **लूआ** कहल जाइत छैक। दूध, केरा एवं कट्टुक मशाला दऽ कऽ बनाओल उत्तम पूआकेँ **मलपू/मलपूआ/मालपूआ** कहल जाइत छैक।

तऽबपर सेदल गहूमक चिक्कससँ बनल गोल ओ पातर आकृतिक खाद्यकेँ **सोहारी** कहल जाइत छैक। सानल चिक्कसक एकटा सोहारीक हेतु परिमाणकेँ **लोइया/गट्टा** कहल जाइत छैक। बेलना द्वारा गट्टाकेँ वृत्ताकार रूप देबाक क्रिया **बेलब** होइत अछि। पाटापर गोल चिक्कस सटबासँ बचयबाक हेतु गट्टामे लगाओल सुक्खल चिक्कसकेँ **परथन** कहल जाइत छैक। विभिन्न प्रकारक चिक्कससँ बनल मोट सोहारीकेँ **रोटी** कहल जाइत छैक। रोटीक स्थूल प्रभेद **रोट** कहल जाइत छैक।

घी लगाकऽ सेदल सोहारीकेँ **पराठा/परोठा/परौठा/फराठा** कहल जाइत छैक। छोट ओ पातर सोहारीकेँ घीमे छानि कऽ सिद्ध कयला उत्तर **पूरी** कहल जाइत छैक। लघु आकृतिक मुदा खूब फूलल पूरीकेँ **फुलकी** कहल जाइत छैक। गहूमक चिक्कसकेँ घी, मँगरैल, नोन आदिक संगे सानि कऽ बनाओल छनुआँ पूरीकेँ **कचौड़ी** कहल जाइत छैक।

मूँग खेसारी, केराओ अथवा बूटक डसिनल दालिकेँ **फुइट/फुटि** कहल जाइत छैक। दालिक फूटि देल पूरीकेँ **दलिपूरी/फुटिपूरी** कहल जाइत छैक।

चौरट्ठाकेँ सानि कऽ गोली बना हाथसँ ठोकि कऽ मध्यमे चाकर ओ दुनू कात नोँखगर आकृति बना लेल जाइत छैक। एकरा खौलैत पानिमे सिद्ध कयलासँ **पिट्ठा/पिट्ठी/पीठा/बगिया/बगेबा** नामक पकमान बनैत अछि। मधुरता अनबाक हेतु चौरट्ठाकेँ गुड़क संगे सानल जाइत छैक। भाफमे सिद्ध कयल चौरट्ठासँ बनल बेलनाकार पकमानकेँ **भक्का** कहल जाइत छैक।

नोनगर वस्तु : नोन फेँटल बेसनकेँ गाढ़ कऽ सानि ओकरा साँचामे भरि दबाब देलासँ बेसनक लच्छी निकलैत छैक। एहि लच्छीकेँ गर्म होइत तेलमे घुमा-घुमाकऽ खसाय छनला उत्तर अनेक अन्तर्वृत्तयुक्त पदार्थ तैयार होइत अछि। एकरा **झिल्ली** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर छिद्रयुक्त साँचा द्वारा गाढ़ ओ नोनगर बेसनक पातर-पातर लच्छी बना तेलमे छनला उत्तर **सेओ/झिलिआ** (वर्णरत्नाकर, पृ. 13) बनैत छैक। नोनगर बेसनक तेलमे छानल गोल-गोल खाद्यकेँ **बड़ी** कहल जाइत छैक। चाकर बड़ी **बड़** कहल जाइत छैक।

बेसन अथवा फुलाकऽ पीसल दालिमे कतरल प्याज, नोन, मरचाइ दऽ सानि कऽ तेलमे छनला उत्तर **कचुड़ी/पेयजुआ** बनैत छैक। ई आकृतिमे चपता होइत छैक।

गोल कचुड़ीकेँ **पकौड़ी** कहल जाइत छैक। पैघ आकृतिक पकौड़ीकेँ **पकौड़ा** कहल जाइत छैक। कचुड़ीकेँ झोरओलापर **कच** (कृषक जीवन सम्बन्धी व्रजभाषा शब्दावली, भाग-1, पृ. 265) बनैत छैक। डा० सुनीति कुमार चटर्जी कच शब्दक अर्थ दालि कहलनि अछि। कच, कचुड़ी ओ कचौड़ी शब्दक मूलमे यैह कच शब्द बुझना जाइत अछि। कचक जलीय भागकेँ **झोर/सिरुआ** कहल जाइत छैक।

साँसे प्याजपर घोरल नोनगर बेसन लपेसि कऽ तेलमे छनलापर **पेयाजी/पेयाजू** बनैत छैक। भाटाक कन्चीकेँ एही तरहेँ छनलापर **भटवर/बैंगनी** बनैत छैक। मिरचाइक बनाओल एहने पदार्थ **मिरचइया** होइत अछि।

मैनदार मैदामे जमाइन, नोन आदि मिलाकऽ तेल अथवा घीमे छनला उत्तर विभिन्न आकारक **निमकी** बनैत छैक।

मैदाक सोहारी बेलिकऽ ओकरा बीचोबीच काटि दुनू वृत्तार्द्धक आकृतिमे भुजल आलू आदि भरि कऽ छनला उत्तर **सिंघाड़ा/समोसा** नामक खाद्य बनैत अछि। बूटक दालिकेँ पानिमे फुलाय घीमे छानि नोन, मरचाइ आदिक बुकनी मिलाकऽ बनाओल खाद्यकेँ **दालमोट** कहल जाइत छैक।

फुलाओल बूटकेँ हरदि, धनिञा, जीर, मरीच, सोंइठ, नोन, आदिक संगे रन्हला उत्तर बनल खाद्यकेँ **घुघनी** कहल जाइत छैक। मटरक घुघनीकेँ **छोला** कहल जाइत छैक।

बेसनमे नोन मिलाकऽ सानि ओकर छोट-छोट टिकिया बनाय तेलमे छानल जाइछ। एहि टिकियाकेँ दहीक घोरक संगे मिलाकऽ बनाओल खाद्यकेँ **बड़ा/बाड़ा/दहीबड़ा/दहिबाड़ा** कहल जाइत छैक।

साँस आलूकेँ उसीनि कऽ सोहलाक बाद नून, हरदि, मिरचाइ, धनिञा, जीर, मरीच आदिक संग झोरओलापर बनल खाद्यकेँ **दम/आलूदम** कहल जाइत छैक। एकर अतिरिक्त अनेक प्रकारक **तीमन, तरकारी, भुजिया** सेहो हलुआइक व्यवसायमे बनाओल जाइत छैक।

नोनगर वस्तु सभ मुख्यत: तेलेमे छानल जाइत अछि। एहि तेलपक सामान सभमे अधलाह तेलक प्रभावसँ उत्पन्न विकृत स्वादकेँ **चिटाइन/तेलचिटाइन/चिटचिटाइन** कहल जाइत छैक।

तत्काल तैयार खाद्य पदार्थकेँ **टटका** कहल जाइत छैक। एक दिन पूर्व तैयार खाद्य पदार्थकेँ **बासि/बसिया** कहल जाइत छैक। दू दिन पूर्व तैयार खाद्य पदार्थकेँ **तेबासि** कहल जाइत छैक। बासि खाद्यक विकृत स्वादकेँ **बसियानि** कहल जाइत छैक।

छनलाक बाद अवशिष्ट तेलकें **पकतेल** कहल जाइत छैक।

अन्य : हलुआइ अपन दोकानमे मिठाइ, नोनगर वस्तु आदिक अतिरिक्त मिथिलाक प्रिय खाद्य चूड़ा-दही अवश्य रखैत अछि। चूड़ा धानकें तारि-भारि कऽ हल्का भुजल गेला उत्तर उक्खरिमे धऽ समाठक नड़उ दिसिसँ आघात द्वारा बनाओल पीचल चपता अन्न थिक। संश्लिष्ट चूड़ाक समूहकें **लट्टा** कहल जाइत छैक। लट्टासँ युक्त चूड़ाकें **लटहा** चूड़ा कहल जाइत छैक। मिथिलाक लटहा चूड़ा ओ खट्टा दही नामी अछि। पातर, सुगन्धित ओ नीक चूड़ाक प्रभेद विशेषकें **तमहा/कतरनी** कहल जाइत छैक। आइकालि चूड़ाक उत्पादनपर मीलक प्रभाव भऽ गेने एकर लटहा ओ तमहा प्रभेद विलुप्त भेल जा रहल अछि।

दही दूधकें जमा कऽ बनैत अछि। औंटल दूधमे सुसुममे दहीक अल्प मात्रा मिलाओल जाइत छैक। एकरा **जोड़न/लेसन** कहल जाइत छैक। जोड़न देलापर दूधक मूल स्वरूप छोड़ि कोमल ठोस रूप धारण करबाक क्रिया **जमब/जनमब** होइत अछि। दूधक शुद्धताक हेतु **सुच्चा** शब्दक व्यवहार होइत अछि। सुच्चा दूधक दहीकें **सजावी/सरही** दही कहल जाइत छैक। दहीकें जमयबाक क्रिया **पौड़ब** होइत अछि।

कऽलमे पेड़ल दुद्धीक दहीकें **कलहा** दही कहल जाइत छैक। मऽहल दुद्धीक दहीकें **महुआ दही** कहल जाइत छैक। महुआ ओ कलहा दहीकें **गोपाल** दही सेहो कहल जाइत छैक। जोड़न नहियो देने जमल दहीकें **कुमार. दही** कहल जाइत छैक।

दहीक उपरका सतहपर जमल पियरौंछ पदार्थकें **छाल्ही** कहल जाइत छैक। मोट छल्हिगर दहीक छाल्हीपर भूर बनबाक क्रिया **बरड़ी पड़ब** होइत छैक आ भूर सभकें **बरड़ी** कहल जाइत छैक। वर्णरत्नाकरमे (पृ. 69) एगारह अंगुर **बरली पललि** दहीक वर्णन भेटैत अछि।

जमिकऽ अत्यन्त संश्लिष्ट दहीकें **कठम/कठगर** कहल जाइत छैक। खूब कठगर दहीकें **भैंसाठ** कहल जाइत छैक। ठंढक प्रभावसँ दहीक नहि जमबाक क्रिया **ठरकब** होइत अछि। पातर दहीकें **तुरी** कहल जाइत छैक।

दहीकें बासनसँ निकालबाक हेतु एक बेरमे जतेक दही काटल जाइत छैक तकरा **छओ** कहल जाइत छैक। छओक हेतु प्राचीन शब्द **छेओव** छल (वर्णरत्नाकर, पृ. 12)।

दहीक अम्लीय स्वादकें **अम्मत/खट्टा** कहल जाइत छैक। अधिक दिनक पौड़ल दहीक उपरका भागमे उत्पन्न विकारकें **फुफड़ी/दहिया फुफड़ी** कहल जाइछ आ फुफड़ी बनबाक क्रिया **फुफड़ब/फुफड़ी पड़ब** होइत अछि।

तेली

आधार सामग्री : विभिन्न प्रकारक अन्न ओ फलसँ प्राप्त द्रवकें तेल कहल जाइत छैक। भोज्य पदार्थकें सिद्ध ओ सुस्वादु करबामे एकर उपयोग होइत छैक। जाहि-जाहि अन्नसँ तेल निकालल जाइत छैक, ओकरा सभकें **तेलहन** कहल जाइत छैक। तेल पेड़बाक उद्योगमे लागल जाति विशेष **तेलि/तेली** कहल जाइत छथि। तेल पेड़बाक स्थलकें **तेलिआरि** कहल जाइत छैक।

तेलीक आधार सामग्री मध्य विभिन्न प्रकारक तेलहन अबैत अछि। पीत वर्णक अत्यन्त लघु आकृतिक एकटा तेलहन **गोट/सरसो/सरसों/सरिसो** (सं. सर्षप) कहल जाइत छैक। काँचे काटि लेलापर एकर दाना चोकटि जाइत छैक। एहन दानाकें **मुन्ही** कहल जाइत छैक। अपुष्ट दानावला सरिसो सेहो **मुन्ही** कहल जाइत अछि।

सरिसोक जातिक कत्थइ रंगक तेलहन **तोरी** होइत अछि आ कारी रंगक तेलहनकें **राइ/रैंची** कहल जाइत छैक।

तीसी/अलस/आलस/चिकना/अतिसी सेहो प्रसिद्ध तेलहन थिक । ई अत्यन्त सूक्ष्म आकृतिक, चपता ओ अग्रभागमे नोंखगर अन्न होइत अछि।

ठंढा तेलक हेतु **तिल/तिल्ली** नामक तेलहनक उपयोग होइत अछि। सजमनिक बीयाकें पेड़िकऽ सेहो तेल निकालल जाइत छैक। दीपमे जरयबाक हेतु **अंडी/रेंड़ी** नामक तेलहनक तेलक उपयोग होइत छैक।

एकर अतिरिक्त **महुआ, नीम, नारियर, डिठबरना, पितौंझिया** आदिक फऽरसँ सेहो तेल निकालल जाइत छैक। महुआक फऽरकें **गहुआ** आ नीमक फरकें **निमौड़ी** कहल जाइत छैक।

औजार : तेल पेड़बाक तेलीक औजार **कोल्ह/कोल्हू** (प्रसिद्ध कहबी:- देल बैर ने खाय बरदा कोल्हू बाटऽ जाय) **/कोल्हु/केल्हु** कहल जाइत अछि।

कोल्हु जाहि ठाम रहैत अछि ओकरा **कोल्हुआर** (घरसे कोल्हुअरबे अच्छा) कहल जाइत छैक। कोल्हुमे करीब डेढ़ हाथ व्यासवला शीशोक जड़ियाठ माटिक नीचा तीन हाथ गाड़ल रहैत छैक आ दू हाथ जमीनक सतहसँ ऊपर रहैत छैक। माटिक तरमे गड़ल भागकें **जड़्घा** कहल जाइत छैक। ऊपरवला भागमे कठौत जकाँ खाधि कयल रहैत छैक। एहि खाधिकें **पेट/हण्डा/कूँड़** कहल जाइत छैक। पेटक निचला भागसँ एकटा नाला कोल्हुक आधारक पार्श्वमे निकलैत छैक। एकरा **नियारी** कहल जाइत छैक।

पेटक निचला भागमे लोह अथवा लकड़ीक एकटा मजगूत टुकड़ा देल रहैत छैक। ई टुकड़ा आकृतिमे गोल होइत छैक आ एकर व्यास पेटक भीतरी व्यासक

बराबर होइत छैक। एहिमे अनेक छेद कयल रहैत छैक। लकड़ी वा लोहक ई टुकड़ा **चनिआ** कहल जाइत छैक।

चनिआक ऊपरी भागमे पेटक चारू कात पेटकें घर्षणसँ बचयबाक हेतु भीतरी भागमे लकड़ीक छोट-छोट टुकड़ी सटा-सटा कऽ बिछाओल जाइत छैक । एकरा सभकें **पाचड़/पचड़ी/पाचड़ि** कहल जाइत छैक।

चनिआपर एकटा लकड़ीक करीब एक बीत व्यासक चारि-पाँच हाथक दंड ठाढ़ रहैत छैक। एकरे दबाबसँ कोल्हुक पेटमे देल तेलहन पिसाइत छैक। एहि दंडकें **मुहनि/महन/मोहन/मोहनि/मोहैन/जाइठ (ओबियार्स की तेलिया घाटि। एकरा मुङरा ओकरा जाइठ।) /लाठि/लाइठ** कहल जाइत छैक। एकर निचला भाग गोलाकार रहैत छैक। ओहि भागकें **मूड़/मूड़ा/मूड़ी/मुड़वारी** कहल जाइत छैक।

मोहनक उपरका भागमे समकोणपर मुड़ल एकटा लकड़ीक टुकड़ी ओकरा दबबैत छैक। एकरा **ढेकुआ/ढकुआ/ढेका/ठकुआ/ठेकुआ** कहल जाइत छैक।

ढेकुआक दोसर छोर एकटा बाँसक टोनमे बान्हल रहैत छैक। बाँसक एहि टोनक निचला भाग एकटा एक हाथ चाकर लकड़ीक मोट तकथासँ सम्बद्ध रहैत छैक। एहि तकथाक एकटा भागमे अर्द्धचन्द्राकार खत बनल रहैत छैक। ई खतलाहा भाग कोल्हुक पेटक बाहरी भागसँ सटल रहैत छैक। एहि तकथाकें **कतरी/कतली/कातल/कातर/कातरि** कहल जाइत छैक।

बाँसक टोनसँ एकटा फट्ठी कोनिआकऽ कतरीमे लागल रहैत छैक। एकरा **खरनाठी** कहल जाइत छैक। एकटा अन्य फट्ठी सेहो बाँसक टोनमे बान्हल रहैत छैक जकर दोसर छोर कोल्हुक पेटपर रहैत छैक आ तेलहनकें लारबाक काज करैत छैक। एहि फट्ठीकें **भरनाठी/रेवटी/उटकनी** कहल जाइत छैक ।

कतरी नीचा दिस दबल रहय तें ओहिपर नम्हर पाथर आदिक ओजन देल रहैत छैक। एकरा **भरसाहा** कहल जाइत छैक।

मोहनमे एकटा पालो लागल रहैत छैक। पालोक एकटा छोरमे कनइल लागल रहैत छैक आ ई छोर बड़दक कान्हपर धयल रहैत छैक। दोसर छोर दू भागमे बँटल रहैत छैक। ओकरा **दुकन्ना** कहल जाइत छैक। दुकन्नाक बीच मोहन रहैत छैक आ बाहरसँ दूनू कान एकटा रस्सी द्वारा सम्बद्ध रहैत छैक।

कतरीक दोसर छोरमे एकटा रस्सीसँ एकटा बाँसक टोन जोड़ल रहैत छैक। एहि टोनकें **सोंटा** कहल जाइत छैक । सोंटाक दोसर छोरपर एकटा आर रस्सी लागल रहैत छैक। एकरा **पगहा** कहल जाइत छैक। पगहा बड़दक कान्ह लग पालोसँ सम्बद्ध रहैत छैक।

कोल्हुक बड़द **कोल्हुआ बड़द** कहल जाइत छैक। एकर आँखिपर पट्टी बान्हल रहैत छैक। पट्टीकें **खोला/खोलसा/आँखिमुन्ना/आँखिमुनी/अनवट** कहल जाइत छैक। जाहि वृत्ताकार परिपथमे ई बड़द चलैत अछि, ओकरा **पौर/पौदर/पौरी** कहल जाइत छैक।

बड़दक आगू बढ़ने कतरी सेहो घिचाइत छैक आ मोहन सेहो। ढेकुआ मोहनकें दबने रहैत छैक तें मोहन कोल्हुक पेटमे देल तेलहनकें पीचैत नचैत रहैत छैक।

तेलहन पिचयलासँ तेल चनिआक तर दऽ नियारी होइत बाहर निकलैत छैक। एहि तेलकें नियारीक समक्ष खूनल खाधिमे राखल माटिक बासनमे चुआओल जाइत छैक। एहि बासनकें **छन्ना/छन्नी** कहल जाइत छैक। नियारीसँ चुबैत तेलकें छन्ना धरि पहुँचबाक हेतु दूनूक बीच एकटा काठक त्रिभुजाकार नालाक आकृतिक बासन लागल रहैत छैक। एकरा **नरोह/निरोह/लिलोह** कहल जाइत छैक।

उपयोग भेलासँ कोल्हुक पाचड़ ढील भऽ जाइत छैक। तखन पाचर सभक बीचमे बत्ती ठोकि देल जाइत छैक। एकरा **खाप** कहल जाइत छैक। पाचड़ अधिक घसा गेला पर ओकरा सभकें निकालि देल जाइत छैक आ नव पाचड़ बैसाओल जाइत छैक। ग्रियर्सन पुरान पाचड़क हेतु **तरपचड़ा** ओ नव पाचड़क हेतु **पेटपचड़ा** शब्द कहलनि अछि (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-47**)। पाचड़ बदलबाक क्रिया **कोल्हू पचड़ब** होइत अछि।

तेल पेड़बाक बाद कोल्हुमे तेलहनक अवशेषकें बाहर करबाक हेतु लोहक रुखाणी नामक औजारक उपयोग होइत छैक। काजक क्रममे तेली अपन हाथ पोछबाक हेतु जाहि मैल कपड़ाक व्यवहार करैत अछि से **चिकाइट** कहल जाइत छैक।

तेल रखबाक हेतु तेली माटिक बासनक व्यवहार करैत अछि। नीचा दिस एक आङुर झुकल कानवला लोटाक आकृतिक बासन **टाड़ी** कहल जाइत छैक। छोट टाड़ीकें **टड़िया** ओ पैघ टाड़ीकें **टाड़ा** कहल जाइत छैक। टाड़ाकें मुसलमान **लोटका** कहैत छथि। तेल रखबाक पैघ पात्रकें **तेलहाँडा/तेलहाँडी/तेलहण्डा** कहल जाइत छैक।

टाड़ीसँ तेल निकालबाक हेतु लोहाक एकटा उपकरणक व्यवहार होइत अछि। एहिमे कनेक गोल आकृतिक एकटा चम्मच रहैत छैक जाहिमे लोहक डंटी ठाढ़ कऽ लागल रहैत छैक। एकरा **कोइया** कहल जाइत छैक। एहि कार्यक हेतु बेलक खोइयावला भागमे लकड़ी अथवा बाँसक टुकड़ा लागल करछुलक सेहो व्यवहार होइत छैक। एकरा **बेली** कहल जाइत छैक।

तेल नपबाक हेतु बाँसक पोरसँ अनेक नपना बनाओल जाइत छैक। ई सभ परिमाणक अनुरूप सेर, असेरा, पौआ, अधपइ, कनमा कहल जाइत अछि। एहि नपना सभक हेतु **चोङा/पैली** शब्दक सेहो व्यवहार होइत अछि। मिथिला भाषा कोषमे तेल रखबाक चोङाकें **तेलबासा** कहल गेल अछि (पृ. 172)।

उत्पादन : तेलहनकें कोल्हुमे देबासँ पूर्व ओकरा पानिक फुहार दऽ नम करबाक क्रिया **मोहब** होइछ। एक बेरमे कोल्हुक पेटमे जतेक तेलहन पेड़बाक हेतु देल जाइत छैक, ओकरा घानी (**प्रसिद्ध कहबी:- घानीसँ बहतौनी भारी**) कहल जाइत छैक। कोल्हुमे घानी देबाक क्रिया **घानी लगायब** होइत अछि। घानी लगौलाक किछु कालक बाद तेल तीव्र गतिसँ चूबऽ लगैत छैक। एहि स्थितिमे घानीकें **धेनुआर घानी** कहल जाइत छैक। तेलहन पेड़ा गेलाक बाद तेल चूब बन्द होयबाक क्रिया **घानी निंघरब** होइछ। तेल पेड़बाक मजदूरीक रूपमे तेलीकें देय अन्नकें **बहताओन/बहतौनी** कहल जाइत छैक।

तेलहनकें दबाब द्वारा पिसबाक क्रिया **पेड़ब** होइत अछि। एकरा पेड़िकऽ निकालल द्रवकें **तेल/चिकनइ/चिकनै** कहल जाइत छैक। सरिसोक तेलकें **कड़ू तेल/कड़ुआ** तेल कहल जाइत छैक। आन तेल सभ तेलहनक नामसँ अभिहित होइत अछि। कोल्हुक शुद्ध तेलकें **सुच्चा तेल** कहल जाइत छैक। मील द्वारा पेड़ल शुद्ध तेलकें **खाँटी तेल** कहल जाइत छैक।

तेलक मैलकें **काइट/जमड़ी/गादि** कहल जाइत छैक। तेल पेड़ला उत्तर तेलहनक अवशेषकें **खल्ली/खइर/खरि/खरी** कहल जाइत छैक।

तेल सम्पर्की वस्तुकें **तेलाह** कहल जाइत छैक। तेलाह वस्तुक सटबाक प्रवृत्ति **चिटाइन/चिटचिटाइन/ तेलचिटाइन** कहल जाइत छैक। तेलचिटाइन वस्तुकें **तेलचिट/चिटचिट** कहल जाइत छैक। अधिक तेलसँ युक्त खाद्यकें **तेलगर** कहल जाइत छैक। तेलक कटु स्वादकें **झँसिगर** कहल जाइत छैक। तेलक गंधविशेष **सोन्ह** होइत अछि। सोन्ह गंधसँ युक्त तेलकें **सोन्हगर** कहल जाइत छैक।

नोनिआ ओ बेलदार

नोनिआ ओ बेलदार नामक दूटा जाति नोन ओ शोरा बनयबाक व्यवसाय करैत छल। शोराक उपयोग युद्धमे बारूद बनयबाक हेतु होइत छलैक आ एकर सह-उत्पादनक रूपमे नोन प्राप्त होइत छलैक। ई नोन सैन्धव ओ सामुद्रिक नोनक संगे फेटिकऽ बेचल जाइत छल।

ब्रिटिशकालमे बिहार शोराक उत्पादनक प्रमुख केन्द्र छल (**इकोनोमिक हिस्ट्री आफ बंगाल, फ्रॉम प्लासी टू परमानन्ट सेट्लमेंट, भोल्यूम-1, एन. के. सिन्हा, गोसाई एण्ड कं. प्रिन्टर्स प्रा. लि., 7/1 ग्रान्ट लेन, कलकत्ता-12, पृ. 201**)। हाजीपुर तिरहुत, सारण ओ पूर्णिया शोरा उत्पादनक प्रमुख क्षेत्र छल (**तत्रैव, पृ. 202**)।

सम्प्रति गृह उद्योगक द्वारा शोरा ओ नोनक उत्पादन नहि होइत छैक। ई व्यवसाय समाप्त भऽ गेल अछि। एहि व्यवसायसँ सम्बद्ध नोनिआ ओ बेलदार जाति अन्य व्यवसायमे लागल अछि।

व्यवसाय समाप्त भऽ जयबाक कारणें नोनक उत्पादनसँ सम्बद्ध शब्दावली सेहो लुप्त भऽ गेल अछि। जे किछु शब्द भेटैत अछि ताहि हेतु संदर्भ ग्रन्थ, जनश्रुति ओ नोनिआलोकनिक स्मृतिशेष मात्र आधार अछि।

उनैसम शताब्दीक आरंभेसँ सरकार द्वारा अवैध कऽ देल जयबाक कारणें नोन बनयबाक व्यवसाय ह्रासोन्मुख भऽ गेल छल (**एन एकाउण्ट आफ दी डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया, पृ. 555**)।

आधार सामग्री : नोनिआ सभक आधार सामग्री **नोनी/नोनियाही/नोनछराही** माटि होइत छल। ई माटिक घरक देवाल, मालजाल बन्हबाक स्थान, गाछी तथा कोनो-कोनो खेतमे वर्षाक बाद उज्जर रंगक पपड़ीक रूपमे भेटैत अछि। एकरा रेह सेहो कहल जाइत छैक।

नोन बनयबाक स्थलकें नोनथरा अथवा कतहु-कतहु फर (**ए स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ बंगाल, डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर, भॉल्यूम-13, तिरहुत एण्ड चम्पारण, कन्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, 65-एफ, आनन्दनगर, दिल्ली 35, 1976, पृ. 127**) कहल जाइत छल।

औजार : नोनिआ नोनी माटिकें जाहि उपकरणमे घुलबैत छल, से **कोठी** कहल जाइत छलैक। ई माटिक सतहपर ऊँच कऽ बनाओल गोल चबुतराक सदृश होइत छल। एकर चारू कात एक-डेढ़ बीत मोट माटिक देवालक घेरा रहैत छलैक। एकर आधार ढालू होइत छलैक आ एहिपर ईंट ओछाओल रहैत छलैक। ईंटपर बाँसक अनेक टोन सभ देल रहैत छलैक आ तकरा ऊपर खढ़, पुआर, तारक छाजा आदि ओछाओल रहैत छलैक। बाँसक टोन सभकें **पटबटन/पटोटन/कोरो/कोरइ** कहल जाइत छलैक। कोठीसँ पानि चूबाक हेतु बनाओल नालाकें **पनार** कहल जाइत छलैक। चुबैत पानि कोठीक निकट कयल खाधिमे राखल माटिक बासनमे जमा होइत छलैक। एहि बासन सभकें **नाद/नादा/नदहा/गड़नी/परछा** कहल जाइत छलैक।

उत्पादन : शोरा अथवा नोनक उत्पादनक हेतु ढेप-चेप चूड़िकऽ कोठीमे राखल माटिकें **चेलुआ** कहल जाइत छलैक (**एन एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ**

पूर्णियाँ, पृ. 552)। चेलुआपर पानि पटओलासँ पेनी पर दऽ होइत नादमे जमा होमऽवला ललौन रंगक माटिक सार तत्वयुक्त घोलकेँ **रस/कस** कहल जाइत छलैक। कस खसलाक बाद अवशिष्ट माटिकेँ **सीठ/सिट्ठी** कहल जाइत छलैक। सिट्ठीक ढेरीकेँ **नोनफर** कहल जाइत छलैक।

रसकेँ कड़ाहमे तीन खेप औँटल जाइत छलैक। पहिल खेप औँटि कऽ सेरयलापर बासनक पेनीमे शोराक दाना तथा दोसर आ तेसर खेप शोरा ओ नोनक दाना प्राप्त होइत छलैक।

औँटबाकाल काछल फेनकेँ **खारी** कहल जाइत छलैक। खारीकेँ सुखाकऽ **खरिआ/खारी/कारी** नोन नामक रसायन भेंटैत छलैक।

पहिल खेपक बाद अवशिष्ट रसकेँ **पछाड़ी** कहल जाइत छलैक। दोसर खेपमे प्राप्त शोराकेँ **काही** ओ नोनकेँ **पकवा** कहल जाइत छलैक (**ए स्टैटिस्टिकल एकाउण्ट आफ बंगाल**-पृ. 127)। तेसर खेपमे अवक्षेपित शोराकेँ **तेलहा** ओ नोनकेँ **नीमक** कहल जाइत छलैक। तेसर बेर अवक्षेपणक बाद अवशिष्ट रसकेँ **जराठी** कहल जाइत छलैक। पुन: उपयोगमे अनबाक हेतु जराठी ओ सिट्ठीक मिश्रणकेँ **बेचुआ** कहल जाइत छलैक (**एन एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया**, पृ. 551)।

उपर्युक्त विधिसँ प्राप्त शोराकेँ **कच्चा/जरुआ शोरा** (बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ. 77) कहल जाइत छलैक। रौदमे रसक वाष्पीकरणसँ प्राप्त शोराकेँ **आबी शोरा** कहल जाइत छलैक (तत्रैव)। कच्चा शोराकेँ परिशुद्ध कयलापर **कलमी शोरा** कहल जाइत छलैक।

नोनकेँ **नून/नोन/बेलदारी नीमक/नीमक/रामरस** कहल जाइत छैक। नोनसँ सम्बद्ध अनेक शब्द प्रचलित अछि। नोनसँ युक्त खाद्यकेँ **नोनगर/नोनछाह**, अधिक नोनगर खाद्यकेँ **नोनछराह**, नोन रहित खाद्यकेँ **अनोन**, कम नोनगर खाद्यकेँ **मधनोन** आ नोनरहित खाद्य खयबाक व्रतकेँ **अनोना** कहल जाइत छैक।

कुरेड़ी

आधार सामग्री : माछीक आकारक कीट विशेष द्वारा विभिन्न फूलक परागसँ निर्मित एकटा अत्यन्त पौष्टिक द्रवकेँ **मधु** कहल जाइत छैक। मधु निर्माण करऽवला कीटकेँ **मधुमाछी/मक्खी/मधुमक्खी** कहल जाइत छैक । मधुमाछीक खोंताकेँ **छत्ता** कहल जाइत छैक । छत्तासँ मधु बाहर करबाक व्यापार **मधु छोड़ायब** होइत अछि। मधु छोड़यबाक व्यवसायमे कुरेड़ी जाति लागल छथि। मधु छोड़यबाक

व्यवसायमे सह-उत्पादनक रूपमे **मोम** सेहो प्राप्त होइत छैक। मधु ओ मोमक उत्पादनक अतिरिक्त विभिन्न पक्षीक शिकार कुरेड़ीक आनुषंगिक वृत्ति होइत अछि।

मिथिलामे मधुमाछीक तीन गोट प्रभेद भेंटैत अछि। पीताभ पाँखिसँ युक्त मधुमाछीक सबसँ पैघ आकृतिवला प्रभेद **भौंरा** कहल जाइत छैक। चितकाबर पाँखिवला मध्यम आकृतिक मधुमाछीकेँ **खोखवला मक्खी** कहल जाइत छैक। कारी रंगक पाँखिवला अत्यन्त छोट आकृतिक मधुमाछीकेँ **गोइठी/कनौजिया** कहल जाइत छैक ।

मधुमाछी घरक देवाल, गाछ आदिपर छत्ता लगबैत अछि। घरक देवालमे दीवार नामक कीट ओ गाछपर घोरन नामक कीटक आक्रमणसँ मधुमाछी छत्ता छोड़ि कऽ भागि जाइत छैक। **मधुपी/मधुपीया** नामक एकटा पक्षी मधुमाछीक छत्ता तोड़ि कऽ उड़ि जाइत छैक आ मधु तथा अंडा-बच्चा समटा खा जाइत छैक।

औजार : मधु छोड़ैबामे छत्ताकेँ कटबाक हेतु कचिया हाँसूक व्यवहार होइत छैक। छत्तासँ मधुमाछीकेँ भगयबाक हेतु खढ़क चारूकात भांगक गाछ दऽ रस्सीसँ बान्हि कऽ दण्डाकार उपकरण बनाओल जाइत छैक। एकरा **उक्का/लुक्का** कहल जाइत छैक। मधु रखबाक पैलाकेँ **कठिया** कहल जाइत छैक । मधुमाछीक छत्ताकेँ लोहक **डोल/बाल्टी**मे राखल जाइत छैक। छत्ताकेँ सड़यबाक हेतु कपड़ाक बान्हल मोटरीकेँ **झोड़ा/धोकड़ा** कहल जाइत छैक। छोट धोकड़ाकेँ **धोकड़ी** कहल जाइत छैक । मधुमाछीक सड़ल छत्ताकेँ औँटबाक हेतु टिनक उपयोग होइत अछि।

पक्षी मारबाक हेतु कुरेड़ीक वंशनिर्मित औजार **नर-सर** कहल जाइत अछि। ई आङुर सन पातर करीब पाँच फुटक पहाड़ी बाँसक दण्ड रहैछ। लोहाक नोंखगर शूल लागल दंडकेँ **सर** कहल जाइत छैक। शूलसँ रहित दंड सभकेँ **नर** कहल जाइत छैक। नर ओ सरक निचला भागमे करीब तीन इंचक खोधर रहैत छैक, जाहिमे दोसर सरक उपरका भाग घोसिया कऽ दुनूकेँ सम्बद्ध कयल जा सकैत छैक। एहि खोधरकेँ **नाला** कहल जाइत छैक। नरक उपरका भाग जकरा नालामे पेसल जाइत छैक, से **गुआ** कहल जाइत छैक। सर ओ क्रमवर्ती नरकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ बहुत पैघ दंड बनाओल जा सकैत छैक। नरमे ऊपरवला दंडकेँ **सिर** ओ नीचावला दंडकेँ **भारू** कहल जाइत छैक। नर-सरकेँ परस्पर सम्बद्ध कयला उत्तर ओकर दोलनक क्रिया **दोमब** होइत अछि।

पक्षीकेँ फँसयबाक अन्य व्यवस्थामे सरमे अनेक कमची बान्हि देल जाइत छैक। एहि कमची सभकेँ **कम्पा** कहल जाइत छैक। कम्पामे पक्षीकेँ सटयबाक हेतु ओहिपर लगाओल पदार्थकेँ **लस्सा/लासा** कहल जाइत छैक। ई पीपरक रससँ बनाओल जाइत अछि।

पीपरक गाछमे अनेक ठाम छौ मारि कऽ क्षत करबाक क्रिया **पाचब** होइत अछि। पाचल स्थानसँ निकलल लसिगर पदार्थकेँ माटिक बासनमे कड़ू तेलक संगे खदकाय लस्सा तैयार कयल जाइत छैक। एहिमे सटल पक्षी चेष्टा कयनहुँ उड़ि नहि पबैत अछि।

लस्साकेँ एक पोर बाँसक खोलमे राखल जाइत छैक। एहि खोलकेँ **चोङा/चोंगा** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : कुरेड़ीक प्रमुख उत्पादन **मधु** थिक। मधुक उत्पादन मुख्यत: चैतसँ आषाढ़ मास धरि होइत अछि। चैत मासमे आमक मज्जरसँ मधुमाछी मधु बनबैत अछि। ई मधु स्वच्छ, गाढ़ ओ सुगन्धित होइत अछि। एकरा **चैती मधु** कहल जाइत छैक। बैसाख मासक मधु **बैसक्खा** कहल जाइत अछि। ई गाढ़ दानेदार आ हल्का लाल रंगक होइत छैक। जेठ मासक मधु **जेठीमधु** कहल जाइत छैक। ई पातर ओ गाढ़ लाल होइत छैक। आषाढ़ मासक मधु कारी रंगक, पातर ओ कम मधुर होइत अछि।

मधुमाछीक पछिला भागमे पातर ओ नोंखगर अंग होइत छैक। एकरा **सूड़/सुंघ** कहल जाइत छैक। एहिसँ मधुमाछी दंश मारैत छैक। दंश मारलापर पीड़ा होयबाक क्रिया **बिसबिसायब** होइत अछि। मधुमाछी मधु छोड़ौनिहारकेँ खेहारिकऽ दंश मारि दैत छैक। खेहारबाक क्रिया **चहेटब** होइत अछि।

छत्ता लग जयबासँ पूर्व कुरेड़ी एकटा मन्त्र पढ़ैत अछि जकरा **मन्तुर** (**आंट बान्हू साँट बान्हू बान्हू अपन काया-सत्त गुरुकें बान्हू काया, सूर महामाया॥**) कहल जाइत छैक। कुरेड़ी सभक मान्यता छैक जे मन्तुर पढ़ि लेने मधुमाछी ओकरा नहि कटैत छैक।

मधुमाछीक छत्ता अर्द्ध अंडाकार होइत छैक। एकर उपरका भागमे मधु भरल रहैत छैक जकरा **कोढ़ा/कोरहा** कहल जाइत छैक। अंडा-बच्चासँ भरल निचला भागकेँ **खखरा** कहल जाइत छैक। दबाब द्वारा मधु गाड़ल मुट्ठी भरि कोढ़ाकेँ **मुठरा/मुठला** कहल जाइत छैक। मुठरा ओ खखरा मोमक उत्पादनक हेतु आधार सामग्री होइत अछि।

मोमक उत्पादन : मधुमाछीक छत्ताकेँ दस-पन्द्रह दिन धरि कपड़ाक थोकड़ीमे छोड़ि सड़लापर पानिक संगे टीनमे औंटल जाइत छैक। औंटलापर द्रवीभूत भेल खखराकेँ पानि सहित माटिमे खुनल खाधिपर कपड़छान कयल जाइत छैक। खाधिमे तरल द्रव दोसर दिन जमि कऽ ठोस पिंडक रूपमे प्राप्त होइत छैक। एकरा **मोम** कहल जाइत छैक। पिंडक हेतु **थक्की/थक्का** शब्दक व्यवहार होइत अछि।

एहि मोमकेँ परिशुद्ध करबाक हेतु थक्काक संगे ओही प्रक्रियाकेँ दोहराओल जाइत छैक। एहि बेर खरकाबय काल थोड़ेक मात्रामे घी सेहो टीनमे धऽ देल जाइत छैक।

मोमक उपयोग लकड़ीमे पालिसक हेतु आ प्रकाशक साधनक रूपमे होइत छैक। मोमक बेलनाकार दण्डक मध्य भागमे सूत लगाकऽ जे प्रकाशक साधन बनाओल जाइत अछि से **मोमबत्ती** कहल जाइत छैक।

कुरेड़ीक अन्य उत्पादन : मधु ओ मोमक उत्पादनक अतिरिक्त शिकारी प्रवृत्तिक कुरेड़ी जाति विभिन्न प्रकारक जलीय पक्षीक शिकार भोजन अथवा विक्रयक हेतु करैत अछि।

पक्षीकेँ **पंछी/चिड़ैइ/चिड़ियाँ** सेहो कहल जाइत छैक। कुरेड़ी द्वारा शिकार कयल गेल प्रमुख खाद्य चिड़ैइ सभ **बनमुर्गी, परबा/कबूतर, बनपर्वा, पीरकी, हरियल, मुरैना, महाफूका/महौखा, सिल्ली/अधनी, मैना, दाबिल, खुर्पाबान, धनेस, डकहर/डोकहर, करांकुल, गागन, खयरा बगुला, जलमुर्गा, बगुला, नकटा, दिघोंच/दिघौंछ, सदूल, लालशर,बगेरी, मसरैंची, पिल्लक,सेंगर** आदि अछि। रन्हबासँ पूर्व पंछीक पाँखि ओदारबाक क्रिया **चोथब** होइत अछि।

बेचबाक हेतु कुरेड़ी मुख्यत: **सुगा/सुग्गा/सूआ/तोता** नामक पंछीकेँ पकड़ैत अछि। मधुर स्वरसँ युक्त सूगाक सबसँ पैघ प्रभेदकेँ **करार** कहल जाइत छैक । कंठ लग लाल दग्गीसँ युक्त सुग्गाकेँ **अमृतभेला** कहल जाइत छैक । कर्कश स्वरवला सूगाक सबसँ छोट आकृतिवला प्रभेदकेँ **टेटिया/बजरी** कहल जाइत छैक । दन्तकथा सभमे **हीरामन सुगाक** वर्णन भेटैत अछि जे अत्यन्त चतुर प्रकृतिक वर्णित भेल अछि। मादा सुग्गाकेँ **सुग्गी** कहल जाइत छैक ।

चाम बेचबाक हेतु कुरेड़ी **बिज्जी/सपनौर** नामक जानवरक शिकार करैत अछि। एकरा आकृष्ट करबाक हेतु कुरेड़ीक मुँहसँ निकालल ध्वनि विशेषकेँ **तुनकारी** कहल जाइत छैक।

मधु छोड़यबाक धंधा ऋतुसापेक्ष रहबाक कारणें वर्षक अनेक मासमे कुरेड़ी भिक्षाटन कऽ अथवा **हींग, जाफर, काफर, विषमा, शंखलाभी, टटैनी, अधकपारी** आदि औषधि बेचि कऽ गुजर करैत अछि।

बरइ

नागबल्ली/नागबेल नामक लताविशेषक पातकेँ **पान** (सं. पर्ण) कहल जाइत छैक। पान उपजयबाक व्यवसायमे बरइ ओ तमोली जाति लागल छथि। पानकेँ काटि-मोड़ि कऽ खाद्यक रूपमे प्रस्तुत करऽवला जाति **पनेरी** होइत अछि। सम्प्रति पनेरीक काज जातिनिरपेक्ष भऽ गेल छैक।

आधार सामग्री ओ औजार : पान उपजयबाक हेतु जलाशयक निकटक भीठ जमीन उपयुक्त होइत छैक। पान रोपबाक लेल जमीनमे चारू कातसँ टाट आ ऊपरमे छौंही देल जाइत छैक। जमीनक एहि भागकेँ **बरेब/बरैठा** कहल जाइत छैक।

बरैठामे जोत-कोड़क हेतु खेतीक सामान्य औजारक उपयोग होइत छैक। खेत तैयार भेलापर साओन-भादवमे पानक लत्तीक एकटा गीरहसँ युक्त टुकड़ी रोपल जाइत छैक। एकरा **बेल/कलम/बीज** कहल जाइत छैक।

बरैठामे पानकेँ पतियानीमे रोपल जाइत छैक। एहि पाँती समकेँ **सपुरा/साँपुरा/सोपरा/सोफरा** कहल जाइत छैक। दूटा सोपराक बीचवला अपेक्षाकृत गँहीर स्थलकेँ **आँतर/अँतरा/पह/पाह/पाहे** कहल जाइत छैक।

पानमे निरन्तर पानि पटबऽ पड़ैत छैक। पानि पटयबाक हेतु कानरहित पैघ चैलकेँ **लोइट/लोटि/लोटी/मोइट** कहल जाइत छैक। पानिक बहाओक कारणेँ सपुराक माटि बहिकऽ अँतरामे चल जाइत छैक। सपुरामे पानक जड़ि लग माटि देबाक हेतु व्यवहृत छोट सन छिट्टाकेँ **मटोर/मटोइर/मटोरि** कहल जाइत छैक। उपजामे वृद्धिक हेतु माटिमे मिलाओल चाउर, जौ, केराव आदिक चिक्कस, सरिसोक खइर आदि पदार्थकेँ **खाद/खाध** कहल जाइत छैक।

पानक लत्तीकेँ ओकर जड़ि लग उदग्र गाड़ल खरहीपर अवलम्बित कराओल जाइत छैक। एकरा **इकरी** कहल जाइत छैक। लत्तीकेँ इकरीमे बन्हबाक हेतु **राड़ी** नामक घासक टुकड़ीकेँ **काइस** कहल जाइत छैक। काइसकेँ मटकूरीमे राखल पानिमे भिजा कऽ राखल जाइत छैक।

पानक ढोली बन्हबाक हेतु **सरपत** नामक घासक टुकड़ीसँ बनाओल बन्हनकेँ **बन्हका** कहल जाइत छैक।

पानक सड़लाहा भागकेँ कतरबाक हेतु बाँसक दूटा पातर ओ चाकर कमचीसँ बनल औजारकेँ **कतरनी/कमची** कहल जाइत छैक।

पनेरी द्वारा पानक पातकेँ कतरबाक हेतु लोहाक गुनचिह्नक आकृतिक औजारकेँ **कैंची** ओ सुपारी कटबाक लौह औजारकेँ **सरौता** कहल जाइत छैक। कैंची ओ सरौताक प्राचीन नाम **कौंति** अछि (कोसी गीत, पृ.-39)।

मोड़ल पानकेँ गँथबाक हेतु बाँसक अत्यन्त पातर शलाकाकेँ **सीकी/सिक्की** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : बेलसँ निकलल शाखाकेँ **अँकुरा/कनार** कहल जाइत छैक। अँकुराक लत्तीक रूप धारण कयला उत्तर ओकरा इकरीसँ सम्बद्ध करबाक व्यापारकेँ **गछवठौनी** कहल जाइत छैक।

बरेबमे उगल अनावश्यक घास-पातकेँ नष्ट करब तथा पत्रविहीन लत्तीकेँ माटिक सम्पर्कमे आनि पुनः अंकुरण द्वारा उत्पादन योग्य बनयबाक व्यापारकेँ **कमठओन** कहल जाइत छैक।

पानक भाग : पानक सम्पूर्ण लत्तीकेँ **छर्रा** कहल जाइत छैक। लत्तीमे जाहि स्थानसँ शाखा अथवा पात निकलैत छैक ओकरा **गीरह** कहल जाइत छैक। एकटा गीरहसँ युक्त छर्राक भागकेँ **बेल** कहल जाइत छैक।

पानक लत्तीक छीपकेँ काटि देबाक क्रिया **छपटा करब** होइत अछि। छपटा कयला उत्तर ओकर प्रत्येक गीरहपरसँ अंकुर निकलैत छैक, जे स्वतंत्र लत्ती भऽ जाइत छैक।

पानक लत्तीक जड़िवला भागसँ निकलल अंकुरकेँ **कउन/झउड़** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ. 249**) जेठ मासमे होमऽवला कउनकेँ **भूर/भूरा** कहने छथि।

पानक लत्तीसँ पात तोड़बाक क्रिया **पान खोंटब** होइत अछि। लत्तीक जड़ि दिसुक क्रमिक पातकेँ क्रमशः उत्कृष्टतर मानल जाइत छैक। जड़ि लगक चारि पाँचटा पातकेँ **घासन** कहल जाइत छैक। घासनसँ उपरका चारि-पाँचटा पातकेँ **कूट/खूट** कहल जाइत छैक। खूटसँ ऊपरवला चारि-पाँचटा पातकेँ **कचलेवारि** कहल जाइत छैक। छीप परक पातकेँ **मुड़वारि** कहल जाइत छैक।

पात तोड़ैत काल कूटवला एक-दूटा पात गाछमे किछु समयक हेतु छोड़ि देल जाइत छैक। एकरा **दुपन्ना** कहल जाइत छैक। जड़िसँ छीप धरिक सभटा पातक अवर्गीकृत समूहकेँ **लेवार/लेवारि** कहल जाइत छैक।

पानक पातक अगिला नोंखगर भागकेँ **मुहरा/ढुरनी/सूड़/सूर** कहल जाइत छैक। पातक पृष्ठ भागकेँ लतासँ सम्बद्ध राखऽवला शलाकाक आकृतिक भाग **डंटी** कहल जाइत अछि।

पानक पात हरियर होइत अछि। पकलापर एकर रंग पीयर भऽ जाइत छैक। पानक पातक कठोरताकेँ **तल्खी** कहल जाइत छैक। तल्खीविहीन पानकेँ **मरल** कहल जाइत छैक। मौलल पानकेँ **सियाह** कहल जाइत छैक।

पानक प्रभेद : पानक अनेक प्रभेद होइत अछि। स्थानीय पानकेँ **देशी** कहल जाइत छैक। एहि ठामक देशी पानक पात छोट, मोट ओ कड़ा होइत अछि।

आयातित बेलकेँ रोपलापर ओहिमे पहिल वर्ष जे पात निकलैत छैक ताहिमे मौलिक बेल जकाँ पात उगैत छैक मुदा बादक वर्षमे निकलल पातमे स्थानीयताक प्रभाव दृष्टिगोचर होमऽ लगैत छैक। एहन पानकेँ **दोगला** कहल जाइत छैक।

मिथिलाक देशी पानक एकटा प्रभेद **साँची** कहल जाइत अछि। एकर पात पैघ ओ स्वादमे कड़ु होइत छैक । मध्यमे चाकर ओ अगिला-पछिला भागमे गोल पातवला पानक प्रभेद **करजोड़ी/करजोड़िया/कलजोड़ी/कलजोड़िया** होइत अछि। कपूरक सुगंधसँ युक्त पानक प्रभेद **कपूरी/कपुरिया/कर्पुरिया/ककीर/ककेर/ककेरा** होइत अछि।

मधुर स्वादवला पानक एकटा प्रभेद **बेलहरी साँची** कहल जाइत छैक (**बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ. 248**)। साँची पानसँ कम कड़ु स्वादवला छोट-छोट पातवला पानक प्रभेद **बंगला** होइत अछि।

आयातित पानमे **कलकतिया, मद्रासी, बनारसी** ओ **मगही** प्रभेद भेटैत अछि।

लोकगीतमे **डाटरि** पानक उल्लेख भेटैत अछि (**कोशी गीत, पृ. 43**)। लोककथा सभमे पाकल बीड़ा पानक उल्लेख भेटैत अछि। ई बीड़ा नामक पानक प्रभेद होइत छल (**मि. भा. को.**)। वस्तुतः ई पाकल सौंस पानक खिल्ली होयत से मानल जा सकैछ।

पानक बिमारी : पानमे अनेक प्रकारक बिमारी पकड़ि लैत छैक। पातक चितिर-बितिर ओ कड़ु भऽ जयबाक लक्षणवला बिमारी **झलमा** कहल जाइत छैक। पातक कोनो भागक गलि जयबाक बीमारी **फुट्टा** होइत अछि। सम्पूर्ण पात गलिकऽ टुबि जयबाक बिमारी **तेलगगरा** कहल जाइत छैक। पातक सुखबाक क्रिया **झरकब** होइत अछि। पानक पातक अग्रभाग झरकि जयबाक बिमारी **बढ़ती** कहल जाइत छैक।

तोड़ल पानक पातमे फेरफार नहि भेने ओकर विकारयुक्त भऽ सड़बाक बिमारी **बहुती** होइत अछि।

पानक गनती : बीस संख्यक पानक पात एक **कोरी** कहल जाइत छैक। पचास पातक **चौठी/चौठैया** ओ एक सय पातक **आधा ढोली** होइत अछि। दू सय पानक पातक समूहकेँ एक **ढोली** कहल जाइत छैक। सात ढोलीक एक **कनमा,** अट्ठाइस ढोलीक एक **पौआ**, छप्पन ढोलीक आध **सेर** आ एक सय बारह ढोलीक एक **लेसो** होइत अछि।

एक ढोलीसँ कम पातक बान्हल समूहकेँ **भीड़ा** कहल जाइत छैक। छोट भीड़ाकेँ **भीड़ी** ओ अत्यन्त छोट भीड़ीकेँ **भिरौड़ी** कहल जाइत छैक। पातमे बान्हल भीड़ीकेँ **पतौरा** ओ भिरौड़ीकेँ **पतौरी** कहल जाइत छैक।

पानक उपयोग : डंटी सहित बिनु काटल पानक पातकेँ **छुट्टा** कहल जाइत छैक। पानक पातमे **कऽथ** ओ **चूनक** संयोग दऽ मोड़बाक क्रिया **पान लगायब** होइत अछि। काटल पानकेँ त्रिभुजाकार मोड़ला उत्तर **खिल्ली** बनैत छैक। सौंस पानक

खिल्लीकेँ **बीड़ा/बिड़वा/बिड़िया** कहल जाइत छैक। छोट बीड़ाकेँ **बीड़ी** कहल जाइत छैक। गोल कऽ मोड़ल बीड़ाकेँ **गिलौरी** कहल जाइत छैक।

लोकगीतमे **हसाना** बीड़ा पानक उल्लेख भेल अछि (**कोसी गीत, पृ.-2**)। लोककथामे हँसता पान ओ बोलता सुपारीक उल्लेख भेटैत अछि (**मिथिला मिहिर, १५ जनवरी 1961, पृ. 13**)। मिथिला भाषा कोषमे पानक बीड़ीक **काड़ा, चम्पा, टिकुलिया** ओ **पखिआ** प्रभेदक उल्लेख अछि (**मि. भा. को.**)। वर्णरत्नाकरमे पञ्चफल संयुक्त तेरह गुण संपूर्ण पानक वर्णन भेटैत अछि (**वर्णरत्नाकर, पृ.-13**)।

पानक संगे खाद्य विभिन्न पदार्थमे सुपारी नामक फल प्रमुख अछि। एकरा **सोपारी/कसैली/गुआ/पूग/पुंगी/पुंगीफल/मुखसुद्धि** कहल जाइत छैक। सुपारीक अत्यन्त छोट प्रभेद **मनिचन/मानचन/मानचन्दी/मानिकचन/मानिकचन्दी** होइत अछि। अपेक्षाकृत कठोर ओ पैघ सुपारीकेँ **छलिया** कहल जाइत छैक। बम्बइसँ आयातित छलियाकेँ **बम्बइया** कहल जाइत छैक। **अमीनताज, गोटाकाँटा** आदि छलियाक अन्य प्रभेद अछि। आसामसँ आयातित सुपारीक प्रभेद **आसामी/असमियाँ** कहल जाइत छैक। चप्पत आकृतिक कषाय स्वादसँ युक्त सुपारीक प्रभेद **चित्ती** कहल जाइत अछि। नेपालसँ आयातित सुपारीक सदृश एकटा अत्यन्त छोट ओ कठोर फल सेहो पानक संगे व्यवहार कहल जाइत छैक। एकरा **निरमली/निरमलिया** कहल जाइत छैक।

दू भागमे काटल सुपारीकेँ **कटुआ** कहल जाइत छैक। कटुआक प्रत्येक खंड **फाँक** कहल जाइत छैक। फाँककेँ अनेकशः खण्डित कयला उत्तर प्राप्त टुकड़ी सभकेँ **टूक** कहल जाइत छैक। सुपारीक पातर-पातर कच्चीकेँ **कतरा** कहल जाइत छैक। भूजल सुपारीकेँ **सेका/सकेली/भूजा** कहल जाइत छैक।

पानक संगे **लौंग/लवङ** नामक कड़ु पुष्प, **जाफर** नामक कड़ु स्वादयुक्त फल, **इलैंची/अणा(ड़ा)ची/दछिनी** नामक सुगन्धित फल, **कपूर, पिपरमिन्ट** आदि सुगन्धिद्रव्य, आमक सुखायल आँठीक गुद्दा, **हरीड़** आदि पदार्थ व्यवहृत होइत अछि। विआहमे वर-कनिआकेँ एक दोसराक हाथसँ हरीड़ पान खोअयबाक विधान छैक। आमक सुखायल आँठीक गुद्दाकेँ **पाको/पकुहा/पकोहा** कहल जाइत छैक।

आइकालि पानक संगे सुगन्धित तमाकुल खयबाक प्रचलन अछि। एहन तमाकुलकेँ **जर्दा** (**प्रसिद्ध कहबी :- पान बिना जर्दा की? माउगि बिना पर्दा की ??**) कहल जाइत छैक।

पानमे ऊपरसँ सटबाक पनी जकाँ अत्यन्त पातर सुगन्धित वस्तुकेँ **तबक** कहल जाइत छैक।

लोकगीतमे **दशोनहा** पानक उल्लेख भेटैत अछि (**कोसी गीत, पृ. 7**)। एहिमे दसटा पदार्थ मिलाओल रहैत छल होयतैक।

साधारण पानकेँ **सादा** ओ मधुर स्वादयुक्त पदार्थ मिलाओल पानकेँ **मीठा** कहल जाइत छैक। मीठा पान सम्प्रति पानक पातक एक गोट प्रभेदक रूपमे सेहो प्रचलित अछि जे बड़क पात सदृश मोट होइत अछि।

पान रखबाक वंशरचित छोट सन पथियाकेँ **पनबसना/पनपथिया** कहल जाइत छैक। पान रखबाक धातुक छोट सन पात्रकेँ **पनबट्टा** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **पनबट्टी** होइत अछि। पानक खिल्ली रखबाक धातु-पात्रकेँ **खिलबट्टा** कहल जाइत छैक। एकर छोट प्रभेद **खिलबट्टी** होइत अछि। वंशरचित पनबट्टाकेँ **बेलहरा/बेलहारा/बिरहारा/बिरहारा** कहल जाइत छैक। लगाओल पान प्रस्तुत करबाक समतल आधार ओ किञ्चित घेरायुक्त धातुक पात्रकेँ **सराइ/सराय/छीप** कहल जाइत छैक।

मुँहमे पान लेला उत्तर लेर संयुत पानक रसकेँ **पिरकी/पीक/पीत** कहल जाइत छैक। अधिक पान खयनिहार व्यक्तिकेँ **पनखौक/पनखौका** कहल जाइत छैक।

पासी

आधार सामग्री : पासी जाति ताड़ ओ खजूरक गाछसँ नशायुक्त पेयक उत्पादन करैत छथि। ई पेय एहि दूनू गाछक रस होइत अछि । एहि रसकेँ **ताड़ी** कहल जाइत छैक।

एक सालक खजूरक गाछ **खील** कहल जाइत छैक। खीलकेँ गर्दनि लग छिलला उत्तर **खिलकट्टी** कहल जाइत छैक। तीन सालक रस चुअयबा योग्य खिलकट्टी गाछकेँ **पौ** कहल जाइत छैक।

एक सालक ताड़क गाछकेँ **खगड़ा/खगड़ी/खँगड़ा/खँगड़ी/खँघड़ी** कहल जाइत छैक। तीन सालक ताड़ी चुआबय योग्य ताड़क ओहन गाछ जाहिसँ ताड़ी चुआओल जाइत छैक, से **जोता** कहल जाइत छैक। ताड़ ओ खजूरक डंटी सहित पातकेँ **डल्ली** कहल जाइत छैक। तारक डल्लीक डंटीवला भागकेँ **डमखोरा** कहल जाइत छैक। एकर पत्तावला भाग **छज्जा/छाजा** कहल जाइत छैक।

ताड़ दू तरहक होइत छैक। मरदना गाछमे करीब एक हाथ नाम पुष्पयुक्त डाँट निकलैत छैक। एहन गाछकेँ **फुलदो/फुलताड़/बलतार** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। पुष्पयुक्त डाँटकेँ **डाँट/डंटी/नेढ़ा** कहल जाइत छैक। फुलदोमे आसिन ओ बैसाखमे नेढ़ा फुटैत छैक।

जाहि ताड़क गाछमे फऽर निकलैत छैक, ओकरा **घौरहा/फल्ला/फलतार** कहल जाइत छैक। एहिमे बैसाख मासमे फऽर निकलैत छैक। एकरा मौगियाही ताड़ बूझल जाइत छैक। एकर फऽरकेँ **बजरबट्टू** कहल जाइत छैक। बजरबट्टूक भीतरी

भागमे दू अथवा तीनटा चौखूट ओ मोलायम खाद्य फलकेँ **को/कोआ/तड़कुन/ताड़कुन** कहल जाइत छैक।

फलतार अथवा फलदोमे फऽर अथवा नेढ़ा निकलबाक क्रिया **फूटब** होइत अछि। मध्यवर्ती डाँट सहित फऽर अथवा नेढ़ाक समूहकेँ **घौर** कहल जाइत छैक।

ताड़ ओ खजूरक उपरका भाग जतऽसँ नव पातक अंकुर फुटैत छैक, से **बीड़/कलगी** कहल जाइत अछि। बीड़क लऽगवला गाछक मोलायम ओ स्वादिष्ट भागकेँ **गोभा/खोआ** कहल जाइत छैक। बीड़ ओ ओकर परित: पातक समूहकेँ **मौड़** कहल जाइत छैक।

ताड़ ओ खजूरक गाछीकेँ **बगात** कहल जाइत छैक। खजूरक वनकेँ **खजुरबन्नी** कहल जाइत छैक। गाछपर चढ़िकऽ काज कयनिहार पासीकेँ **गछवाह** कहल जाइत छैक। जाहि गाछसँ ताड़ी नहि निकलैत छैक ओकरा **बाँझ/बहिरा/कोढ़ी/कोढ़िया/अनाढु** (ग्रि.) /**बाँझी सिसवा** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

औजार : गाछकेँ छेबबाक हेतु पासीक दाँतविहीन हँसूकेँ **हँसुआ/तरछेबा** कहल जाइत छैक। तारक घौरकेँ कटबाक हेतु तरछेबाक छोट आकृतिवला प्रभेदकेँ **घौरहा हँसुआ/हँसुली** कहल जाइत छैक। तरछेबाक धारकेँ तीक्ष्ण करबाक हेतु प्रयुक्त मुट्ठीमे अँटबा योग्य काठक दंडकेँ **लौठा/लेओठा/पिजौना/बलुअठ/बलेठा/सोंटा** कहल जाइत छैक।

गाछपर चढ़ैत काल पासी दूनू पैरकेँ तारक पातसँ बनल एकटा वलय द्वारा सम्बद्ध रखैत अछि। एकरा **मकरी/फँदिया** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। खजूरक गाछकेँ छिलबाक समय पासीक शरीर जाहि रस्सीपर ओँठङल रहैत छैक से **डड़कस/ डड़मास/डड़बाँस/डँड़बाँस** कहल जाइत छैक।

खजूरसँ चुबैत तारीकेँ एकत्र करबाक हेतु करीब एक फुट नाम, छोट मुँहवला गोलाकार माटिक पात्रकेँ **लबनी/नमनी/उढ़रा/ओढ़रा** कहल जाइत छैक। तारमे पैघ मुँहवला लबनीक उपयोग होइत छैक। एकरा **कटिया/चुक्कड़** कहल जाइत छैक। पैघ लबनीकेँ **तरकट्टी/हथओना/लबना/नमना** कहल जाइत छैक। एहिमे विभिन्न बासनमे जमा भेल तारीकेँ ढारि कऽ नीचा उतारल जाइत छैक। बासन सभक गर्दनिमे नारियरक रस्सी बान्हल रहैत छैक। रस्सी ऊपर दिस अर्द्धवलयक रूपमे लागल रहैत छैक। एकरा **फन्नी/फनकी फनुकी/रौना** (ग्रि.) कहल जाइत छैक।

खाली पात्र गाछपर लऽ जयबाक हेतु एवं भरल पात्रकेँ नीचाँ अनबाक हेतु पासीक डाँड़क पृष्ठभागमे लटकैत लोहाक टेढ़ काँटाकेँ **अँकुरा** (ड़ा)/**अँकोरा** (ड़ा)/ **अँकुसी** कहल जाइत छैक । अँकुरा पासीक डाँड़मे बान्हल कपड़ाक

किञ्चित चाकर पट्टीमे लटकैत रहैत छैक। एकरा **फीता/डाँड़ा/डेंड़कस/लेवार/पेटार** कहल जाइत छैक।

बेचबाक हेतु ताड़ीकेँ माटिक जाहि पैघ घैलमे एकत्र कयल जाइत छैक से **महाली** कहल जाइत छैक। महालीसँ ताड़ी छनबाक हेतु ओकर मुँहपर लागल कपड़ाकेँ **छनान** कहल जाइत छैक। ग्रियर्सन मुँहपर कपड़ा लागल महालीकेँ छनान कहने छथि (**बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ. 137**)।

ताड़ी रखबाक हेतु माटिक सामान्य पात्र **तौला/कुण्डा/कूँड़ा** आदिक सेहो व्यवहार होइत अछि। ग्राहककेँ ताड़ी लोटाक आकृतिक माटिक बासनमे देल जाइत छनि। एहि बासनकेँ **कटिया/जोरबा (ग्रि.)/बररिया (ग्रि.)/गोलवाँ (ग्रि.)** कहल जाइत छैक। कटियासँ ढारि-ढारि कऽ ताड़ी माटि अथवा शीशाक नाम ओ गँहीर छोट पात्रमे राखि पीअल जाइछ, जकरा **गिलास** कहल जाइत छैक।

ताड़ी नपबाक हेतु माटिक पात्र सभकेँ **नप्पा/नापा/नपना** कहल जाइत छैक। सबसँ छोट नपनाकेँ **गुड़की/गोलकी** (सं. गोल्लकः, गल्लर्कः) कहल जाइत छैक। गोलकीसँ दुन्ना ताड़ी अँटऽवला नपनाकेँ **अधचौठी**, अधचौठीक दुन्ना ताड़ी अँटऽवला नपनाकेँ **पचक्का/पचक्की/चौठी**, चारि चौठी ताड़ी अँटऽवला अत्यन्त लघु आकृतिक घैलक सदृश नपनाकेँ **घैला/घैली/बेचाही** कहल जाइत छैक। नाम आकृतिक घैलीकेँ **दोकानी/बम्मा** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : खजूरक ताड़ीकेँ **खजुरिया** सेहो कहल जाइत छैक। ताड़ीक हेतु **आकाश जल** शब्दक सेहो प्रचलन अछि।

ताड़ ओ खजूरक गाछसँ रस बहार करबाक क्रिया **ताड़ी चुआयब** होइत अछि। निशाक अवधिमे चूल निशाँविहीन ताड़ीकेँ **नीरा/मिट्ठी ताड़ी** कहल जाइत छैक। रौद लगलासँ ताड़ीमे फेन आबऽ लगैत छैक आ ओ निशाँकारक भऽ जाइत छैक। एहि ताड़ीकेँ **खट्टी ताड़ी** कहल जाइत छैक। बैसाख मासक फुलदोक ताड़ीकेँ **बैसक्खा** ओ आसिन मासक फुलदोक ताड़ीकेँ **बसन्ती** कहल जाइत छैक।

ताड़ी चुअयबाक विधि : खजूरक गाछसँ ताड़ी चुअयबाक हेतु ओकर गर्दनि लगक भागकेँ गँहीर कटोरीक रूपमे छिलबाक क्रिया **छेबब** होइत अछि। तेसरा दिनपर ओहि भागकेँ छीलि पातर-पातर परत पृथक् करबाक क्रिया **पहटब** होइत अछि। दु-तीन दिन पहटला उत्तर छीलल भागसँ खजूरक रस चूबऽ लगैत छैक। सभटा रस नीचा दिस एक ठामसँ चूबय तेँ छीलल भागक निचला भागमे जीहक आकृतिक बनावटि बना देल जाइत छैक जकरा **जिभिया** कहल जाइत छैक।

ताड़क गाछसँ ताड़ी प्राप्त करबाक हेतु ओहिपर चढ़िकऽ पासीक धांगधुंग करबाक क्रिया **कमैनी-खटैनी** होइत अछि। कमैनी-खटैनीक फलस्वरूप ताड़मे घौर निकलब आरम्भ भऽ जाइत छैक। घौर निकललाक बाद ओकर अग्रभागक तीनटा फल काटि कऽ फेंकि देबाक क्रिया **छोपब** होइत अछि। छोपलाक बाद कटलाहा भागसँ ताड़क रस चूबऽ लगैत छैक। फुलदोक नेढ़ाक अग्रभागकेँ दूटा फट्ठीक सहायतासँ दाबिकऽ मोलायम कयल जाइत छैक तथा दुरनीपर कनेक छओ लगा देल जाइत छैक। सप्ताह भरि ई प्रयत्न कयला उत्तर नेढ़ाक अग्रभागमे द्रव दृष्टिगोचर होयबाक क्रिया **घमब** होइत अछि। घमलाक बाद नेढ़ासँ चूबैत ताड़ीकेँ माटिक बासनमे एकत्र कऽ लेल जाइत छैक।

ताड़सँ तीन-चारि मास धरि निरन्तर ताड़ी चूबैत रहैत छैक, मुदा खजूर सप्ताह भरिक बाद ताड़ी देब बन्द कऽ दैत छैक। ताड़ी देब बन्द करबाक क्रिया गाछक **बिसुखब** होइत अछि।

ताड़ीक मैलीकेँ **गादि/गदरी** कहल जाइत छैक। नीराकेँ खट्टी ताड़ीमे बदलबाक हेतु ओहिमे गादिक जोड़न देल जाइत छैक। जोड़न देलासँ ताड़ीक निशाँकारक होयबाक क्रिया **पाकब** होइत अछि।।

ताड़ी बेचबाक स्थान **पसीखाना/तड़ीखाना/ताड़ीखाना** होइत अछि। आइकाल्हि एहि हेतु **पीआफिस/पी.एन. कालेज** शब्द सेहो प्रचलित अछि। ताड़ीक संगे खाद्य चटकार पदार्थकेँ **चखना/चिखना** कहल जाइत छैक।

ताड़ीक उत्पादनमे सह-उत्पादनक रूपमे ताड़ ओ खजूरक **डल्ली** भेटैत अछि। डल्लीक जड़िवला भागकेँ चूड़ि कऽ **कूच/कूची/कुच्ची** बनैत अछि। एहिसँ जौंताक चिक्कस आदि झाड़ल जाइत छैक। ताड़क डल्ली ओ पातसँ बनल हवा करबाक साधनकेँ **पंखा** कहल जाइत छैक। ताड़क पातकेँ चीड़िकऽ बिनला पर ओछयबाक साधन बनाओल जाइत छैक। एकरा **तराय** कहल जाइत छैक। ताड़क पात केँ बीनि कऽ हवा करबाक साधन **बीअ(य)नि** सेहो बनाओल जाइत अछि। खजूरक पातकेँ बीनिकऽ बनाओल ओछयबाक साधनकेँ **चटाइ/पटिया** कहल जाइत छैक।

ताड़क पातकेँ **तड़िपत** कहल जाइत छैक। प्राचीन कालमे ई कागज जकाँ व्यवहृत होइत छल।

पासी जाति यद्यपि ताड़ीक व्यवसाय करैत अछि मुदा एकर जातीय नामक मूल **पाशिक** शब्द एकर शिकारी प्रवृतिक द्योतक अछि। पासीमे ई प्रवृति एखनहुँ पाओल जाइत अछि। ई पंछीक शिकारक हेतु जाल(पाश)क उपयोग करैत अछि आ गाछपर ओकरा लगाकऽ पंछी सभकेँ फसबैत अछि। एकर जालकेँ **हसेल** कहल

जाइत छैक। इसेल जालक सहायतासँ पासी **बादुर**, **पलंका**, **खोपैल**, **हरियल**, **बगेरी**, **परबा/कबूतर**, **सिल्ली**, **बटेर** आदि पंछीकेँ बझाय खाद्य सामग्रीक रूपमे उपयोग करैत अछि।

सूड़ी ओ कलवार

सूड़ी ओ कलवार जाति **मद्य/मदिरा** नामक उत्तेजक पेयक उत्पादन करैत अछि। एहि पेयक उत्पादन भारतमे अवैध अछि तेँ पारम्परिक विधिसँ एकर उत्पादन चोरा-नुका कऽ होइत अछि। नेपालक मैथिली भाषी क्षेत्रमे एहि पेयक उत्पादन पारम्परिक विधिसँ होइत अछि। आइकाल्हि आधुनिक यंत्रक सहायतासँ सेहो एहि पेयक निर्माण कयल जाइत रहल अछि। एकर विक्रीमे सेहो सूड़ी ओ कलवार जातिक वर्चस्व देखल जाइत अछि । मुदा क्रमहि ई व्यवसाय जातिनिरपेक्ष भेल जा रहल अछि।

आधार सामग्री : मदिरा बनबाबक हेतु मुख्य आधार सामग्री अछि गुड़ ओ महुआ। **गुड़/मीठा/मिट्ठा** कुसियारक रससँ बनाओल जाइत अछि। **महु/महुआ** प्रसिद्ध वृक्ष विशेषक फूल थिक।

चाउर, **गहूम**, **मकइ**, **जनेर**, **मडुआ** आदि अन्नक चिक्कस तथा भातकेँ सड़ाकऽ सेहो मदिरा बनैत अछि। सुगन्धित ओ सुस्वादु मदिरा बनयबाक हेतु **केरा**, **बेल**, **समतोला**, **नारंगी**, **आम**, **कटहर** आदि फलक गुद्दाकेँ सेहो मथिकऽ महुआक संगे फैंटि देल जाइत छैक। सौंफ आदि सुगन्धित मशाला एवं जंगली जड़ी-बूटी सेहो मदिरा बनयबाक क्रममे व्यवहृत होइत छैक।

औजार : देसी मदिराकेँ **दारू** ओ आयातित मदिराकेँ **शराब** कहल जाइत छैक। एकर प्राचीन नाम **मधु** अछि। एकर निर्माणक क्रिया **दारू चुआयब** होइत अछि। दारू चुअयबाक ओ बेचबाक स्थानकेँ **भट्ठी/दारूभट्ठी/गद्दी/कलाली** कहल जाइत छैक।

गुड़केँ पानिमे घोरि महुआ अथवा अन्य पदार्थक संग सड़यबाक हेतु माटिक पैघ तौलाकेँ **माट** कहल जाइत छैक। सम्प्रति एकर स्थानपर व्यवहृत लोहक चदराक पैघ बेलनाकार बासनकेँ **ड्राम** कहल जाइत छैक। ड्राममे देल पदार्थकेँ लारबाक हेतु बाँसक पैघ दंडक अग्रभागमे ठोकल चाकर तकथायुक्त औजारकेँ **खड़ुआ** कहल जाइत छैक ।

ड्राममे तैयार पदार्थकेँ तामक पैघ तौलामे राखि गर्म कयल जाइत छैक । एकरा **देग/डेग** कहल जाइत छैक । डेगक ऊपर माटि अथवा तामक छोट सन पेनीविहीन कोहा राखल रहैत छैक। एकरा **डिमनी/डिबनी** कहल जाइत छैक । डिमनीक ऊपर माटि अथवा तामक कटियाक आकृतिक बासन औन्धिकऽ राखल रहैत छैक । एकरा **औन्ह** कहल जाइत छैक । तामक रहने एकरा **तामी/तमियाँ** कहल जाइत छैक । औन्हक पार्श्वमे एकटा छेद रहैत छैक। छेदमे एकटा तामक पैघ ओ फोंक दंड लागल रहैत छैक। एकरा **नऽर/नऽरी/नल्ली/पौनल्ली/पनाली/पाइप** कहल जाइत छैक ।

पौनल्लीक दोसर छोर चूल्हासँ दूरपर राखल एकटा औन्हमे सम्बद्ध रहैत छैक। एहि औन्हकेँ **चिमनी/चोंगर** कहल जाइत छैक । चोंगर एकटा छोट सन तामक तौलापर औन्हल रहैत छैक । एहि तौलाकेँ **डिंगरी** कहल जाइत छैक । डिंगरीक निचला भागमे एकटा नली लागल रहैत छैक । एकरा **मधनरी** कहल जाइछ। मधनरीक दोसर छोर माटिमे खूनल खाधिमे राखल एकटा बासनक मुँहपर खुलैत छैक । एहि बासनकेँ **छनान/टाँक/मटुका** कहल जाइत छैक ।

डिंगरी नादिक आकृतिक लोहक पैघ बासनमे राखल रहैत छैक । एहि बासनमे ठंढा पानि भरल रहैत छैक। नरी ओ औन्हक मिलनविन्दुपर दूनूकेँ परस्पर कसिकऽ सम्बद्ध करबाक हेतु व्यवहृत लत्ताक टुकड़ीकेँ **नेट** कहल जाइत छैक ।

डेगकेँ गर्म करबाक हेतु व्यवहृत चूल्हिकेँ **भट्ठी** कहल जाइत छैक । एहिसँ राख निकालबाक हेतु लोहक पैघ करऽछुकेँ **सऽरी** कहल जाइत छैक ।

बेचबाक हेतु दारू काठक ढोलक आकृतिक बासनमे राखल जाइत छैक। एहिमे दारू भरबाक हेतु उपरका भागमे एकटा छेद रहैत छैक आ दारू निकालबाक हेतु निचला भागमे एकटा नली लागल रहैत छैक। एहि बासनकेँ **पीपा/टिप्पा** कहल जाइत छैक । एकर निचला नलीकेँ **टोंटी** कहल जाइत छैक ।

दारू रखबाक हेतु सुराहीक आकृतिक चीनी मिट्टीक बासनकेँ **करबा/करावा/करेबा** कहल जाइत छैक । आइकाल्हि लोहक चदरा ओ प्लास्टिकसँ बनल **टिन** सेहो दारू रखबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि।

दारू नपबाक पात्रकेँ **नप्पा/नपना** कहल जाइत छैक । ई सभ लोहक पातर चदरासँ बनल रहैत छैक आ गिलासक आकृतिक होइत छैक। एकर उपरका भागमे दारू ढारबामे सुविधाक हेतु लोल जकाँ बनल रहैत छैक तथा पार्श्वमे एकरा पकड़बाक हेतु चदरेक मूठ बनल रहैत छैक। एक सेर दारू अँटऽवला नपना **सेरही**, आधा सेरवला **असेरा** ओ पाओ भरिवला **पौआ** कहल जाइत छैक ।

दारू पीबाक हेतु माटिक छोट पात्र सभ **कुलफी/कुल्फी**, **चुक्कड़**, **चुकड़ी**, **कपटी**, **गुड़की**, **कुल्हिया** आदि होइत अछि। शीशाक नाम आकृतिक छोट मुँहवला बासन सभ सेहो दारू पीबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि। एकरा **बोतल** कहल जाइत छैक ।

उत्पादन : दारू बनयबाक हेतु ड्राममे पानि ओ गुड़ राखि संचालित कऽ घोरि देल जाइत छैक। गुड़क घोरमे गुड़क बराबर तौलमे महुआ धऽ देल जाइछ। गुड़ ओ महुआक एहि मिश्रणकेँ **कसौंजी/कसौंझी/कसौनी** कहल जाइत छैक ।

कसौंझीकेँ चौबीस घंटाक बाद पुनः लारल जाइत छैक आ आवश्यकतानुसार अधिक पातर करबाक हेतु एहिमे पानि मिला देल जाइत छैक । एहि प्रक्रियाकेँ **भरती करब** कहल जाइत छैक ।

दू-तीन दिन धरि भरती करैत रहलापर कसौंझीमे फेन आबऽ लगैत छैक आ एहिसँ सड़ाइन गंध आबऽ लगैत छैक। एहि स्थितिमे कसौंझीकेँ **पाकल** बूझल जाइत छैक आ ई **रास** कहबैत अछि।

रासकेँ डेंगमे देबाक क्रिया **बोझाइ करब** होइत अछि। रासक सार तत्व जाहिसँ दारूक उत्पादन होइछ, से **अरक/अर्क** कहल जाइत अछि। डेंगमे देल रासकेँ गर्म कयलासँ ओकर अर्क भाफक रूपमे पौनल्ली होइत चोंगरमे जा कऽ ठंढाइत छैक आ द्रव रूपमे मधनरी होइत छनानमे चुबैत छैक। एही द्रवकेँ **दारू** कहल जाइत छैक। अर्क समाप्त भऽ गेलापर दारू चूब बन्न भऽ जाइत छैक। तखन नव रासक बोझाइ कयल जाइत छैक।

डेंगमे बचल अर्कविहीन अवशिष्ट तरल पदार्थकेँ **डाढ़ा/नेड़रा/गोरा (व्रि.)** कहल जाइत छैक । एहिमे पुनः महुआ दऽ रस तैयार कयल जाइत छैक। डेंगमे बचल महुआ आदिक ठोस अवशेषकेँ **सीठ/सीठी/सिट्ठी** कहल जाइत छैक । एकर उपयोग माल-जालक खाद्यक रूपमे होइत छैक।

महु ओ गुड़क श्रवणसँ बनल दारूकेँ **कस/ठर्रा** कहल जाइत छैक । अन्न अथवा फलकेँ सड़ाकऽ बनाओल दारू ओही अन्न अथवा फलक दारूक नामे अभिहित होइछ-जेना केराक दारू, महुआक दारू आदि।

दारूकेँ पातर करबाक हेतु ओहिमे मिलाओल पानिकेँ **साजन/छावन** कहल जाइत छैक। पानिक प्रतिशत मात्राक आधारपर दारूकेँ सत्तर, पचास आदि कहल जाइत छैक ।

अत्यधिक पातर कयल दारूकेँ **दोकानी** कहल जाइत छैक। दोकानीसँ कम पातर दारूकेँ **दुधिया** कहल जाइत छैक। दुधियासँ मोट दारूकेँ **दोबारा** कहल जाइत छैक। दोबारासँ मोट दारूकेँ **सौंफी/सेबारा** कहल जाइत छैक। सौंफीसँ कड़ा दारूकेँ **कसमौर** कहल जाइत छैक। कसमौरसँ कड़ा दारूकेँ **महरदार** कहल जाइत छैक ।

दारूकेँ ताड़ीक संगे फेंटिकऽ पीबाक सेहो प्रचलन अछि। ताड़ी ओ दारूक मिश्रणकेँ **झक्का/झग्गा** कहल जाइत छैक ।

भट्ठी चलौनिहारकेँ **भट्ठीदार/भट्ठीमान/भटबाह** कहल जाइत छैक । भटबाहक मजदूरकेँ **गद्दीवान** कहल जाइत छैक । दारूक सरकारी गोदामकेँ **अपकारी/आबकारी** कहल जाइत छैक । दारू पिउनिहारकेँ **पियक्कर/पियाक/शराबी/दरुपीबा** कहल जाइत छैक । दारू पीला उत्तर शारीरिक ओ मानसिक विकृतिकेँ **निशाँ** कहल जाइत छैक । दारू पीबाक क्रममे व्यवहृत चटकार खाद्यकेँ **चिखना/चखना** कहल जाइत छैक ।

लहेरी

स्त्रीगणलोकनि पहुँचीपर एकटा वलयाकार सामग्री सोहाग(सौभाग्य)क प्रतीकक रूपमे धारण करैत छथि । एकरा **चूरि (ड़ि)/चूड़ी/चुरिया/चुड़िला/चुलि** (वर्ण.) कहल जाइत अछि । ई प्रसाधन सामग्री काच, रबर, लाह ओ अन्य कृत्रिम रसायनसँ बनैत अछि। लाहक चूड़ीकेँ **लहठी** कहल जाइत छैक । लहठी बनयबाक ओ बेचबाक व्यवसाय लहेरी जातिक पारम्परिक व्यवसाय थिक।

आधार सामग्री : लाहक चूड़ी बनयबाक मुख्य आधार सामग्री कीटविशेष द्वारा उत्पन्न पदार्थ **लाह/लाख** होइत अछि। मिथिलामे सेहो एहि कीटक पालन आ लाहक उत्पादन होइत छल (**एन एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रक्ट आफ पूर्णिया, पृ-399-400**)।

आइकालि लहेरी **चपड़ा** ओ **चौड़ी** नामक आयातित पदार्थसँ लाहक चूड़ी बनबैत छथि। चपड़ा बदामी रंगक पारभासी गोल टिकियाक रूपमे भेटैत छैक या चौड़ी बालु जकाँ पातर-पातर दानाक रूपमे ।

चपड़ा ओ चौड़ीमे अनेक प्रकारक वस्तु फेंटल जाइत छैक। मिसरीक ढेला जकाँ एकटा पदार्थ **रंजक/रंजन** होइत अछि। ई हल्का बदामी रंगक होइत छैक आ गर्म कयने सुगमतापूर्वक पघीलि जाइत छैक। चपड़ामे बरक्कतिक हेतु उज्जर रंगक एकटा पाउडर फेंटल जाइत छैक। चौड़ीमे बरक्कतिक हेतु खेतक पातर कयल माटि फेंटल जाइत छैक। चपड़ा ओ चौड़ीमे पीयर रंगक एकटा पाउडर सेहो फेंटल जाइत छैक। एकरा **पेमर** कहल जाइत छैक। चपड़ाकेँ रंगीन करबाक हेतु ओहिमे सफेद, गुलाबी, बदामी, फिरोजी, आसमानी, हरियर, बैंगनी, नारंगी, चम्पइ आदि विविध रंगक चूर्ण सेहो फेंटल जाइत छैक। रंगमिश्रित गलल चपड़ाक पिंडकेँ ठेढाकऽ एकटा खरहीक अग्रभागमे साटि आगिपर गर्म कऽ चूड़ीपर ओकर पातर परतक लेप चढ़ाय चूड़ीकेँ **रंगीन** कयल जाइत छैक ।

लाहक चूड़ीमे सुन्दरताक हेतु बाह्य भागमे शीशा ओ प्लास्टिकक विभिन्न आकृतिक टुकड़ी सभ साटल जाइत छैक। एहि टुकड़ी सभकेँ **नग/नगीना/मीना**

/हीरा/काज कहल जाइत छैक। जौक आकृतिक नगकेँ **जौ**, चीरल जौक आकृतिक नगकेँ **जौ के दाइल**, चौखूट नगकेँ **चउँकी**, बेलनाकार नगकेँ **हाड़ी/पोत/हरबा**, छिद्रयुक्त नाम नगकेँ **नलिया/ललिया/पाइप** ओ मोतीक आकृतिक नगकेँ **मोती** कहल जाइत छैक।

चौड़ीसँ बनाओल चूड़ीमे अनेक रंगक चमकसँ युक्त कागत साटल जाइत छैक जकरा **पन्नी** कहल जाइत छैक। धातुक अत्यन्त पातर पन्नीकेँ **डाक** कहल जाइत छैक।

औजार : चपड़ा ओ चौड़ीकेँ गर्म करबाक हेतु लोहियाक एवं चौड़ीकेँ कूटिकऽ पातर करबाक हेतु हथौड़ीक प्रयोजन होइत छैक। पघिलला उत्तर गील चपड़ा ओ चौड़ीकेँ सुसुममे दण्डाकार स्वरूप देबाक हेतु एवं ओहि दण्डसँ पातर-पातर छड़ निकालबाक हेतु व्यवहृत बेलबाक काष्ठाधार **पिढ़िया** होइत अछि। बेलबाक हेतु काठक नोंखगर मुङरीकेँ **हत्था** कहल जाइत छैक।

चपड़ा ओ चौड़ीक बेलनाकार दण्डकेँ **सिम्हा/सुम्हा/टिकिया** कहल जाइछ। सुम्हाकेँ पघिलाकऽ नमनशील करबाक हेतु लकड़ीक कोइलाक आगि देखाओल जाइत छैक। आगि रखबाक माटिक बासनकेँ **ढाकन/ढकना/अँगेठा/अँगेठी** कहल जाइछ। आगिकेँ फुकबाक हेतु प्रयुक्त बाँस अथवा लोहक फोंफीकेँ **फुकाठी/फुखाठी/नरी/नारी/लारी** कहल जाइत छैक।

सुम्हासँ निकालल पातर दंडकेँ वृत्ताकार मोड़ि कऽ जोड़लापर बनल चूड़ीक आरंभिक स्वरूपकेँ **डऽर** कहल जाइत छैक। डऽरकेँ गोल करबाक हेतु काठक जाहि बेलनाकार औजारपर कसल जाइत छैक, से **कून/कुन्द** कहल जाइत छैक।

पन्नी कटबाक हेतु व्यवहृत रन्दाक फल्लीकेँ **पनिकट्टा** कहल जाइत छैक। पन्नीकेँ सिमेन्टक जाहि चाकर आधारपर राखि काटल जाइत छैक से **पनिपोतना** कहल जाइत छैक। डऽरपर पन्नी बैसेबाक क्रिया **मँजैया** होइत अछि।

कूनपर चढ़ाओल डऽरपर रंगकेँ सर्वत्र समान मोटाइक करबाक हेतु जाहि खरहीक टुकड़ीसँ डऽरपर दबाब दैत कूनकेँ नचाओल जाइत छैक, से **सुरड़ा** कहल जाइत छैक।

रंग अथवा पन्नी लगओलाक बाद परस्पर सम्बद्ध डऽर सभकेँ पृथक्-पृथक् करबाक हेतु जाहि लोहक पत्तरक व्यवहार होइत छैक, से **चिड़नी** कहल जाइत छैक। गर्म डऽर सभ परस्पर सटि गेलापर ओकरा सभकेँ पृथक् करबाक हेतु व्यवहृत पत्तरकेँ **खोलनी** कहल जाइत छैक। खोलनी द्वारा डऽर सभकेँ पृथक् करबाक क्रिया **कटैया** होइत अछि।

गोल डऽरकेँ चपता करबाक हेतु गर्ममे ओकरा लोहाक जाहि मोट पत्तरक सहायतासँ दबाओल जाइत छैक से **खूरा** कहल जाइत छैक। खूरासँ डऽरकेँ चपता करबाक क्रिया **पलसब** होइत अछि।

पन्नीवला चूड़ीपर फूल काढ़बाक हेतु विभिन्न आकृतिक खोधामायुक्त लोहक औजार सभकेँ **साँचा/फर्मा/गोबना** कहल जाइत छैक। साँचाक दबाबसँ चूड़ीपर फूल काढ़बाक क्रिया **गोबब** होइत अछि।

नगकेँ गर्म करबाक हेतु आधाररूप लोहक अत्यन्त पातर चदराकेँ **तउब/तबा/तावा** कहल जाइत छैक। चूड़ीपर नगकेँ बैसयबाक हेतु गर्म नगकेँ पकड़बाक हेतु व्यवहृत लोहक छोट चुट्टाकेँ **चुट्टी/सोहनी** कहल जाइत छैक।

लाहक चूड़ी बनयबाक व्यवसायकेँ **लहकम** कहल जाइत छैक।

चूड़ीक भीतरी व्यासक हेतु **फान** शब्दक व्यवहार होइत अछि। नेनाकेँ पहिरबा योग्य कम फानक चूड़ीकेँ **बचकानी** कहल जाइत छैक। बचकानी चूड़ीक नाप आनामे होइत अछि। दू आङुर व्यासक सबसँ छोट चूड़ीक फान चारि आना कहल जाइत छैक। दू आङुरसँ चारि आङुर फान बीच कनेक-कनेक अन्तरपर क्रमशः अधिक फानक बचकानी चूड़ी सभ बनैत अछि। एकरा सभक फानकेँ क्रमशः **छओ आना, आठ आना, दस आना, बारह आना** ओ **चौदह आना** कहल जाइत छैक। वयस्कक पहिरबा योग्य चूड़ीकेँ **सयानी** कहल जाइत छैक। सयानी चूड़ीमे सबसँ छोट चूड़ीक फान चारि आङुर होइत छैक। एकर फानकेँ **दू इंच** कहल जाइत छैक। दू इंचसँ क्रमशः अधिक फानवला चूड़ी सभक फानकेँ **दू आना दू, सवा दू, दू छओ** ओ **अढ़ाइ** कहल जाइत छैक।

दूनू हाथमे पहिरबा योग्य चूड़ीक समूहकेँ **जोड़** कहल जाइत छैक। सामान्यतः एक दर्जन चूड़ीक एक जोड़ होइत छैक। जोड़ लगयबाक क्रिया **खउल लगायब** होइत छैक। जोड़ लागल चूड़ीक समूहकेँ **खउल** आ जोड़सँ कम चूड़ीक समूहकेँ **बेखउल** कहल जाइत छैक।

जाहि चूड़ीपर नग बैसाओल रहैत छैक ओकरा **नगवला चूड़ी** कहल जाइत छैक। खोधामासँ युक्त चूड़ीकेँ **गोयुआ** कहल जाइत छैक।

सोनाक रंगक पीताभ चूड़ीकेँ **सिनहुली/सोनहुली/सोनौली** कहल जाइत छैक। हरिहर रंगक चूड़ीकेँ **सुगापंखी** आ नीलवर्णक चूड़ीकेँ **तीसीफूल** कहल जाइत छैक।

अत्यन्त मेहीं ओ चप्पत चूड़ीकेँ **कतरी/बाँही** कहल जाइत छैक। तीन चारिटा कतरीकेँ सम्बद्ध कऽ बनाओल चूड़ीकेँ **चैती** कहल जाइत छैक। चारू कात

एके रंगक पन्नीसँ युक्त चूड़ीकेँ **दरोबी** कहल जाइत छैक। मोट दरोबीकेँ **लगौरी** कहल जाइत छैक। जालक आकृतिक खोधामासँ युक्त गोंगुआ चूड़ीकेँ **जालबन्दी** कहल जाइत छैक। उत्तल खोधामावला चूड़ीकेँ **छन/छन्न** कहल जाइत छैक। बड़हरक फऽरक सदृश उत्तल ओ अवतल खोधामासँ युक्त चूड़ीकेँ **बड़हरी/बलेबर** कहल जाइत छैक। दूर-दूरपर एकटा कऽ नग बैसाओल चूड़ीकेँ **बसन्ती** कहल जाइत छैक। कनेक-कनेक अन्तरपर तीनटा कऽ नग बैसाओल चूड़ीकेँ **तिननगिया** कहल जाइत छैक।

एक हाथमे पहिरबा योग्य चूड़ीक समूहमे अग्रभाग ओ पृष्ठ भागक हेतु अपेक्षाकृत मोट चूड़ीकेँ क्रमशः **अगुआ/अगेली** आ **पछुआ/पछेली/पिछेली** कहल जाइत छैक। मध्यवर्ती अपेक्षाकृत पातर चूड़ी सभकेँ **सुरकी/सुर्खी/पहटा** (ग्रि.) कहल जाइत छैक। अगुआक स्थानपर खूब मोट आकृतिक कामदार चूड़ी सेहो धारण कयल जाइत छैक। एकरा **बाला/बलिया/बलया** कहल जाइत छैक।

एक हाथमे पहिरबा योग्य छओ गोट चूड़ीक समूहकेँ **छगोटिया** आ आठ गोट चूड़ीक समूहकेँ **अठगोटिया** कहल जाइत छैक। दू-तीन सुरकीक अन्तरपर देल कामदार चूड़ीकेँ **साज** कहल जाइत छैक। भिन्न-भिन्न रंगक दू-दू टा सुरकीसँ बनल चूड़ीक समूहकेँ **बन/बन्द** कहल जाइत छैक। लाल रंगक अगुआ-पछुआ ओ पीयर रंगक सुरकीसँ युक्त चुड़ीक जोड़केँ **सुखपुरिया** कहल जाइत छैक।

धियापुताकेँ पहिरबाक हेतु मोट ओ गोल चुड़ीकेँ **कड़ा** (सं. कटक)/ **मट्ठा/माठा/मठबा/मठिया** कहल जाइत छैक। सयानक हेतु कामदार कड़ाकेँ **कंगन/कग्गन/कंगना/कगना/कंगनी/कगनी/बौखा** कहल जाइत छैक। खुलल मुँहवला कड़ाक प्रभेद जकर दुनू छोर आँकुस जकाँ मोड़ल रहैत छैक, से **अँकुसी** कहल जाइत छैक। बाघक मुखाकृति बनाओल अँकुसीकेँ **बघनहा/बड़लहा/बड़लाहा** कहल जाइत छैक। धियापुताक हेतु लाहक एकटा खेलओना **लटटोपट्टो** होइत अछि (मि. भा. को., पृ. 311)। विआहमे लाहक डमरूक आकृतिक एकटा गहना वर-कनिआक गरामे पहिरयबाक परम्परा अछि। एहि गहनाकेँ **गुआमाला** कहल जाइत छैक।

हाथमे चूड़ी पहिरयबाक क्रिया **चूड़ी चढ़ायब** होइत अछि। हाथसँ चूड़ी बहार करब चूड़ी उतारब होइछ। **चूड़ी फूटब** ओ **चूड़ी फोड़ब** अशुभ अर्थमे प्रयुक्त होइछ लहेरी द्वारा बिनु मूल्यक जे चूड़ी शुभकामनाक रूपमे देल जाइत छैक। ओकरा **जुग/सोहाग/ सोहाग-भाग** कहल जाइत छैक। अनेक जोड़ चूड़ीकेँ एक ठाम बान्हि कऽ बनाओल समूहकेँ **तोरा** कहल जाइत छैक। फूटल लहठीक टुकड़ीकेँ **कटैल** कहल जाइत छैक। कटैल द्वारा माटि, लोह आदिक बासनक छेदकेँ रेसबाक क्रिया **लाहब/लहाठब** होइत अछि।

चमार

चमार जाति **गाय-बड़द, महींस, बकरी** ओ भेड़ीक त्वचासँ पैरमे पहिरबाक प्रसाधन सामग्री बनयबाक एवं विभिन्न प्रकारक वाद्य यंत्रकेँ छारबाक व्यवसाय करैत छथि।

आधार सामग्री : चमारक उपयोगी पशु सभकेँ **माल/माल-जाल/मवेशी/ माल-मवेशी** कहल जाइत छैक। प्राणी मात्रक त्वचाकेँ **चाम/चमड़ी/चरसा** कहल जाइत छैक। सद्यः ओदारल चामकेँ **खाल/खल्ला/खाला/खलड़ा** कहल जाइत छैक। सुखाल खालकेँ **छाल** कहल जाइत छैक। भेड़ी, बकरी आदि पशुक अपेक्षाकृत छोट चामकेँ **छलरी/खलरी** कहल जाइत छैक। व्यावसायिक चामकेँ **चमड़ा** कहल जाइत छैक।

परम्परासँ चमार स्वतः मुइल मालक चामक उपयोग करैत छथि। मृतप्राय एवं मुइल मालकेँ **डाङर** कहल जाइत छैक। मालक मुइल छोट बच्चाकेँ **गैना** कहल जाइत छैक आ अधेर भऽ मुइल मालकेँ **लाटि/लाइट** कहल जाइत छैक।

मुइल मालक चामकेँ **मुरदार/मुरदारी** कहल जाइत छैक। मुइल गाइक चामकेँ **गौखा/गोइटा** एवं मुइल महींसक चामकेँ **भैंसोटा/भैंसौटा/भैंसोठा/भैंसौठा** कहल जाइत छैक।

जीवित गाय-महींस आदिकेँ मशीन द्वारा कटबाक व्यापारकेँ **गौकस्सी** कहल जाइत छैक। गौकस्सीसँ प्राप्त चामकेँ मशीन द्वारा परिशुद्ध कयला उत्तर **लेदर** कहल जाइत छैक। आइकालि मशीन द्वारा निर्मित विभिन्न रंग ओ मोटाइक लेदर सभक व्यवहार चमारक व्यवसायमे होइत अछि। उज्जर रंग कयल लेदरकेँ **चरकी** आ पीयर रंगसँ युक्ताकेँ **साम्बर** कहल जाइत छैक। आयातित चमड़ाक सबसँ मोट प्रभेद **लेदर बोर्ड** कहल जाइत अछि। मोलायम चमड़ाक प्रभेद **सॉफ लेदर** होइत अछि। बड़दक चमड़ाकेँ **काफ लेदर**, महींसक चमड़ाकेँ **फाइबर** एवं मोलायम फाइबरकेँ **फोम फाइबर** कहल जाइत छैक।

मुइल मालक चाम छोड़यबाक क्रिया **खलब** होइत अछि। खलबाक स्थलकेँ **चमरखल्ला/चमड़ाही** कहल जाइत छैक। चमरखल्ला धरि पशुकेँ लऽ जयबाक हेतु प्रयुक्त वंशदंडकेँ **सँगिहाट/सँगियौंठ/साइंग/सँगरठा/सङरैठा/डाठ** कहल जाइत छैक।

चमड़ा खलबाक हेतु व्यवहृत खोंड़क आकृतिक लौह औजारकेँ **छूरी** कहल जाइत छैक। छूरीसँ चामकेँ उपयुक्त स्थान सभपर कटबाक क्रिया **बनछोलब/बनछोल करब** होइछ।

मालक मूड़ीवला भागक चामकेँ **मुरेमा/मुरेना/सिरमा/मथानी/मथामी/गलारी** कहल जाइछ । नाङरि दिसुक चामकेँ **नड़रेठ** कहल जाइत छैक। गोड़ीवला भागक चामकेँ **चेरुआ** कहल जाइत छैक। मालक शरीर पर घाव, ठेला आदि रहने चामक अकाजक भागकेँ **फिरता/निकाल/मडराजी** कहल जाइत छैक।

मालक रीढ़ लग उज्जर रंगक एकटा पदार्थ **पाढ़ी** होइत छैक। एहिसँ **ताँत/ताँति** बनैत छैक जकर उपयोग धुनिआक धनुषमे होइत छैक। ओकर आमाशयवला भागकेँ बरकाकऽ चर्बी नामक पदार्थ प्राप्त होइत छैक। कोनो-कोनो गाइक नाभि लग एकटा उज्जर रंगक दानेदार पदार्थ भेटैत छैक। एकरा **गोरोचन/गोलोचन** कहल जाइत छैक। मालक माथपर उगल दूटा ठोस दंडाकार अंगकेँ **सींघ** कहल जाइत छैक एवं ओकर शरीर जाहि ठोस वस्तुक ठट्ठरपर ठाढ़ रहैत छैक से **हड्डी/हाड़** कहल जाइत छैक।

रोआँ ओ मांसक किछु भाग सहित सद्यः खलल चरसाकेँ **कच्चा खाल** कहल जाइत छैक। खालक शुद्धीकरणकेँ **पकड़या/पकोइया/पकपकड़या** कहल जाइत छैक।

कच्चा खालकेँ चूनाक पानिमे हफ्ता धरि फुला देलाक बाद ओकर मांसवला भाग गलि जाइत छैक आ रोआँ सेहो अलगि जाइत छैक। रोआँकेँ खुर्पीक सदृश औजारक सहायतासँ खखोरि चामकेँ साफसँ धो लेल जाइत छैक।

पश्चात् चामकेँ मूजक डोरीक सहायतासँ धोकड़ीक आकृतिमे सीबि ऊँच पर राखल दंडमे टाङि देल जाइत छैक। धोकड़ीकेँ आम, महु, बबूर ओ पँड़ीक छालकेँ कूटि पानिमे घोरल रससँ भरि देल जाइत छैक। एहि रसकेँ **कस** कहल जाइत छैकै। कस सीथनिपरसँ होइत ठोपे-ठोपे नीचामे राखल नादिमे चुबैत छैक। सबटा रस चुबि गेलापर ओही रससँ फेर धोकड़ीकेँ भरि देल जाइत छैक। एक सप्ताह धरि ई प्रक्रिया चलौला उत्तर चाममे लाली आबि जाइत छैक आ ई पाकि जाइत छैक। एहि पाकल चामपर खारी नीमकक लेप लगा एकर व्यावसायिक उपयोग कयल जाइत छैक।

आनुषंगिक आधार सामग्री : चमारक व्यवसायमे चामक अतिरिक्त अनेक अन्य वस्तु सभक प्रयोजन होइत छैक। एहिमे सर्वप्रमुख अछि लोहक कील। एकरा **काँटी** कहल जाइत छैक। ई चाम सभकेँ परस्पर सम्बद्ध करबाक हेतु व्यवहृत होइत अछि। साधारण काँटीकेँ **तारकाँटी** कहल जाइत छैक। चाकर माथवला काँटीकेँ **कोकड़/बोमा** कहल जाइत छैक। गोल माथवला काँटीकेँ **गुलमेख** कहल जाइत छैक। अत्यन्त छोट आकृतिक काँटीकेँ **टिंगल/पिन/धन्नी** कहल जाइत छैक। अर्द्धचन्द्राकार काँटीक प्रभेदकेँ **लमनचूसिया** कहल जाइत छैक।

चामकेँ सटबाक हेतु गहूमक चिक्कसकेँ बरकाकऽ बनाओल लसिगर पदार्थकेँ **लइ/लेइ/खरी** (प्रा.) कहल जाइत छलैक। ई पूर्वमे प्रयुक्त होइत छल। भातक लइकेँ **लसम** (प्रा.) कहल जाइत छलैक। आइकाल्हि एकरा सभक स्थान पर **सुलेशनक** व्यवहार होइत छैक।

चामकेँ सीबाक हेतु कच्चा सूतक व्यवहार होइत छैक। एहिपर मोमक लेप लगाओल जाइत छैक।

जूताकेँ चमचम ओ मोलायम बनयबाक हेतु अंडी-तेलक उपयोग होइत छल। आब पॉलिसक प्रयोग होइत अछि।

औजार : चामकेँ कटबाक हेतु चाकर फलवला लोहक औजारकेँ **रापी/राँपी/खुरपी** कहल जाइत छैक। पैघ राँपीकेँ **राँपा/खुरपा** कहल जाइत छैक। खुर्पीसँ चामक सतहकेँ छिलबाक क्रिया **कतरब/खरेटब** होइत अछि। चामक कोरवला भागमे ढालू सतह बनयबाक क्रिया **झील झारब/झील उड़ायब** होइत अछि। काटि कऽ फेकल चामक बेकार भागकेँ **कतरन** कहल जाइत छैक।

बबूर अथवा शीशोक सारिल भागक टुकड़ा जकर उपयोग चाम कटबाक हेतु ठेहाक रूपमे होइत छैक से **पिढ़िया/पर(ड़) ही/पिर(ड़)ही/खरपा/पाटा/पहटा/फर(ड़)ही/परिकठ/सिल्ला** कहल जाइत छैक। गोल पहीकेँ **चक्का** कहल जाइत छैक।

चाममे छेद करबाक हेतु लोहक नोंखगर छड़सँ युक्त औजारकेँ **सूआ/सुतारी/आर** (प्रा.) कहल जाइत छैक।

चामकेँ सीबाक हेतु अग्रभागमे नकुसीसँ युक्त लोहाक औजारकेँ **कटरनी/टकना** (प्रा.) कहल जाइत छैक। चाकर धारवला कटरनीकेँ **तिजकरनी** (अं. स्टिच+करनी) कहल जाइत छैक। मध्यम आकृतिक कटरनीकेँ **मँझोला/मँझोली** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर कटरनीक प्रभेदकेँ **कलौसिया/कौलेसिया** कहल जाइत छैक। मोट तागसँ सिलाइ करबाक हेतु कटरनीक पैघ प्रभेदकेँ **वाल्टी** कहल जाइत छैक। कटरनी द्वारा दू प्रकारक सिलाइ कयल जाइत छैक। साधारण सिलाइमे चामकेँ सीबैत क्रमशः आगू बढ़ल जाइत छैक आ ई सिलाइ एकहरा होइत छैक। **जंजीरा सिलाइ** अपेक्षाकृत चाकर भागकेँ सम्बद्ध करैत छैक आ एहिसँ सूतक शृंखला जकाँ देखाइत छैक।

काँटीकेँ चाममे ठोकबाक हेतु लोहक बेलनाकार औजारकेँ **लोहड़ा/लोहँगा/लेहँगा/लेहोड़ा/लहोंगा/रचना/मुङरी/हथौड़ी/पिटना/टिपना** कहल जाइत छैक। एहिसँ चामकेँ सेहो पीटि कऽ चौरस कयल जाइत छैक। चामकेँ पिटबाक हेतु व्यवहृत काठक हथौड़ी केँ **हामर** कहल जाइत छैक। परस्पर समकोणपर स्थित

तीनटा लौहदंडसँ युक्त औजार जाहिपर राखि चाममे काँटी ठोकल जाइत छैक, से **लोहालास** कहल जाइत छैक। काँटी उखाड़बाक हेतु गाइक खुर सदृश अग्रभागवला औजारकेँ **जमूड़ जमूड़ा/जम्बूरा/जम्बूर** कहल जाइत छैक। चामकेँ पकड़ि कऽ तनबाक हेतु लोहाक लोलयुक्त औजारकेँ **सरसी** कहल जाइत छैक । टेढ़ लोलवला सरसीक प्रभेदकेँ **पिञ्चिस/पैञ्चिस** कहल जाइत छैक। रुखाणीक आकृतिक काठक औजारसँ चामक रोआँ उखारल जाइत छैक तथा ओकर सतहकेँ मोलायम कयल जाइत छैक। एहि औजारकेँ **बैंगा/बेओडा/बेऊँगा/ बेओँगी/बेओडी/पेलन** (ग्रि.) कहल जाइत छैक । मोम रखबाक हेतु प्रयुक्त बकरीक सिंघकेँ **तिजमन** कहल जाइत छैक ।

जूता छनबाक हेतु काठक आधारकेँ **साँचा/फरमा** कहल जाइत छैक । फरमासँ जूता निकालबाक हेतु प्रयुक्त नकुसीवला औजारकेँ **हुक/हुकवन** कहल जाइत छैक । जूताक रिंगक हेतु छेद करबाक हेतु व्यवहृत औजारकेँ **रिंगकटनी** आ रिंग बैसयबाक औजारकेँ **रिंगबैठौनी** कहल जाइत छैक। जूतामे पैरकेँ सुगमतापूर्वक पैसयबाक हेतु व्यवहृत औजारकेँ **पएकर** कहल जाइत छैक । जूतापर रंग चढ़यबाक औजार **कूची** होइत अछि। पालिस लगैबाक चाकर कुच्चीकेँ **ब्रश/बुरुस** कहल जाइत छैक । राँपी आदि लौह औजारक फऽलकेँ रगड़िकऽ पिजयबाक हेतु प्रयुक्त पाथरकेँ **लगौना** कहल जाइत छैक । कटरनी आदिकेँ रगड़िकऽ पिजयबाक हेतु चामक छोट सन टुकड़ीकेँ **चमौटी** कहल जाइत छैक । चामक सतहकेँ चिक्कन करबाक हेतु प्रयुक्त बालु साटल कागतकेँ **सरेस** कहल जाइत छैक।

उत्पादन : चमार चामसँ पैरमे पहिरबाक हेतु प्रयुक्त एकटा उपादान बनबैत अछि। एकरा **पनही/जुत्ता/जूता** कहल जाइत छैक । मृत मालक चामसँ बनल देशी जुत्ताकेँ **चमरउ** कहल जाइत छैक । जूताक अतिरिक्त ओ अनेक वाद्ययंत्रक चामवला भाग बनबैत अछि एवं चामसँ विविध उपयोगक सामग्री सभ सेहो बनबैत अछि।

जूताक अंग आ प्रकार : जूताक नीचावला भागकेँ **तल्ला/तल्ली/तऽरी** कहल जाइत छैक। तल्लीक अग्रभागकेँ **ठोकर** कहल जाइत छैक । जुत्ताक ऊपरवला भाग जे पन्जाकेँ झँपने रहैत छैक से **अपर** कहल जाइत छैक । अपरक चामक निचला भागमे लागल कपड़ा अथवा पातर चामक परतकेँ **अस्तर** कहल जाइत छैक । अपरमे फीताक नीचावला जीहक आकृतिक भागकेँ **जिम्भी/जिभिया** कहल जाइत छैक । जूताक तल्लीक सम्पूर्ण भाग पर ओछाओल पातर चामकेँ **शूतल्ला/शुपतल्ला/सुखतल्ला** कहल जाइत छैक । तल्ली ओ सुखतल्लाक बीचवला भागकेँ **बनबर** कहल जाइत छैक।

जुत्ताक तल्लीमे ऐंड़ी दिस चामक मोट तऽह देल रहैत छैक। एकरा **सोल/ऐंड़ा/ऐंड़ी** कहल जाइत छैक । बेसी ऊँच सोलकेँ **हील/हाइहील** कहल जाइत छैक । अपरक जे भाग ऐंड़ी दिस रहैत छैक ओकरा **अड्डी/पूरा** कहल जाइत छैक । अड्डीक मध्य भागक जोड़केँ झँपैत चामक टुकड़ीकेँ **मगजी** कहल जाइत छैक ।

बाम ओ दहिना पैरमे पहिरबाक दूटा जुत्ताक समूहकेँ **जोड़** कहल जाइत छैक। जोड़क प्रत्येक **पवाइ** कहल जाइत छैक।

अत्यन्त ऊँच अड्डीसँ युक्त जुत्ताक पैघ प्रभेदकेँ **बूट** कहल जाइत छैक। स्त्रीगणक हेतु उपयोगी जुत्ताकेँ **जुत्ती** कहल जाइत छैक । अड्डीविहीन एवं अग्रभागमे खुलल अपरसँ युक्त जुत्ताक प्रभेदकेँ **चट्टी/चप्पल** कहल जाइत छैक ।

चमरउ जुत्ताक एकटा पारम्परिक प्रभेदमे अग्रभागमे कलात्मक नोंखी बनल रहैत छैक। एकरा **सलमशाही/सलीमशाही/सलेमशाही** कहल जाइत छैक । एहि आकारक जुत्ताकेँ आइकाल्हि **नागरा** कहल जाइत छैक । नागराक अपरवला भागकेँ **टपिया** कहल जाइत छैक । कलात्मक नोंखीसँ विहीन जुत्ताक प्रभेदकेँ **ठिकरी** कहल जाइत छैक । जाहि जुत्तामे नोंखी आगू दिस जाकऽ फेर पाछू दिस मोड़ल रहैत छैक से **पिलकौआ** कहल जाइत छैक। मिथिलामे प्रचलित विभिन्न प्रकारक जुत्ताक प्रभेद सभ **डैरबी, हाल्टीन, बुलन्दशहर, ग्रीसम, जलसा, खेलौना, अल्बट, चाइनीज, गोगो** आदि छल। आधुनिक जुत्ताक प्रचलनसँ ई प्रभेद सभ लुप्त भऽ गेल अछि आ चमार सभ मौलिक अनुकृतिमे विभिन्न प्रकारक जुत्ता सभ बनबैत अछि। उपरोक्त सभमे डैरबी ओ ग्रीसन प्रभेद दरभंगा राजक प्रबन्धक डेनबी एवं प्रसिद्ध भाषाविद् ग्रियर्सनक नाम पर प्रचलित जुत्ताक प्रभेद छल होयत जे हिनका दुनू गोटे द्वारा व्यवहृत जुत्ताक अनुकृतिमे बनाओल जाइत होयत । अन्य प्रभेद सभक की विशिष्टता छलैक से स्पष्ट नहि होइत अछि। बुलन्दशहर, चाइनीज आदि प्रभेद स्थान विशेषक नामकेँ सूचित करैत अछि। तेँ ई सभ ओहि प्रदेश विशेषमे व्यवहृत जुत्ताक अनुकृतिमे चलल प्रभेद छल होयत।

जुत्ता पहिरि कऽ चललासँ उत्पन्न ध्वनिकेँ **मचमच** कहल जाइत छैक । जुत्ता पहिरि कऽ ओहिसँ ध्वनि उत्पन्न करबाक क्रिया **मचमचायब** होइत अछि। मचमच आवाज करऽवला जुत्ताकेँ **मचमचौआ** कहल जाइत छैक । जुत्तासँ नामधातु **जुतिआयब** होइछ। परस्पर जुत्ता मारबाक व्यापारकेँ **जूता-जूती/जुताजुतौअलि** कहल जाइत छैक ।

वाद्य यंत्र : चमार अनेक वाद्य यंत्रपर चाम चढ़बैत अछि। चाम चढ़यबाक क्रिया **छारब** होइत अछि। एहि वाद्य यंत्र सभक आधार काठ अथवा माटिक होइत

छैक। काठक आधारकेँ **कठरा** तथा माटिक आधारकेँ वाद्य यंत्रक **खोल/खोला** कहल जाइत छैक ।

मध्य भागमे अधिक व्यासवला तथा दूनू कात दिस क्रमश: कम व्यासवला कठरासँ युक्त एकटा वाद्ययंत्रकेँ **ढोलक/ढोल** कहल जाइत छैक । एकर दूनू दिसुक खुलल मुँहकेँ चामसँ छारल जाइत छैक। दूनू मुँहकेँ **पूरा** कहल जाइत छैक । पूरामे चामक परित: लागल बाँसक कमचीकेँ **चपनी/पत्ती** कहल जाइत छैक । पूराक एक दिस खाली चामक छारन रहैत छैक। एहि भागक चामकेँ **सुर** कहल जाइत छैक । दोसर दिसुक चामक मध्यवर्ती भागमे भीतरसँ गोल कऽ मशाला साटल रहैत छैक। एहि भागक चामकेँ **गद/गद्‌द/बम** कहल जाइत छैक । एकर कठराक दूनू मुँह गोल आ खुलल रहैत छैक तथा सुरवला पूरा गदवलासँ कनेक कम व्यासक रहैत छैक । दूनू पूरा पर चढ़ल चाम सूतक रस्सीसँ परस्पर सम्बद्ध रहैछ ।

ढोलकेक आकृतिक अन्य वाद्‌यंत्र **मृदंग/मृदङ/मृदङ्ग/मिरदंग/मिर्दंङ/मिरदङ** होइत अछि। एहिमे दूनू पूरा गद्‌दे होइत छैक। एहिमे सूतक डोरीक स्थानपर चामक डोरीक उपयोग होइत अछि। एहि डोरीकेँ **बद्‌धी** कहल जाइत छैक। बद्‌धीक नीचाँ काठक छोट-छोट बेलनाकार टुकड़ी सभ देल रहैत छैक। एकरा सभकेँ **गुल्ली** कहल जाइत छैक । छोट पूरावला मृदङ्गक प्रभेदकेँ **मानर/मानरि** कहल जाइत छैक । मानरियेक आकृतिक अन्य वाद्‌यंत्रकेँ **पखाउज/पखाओज** कहल जाइत छैक । आइकालि मानरियेक आकृतिक मुदा किञ्चित परिवर्तित प्रकारक मानरिक उपयोग देखल जाइछ। एकरा **नाल** कहल जाइत छैक। खूब चाकर एवं गोलाकार कठरा पर दूनू दिस समान व्यासक चामसँ छारल वाद्ययंत्रकेँ **डांगर/डाङर** कहल जाइत छैक ।

चारि आङ्गुर चाकर वृत्ताकार कठरापर चामसँ छारल वाद्ययंत्रकेँ **डफ/डफली/डम्फ/डम्फा/डफरा/ढप** कहल जाइत छैक । एकर पैघ प्रभेदकेँ **ढाक/ढक्का** कहल जाइत छैक । सनगोहिक चामसँ छारल छोट ढपकेँ **खजुरी** कहल जाइत छैक। **ढोल-ढाक** युग्म शब्दक रूपमे अनेक प्रकारक वाद्य यंत्रक हेतु व्यवहृत होइत अछि।

मध्यमे पातर ओ दूनू दिस दूटा शंकुक आकृतिक हाथसँ बजयबाक हेतु उपयुक्त वाद्य यंत्र विशेषकेँ **डमरू/डामरु** कहल जाइत छैक । पृष्ठभागमे चामसँ छारल एकटा वाद्य यंत्रमे चामसँ सम्बद्ध डोरिक कम्पन द्वारा आवाज निकालल जाइत छैक। एहि वाद्य यंत्रकेँ **गुमकी** कहल जाइत छैक । गोलाक आधा भागक आकृतिक काठ पर छारल गद्‌युक्त वाद्ययंत्रकेँ **तबला** कहल जाइत छैक । एकरा संगे अत्यन्त

छोट पूरासँ युक्त एकटा अन्य वाद्य सेहो बजाओल जाइत अछि। एकरा **डुग्गी/दुग्गी/ठेका** कहल जाइत छैक ।

अधगोलाक आकृतिक माटिक खोलापर चामसँ छारल सबसँ छोट वाद्य यंत्रकेँ **डिगरी/डिगडिगिया** कहल जाइत छैक । डिगरीसँ पैघ वाद्यकेँ **जिल**, जिलसँ पैघकेँ **भठिया**, भठियासँ पैघकेँ **मादल** आ मादलसँ पैघकेँ **बम/ढाक** कहल जाइत छैक । जिल, भठिया, मादल ओ बमक हेतु सामान्य शब्द ढोल अछि। एहि जातिक सबसँ पैघ वाद्य यंत्रकेँ **नङरा/नङारा/नगारा/नगेरा/नङ्गारा** कहल जाइछ। नगाराक अत्यन्त पैघ प्रभेद **डंका** कहल जाइत अछि । छौंछक आकृतिक माटिक खोलापर छारल वाद्य यंत्रकेँ **तासा** कहल जाइत छैक। पिपही ओ ढोलक सम्मिलित वाद्य समूहकेँ **खुरदक** कहल जाइत छैक। शहनाइक संग व्यवहृत छोट-छोट नगाड़ाकेँ **नौबत/नौबति** कहल जाइत छैक ।

छोट पूरासँ युक्त ढोलकक कठराक आकृतिक माटिक खोलापर छारल वाद्यविशेषकेँ **चानखोल/चान्दखोल** कहल जाइत छैक । धियापुताक हेतु माटिक खजुरी सन वाद्यकेँ **ढोलकी** कहल जाइत छैक।

ढोल बजौनिहार चमारकेँ **ढोलिया** कहल जाइत छैक । प्रचारक हेतु ढोल बजयबाक क्रिया **ढोलहो/ढोलहो पीटब/ढोलहो देब** कहल जाइत छैक ।

अन्य : जुत्ता ओ वाद्ययंत्रक अतिरिक्त चमार विभिन्न उपयोगक चामक वस्तु सभ बनबैत अछि। लोहारक भाथीपर चाम चढ़ाओल जाइत छैक। एकरा **भाथी सालब** कहल जाइछ। हजाम अपन लौह ओजार सभकेँ पिजयबाक हेतु चामक एकटा आयताकार टुकड़ाक व्यवहार करैत अछि। एकरा **चमौटा** कहल जाइत छैक। छोट चमौटाकेँ **चमौटी**/कहल/जाइत/छैक । बड़दकेँ हँकबाक हेतु व्यवहृत औजार विशेष **सट्टा/साटा/सोँटा/चाबुक** कहल जाइत छैक । एहिमे काठ अथवा बाँसक दंडक अग्रभागमे चामक अनेक बद्धी बान्हल रहैत छैक। डाँड़मे पहिरबाक हेतु प्रयुक्त एवं विभिन्न पशुक गर्दनिमे पहिरयबाक हेतु प्रचलित चामक चाकर फीताकेँ **चमौटी/डड़कस/डँड़कस/बेल्ट** कहल जाइत छैक । पानिकेँ पीठपर लादिकऽ स्थानांतरित करबाक बासनकेँ **मशक** कहल जाइत छैक। घी रखबाक हेतु व्यवहृत चामक पात्रकेँ **कुप्पा** कहल जाइत छैक। छोट कुप्पाकेँ **कुप्पी** कहल जाइत छैक।

मालि

पूजा-अर्चा ओ मांगलिक अवसरपर पत्र-पुष्प, मालादिक आपूर्त्ति करब माइल/मालि/माली जातिक जातीय व्यवसाय रहल छनि।

आधार सामग्री : मालिक प्रमुख आधार सामग्री थिक फूल । किछु फूल तँ ओ स्वयं लगबैत छथि एवं किछु फूल विभिन्न स्थानसँ एकत्र करैत छथि। तेँ फूल ओकर आधार सामग्री ओ उत्पादन दूहू अछि।

घर लगक छोट छीन भू-क्षेत्रकेँ बाड़ी कहल जाइत छैक। फूल लगयबाक हेतु प्रयुक्त बाड़ीकेँ **फुलबाड़ी/फुलबन/फुलहर** कहल जाइत छैक। फुलबाड़ीक विभाग सभकेँ **क्यारी/किआ(या)री/केआ(या)री/पट्टी** कहल जाइत छैक।

बिनु कोड़ल खेतकेँ तामल अथवा जोतल जाइत छैक। जोतल-कोड़ल खेतकेँ सरियाम करबाक क्रिया **चउकिआयब** होइछ। कोदारि द्वारा माटिकेँ कने-कने मात्रामे कचि पातर करबाक क्रिया **झिलिआयब** होइत अछि। माटिकेँ कोड़िकऽ पुनः सरियाम करबाक क्रिया **थलिआयब** होइत अछि।

गाछक बीजकेँ माटिक सम्पर्कमे देबाक क्रिया **बाओग करब बूनब** होइत अछि। गाछकेँ जमीनमे गाड़बाक क्रिया **रोपब** होइत अछि। अनपेक्षित घासकेँ हटयबाक क्रिया **कमायब** होइत अछि।

फूलक गाछक फऽड़केँ **बीज/बीया/बीहन** कहल जाइत छैक। नमीक प्रभावमे बीयाक प्रस्फुटनसँ निकलल गाछक प्रारंभिक रूपकेँ **अंकुर/अँकुड़ा/सूत/डिब्भी/डेफ/डेफा** कहल जाइत छैक। दू पातसँ युक्त गाछकेँ **दुपतिया** आ चारि पातक भऽ गेने ओकरा **चरिपतिया** कहल जाइत छैक। दुपतिया ओ चरिपतियाकेँ **बिच्चौ** सेहो कहल जाइत छैक। बिच्चौकेँ उखाड़ि कऽ पृथक्-पृथक् स्थानपर लगाओल जाइत छैक।

गाछादिक माटिसँ अलग्न होयबाक क्रिया **उपड़ब/उखड़ब** होइछ। अलग्न करबाक क्रिया **उपाड़ब/उखाड़ब** होइत अछि। जड़िक समीपस्थ माटि सहित उखाड़ल गाछकेँ **थल्ला/थाला** कहल जाइत छैक।

किछु गाछक बीया नहि लगैत छैक प्रत्युत् ओकर ठाढ़िये लगैत छैक। एहन गाछक ठाढ़िकेँ ऊपरसँ छीलि ओहि भागपर खड़र, माछक सुकठा ओ सड़ल गोबर फेंटल माटिक पिंड लेपि देने ठाढ़िसँ जड़ि फेंकि दैत छैक । बान्हल पिण्डकेँ **अण्टा/अण्डा/कलम** कहल जाइत छैक। जड़ि भऽ गेलापर अण्डाक नीचाँ ठाढ़िकेँ काटि पृथक् गाछक रूपमे लगाओल जाइत छैक।

छोट गाछकेँ **गछुली/गछौनी/गछौन्ही** कहल जाइत छैक।। गाछक छाहरिसँ युक्त भूमिकेँ सेहो **गछौनी/गछौन्ही** कहल जाइत छैक। लतरऽबला गाछकेँ **लत्ती** कहल जाइत छैक। लत्तीक बढ़बाक क्रिया **लतरब** होइत अछि। चारू दिशामे लतरबाक क्रिया **चतरब** होइत अछि। गाछक चारूकात पसरबाक क्रिया **ओलरब/पलरब**

होइत अछि। परस्पर सम्बद्ध गाछ,लत्ती आदिक समूहकेँ **झाड़/झाड़ी** कहल जाइत छैक। नीरोग पत्र-पुष्पादिसँ युक्त होयबाक क्रिया **लुहलुहायब** होइछ । लुहलुहायल गाछकेँ **लुहलुहार** कहल जाइत छैक। गाछक शाखा सभक जमीनकेँ स्पर्श करबाक क्रिया **लोटब** होइत अछि। लोटैत गाछकेँ **भुइयाँलोटान** कहल जाइत छैक।

जाहि गाछमे सालो भरि फूल फुलाइत छैक अथवा जे गाछ अनेक साल धरि फूल देबाक योग्य होइछ, ओकरा **बरहमसिया/सबदिना/सदाबहार** कहल जाइत छैक। जाहि गाछमे खास मौसमे भरि फूल फुलाइत छैक अथवा एक मौसम धरि फूल देलाक बाद गाछो गलि जाइत छैक, से **समइया/मौसमी** कहल जाइत अछि।

फूलक प्रस्फुटित होयबाक क्रिया **फूलब/फुलायब** होइत अछि। बिनु फूलल फूलकेँ **कोढ़ी/कोंढ़ही** कहल जाइत छैक। कोंढ़ी निकलबाक क्रिया **कोंढ़िआयब** होइत छैक। कोंढ़ीक प्रारंभिक रूपकेँ **टुस्सा** कहल जाइत छैक। आवरण मे बन्द कोंढ़ीकेँ **कली/कल्ली** कहल जाइत छैक। कलीक हेतु प्राचीन शब्द **कर** अछि (**वर्णरत्नाकर, पृ. ५, कनिअराक कर अइसन नाक**)। **कड़ह-बाती** युग्म शब्दक रूपमे कली तथा फऽड़क प्रारंभिक रूपक हेतु व्यवहृत अछि।

फूलक जे भाग ओकरा शाखासँ सम्बद्ध रखैत छैक से **डंटी** कहल जाइत छैक। फूलक दलकेँ **पत्ती** कहल जाइत छैक। फूलक मध्यभागमे लागल सूत सन पातर आकृतिकेँ **सूत** कहल जाइत छैक। सूतपर लागल दाना जकाँ अंग **जर्दी/पराग** कहल जाइत छैक।

जाहि फूलमे चारू कात एकेटा दल रहैत छैक, से **एकहरा/एकहारा** कहल जाइत छैक। तदुपरी एकाधिक दलसँ युक्त फूलकेँ **दोहरा/दोहारा** कहल जाइत छैक। अत्यधिक प्रस्फुटित फूलक समूहकेँ **थोका/थौका** (सं. स्तवक) कहल जाइत छैक। फूलक गुच्छाकेँ **झब्बा/झाबा** कहल जाइत छैक। पूर्ण फूलल फूलकेँ **गुलजार/भकरार** कहल जाइत छैक।

फूलक दल लाल, कारी, उज्जर, केसरिया,नील, नारंगी आदि रंगक होइत छैक। जाहि दलपर अनेक रंगक छिटका रहैत छैक ओकर रंगकेँ **चित्तिर-बित्तिर** कहल जाइत छैक। पातपर कारी-कारी दग्गीकेँ **चित्ती** कहल जाइत छैक आ चित्ती होयबाक क्रिया **चित्ती मारब** होइत अछि।

गाछक पात सभक ऐंठि जयबाक क्रिया **ककुरियायब** होइत अछि। गाछक वृद्धयोन्मुख होयबाक क्रिया **सम्हरब** आ ह्रासोन्मुख भऽ सूखि जयबाक क्रिया **मरब** होइत अछि। गाछक फूलपातक मूर्छित होयबाक क्रिया **कुम्हलायब** होइत अछि।

फूलक पत्तीक कड़ापन समाप्त होयबाक क्रिया **मौलब/मौलायब/मरब** होइत छैक। मौलल फूलक स्वत: खसबाक क्रिया **झड़ब/तूब/तुड़ब/तुअब** होइत अछि। फूलक रंग मलिन होयबाक क्रिया **सुखीं उतरब** होइत अछि।

फूलक उत्कृष्ट गंधकें **गमक/सुगंध** कहल जाइत छैक। फूलक गंध करबाक क्रिया **गमगम/गम-गम करब/गमागम करब/गमगमायब/महमह करब/महमहायब** होइत अछि। अनपेक्षित गंध करबाक क्रिया **महकब/गेन्हायब** होइत अछि।

फूलक गाछपर कारी रंगक एकटा कीट रहैत छैक। एकरा **भौंरा** कहल जाइत छैक। एही जातिक अन्य कीट **भेम** होइत अछि।

गाछसँ फूल तोड़बाक क्रिया **लोढ़ब/उतारब** आ स्वत: खसल फूलकें एक-एक कऽ उठयबाक क्रिया **बीछब** होइछ।

मालिक व्यवसायसँ सम्बन्धित फूलक गाछमे अनेक वर्ष धरि जीवित रहऽवला गाछकें स्थायी आ वर्षाभ्यन्तर स्वत: नष्ट भऽ जायवला गाछकें अस्थायी कहल जा सकैत छैक। फूलक नामक अकारादिक्रममे ओकर पर्याय, गाछक प्रकृति, फूलक प्रकृति, रंग ओ फुलबाक समय एवं विभिन्न प्रभेदक क्रमबद्ध विवरण निम्न रूपक अछि–

1. **अकओन/अकवन/अकोन/अकौन** - स्थायी गछुली; एकहरा; गाढ़लाल ओ उज्जर; बारहो मास।
2. **अगस्त/अगस्ति**- स्थायी पैघ गाछ; एकहरा; फिक्का लाल; कातिकसँ माघ।
3. **अढ़ूल/अड़हुल/ओढ़ूल/ओड़हुल** - साहित्यिक नाम **जपाकुसुम/जवाकुसुम**; स्थायी गछुली; एकहरा एवं दोहरा; लाल, पीयर, उज्जर, नील ओ गैरिक वर्ण; बारहो मास, दोहरा प्रभेद-**पचमुखी/पञ्चमुखी**; एकहरा गाढ़ लाल रंगक प्रभेद-**देसी**, संकुचित दलवला प्रभेद-**मिरचइया**; झुमका सदृश-**झुमका**; गैरिक वर्णवला प्रभेद-**जोगिया**।
4. **अनपी/अनुपी/कटहरिया/कटहरिया चम्पा/कटहरी**- स्थायी गछुली, एकहरा, पीताभ, पाकल कटहरक सो जकाँ सुगन्ध; चैतसँ भादो।
5. **अपराजित/अपराजिता/खुरचनिआ** - स्थायी लत्ती; सितुहाक आकृतिक एकहरा; उज्जर एवं नील; जेठसँ अगहन।
6. **इन्द्रकमल** - अस्थायी गछुली; दोहरा; उज्जर एवं हल्का नील; चैतसँ अषाढ़
7. **कगजिया/बैगनबरिया** - स्थायी लत्ती; कागतक पात जकाँ दलयुक्त सुगन्ध विहीन फूल; लाल, उज्जर; बारहो मास ।
8. **कचनार/कचनारि/कचनारी** - प्राचीन शब्द काञ्चनाल (वर्ण.), स्थायी गाछ, एकहरा एवं दोहरा; विविध रंग; कातिक-अगहन।
9. **कनगडोला**- अस्थायी छोट गछुली; दोहरा, समतोला; आसिनसँ चैत।
10. **कनैल/जहरकनैल**- स्थायी पैघ गाछ; एकहरा; पीयर, उज्जर, श्याम ओ चम्पइ; बारहो मास; प्राचीन शब्द **कनिअरा** (वर्ण.), चम्पइ रंगवला प्रभेद कन्ताकनैल।
11. **कमल**-अस्थायी; जलोद्भव; अनेक दल संयुत; लाल, नील, उज्जर ओ पीयर; आसिनसँ पूस; फुलबाक समय दिन; धड़वला डंटी-**नाल/मृणाल**; पात-**पुरैनि**, फऽड़-**गट्टा/ कमलगट्टा**; कन्द-**बिसाँढ़**; रक्ताभ लाल रंगक प्रभेद-**कोका**।
12. **कयना/सर्वजाया/वैजनी/वैजयन्ती**-कंदोद्भव; अस्थायी गछौनी; एकहरा; विविध रंग; बारहो मास।
13. **करबीर** - स्थायी दंडाकार गछौनी; एकहरा एवं दोहरा; लाल; बारहो मास ।
14. **कामनी/कामिनी**- स्थायी, एकहरा, सूक्ष्म थौका, उज्जर, चैतसँ अषाढ़।
15. **कुमुद/कुमुदनी/कुमुदिनी** - जलोद्भव, भेंटक प्रभेद, फूल गाढ़ लाल, पात ललौन, फुलबाक समय-रात्रि काल।
16. **केओड़ा/केओला/क्योला/क्योला/केवला** (सं. केतकी) - कुसियारक डाँट सदृश स्थायी गाछ, अत्यधिक परागयुक्त बाइल जकाँ फूल, फिक्का पीताभ, आसिनसँ कातिक एवं चैतसँ जेठ।
17. **गन्धराज/अन्नराज/अनराज**- स्थायी मण्डपाकृति गाछ; एकहरा एवं दोहरा; उज्जर, चैतसँ आषाढ़ ।
18. **गुलदावरी**- अस्थायी गछौनी, अनेकदल संयुत पैघ फूल; विभिन्न रंग; पूससँ चैत।
19. **गुलफनूस** - स्थायी गछौनी; दोहरा, अत्यन्त मोलायम दल; उज्जर, जेठसँ साओन।
20. **गुलमखमल** - स्थायी; कठोर दल संयुत; मखमली; जेठसँ कातिक।
21. **गुलरांयची /गुलेंच/गुलाँबची**- स्थायी, एकहरा, लाल, भरि साल।

22. **गुलाब** - काँटायुक्त स्थायी गछुली; एकहरा एवं दोहरा; विविध रंग, बारहो मास; गाढ़ लाल रंगक प्रभेद-**सुरहिया**, फिक्का लाल-**चाइना**; उज्जर प्रभेद-**पालगुलाब**, पीयर प्रभेद-**मार्सली**; शतपत्री प्रभेद-**सेउती**; अन्य प्रभेद -**बासरा** (बि. भा. को.)।

23. **गेन्दा/गेना**- अस्थायी, एकहरा ओ दोहरा; पीयर आ लाल, आसिनसँ फागुन; पैघ फूलवला प्रभेद-**हजारा/गुलहजारा/हजारीगेना**; छोट प्रभेद-**गेनी/गुलदावरी**।

24. **चन्द्रकला/चन्द्रकाला**- अस्थायी गछुली; एकहरा ओ दोहरा; गहुमक बाइल सदृश, अषाढ़सँ कातिक ।

25. **चम्पा**- स्थायी पैघ गछौनी; तीव्र गंधयुक्त; एकहरा; उज्जर, जेठसँ भादो; सोनाक रंगक प्रभेद-**सोना चम्पा**।

26. **चमेली**- स्थायी लत्ती; एकहरा; उज्जर; जेठसँ भादो।

27. **चितउर**- अस्थायी; एकहरा; उज्जर; कातिकसँ फागुन।

28. **जटाधारी** - अस्थायी; ठढ़िया साग सदृश; जटिल फणाकृति; लाल ओ पीयर; कातिकसँ बैसाख।

29. **जाफरी/गुलजाफरी/अंग्रेजी गेना**- अस्थायी; गेनाक आकृतिक मुदा अत्यन्त छोट; दोहरा, पीयर ओ गाढ़ लाल; आसिनसँ चैत।

30. **जूही** (सं. यूथिका)-लत्ती, नाम डंटीयुक्त, एकहरा; उज्जर; बारहोमास; मधुश्रावणीमे विवाहिता कन्यालोकनि द्वारा लोढ़ल पत्र-पुष्पादि विशेषक समूह-**जाही-जूही**।

31. **तग्गर/तगर**- स्थायी गाछ; एकहरा ओ दोहरा; उज्जर; बारहो मास; एकहरा प्रभेद-**तगरी/चिड़ियाँ तग्गर**।

32. **तीरा/तिउरा/बालसम**- समइया छोट गाछ, एकहरा एवं दोहरा, विविध रंग; अषाढ़सँ कातिक।

33. **थलकमल/ढढ़कमल/भूकमल** - स्थायी पैघ गछुली; एकहरा एवं दोहरा; आसिनसँ अगहन भोरमे; फूटबाक समय रंग उज्जर; प्रकाशमे क्रमहि लाल।

34. **दनूफ/दोना/दओना/दोना कदम्ब/गुम्मा**- अस्थायी; छोट गाछ; धनखेतीमे; ढेढ़ीमे प्रस्फुटित, मालभोग चाउरक भात सदृश; फुलयबाक समय-चैत-बैसाख; पितृकर्मक हेतु प्रयुक्त ।

35. **दुपहरिया/दिनदुपहरिया/सजीवनबूटी/लक्ष्मणबूटी**- अस्थायी लत्ती; एकहरा; लाल, उज्जर ओ पीयर; साओनसँ बैसाख ।

36. **धथूर/धथूरा/धुथुर/धुतहुर/धतूरा** - अस्थायी; पिपही जकाँ नाम, एकहरा; उज्जर; बारहोमास; दोहरा प्रभेद, श्यामवर्ण।

37. **नककेसर/नागकेसर/नागेसर/नागेश्वर**- अस्थायी गछुली; एकहरा; लाल, पीयर ओ उज्जर; पूस-माघ।

38. **नेबार/नेबारि/नेबारी**- (सं. नवमल्लिका), प्राचीन शब्द लेवारि (वर्ण.); स्थायी; एकहरा; पिवरौंछ; चैत।

39. **पनसुतिया** - स्थायी गाछ; एकहरा; लाल, पीयर; कातिकसँ पूस।

40. **बकायन**- स्थायी विशाल गाछ; एकहरा; उज्जर; आसिनसँ अगहन ।

41. **बसन्त/बसन्ती/कुन्द**- स्थायी गछौनी; झाड़ी सदृश; नाम डंटीयुक्त; एकहरा; उज्जर; अगहन-पूस।

42. **बंसीप्रेम/बंसीवट** - काँटयुक्त गछुली; एकहरा; मध्यमे सूंघ; दल कटोरी सदृश; लाल, पीयर।

43. **बेला** (सं. विचकिल)- स्थायी छोट लत्ती सदृश गाछ; एकहरा एवं दोहरा; उज्जर; बैसाखसँ भादो; गोल ओ पैघ फूलवला प्रभेद-**मोतिया बेला**; नाम डंटीवला प्रभेद-**हथदन्ता/हाथीदाँत बेला**; छोट फूलवला प्रभेद-**बेली/कठबेली/टकबेल**।

44. **भालसरी**- (सं. वकुल), स्थायी पैघ गाछ; दोहरा; डंटीविहीन पुष्प; मैलछौन; भादो।

45. **भेंट/मलकोका** - जलोद्भव; कुमुद सदृश मुदा छोट; उज्जर; आसिन-कातिकक रात्रि।

46. **मधुरी**- (सं. बन्धूक) छोट गछुली; एकहरा; डनटल कटोरी सदृश; आलरंग; धनखेतीमे; कातिक-अगहनक रात्रि काल।

47. **मालती**- स्थायी लत्ती; छोट एकहरा; हल्का; उज्जर; फागुन-चैत।

48. **माधवी** - स्थायी लत्ती; झब्बादार, एकहरा; उज्जर, फागुन-चैत ।

49. **मोती झाबा/मोतीझब्बा**- स्थायी लत्ती; एकहरा; नाम डंटीयुक्त; लाल दल ओ उज्जर डंटीसँ युक्त; भरि साल।

50. **लवङलता/लवङलती** - अस्थायी अत्यन्त पातर पातवला लत्ती; अत्यन्त सूक्ष्म, लौंग सदृश लाल रंगक फूल; फागुन-चैत।

51. **सिङ्हार/सिङ्हारा/सिङरहार/सिङरहारा** - स्थायी पैघ गछुली; पीयर डंटीयुक्त, उज्जर, छोट, एकहरा फूल; अगहनक रात्रि काल।

52. **सुदर्शन**- स्थायी गछुली; नाम; तीव्र सुगन्धयुक्त फूल; एकहरा; उज्जर; भादोसँ माघ।

53. **सूर्यमुखी** - अस्थायी; सूर्यक गोला सदृश चारू कात पीयर दल; बारहो मास।

54. **सोनौली/सनहुल/सोनहुल/सोनहुली** - स्थायी गछौनी; एकहरा; टुइयाँ सदृश; सोनाक रंग; जेठसँ भादो।

55. **संझा/लंकेश्वर** - अस्थायी; एकहरा; लाल; पीयर, उज्जर; चैतसँ आसिन।

56. **हुसैना/हेना/हुस्नहेना/रात के रानी/रजनीगंधा** - स्थायी गछौनी; सूत सन पातर डंटी; एकहरा; गुच्छामे फुलायवला; श्वेतवर्ण; क्रमशः चैत, अषाढ़ ओ कातिकक रात्रिकाल।

एकर अतिरिक्त साहित्य ओ कोषमे अनेक फूलक नाम भेटैत अछि जेना-**चौघड़िया, तारा, पाँड़रि, लीला, कठपीरी, कसिया, कुआ, धुसरी, रुकमिनी/रुकमिजनी/रूपमञ्जरी** आदि। एहि सभक व्यावसायिक उपयोग नहि होयबाक कारणेँ अथवा स्थानीय नाम रहबाक कारणेँ हमर सूचनादाता विशिष्ट विवरण नहि दऽ सकलाह।

पत्ती एवं अन्य वस्तु : फूलक अतिरिक्त मालि अनेक प्रकारक पात सेहो लोढ़ैत अछि। शंकर भगवानक पूजामे विशेष रूपें व्यवहृत बेल नामक फलवृक्षक पातकेँ **बेलपत्र/बेलपात** कहल जाइत छैक। विष्णुक पूजाक हेतु **तुलसी** पत्रक व्यवहार होइत अछि। हरियर पातवला तुलसीक प्रभेद **रामतुलसी/चननतुलसी**, कारी पातवला प्रभेद **श्यामतुलसी** ओ जंगल-झाड़मे उत्पन्न होमऽवला प्रभेद **बनतुलसी** कहल जाइत अछि। लोकाचार ओ गणेश पूजनमे **दुभि/दुभ्भी/दुभिया** नामक घासक व्यवहार होइत छैक। स्त्रीगण हाथमे शृंगार हेतु **मेहदी** वृक्षक पातकेँ पीसिकऽ लेपैत छथि।

अपन फुलबाड़ीक घेराक हेतु मालि **जैंत, नागफेनी/बगेयाक काँट, पसीझ, फरहद, सिनुआरि, बालछड़ी** आदि रोपैत अछि। पसीझक दुइटा प्रभेद क्रमशः **दुधिया** ओ **मुठिया** होइत छैक।

मालिक फुलवाड़ीमे औषधीय गुणसँ युक्त किछु गाछ सेहो लगाओल रहैत छैक जेना **गनियारि, गेठबन, गेठिया, घीकुमारि, पथलचूड़, पुदीना, मन्तरा** आदि।

सिन्दूर ओ पिठारक दागसँ युक्त अरिकोंछ सदृश मुदा अत्यन्त पैघ पातवला

एकटा कंदोद्भव गाछ मधुश्रावणीमे प्रयोजनीय होइत छैक। एकरा **मएन/मएना** कहल जाइत छैक। दग्गीविहीन पातवला एही प्रकारक अन्य वृक्षकेँ **ढाक** कहल जाइत छैक।

आनुषंगिक आधार सामग्री : मालीक आनुषंगिक आधार सामग्री अछि केराक गाछ। केराक छोट गाछकेँ **पौंछ** कहल जाइत छैक। केराक गाछक धड़केँ **थम्ब/थम्ह** कहल जाइत छैक। थम्हक अनेक परतदार छालकेँ **बखोड़/बखोड़ा/बखोड़ैया** कहल जाइत छैक। बखोड़ाक प्रत्येककेँ **डपौ/डपड/डपोर(ड़)/डपौर (ड़)** कहल जाइत छैक। डपोर सुखलापर छीलिकऽ ओकर उपरका भागसँ बनल तागक सदृश वस्तुकेँ **पटेर** कहल जाइत छैक। पटेरक स्थान आब ताग लेने जा रहल अछि। मुदा तागमे गाँथल माला शुद्ध नहि बूझल जाइत अछि।

मालिक जातीय व्यवसायमे देवस्थानमे चढ़यबाक एकटा वस्तु-विशेष **कोढ़िला** नामक जलीय घाससँ तैयार कयल जाइत छैक। ई घास धनखेती, चओर आदिमे उत्पन्न होइत अछि। एकर डाँट मोट, बेलनाकार, अत्यन्त हल्लुक ओ कोमल होइत छैक तथा भीतरी भाग शुष्क एवं अत्यधिक उज्जर रहैत छैक। रोगाह कोढ़िलाक भीतरी भागमे ललौन दग्गीकेँ **रकसी** कहल जाइत छैक।

कोढ़िलाकेँ सटबाक हेतु लइक व्यवहार होइत छैक।

औजार : फूलक खेती करबाक हेतु माली खेतीक सामान्य औजारक व्यवहार करैत अछि। गँहीर धरि माटि कोड़बाक हेतु नाम फल आ बेँटसँ युक्त खुर्पीकेँ **खुर्पा/रम्भा खुर्पी/सुम्हा खुर्पी** कहल जाइत छैक।

फूलक गाछक अतिरिक्त भागकेँ छँटबाक हेतु लोहक कैंचीक व्यवहार होइत छैक। छोट कैंचीकेँ **गुलकैंची** कहल जाइत छैक। फुलवारीमे पानि पटयबाक हेतु लोहक बाल्टीक प्रभेद जाहिमे अग्रभागमे अनेक छिद्रसँ युक्त एकटा टोंटी लागल रहैत छैक, से **झाँझ** कहल जाइत छैक। फूल लगयबाक हेतु माटिक गँहीर बासनकेँ **गमला/घमला** कहल जाइत छैक।

तोड़ल फूलकेँ बाँस अथवा धातुक डंटी लागल पात्रमे राखल जाइत छैक। एकरा **फुलडाली/फुलबसना** कहल जाइत छैक। कपड़ाकेँ मोड़ि कऽ बनाओल फूल रखबाक थोकड़ीकेँ **फुलझोड़ा** कहल जाइत छैक।

माला गँथबाक हेतु खऽढ़क पातर भागकेँ मोड़ि कऽ बनाओल औजारकेँ **सीकी** कहल जाइत छैक । एही कार्यक हेतु लोहक अत्यन्त पातर पासयुक्त छड़केँ **सूइ/सुइया** कहल जाइछ।

कोढ़िलाकेँ पानिसँ कटबाक हेतु मालीक लोहक धाँतयुक्त औजार **हाँसू/कचिया हाँसू** होइत छैक । कोढ़िलाकेँ छिलबाक हेतु नाम कत्ता सदृश औजारकेँ **छूरी/चक्कू**

कहल जाइत छैक । उपर-उपर छीलिकऽ पातर परत कटबाक क्रिया **कतरब** होइत छैक। कोढ़िलाकें कागतक रूपमे बेलबाक हेतु चकुला ओ बेलनाक व्यवहार होइत छैक।

उत्पादन : लोढ़ल फूलकें परस्पर सम्बद्ध कऽ छड़क आकृति प्रदान करबाक क्रिया **गाँथब** होइल अछि। गाँथल फूलक छड़कें **लड़/लड़ी** कहल जाइत छैक। लड़क दूनू छोरकें जोड़ि देलापर **माला/हार** बनैत छैक। मुसलमानलोकनि मालाक हेतु **कुर्सी** शब्दक व्यवहार करैत छथि।

फूल ओ मालाकें बैजन्ती, केरा अथवा अंडीक पातमे लपेटि पटेरसँ बान्हल जाइत छैक। एहिसँ बनल पुड़ियाकें **पतौड़ा** कहल जाइत छैक । छोट पतौड़ाकें **पतौड़ी** कहल जाइत छैक । पतौड़ा बन्हबाक हेतु प्रयुक्त खजूरक पातकें चीरि कऽ बनाओल ताग सदृश वस्तुकें **बन्हा** कहल जाइत छैक ।

ताग अथवा पटेरमे फूलसँ निर्मित मालाकें **ठर्रा माला** कहल जाइत छैक । ठर्रा मालाक मध्यवर्ती भागमे कयल मोट गँथाइकें **कंठा** कहल जाइत छैक । कंठा लग लटकैत फूलक समूहकें **फुदना** कहल जाइत छैक।

पटेरमे दूर-दूरपर बान्हल फूलक मालाकें **हथफनुआँ** कहल जाइत छैक। हथफनुआँक दूटा फूलक बीचक दूरीकें **फान/फानी** कहल जाइत छैक । फूलक डंटीकें गँथलासँ **गिरौआ माला** बनैत छैक। चारि फूल गिरौआ आ एकटा फूल ठर्रा गँथलापर बनल मालाकें **पचफुल्ली** कहल जाइत छैक । पचफुल्लीक प्रत्येक पाँच फूलक समूहकें **छल्ला/छल्ली** कहल जाइत छैक ।

घन कऽ गाँथल मालाकें **गजरा** कहल जाइत छैक । हाथमे पहिरबाक गजराकें **कंगन**, बाँहिक गजराकें **बाजू**, सिउँथपरक गजराकें **मङटीका**, गर्दनिमे पहिरबाक हेतु प्रयुक्त गजराकें हँसुली ओ कानमे पहिरबाक हेतु प्रयुक्त छोट सन मालाकें **कनडोला/कननडोला** कहल जाइत छैक । मुसलमानलोकनिक विआहमे प्रयुक्त विशेष प्रकारक मालाकें **सेहला** कहल जाइत छैक। एहिमे माथपर तीनटा लड़, मुँहक आगू लटकैत चारि-पाँचटा लड़ आ दूनू हाथ ओ पीठकें सम्बद्ध करैत एकटा माला रहैत छैक। आगू दिस लटकैत लड़कें **घुंघरू** कहल जाइत छैक।

कोढ़िलाक वस्तु : कोढ़िला चओरसँ कातिकसँ लऽ कऽ माघ धरि काटल जाइत छैक। ओकर धड़क मोट भागकें सुखाकऽ एकत्र कऽ लेल जाइत छैक। सुखलाक बाद ओकर उपरका भागक केश सदृश वस्तुकें साफ कऽ देल जाइत छैक। एहि वस्तुकें **रोआं** कहल जाइत छैक । धड़कें अनेकश: खण्डित कयलासँ बनल टुकड़ी सभ **टोनी/गुल्ली** कहल जाइत छैक। गुल्लीकें परित: खण्डित कयलासँ उपरका मैलछीन परतकें **खोइया/आकठ** आ गुद्दावाला भागक पातर परतकें **पत्ता/बीड़/कागज** कहल जाइत छैक । कतरलाक बाद गुल्लीक पातर अवशेषकें **हरैया/हट्ठी** कहल जाइत छैक।

कोढ़िलाक कागतकें चकुला-बेलनाक सहायतासँ समतल कऽ मांगलिक अवसरपर उपयोगी **बीअनि/कोनिआ** आदिकें छाड़ि रंग-टीप कऽ कऽ सुन्दर बनाओल जाइत छैक। कोढ़िलाक कागजकें बेलनाकार मोड़ि अनेकश: खण्डित कयल अत्यन्त कम चाकर टुकड़ीक समूहसँ बनल गोलाकार वस्तुकें **थोपा/गेन्द/गेन** कहल जाइत छैक। कोढ़िलाक कागतसँ बनल देवस्थानमे चढ़यबाक छतरीक आकृतिक वस्तुकें **मौड़** कहल जाइत छैक । छोट मौड़कें **गेरुर/गेरुआ/गेरुली** कहल जाइत छैक । मौड़मे लगयबाक कोढ़िलाक कागतक दू आङुर चाकर ओ छओ आङुर नाम युगल खंडकें परस्पर मध्यभागमे समकोण पर सम्बद्ध कयलासँ बनल वस्तुकें **कचनार/कचनारि/कचनारी** कहल जाइत छैक । मौड़मे लागल कोढ़िलाक पंछीक आकृतिकें **सूगा** कहल जाइत छैक। सूगाकें मौड़मे गँथबाक हेतु व्यवहृत बाँसक पातर कमचीकें **फुरफुरी** कहल जाइत छैक।

निष्कर्ष :

अन्य पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक अध्ययनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे प्रत्येक व्यवसायमे आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादनक प्रत्येक स्तरमे किमपि भिन्नतापर नव शब्दावलीक उपयोग होइत छैक।

एहिमे नोनिआक व्यवसायक संगहि ओकर कतेको शब्दक लोप भऽ गेल छैक। सूड़ी ओ कलवारक व्यावसायिक शब्दावली कानूनी प्रतिबन्ध एवं मशीनीकरणक कारणें अत्यधिक प्रभावित भेल अछि। चमार ओ तेलीक शब्दावली सेहो मशीनीकरणक कारणें लुप्त भेल जा रहल अछि।

शब्द सामर्थ्यक दृष्टिजें कानू, कुरेड़ी ओ मालिक व्यवसाय कमजोर अछि। एहि व्यवसाय सभमे शब्दक विस्थापनक गति सेहो नहिजें जकाँ अछि। शब्द विस्थापनक स्थिति बरइक व्यवसायमे सेहो न्यूने अछि। नव शब्द ग्रहण करबाक स्थितिसँ सर्वाधिक प्रभावित चमारक व्यवसाय अछि। हलुआइ आ मालिक व्यवसायमे सेहो शब्दग्रहणक प्रक्रिया तीव्र अछि।

एहि समस्त व्यवसायमे आधार सामग्रीसँ सम्बद्ध शब्दावली अपन पारम्परिक स्वरूपमे सुरक्षित देखल जाइत अछि। औजारक शब्दावलीमे शब्द-परिवर्तनक गति मन्द ओ उत्पादनक शब्दावलीमे तीव्र छैक।

तैलिक व्यवसायक मशीनीकरणसँ कोल्हुक अनेक अङ्गसँ सम्बद्ध शब्द लुप्त भेल जा रहल अछि। तेलकेँ जोखिकऽ बेचबाक पद्धतिसँ नपना सभक नामावली सेहो बिसरल जा रहल अछि। सूड़ी-कलवारक व्यवसायमे धातु-पात्रक व्यवहारसँ माटिक पारम्परिक औजार सभक नामावली समाप्त भऽ रहल अछि।

उत्पादन सम्बन्धी शब्दावलीमे हलुआइ, बरइ,सूड़ी,लहेरी ओ चमारक शब्दावली बेसी प्रभावित भऽ रहल अछि। रंग, सुगन्धमे परिवर्त्तनक आधार पर मिठाइ सभक नव एवं स्थानीय नाम सभ प्रचलित भेल जा रहल अछि । मुदा एकर सभक स्वरूप पारिभाषिक नहि भऽ सकल अछि। दोसर दिस जनरुचिक आलोकमे पारम्परिक मिठाइ ओ पकमान सभक शब्दावलीमे अर्थलोपक प्रक्रिया विराजमान भऽ रहल अछि। आयातित पानक व्यावसायिक दृष्टिजे लाभप्रद होयबाक कारणें मिथिलाक पारम्परिक पान सभक नाम सभ आब अप्रचलित भेल जा रहल अछि। मद्य व्यवसायमे जलक प्रतिशत मात्राक आधारपर देल नामक कारणें मद्य सभक पारम्परिक नामावली समाप्त भेल जा रहल अछि। लहेरी सभ चूड़ी सभक पारम्परिक नाम बिसरि गेल अछि आ सिनेमासँ प्रभावित स्थानीय नाम सभकेँ ग्रहण कयने जा रहल अछि जकर कोनो पारिभाषिक स्वरूप नहि छैक। काच, रबर ओ अन्य रसायनक संगे लहेरीक व्यावसायिक प्रतियोगितासँ सेहो लहेरीक शब्दावली प्रभावित भऽ रहल छैक। चमार सभ पकैयासँ सम्बद्ध शब्दावली बिसरि गेल अछि आ मिथिलाक पारम्परिक जुत्ता सभक प्रभेदकेँ सेहो बिसरने जा रहल अछि। एहि व्यवसायमे मशीनकृत जुत्ताक अन्धानुकरण देखल जाइत अछि। तेँ एकर शब्दावली सभ स्तरमे संक्रमणशील अछि।

□

सप्तम अध्याय

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीक भाषातात्त्विक विचार

व्युत्पत्तिक दृष्टिजे शब्द विचार

व्युत्पत्तिक दृष्टिजे व्या. श. मे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़ एहि तीनू प्रकारक शब्द भेटैत अछि ।

रूढ़

रूढ़ शब्द ओ थिक जकर समुदायक अर्थ हो मुदा अवयवक नहि। (**मिथिला भाषा प्रकाश, रमानाथझा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दड़िभङ्गा, चतुर्थ संस्करण, 1964, पृ. 17**) जेना-कुन्नी, कोहा, पैल, भुस्सी इत्यादि ।

व्या.श.मे एहन शब्द सर्वाधिक संख्यामे उपलब्ध अछि। ई शब्द सभ व्यवसाय विशेषक विशिष्ट आधार सामग्री, औजार, उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादित वस्तु ओ तकर गुण-दोषक हेतु रूढ़ अछि।

यौगिक

यौगिक शब्द ओ थिक जकर अवयवक अर्थबोधक संगहि समुदायक सेहो अर्थबोध हो (**तत्रैव, पृ. 17**)। व्या.श.मे एहन शब्द प्रचुर संख्यामे उपलब्ध अछि जेना-

कपड़ा+बिन्नी	- कपड़बिन्नी	धुरा+किल्ली	- धुरकिल्ली
टाल+बटाम	- टाल बटाम	पेंट+लरदी	- पेंटलरदी
दू+कस्सी	- दुकस्सी	बन्हन+चच्छा	- बन्हनचच्छा

मुदा एहि प्रकारक शब्दक संख्या रूढ़ शब्द जकाँ व्यापक नहि अछि ।

योगरूढ़

योगरूढ़ ओहन शब्द थिक जकर अवयवक अर्थबोध हो संगहि समुदायक अर्थ विलक्षण हो (**तत्रैव, पृ. 18**)। व्या. श.मे एहन अनेक शब्द भेटैत अछि, जेना-लोहकट, एकर अवयवक अर्थ अछि लोहासँ काटब अथवा लोहा जकाँ काटब-मुदा समुदायक विलक्षण अर्थ अछि-गाछ आदिकेँ कटबाक प्रक्रिया विशेष, जाहिमे कुड़हरिसँ सोझ छओ मात्र लगाओल जाइत छैक। गोड़धारी, एकर अवयवक

अर्थ अछि-पैर रखबाक स्थल मुदा समुदायक विलक्षण अर्थ अछि खाट, पलङ आदिमे पैर दिसुक भाग इत्यादि ।

भारतीय न्यायशास्त्रमे शब्दक एकटा अन्य प्रभेद यौगिक रूढ़ कहल गेल अछि। ई ओहन यौगिक शब्द थिक जकर अर्थ अवयवक अर्थसँ सर्वथा निरपेक्ष अर्थमे रूढ़ रहैक (**ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस इन इण्डियन फिलॉसाफी, प्रो. हरिमोहनझा, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी-1, 1981, पृ. 61**)। व्या. श. मे अल्पसंख्यक यौगिक रूढ़ शब्द सेहो भेटैत अछि। जेना-बिसकर्मा, लौंगलती, इत्यादि। बिसकर्मा यौगिक शब्द थिक जकर अवयवानुसारी अर्थ अछि-विश्वक निर्माण करऽवला तथा योगरूढ़ शब्दक रूपमे ई देवता विशेषक अर्थ दैत अछि। मुदा व्या. श. मे ई शब्द पटवाक करघाक आधारभूत दुइ गोट खुट्टाक हेतु रूढ़ अछि जे अर्थ एकर अवयवक अर्थसँ सर्वथा निरपेक्ष अछि। एही तरहेँ लौंगलती (मधुरक प्रकार विशेष) शब्द सेहो अवयवक अर्थसँ सर्वथा निरपेक्ष अर्थमे रूढ़ अछि।

उद्गमक दृष्टिञे शब्द विचार

उद्गमक दृष्टिसँ व्या. श.मे दुइ कोटिक शब्द भेटैत अछि-

(क) परम्परागत शब्द, (ख) गृहीत शब्द

परम्परागत शब्दसँ तात्पर्य प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक निर्माण करऽवला शब्द-समूहसँ अछि जे क्रमशः नव्य भारतीय आर्यभाषाकेँ रिक्थक रूपमे प्राप्त भेलैक।

परम्परागत शब्दक कोटि विभाजनक प्रक्रिया प्राकृते कालमे आरंभ भऽ चुकल छल। भरतक नाट्यशास्त्रमे प्राकृत शब्द - समूहक तीन गोट कोटि कहल गेल अछि-(क) समान शब्द, (ख) विभ्रष्ट शब्द आ (ग) देशीमत शब्द ।

(नाट्यशास्त्र, 17/3 'त्रिविधं तच्च विज्ञेयं नाट्ययोग समासतः । समान शब्द विभ्रष्ट देशीमतमथापि च ।')

आधुनिक कालमे नव्य भारतीय आर्यभाषाक शब्दावलीकेँ पूर्वाचार्यलोकनिक कोटि विभाजनक अनुसरण करैत तथा एहिमे किछु परिवर्द्धन करैत आचार्य सुनीति कुमार चटर्जीक कालक्रमानुसार विभाजन अछि-

1. परम्परागत शब्द ओ अछि जाहिमे (क) तद्भव (ख) प्राचीन तत्सम ओ अर्द्धतत्सम (ग) प्राचीनतम गृहीत तथा आर्य मूलसँ अव्याख्यात शब्द : देशी एवं (घ) फारसी ओ ग्रीक भाषाक किछु विदेशी शब्द जे संस्कृत वा प्राक् संस्कृत कालमे गृहीत भऽ चुकल छल, अबैत अछि।
2. गृहीत शब्द ओ थिक जाहिमे (क) प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (ख) नव्य भारतीय भगिनी आर्यभाषा (ग) भारतक आर्येतरलोकनिक भाषा (द्रविड़, कोल, तिब्बत-बर्मन भाषाभाषीक भाषा) ओ (घ) भारतेतर देशक भाषाक शब्द अबैत अछि (**द्रष्टव्य, चटर्जी, पृ. 195-197**)।

मुदा हिनक एहि अवधारणामे अर्द्धतत्सम ओ संस्कृत वा प्राक्संस्कृत काल मे गृहीत विदेशज शब्दकेँ तद्भवेक आलोकमे देखब बेसी सुविधाजनक अछि।

संस्कृतसँ उपगत भऽ ओही रूपमे प्रचलित शब्दकेँ तत्सम, संस्कृतसम वा संस्कृतानुरूप कहल जाइछ। व्या. श.मे एहन शब्दक प्रयोग होइत अछि, मुदा एकर संख्या अत्यल्प अछि। जेना-अर्क, अनन्त, आभरण, काञ्चनपुरुष, निरञ्जनी,पञ्चपात्र, मृदङ्ग, शलाका, शृंगी, सार, इत्यादि।

तद्भव

ओहन शब्द-समूह जे प्राचीन भारतीय आर्यभाषासँ व्युत्पन्न भऽ ध्वनि-परिवर्त्तनक विभिन्न प्रक्रियाकेँ आत्मसात् करैत साम्प्रतिक नव्य भारतीय आर्यभाषाक ध्वनिक अनुकूल उच्चरित होइत अछि, तद्भव वा संस्कृतभव कहल जाइत अछि, जेना-चक्रयष्टि>चक्कयट्ठि>चकइठ। पार्श्विका>पस्सिआ>पासि। मद्गुर>मग्गुर>माङ्गुर। व्यजनिका>बिअनिआ/बीअनि। वक्रनलिका>बकनरिआ>बाकनर ।

देशज शब्द

तत्सम, तद्भव ओ गृहीत शब्दसँ भिन्न शब्द-सम्पदाक हेतु देश्य, देशी, देशज, देशीमत आदि अभिधानक प्रयोग होइत रहल अछि। वस्तुतः देशज शब्दसँ तात्पर्य अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द अछि जकर स्रोत अथवा मूल निश्चित रूपमे ज्ञात नहि छैक।

देशक शब्दक अध्ययनक दृष्टिञे आचार्य हेमचन्द्रक देशीनाममाला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि । आचार्य हेमचन्द्र एहन शब्दकेँ देशी कहलनि अछि जकर संस्कृतसँ व्युत्पत्ति नहि देखाओल जा सकैत छैक। यदि संस्कृतसँ व्युत्पत्ति देखाइयो देल जाय तँ ओ ओहि अर्थमे संस्कृत कोषमे स्वीकृत नहि अछि। तेँ एहनो शब्द देशज अछि जकर अर्थपरिवर्त्तन भऽ गेल छैक तथा जे प्राकृतमे बहुत दिनसँ चल आबि रहल अछि। मुदा अर्थ-परिवर्त्तनक हेतु ई आवश्यक अछि जे ओ शब्दक लाक्षणिक अथवा गौणप्रयोगक आधार पर नहि भेल हो।

(द्रष्टव्य, देशीनाममाला- हेमचन्द, सं. आर. पिसेल, पार्ट-1, बम्बइ, 1880, 1/3-4
जे लक्खणे ण सिद्धा ण पसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु ।
ण य गउण लक्खणासत्त संभवा ते इह णिबद्धा ॥
देसविसेस पसिद्धीइ भण्णमाणा अणन्तया हुन्ति ।
तम्हा अणाइ पाइअ पयट्ट भासा विसेसओ देशी ॥)

बीम्स महोदयक विचारेँ देशज ओ शब्द थिक जकर व्युत्पत्ति संस्कृतसँ नहि भेल अछि आ तेँ देशक प्राचीनतम निवासीलोकनिसँ गृहीत अथवा प्राक् संस्कृत कालमे आर्यलोकनि द्वारा अनुसंधित बूझल जाइत अछि।

(See, A Comparative Grammer of the Modern Aryan Languages of India, John, Beams, 1970, Introduction, page 12

Deshjas are those words which cannot be derived from sanskrit words and are therefore considered to have been borrowed from the aborigines of the country invented by the Aryans in post sanskrit times.)

जी. ए. ग्रियर्सन देशी शब्दक परिकल्पनाकेँ भाषा सम्बन्धी संकुचित ज्ञानक परिणाम माननलि अछि अर्थात् तथाकथित देशी शब्द कोनो ने कोनो मूल शब्दहिक विकसित रूप थिक[1]।

पिशल[2], डा. सुनीति कुमार चटर्जी[3] आदि विद्वान सेहो देशी शब्दक सम्बन्धमे गियर्सनेक मतक अनुयायी छथि। डा. चन्द्र प्रकाश त्यागी हेमचन्द्रक परिभाषाकेँ किञ्चित परिवर्तनक संग प्रस्तुत करबाक आग्रही छथि।[4] डा. शिवमूर्त्ति शर्मा,[5] डा. डबास[6] आदिक देशी शब्दक विवेचन सेहो द्रष्टव्य अछि। श्रीगोविन्दझा देशी शब्दकेँ अज्ञात व्युत्पत्तिकें माननलि अछि।[7] आचार्य रमानाथझा मैथिलीक देशी शब्दकेँ परिभाषित करैत कहने छथि जे ई ने तँ संस्कृतसँ आयल अछि ने भाषान्तरेसँ किन्तु स्वतंत्र मिथिला देशक शब्द थिक।[8]

एतावता देशी शब्दपर प्राचीने कालसँ बड़ बेसी मन्थन होइत रहल अछि आ निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे देसीक अवधारणा अत्यन्त अनिश्चित अछि। ई अवधारणा भाषा ज्ञानक सीमा-सापेक्ष अछि आ कोनो शब्द अपन उद्गमक मूल स्रोतक अन्वेषणसँ पूर्व धरि देशीए अछि। एहन देशी शब्द व्या०श०मे प्रचुर परिमाणमे विद्यमान अछि, जेना इच्वा, गैना, गोइठी (मधुमाछीक प्रभेद विशेष), धन्नी, टहुका, भौकी, मौनी, लूही, हड़ी इत्यादि।

---

1. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, भाल्यूम पार्ट 1, जी. ए. ग्रियर्सन, 1967, इन्ट्रोडक्शन पृ. 127
2. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, रिचर्ड पिशल, अनु. डा. हेमचन्द्र जोशी, पटना, 1958, पृ. 199-208
3. चटर्जी, पृ. 199-208
4. देशी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन, डा. चन्द्र प्रकाश त्यागी, दिल्ली-51-1972, पृ. 31
5. आचार्य हेमचन्द्र रचित देशीनाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डा. शिवमूर्ति शर्मा, जयपुर, 1980, अध्याय-5
6. हिन्दी में देशज शब्द-डा. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, 1980, पृ. 79
7. उच्चतर मैथिली व्याकरण, पं. गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979, पृ. 24-25
8. मिथिला भाषा प्रकाश, पृ. 15

किछु एहनो शब्द व्या. श. मे उपलब्ध अछि जे सामान्य रूपेँ अनेक आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (बङला, उड़िया, असमी, मगही, अवधी, ब्रजभाषा, उर्दू, हिन्दी, भोजपुरी, नेपाली, आदि) ओ अनेक आर्येतर भारतीयभाषा (तिब्बती, बर्मन, तमिल, तेलगु, कन्नड़, मराठी, संथाली आदि)मे प्रयुक्त होइछ। एहन शब्द सभक मूलक सम्बन्धमे किछु कहब असम्भव प्रतीत होइत अछि कारण जे एहन शब्द सभ कोनो एके स्रोतसँ विभिन्न भाषामे गृहीत बुझना जाइत अछि आ ओहि स्रोतक सम्बन्धमे किछु निश्चयात्मक तथ्यक स्थापना नहि भऽ सकल अछि, आ ने निश्चयपूर्वक यैह कहल जा सकैत अछि जे कोन शब्द मैथिलीसँ आन भाषामे गेल अछि अथवा आन-आन भाषासँ मैथिलीमे आयल अछि।

तेँ एहनो शब्द समूहकेँ देशीए शब्दक आलोकमे देखब उपयुक्त अछि। डा० चटर्जी लुङीकेँ बर्मी भाषासँ सम्बन्द्ध कहने छथि (**चटर्जी, पृ. 197**) मुदा एकर स्रोत फारसीमे सेहो भेटैत अछि (**उर्दू हिन्दी शब्दकोष, हिन्दी समिति, हिन्दी, भवन, द्वितीय संस्करण, 1972**)। श्रीगोविन्दझा नूआकेँ नेपाली लुग्गासँ सम्बद्ध कहने छथि (**मैथिली भाषा का विकास, गोविन्द झा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 1974 पृ. 134**)। भगवा, थारी, बाटी, लोटा, हुक्का, हथौड़ी आदि शब्द मैथिलीक संगहि संथालीमे प्रयुक्त अछि (**मैथिली ओ संताली, सम्पर्क आ सामीप्य, डा. विद्यानाथ झा 'विदित', मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ. 72-82**)। एहिना बहुतो तथाकथित देशी शब्द समान रूपें हिन्दी, भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, तमिल तेलुगु, कन्नड़, ब्रजभाषा, मलयालम, नेपाली आदि भाषामे मैथिलीक समानहिं प्रयुक्त देखल जाइत अछि। तेँ एहन शब्दक आगत स्रोतक स्थापनासँ पूर्व एकरा सभकेँ देशीयेक आलोक देखब युक्तियुक्त अछि।

श्रीगोविन्दझा देशी शब्दपर विचार करैत कहने छथि जे हेमचन्द्रक देसीनाममालामे मैथिलीक देशी शब्दक संख्या शून्य जकाँ अछि (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 134**)। मुदा एकरा तथ्यपूर्ण नहि कहल जा सकैत छैक। देसीनाममालामे मैथिलीक व्या०श०क अनेक शब्द किञ्चित ध्वनि ओ अर्थ-परिवर्तनक संग संगृहीत अछि जेना-कडच्छु 2/7 (अयोदर्वी मै. कड़छु), कोसयं 2/47 (लघुशराव:, मै. कोसिया); कोइला 2/49 (काष्ठाङ्गार: मै. कोइला); खडक्की 2/71 (लघुद्वारम्, मै. खिड़की); खल्ला 2/66 (चर्म मै. खाल, खलड़ा); घग्घर 2/107 (जघनवस्त्रभेद:, मै. घघरा); घट्टो 2/111 (नदीतीर्थ, मै. घाट); चट्टू 3/1 (दारुहस्त:, मै. चटुआ); चिल्ला 3/9 (शकुनिकाख्य: पक्षी, मै. चील्ह, चिल्हा, चिल्होड़ि); छल्ली 3/24 (त्वक्, मै. छाल, छलरी, छाल्ही); ढंकणी 4/14 (पिधानिका, मै. ढकनी); तग्गं 5/1 (सूत्रम्, मै. ताग); बेड़ो 6/5 (नौ:, मै. बेड़) इत्यादि।

व्या. शब्दावलियें जकाँ मैथिलीक अनेक सामान्यो शब्द देसीनाममालामे संगृहीत अछि, जेना-अग्घाण 1/19 (तृप्त्यर्थे, मै. अघायल); उड्डसो 1/96 (मत्कुण, मै. उड़ीस); खरहिओ 2/72 (पौत्रः, मै. खड़ड़ू); गंधिओ 2/83 (दुर्गन्धः मै. गन्हि, गन्ह); चासो 3/1 (हलस्फाटित भूमिरेखा, मै. चास); चिल्लो 3/101 (बालः, मै. चिलका); हुलियं 8/59 (शीघ्रम्, मै. हाली-हुली) इत्यादि।

गृहीत शब्द : गृहीत शब्दक हेतु भाषावैज्ञानिकलोकनि विदेशी अथवा विदेशज शब्दक प्रयोग कयने छथि। संस्कृतसँ भिन्न भाषासँ जे शब्द आबि मिथिलाभाषामे मिश्रित भऽ गेल अछि, से विदेशी शब्द थिक (**मिथिलाभाषा प्रकाश, पृ. 15**)।

मैथिलीमे गृहीत शब्दक दुइ गोट कोटि भेटैत अछि-

(क) मध्य भारतीय आर्यभाषाक निर्माणसँ पूर्व गृहीत विदेशी शब्द

(ख) आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे गृहीत विदेशी शब्द ।

मध्य भारतीय आर्यभाषासँ पूर्व गृहीत विदेशी शब्द

विभिन्न भाषाक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई तथ्य स्पष्ट भेल अछि जे किछु शब्द मध्य भारतीय आर्यभाषाक निर्माणसँ पूर्वहि संस्कृतमे गृहीत भऽ गेल छल ओ परम्परा द्वारा नव्य भारतीय आर्यभाषाकेँ उत्तराधिकारमे प्राप्त भेल। व्या. श.मे प्राप्त मन (सं. मन, बेबिलोनियन मीना), लोह (सं. लौह, सुमेरी रौध-द्रष्टव्य, **जर्नल ऑफ द गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट इलाहाबाद, 1969, भाल्यूम 24 पार्ट - 1-4, पृ. 568**); दाम, दमड़ी (**सं. द्राम्म, ग्रीक द्रख्मी-चटर्जी, पृ. 135**) आदि किछु एहने गृहीत शब्द थिक। डा. सुनीति कुमार चटर्जी कर्म्मार, पुष्प, कम्बल, तिल, वल्ली आदि शब्दकेँ द्रविड़ मूलसँ संस्कृतमे गृहीत भेल होयबाक अनुमान कयने छथि (**चटर्जी, पृ. 42**)। एही आधारपर अंकुश, पातिल, शकर, शाखा, हार आदि फारसीमूलक शब्दकेँ सेहो संस्कृतमे गृहीत कहल जा सकैत अछि (**उर्दू हिन्दी शब्द कोष**)। मुदा व्या. श.मे प्राप्त एहन शब्द अथवा ओकर विभ्रष्ट स्वरूपकेँ संस्कृतक माध्यमे आगत होयबाक कारणेँ तद्भवेक आलोकमे देखब बेसी युक्तियुक्त अछि।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे गृहीत विदेशी शब्द

ऐतिहासिक ओ राजनैतिक कारणसँ तुर्की, अरबी, फारसी, पुर्तगाली ओ अंग्रेजीक शब्दकेँ मैथिली भाषा ग्रहण करैत रहल अछि।

व्या. श.मे गृहीत एहन विदेशज शब्दावलीकेँ दुइ कोटिमे बाँटल जा सकैछ-

(क) तुर्की, अरबी ओ फारसीसँ गृहीत शब्द

(ख) यूरोपीय भाषासँ गृहीत शब्द ।

तुर्की, अरबी ओ फारसीसँ गृहीत शब्द

संक्रमणक प्रथम चरणमे मैथिलीमे तुर्की, अरबी ओ फारसीक शब्द गृहीत भेल। व्या. श. मे अनेक शब्दक अरबी-फारसी मूलक तथा संस्कृत मूलक वा देसी पर्याय समानान्तर भेटैत अछि, जेना-तकथा-पटरा, ओस्ताद-महादेव, सोबर्ना-बधना, कटोरा-पेआला, थारी-तश्तरी, छिपली-रिकबी आदि । बहुतो ठाम विदेशज पर्याय प्रबल भऽ कऽ परम्परागत पर्यायक लोप कऽ देलक वा लोपक स्थितिमे आनि देलक अछि। फारसी खड़ामक तुलनामे परम्परागत शब्द पदुक्का (सं. पादुका) अप्रयुक्त भऽ लुप्त भऽ गेल अछि। उर्दू हिन्दी शब्दकोशमे खिराम शब्द गत्यर्थक अछि मुदा व्या. श. मे ई पदुक्काक पर्यायक रूपमे व्यवहृत अछि।

व्या. श. मे औजार, गुमुज, शराब, सिक्का ,सुराही, संदूक, हुक्का आदि अरबी; कुर्त्ता, कैंची, जाजिम, तकिया, तोशक, बुलकी आदि तुर्की ओ कबा, खासदान, गुलमेख, गुलाबपास, तकथा, दारू, दुरुक्खा, देग, बर्फी, मसाला, मैदा, रुमाल, लिबास, सिपहा, हलुआ, आदि फारसीमूलक शब्द प्रयुक्त अछि। एहि तीनूमे सर्वाधिक संख्या फारसी शब्दक अछि।

यूरोपीय भाषासँ गृहीत शब्द

नव्य भारतीय आर्यभाषा सभ संक्रमणक अन्तिम चरणमे यूरोपीय भाषा सभसँ प्रभावित भेल अछि। मैथिली भाषापर यूरोपीय भाषाक प्रभावक दृष्टिऍ पुर्तगाली ओ अंग्रेजी भाषाक शब्द विचारणीय अछि। सोलहम शताब्दीमे पुर्तगालीलोकनि व्यापारीक रूपमे भारत अयलाह । अठारहम शताब्दीक अन्त धरि हिनकालोकनिक प्रभाव रहल। परिणामतः अनेक पुर्तगाली शब्द व्यापारीलोकनिक माध्यमे आयातित भेल। मुदा संख्याक दृष्टिऍ एहन शब्द अल्प अछि, यद्यपि व्या.श.मे एकर अनेक उदाहरण भेटैत अछि जेनाः आलपिन, आलमारी, इस्पात, कत्ता (**पुर्तगाली-कातान**), कनस्तर, कोच, किरीच, जङला, तौनी, तौलिया, परात, परेग, पीपा, पतलून, फीता, फर्मा, बाल्टी, बुइयाम, बुताम, बोतल, मस्तूल, मर्तौल, मार्का, लबादा, साया इत्यादि।

परवर्ती कालमे अंग्रेजी भाषाक व्यापक प्रभावक कारणेँ व्या.श.मे सेहो बहुसंख्यक अंग्रेजी शब्द गृहीत भेल। नव वैज्ञानिक अनुसन्धान द्वारा निर्मित नव चलानी औजार सभक हेतु अंग्रेजी शब्द-ग्रहण प्रचुर रूपेँ होइत रहल जकर स्पष्ट प्रभाव काठ, लोह, चाम आदि उद्योगक आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादनसँ सम्बद्ध शब्दावलीमे देखल जा सकैत अछि। व्या०श०मे अंग्रेजीक प्रचुर शब्दावली दृष्टिगोचर होइत अछि, जेना-अपर, अलमुनिआ, आयरन, ऐरिंग, कल्टी, क्लिप, गिलास, गिरमिट, चेन, जैन, टप, टेप, टेबुल, ट्रंक, ड्राम, नट, पलेना,पाइनर, पालिस, पोटिंग, फाइल, बाबिन,

ब्रुश, बेंच, बैस, रिपीट, रोला, लुप्पी, शेटल, स्टाम, सलाइरिंच, सुलेशन, सिल्भर, सीट, हामर, हुक, हैंडिल इत्यादि।

काठ, लोह, सूत, चाम आदिक व्यवसायमे विदेशज शब्दावली प्रचुर रूपें गृहीत भेटैत अछि, मुदा बाँस, माटि, पानि आदिक व्यवसायमे एहन शब्दावलीक संख्या नगण्ये जकाँ अछि।

व्या. श.मे किछु संकर सामासिक शब्दक उदाहरण सेहो भेटैत अछि, जेना-

मै.+फा. – राजाशाही, बालूशाही, बरहीखाना, सौरखचवा, पासीखाना, ताड़ीखाना

मै.+अं. – अगिनबोट, मोड्डुआ टेबुल

अ.+मै. – गीमगोल

अं.+मै. – पोसपट्टी, हुकहसकल, लमनचुसिया, तिस्करनी, रिंगकटनी, शूतल्ला

अं.+फा. – फ्रीतकथी, रूलदार

फा.+अं. – दराजीटेबुल

अर्थक दृष्टिजे शब्द-विचार

अर्थक दृष्टिएँ व्या. श.मे संज्ञा, विशेषण, क्रिया ओ अव्यय एहि चारि प्रकारक शब्द भेटैत अछि।

संज्ञा

ग्रियर्सन स्वरूपक आधार पर मैथिलीक संज्ञाक तीन कोटि कहने छथि (मैथिली ग्रामर, जी. ए. ग्रियर्सन, पृ. 20-23)-लघु, गुरु ओ गुरुतम। व्या. श. मे अनेक संज्ञा शब्दक तीनू कोटि भेटैत अछि जेना -

लघु	गुरु	गुरुतम
बासुल	बसुला	बसुलबा
भाकुर	भकुरा	भकुरबा
लाड़ु	लड्डू	लड्डुब्बा

मुदा अनेक संज्ञा शब्दक दुइये कोटिक रूप प्रचलित देखल जाइत अछि। एहि प्रकारक संज्ञा शब्दमे लघु-गुरु, लघु-गुरुतम आ गुरु-गुरुतम स्वरूप मात्र देखल जाइत अछि, जेना-

लघु-गुरु – बडौर-बडौरा, रोहू-रोहुआ, थारी-थरिया, इत्यादि

लघु-गुरुतम – चल्हा-चल्हबा, मारा-मरबा इत्यादि।

गुरु-गुरुतम – भट्टा-भटबा, कठोला-कठोलबा इत्यादि।

किछु संज्ञा शब्दमे ओकर कोनो एकेटा कोटिक रूप साम्प्रतिक मैथिलीमे प्रयुक्त भेटैत अछि जेना पथिया। सम्भव जे एकर लघु ओ गुरु रूप क्रमशः पाथि आ

पाथी हो जे कालक्रममे लुप्त भऽ गेल हो। पाथी शब्द एखनहु नेपाली भाषामे नपनाक अर्थमे प्रयुक्त अछि।

एहिना विभिन्न संज्ञा शब्दक आकारान्त अथवा ईकारान्त वैकल्पिक रूपकें सेहो एकर लघु-गुरु कोटिक स्वरूप कहल जा सकैत छैक, जेना भथि-भाथी, डोरि-डोरी, बैसक-बैसकी, छेनि-छेनी, थैल-थैला, लोह-लोहा इत्यादि।

संज्ञाक सामान्य ओ वर्ण द्वित्वसँ युक्त भिन्न रूप सेहो एकर लघु ओ गुरु कोटिक द्योतक थिक, जेना, खूटा-खुट्टा, जूता-जुत्ता, लुट्ट-लिटिया, बूटा-बुट्टा, टूट-टुट्टा, इत्यादि । एहन शब्द-युगल समानार्थी ओ वैकल्पिक स्वरूपक होइत अछि।

सामान्यतः संज्ञाक तीनू कोटि द्वारा समाने अर्थक द्योतन होइत अछि, मुदा कोनो-कोनो शब्दमे कोटि-परिवर्त्तनसँ अर्थमे अल्प-परिवर्त्तन सेहो देखल जाइत अछि (द्रष्टव्य, फा. मै. ले., पृ. 275)। जेना- कुलहरबा शब्द कुलहरिक गुरुतम कोटि थिक मुदा ई कुलहरिसँ जीविका चलबऽवला मजूर ओ आमक प्रकार-विशेष अर्थ मे रूढ़ भऽ गेल अछि। किछु गुरुतम कोटिमे पैघत्वकसूचकता सेहो देखल जाइत अछि, जेना- बसुलबा, बटबा इत्यादि।

विशेषण

व्या. श.मे प्रयुक्त विशेषण शब्द भाषाक सामान्ये विशेषण अछि। किछु विशेषण अवश्य पारिभाषिक स्वरूपक देखल जाइत अछि, जेना-कैंच, गैंच, पोलखाह, तन्नुक, लप्पच, लचलच, सेव, तरख, भोंथ, चोख इत्यादि।

क्रिया

व्या. श.मे प्रयुक्त अकर्मक, सकर्मक ओ प्रेरणार्थक क्रिया सामान्ये प्रकृतिक अछि मुदा एहिमे प्राप्त नामधातुमे अनेक विशिष्ट अर्थमे रूढ़ भऽ पारिभाषिक प्रकृतिक भऽ गेल अछि, जेना-चपरायब, मसुआयब, पथरायब, गदिआयब इत्यादि।

किछु संयुक्त क्रियापद सेहो प्रयुक्त भेटैत अछि, जेना-पोसाइ खायब, कुनाइ करब, छिलाइ करब, छोड़ाइ करब, छपटा करब इत्यादि।

अव्यय

व्या. श.मे सामान्ये अव्ययक प्रयोग देखल जाइत अछि।

अनेकार्थक शब्द

व्या. श.मे एहनो शब्द भेटैत अछि जकर अनेकार्थक प्रयोग छैक, जेना-

1. काँटी- (क) कील (ख) मत्स्यविशेष
2. गगरा - (क) धातुपात्र विशेष (ख) मत्स्यविशेष
3. दोआली- (क) दू आङ्गुर फानवला जाल (ख) बरहीक औजार विशेष।

4. पाटा - (क) राजक औजार विशेष (ख) हलुआइक पूड़ी बेलबाक पीढ़ी
5. फूल - (क) पुष्प (ख) धातु-विशेष
6. बर्फी - (क) मिष्टान्नविशेष (ख) तगाइक प्रभेद
7. लादी- (क) मॉटिक गँहीर बासन विशेष
(ख) गदहापर लादल कपड़ाक मोटा
8. अड़ानी- (क) ढेकी चलबयकाल आसक हेतु दूटा खुट्टापर अवलम्बित दण्ड जकरा पकड़ि चलौनिहार स्थिर रहैछ (ख) कोरोकेँ पाढ़ि दिस ससरबासँ रोकबाक हेतु दूनूक बीच ठोकल काष्ठखंड (ग) केबाड़क लतमाराक कोनमे ठोकल लकड़ी जे केबाड़केँ स्वत: बन्द होयबासँ रोकैछ।
9. कुच्चा - (क) रन्दा आदि द्वारा काठक छीलल अंश
(ख) आम निर्मित तीमन विशेष
(ग) लोहाक टुकड़ीकेँ काटि देला उत्तर बचल अकार्यक खंड
10. मुहला - (क) भाथीक तीनू तकथाकेँ सम्बद्ध करऽवला घनाकार वस्तु (ख) डिबियाक मुन्ना (ग) आबाक मुखभाग
11. खुट्टी - (क) खड़ामक अवयवविशेष (ख) छोट खुट्टा
(ग) जनउ खेहबाक उपकरण विशेष (घ) कपड़ा टँगबाक उपादान विशेष।

एहि तरहेँ व्या.श.मे द्वयर्थक,त्रयर्थक ओ चतुरर्थक शब्द सेहो भेटैत अछि। एहिमे सर्वाधिक अनेकार्थक शब्द द्वयर्थक अछि मुदा किछु संख्यामे त्रयर्थक ओ चतुरर्थक शब्द सेहो भेटैत अछि।

विभिन्न शब्दमे निहित अर्थकेँ देखलासँ पता लगैत अछि जे अनेकार्थक शब्दक भिन्न-भिन्न अर्थमे सामान्यत: किञ्चितो साम्य रहितहिँ छैक, जेना पाटाक दूनू अर्थमे काष्ठ-निर्मित औजार विशेष, अड़ानीक तीनू अर्थमे अड़यबाक वस्तु तथा खुट्टीक चारू अर्थमे काठक लम्बवत् ठाढ़ वस्तु विशेषमे मूल अर्थक साम्य भेटैत अछि। मुदा कोनो-कोनो अनेकार्थक शब्दक विभिन्न अर्थमे मूल अर्थसँ अल्पांशो सम्बन्ध नहि देखल जाइत अछि जेना लादी, फूल, दोआली आदि शब्दक दूनू अर्थमे क्वचितो साम्य नहि अछि।

स्वार्थक शब्द

स्वार्थक शब्दावलीसँ तात्पर्य्य एहन शब्द-समूहसँ अछि जकर विशिष्ट अर्थ विभिन्न शब्दमे यथावत् प्रधान बनल रहैत छैक मुदा ओहि विशिष्ट अर्थसँ सम्बद्ध सूक्ष्म वा अल्प परिवर्त्तित अर्थक द्योतन स्वार्थिक प्रत्ययक संयोगसँ होइत छैक।

1. एहन शब्द-समूहमे किछु तँ संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम स्वरूप थिक जकर विवेचन पूर्वहि कयल जा चुकल अछि।

2. किछु स्वार्थिक शब्द-समूहमे प्रभेदार्थक भिन्नता देखल जाइत अछि जेना- नाम-नमका, ठाढ़-ठढ़का, चाकर-चकरका आदि।

3. किछु स्वार्थिक शब्द समूहमे क्रमश: पैधत्व ओ लघुत्वक भिन्नता देखल जाइत अछि जेना- थार-थारी, आरा-आरी, बोआर-बोआरी, कठौता-कठौती आदि।

4.- किछु स्वार्थिक शब्द-समूहमे सम्बद्ध अर्थमे विशिष्ट परिवर्त्तनक संग ओही जातिक भिन्न वस्तुक अर्थक द्योतन होइत अछि जेना- चरखा-चरखी, जोंक-जोंकी आदि। एहिमे चरखा शब्द सूत कटबाक यन्त्र विशेष अर्थक द्योतन करैत अछि आ चरखी सूते व्यवसायसँ सम्बद्ध बाड़सँ बड़ौर निकालबाक यन्त्र विशेषक; जोंक जलमे रहऽवला जन्तु विशेष अछि जे सम्पर्कमे आबऽवला जन्तुकेँ चिहुटि कऽ पकड़ि लैत छैक आ जोंकी तदाकार काँटीक प्रभेद अछि जे दूटा अवयवकेँ परस्पर सम्बद्ध कऽ रखबाक हेतु संयोजकक रूपमे प्रयुक्त होइत अछि।

पर्यायवाची शब्द

एकहि अर्थक द्योतक भिन्न-भिन्न शब्दकेँ परस्पर पर्यायवाची शब्द कहल जाइत छैक। मुदा समस्त भाषामे क्षेत्र, अभिधाता आदिक प्रभावसँ एके शब्द किञ्चित ध्वन्यन्तरक संग उच्चरित ओ लिखित होइत रहैत अछि। एहन अल्प ध्वन्यन्तरसँ युक्त शब्दकेँ मानकीकरणसँ पूर्व स्वतंत्र शब्दक कोटिमे राखल जायब संभव नहि होइत छैक। तेँ एहन शब्द-समूह परस्पर पर्यायवाची नहि कहल जा सकैत अछि आ ई सभ भाषामे समानान्तर चलऽवला अपभ्रष्ट शब्द स्वरूप होइत अछि। एहन शब्दमे ध्वनिक भिन्नता अत्यल्प होइत छैक। मुदा क्रमहि ध्वनिमे विशिष्ट अन्तर भऽ गेला उत्तर एहनो शब्द भाषाक स्वतंत्र शब्दक रूपमे कोष ओ साहित्यमे प्रयुक्त होमऽ लगैत छैक आ समानार्थी शब्दक रूपमे व्यवहृत होमऽ लगैत छैक। तेँ भिन्न ध्वनिसँ युक्त एहन शब्द-समूह जकर अर्थ समान हो, पर्यायवाची कहल जा सकैत छैक। यद्यपि दूटा समानार्थक शब्द सामान्यत: समान अर्थक द्योतन करैतो सर्वथा समरूप नहि कहल जा सकैत छैक। सारत: समानार्थी होइतहुँ स्वतंत्र सत्तासँ युक्त प्रत्येक भाषिक एकाइ प्रयोगादिक आधारपर किञ्चित भिन्न स्वरूपक होइतहिँ अछि। तेँ सामान्यत: एके शब्दभेदवला ओ दू अथवा दू सँ अधिक शब्द जकर सामान्य अर्थ कमसँ कम एकटा मुख्य विवक्षासँ युक्त हो,पर्याय कहल जाइत अछि (**हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन, डा०बदरीनाथ कपूर, प्रयाग, 1965, पृ. 10**)।

अंग्रेजीमे पर्यायक हेतु *Synonym* शब्द भेटैत अछि। चैम्बरक कोशमे एकर व्याख्या दोसर शब्दक समानार्थी शब्द (सामान्यत: समान अर्थक अत्यन्त निकट) कयल गेल अछि।

वेब्स्टर डिक्सनरीक अनुसार समान भाषा ओ व्याकरणिक कोटिक एक अथवा अधिक सामान्य विवक्षा तथा तत्त्वत: अभिन्न परिभाषासँ युक्त ओ दू अथवा दूसँ अधिक शब्द पर्याय कहल जाइत अछि, जकर सारभूत अथवा व्युत्पत्तिक अर्थ समान अथवा समानक निकट होइत अछि तथा जे अर्थसूचकता अथवा उपलाक्षणिक प्रयोगहि मात्रमे वैभिन्य रखैत अछि (**वेब्स्टर थर्ड न्यू इन्टरनेशनल डिक्सनरी, अनएब्रिज्ड, मसाचुसेट्स, यू. एस. ए., 1967 पृ. 2320**)।

एतावता कोनो भाषामे प्रयुक्त पर्यायक दुइ गोट कोटि भऽ सकैत छैक-पर्याय ओ पर्यायवत् । पर्यायसँ तात्पर्य्य एहन शब्दसँ अछि जे दोसर शब्दक हेतु स्थानापन्न भेने विवक्षित अर्थ अथवा व्याकरणिक, उपलाक्षणिक व्युत्पत्तिक असामञ्जस्यक सृष्टि नहि करैत अछि। पर्यायवत् शब्द ओ थिक जे एकटा समान विवक्षासँ युक्त रहैतो दोसर शब्दक सर्वांशत: स्थानापन्न नहि भऽ सकैत छैक।

व्या. श.मे एहि दूनू कोटिक शब्द देखल गेल अछि। एके अर्थक हेतु विभिन्न क्षेत्रमे प्रचलित शब्द परस्पर विशुद्ध पर्याय थिक जेना-कोढ़ा-सुरसा, ढीप-पैनल, नट-डिबरी, रन्दा-पलेन, कुम्हर-भतुआ, घाठि-बेसन, आबा-चोल्हा, बण्डी-सदरी इत्यादि ।

एकटा मुख्य विवक्षासँ युक्त सारभूत अर्थक निकट अर्थवला पर्यायवत् शब्द सेहो देखल गेल अछि मुदा एहन शब्द व्याकरणिक कोटि, पारिभाषिक स्वरूप, व्युत्पत्तिक अर्थ ओ उपलाक्षणिक प्रयोगमे किञ्चित वैभिन्यसँ युक्त अछि, जेना-कुन्नी-भुस्सी, छेँट-कुटका, पटरी-तकथी, साया-तहबन, एकवर्णा-सुकार, फटौन-छेना, पाड़ब-छकड़ब, मुङरा-पिटना इत्यादि।

एहि समस्त पर्यायवत् शब्दमे अर्थक समरूपता नहि कहल जा सकैछ किएक तँ फटौन आ छेना यद्यपि पर्यायक रूपमे व्यवहृत अछि आ दूनूक समान अर्थ दूधक फटला उत्तर प्राप्त सार अंश छैक, मुदा फटौन स्वत: फाटल दूधक सारअंश मात्रक हेतु रूढ़ अछि। एहिना अर्थ, प्रयोग आदिमे किञ्चित वैभिन्य विभिन्न पर्यायवत् शब्दमे बोद्धव्य अछि।

व्या. श.मे प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द समूहमे ई प्रवृत्ति देखल जाइत अछि जे कालक्रमे जे पर्याय जनमुखसँ दूर हटि जाइत छैक ओ प्रबल पर्याय द्वारा स्थानापन्न कऽ देल जाइत छैक। प्राय: एही कारणे अनेको विदेशज शब्द व्या. श.मे प्रयुक्त भेटैत

अछि, मुदा ओकर समानार्थी परम्परागत शब्द लुप्त सन बुझना जाइत छैक। ढुक-सुरसा, नट-डिबरी, पैनल-ढीप आदि पर्यायवाची शब्द-समूहमे क्रमश: प्रथम पर्यायक प्राधान्य होइत गेल अछि आ दोसर पर्याय लोपक स्थिति दिस उन्मुख अछि।

शब्द निर्माणक प्रक्रिया

व्या. श.मे शब्द निर्माणक प्रक्रियापर विचार कयला सन्ताँ ई पाओल गेल अछि जे अनेक शब्द सामान्य जनजीवनसँ गृहीत भेल अछि आ आकृति-प्रकृतिक आधारपर एहन शब्दकेँ विशिष्ट व्यवसायक विशिष्ट शब्दावलीक स्थानपर आरूढ़ करा देल गेलैक अछि। एहि आधारपर चिरतन (तासक रंगक आकृति विशेष), लौंग (लौंगक फूलक आकृतिक गहना विशेष), बैंसपतिया(बाँसक पातक आकृतिक माछविशेष), कर्पूरिया(कर्पूरक सुगंधसँ युक्त पान विशेष), मुट्ठी (मुट्ठीसँ आबद्ध करवाक समाठक मध्यवर्ती भाग), डँड़कस (खिड़कीक मध्यवर्ती काष्ठदंड);, पात (पात सन पातर ओ चाकर बाँसक वस्तु विशेष), दाँत (आरीक दाँत, पटहाक खिरहिरी); पथरौटी (पाथर सदृश कठोर माटि), गिलासी (गिलासक आकृतिक नक्कासी), गउमुखी (गाइक मुखाकृतिक वस्त्र विशेष), लहसुनिञा (लहसुनक पोरक आकृतिक गहना विशेष), सौतिनिञा (सौतिनक आकृतिसँ युक्त गहना विशेष), पोखरिया (पोखरिक आकृतिक तगाइ विशेष), चाउर (चाउरक आकृतिक धोबीक चेन्हासी विशेष), मखानी (मखान सदृश फूटल अन्न), मसुआयब (माँस जकाँ चिम्मर होयब), लालजामुन (लाल रंगसँ युक्त जामुनक आकृतिक मिष्टान्न विशेष), बैसक्खा (वैशाख मासमे चुअऽवला ताड़ी, वैशाख मासमे प्राप्त मधु) आदि शब्द बनल अछि।

विभिन्न प्रकारक रंगक नाम सेहो सामान्ये जीवनसँ गृहीत अछि जेना-बदामी, कत्थी, कटहरिया, सोनौली, रूपौली, केसरिया, बैंगनी इत्यादि।

किछु शब्द ध्वनि- अनुकरण ओ अनुरणन सिद्धान्तक आधारपर बनल जेना-टेटिया, रूनुझुनु, झमकायब, कलकल, छलछल, छप्पर-छप्पर, ठकठकिया, खपखप, खचखच इत्यादि।

किछु शब्दक निर्माणमे समासक योग देखल जाइत अछि जेना कठखुर्पी, गछडढौनी, कठअथरी, रोटपक्का आदि।

सादृश्य सेहो शब्द निर्माणमे सहायक भेल अछि जेना अंगुरतान, जोंकी आदि।

नव तकनीकक फलस्वरूप आगत शब्दक ग्रहण ओ ओकर ध्वनि अनुकूलनक प्रवृत्ति द्वारा सेहो शब्दक निर्माण होइत रहल अछि जेना-बइस (Vice), कैटलक (Catalogue) इत्यादि।

मुदा शब्द निर्माणमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान अछि मैथिली प्रत्यय विधानक। अपरिमित संख्यक मैथिली प्रत्यय सम्बद्ध अर्थक प्रतिपादक शब्दक निर्माणमे सहयोगी रहल अछि, जे स्वतंत्र रूपें विवेच्य अछि।

वैकल्पिक शब्द ओ मानकीकरणक समस्या

एकें शब्दक बहुरूप उच्चारण कोनो भाषाक शाश्वत प्रवृत्ति थिक। एहीपर विचार करैत महाभाष्यकार पतञ्जलि कहने छलाह जे '**भूयांसोऽपशब्दाः अल्पीयांशः शब्दाः। एकैकस्यहि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः। तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्येवमादयोऽपभ्रंशाः**, (द व्यांकरण महाभाष्य ऑफ पतञ्जलि, भाल्यूम 1, एफ. कीलहार्न, पूना, तृतीय संस्करण, 1962, पृ. 2)। एहिमे शब्दसँ महाभाष्यकारक तात्पर्य पाणिनीय व्याकरणसँ सिद्ध शब्द छल आ अपशब्दसँ तात्पर्य लोकोच्चरित अपाणिनीय असाधु शब्द छल।

पतञ्जलि भाषामे उच्चरित एहन वैकल्पिक शब्द-स्वरूपकेँ देखने छलाह। एहन शब्द-स्वरूपक संख्या बहुत होइत छैक आ पतञ्जलि एहि समस्याक जाहि स्वरूपक चित्रण कयलनि ताही रूपमे ई समस्या एखनहु वर्तमान अछि आ भविष्योमे भाषाक शब्दमे रहत।

साधारणतः एकहि अर्थक द्योतक एकटा सामान्य शब्दक अल्प ध्वन्यन्तरसँ युक्त विभिन्न प्रकारक उच्चारण देखल जाइत अछि। एहन उच्चारण वैभिन्यसँ प्रभावित शब्द-समूहकेँ वैकल्पिक शब्द कहब उचित। एके शब्द वर्तनी भेदसँ सेहो लिखित भाषामे वैकल्पिक स्वरूपक दृष्टिगोचर होइत अछि

व्या. श.मे शब्दक वैकल्पिक रूपक बाहुल्य अछि। ई वैकल्पिक रूप सभ वक्ता, श्रोता ओ लेखकक आधारपर दुइ कोटिमे विभाजित कयल जा सकैत अछि-

(क) वर्त्तनी भेदसँ प्रभावित

(ख) उच्चारण भेदसँ प्रभावित

वर्तनी भेदसँ प्रभावित

1. अइ-ऐ तथा अउ-औ क विकल्पः - गरइ-गरै । बनउआ - बनौआ।

2. अए - ऐ, आए-आय, अओ-औ, आओ-आव क विकल्प -बघएर-बघैर। नेहाए-नेहाय। अओजार - औजार । पनिझाओ- पनिझाव ।

3. ई ध्वनिक अनुवर्ती सानुनासिक आ ध्वनिक विकल्प-कोनिआँ-कोनियाँ -कोनिञा । बहिआँ-बहियाँ-बहिञा ।

4. पंचम वर्ण संयोग तथा अनुस्वारक विकल्प-पङ्खा-पंखा । पञ्चू-पंचू । डम्फा-डंफा।

5. ड़ँ-ण- मैथिली ध्वनि-समूहमे ण ध्वनिक स्वतंत्र अस्तित्व नहि देखल जाइछ तथापि ड़ँ तथा ण वैकल्पिक रूपें लिखित होइछ, जेना भेंड़-भेण, पेड़-पेण, अड़ांची-अणाची इत्यादि । ण द्वारा ँड़ क अभिव्यक्तिमे उचित वर्तनीक प्रयोग नहि होइत अछि।

6. ह्रस्वतर 'अ' क अवधारणा तथा विवर्गीय व्यञ्जन संयोग वा रेफ क विकल्प असतूरा-अस्तूरा, चरखा-चर्खा, मरड़ा-मर्ड़ा।

उच्चारण भेदसँ प्रभावित

1. एकाधिक स्वरक आगम, लोप ओ वर्ण-परिवर्तन जन्य विविध उच्चरित रूप:कनहेर-किनहेर-किनहरि-कनहेरि, पनकब-पनुकब-पुनकब इत्यादि।
2. अपनिहिति जन्य विकल्प:कामि-काइम, सोंसि-सोइंस इत्यादि।
3. वर्ण व्यत्यय जन्य विकल्प:कचब-चाकब इत्यादि।
4. अघोष-सघोषक विकल्प:गमला-घमला, घाटि-घाठि इत्यादि ।
5. अल्पप्राण-महाप्राणक विकल्प:ठेकुआ-ढेकुआ, सऽहत-सऽहद इत्यादि।
6. सानुनासिक- निरनुनासिकक विकल्प:कँसकुट-कसकुट, भाँथी-भाथी इत्यादि।
7. वर्गक चतुर्थ वर्ण तथा अहपरक तद्वर्गीय तृतीय वर्णक विकल्प-अधा - अदहा, इत्यादि (द्रष्टव्य, मिथिला भाषा कोष, भूमिका, पृ.-33)।
8. ढ़ तथा स्वरभक्ति युक्त ड़ह ध्वनिक विकल्प:कोढ़ा-कोड़हा, पीढ़ी-पिड़ही इत्यादि।
9. तवर्ग-टवर्गक विकल्प:थलकमल-ठहुकमल, दासा-डासा इत्यादि ।
10. न्द-न्न-न ध्वनिक विकल्प:चान्दखोल-चानखोल, भुजबन्द-भुजबन्न-भुजबन इत्यादि।
11. न तथा ल ध्वनिक विकल्प:नाह-लाह, नेहाय-लेहाय इत्यादि।
12. म ध्वनिक अल्पप्राण ओ महाप्राणक विकल्प:खाम-खाम्ह।
13. र तथा ड़ ध्वनिक विकल्प:चिलहोरि-चिलहोड़ि, मकोर-मकोड़ इत्यादि।
14. र तथा ड़ उभयवर्णयुत शब्दक विकल्प:करड़ा-कड़रा-कर्ड़ा, खरड़ा-खड़रा-खर्ड़ा, गोरड़ा-गोड़रा-गोर्ड़ा, मरड़ा-मड़रा-मर्ड़ा इत्यादि।
15. ल ओ र ध्वनिक विकल्प:कलजोरिया-करजोरिया, कुलहरि-कुरहरि इत्यादि।

16. ल ध्वनिक अल्पप्राण ओ महाप्राणक विकल्प:माल-माल्ह इत्यादि।

17. पूर्व सानुनासिक ग, पूर्व सानुस्वार ग, ङ तथा ड्.ड. ध्वनिक विकल्प जेना-अङ्गा-अंगा मुदा उचित श्रुति अछि अङ्‌ङा। इत्यादि ।

18. घ ध्वनिक संग पंचम वर्ण 'ङ'क संयोगयुक्त शब्दक लेखनमे भिन्नता देखल जाइछ, यथा- सिङ्घी-सिंघी-। मुदा-वास्तवमे एहन ठाम 'घ' उच्चारण श्रुतिगोचर नहि होइछ, अपितु ङ केर महाप्राण उच्चारण श्रुत होइछ तथा-सिङ्ही। एहिना घोंघा-घोङ्घा-घोङ्हा वैकल्पिक शब्दमे अन्तिमेकेँ उच्चारणक अनुरूप कहल जा सकैत छैक।

एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे व्या. श.मे एके शब्द अनेक वैकल्पिक रूपमे उच्चरित ओ लिखित होइत अछि। शब्दक एहि विविध उच्चारण तथा वर्तनीमे विविध भेदक यावन्तो उदाहरण देल गेल अछि तदतिरिक्तो बहुत रास नमूना अछि जकरा सभकेँ नियमबद्ध करब संभव नहि भेल अछि।

शब्दक विभिन्न वैकल्पिक रूपमे ध्वन्यन्तरक विविध रूप देखल जाइत अछि जेना एके शब्दमे अल्पप्राण-महाप्राण, अघोष-सघोषक वैकल्पिक स्वरूप-सऽहत/सऽहथ/सऽहद शब्दमे; उच्चारण ओ वर्तनी भेदजन्य विविध वैकल्पिक रूप अंगा/अङ्गा/अङा/अङ्‌ङा आदि शब्दमे; अल्पप्राण-महाप्राण, अघोष-सघोष तथा स्वरक स्थान परिवर्तनवला वैकल्पिक रूप पनका/पनकी/पनगा/पनगी/पनघा/पनघी/पनुकी/पनुगी/पनुघी/पुनका/पुनगा/पुनघा/ पुनगी/पुनकी/पुनघी आदि शब्दमे द्रष्टव्य अछि। पतञ्जलि भाषामे प्राप्त विविध वैकल्पिक शब्दक हेतु अपशब्दक प्रयोग कयलनि, कारण हुनका लग पाणिनिक व्याकरण छल आ ओ शब्दक साधुत्व ओ असाधुत्वक जाच कऽ सकैत छलाह। मुदा जनभाषामे प्राप्त शब्दक वैकल्पिक रूपवैविध्यकेँ अपशब्द नहि कहल जा सकैत छैक। तखन एतबा तँ अवश्ये विचारणीय भऽ जाइत छैक जे कोनो सामान्य शब्दक कोन वैकल्पिक रूपकेँ मानक मानल जाय अर्थात् कोन उच्चारणकेँ स्तरीय बुझि ओकर अनुरूप वर्तनीवला शब्दकेँ कोष, व्याकरण ओ साहित्यमे स्थान देल जाय। व्या. श.मे शब्दक मानकीकरणक ई समस्या अछि। वर्तनी भेदजन्य विविध वैकल्पिक रूपक मानकीकरणक सम्बन्धमे श्रीदीनबन्धु झा, रमानाथ झा, गोविन्द झा आदिक विवेचन द्रष्टव्य अछि (**मिथिला भाषा कोष, भूमिका, पृ. 20-35; मिथिला भाषा प्रकाश, पृ. 11-13; लघुविद्योतन, श्रीगोविन्दझा, दरभंगा, 1963, पृ. 57-59; उच्चतर मैथिली व्याकरण, पृ. 20**)। उच्चारण जन्य विकल्प कोषकार ओ वैयाकरणलोकनिक मीमांसाक क्षेत्र अछि।

साधित शब्द

व्या. श.मे शब्द साधनक दृष्टिऐ उपसर्ग ओ प्रत्यय-विधान विचारणीय अछि। एहि शब्दावलीमे अल्पसंख्यक उपसर्ग तथा बहुश: प्रत्ययक प्रयोग द्वारा साधित शब्द निष्पन्न देखल जाइत अछि।

उपसर्ग

व्या. श.मे जे उपसर्ग पाओल जाइत अछि ताहिमे किछु संस्कृतक प्रभावसँ गृहीत अछि। संस्कृतक ओ स्वतंत्र शब्द अथवा विशेषण जे शब्दमे अपन मौलिक अर्थसँ हीन भऽ विराजमान अछि सेहो उपसर्गक रूपमे भेटैत अछि। भाषिक संक्रमणक कारणें फारसी ओ अंग्रजीक किछु उपसर्ग सेहो गृहीत रूपमे भेटैत अछि। एहन उपसर्ग मात्र फारसी ओ अंग्रजीएटाक गृहीत शब्दमे उपस्थित नहि भेटैत अछि, अपितु अनेक विशुद्ध मैथिली शब्दावलीमे सेहो पाओल जाइत अछि (**फा. मै. ले., पृ. 267**)।

व्या. श.मे प्राप्त किछु उपसर्गकेँ अकारादि क्रममे सोदाहरण देखाओल जाइछ।

अ- अमाच्छ (माछविहीन), अगम, अथाह, अदरस, अकाठ, असार (काठक सारतत्वविहीन भाग), अकामिल आदि।

अका/अकाय-अकाबोन/अकायबोन (**भीषण दुर्भेद्य जंगल, मिलाउ-अकादारुण द्रष्टव्य, फा. मै. ले. पृ. 268**)

कु - कुबान्ह, कुडओल, कुकाठ, कुघट आदि।

खर- खरबसुली (टेढ़का बसुला), खरचून (पानिमे घोरलाक बाद सुक्खल चून), खरबहिआँ (आधा बाहँसँ युक्त), खरचाल (वंशनिर्मित आधार विशेष), खरवत्ती (बाँसक छठम अंशसँ निर्मित वत्ती) आदि।

नीम- नीमास्तीन (अधबहुआँ कुर्ता), नीलगोल (उत्तल काटसँ युक्त डीप)।

ब - बजाल (महाजाल) ।

भत- भतलोह (मृदुलोह), मिलाउ-भतरोइयाँ, भतोल ।

सु- सुडओल, सुबान्ह, सुरेब।

प्रत्यय

मैथिली भाषामे बहुविध प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि। वैयाकरणलोकनि चारि प्रकारक प्रत्यय मानैत छथि।

(क) कृत् (ख) तद्धित (ग) सुप् ओ (घ) तिङ्। सुप् (कारक विभक्ति) ओ तिङ् (विविध कालद्योतक क्रियार्थक प्रत्यय) भाषाक सामान्य प्रकृति थिक।

व्या.श.मे एकर कोनो विशिष्ट रूप नहि छैक। शब्द-साधनक दृष्टिवें तद्धित ओ कृत् प्रत्ययक व्या.श.मे महत्वपूर्ण भूमिका छैक।

व्या.श.मे प्राप्त कृत् ओ तद्धित प्रत्ययक प्रयोग आ ताहिसँ साधित शब्दक अवलोकनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहि शब्दावलीमे स्वार्थिक प्रत्यय-योजनाक बाहुल्य जकाँ छैक। साधित शब्दकेँ अल्पाधिक्यक सूचक शब्दक निर्माणक हेतु अनेक स्तरमे भिन्न-भिन्न प्रत्यय-योजनाक आवश्यकता होइत छैक जेना, खोर् + **अना**-खोरना+**ई**-खोरनी, खोरना+**आठ**-खोरनाठ+**ई**-खोरनाठी। एहि तरहेँ धातुसँ नामक निर्माण प्रक्रिया चलैत अछि आ पुनश्च खोरनाठमे **अब्** प्रत्ययक योगसँ खोरनाठब नामधातु साधित होइछ। एहि तरहेँ शब्द अपन निर्माणक क्रममे एकाधिक प्रत्ययसँ युक्त भेल करैत अछि। किछु प्रत्ययक संयोजन अकारण भेल करैत छैक जे शब्दक अर्थमे क्वचितो परिवर्तन नहि करैत छैक, जेना बडोर-बडौरा, थारी-थरिया; धार-धारा; परिकठ-परिकट्ठो आदि ।

तहिना अनेक ठाम प्रत्यय-योजनामे विभिन्न प्रकारक व्याख्याक सम्भावना उपस्थित होइत अछि, जेना-

करछु + ल्ली (**मिथिला भाषा विद्योतन, दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद्, दड़िभंगा, 1353 साल, पृ. 85**) – करछुल्ली

करछु + उल्ली (फा. मै. ले. पृ. 230) – करछुल्ली

करछु + ल – करछुल + ली – करछुल्ली

करछुल + ई (ई बलाघातयुक्त)– करछुल्ली

एहि सन्दर्भमे इहो तथ्य विचारणीय अछि जे अनेक शब्दक निर्माण मे दू अथवा अधिक प्रत्ययक संयुक्त स्वरूप प्रत्ययक रूपमे व्यवहृत रहैत अछि। एकरा संयुक्त प्रत्यय कहल जा सकैत छैक। शब्द-साधनमे कखनो तँ ई प्रत्यय समूह अपन संयुक्ते स्वरूपमे साधित शब्दक निष्पत्ति करैत अछि तँ कखनो शब्दक विकास क्रममे पृथक्-पृथक् प्रत्यय योजना सेहो शब्द साधनक कारण होइत छैक। उदाहरण हेतु ही प्रत्यय पर विचार कयल जा सकैत अछि। एहि प्रत्ययसँ कठही, बँसही, तेलही, फुलही, कँसही, चिवही, दुधही, गँजही, सेरही, जटही आदि शब्द निष्पन्न होइत अछि। दूधसँ-**आह** प्रत्ययक योजनासँ दुधाह आ ताहि मे-**ई** प्रत्ययक योजनासँ दुधही शब्द निष्पन्न भऽ सकैछ-दूध+आह+ई-दुधही। तहिना तेल+आह+ई-तेलही। तेँ एहन शब्दमे ही प्रत्ययक कल्पना अनावश्यक प्रतीत भऽ सकैत छैक। मुदा-**आह** आ-**ई** संयुक्त प्रत्ययसँ कठही, बँसही, फुलही, कँसही, गँजही, सेरही, जटही आदि शब्दक निष्पत्तिक व्याख्या नहि भऽ पबैत अछि कारण एहि सभसँ प्रथम प्रत्यय-आहक

संयोजने साधित शब्द निष्पन्न नहि होइत अछि। तेँ पश्चात्वर्ती-ई क योजनाक प्रश्ने नहि उठैत छैक। पुनश्च काँस मे-**हा** प्रत्ययक योजनासँ कँसहा आ ताहिमे **ई** प्रत्ययक योजनासँ कँसही आ तदनुसारें सेर + **हा** + **ई**-सेरही, बाँस+हा+ई-बँसही शब्दक साधन कयल जा सकैत छैक। मुदा एहू दुहू प्रत्ययक संयोजनसँ कठही, फुलही, गँजही, जटही आदि शब्दक साधन संभव नहि। तेँ-**ही** प्रत्ययक स्वतंत्र सत्ता मानब आवश्यक भऽ जाइत छैक आ एकरा (**आह+इ**) सँ पृथक् अस्तित्वक संग स्वीकारब आवश्यक भऽ जाइत छैक ।

मैथिली प्रत्यय विधानपर आरंभिक कार्य डा. ग्रियर्सनक (**मैथिली ग्रामर, ग्रियर्सन, पार्ट-2, अध्याय-1, पृ. 20-42**) छनि। दीनबन्धुझा (**मिथिला भाषा विद्योतन, तद्धित ओ कृत् प्रकरण**) समस्त कृत प्रत्ययकेँ स्वरादि मानने छथि। डा. सुभद्रझा (**फा. मै. ले., पृ. 195-266**); रमानाथझा (**मिथिला भाषा प्रकाश, पृ. 24-26**) एवं श्रीगोविन्दझा (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 141-157**) सेहो एहि विषयक विवेचन कयने छथि मुदा एहि विषय पर सर्वाधिक वैज्ञानिक अनुशीलनक प्रयास डा. सुभद्रझाक भेलनि जे मैथिली प्रत्यय-विधानक अध्ययनक हेतु मानक मानल जा सकैत अछि।

कृदन्त, तद्धितान्त, क्रियावाची विशेषण ओ नामक कोटिक निर्माण करऽवला सब मिलाकऽ डा. सुभद्रझा साढ़े चारि सयसँ अधिके प्रत्ययपर विचार कयने छथि। ओहिमे अधिकांश प्रत्यय व्या. श.मे प्रयुक्त भेटैत अछि जाहिपर पुनर्विचार पिष्टपेशन मात्र होयत । मुदा व्या. श.मे किछु और नवीन प्रत्यय भेटैत अछि। संगहि एहनो प्रत्यय अछि जे उक्त प्रत्यय सूचीमे विवेचित प्रत्ययसँ साम्य रखैतो भिन्न प्रकृतिक अछि। अतएव आगाँ व्या. श.मे प्राप्त किछु एहन प्रत्यय समपर विचार करब अपेक्षित बुझना जाइत अछि जे पूर्वमे विवेचित नहि भेल किंवा पूर्व विवेचित रूपसँ किछु भिन्न प्रकृतिक दृष्टिगोचर होइत अछि। एहन प्रत्यय व्या. श.मे दू प्रकारक भेटैत अछि। एक प्रकारक प्रत्यय एहन अछि जाहिसँ अनेक शब्दक साधन होइत अछि आ दोसर प्रकारक प्रत्यय एहन अछि जकर एकल प्रयोग मात्र दृष्टिगोचर भेल अछि।

एकल प्रयोज्य तद्धित प्रत्यय

– अड्गर – लोहसँ लोहड्गर (लोहाक पैघ छड़)

– अठ – अठा/अट्ठा/एठा- चाउरसँ चौरठ-चौरठा-चौरट्ठा-चौरेठा (चाउरक चिक्कस) तुलनीय-मुरेठा (फा. मै. ले., पृ. 231)।

– अन्नी – गोड़हासँ गोड़हन्नी (छोट गोड़हा)।

– आली – दूसँ दोआली (दू आङुर फानवला जाल)।

– आय – तेलसँ तेलाय (तेल रखबाक मृत्पात्र विशेष)।

- आंय - गोड़सँ गोड़ांय (नेनाक पैरक भूषण विशेष)।
- उनी - नाथसँ नथुनी (नाकक गहना विशेष, ओना प्राचीन ओ लाक्षणिक प्रयोगमे ऊन शब्द न्यून अर्थ मे जीवित भेटैत अछि जेना 'ऊनसँ दून होयब'मे। तदनुसार ऊनसँ-ई प्रत्ययक योगसँ ऊनी शब्द आ तकरा संग नाथक सामासिक शब्द नथुनीकेँ मानला उत्तर उनी प्रत्ययक स्थिति संदिग्ध भऽ जाइत अछि।
- एठ - अरबा (बिना उसिनल अथवा बिना उलाओल अन्न)सँ अरबेठ।
- एमा/-एना - मूड़ीसँ मुरेमा/मुरेना (मृत मालक मूड़ीपरक चाम)।
- ऐला - खोइ्ही (मलाहक वंशनिर्मित माछ रखबाक पात्र विशेष) सँ खोइ्हैला (छोट खोइ्ही)।
- ओठा-औठा - भैंससँ भैंसोठा/भैंसौठा (महींसक व्यावसायिक चाम)।
- ओल - सातसँ सतोल (सात आङुर फानवला जाल)।
- ओली - खञ्चा (बाँसक बासन विशेष)सँ खचोली (छोट खञ्चा)।
- अंडी - जोलहासँ जोलहंडी (जोलहा द्वारा निर्मित)।
- कानी - बच्चासँ बचकानी।
- कुचाइ/-कुचाहि - बालूसँ बलुकुचाइ/ बलुकुचाहि।
- कुन - ताड़सँ तड़कुन/ताड़कुन (ताड़क फऽड़)।
- कुह/-कुआह - काँचसँ कचकुह/कचकुआह, कचकुह + आह-कचकुहाह, पश्चात् ह मे व्यञ्जन लोपसँ कचकुआह निष्पति संभावित।
- डा - लोइसँ लोहडा (जुत्ता निर्माण करबाक हेतु चमारक लौहनिर्मित त्रिकोण औजार विशेष)।
- चट/चट्टा-चट्टी - भुन्ना (मत्स्यविशेष) सँ भुनचट / भुनचट्टा/भुनचट्टी/भुइंचट्टी (छोट भुन्ना माछ)।
- चन्ना - भाकुर (मत्स्यविशेष)सँ भकुरचन्ना (मत्स्यविशेष)।
- चुन्नी - गरइ (मत्स्यविशेष)सँ गरचुन्नी (छोट गरइ)।
- छन-छाह - मैलसँ मैलछन, मैलछाह (किञ्चित मैल)।
- छर/छराइन/छराह/छराही - नोनसँ नोनछर/नोनछराइन/नोनछराह/नोनछराही।
- झाओ- - पानिसँ पनिझाओ (जलयुक्त प्रदेश)।
- हुर - पीर (कुम्हारक बासन अतारबाक हेतु व्यवहृत औजार विशेष) सँ पिरहुर (छोट पीर)।

- हुल-हुला-हुली- सोनसँ सोनहुल/सोनहुला। विचारणीय-हिन्दी-सुनहला, रुपहला।

बहुल प्रयोज्य तद्धित प्रत्यय

- अइ - श्री गोविन्दझा एहि प्रत्ययसँ मात्र दुइयेटा शब्द चतुरइ आ अठ/नइक निष्पत्ति कहने छथि (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 149**), परन्तु व्या. श. मे एहि प्रत्ययसँ निष्पन्न आन अनेक शब्द बाड़ा+अइ-बरइ, खड़ा+अइ-खरइ, चम्पा+अइ-चम्पइ आदि भेटैत अछि। बहुतो शब्द व्या. श.सँ बाहरो देखल जाइत अछि (**का. मै. ले., पृ. 232**)।
- अओन- - संख्यावाची शब्दसँ डेढ़ओन (डेढ़ आङुर फानवला जाल), अठओन (आठ आङुर फानवला जाल), सतओन, दसओन, बरओन, आदि।
- आउनी - संख्यावाची शब्दसँ एकाउनी (डोमक बिनाइक प्रकार विशेष), दोआउनी, तेआउनी, पचाउनी आदि।
- आँठ - विद्योतनमे एहि प्रत्ययसँ मधुरांठ शब्दक निष्पत्ति देखाओल गेल अछि (**मिथिला भाषा विद्योतन, पृ. 55**)। सिङ्ही (मत्स्यविशेष) सँ स्वार्थिक शब्द सिङ्हाठ (पैघ सिङ्ही)मे सेहो ई प्रत्यय प्रयोज्य होइत अछि।
- ओनहा - संख्यावाची विशेषणसँ दसोनहा (पानक विशेष प्रकारक गिलौरी, दस आङुर फानवला जाल), सतोनहा (सात आङुर फानवला जाल), अठोनहा आदि।
- औनी - पोखरिसँ पोखरौनी (पोखरिमे पोसबाक योग्य माछ), पाँचसँ पचौनी (पाँच आङुर फानवला जाल), चौनी (चारि आङुर फानवला जाल)।
- औला-औली - सोनसँ सोनौला (सोनाक रंगक), रूपसँ रूपौला (रूपाक रंगक)।
- कम - मूल कर्म, व्यवसायवाची शब्दक निष्पत्तिमे जेना कठकम, लहकम, बसकम, मटिकम आदिमे लगैछ।
- खा - डा. सुभद्रझा करिखा शब्द मात्रमे एहि प्रत्ययक योजना कहने छथि। मुदा करिखाक निष्पत्तिक हेतु कारी+ख-करिख+ आ-करिखा। अथात् दू स्तरमे शब्दक विकासकेँ मानल जा सकैत छैक। खा-प्रत्ययेटासँ निष्पन्न व्या. श. सँ सम्बद्ध शब्द

अछि चैला+खा-चेलखा (इंधनयोग्य छोट काष्ठखंड), कान+खा-कनखा (चैला आदिक कान)।

- खी – डा. सुभद्रझा-खी प्रत्ययपर स्वतंत्र विचार नहि कयने छथि मुदा गनतीक हेतु व्यवहृत शब्दक क्रममे एकर उल्लेख कयने छथि। (द्रष्टव्य, फ. मै. ले.)। ई प्रत्यय संख्यावाची शब्दसँ संज्ञा बनबैत अछि जेना पाँचसँ पचकी/पचखी (पाँच गोट शूलसँ युक्त बर्छी), सतखी (सात गोट शूलसँ युक्त बर्छी)

- न्ही – संख्यावाची विशेषण दूसँ दोन्ही (दू आङुर फानवला जाल), तेन्ही, चौन्ही आदि।

- ला – कोहासँ कोहला (अँचार आदिक हेतु पैघ कोहाक प्रभेद), मुँहसँ मुहला (कुम्हारक आबाक मुखभाग) आदि।

-सारि/-सारी – कमारसँ कमरसारि (कमारक कार्यस्थल), लोहारसँ लोहरसारि (लोहारक कार्यस्थल)। मूल-**शाला**।

- साही – साधुसँ साधुसाही (लोटाक प्रभेद विशेष), बालूसँ बालूसाही (मिष्टान्न विशेष)

- संकर – हाथसँ हथसंकर (हाथक गहना विशेष), पयरसँ पयरसंकर (पैरक गहना विशेष)। मूल-सं. शृंखला।

- ही – काठसँ कठही (काष्ठनिर्मित), गाँजासँ गँजही (गाँजाक हेतु) बाँससँ बँसही (बाँससँ निर्मित), सेरसँ सेरही (सेर भरिक) आदि।

एकल प्रयोज्य कृत् प्रत्यय

- अइल – √फंकसँ फेकैल (फेकि कऽ माछ बझयबाक हेतु प्रयुक्त जाल)।

- अकोर/अकोरा – हिलसँ√हिलकोर- हिलकोरा।

- अठान – अठाउन-अठाउनि-अठाउनी-√कमायबसँ कमठान/कमठाउनि -कमठाउन/कमठउनी।

- अड़ – √चर् सँ चरड़ (चरबा योग्य)

- अबा – √उल् सँ उलबा।

- अबी – √कट् सँ कटबी (मिष्टान्न विशेष)।

- अहा- – √फुट्सँ फुटहा।

- ओर/-ओरा – √हिल् सँ हिलोर - हिलोरा।

- औत – √सुख सँ सुखौत।

- औंस – औंसी-अनौंस-√चाल्सँ चलौंस - चलौंसी-चलनौंस (चालला उत्तर बचल अवशिष्ट)।

व्या. श.मे प्राप्त तद्धितान्त ओ कृदन्त दुहू प्रकारक शब्दक निर्माणसँ सम्बद्ध किछु विशिष्ट प्रत्यय अछि–

आम/आमा/अम्मा – खोधसँ खोधामा (फा. मै. ले., पृ. 213), गोलसँ गोलामा।

- ड़ – हाथसँ हाथड़ (जाँतक उपरौटामे लागल काष्ठखंड)।

-थरि-थारी-थरिया- गोरसँ गोरथरि/गोरथारी/गोरथरिया (सेजमे पैर रखबाक स्थान)। मूल-सं. स्थली, ओना थरि स्थानक अर्थमे प्रयुक्त होइछ जेना माछक थरि, मालजालक थरि आदि, मुदा थारी एहि अर्थमे प्रयुक्त नहि होइछ तेँ-**थारी** मात्रकेँ स्वतंत्र प्रत्ययक रूपमे स्वीकारल जा सकैत छैक।

-दो – फुलसँ फुलदो (डंटीवला तारक गाछ ओ ओकर पुष्पयुक्त नेढ़ा)।

-बाँस/मास – डाँड़सँ डड़बाँस/डड़मास (गाछपर चढ़ैत काल पासीक डाँड़मे कटिया लटकयबाक हेतु बान्हल फीता जाहिमे एकटा अँकुश पृष्ठ भागमे लागल रहैत छैक। मिलाउ-ढेलमास।

-लास – लोहासँ लोहालास (चमारक लौह औजार विशेष)।

- सुम/सुन/सुम्ही/सुँही/सुमनी/सुन्दर/सुन्दरी-बालूसँ बलसुम (बालुमिश्रित), बलसुन, बलसुँही, बलसुमनी, बलसुन्दर, बलसुन्दरी।

- सौर – पीर (सूत कटबाक हेतु तूरक दंड)सँ पिरसौर (पिउर बँटबाक खरहीक दंड)।

- हम – माटिसँ मटिहम (लोहारक भाथीक अग्रभागक माटिक नली, पूर्वमे लौह नलीक स्थानमे प्रयुक्त)

-हना/हान/हाना – सिरसँ सिरहना, सिरहान, सिरहाना (सेजमे माथ दिसुक भाग)। ओना हना शब्द भाग, खंड, अंशक अर्थक द्योतकक रूपमे व्यवहृत अछि। तदनुसार हनाकेँ प्रत्यय नहिओ मानल जा सकैत छैक, मुदा-हान, हानाक संगे से गप्प नहि। मूल-स्थान।

-हला - संख्यावाची शब्द तीनसँ तेहला (नोनी माटिक रससँ दू बेर नोन ओ शोराक अवक्षेपणक बाद बचल अवशिष्ट द्रव), (फा. मै. ले., पृ. 381 पर डा. सुभद्रझा एकरा क्रमवाची शब्दक रूपमे ग्रहण कयने छथि।) तुलनीय-पहिला, नहला, दहला, तेहल्ला। हिन्दी-पहला।

- उत - आगासँ अगाउत । √ताक सँ ताकुत । (**तत्रैव, पृ. 229**)

- औटा - तीसीसँ तिसिऔटा, ऊपरसँ उपरौटा, तरसँ तरौटा, काजरसँ कजरौटा, छानसँ छनौटा (झँझ, तेलादिमे पक्व वस्तुकेँ छनबाक लौह उपकरण)।

- औना - (फा. मै. ले., पृ. 245 मे एकरा कृत् प्रत्ययक रूपमे करिलगौना, पुरौना आदि शब्दमे देखाओल गेल अछि।) सीसोसँ सिसौना (सीसोक वन), तरसँ तरौना (खोञ्चा अथवा मिठाइक परातकेँ रखबाक हेतु तरमे देल बाँस अथवा धातुक डमरूक आकृतिक उपादान।

ध्वनि-विचार

मैथिली ध्वनि-समूहपर डा. ग्रियर्सन (**मैथिली ग्रामर, पृ. 2-17**), दीनबन्धुझा (**मिथिला भाषा विद्योतन, वर्ण प्रकरण**), डा. सुभद्रझा (**फा. मै. ले., अध्याय 2 एवं 3 एवं मैथिली व्याकरण मीमांसा, दरभंगा, 1983, पृ. 7-18**), रमानाथझा (**मिथिला भाषा प्रकाश, पृ. 1-13**) ओ श्रीगोविन्दझा (**मैथिली भाषा का विकास, अध्याय-4**) विचार कयने छथि। व्या. श.क ध्वनि समूहमे स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनि यथावत् देखल गेल अछि।

स्वर ध्वनि

व्या. श.मे अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, (अए), ऐ (अइ), ओ, ओ (अओ), औ (अउ) स्वर ध्वनि श्रुतगोचर होइत छैक जाहिमे प्रत्येक सानुनासिक ओ निरनुनासिक भेल करैत छैक।

समस्त स्वर ध्वनि शब्दक आदिमे स्वतंत्र रूपेँ, शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्वरक अनुवर्ती अथवा व्यञ्जनक संगे श्रुतगोचर होइत अछि। मुदा अ, ई तथा ऊ ध्वनि एकर अपवाद अछि। अ ध्वनि शब्दक अन्तमे व्यञ्जनक संग श्रुतगोचर होइत अछि। ई ध्वनि शब्दमे कतहु स्वतंत्र रूपेँ श्रुतगोचर नहि होइत छैक मुदा मध्य ओ अन्तमे

व्यञ्जनक संगे श्रुतगोचर होइत छैक। ऊ ध्वनि शब्दक आदिमे तँ स्वतंत्र रूपेँ श्रुतगोचर होइत छैक मुदा मध्य ओ अन्तमे व्यञ्जन-ध्वनिक संगहि श्रुतगोचर होइत छैक।

ह्रस्वतर-स्वर

उच्चारणक दृष्टिसँ मैथिलीक समस्त एकल स्वर अ, इ, उ, ए, ए (अए), ओ, ओ (अओ) ह्रस्व तथा ह्रस्वतर स्वरूपमे श्रुतगोचर होइछ तथा आ, ई ऊ दीर्घ स्वर एवं ऐ, औ संयुक्त स्वर सेहो ह्रस्व आ दीर्घ स्वरूपक श्रुतगोचर होइत छैक।

ओना डा. सुभद्रझा ऐ(अइ) तथा औ (अउ) ध्वनिक ह्रस्व स्वरूपकेँ नहि मानैत छथि (**मैथिली व्याकरण मीमांसा, पृ. 13**), मुदा भिन्न-भिन्न शब्दमे एहि दूनू ध्वनिक भिन्न-भिन्न उच्चारण एहि विषयक सूक्ष्मतासँ अध्ययनक अपेक्षा रखैत अछि। उच्चारण भेदसँ युक्त किछु ऐ तथा औ ध्वनियुक्त शब्दकेँ देखल जा सकैत अछि।

ऐंठी	-	ऐंठलाह	कौड़ी	-	कौड़िया
घैल	-	घैलची, घैलसिरी	चौरस	-	चौरसा
अगरैल	-	अगरैलही	पौआ	-	पौआही
पैंच	-	पैंचका	चौठ	-	चौठिया
मैल	-	मैलछन	कठौत	-	कठौतिया
चमैन	-	चमैनिञा	सौतिन	-	सौतिनिञा
गैंच	-	गैंचाह	औंठा	-	औंठास .

व्यञ्जन-ध्वनि

व्या. श.मे निम्नलिखित व्यञ्जन ध्वनि देखि पड़ैत अछि।

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	ङह्	
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ड़्	ढ़्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्	न्ह्	
प्	फ्	ब्	भ्	म्	म्ह्	
य्	र्	ल् ल्ह्	व्	स्	ह् तथा अनुस्वार	

1. ङ्, ङह्, ञ्, न्ह्, म्ह् तथा ल्ह् ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैत अछि मुदा मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइत अछि।
2. ड़् ध्वनि र् ध्वनिक किञ्चित परिवर्तित रूपमे उच्चरित होइत अछि। ई ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैत अछि। एहि ध्वनिक 'र' ध्वनिक संग वैकल्पिक स्वरूप शब्दक मानकीकरणक समस्या थिक (**मैथिली ग्रामर, पृ. 9 एवं फा. मै. ले., पृ. 161**)।

3. ढ़ ध्वनिक उच्चारण ड़ ध्वनिक महाप्राण स्वरूपक (ड़ह) होइत छैक (मैथिली ग्रामर, पृ. 13)। ई ध्वनि शब्दक आदिमे नहि पाओल जाइत अछि।

4. ड तथा ढ ध्वनि शब्दक मध्य ओ अन्तमे शब्द-युग्म अथवा संयुक्ते पदमे श्रुतगोचर होइत अछि, स्वतंत्र रूपें एकल अथवा असंयुक्त पदमे नहि, जेना गड्ढा, ढकढोल, अड्डा, पण्डा आदि।

5. ण् ध्वनिक अस्तित्वक सम्बन्धमे विभिन्न भाषा वैज्ञानिकलोकनिक मध्य विवाद अछि। डा. ग्रियर्सन (**तत्रैव पृ. 13**) तथा दीनबन्धुझा (**मिथिला भाषा कोष, पेण/पेंड़, भेणी/भेंढ़ी, भोंढ़ा/भोणा आदि शब्दमे यथास्थान**) पूर्वसानुनासिक ड् ध्वनिक हेतु 'ण' ध्वनिक अस्तित्व मानैत छथि। मुदा डा. सुभद्रझा (**फा. मै. ले, पृ. 177**) ओ श्री गोविन्दझा (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 80**) एहि ध्वनिक अस्तित्वकें नहि स्वीकारैत छथि। एहिमे परवर्ती मत विशेष समीचीन बुझना जाइछ। वर्तनीमे ई ध्वनि सवर्गीय स्पर्श ओ नासिक्य संयोगमे सानुनासिक ध्वनिक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

6. य तथा व ध्वनि शब्दमे अपश्रुतिक रूपमे श्रुतगोचर होइत अछि। इ, ए ध्वनिक पश्चात्वर्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति य तथा उ एवं ओ ध्वनिक अनुवर्त्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति व श्रुतगोचर होइत अछि जेना- घटवरिआ (या), नदिआ (या), अपिआरी-अपियारी, दीअठि-दीयठि, खोआ (वा), गूआ (वा), सिसुआ(वा)।

स्वर गुच्छ

मैथिली स्वर-गुच्छपर विस्तृत विवेचन श्रीगोविन्दझा कयने छथि (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 86-88**)। ऐ(अइ), औ(अउ), अए/आए तथा अओ/आओ ध्वनि मैथिलीमे मौलिक वा संयुक्त स्वर थिक, तें एकरा सभकें स्वरगुच्छक मध्य परिगणित नहि कयल गेल अछि। ताहिसँ इतर निम्नलिखित स्वर-गुच्छ व्या०श० मध्य भेटैत अछि।

आइ-लाइठ (कोल्हुक दंड)। **आउ**-देसाउर (देशोद्भव)। **इअ**-हरिअर (हरितवर्ण)। **इआ**-पोठिआ (माछ-विशेष)। **इअ**-दीअर (नदीक मध्यमे उगल जमीन)। **उआ**- आ **उआँ**-सिसुआ (चर्खा ओ भट्ठीकें सम्बद्ध करऽवला लौहनली, नेअरियाक भट्ठीक अङ्ग विशेष), बहुआँ। **उइ**-कुइट (सोनारक फूल नामक द्रव्यसँ रचित साँचा)। **ऊआ**-चूआ (फेकौआ जालक केन्द्र भाग)। **एआ**-नेआर(सोनारक

अँगेठाक राख)। **एओ** ढेओढ़ा। **ओआ**- दोआति (मसिपात्र)। **ओइ** वा **ओँइ**-गोइठी (छोट गोइठा, मधुमाछीक जाति विशेष), चोँइटा (माछक त्वचा)। **अइआ** अथवा **ऐआ**-कइआ (कसेराक औजार विशेष)। **अउआ** अथवा **औआ**-कलपौआ (कलप कयल नूआ)। **इअउ** अथवा **इऔ**-खिऔटी (अत्यन्त खिआयल)। **इआए**-पलिआएब (खपड़ाक डओलकें गोलिआएब)। **उइआ**- रुइआ(तूर)। **ओइआ**-बखरोइआ (गाछक वल्कल)।

व्यञ्जन-गुच्छ

श्रीगोविन्दझा मैथिली व्यञ्जन गुच्छपर विचार कऽ ई निष्कर्ष निकालने छथि जे विशुद्ध मैथिलीमे कोनहुटा व्यञ्जन गुच्छ अथवा अनुस्वार नहि अछि (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 89-90**)। मुदा हिनक ई कथ्य चिन्तनीय होइतहुँ एहिठाम एकर विशद विवेचनक अवकाश नहि। व्या. श.मे निम्नलिखित व्यञ्जन-गुच्छ भेटैत अछि-

क्क- झिक्का (पटवाक करघाक पेटलरदीकें नचयबाक हेतु फट्ठीक नोंखगर टुकड़ी), **च्च**- कच्चक(बरहीक औजार विशेष), **च्छ**-छुच्छी (सूतविहीन नड़ी), **ट्ट**-फुट्टा (फूटल बासन), **ट्ठ**-मिट्ठा (गुड़), **त्त**-पित्तर(धातु विशेष), **त्थ**-हत्था(औजारकें हाथसँ पकड़बाक अवयव), **प्प**-चप्पत (चाकर ओ पातर), **प्फ**- रप्फू(कपड़ामे तानी-भरनीक बुनाइ द्वारा मरम्मतिक प्रक्रिया), **ग्ग**-तग्गर (पुष्पविशेष), **ग्घ**-घग्घर(जघनवस्त्रविशेष), **ज्ज**-धज्जी (लरदीपर लपेटल सूतकें दूनू कात छिड़िअयबासँ बचयबाक हेतु कातमे लपेटल कपड़ाक जौड़), **ज्झ**-मज्झा (ढेकीक मध्यवर्ती कील), **ड्ड**- लड्डू (मिष्ठाइ विशेष), **ड्ढ**-गड्ढा (गढ़हा, खाधि), **द्द**- कसिद्दा (कपड़ापर उखारल फूल-पात), **द्ध**-दुद्धी (पेड़ल दूधक द्रवभाग), **ब्ब**-डब्बुक (पैघ करछु), **ब्भ**-उब्भी (टाट आदिमे देबाक छिद्रयुक्त बाँस), **र्र**-तिर्री (करघाक माकूक भीतरी भागमे भरनीक नड़ी लगयबाक हेतु लोहक कील), **ल्ल**-कड़हुल्ली (छोट कड़ाही), **स्स**-दस्सी (करघापर चढ़ाओल तानीकें बीनि लेलाक बाद बचल ओ अंश जे बीनल नहि जा सकैछ), **ङ्ग**-लोहङगर (लोहाक पैघ छड़), **ङ्ङ**-झिङ्ङा (माछविशेष), **ञ्च**-पिञ्चिस (चमारक औजार विशेष), **ञ्ज**-पञ्जा (रिक्शाक हुडमे लागल लोहक वस्तु विशेष), **ण्ट**-कण्टील (माटिक बासन विशेष), **न्त**-अन्ती (कानक भूषण विशेष), **न्थ**-रन्थ (रथ), **न्द**-रन्दा (बरहीक औजार विशेष), **न्न**-पन्निख (जोलहाक करघामे बीनल कपड़ाकें तानि कऽ रखबाक उपकरण), **म्प**-कलम्पू(अं. क्लैम्प, देबाल ओ चौकठिकें परस्पर

सम्बद्ध करबाक हेतु लोहक उपादान विशेष), म्फ-डम्फा (वाद्यविशेष), म्ब-बम्बइया (खालिस सोनाक प्रभेद), म्भ-सुम्भा (लोहामे छेद करबाक औजार-विशेष), म्म-बम्मा (ताड़ीक नपना विशेष)।

एहि सूचीकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ई समस्त गुच्छ सवर्गीय अछि। इन्द्रकमल, जन्त्र, जन्त्री, त्रिशूल, विग्रह आदि किछु भाषान्तरसँ गृहीत शब्दमे अवश्य विवर्गीय व्यञ्जन-गुच्छ देखल जाइत अछि। बाल्टी, जिस्ता, इस्तिरी, अगस्त, अस्तूरा, गुप्ती, सिल्भर, गुलदस्ता, कनस्तर, अंगुस्ताना, बस्तर, आस्तीन, अस्तर, आस्कोट, पोस्तमान आदि शब्दमे उपस्थित विवर्गीय व्यञ्जन गुच्छमे व्यञ्जन संयोगक मध्य ह्रस्वतर स्वरक परिकल्पनाक कारणेँ एकरा सभकेँ गुच्छ मध्य परिगणित नहि कयल जा सकैत छैक, यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थमे मान्य वर्तनीक आग्रहेँ विवर्गीय गुच्छेक रूपमे एहन शब्दकेँ लिखित भाषामे गृहीत कयल गेल अछि तथा आनो बहुतो शब्द मान्य वर्तनीक अनुरूपे लेल गेल अछि।

शब्दमे वर्ण संख्या

मैथिली शब्दक मात्रात्मक अभिरचना ओ शब्दक लम्बाइपर श्रीगोविन्दझाक अध्ययन द्रष्टव्य अछि (**मैथिली भाषा का विकास, पृ. 97-100**)। तद्नुसार मैथिलीमे आठ अक्षर धरिक शब्द पाओल जाइत अछि। मुदा आठ अक्षरक शब्द क्रियापद मात्रमे देखल जाइत अछि जकर कारण क्रियापदमे प्रत्ययक जटिलता अछि। व्या. श.मे एकाक्षरसँ लऽ कऽ षडक्षर धरि शब्द भेटल अछि।

श्रीगोविन्दझाक विचारेँ एकाक्षर शब्दमे एकहुटा संज्ञा अथवा विशेषण नहि अछि (**तत्रैव, पृ. 97**)। मुदा व्या. श.मे एकाक्षर संज्ञा ओ विशेषण दुहू उपलब्ध अछि, जेना- को (तारक फलक एकक), चूँ(कुम्हारक माटि कोड़बाक खाधि), जौ (यव-जोखबाक परिमाण), दू (दुइ संख्यार्थक), पु(पूआ), बे (चालनिक छेद), बै(करघाक अवयव विशेष), मो (चाउरकेँ अल्प सिक्त करबाक हेतु देव पानि), रू (तूर), सो(पृथ्वीतलसँ स्वतः छुटल पानि), ले (नीच तलसँ युक्त), लो (लौह रंगक) इत्यादि। समस्त एकाक्षर शब्द अव्युत्पन्न अछि। संख्याक दृष्टिऐ एहन शब्दक अल्पता देखल जाइत अछि।

द्यक्षर शब्द व्या. श.मे बहुलतासँ भेटैत अछि। इहो अव्युत्पन्न प्रकृतिक अछि जेना- आवा, ओधि, कून, खोला, गोनी, गोठि, घेर, चिक, चूड़, छारी, पास, फेँटी, फान, लारी इत्यादि।

त्र्यक्षर शब्द मौलिक ओ व्युत्पन्न दुहू प्रकारक भेटैत अछि। एहनो शब्द प्रचुरतया उपलब्ध अछि जेना-

मौलिक- दररी, पैड़ार, बाङर, बेसर, बटुरी, लबनी, लिलोह इत्यादि।
व्युत्पन्न- असरा, छितनी, टरना, फुलिया, बजाल, लधना इत्यादि।

चतुरक्षर शब्द अपेक्षाकृत कम संख्यामे उपलब्ध अछि। एहन शब्दमे अधिकांश शब्द व्युत्पन्न ओ सामासिक अछि मुदा अल्पसंख्यामे मौलिक शब्द सेहो उपलब्ध अछि। जेना-

मौलिक- अपियारी, खपिआर इत्यादि
व्युत्पन्न- कनौजिया, टिकुलिया, परोड़िया, पोखरिया, बहतौनी, सोहगैली इत्यादि।
सामासिक- नोनफर, हरखंडा, चमरख आदि।

समस्त पंचाक्षर शब्द यौगिक अथवा व्युत्पन्न होइछ जेना-खुरचनिजा, गोबरझार, झिमझिमिजा, तिनपतिया, लोहरसारि इत्यादि।

षडक्षर शब्द सेहो मौलिक नहि देखल जाइत अछि। एहन शब्दक संख्या अत्यल्प अछि। उदाहरणार्थ- खिचाखिचौअल, चननतुलसी, बगलभरुआ, बदामपापड़ी इत्यादि।

ध्वनि-परिवर्तन

व्या. श.मे ध्वनि-परिवर्तनक विभिन्न दिशा क्रियाशील देखल जाइत अछि। ध्वनि-परिवर्तन संस्कृत, प्राकृत ओ विदेशज तीनू प्रकारक शब्दमे पाओल जाइत अछि। शब्दक आदि मध्य ओ अन्त तीनूठाम ध्वनिमे परिवर्तन लक्षित होइत अछि।

आगम- प्रा. कडच्छु- कड़छुल। विदे. अकीक-हकीक। विदे. बेंच-बिरिंच।
लोप- सं. स्थाली-थाली-थारी। सं. सराबः-सराअ-सराय-सराइ। विदे. स्लाइड रिंच-सलाइरिंच। फा. पारसंग-पासंग।
विपर्यय- सं.-करोटि-कटोरी। सं. सराबः-सरबा।
विकार- शब्दमे ध्वनि-विकारक प्रकार बहुआयामी अछि आ ई पृथके अनुसन्धानक विषय थिक। एहिठाम किछु प्रमुख विकारक संकेत कयल जाइत अछि।

क्षतिपूरक दीर्घीकरण- सं. पर्ण-पण्ण-पान। सं. चक्र-चक्क-चाक।
समीकरण- सं. प्रोष्ठी-पोट्ठी-पोठी। सं. सूर्प-सुप्प-सूप। सं. दात्र-दात्त-दाँत
विषमीकरण- नुपुर-नेउर। सं. मुकुट-मउड-मौड़

अघोषीकरण-	सं. लाभ-नफा। दे. अड्डा-अट्टा। फा. मेज-मेच।
घोषीकरण-	सं. आपाक-आबाअ-आबा, सं. कपाट-कवाड-केवाड़
अकारण नासिक्यीकरण-	सं. अर्चि-आँच। सं. मुद्गरक-मुग्गरअ-मुङ्गरा।
महाप्राणीकरण-	सं. परशु-फरसा। सं. शृंगी-सिङ्गी-सिङ्ही।
अल्प प्राणीकरण-	विदे. तख्त:-तकथा। विदे. ह्वाइस-भाइस।
मिथ्या सादृश्य-	विदे. अंगुस्तान-अंगुरतान। विदे. चिलौन-चिरौंत।
मूर्धन्यीकरण-	सं. तर्कु-थकु। सं. स्थलकमल-ठ्ढ़कमल। सं. संदंशिका-संडंसिआ -सँड़सी।
महाप्राण > ह-	सं. हस्तघट-हथहड़। सं. लाक्षा-लाख-लाह।

अन्य विकार

औ > औ	-	धौत-धोती।	क्ष > ख	-	चर्मरक्षक-चमरख।
ऐ > ए	-	शैवाल-सेमार।	ष > ख	-	पार्षत-पारखत।
ऋ > अ	-	मृत्तिका-माँटि।	ण > न	-	ऊर्णा-ऊन।
ऋ > ई	-	मृष्ट-मीठ।	य > ज	-	युग-जूआ।
ऋ > ए	-	वृक्ष-वेख।	ड > ड़	-	पिण्ड-पीड़ा।
ध्य > ज्झ	-	मध्यक-मज्झा।	श > स	-	कलश-कलस।
द्य > ज	-	वाद्यक-बाजा।	ब > म	-	बन्धूलिका-मधुरी।
त्स > छ	-	मत्स्य-माछ।	ल > र	-	हलीष:-हरीस।
स्त > थ	-	स्तम्भ-थम्ह।	न > ल	-	नग्नपट-लँगोट।
स्क > ख	-	स्कम्भ-खाम्ह।	इत्यादि।		

अर्थ - परिवर्तन

व्या. श.मे परम्परागत शब्दक व्यवहार अदौसँ भऽ रहल अछि। स्वभावत: बहुतो शब्दमे मूल अर्थसँ सम्प्रति भिन्न अर्थ भऽ गेल अछि। एहिठाम अर्थ-परिवर्तनक विभिन्न प्रकारक कतिपय उदाहरण निदर्शनार्थ प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

अर्थविस्तार

शब्दक अर्थमे होइत कालानुसारी परिवर्तनक कारणेँ व्या. श.मे अनेक शब्दक अर्थ सम्प्रति व्यापक भऽ गेल अछि। पूर्वमे तिलक स्नेहकेँ तेल कहल जाइत छलैक। सम्प्रति तेलहनमात्रक स्नेहकेँ तेल कहल जाइत अछि। काठ शब्दमे सेहो अर्थविस्तार देखल जाइत अछि। खदिरादि वृक्षसँ प्राप्त मुट्ठीमे अँटऽवला शुष्क ओ सारसहित वस्तुकेँ काठ कहल जाइत छलै, मुदा काठक साम्प्रतिक अर्थमे मात्र मुट्ठीएमे अँटऽवला नहि प्रत्युत पाँजमे अँटऽवला आ ताहूसँ मोट वृक्षक सारयुक्त वस्तु अबैत अछि। एही तरहेँ अर्थ विस्तारक बहुतो उदाहरण व्या. श.मे भेटैत अछि।

अर्थ संकोच

व्या. श.मे बहुतो ठाम अर्थसंकोच भऽ गेल अछि। सं. लाङ्गलसँ व्युत्पन्न लागनिक अर्थ छल हर। मुदा आब ई हरक एकटा अङ्गमात्रक अर्थमे प्रयुक्त अछि।

एहिना पर्ण (पात)सँ व्युत्पन्न पान शब्द सम्प्रति लताविशेष ओ ओकर पातक अर्थमे चलैत अछि। द्वार अर्थक प्रा. खडक्किआसँ व्युत्पन्न खिड़की शब्द अर्थ संकोचसँ वातायन अर्थक द्योतक भऽ गेल अछि।

अर्थादेश

व्या. श.मे अर्थादेशक सेहो अनेक उदाहरण लक्षित होइत अछि। पारसीमे खिराम शब्द गतिक अर्थमे अछि। मैथिलीमे खराम पैरमे धारण करबाक उपादान विशेष भऽ गेल अछि। एहिना प्रा. उल्लोचो शब्दक अर्थ वितान छल। सम्प्रति उलेंचक अर्थ ओढ़ओनक वस्त्र अछि। पूरी (देशीनाममाला, 6/23)क अर्थक छल तन्तुवायक उपकरण। सम्प्रति पूरब क्रियाक रूपमे सूतकेँ पसारबाक अर्थमे प्रयुक्त अछि। एतावता विभिन्न शब्दमे अर्थादेशक कारणेँ अर्थान्तर देखल जाइत अछि।

व्या. श.मे किछु शब्द एहनो अछि जकर अर्थ कालक्रममे लुप्त भऽ गेल, मुदा उपलक्षण, लोकोक्ति वा साहित्यमे प्रयुक्त रहबाक कारणेँ एहन शब्द जीवित अछि। हँसता पान-बोलता सुपारी, हसीना बीड़ा, चुचकट कटिया आदिसँ पान, सुपारी, बीड़ा, कटिया आदिक विशिष्ट अर्थ स्पष्ट नहि होइत अछि। एहन शब्दक अर्थ सन्दर्भक आधारपर अनुमान्य अछि, मुदा एहन शब्द लोकगीत ओ लोकगाथामे प्रचुरतया प्रयुक्त भेटैत अछि।

निष्कर्ष

व्या. श.क भाषा-तात्विक विवेचनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहि शब्दावलीमे मूल ओ व्युत्पन्न, एकाक्षर ओ अनेकाक्षर, परम्परागत ओ गृहीत; रूढ़, यौगिक ओ यौगिकरूढ़; एकार्थक ओ अनेकार्थक, पर्याय ओ वैकल्पिक समस्त प्रकारक शब्दक प्रयोग होइत अछि। एहि शब्दावलीमे संज्ञा शब्दक बाहुल्य अछि आ अधिकांश संज्ञा शब्द पारिभाषिक कोटिक अछि। शब्द साधनक हेतु सहस्रश: प्रत्ययक प्रयोग होइत छैक। शब्द-ग्रहणक दृष्टिये किछु व्यवसाय पर विदेशी शब्दक प्रभाव तीव्र छैक तँ किछु व्यवसायक शब्दावली विदेशज शब्दसँ असंपृक्तो छैक। वर्तनी ओ उच्चारण भेद जन्य वैकल्पिक शब्दक मानकीकरणक समस्या व्या. श.मे दृष्टिगोचर होइत अछि।

ध्वनिक दृष्टिये व्या. श.मे मैथिलीक ध्वनिक अनुकूल स्थिति अछि। एहि शब्दावलीमे त्र्यक्षर धरि स्वर-गुच्छ तथा सवर्गीय व्यञ्जनगुच्छ दृष्टिगोचर भेल अछि। ध्वनि ओ अर्थ परिवर्तनक निरन्तरगामी प्रक्रिया व्या. श.मे सामान्य रूपेँ चलि रहल अछि।



उपसंहार

मैथिलीक प्रमुख परम्परामूलक जातीय व्यावसायिक शब्दावलीक पसार व्यापक अछि, से प्रस्तुत ग्रन्थसँ सिद्ध होइत अछि। एहि शब्दावलीक क्षेत्रमे बरही, डोम, कुम्हार, मलाह, जोलहा, ततमा-पटवा, दरजी, धुनिआ, धोबि, रङ्रेज, गरेड़ी, लोहार, कसेरा, सोनार, कानू, हलुआइ, तेली, नोनिआ, फुरेड़ी, बरइ, पासी, सूड़ी-कलवार, लहेरी, चमार एवं मालि जातिक व्यावसायिक आधार सामग्री, औजार, उत्पादन, कार्य-व्यापार तथा उत्पादित वस्तुक गुण-दोषसँ सम्बद्ध शब्दावली अबैत अछि। किञ्चितो अर्थान्तरक हेतु स्वतन्त्र शब्दक प्रयोग व्यावसायिक शब्दावलीमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि। स्वभावतः एहिमे पारिभाषिक प्रकृति विशेष रूपमे विद्यमान अछि। एहि प्रकारक अत्र संकलित-विवेचित शब्दक संख्या दस हजारसँ उपरे भऽ गेल अछि।

सामाजिक जीवनमे परम्परामूलक जातीय व्यवसाय सबहिक महत्वपूर्ण भूमिका होयबाक कारणेँ एहिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक प्रयोग तत्तत् व्यवसायमे विशिष्ट रूपमे, सामाजिक जीवनमे सामान्य रूपमे तथा साहित्यमे यत्किञ्चि रूपमे होइत रहल अछि।

मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्याक क्षेत्रमे ग्रियर्सन कार्यकेँ सर्वप्रथम ओ एकमात्र मार्गदर्शक मानल जा सकैत अछि। पण्डित दीनबन्धुझा, डा. सुभद्रझा आदिक कार्यमे सेहो एहि विषयक सन्दर्भ भेटैत अछि। एहि ग्रन्थमे परम्परामूलक जातीय व्यसवसायिक शब्दावलीकेँ समग्रतामे देखबा-परेखबाक प्रयास भेल अछि। ग्रन्थक अन्तर्गत विवेचित प्रत्येक व्यवसायक शब्दावलीमे पूर्वकृत कार्यक अपेक्षा नवीन तथ्य सभ संकलित-विवेचित भेल अछि, जाहिमे(क) नवीन शब्दक संकलन(ख) अर्थक संशोधन(ग) नवीन अर्थानुसन्धान ओ (घ) शब्दक उच्चरित ध्वन्यात्मक रूप प्रमुख अछि। ग्रियर्सन द्वारा अचर्चित पटवा, मालि, फुरेड़ी आदिक व्यवसायक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्यात्मक अध्ययनकेँ सर्वथा अभिनव

सामग्री कहल जा सकैत अछि। निष्कर्षतः एहिठाम पूर्वज्ञात शब्दक अज्ञात अर्थ ओ सर्वथा अनभिज्ञात शब्द ओ ओकर अर्थक सन्निवेशक संगहि ज्ञात शब्दक भ्रान्त अर्थक संशोधन ओ वास्तविक अर्थक सन्धान भेल अछि।

अनेकानेक ऐतिहासिक ओ सामाजिक कारणसँ मैथिली परम्परामूलक जातीय व्यावसायिक शब्दावलीमे परिवर्तनक प्रक्रिया गतिमान रहल अछि।

एहि शब्दावलीक जीवन्तता व्यवसायक संगे आबद्ध रहलैक अछि। व्यवसाय समाप्त भेलापर ओकर शब्दावलीक समाप्त भऽ जायब स्वाभाविक अछि। तेँ नोनिआक नोन-उत्पादन-व्यवसायक ह्रासक संगहि ओकर शब्दावली सेहो समाप्त भऽ गेल। तहिना कसेराक पिटुआ बासनसँ सम्बद्ध अनेक शब्दावली सेहो म्रियमाण भऽ गेल अछि।

कानूनी प्रतिबन्धक कारणेँ दारू-व्यवसायक शब्द मिथिलामे लुप्त होयबाक स्थितिमे अछि। यद्यपि नेपाल तराइक मैथिली भाषी क्षेत्रमे एखनहु एहि व्यवसायक पारम्परिक शब्द चलि रहल अछि, मुदा ओहो क्रमशः म्रियमाण भऽ रहल अछि। कसेराक धात्विक मिश्रण तैयार करबासँ सम्बद्ध शब्दावली तँ कानूनी प्रतिबन्धक कारणेँ लुप्ते भऽ गेल अछि।

पारम्परिक शब्द-लोप ओ नव शब्द-ग्रहणमे व्यवसायी जातिक ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिवेशक भूमिका सेहो महत्वपूर्ण अछि। एके व्यवसायकेँ करऽवला जोलहा ओ पटबाक कपड़ा बिनबाक औजार, प्रक्रिया ओ सम्बद्ध शब्दावलीमे पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर भेल अछि। हिन्दू धर्मक पटबा जातिक व्यवसायमे जतऽ पारम्परिक शब्द बेस सुरक्षित अछि, ततहि मुसलमान धर्मक जोलहा जातिक व्यवसायमे अरबी ओ फारसीक शब्दक बाहुल्य भऽ गेल अछि। एकर ऐतिहासिक विवेचन अनुसन्धानक स्वतन्त्र विषय भऽ सकैत अछि। ओना बरही, कुम्हार, जोलहा, दरजी आदिक व्यवसाय पूर्व कालोमे तुर्की, अरबी, फारसी, पुर्तगाली शब्दावलीकेँ ग्रहण करबामे अग्रणी रहल अछि।

सम्प्रति परम्परामूलक जातीय व्यावसायिक शब्दावलीमे परम्परा ओ जातिक प्रति अनाग्रह तथा विभिन्न व्यवसायक आधुनिकीकरणक कारणेँ परम्परागत शब्दक लोप ओ नवीन शब्दक ग्रहण भऽ रहल अछि। शिक्षित समुदाय जातीय परम्पराक प्रतिकूलो व्यवसायकेँ पकड़ि रहल अछि। विभिन्न व्यवसायमे नव वैज्ञानिक औजार ओ परिशोधित आधार सामग्रीक प्रयोग भऽ रहल अछि। विज्ञान द्वारा अनुसन्धित

विभिन्न सामग्री जातीय व्यवसायक उत्पादनकेँ स्थानापन्न कऽ रहल अछि। स्वभावतः किछु व्यवसायक शब्दावली विशेष रूपेँ संवेदनशील अछि आ एहन व्यवसायमे नव शब्द-ग्रहण ओ पारम्परिक शब्द-लोपक प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र देखल गेल अछि, जेना बरही, लोहार, सोनार, चमार, आदिक व्यवसायमे। परिवर्तनशील सभ्यता ओ जनरुचि कारणेँ पटबा, दरजी, रङरेज, सोनार ओ हलुआइक शब्दावलीमे सेहो नवीन शब्द-ग्रहण ओ पारम्परिक शब्द-लोपक प्रक्रिया अछि।

दोसर दिस डोम, कुम्हार, मलाह, धुनिआ, धोबि, गरेड़ी, कानू, कुरेड़ी, बरइ, पासी, लहेरी, मालि आदिक व्यवसायमे शब्द-ग्रहण ओ लोपक प्रक्रिया मन्द अछि, परन्तु एहि व्यवसाय सभक शब्दावलीक पारम्परिक स्वरूप कतेक दिन धरि सुरक्षित रहि सकत, से कहब कठिन।

मैथिलीक परम्परामूलक जातीय व्यावसायिक शब्दावलीमे तत्सम शब्दक प्रयोग अल्पे संख्यामे देखल गेल अछि। विशेष संख्या तद्भव ओ देशज शब्दहिक अछि। देशज शब्द सभ प्राकृते कालक परम्परासँ किञ्चित ध्वनि ओ अर्थ-परिवर्तनक संग प्रयुक्त भेटैत अछि। एहि शब्दावलीमे तुर्की, अरबी, फारसी, पुर्तगाली ओ अंग्रेजीक शब्द-ग्रहण होइत रहल अछि। विभिन्न मूलक भाषासँ गृहीत शब्द कतोक ठाम मूल शब्दक स्थानापन्न भऽ गेल अछि, कतहु मूल शब्दक समानान्तर चलि रहल अछि आ कतहु नवीन अर्थक द्योतनक हेतु प्रयुक्त भऽ रहल अछि। भाषिक संक्रमणक परिणामस्वरूप विवेच्य शब्दावलीमे तत्सम, तद्भव वा देशजक संग विदेशज भाषाक संकर-सामासिक शब्द सेहो बनैत रहल अछि।

मैथिलीक परम्परामूलक जातीय व्यावसायिक शब्दावलीमे प्रयुक्त अनेकार्थक शब्दमे किछु शब्दक विभिन्न अर्थमे कोनहु सामञ्जस्य नहि अछि, मुदा अनेक शब्दक विभिन्न अर्थमे एकटा सामान्य अर्थ निहित देखल गेल अछि। एहि शब्दावलीमे स्वार्थक शब्द प्रचुरतया उपलब्ध अछि। पर्यायवाची शब्दक दुइ गोट कोटि एहि शब्दावलीमे पाओल गेल अछि। एक कोटिक पर्यायवाची शब्द-समूह परिभाषा तथा व्याकरणिक ओ उपलाक्षणिक प्रयोगमे परस्पर समरूप होइत अछि ओ दोसर प्रकारक पर्यायवाची शब्द-समूहमे परस्पर एकटा समान विवक्षा होइतो समरूपता नहि कहल जा सकैत छैक। एहि शब्दावलीमे प्रयुक्त बहुतो शब्द सामान्य जनजीवनसँ लेल गेल अछि। बहुतो शब्दक उच्चरित वैकल्पिक रूपक प्राचुर्य अछि जकरा कोष ओ साहित्यमे लेबासँ पूर्व मानकीकरणक आवश्यकता छैक। एहि शब्दावलीमे उपसर्गक प्रयोग कम

अछि, जे अछि ताहिमे किछु तँ संस्कृतमूलक अछि आ किछु विदेशीमूलक। मुदा शब्द-साधनमे प्रत्ययक प्रयोग अपरिमित अछि।

मैथिलीक परम्परामूलक व्यावसायिक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्या सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य एहि ग्रन्थसँ पूर्ण ओ सम्पन्न नहि भऽ गेल अछि, अपितु एहिसँ आगाँ कार्य करबाक हेतु आरम्भिक सोपान प्रस्तुत भेल अछि। विषयक व्यापकताकेँ देखैत मिथिलामे प्रचलित व्यवसायक एकटा अंशविशेष एतऽ विवेचित भेल अछि। एहि शोध-प्रबन्धक अध्ययन-सीमासँ इतर व्यवसायक शब्दावली शोधक एकटा स्वतन्त्र विषय भऽ सकैत अछि। एहिना व्यावसायिक शब्दावलीक स्वतंत्र रूपसँ भाषावैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षित अछि। व्यावसायिक शब्दावली ओ विशेषतः परम्परामूलक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली भारतक विभिन्न भाषा क्षेत्रमे समान रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। विभिन्न भाषाक एहन शब्दावलीक संग मैथिलीक एहि शब्दावलीक तुलनात्मक अध्ययनक आवश्यकता अछि, जाहि दिस अन्य अनुसन्धाता अग्रसर भऽ सकैत छथि।

एतावता मैथिलीक शब्दावलीक संकलन ओ अनुशीलनक दिशामे प्रस्तुत ग्रन्थ बहुत किछु योगदान देबामे समर्थ भऽ सकैत अछि तथा एहिसँ मैथिली कोषकार, वैयाकरण ओ भाषावैज्ञानिकलोकनिकेँ पुनश्चिन्तन करबाक हेतु अवश्ये सामग्रीक सौलभ्य होयतनि।

□

परिशिष्ट 'क'

मिथिलाक पारम्परिक व्यवसायी जाति सम्बन्धी शब्द-सूची

(संकेत : स्त्री.- स्त्रीलिंग, उप.- उपजाति, उ.-उपाधि, मू.-मूल, वि.दे.-विशिष्ट देवता

कलवार : स्त्री. कलवारिन। उ.-चौधरी, जायसवाल, साहु। वि. दे.-काली, बन्दी, महामाया।

कसेरा : स्त्री.-कसेरिन/कसेरनी। उप.-अयोध्यावासी, ठठेरा, तमेरा, तिरहुतिया द्वारिकावासी, हैहयवंशी। मू.-कमार, खड़ा, चिलमार, टाँक, पछिमा, पुरबी, बङाली, बनपर, बागड़ा, क्षत्रिय। उ.-गुप्ता, प्रसाद, साव/साओ, साह। वि.दे.- विश्वकर्मा।

कानू : स्त्री.- कानुनि। उप.-तिनचुल्हिया/तिनभुज्जा, पनचुल्हिया/पचभुज्जा, सतचुल्हिया/सतभुज्जा। उ. साहु। वि.दे.-जलामुखी/ज्वालामुखी, हलुमान, सोखा।

कुम्हार : स्त्री.-कुम्हैनि। उप.-कनौजिया, छोलकढ़िया/छोलकढुआ/छोलगढ़िआ/छोलगढुआ, तिरहुतिया, मगहिया। उ.-पंडित। वि.दे.-कालिदास, कुमर-विनोदी, सोखा-शंभुनाथ।

कुरेड़ी/करोड़ी : स्त्री.-कुरेड़िन। उप.-गिदरमारा/मगहिया, तरसुलिया, देसवारि, धोबि, नट, राजपूत, लठोर, सपेरा, ब्योंधा। उ.-धामि। वि.दे.-बेनीराम, चौधूराम।

गरेड़ी : स्त्री. गरेड़िन। उप.-गंगाजली, ढेङर, मझरौठ, रोआँवंशी। उ.-गरेड़ी, पाल, मरड़, राउत, राय। वि.दे.- बन्दी, गौरैया, जगदम्बा।

चमार : स्त्री.-चमैनि/दगरिन। उप.-कनगुजिया/कनौजिया, कपड़ी, गोरिया, गोहित, चमगोरिया, छपरिया, घुसिया, नाइक, पँड़े, बहिडारि, बोहित, मगहिया, महरा, मोची, राउत, सफरी, हाइट। उ.-दास, पाँड़े, मोची, रविदास, राउत, राम। वि.दे.-केरल, जलपा, नरसिंह, मनसाराम, रकतमाला, रैदास, लालवन बाबा (द्रष्टव्य, लोकगाथा : लालवन बाबा, रचना मासिक, दरभंगा, जून 84 अंक, पृ. 19, 32), लुकेशरि, हुलहुली देवी।

जोलहा : स्त्री.-जोलहिन। उ.-अंसारी (मुसलमान धर्मावलम्बी)।

डोम : स्त्री. डोमिन। उप.- तिरहुतिया, पछिमा। (विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य, 'मिथिलाक डोम जाति एवं ओकर जातीय शब्दावली'-योगानन्द झा, स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो, 1982 एवं 'डोमराजा श्यामसिंह', माटि-पानि मासिक, पटना अप्रैल, 84, पृ. 4-5)।

परगना(डोमक क्षेत्रीय विभाजन):- कसमा, गयासपुर, चौरासी, दरभंगा, पचही, बछओर, बालागच्छ, बेसारा, मच्छी, भाला, मलकैता, राजबिसार, राजभरौरा, लोआम, सरैसा, हाटी। खूट/खुरहा (मू.)- अधलपुरिया, अधारपुर, अमलौर, अमारी, अर्रा, अरैता, अहींस, कन्हौली, कल्याणपुर, कानु, कोठिया, कोठियैता, कोनलिआर, खोन्हलिआर, गौरैता, घटहो, घटैता, चचरबाड़, चनैली, चोन्हलिआर, जडुअति, जरुआबेसारा, जरुऐत, जेरुआ बेलसंडी, जलालपुर, टभकैत, तिसकर, नागरबस्ती, पाँचमोहाल, पँड़, पुनहास, पूसा, पोनसौया, फूल सोनपरिया, बरबट्टा, बहैलबरिया, बेलसंडी, बेलसरैत, बेसारा, भतबरिया, भाइसिंघारा, भिड़हा, मगहिया, मडुअति, मधपुरिया, मनकैता, मरैबाड़, मलकी, महुअति, रोसरैत, लरहनि, ललबाड़, लाधा, लाधाबरबट्टा, लालागच्छ, सिंघाड़ा, सोनपरिया, हँसैता, हायर, हाँसा। उ.-मल्लिक। वि.दे.- गौरैया, गहिल, मनुसदेवा, श्यामसिंह।

ततमा : स्त्री.-ततमीनी। उप.-कनौजिया, जोलहा, (मुसलमान), मगहिया। उ. -ताँती, दास, पटवा। वि.दे.-मधुकर बाबा, महामाया, सोखा।

तेलि/तेली : स्त्री.-तेलिन। उप.-कनौजिया, खसखेलिया, जनकपुरी, मगहिया। उ.-साहु। वि. दे.-अलखिया, कारिख, (द्रष्टव्य, स्वदेश दैनिक, 25 सितम्बर एवं 2 अक्टूबर 1983), गोविन्द, सोखा।

दर्जी : स्त्री.- दर्जिन (मुसलमान धर्मावलम्बी)।

धुनिआ : स्त्री.-धुनिआनि। उ.-धुनिआ, खादे मंसूर (मुसलमान धर्मावलम्बी)।

धोबि : स्त्री.- धोबिन। उप.-कनौजिया, तिलंगी, तुरुक (मुसलमान); बेलवार, मगहिया, राजधोबि। उ.-बैठा, रजक, साफी। वि.दे.-गरीबन भुइया (तत्रैव, 9, 11, 27 फरवरी एवं 2, 3 मार्च 1983), बिसहरि।

नोनिआ : स्त्री.- नोनिआनि। उप.-अवधिया, खरौट, चौहान, बिंद, बेलदार। उ. - चौधरी, चौहान, जमादार, महतो, महथा, मंडल, राउत, सिंह। वि. दे.-कारिख, गौरैया, नरसिंह।

पटवा : स्त्री.-पटमीनी। उप.-कायस्थ, खड़ेवाल/खण्डेलवाल, गोसाँइ/गोस्वामी, जोगी, ताँती, तूरुक/दफाली (मुसलमान)। उ.-खण्डेलवाल, गोसाँइ, जोगी, ताँती, पटवा, प्रसाद, साहु। वि. दे.-महादेओ।

पासी : स्त्री.-पासिन। उप.- कैमानी, तरसुरिया, व्याधा। उ.-चौधरी, महतो। वि.दे.-पीरबाबा, मनुसदेवा, महामाया, मीरा, रामठाकुर, सुरजाक, सोखा।

बरइ : स्त्री.-बरैनि। उप.-चौरसिया, तमोली, सेमरिया। उ.-चौरसिया, नागवंसी, प्रसाद, भगत, राउत। वि. दे.-बिसहरि (नाग), नागो बाबा।

बरही : (स्त्री. बरहिनि), कमार (स्त्री. कमैनि)। उप.-मगजिया। मू. ओलियाचरबार काँटी परतान, कोइलख, गंगापुरैन, गड़बड़िया, घोड़ाघाट, घोड़ाघाटबसन्त, घोड़ाटाप, जोरपुरा, टुट्ठी पाकड़ि, देवघर, धमुनिजा, धनरिवा, धनहरिया, नवादा, पैठला, बखरैत, बरुसेत, बरैत, बरौनी, बसन्त, भीठ, बनकट्टी, मखरौली, मानिकपुर, मोरवैत, राजापाकड़ि, लखवति, शेरपुर, सर्वनसुपैतला, सहदेइ, सिरपुर, सोनेमुंगे, सोहरैत। उ.- कमार, ठाकुर, मिस्त्री, विश्वकर्मा, शर्मा, सुतिहार। वि. दे.- कंगाली ठाकुर, कारिख, काली, गोरैया, धर्मराज, बन्दी, महामाया, विश्वकर्मा।

मलाह : स्त्री.-मलाहिन। उप.-कठौतिया, क्वाँट/केओट/केवट, कोल्ह, खरकौट, खुनैट, गोंढ़ि, चाप, जेठौतिआ, तिअर, नोनफर, पछिमा, बनपर, बँतर, बीन, सुरहिया। उ.-चौधरी, मंडल, माँझी, मुखिया, सहनी, सिंह। वि.दे. -अमरसिंह, कमला, किरचो, कुसियारमल, केवल महराज, कोइला, गाडोदेवी, जयसिंह, झम्मन मरड़, झलाराम, ठौठामल/बैहरूतिआर, दुलरावचाल, मातर, मीरसैयद, रड्या-रनपाल, सुल्तान खाँव (द्रष्टव्य, मिथिलाक मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप-योगानन्द झा, स्मारिका, अखिल भारतीय मिथिला संघ, 34 गुरुद्वारा रकाबगंज, नई दिल्ली, जून-1984। लोकगाथा अमरसिंह, स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो, 1983। गीतगाथामे गाढ़्गो देवी, स्वदेश दैनिक, 8 एवं 11 मार्च 1983। लोकगाथा जयसिंह, कोशी कुसुम, मैथिली द्वैमासिक, सहरसा, जून 1984। दुलरादचाल, माटि-पानि मासिक, पटना, अक्टूबर 1983)।

मालि/माली : स्त्री.- मालिनि। उ.-भंडारी, माली। वि. दे.-भगवती।

रङरेज : स्त्री.-रङरेजिन (मुसलमान धर्मावलम्बी)।

लहेरी : स्त्री-लहेरिन। उप.-तिरहुतिया, तूरुक, मगहिया, यदुवंशी, बिसहारा, उ.- साहु। वि.दे.-कारिख, काली, गोविन्द, बहराइनसाओ, बन्दी।

लोहार : स्त्री. लोहैन। उप.-अवधिया, कनतुतिया, कनौजिया। मू.-असेसर, उदमतिआ, कठौतिया, कंकड़ा, कौड़िया, झम्पाल, बिलोटिया, मसिहनित्रा। उ.-ठाकुर, शर्मा, विश्वकर्मा। वि.दे.- विश्वकर्मा।

सूँड़ी : स्त्री.-सूँड़िन। उप.-फ्रेसबार, ब्याहुत, सगाहुत। उ.-कपड़ी, कारक, खर्गा, गराइ, गैंड़ा, चौधरी, नायक, प्रधान, पुर्व, महासेठ, माँझी, मेहता, मंडल, राउत, साहा, सिंहा, सेठ, हाथी। वि.दे.-अलखिया, बरहम, ससिया, सहोदरा।

सोनार : स्त्री.-सोनारिन। उप.-अयोध्यावासी, कमरकला, कमार, ठठेरा, द्वारिकावासी। मू.-अठगैंच, कटोसिया, कलैत, कुम्हैत, खड़ियागर, चोरबारे, जबलपुरिया, भोरैत, सागी, सेमार, सोनपुरिया, सोखिवैत, हरसरिया, उ.-गुप्ता, ठाकुर, साहु। वि. दे.-विश्वकर्मा (द्रष्टव्य, विश्वकर्मा ब्राह्मण मूल गोत्र प्रकाश, भगीरथ ठाकुर, मोगलबाजार, मुंगेर)।

हलुआइ : (स्त्री. हलुआइनि), मोदी (मोदिआनि)। उप.-कनौजिया, मगहिया, मधेशिया। मू.-अँकुरी, कलशडीह, करनी, कहिनबारि, कन्हौकनबारि, कराया, गेहुमी, घरबहरा, घरभितरा, छतौना, छितनी, छौडीहा, जीराबस्ती, टारी, ढकाइत, तौनडीहा, दिघबारि, नरौना, पचडीहा, पँचपिढ़िया, पचोतर, मडुअन, मडुआडीह, मनेमनारस, लटकौआ, सटकौआ, सिंघागढ़ (द्रष्टव्य, वैश्य जागृति ज्योति, 1983, बेहरामबेग, लालकुआँ, दिल्ली-6, फरवरी 81, अंक, पृ. 25-28)। उ.- चौधरी, प्रसाद, राय, साहु। वि.दे. -कारिख, कलाली, गणिनाथ-गोविन्द (द्रष्टव्य, लोकगाथा : गणिनाथ-गोविन्द, योगानन्द झा, स्मारिका, चेतना समिति, पटना, 1983, पृ. 104-109। श्री श्री गणिनाथ गोविन्दजी जयन्ती का 27वाँ महोत्सव स्मारिका, गोविन्दघाट, पटना-6, 1972, पृ. 27। स्मारिका, अ. भा. मध्यदेशी वैश्य महासभा, समस्तीपुर, वर्ष 1975-76, पृ. 13-17), डीहबाबा, दयाराम, पँचोपीर, बहरिया बाबा, फेकूराम, मनसाराम, मीर सैयद, लखिया, लालखाँव, सोखा।



परिशिष्ट 'ख'

व्यवसायी जाति सम्बन्धी कतिपय लोकोक्ति

कलवार : कलबरवाके बेटा भुक्खे मरय, लोक कहय जे पीने छइ। कल-कलवार कल्ला ओदार।

कसेरी : ठठेरी ठठेरी नहि बदलाय

कानू : तीन बेर बजौलासँ आबय नउनिञा ।
आधा भार लऽ कऽ भूजय कनूनिञा ॥

कुम्हार : 'उट्ठा के बैठा कहय, चलती के गाड़ी । मूरुख के पंडित कहय, पंडित के भिखाड़ी ॥' 'एक बरही दू लोहार बाले बच्चे लगय कुम्हार।' 'कुम्हाराक कुकुर जकरे पोनमे मोटि लागल देखय, तकरे संगे चलि देअय।' 'कुम्हराक बेटी के ने नैहरे बास, ने सासुरे बास।' 'कोइरी कुम्हारके बास नइ। बाभन ताभन के पुछैए ?' 'खिसियैल कुम्हैनि कथीदन सँ माटि खोधय।' 'डाकन कुम्हान के, घी यजमान के, स्वाहाय नमः स्वाहाय नमः।' 'तेली साती कुम्हैनि सती', निचिंत सूतय कुम्हरा मटिया ने लय जाय चोर।' 'पनिञा पड़लै नोनिञा मरलै कुम्हरा करय किलोल।'

चमार : अगहन रजपुत अहिर अषाढ़, भादो भैंसा चैत चमार। आ गे दगरनि आ न दगरिन गोर तोरा लगियौ, दरद मोरा छुटि गेल लोल तोरा दगियौ। कारो बाभन गोर चमार, एक संग ने उतरय पार। चमैनिसँ कतहु कोखि नुकयलैक अछि? चमारक कहने कतहु गाय मरय? बेटी चमार के नाम रमजनिञा। 'चन्नन पड़ल चमार घर नित उठि कतरय चाम। नित उठि चन्नन रोवत हैं, पड़ल राड़ से काम॥'

जोलहा : अप्पन मामा मरि मरि गेल, जोलहा धुनिञा मामा भेल? आठटा जोलहाके नओटा हुक्का, ताहू पर उठय थुक्कमथुक्का। करिगह छाड़ि तमाशा जाय, नाहक मारि जोलाहा खाय। कायथ-बाभन भेल मरचुनिञा, कारि करय जोलहा-धुनिञा। कोदो मड़ुआ अन्न नहि, जोलहा धुनिञा जन नहि। कौआ चलल बास कऽ, जोलहा चलल घास कऽ। खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा। जोलहाक चाकर पैठान। जोलहा जानय जौ काटय। जोलहा जोरिहँ नरिये-नरिये, खोदा ले जैहें एक्के बेरिये। जोलहा भूतिऐल तीसी खेत। बहसलि जोलहिन बापक दाढ़ी

नोचय। तौला भरि अनाज भेल, जोलहा के राज भेल। उसराही के अन्ने की? जोलहा के धन्ने की??

डोम : ऊँचे बाभन नीचे डोम, की तारय बाभन की तारय डोम। डोम लेखे धोबी नीच। बाँसक बारि मे डोम कनाह। मुइला उत्तर डोम राजा। डोम डारय अघोरीसँ। डोमिनि गावय ताल-बेताल।

तेलि : कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली। तेलियासँ की धोबिया घाटि, ओकरा मुङरा एकरा जाठि। तेलीक तेल जरय, मशालचीक फिदन फाटय। सड़लो तेली तँ नओ सय अधेली। मूड़ पलटय नाचय साहु। साहु बटोरथि कौड़ी-कौड़ी, सहुआइन बटोरथि कुप्पा। तेलिन रुसली, कुप्पा लऽ बैसली।

दर्जी : धोबी नाऊ दर्जी, ई तीनू अलगरजी। आकाशे फाटल अछि तँ दर्जीक बापो ने सीबि सकत।

धुनिञा : अव्वल धुनिञा जिस्ता थारी। जनिहँ मीयाँ धुनै के बेरिया। इत्ता रूइया को धुनिहँ।

धोबि : जब धोबी पर धोबी बसे, तब खेन्हरा पर साबुन पड़े। जेहन धोबिगामा तेहन घाह नइ। तीन बेर चोरि भेने धोबिया सेठ। दिगम्बरक गाममे धोबिक बास। धोबिक कुकुर/गदहा ने घरक ने घाटक। धोबिक घर बिआह गदहाक माथा मौड़। धोबिक बापक किछु नहि फाट। धोबिया के ने आन बहान, गदहा के ने आन किसान। नीन्द ने जानय टूटी खाट, प्यास ने मानय धोबीघाट। नूआ तँ धोबी धो देत मुदा मुँह के धो देत। नैहरा जो बेटी ससुरा जो, बहिञा घुमा बेटी कतहु खो। राजाक ओढ़ना धोबिक बिछओना। कोइरीक गाममे धोबि पटवारी।

बरही : बड़ बरही छोट लोहार, पाँच तीर कऽ पुरबय चमार। ई बुड़ि बरही गाम कमयता, जनिका बसिला ने रुखान।

मलाह : गोआरक सराइल माछ आ मलाहक सराइल दही दूनू एके रङ। जते माछ जाल देखैए तते जँ मलाह देखय तँ छातिए फाड़ि कऽ मरि जाय। जलमे मलाह, वनमे गोआर आ नैहरमे स्त्री अपन नहि होइछ। मलाह ने मानय सलाह। मुसहर के चल-चल, मलाह के पैस-पैस। रहै छी सदिखन पानिमे मे मुदा नहाइ छी कहियो ने। सब ठाम राम-राम, थाड़ी पर नइ राम-राम।

लोहार : सोनार के टुक टुक, लोहार के ठाँइ। सौ चोट सोनार के एक चोट लोहार के। लोहारक कुच्ची आगि-पानि दूनू मे।

सोनार : नहि गढ़ायब तँ कनी देखहुँ दिअऽ। तीन फूके चानी।



परिशिष्ट 'ग'

अधीत ग्रन्थक सूची

संस्कृत-प्राकृत

1. देशीनाममाला- हेमचन्द्र, सं. आर. पिशैल, भाग-1, गोवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बइ, 1880
2. नाट्यशास्त्र-भरत
3. व्याकरण महाभाष्य, पतञ्जलि, भाग-1, सं. एफ. कीलहार्न, भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टिच्यूट, पूना-4, तृतीय संस्करण, 1962
4. यजुर्वेद

हिन्दी

5. आचार्य हेमचन्द्र रचित देशीनाममाला का भाषावैज्ञानिक अध्ययन- डा० शिवमूर्त्ति शर्मा, देवनागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 1980
6. कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली, भाग-1 एवं 2, डा. अम्बा प्रसाद सुमन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960, 1961
7. काष्ठकला परिचय- एम.के. रब, किताब महल, पटना
8. ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली- डा. हरिहर प्रसाद गुप्त, राजकमल पब्लिकेशन्स लि., बम्बइ, 1956
9. देशी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन- डा. चन्द्र प्रकाश त्यागी, लिपि प्रकाशन, दिल्ली-51, 1972
10. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण-रिचर्ड पिशल, अनु.-हेमचन्द्र जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958
11. माटी के लोग सोने की नैया- मायानन्दमिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, 1967
12. मैथिली लोकगीतों का अध्ययन-डा. तेजनारायणलाल, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1962
13. वरुण के बेटे-नागार्जुन, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1975
14. विद्यापति ठाकुर- म.म.डा. उमेशमिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960
15. हिन्दी की शब्द सम्पदा- डा. विद्यानिवासमिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली- 6, 1970
16. हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन- डा. बदरीनाथ कपूर, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965
17. हिन्दी में देशज शब्द- डा. पूर्णसिंह डबास, नालन्दा प्रकाशन, नई दिल्ली-30, 1980

मैथिली

18. अर्चना - सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1981
19. अन्योक्तिका- सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा, 1969
20. अष्टदल- डा. अमरनाथ झा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता-7
21. आरती-जगदीप नारायण 'दीपक', भदहर, बिरौल, दरभंगा, 1959
22. उच्चतर मैथिली व्याकरण-पं. गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979
23. उमापति- डा. रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
24. ऋतुप्रिया- श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, लहेरियासराय, 1963
25. एकावली परिणय- कविशेखर बदरीनाथझा, पाठक एण्ड सन्स, दड़िभङ्गा, सन् 1383
26. कृष्णचरित- तन्त्रनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
27. कीर्तिलता-सं. बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सं. 2032
28. कोसी गीत-ब्रजेश्वर मल्लिक, मल्लिक सदन, बड़गाँव, मधेपुरा
29. खट्टरककाक तरंग- हरिमोहनझा, भारती भवन, पटना-1967
30. गुदगुदी- श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 1364 साल
31. चन्द्र रचनावली- डा. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
32. चाणक्य-दीनानाथ पाठक 'बन्धु', मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1985
33. चित्रा- यात्री, अ. भा. मैथिली समिति, स्टर. पी.सी. बनर्जी रोड, प्रयाग, 1390 साल
34. झाङ्कार-काशीकान्तमिश्र'मधुप', मैथिली प्रकाशन, 6/1, बामन पाड़ा लेन, कलकत्ता-19, 1960
35. धातुपाठ- पं. दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद्, दड़िभङ्गा, 1949-50
36. नन्दीपति गीतिमाला- डा. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1965
37. प्रतिपदा- सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा, 1970
38. प्रेरणापुञ्ज- काशीकान्तमिश्र 'मधुप', मैथिली अकादमी, पटना, 1980
39. बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धान्त- डा. जयधारी सिंह, मधुबनी, 1969
40. भाषणत्रयी- सं. देवेन्द्रझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1983
41. मधुश्रावणी पूजा कथा- डा. तेजनाथझा, कन्हैयालाल कृष्णदास, लहेरियासराय, 1975
42. महेशवाणी- श्रीलोकनाथ पुस्तकालय, 173, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-7
43. मिथिला भाषा प्रकाश - रमानाथझा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दड़िभङ्गा, चतुर्थ संस्करण-1964
44. मिथिला भाषामय इतिहास- म.म. मुकुन्द शर्मा, विद्या विलास प्रेस, बनारससिटी

45. मिथिला भाषा विद्योतन-दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद्, दड़िभंगा, 1353 साल
46. मिथिला संस्कार गीत-कामेश्वरी देवी, मैथिली अकादमी, पटना-1980
47. मैथिल डाक- जीवानन्द ठाकुर, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1950
48. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, द्वितीय भाग, म. म. डा. उमेशमिश्र, वैदेही समिति, दरभंगा
49. मैथिली ओ संथाली: सम्पर्क आ सामीप्य- डा. विद्यानाथझा, 'विदित', मैथिली अकादमी, पटना, 1977
50. मैथिली भाषा का विकास-गोविन्दझा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1974
51. मैथिली लोकगीत- डा. अणिमा सिंह, लोक साहित्य परिषद्, कलकत्ता-45, 1969
52. मैथिली लोकगीत- रामइकबालसिंह'राकेश', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सं. 2012
53. मैथिली व्याकरण मीमांसा-डा. सुभद्रझा, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा, 1983
54. मैथिली शकुन्तला नाटक- अनु. ईशनाथझा
55. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- डा. दिनेशकुमारझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979
56. रसनिर्झरिणी, पं. आनन्दझा, दीक्षित बुक डिपो, दरभंगा, सं. 2006
57. राधा-विरह-श्रीकाशीकान्तमिश्र'मधुप', हरिनन्दनसिंह स्मारक निधि, राघोपुर, दरभंगा, 1969
58. रुक्मिणी परिणय- बबुआजीझा'अज्ञात', मैथिली अकादमी, पटना, 1980
59. लघु विद्योतन- श्रीगोविन्दझा, दरभंगा प्रेस कम्पनी प्रा. लि., दरभंगा, 1963
60. विद्यापति-खगेन्द्र नाथ मित्र एवं विमान विहारी मजुमदार
61. विद्यापति गीतावली-सं. गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
62. वर्ण रत्नाकर-सं. सुनीतिकुमारचटर्जी एवं बबुआजीमिश्र, रोयल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1940
63. सीतारामझा-भीमनाथझा, साहित्य अकादेमी, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-1

अंगरेजी

64. इकॉनोमिक्स ऑफ स्मॉल स्केल इन्डस्ट्रीज, एस.पी. माथुर, अशोक बिहार, दिल्ली-52
65. इकॉनोमिक हिस्ट्री ऑफ बंगाल, भाल्यूम-1, गोसाई एण्ड कं. प्रिन्टर्स प्रा. लि., कलकत्ता-12, 1956
66. ए कम्परेटिभ ग्रामर आफ द मोडर्न आर्यन लैंग्वेज आफ इण्डिया, जॉन बीम्स, मुन्शीराम मनोहरलाल, पो. बा. 1165, नई दिल्ली-55, 1970
67. एन इन्ट्रोडक्सन टू द मैथिली लैंग्वेज ऑफ नौर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर, क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी-ग्रियर्सन, एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1881
68. एलिमेन्टरी प्रिन्सिपुल्स ऑफ इकॉनोमिक्स-जाम्बर एण्ड बेरी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
69. ए स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णियाँ इन 1809-10-फ्रांसिस बुकनन, बिहार एण्ड ओड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1928
70. ए स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ बंगाल, (भाल्यूम 13, तिरहुत खण्ड चम्पारण)- डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली-35-1976
71. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाल्यूम-1, जयकान्त मिश्र, तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, 1, सर पी.सी. बनर्जी रोड, इलाहाबाद, 1949 तथा साहित्य अकादेमी-संस्करण, 1976
72. कचहरी टेक्निकलीटीज-पैट्रिक कारनेगी, इलाहाबाद मिशन प्रेस, 1877
73. ट्रेन्ड्स आफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस इन इण्डियन फिलॉसाफी- प्रो. हरिमोहनझा, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1981
74. द ऑरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट आफ द बंगाली लैंग्वेज-सुनीति कुमार चटर्जी, रूपा एण्ड कं., कलकत्ता-12, 1975
75. द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज-डा. सुभद्रझा, लुजाक एण्ड कं. लि., लंदन, 1958
76. प्रिन्सिपुल्स आफ इकॉनोमिक्स (एन इन्ट्रोडक्टरी भॉल्यूम)- ए. मार्शल, द मैकमिलन प्रेस लि., लंदन, 1977
77. बिहार पीजैन्ट लाइफ-सर जी.ए., ग्रियर्सन, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, 24 बी, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली 6, 1975
78. मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति-राधाकृष्ण चौधरी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1976
79. मैथिली ग्रामर-जी.ए.ग्रियर्सन, रॉयल एसियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण, 1906
80. रूरल एण्ड एग्रिकल्चरल ग्लॉसरी फॉर द नौर्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज एण्ड अवध-विलियम क्रुक, कलकत्ता, 1888
81. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, भौल्यूम-1, पार्ट-1,-जी.ए. ग्रियर्सन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1967
82. हिस्ट्री ऑफ बिहार-राधाकृष्ण चौधरी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1976

कोष-ग्रंथ

83. अमरकोष : अमरसिंह, सं. हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी-1, 1970
84. उर्दू-हिन्दी शब्दकोष-हिन्दी समिति, लखनऊ, 1972
85. ए संस्कृत इंग्लिस डिक्सनरी-सर मोनियर विलियम्स, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 7,1981

86. कृषि कोष (खंड-1 एवं 2), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना-4, 1956, 1966
87. चैम्बर्स ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी डिक्सनरी-एडिनवर्ग, 1964
88. चैम्बर्स टेकनिकल डिक्सनरी-एडिनवर्ग, 1958
89. द स्टूडेन्ट्स संस्कृत-इंग्लिस डिक्सनरी-वी.एस. आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, पटना-1965
90. मिथिला भाषा कोष-पं. दीनबन्धुझा, इसहपुर, सरिसबपाही, शाके 1872
91. बृहत् मैथिली शब्दकोश- डा. जयकान्तमिश्र, इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ एडभान्स्ड स्टडीज, शिमला-5, 1973
92. वेब्स्टर थर्ड न्यू इन्टरनेशनल डिक्सनरी-(क) जी.सी. मरियन कं. पब्लिशर्स, 1967 (ख) विलियम कोलिन्स पब्लिशर्स, 1979
93. शब्द कल्पद्रुम : द्वितीयो भाग:, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1967
94. हलायुध कोष : हलायुधभट्ट, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1967
95. हिन्दुस्तानी इंग्लिस डिक्सनरी- एस. डब्ल्यू.फैलोन, मेडिकल हॉल प्रेस, बनारस, 1879

पत्र-पत्रिका एवं स्मारिका

96. कोसी कुसुम, सहरसा
97. जर्नल ऑफ द गंगानाथझा रिसर्च इन्स्टीच्यूट, इलाहाबाद
98. जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना
99. माटि-पानि-मुरलीधर प्रेस, मुसल्लहपुर, पटना
100. मिथिला, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय
101. मिथिला मिहिर, पटना
102. रचना- शुभंकरपुर, दरभंगा
103. विश्वकर्मा ब्राह्मण मूल गोत्र प्रकाश, सं. श्रीभगीरथठाकुर, मोगलबाजार, मुङ्गेर
104. वैश्य जागृति ज्योति-फरवरी 1981 अंक, 1893-बेहरामबेग, लालकुँआ, दिल्ली-61
105. स्मारिका-1976, अखिल भारतीय मध्यदेशीय वैश्य महासभा, समस्तीपुर
106. स्मारिका-1972, श्रीगणिनाथ समिति, गोविन्दघाट, पटना-61
107. स्मारिका- 1984, अ. भा. मिथिला संघ, 34-गुरुद्वारा, रकाबगंजरोड, नई दिल्ली
108. स्मारिका- 1983, चेतना समिति, पटना
109. स्मारिका- 1982, 1983, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, बोकारो
110. स्वदेश दैनिक, मैथिली मन्दिर, दरभंगा



★ ग्रियर्सनक बिहार पीजेण्ट लाइफकेँ प्रेरक आदर्श रूपमे ग्रहण करितो प्रस्तुत ग्रन्थ अपन उद्देश्यक सीमाक कारणे एकाङ्गी अछि, से सत्य। किन्तु अनेक अंशमे ई ग्रन्थ अभिनवत्व प्रदर्शित करैत अछि।

★ प्रस्तुत ग्रन्थमे केवल नामेक संग्रह नहि अपितु क्रिया, विशेषण ओ क्रियाविशेषणहुक संग्रह भेल अछि जकर प्रयोग विवेचित व्यवसाय सबमे होइछ। ग्रन्थक अन्तिम भागमे मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक विवेचन - विश्लेषण अत्यन्त विचक्षणताक संग कयल गेल अछि जे एहि ग्रन्थक महत्त्वकेँ बहुत बढ़ा देलक अछि।

★ अवश्ये एहन विशिष्ट ग्रन्थक प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य - भण्डार समृद्ध भेल अछि। लोकवृत्त, समाजशास्त्र, शब्दशास्त्र ओ भाषाविज्ञानमे अभिरुचि रखनिहार पाठककेँ ई कृति रुचबे नहि करतनि अपितु बहुतो अनुसन्धित्सुक हेतु पथ - प्रदर्शक ओ प्रेरको बनि सकैत छनि। मैथिली शब्दकोशकर्त्तालोकनिकेँ एहिसँ प्रभूत शब्दावली प्राप्त होयतनि। मैथिलीये नहि अपितु भारतीय लोकवृत्तानुसन्धानक क्षेत्रमे सेहो ई ग्रन्थकारक अनुपम अवदान सिद्ध होयत, से विश्वास कयल जा सकैछ।

(अथातो शब्द जिज्ञासासँ)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीक पसार व्यापक अछि से प्रस्तुत ग्रन्थसँ सिद्ध होइत अछि । एहि शब्दावलीक क्षेत्रमे बढ़ई, डोम, कुम्हार, मलाह, ओलना, तत्मा, पटवा, दरजी, धुनिआ, धोबि, रंगरेज, गोंड़ी, लोहार, कसेरा, सोनार, कानु, हलुआइ, तेली, नोनिआ, कुरेड़ी, बरइ, पासी, सूरी-कलवार, लहेरी, चमार एवं भाति जातिक व्यावसायिक आधार सामग्री, औजार, उत्पादन, कार्य-व्यापार तथा उत्पादित वस्तुक गुण-दोषसँ सम्बद्ध शब्दावली अबैत अछि । एहि प्रकारक अत्र संकलित-विवेचित शब्दक संख्या दस हजारसँ उपर भऽ गेल अछि । मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यावसायिक शब्दावली सम्बन्धी अनुसन्धान-कार्य एहि ग्रन्थसँ पूर्ण ओ सम्पन्न नहि भऽ गेल अछि, अपितु एहिसँ आगाँ कार्य करबाक हेतु आरम्भिक सोपान प्रस्तुत भेल अछि । एहि ग्रन्थसँ कोषकार, वैयाकरण ओ भाषावैज्ञानिकलोकनिकेँ पुनश्चिन्तन करबाक हेतु अवश्ये सामग्रीक सौलभ्य होयतनि ।



एहि ग्रन्थक प्रणेता कबिलपुर, दरभंगा निवासी डा. **योगानन्दझा** (11.01. 1955) मैथिली भाषा-साहित्यक हेतु प्रतिबद्ध लेखन ओ क्षेत्रानुसन्धानमे निपुणता प्राप्त छथि । लोकजीवन ओ लोकसाहित्य (1986), आलेख सञ्चयन (2002), बहुरा गीत (2006), लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (2007), स्नेहलता (2007) आदि हिनक अन्य प्रकाशित कृति छियनि । फकीर मोहन सेनापति (2000) ओ बिहारक लोककथा (2003) हिनक अनूदित तथा मैथिली शाक्त साहित्य (1996) सम्पादित कृति छियनि । पी. सी. रायचौधुरी कृत द फोक टेल्स ऑफ बिहारक मैथिली अनुवाद **बिहारक लोककथा** पर हिनका वर्ष 2005क साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि। अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था सभसँ सम्बद्ध ओ सम्मानित डा. झा आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यमे सोल्लास अवदानक हेतु निरन्तर साधना ओ सेवाक पर्याय बुझल जाइत छथि ।

(प्रकाशकीय उद्गार)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली